• ओ३म •

भूमिका

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता श्री पं. नरेन्द्र जी प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद [आ० प्र०]

—:—

असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति

हे जगत् रक्षक परमात्मन् ! आप हमको असत् मार्ग से पृथक कर सान्मार्ग की ओर ले चलो। अविद्या अन्धकार से छुड़ा कर विद्यारूपी प्रकाश की ओर ले चलो और मृत्यु रूपी दुःख से पृथक् करके मोक्ष के आनन्द रूप अमृत की ओर ले चलो।

मनुष्य का अत्यन्त पुरुषार्थ यही है कि वह असत्-तम, तथा मृत्यु के पाशों से छूट कर मोक्ष को प्राप्त करे और अन्यों को भी इस अमृत-पद की ओर ले जावे। यह सर्व मान्य सिद्धांत है कि जब तक मनुष्य इन बन्धनों में बंधा रहेगा तब तक वह परम पद को प्राप्त नहीं कर सकता।

मैं जिस पुस्तक की यह भूमिका लिख रहा हूं उसके लेखक का भी यही मूल लक्ष्य है, कि मनुष्य अन्धकार तथा मिथ्या विश्वासों को छोड़ कर प्रकाश का मार्ग ग्रहण करते हुवे परम-धाम को प्राप्त करें। मनुष्य को ईश्वर ने बुद्धि के भूषण से विभूषित किया है, वह यदि चाहे तो सत्य, असत्य को अच्छी प्रकार जान सकता है। परन्तु जिन लोगों ने अपनी बुद्धि को किसी दूसरे के आश्रित कर रखा हो, वे इससे लाभ नहीं उठा सकते। इस्लाम के संस्थापक ने कुर्आन की भाषा में यों कहा है—

व मा काना ले मोमनिव्वं ला मोमिनतिन इज़ा कज़-ल्लाहो व रसूलोहू अमरन अंय्यकूना लहोमुल्खियरतो मिन् अम्रेहिम व मय्यासिल्लाहा व रसूलहू, फ़कद ज़ल्ला ज़ला-लम्मुबीना ।

कुर्आन पारा २२ रकू ५-२

इसका अर्थ यह है किसी मुसलमान पुरुष तथा स्त्री के लिये उचित नहीं कि उनके लिये जो काम खुदा और रसूल निश्चित करे, उसकी वे अवज्ञा करें ऐसा करने पर वे निश्चित पथभ्रष्ट हो जायेंगे । उस अवस्था में जबकि वह काम उनके अधिकार में हो । अर्थात् हज़रत मुहम्मद ने ज़ैनब को ज़ैद के साथ शादी करने के लिये कहा और उसके भाई अब्दुल्ला को भी इस सम्बन्ध में कहा, परन्तु दोनों ने इन्कार कर दिया । इसी सम्बन्ध में यह आयत कही जाती है । कि जिस कार्य का आदेश खुदा और रसूल ने दिया हो, उसकी अवज्ञा करने वाला पथभ्रष्ट हो जाता है । इस कल्पित खुदाई आज्ञा को सुन कर दोनों की गर्दनें झुक गईं और वे विवाह करने पर विवश हो गये ।

जब ऐसी आयतों द्वारा मनुष्यों की स्वतंत्रता पर कुठाराघात कर दिया गया हो, तो वे अपनी बुद्धि का उपयोग कैसे कर सकते हैं ? क्योंकि मुसलमानों के मस्तिष्क में यह विचार कूट-कूट कर भर दिया गया है कि, जो कुछ कुर्आन में है वह पूर्ण सत्य है, और इस्लाम ही सच्चा मज़हब है ।

जैसा कि—कुर्आन में यह उद्घोष है कि "इन्नद्दीना इन्द-ल्लाहिल्इस्लाम" कुर्आन पारा ३ रकू २-१० इसका अर्थतफ़सीर कादरी में इस प्रकार लिखा गया है । निसन्देह इस्लाम ही ईश्वर के निकट उत्तम मज़हब है, ईसाई और यहूदी मज़हब नहीं ।

तफसीर कादरी भाग १ पृष्ठ ९९

इसी प्रकार की एक अन्य आयत भी कुर्आन में निम्न-लिखित है:—" व मय्यंब्तग़ि ग़ैरल्इस्लामे दीनन फ़लय्युंक्बला मिन्हो व हुवा फ़िल आख़ेरते मिनल्ख़ासेरीन" ।

कु० पारा ३. रकू ६-१७

इसकी व्याख्या तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ २८५ में इस प्रकार की गयी है, जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई दूसरा मत स्वीकार करेगा, (दीन इस्लाम से तात्पर्य है अद्वैत और ईश्वर की आज्ञा पालन करना) तथा हज़रत मुहम्मद के मत को जो तमाम मज़हबों को निरस्त करने वाला हैं तो उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा, क्योंकि वह ईश्वर की आज्ञा तथा उसकी इच्छा के प्रतिकूल होगा, और वह परलोक में हानि उठाने वालों में से होगा ।

इस्लाम मत मानने वालों के अतिरिक्त अन्य मत्तावलम्बियों को जिन शब्दों से सम्बोधित किया गया है उसे नीचे लिखा जाता है, ' इन्ना शर्रद्दवाब्बे इन्दल्ला हिल्लज़ीना कफ़रु फ़हुम लायोमेनून"

कुर्आन पारा १० रकू ७/३

इसकी व्याख्या तफ़सीर मज़हरी भाग ५ पृष्ठ १५० में इस प्रकार लिखी है:—निसन्देह वह मनुष्य ईश्वर के निकट निकृष्ट-तम पशु है जो कुफ्र (अविश्वास) पर जमे रहे वह विश्वास नहीं लायेंगे । इस आयत में बतलाया गया है कि जो मुसलमान नहीं होते वे विकृष्टतम पशु हैं । यह एक ऐसी धारणा है, जो मनुष्य को अन्य मनुष्यों से घृणा करना सिखलाती है । अर्थात् दूसरे सम्प्रदाय का व्यक्ति चाहे कितना ही सदाचारी, सत्यनिष्ठ तथा श्रेष्ठतम पुरुष क्यों न हों वह इस्लाम की दृष्टि में अत्यन्त हेय पशु सदृश्य है । इसी आधार पर मौलाना मुहम्मदअली जो महात्मा गांधी के निकटतम साथियों में से थे, कहा था कि फाजिर से फाजिर मुसलमान भी महात्मा गांधी से श्रेष्ठतम है ।

इसी दोष की निवृत्ति के लिये पुस्तक-लेखक ने यह प्रयास किया है कि लोग अन्ध परम्परा को त्याग कर अपनी बुद्धि को उपयोग में लावें, और सत्य व असत्य का निर्णय करके सत्य को ग्रहण करें ।

एक और आयत नीचे लिख रहा हूं जिसमें मुसलमानों को, अन्य मतावलम्बियों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाय, उसकी चर्चा की है:—

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहे-वल्लज़ीना मआहु अशिद्दाओं अलल्कुपफारे रोहमाओ बैनहुम" इत्यादि ।

कु० पा० २६ रकू ४/१२ मु० फ्हे

इसकी व्याख्या तफ़सीर क़ादरी में इस प्रकार की गयी है:—मुहम्मद अल्लाह का सच्चा रसूल है और जो मुसलमान उनके साथ हैं वे काफ़िरो के लिये अत्यन्त कठोर हृदय और बहुत कड़े है, और आपस में दयावान् है । अर्थात् मुसलमानों के लिये कोमल हृदय वाले हैं ।

तफ़सीर क़ादरी भाग २ पृष्ठ ४५०

उपरोक्त आयतों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि कुर्आन का खुदा केवल मुसलमानों को ही स्वीकार करेगा और वे मुसलमान कि जो अन्य मतावलम्बियों के लिये कठोर हृदय रखते हैं, और मुसलमानों से नम्रता तथा कोमलता का व्यवहार करते हैं, ऐसी ही अनेक आयते दुसरों के प्रति घणा उत्पन्न करने वाली, द्वेष फैलाने वाली कुर्आन में वर्णित है ।

इसके साथ ही पुस्तक लेखक ने प्रबल प्रमाणों से सिद्ध किया है कि जब तक प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित विषयों को न जान लिया जाए तब तक केवल कुर्आन के अर्थ मात्र पढ़ लेने से कुर्आन की वास्तविकता को नहीं जाना जासकता । उन सब विषयों को पुस्तक में देख सकते हैं ।

इसके अतिरिक्त कुर्आन के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण इस्लाम के मतानुसार लिखा गया है कि कुर्आन कब बना, कहां लिखा गया, कहां से और कैसे, हज़रत मुहम्मद साहिब के पास पहुंचा। और आयतें किस प्रकार बनती रहीं। हज़रत मुहम्मद साहिब के निधन के पश्चात कुर्आन किस प्रकार कहां २ से एकत्रित किया गया तथा भिन्न-भिन्न प्रकार से कुर्आन-पाठ करने पर मुसलमानों में कितने झगड़े हुए तथा कितना कुर्आन था, और कितना शेष रह गया। इसका पूरा विवरण आपको पुस्तक में मिलेगा। इस कुर्आन के अतिरिक्त कुर्आन जैसी और भी पुस्तकों के उद्धरण, जिनको भिन्न-भिन्न लोगों ने ईश्वर से प्राप्त हुआ प्रकट किया था उनके नमूने कुर्आन की आयतों के साथ-साथ दिये गये हैं, और कुर्आन में अन्य लोगों का कितना कलाम है इसको विस्तारपूर्वक प्रतिपादित किया गया है।

यह प्रथम खण्ड जो कि 'कुर्आन पर अनुसन्धानात्मक दृष्टि' के नाम से जनता के हाथों में आ रहा है, माननीय पण्डित देवप्रकाशजी के कुर्आन् विषयक अतिगहण स्वाध्याय को प्रकट करता है। कुर्आन् को अनुसन्धानात्मक दृष्टि से, यदि पाठक इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लेंगे तो वे कुर्आन के वास्तविक रहस्यों को समझ सकेंगे।

इस ग्रन्थ में कुर्आन् का वास्तविक स्वरूप संक्षेप में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। अनेक गम्भीर किन्तु अति महत्वशाली विभिन्न विषयों को इस पुस्तक में पढ़ने के उपरान्त प्रत्येक पाठक के लिये कुरआन् पर पंडितजी के विस्तृत भाव को समझने में सफलता हो जायेगी और वे कुर्आन के तात्पर्य को समझने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेंगे।

मैं इस ग्रन्थ का हार्दिक स्वागत करता हूं और माननीय श्री प० देवप्रकाशजी को इस उत्तम ग्रन्थ के लिखने पर हार्दिक बधाई देता हूं।

ओ३म्

स्वामी शिवानन्दजी सरस्वती का दृष्टिकोण

ईश्वर, धर्म और राज्य

*

प्राचीन काल से ही धर्म और ईश्वर का प्रभाव संसार के मनुष्यों में चला आ रहा है। जब कभी किसी व्यक्ति के हृदय में शासन को प्राप्त करने का प्रश्न जागृत हुआ तो उसने इन्हीं दोनों शक्तियों का आश्रय लेकर ही शासन सत्ता को प्राप्त किया। संसार में एक ही धर्म चला आता था परन्तु चार हजार वर्ष पूर्व पारसीमत के संस्थापक ने पुराने सिद्धान्तों में थोड़ा परिवर्तन करके राज्य शक्ति को प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने मत की स्थापना की। अभी यह मत ईरान की सीमा से बाहर निकलने ही नहीं पाया था कि हज़रत मूसा का जन्म हुआ। मूसा मिश्र के शासक के संरक्षण में पला था। उसके अन्तःकरण में शासन प्राप्ति का विचार आना एक स्वाभाविक बात थी। मूसा एक निरापराध व्यक्ति की हत्या करने के कारण अपने संरक्षक के घर से भाग गया तो भेड़ बकरियां चराते हुये भी उसके मन में शासन प्राप्ति का विचार हिलोरे लेता रहा, उसने शासन प्राप्ति के लिये ईश्वर और धर्म का सहारा लेना उपयुक्त समझा और उसने इस अभियान को सफल बनाने के लिये ईश्वर और धर्म के साथ एक और शब्द जौड़ने की कल्पना की जिसे 'पैग़म्बरी' कहते हैं। उसने कहा कि मुझे ईश्वर तूर पहाड़ पर मिला है, और उसने पत्थर की पाटियों पर अपनी उँगलियों से लिखकर

यह धर्म पुस्तक दी है। और मुझे अपना संदेश वाहक (पैगम्बर) बनाकर आप लोगों के पथ प्रदर्शन के लिये भेजा है। मूसा की यह कल्पना राज्य सत्ता प्रप्ति में सिद्ध प्रमाणित हुई। और मूसा एक बड़े प्रदेशका शासक बन गया, न केवल मूसा ही अपितू इसके अनुयाई भी डेढ़ हजार वर्षों तक मूसा के सिंहासन पर ही राज्य करते रहे। इन्हीं यहुदियों के शासन काल में ही हजरत ईसा की उत्पत्ति हुयी। उसने ईश्वर धर्म और पैगम्बरी के साथ एक शब्द और जोड़ दिया जिसे उसने 'ईश्वर पुत्र' के नाम से सम्बोधित किया और सत्ता प्राप्ति हेतु प्रचार भी आरम्भ किया और शिष्य मण्डल भी बनाया। सत्ता प्राप्त करने की इच्छा उसमें इतनी प्रबल थी कि उसने शिष्यों के द्वारा अपना एक जुलूस निकलवाया जिसमें यह उद्घोष किया गया। (धन्य, इस्राईल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है" यूहन्ना, १२-१३-१४) ईसा ने यह भी कहा (परन्तु मेरे उन वैरियों की जो नहीं चाहते थे कि में उन पर राज्य करूं उनको यहां लाकर मेरे सामने घात करो" लूका, १९-२७) इस से ज्ञात होता है कि मसीह ने राज्य प्राप्ति का यत्न तो किया; परन्तु उसे अधिक समय न मिला और उसे सूली पर लटका दिया गया। परन्तु वह अपने चेलों को इसी मार्ग का अवलम्बन करने के लिये उपदेश दे गये। और चेलों ने उसी के पद चिन्हों पर चल कर राज्य प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। इसके पश्चात् लगभग सात सौ वर्ष हुये कि हजरत मुहम्मद साहिब का आगमन हुआ। उन्होंने भी इसी पद्धति को अपनाया और पैगम्बर होने के अतिरिक्त उसके साथ ये शब्द जोड़ दिया कि में अन्तिम पैगम्बर हूं। कहने का अभिप्राय यह है कि हजरत मुहम्मद साहिब भी अपने पूर्व वर्ती महानुभावों का अनुसरण करते हुये राज्य प्राप्त करने में सफल हुये। जैसा कि मैं पूर्व लिख चुका हूँ, ये सारी कार-

वाईयां केवल राज्य प्राप्त करने में साधन मात्र थी, ईश्वर और धर्म केवल राज्य प्राप्ति के लिये साधन मात्र थे, इतिहास जिसका साक्षी है, यदि धर्म और ईश्वर वास्तविक रूप में इनके साथ होता तो यहूदी, ईसाई और मुसलमान पृथ्वी के कण-कण को मानव रक्त से रंजित नहीं करते। उपरोक्त विषयों को सिद्ध करने के लिये प्रस्तुत पुस्तक "**कुर्आन परिचय**" में प्रबल प्रमाणों को संकलित किया गया है। मैं उन प्रमाणों को लिखकर पुस्तक और आपके बीच बाधक नहीं बनना चाहता हूं, आप स्वयं इस पुस्तक को पढ़ें, मेरा अपना विश्वास है कि कोई भी मनुष्य चाहे जिस किसी सम्प्रदाय का क्यों न हो, इस पुस्तक के पढ़ने से उस पर वास्तविकता प्रकट हुवे बिना नहीं रहेगी। और वह सत्य को उपलब्ध करने में सफल होगा। इति।

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ नं
१	प्रारम्भिक निवेदन	१३
२	उपक्रमणिका	१५
३	कुरआन् जानने के लिये आवश्यक प्रक्रियायें	२१
४	कुरआन् का नाम	२३
५	एक बात का ध्यान रक्खें	२७
६	कुरआन् का आविर्भाव	२७
७	कुरआन् के नाजिल होनें में विभिन्नता	३१
८	लोह महफूज से कुरआन् कैसे उतरा	३२
९	सम्पूर्ण कुरआन् जिब्रील नहीं लाया	३६
१०	सात आस्मान	३८
११	कुरआन् के नाज़िल होनें की कहानी	४५
१२	कुरआन् भिन्न-भिन्न क्यों उतारा	५२
१३	कुरआन् कैसा और किन किन स्थानों पर उतरा	५८
१४	मक्की मदिनी आयतों की पहचान	५९
१५	हजरत मुहम्मद की अवज्ञा का परिणाम	७२
१६	प्रथम कौनसी आयत उतरी	७५
१७	अन्तिम कौनसी आयत उतरी	७६
१८	कुरआन् का सात करात और सात हरूफ का विषय	७८
१९	कुरआन् के विभिन्न पठन-पाठन पर विवाद	९२
२०	क्या ज़ैद ने अन्तिम दौर का कोई कुरआन् लिखा	९७
२१	अबु बकर नें पहले ज़ैद सें कुरआन् जमा कराया	९८
२२	ज़ैद ने कुरआन् कहां कहां सें एकत्रित किया	१०२
२३	हज़रत उस्मान ने वर्त्तमान कुरआन् को क्यों और कैसे एकत्रित किया	११०

क्र.	विषय	पृष्ठ नं.
२४	हज़रत उस्मान के कुरआन् में मात्रायें	११७
२५	कुरआन् की सूरतें, आयतें, वाक्य व अक्षर	११९
२६	कुरआन् की मात्रायें लगाने का वर्णन	१२९
२७	कुरआन् में नहवी (व्याकरण) की भूलें	१३१
२८	स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिग का प्रयोग	१४२
२९	आयतों के उतरने का कारण	१४९
३०	कुरआन् में शराब हराम होने की विचित्र कथा	१५०
३१	कुरआन् की आयतें उतरने का कारण	१५७
३२	कुरआन् में विभिन्न लोगों के कलाम (वाणी)	१८१
३३	हज़रत उमर का कलाम	१८३
३४	नज़र बिन हारस का दावा	२१६
३५	हज़रत मुहम्मद के समय में अन्य लोगों द्वारा पैग़म्बरी का दावा वा अन्य कुरआन् सर्जन	२१८
३६	लोग हजरत से चमत्कार मांगते थे	२३३
३७	ईसा के शिष्यों का चमत्कार	२५२
३८	कुरआन् में शैतान का कलाम	२५९
३९	पूर्व आयत में की गई भूल का सुधार	२६८
४०	आदम को शैतान ने कैसे बहकाया	२७७
४१	आदम व हव्वा के बहकने से कुरआन् पर एक जटिल प्रश्न	२९२
४२	फ़रिश्ते सजदा में कितनी देर रहे	२९६
४३	क़यामत के दिन शैतान का प्रवचन	२९८
४४	शैतान ने हज़रत मुहम्मद के प्रवचन में मिलावट कर दी	३०१
४५	फ़रिश्तों का कुरआन में कलाम	३०७
४६	हज़रत मर्यम के साथ फ़रिश्ते का कलाम हज़रत ईसा की उत्पत्ति बाबत	३२१

क्र.	विषय	पृष्ठ नं.
४७	हजरत दाउद के समक्ष फरिश्तों का अभियोग	३२४
४८	हजरत मूसा के वस्त्र पत्थर ले भागा	३२५
४९	कुरआन में दो प्रकार की आयत मोहकमात मुतशाबेहात	३३७
५०	तफ़सीर इत्तेकान में मुतशाबेहात के कुछ नमूने	३६६
५१	कुरआन् का एक और भ्रान्ति पूर्ण मिषय नासिखो मनसूख	३८४
५२	रोज़ा सम्बन्धी विभिन्न आज्ञाएं	४००
५३	युद्ध वर्जित महिनों में युद्ध की कहानी	४०४
५४	शारीरिक और मानसिक कर्मों का हिसाब होगा	४१२
५५	व्यभिचारी पुरुष व्यभिचारी स्त्री से विवाह करे	४२१
५६	हज़रत मुहम्मद को वर्तमान स्त्रियों के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से विवाह करने के विषय में	४२३
५७	हज़रत मुहम्मद को अपनी पत्नियों के विषय में पूर्ण अधिकार	४२५
५८	हज़रत ने कहा मैं नहीं जानता मेरे और तुम्हारे साथ क्या होगा	४३७
५९	अन्य व्याख्याकारों के आधार पर निरस्त आयतें	४४०
६०	जहाद के विषय में जानकारी पहले और पिछले हुकम	४४०
६१	अल्लामा स्यूति वर्णित निरस्त आयतों की सूचि	४४५
६२	कुरआन् में परस्पर विरोधी आयतें	४९२
६३	विश्व ६ दिन में कैसे बनाया	४९४
६४	छः दिन नहीं आठ दिन में बनाया	४९५
६५	मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है	५००
६६	मनुष्य कर्मों में स्वतन्त्र नहीं	५०१
६७	कर्म फल देने में विरोध	५०५
६८	क़यामत के दिन ख़ुदा उन से बात न करेगा	५११
६९	ख़ुदा अवश्य उन से प्रश्न करेगा	५१२

क्र.	विषय	पृष्ठ नं.
७०	ख़ुदा कर्म पत्र पढने को कहेगा	५१२
७१	कर्मों का तोल होगा	५१४
७२	मुसलमान नर्क से दूर रहेंगे	५२०
७३	प्रत्येक जीवधारी को जल से उत्पन्न किया	५२२
७४	ख़ुदा बुरी बातों का आदेश नहीं देता इसके विपरित	५२५
७५	क़यामत के दिन कोई किसी का बोझ न उठायेगा और इसके प्रतिकूल	५२६
७६	कुरआन् की अस्पष्ट आयतें	५३८
७७	हज़रत मुहम्मद को धर्म पत्नियों पर अधिकार	५६६
७८	हज़रत मुहम्मद साहिब और ज़ैद का किस्सा	५७०
७९	दासी मारया का किस्सा	५८१
८०	ख़ुदा का तख़्त आठ फ़रिश्ते उठा कर लायेंगे	५९१
८१	क़समें खाने के विषय में	५९६
८२	आयतों के साथ फरिश्तों का उतरना	६०६
८३	कुरआन की विषय सूची	६०८
८४	हज़रत मुहम्मद के युद्ध	६१२
८५	कुरआन् में अरबी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के शब्द	६१६

***

❀ प्रारम्भिक निवेदन ❀

मेरे परम स्नेही मित्रों ने मेरा ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि मैं इस्लाम की मान्य पुस्तक 'कुर्आन्' के सम्बन्ध में विवेचनात्मक पुस्तक लिखूं, जिसमें 'कुर्आन्' की वास्तविकता तथा उसके सिद्धांतों का तार्किक एवं प्रामाणिक निरूपण हो। मैंने भी अपने इन मित्रों की इस शुभेच्छा को शिरोधार्य कर स्वीकार किया और ऐसी पुस्तक का लिखना आवश्यक समझा। क्योंकि 'कुर्आन्' के नाम पर दुहाई देने वालों के सन्दर्भ में इस बात को जानना अत्यन्त आवश्यक है कि वे स्वयं 'कुर्आन्' को कहां तक समझते हैं। जो लोग केवल 'कुरआन्' के अर्थों को पढ़कर यह समझ लेते हैं कि हमने 'कुरआन्' को जान लिया है, वे भ्रान्ति में हैं। उनको तथा सत्यान्वेषी सज्जनों को इस बात का यथार्थ ज्ञान हो जाय कि केवल लिखित अर्थ पढ़ लेने से 'कुर्आन्' का ज्ञान नहीं हो सकता। अतः मैंने उचित समझा कि 'कुर्आन्' और उसके समझने के लिए जो आवश्यक नियम तथा साधन हैं, उन्हें प्रतिपादित करूं; ताकि लोग भ्रान्ति से बच सकें।

हमने इस ग्रन्थ में विशेष समालोचनात्मक अथवा वादविवादात्मक दृष्टिकोण न अपनाकर केवल सामान्यतया 'कुर्आन्' की वास्तविक शिक्षाओं को ही सर्व साधारण के सन्मुख प्रस्तुत करना उचित समझा है। आजकल 'कुर्आन्' से सम्बन्धित जो हिन्दी में साहित्य प्रकाशित हो रहा है, उसके मिथ्या प्रभाव से सीधे सादे सज्जनों को बचाया जाय और उसके प्रति साम्प्रदायिक तथा संकुचित विचारों के लोग भी सत्य और असत्य

का निराकरण कर सकें, क्योंकि सत्य ऐसा ज्ञान है, जो मानव मात्र से प्रेम, पवित्रता, शुभकर्म, आत्माभिमान और वसुधैव कुटुम्बकम् की पवित्र भावना उत्पन्न करता है, परन्तु जो मनुष्य सर्वप्रियता को प्राप्त करने के लिए सत्य को त्याग का बल पर मिथ्या प्रयास करते हैं, वे मनुष्यता के अधिकारी नहीं। मनुष्य वही है, जो अपनी आत्म-भावना से किसी भी मूल्य पर वंचित नहीं होता। आत्म भावना का यह अर्थ नहीं कि वह इस आड़ में दूसरों की भावनाओं के लिए ही नहीं अपितु राष्ट्र और मानवता के हित में भी हानिकारक होती रहें। जो दूसरों के मन में द्वेष, क्रोध और आवेश उत्पन्न कर उन्माद को जन्म दे, जिससे वे सत्यता को स्वीकार करने की योग्यता ही खो बैठे। इसके अतिरिक्त ऐसे मनुष्य भी हैं जो सत्यासत्य का अवलोकन किये बिना उन्मत्तस्वरूप अपनी मनोभावनाओं से प्रेरित हो विनाश का कारण बनते हैं। वे सर्वाधिक हानिकारक हैं।

मनुष्य के लिये उचित यही है कि वह अपने अन्तःकरण में दूसरों की बात को सुनने की क्षमता भी उत्पन्न करे। ऐसा करने पर ही वह सत्य को प्राप्त कर सकता है, अन्यथा नहीं।

—देवप्रकाश

—: उपक्रमणिका :—

मैं कुर्आन् के संबंध में कुछ लिखना प्रारम्भ करूं, इसके पूर्व यह लिखना आवश्यक समझता हूं, कि कुर्आन् बाईबिल और इन्जील को भी ईश्वरीय ज्ञान मानता है, और कुर्आन् का अधिकांश भाग बाईबिल से ही लेकर लिखा गया है।

—:बाईबिल के सम्बंध में, कुर्आन् की सम्मति:—

आयत: —

'व मिन कबलेही किताबो मूसा इमामंव्वा रहमतन वा हाज़ा किताबुम्मुसद्दे कुल्लेसानन अरबिय्यल्लें युन्जेरल्लाज़ीना ज़लमू वा बुशरालिल मुहसेनीन्'

कुर्आन, पारा २६, रकू २—२

अर्थात्—और यह समाचार है, कि कुर्आन् से पूर्व मूसा की किताब (तौरेत) थी, और हम (खुदा) ने उसे दीनदार (ईमान वाले) लोगों के हेतु पथ-प्रदर्शक, और दया का कारण उन लोगों के हेतु जो इस पर विश्वास करते हैं, किया है, और यह पुस्तक कुर्आन्, तौरेत या अरबी भाषा में जितनी पुस्तकें उतरी हैं, उनका समर्थन करने वाली है, ताकि उन लोगों को भयभीत करे जिन्होंने ज़ुल्म और पाप कर अपनी आत्मा (नफ़्स) पर अत्याचार किया। कुर्आन्, नेक कार्य करने वालों को खुदा की सहमति की शुभ सूचना देने वाला है।

तफ़सीर, कादरी, पारा २६, पृष्ठ ४२८

तौरेत को समर्थन देने एवं प्रमाणित करने हेतु कुर्आन् में और भी आयतें हैं ; परन्तु उनको न लिखते हुए इन्जील के सम्बंध में एक आयत प्रस्तुत है:—

'वा कफ़्फ़ना अला आसारेहिम बेईसब्ने मर्यमा मुसद्दिक़ल्लेमा बैनायदैहे मिनत्तौराते वा आतेनाहुल इन्जीला फ़ीहे हुदंव्वा नूरंव्वा मुसद्दिक़ल्लेमा बैनायदैहे मिनत्तौराते वाहुदंव्वा मौइज़तल्लिल मुत्तेकीन'

कुर्आन्, पारा, ६, रकू ११

अर्थात्—हम पूर्व पैग़म्बरों के पश्चात् मरियम के पुत्र ईसा को लाये हैं । इस परिस्थिति मे कि वह समर्थक था। उस वस्तु (पुस्तक) के हेतु कि हमने उसके पूर्व में तौरेत भेजी थी और इसको इन्जील दी । उसमें हिदायत (शिक्षा) है, तौहीद (अद्वैत) की, और सन्मार्ग की ओर ले जाने वाला प्रकाश है । हमने इन्जील को धर्म के सिद्धांतानुसार, जो उससे पूर्व पुस्तक तौरेत थी, उसका मार्ग-दर्शन करने हेतु शिक्षादायक है, पवित्र मनुष्यों के हेतु ।

तफ़सीर, कादरी, पारा ६ पृष्ठ २२९

उपरोक्त आयतों में यह बताया गया है, कि तौरेत और इन्जील दोनों ही ईश्वर की ओर से ज्ञान, शिक्षा और सन्मार्ग का प्रकाश देने वाली प्रमाणिक पुस्तकें हैं ।

हज़रत मुहम्मद ने उक्त दोनों पुस्तकों को प्रमाण के रूप में क्यों स्वीकारा ? जब कि इन्जील केवल मसीह की यात्रा वर्णन होने से मात्र एक ऐतिहासिक यात्रा पुस्तक है, ओर तौरेत पशु-पक्षियों के बलिदान वर्णन से परिपूर्ण पुस्तक है, जिसे हज़रत मुहम्मद स्वीकार नहीं करते । फिर इन पुस्तकों को

स्वीकारने का एकमात्र कारण यही दृष्टिगत होता है कि जिन लोगों ने हज़रत मुहम्मद को इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था, वे बाईबिल (इन्जील) और तौरेत के समर्थक थे, और प्रचार करने का यह ढंग भी अति उत्तम है कि उनकी धार्मिक पुस्तकों को सत्य कह कर उनकी प्रशंसा की ओट में अपने धर्म का प्रचार व प्रसार उन लोगों में किया जाये। यह मार्ग प्रचार के लिए बहुत सरल है।

यदि यह कहा जाता कि तुम्हारी धार्मिक पुस्तकें मिथ्या है, और केवल मेरा मत सच्चा है। निश्चित ही वे लोग भड़क जाते और उनकी बात सुनने को कोई भी तत्पर नहीं होता, किन्तु इन दोनों बातों में कोई विशेष अन्तर नहीं। यदि कह दिया जाये कि तुम्हारी पुस्तकें मिथ्या है, अथवा यह कह दिया जाये कि तुम्हारी पुस्तकें सत्य हैं, उसे ही स्वीकारना चाहिये। मैं संशोधन करने आया हूं। इन दोनों स्थितियों में निर्णायक सत्य यह है कि पूर्व पुस्तकों का कोई महत्व अथवा अस्तित्व नहीं है।

अतः स्पष्ट उदाहरण हमारे सम्मुख है, कि किसी भी मुसलमान ने अपनी धार्मिक पुस्तक और अपने मन्तव्यों पर चलने हेतु इन्जील और तौरेत को नहीं स्वीकारा और अपने सिद्धांतों की पृष्ठभूमि के रूप में केवल कुर्आन् को ही दृष्टिगत रखा। मुसलमानों ने न कभी तौरेत को आधार मान पशु-पक्षियों का बलिदान, और न कभी इन्जील को मानकर तीन खुदाओं को स्वीकारा है। इन दोनों स्थितियों में स्वयं ही उक्त पूर्व पुस्तकों का त्याग हो जाता है, और यही उनका एकमेव उद्देश्य भी था कि इन पुस्तकों से मनुष्यों को परे कर केवल कुर्आन् को ही प्रमाण स्थापित करने से यह समस्त प्राचीन पुस्तकें स्वयमेव ही

समाप्त हो जायेगी और ऐसा ही हुआ। जिन लोगों ने इस्लाम ग्रहण किया, उन्होंने सर्वथा तौरेत, इन्जील और ज़बूर को त्याग दिया और इनको माननेवालों को काफ़िर और नर्कगामी कहा।

अब शेष रहा, मसीह को इन्जील देना ? उसको तो ज्ञात ही नहीं था कि इन्जील क्या होती है ? क्योंकि मसीह की मृत्यु के बहुत वर्षों के पश्चात् उसके चार शिष्यों ने मसीह का जीवन वृतान्त लोगों के सम्मुख रखा।

फिर भी जिन पुस्तकों की शृंखला में कुर्आन् को पिरोया गया है, वह तौरेत और इन्जील हैं। इनको साथ मिलाकर हज़रत मुहम्मद अपने सम्प्रदाय को इनसे सम्पुष्ट कर अपने मत को प्राचीन घोषित करने योग्य हो गये ? और बाईबिल के समस्त प्रमुख नेताओं को इस्लाम की माला में पिरो लिया, तथा उनको और अनुकरणीय लोगों को मुसलमान कह कर ही सम्बोधित किया गया। उनकी यह मुसलमानी हज़रत मुहम्मद तक ही सीमित रही, किन्तु जब हज़रत मुहम्मद को उन लोगों ने रसूल (पैगम्बर) नहीं स्वीकारा, तो वही मुसलमान, और उन्हीं इलहामी (ईश्वरीय) पुस्तकों के समर्थक काफिर हो गये एवं जिन पुस्तकों को ज्ञान, शिक्षा व सन्मार्ग का प्रकाश देने वाली घोषित किया था, वह समस्त पुस्तकें कुफ़्र की झोली में डाल दी गई। यह कुर्आन् का उपक्रम हैं।

—:हज़रत मूसा की कल्पना:—

हज़रत मूसा की प्रथम पुस्तक 'सृष्टिउत्पत्ति' है। उसमें आपने सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जो विवरण लिखा, वह निम्नानुसार है:—

महाराजा युधिष्ठिर के १५७३ वर्षों के पश्चात् मिश्र में फ़िरऔन नामक शासक शासन करता था, जो कि मिश्री जाति का था। उसी के शासन काल में मूसा नामक एक व्यक्ति इब्रानी वंश में हुआ, और फ़िरऔन के यहां ही पोषित होकर अन्ततः इस स्थिति को पहुँचा।

फ़िरऔन के शासन काल में इब्रानी जाति, मिश्रियों के अत्याचारों से अत्याधिक पीड़ित थी। अन्ततोगत्वा इसका परिणाम, फ़िरऔन का विनाश और मूसा का शासन हुआ। मूसा का पालन पोषण राज्य-परिवार में होने से वह अति प्रवीण था। उसने अपने शासन को स्थायित्व देने हेतु एक सम्प्रदाय को जन्म दिया और ईश्वर के नाम पर एक पुस्तक की रचना कर, लोगों से कहा, कि यह पुस्तक तख्तियों पर लिखकर मुझे खुदा ने दी है। राज्य में दृढ़ता स्थापन-हेतु उसने यहूदी सम्प्रदाय का प्रसार करना आरम्भ किया। उसने जनता के समक्ष इस प्रकार के विचार प्रस्तुत किये कि जन साधारण को विश्वास हो जाये कि सृष्टि के आदिकाल में ईश्वर ने मनुष्यों के हेतु जो पथ प्रदान किया था, वही मत मूसा का भी है। इसी लिए मूसा ने अपनी पुस्तक में 'सृष्टिउत्पत्ति' को अत्यन्त ही सीमित कर दिया।

उस समय भारत में कुरूवंशियों का राज्य था। जगतोत्पत्ति के १४ मन्वन्तरों में से ६ मनु हो चुके थे और ७ वें मनु वैवस्वत का २८ वां कलियुग आरम्भ होने वाला था। उधर मूसा संसार की उत्पत्ति के आरम्भ का प्रकथन रच रहे थे।

सत्यान्वेषी एवं प्रागऐतिहासिक शोधक सज्जन ! मूसा के इस कल्पित सिद्धांत को इतिहास की कसौटी पर निरखें-परखें

कि हज़रत मूसा की यह संसारोत्पति की कल्पना कहां तक सत्य है ? क्योंकि हज़रत मूसा को हुए इस समय ३५४० वर्ष होते हैं, और मूसा से हज़रत नूह की उत्पत्ति १५२७ वर्ष पूर्व हुई थी। इस गणना से हज़रत नूह को ५०६७ वर्ष हुए, जो कि आदम से ९ पीढ़ी पश्चात् उत्पन्न हुए थे। इस प्रकार गणना करने से सृष्टि की उत्पत्ति आज से ६४६७ वर्ष पूर्व ही होती है।

इसके पूर्व हजारों वर्षों पर्यन्त कुरू वंश का शासन रहा और कुरूवंश से पूर्व वैवस्वान् से लेकर ३८ वीं पीढ़ी में विचित्रवीर्य हुआ।

महाभारत, आदि पर्व ९५

इधर भारत में नहुष की संतान शासन कर रही थी। उधर चीन तथा काल्डिया आदि देश भी आबाद थे, किन्तु हज़रत मूसा का तो आदम ही निर्मित हो रहा था, जिससे सृष्टि की उत्पत्ति हुई, कही जाती है। इस सिद्धांत को यहूदियों से मुसलमानों और इसाईयों ने अपनाया और इस बात को प्राण-पन से प्रयत्न किया कि कहीं यह प्रमाणित न हो जाय कि आदम से पूर्व संसार में और भी कोई मनुष्य थे।

क्या मुसलमान विद्वज्जन अपनी इस सृष्टि-उत्पति के सिद्धांत पर पुनर्विचार करने हेतु उद्यत हैं, कि संसार की उत्पत्ति को मात्र ६४६७ वर्ष ही अभी तक हुए हैं ? अथवा इससे अधिक भी। हमने मूसा की इस गाथा को इस लिये लिखा कि इसको ईसाई और मुसलमान दोनों ही स्वीकारते हैं ताकि जिज्ञासु सज्जन इस बात पर विचार करें कि हज़रत मूसा का यह कथन कहां तक सत्य की कसौटी पर खरा उतरता

है ? अतः मूसा की यह सृष्टि-उत्पत्ति की कल्पना सर्वथा निराधार और सत्य-तथ्य से रहित है, जिसे मुसलमानों ने स्वीकारा है ।

-: कुर्आन् पर अनुसन्धानात्मत दृष्टि :-

(किन बातों का परिचय आवश्यक है)

पाठक वृन्द ! हम सर्व प्रथम इस बात का स्पष्टीकरण करना चाहते हैं कि सामान्य रूप से मुसलमान या अन्य कोई भी व्यक्ति, जो कुर्आन् के केवल अर्थों को ही पढ़ कर कुर्आन् की वास्तविकता से परिचित होना चाहते हैं, वह सर्वथा भ्रम में है। उनके लिये अनिवार्य है, कि यदि वे कुर्आन् को उचित रूप में समझना चाहते हैं, तो उन्हें उन साधनों, प्रक्रियाओं, विविध नियमों, विविध शृंखलाओं, आधारों, और व्यवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करना होगा, जिनका कुर्आन से सम्बन्ध है। फिर सम्पूर्ण कुर्आन समझने के योग्य भी नहीं । उसके हेतु यह भी समझना होगा कि कुर्आन के वह कौन-कौन भाग हैं जो कि मनुष्य की बुद्धि से परे है, और जिन्हें केवल खुदा ही समझता है । उन भागों को समझने का प्रयास करने वाले काफ़िर कहलायेंगे । इसके अतिरिक्त यह भी समझना होगा कि वह कौन से भाग हैं, जिनका मात्र पठन-पाठन ही उचित है, किन्तु उनमें दी गई आज्ञाएं कुर्आन की अन्य आयतों से निरस्त है, अर्थात् उन आज्ञाओं को ही केवल पढ़ो किन्तु पालन नहीं करना चाहिये । यह भी देखना आवश्यक है, कि कौन-कौन सी आयतें किन-किन व्यक्तियों के हेतु विशेष रूप से उतरीं और कौन-कौन सी सार्वजनिक है, और किन आयतों की आज्ञाएं सामान्य हैं, और किनकी विशेष है ।

कुर्आन को समझने हेतु उपरोक्त ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ यह समझना भी आवश्यक है, कि कुर्आन के वाक्यों-शब्दों और पंक्तियों को किन परिवर्तनों के साथ पाठ किया जाय और उन परिवर्तनों के फलस्वरूप कुर्आन की आयतों के वास्तविक अर्थों पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

कुर्आन की सात करायतों (पठन-शैली) का प्रभाव कुर्आन के मूल स्वरूप पर क्या हुआ ? यह ज्ञात करना भी आवश्यक है कि सांकेतिक आयतों में दिया गया संकेत किस व्यक्ति और विषय से सम्बन्धित है ?

कुर्आन की आयतों के उतरने का जो ढंग कहलाता है, उसके प्रकार क्या हैं ? साथ ही यह ज्ञान भी आवश्यक है, कि क्या मूल स्वरूप, जो कुर्आन आज उपलब्ध है, यही था अथवा इस रूप में आने के पूर्व मूल स्वरूप कुछ और था, और उसमें कांट-छांट अथवा घट-बढ़ की गई है ? साथ ही इस ऐतिहासिक तथ्य का भी ज्ञान करना होगा कि ऐसे कुर्आन की आयतों का नज़ूल (उतरना) किन कारणों से होता रहा । सम्पूर्ण कुर्आन कितनी अवधि में और कहां-कहां उतरा तथा एक ही विषय की पुनरावृति होने से उसमें कितना शाब्दिक अन्तर उत्पन्न हो गया ? इत्यादि

कुर्आन को समझने के पूर्व उपरी लिखित ज्ञातव्य विषयों से परिचित होना अनिवार्य एवं आवश्यक है, अन्यथा कुर्आन के वास्तविक मूल स्वरूप को ग्रहण करने में सफलता संदिग्ध ही है । उक्त विषयों पर विचार करने के पूर्व हम 'कुर्आन' नाम के सम्बन्ध में विचार करते हैं ।

—: 'कुर्आन्' नाम के विषय में विचार :—

इतिहास और तफ़सीर के ख्याति प्राप्त मुस्लिम विद्वान् अल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने अपनी विख्यात पुस्तक 'तफ़सीर इत्तिकान' में कुर्आन और उसकी सूरतों के नाम (शीर्षक) के सम्बन्ध में इस प्रकार चर्चा की है, कि अरबों ने जो अपने कलाम के नामकरण किये थे, खुदावन्द ने अपनी पुस्तक (कुर्आन) के नाम उनके विपरीत रखे ।

आगे अल्लामा सियूती ने अबुलमुआली अज़ीज बिन अब्दुल-मुल्क की पुस्तक 'किताबुल बुहीन' के माध्यम से कुर्आन की आयतों के प्रमाण सहित कुर्आन के ५५ नाम लिखे हैं ।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १७, पृ. १३२ से १३४

फिर आगे इन नामों को कुर्आन के नाम प्रमाणित करने हेतु व्याख्या की गई है । इनमें सर्वाधिक रूप से चर्चा 'कुर्आन' शब्द पर ही है । उन्हीं ५५ नामों की शृंखलामय व्याख्या में लिखा है:-

मुज़फ़्फ़री ने अपनी तारीख में कहा है, कि अबूबक़र ने कुरआन को जमा (संकलित) किया तो उन्होंने लोगों से कहा कि इसका कोई नाम रखो । कुछ एक ने इन्जील, कुछ ने सफ़र नाम रखने की सम्मति दी, परन्तु यह स्वीकार न हुए । अन्त में इब्ने मसऊद के प्रस्ताव पर कुर्आन का नाम 'मुसहिफ़' रख दिया गया ।

इसी प्रकार इब्ने अश्ता किताबुल मुसहिफ़ में मूसा बिन अकवा के आधार पर इब्ने शहाब की यह रवायत लिखी है, कि जब सहाबा (हज़रत के मित्रों) ने औराक़ (कागद) पर लिख लिया, तो अबूबकर ने उसके हेतु कोई नाम तजवीज़ करने की हिदायत दी, तो सम्मति में मुसहिफ़ नाम रखा ।

व्याख्याकार लिखता है, कि अबू बक़र वह प्रथम मनुष्य थे, जिन्होंने किताव अल्लाह (ईश्वरीय पुस्तक) को संकलित (जमा) कर उसका मुसहिफ़ नाम रखा ।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १७, पृष्ठ १३७

इस विस्तृत चर्चा को हम अग्रिम पृष्ठों में विस्तार पूर्वक लिखेंगे किन्तु उपरोक्त दोनों व्याख्याकारों के कथन से इतना तो यह प्रमाणित हो गया, कि कुर्आन में कुर्आन के मुताबिक (सदृश) जैसा कि ऊपर लिखा है, कुर्आन में ५५ नाम आये थे । इस हेतु अब तक अर्थात् अबू बकर सिद्दीक़ की ख़िलाफ़त (राज्याधिकार) तक कुर्आन का नामकरण ही नहीं हो पाया था और यही नाम जो (मुसहिफ़) हज़रत अबू बकर ने रखा और इसी को जब द्वितीय समय हज़रत उसमान ने संकलित किया, तो उन्होंने भी उस (कुर्आन) का नाम मुसहिफ ही रखा, जिसका वर्णन आगे आयेगा ।

-: कुर्आन् का नाम :-

हम पूर्व में लिख चुके हैं, कि हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त (शासन-काल) तक कुर्आन का नाम ही निश्चित नहीं हुआ था, तो उन्होंने सब की सम्मति से इसका नाम मुसहिफ़ रखा ।

विद्वान् डा० श्री सेल ने स्वयं लिखित अपने कुर्आन भाष्य में कुर्आन के नाम के सम्बन्ध में कहा है । उनका आक्षेप यह है कि कुर्आन करा धातु से निर्मित है, जिसके अर्थ पढ़ने के साथ सम्बन्धित हैं ।

इसी प्रकार यहूदी भी अपनी पुस्तक को करा या मकरा कहते हैं।

इस कारण डा० श्री सेल ने यह अर्थ निकाला कि मुसलमानों ने यहूदियों की देखा-देखी अपनी पुस्तक का नाम कुर्आन रख लिया।

उपरोक्त चर्चा में न जाकर मिर्ज़ा हैरत देहलवी ने जो उत्तर अपनी पुस्तक 'मुकद्दमे-तफसीरूल-फ़ुर्कान' में दिया है वह उद्धृत करते हैं:-

यदि दुर्जनतोपन्याय से यह भी मान लिया जाये, कि कुर्आन शब्द यहूदियों से लिया गया है, तो भी कोई आपत्ति नहीं होती, क्यों कि कुर्आन और तौरेत का रचियता एक ही ख़ुदा है। उसकी समस्त पुस्तकों का तात्पर्य लगभग एक ही है।

मुकद्दमाए तफ़सीरुल फ़ुर्क़ान, पृ० ३३

इस उत्तर से भी स्पष्टतः सिद्ध होता है, कि 'कुर्आन' नाम जो कुर्आन में आता है, वह यहूदियों से ही लिया गया है, परन्तु हम अल्लामा सियूती के कथन से प्रमाणित करना चाहते है कि ठाक ऐसा ही है।

अल्लामा सियूती ने अपनी 'तफ़सीर इत्तेकान' के प्रकरण १७, पृष्ठ १३८ में लिखा है—रसूलुल्लाह ने अपने कौल (कथन) में 'खुफ़्फ़ेफ़ा अला दाऊदुल कुर्आन इसमें जबूर का नाम कुर्आन करार दिया है। इसी भांति कुर्आन का नाम फ़ुर्कान भी कुर्आन में आता है।

इसके लिए अल्लामा सियूती ने कुर्आन की एक आयत:

' वा इज़ आतैना मूसल किताबा वल फ़ुर्क़ाना '

कुर्आन, पारा, १, रकू ६

अर्थात्–तौरेत का नाम स्वयं खुदा ने फ़ुर्क़ान रखा ।

तफ़्सीर इब्नेकान, प्रकरण १७, पृ० १३८

एक और अन्य आयत:—

' व लकद आतैना मूसा वा हारुनल फ़ुर्क़ाना वा जअलना '

कुर्आन, पारा १७ रकू ४

अर्थात्–हम (खुदा) ने मूसा और हारून को फ़ुर्क़ान दिया और रोशनी दी, इत्यादि ।

इससे ज्ञात होता है कि तौरेत का नाम फ़ुर्क़ान है । इसी भांति जैसे कुर्आन को किताब नाम कुर्आन में दिया गया, तौरेत को भी, (मूसा की पुस्तक को भी) किताब नाम से सम्बोधित किया गया :—

' वा आतैना मूसल किताब'

कुर्आन, पारा १, रकू ६

अर्थात्—मूसा को किताब दा ।

इन उपरोक्त आयतों से यह सिद्ध हो गया कि कुर्आन और फ़ुर्क़ान आदि नाम यहूदियों से लिये गये हैं ।

हम पूर्व में लिख चुके हैं, कि अल्लामा सियूती के कथनानुसार कुर्आन में ५५ नाम कुर्आन के आते हैं । अतः हज़रत अबू बकर की खिलाफ़त (शासन काल) तथा हज़रत उस्मान की ख़िलाफ़त तक कोई नाम निश्चित नहीं था । इन दोनों ने ही मुसहिफ़ नाम रखा । आगे चल कर कुर्आन के संकलन की चर्चा में कुर्आन का विस्तृत विवरण आयेगा । यहां इतना ही लिखकर विषय को स्थगित करते हैं । आगे लिखेंगे की कुर्आन कहां था और हज़रत मुहम्मद तक कैसे पहुंचा ?

—: एक बात का ध्यान रखिये :—

कुर्आन के सम्बंध में जो कुछ हम लिख रहे हैं, वह इस्लाम की अपनी भाषा में है, उनके विषय को लोगों के समक्ष रखने हेतु। इसका अभिप्राय यह नहीं कि हम भी कुर्आन को ऐसा ही मानते हैं, जैसा की लिख रहे हैं। हम तो कुर्आन को न तो ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक मानते हैं और न मनुष्यों को सन्मार्ग दिखाने वाली। अतः इस बात को सदैव स्मरण रखिये।

—लेखक

कुर्आन् का आविर्भाव

सर्व प्रथम यह जानना आवश्यक है, कि कुर्आन कहां से आया ? कुर्आन में लिखा है, कि:—

'इन्ना जअलनाहो कुर्आनन अरबिय्यल्ल अल्लकुम ताकिलून, वा इन्नहू फ़ उम्मिल किताबे लदैना लअलिय्यनल हकीम'

कुर्आन, पारा २५, सूरत जुख़रफ

अर्थात्—निसंदेह, हम (ख़ुदा) ने यह पुस्तक कुर्आन अरबी भाषा में पहुंचाई। शायद तुम अरबी भाषा भाषी हो। उसे समझो या मुहम्मद सल्लअम की नबव्वत (पैग़म्बरी) सत्य जान लो, उसके कारण जो उसमें फ़साहत के आसार और बलागत के अतवार हैं, और तहकीक (प्रमाणिक) कुर्आन सब आसमानी किताबों की असल अर्थात् लोह महफ़ूज़ में है, जो कि परिवर्तन से सुरक्षित है। हमारे पास उत्कृष्ट और सुदृढ़ किया हुआ कि उसमें दोष नहीं है, और अगली (पूर्व की) आसमानी

किताबों की मनसूख (निरस्त) करने वाला है और स्वयं निरस्त नहीं होता है ।

तफ़सीर, कादरी भाग २ पृष्ठ ३९९

इसी आयत की व्याख्या उपरोक्तानुसार तफ़सीर सिराजे मुनीर ने लौह महफ़ूज़ के सम्बन्ध में लिखा है-इब्ने अब्बास ने कहा, कि पहले ख़ुदा ने कलम (लेखनी) को उत्पन्न किया और उसे आज्ञा दी, कि वह लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखें ।

तफ़सीर सिराजे मुनीर, पृष्ठ ५५३

इसी आयत पर तफ़सीर जलालैन ने कुर्आन की एक आयत का प्रमाण देकर इस बात को स्पष्ट किया है, कि कुर्आन लौह महफ़ूज में अंकित हैं। आगे आयत है:—

'बल हुवा कुर्आनम्मजीद फ़ी लौहिम्महफ़ूज'

कुर्आन, पारा ३०, सूरत बरूज

अर्थात्-लौह एक सफेद मोती के दाने की (तख्ती) है । उसकी लम्बाई आसमान से धरती तक है और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक है। उसके किनारे याक़ूत के हैं । और वह तख्ती फ़रिश्ता की गोदी में हैं, जो अर्श (ख़ूदा का सिंहासन) के वाहिने और है, और वह फ़रिश्ता उसको नहीं जानता ।

तफ़सीर कादरी, भाग २, पृष्ठ, ६२३

इसी प्रकार सिराजे मुनीर में है, कि लौह सात आसमानों के ऊपर है, और लौह के मध्य में (हज़रत मुहम्मद का कलमा) और उसका दीन सच्चा है, और मुहम्मद उसका बन्दा और रसूल है । जो कोई ख़ुदा पर विश्वास करे और रसूल की आज्ञा पालन करे, वह स्वर्ग में प्रविष्ट होगा ।

तफ़सीर सिराजे मुनीर, पृष्ठ ५१५

तफ़सीर मज़हरी ने 'वल्कलमें' पारा २५ की व्याख्या इस प्रकार की है:—

अल्कलम से मुराद वही कलम है, जिससे लौह महफ़ूज़ की तहरीर लिखी गई है।

हज़रत उबैदा बिन सामत से रवायत है, कि रसूल सल्लअम् (हज़रत मुहम्मद) ने कहा कि सर्व प्रथम अल्लाह ने कलम को उत्पन्न किया और कहा, कि लिख ! फलतः कलम ने वह प्रत्येक चीज़ लिख दी, जो व्यतीत हो चुकी और भविष्य में कभी भी होने वाली है..... ।

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर का कथन है, कि रसूल सल्लअम् ने कहा-ज़मीनों आसमान की उत्पत्ति से ५० हजार वर्ष पूर्व अल्लाह ने सृष्टि का भाग्य लिख दिया था और उसका तख़्त (सिंहासन) पानी पर था।

बग़वी ने कहा- (भाग्य लिखने वाला) कलम नूर-(प्रकाश) का था, जिसका तूल आसमान वा धरती के मध्य यात्रा के समान था।

तफ़सीर मज़हरी, पारा २९ पृष्ठ ३९

मनुष्यों को उत्पत्ति के पूर्व ही उनके भाग्य लिख दिये।

कुर्आन, पारा २७ सूरत हदीद आयत १२

अजायबुल क़सस में लिखा है, कि हज़रत मुहम्मद ने कहा ख़ुदा ने सर्व प्रथम मेरा नूर उत्पन्न किया, जो एक सौ वर्षों अर्थात् जिसका एक दिन, एक हज़ार वर्ष है (वह नूर) नत मस्तक रहा। फिर ख़ुदा ने उस नूर से एक जौहर उत्पन्न किया और अपनी क़ुदरत की नज़र से स्वीकार किया, और वह जौहर उस नज़र से पानी हो गया, और हज़ार वर्ष तक गतिशील रहा

और एक क्षण भर भी नहीं ठहरा। फिर ख़ुदा ने उसे दस भागों में विभक्त किया एक भाग से अर्श (ख़ुदा का सिंहासन) उत्पन्न किया और ४ लाख खम्बे उसे प्रदान किये, और एक खम्बे से दूसरे खम्बे तक ४ लाख वर्षों का मार्ग है..... अर्श के साथ एक विशाल अजगर लिपटा हुआ है। दूसरे भाग से लेखनी उत्पन्न की, उसकी लम्बाई ५०० वर्षों का मार्ग है, और चौड़ाई ४० वर्ष की है। तीसरे भाग से एक लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) बनाई.....लेखनी ने तख़्ती पर प्रारम्भ से प्रलय तक का वृत्तान्त लिखा।

आजायबुल क़सस, भाग १, पृष्ठ १९-२०

पाठक वृन्द ! ऊपर जो कुछ भी लिखा गया है, यह सब उद्धरण विश्वस्त व्याख्याकारों की सम्मति है। हम इस पर क्या समीक्षा करें, क्योंकि एक बुद्धिमान् व्यक्ति किसी भी भांति ऐसी निस्सार और निरर्थक बातों को नहीं स्वीकारेगा। ख़ुदा का तख़्त, लेखनी और लौह महफ़ूज़ का विस्तार, और फिर उस पर लिखित आदि से अन्त तक का विवरण इत्यादि, किसी भी प्रकार बुद्धिजीवी के हेतु ग्राह्य नहीं हो सकता।

कुर्आन, लौह महफ़ूज़ पर लिखित है, इसे समस्त मुसलमान मानते हैं। इस विषय पर और अधिक लिखने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती।

अल्लामा सियूति ने तफ़सीर इत्तेकान में कुर्आन के सम्बन्ध में विशेष कर लेखनी उटाई है। कुर्आन क्या वस्तु है? इस पर विभिन्न विचारकों के मतानुसार कुर्आन उतरने का विवरण भी दिया है।

कुर्आन के उतरने में विभिन्नता

जो व्यक्ति यह मानता है, कि कुर्आन ऐसे माने (अर्थ) हैं, जो खुदा की जात के साथ कायम है, तो उसके नाज़िल (उतरने) करने की यह सूरत (स्थिति) होगी, कि खुदा उन अर्थों को बतलाने वाले अक्षरों और वाक्यों को निर्माण करके उन्हें लौह महफ़ूज़ में-अंकित कर दे, और जो व्यक्ति कुर्आन को शब्द मात्र मानते हैं, उनके मत में कुर्आन को नाज़िल करने (उतरने) का यह अर्थ होगा, कि खुदा ने उन्हें लोह महफ़ूज़ में अंकित कर दिया.....और रसूलों (दूतों) पर किताब को नाज़िल किये (उतारे) जाने से यह मुराद होगी, कि पहले फरिश्ता उसे खुदा से रूहानी तौर पर सीखता है, अथवा लौह महफ़ूज़ से स्मरण कर लेता है, और फिर रसूलों को बताता है।

किसी आलिम (विद्वान) ने कहा है, कि हज़रत (मुहम्मद पर नाज़िल (उतरी) हुई पुस्तक के विषय में तीन कथन आये है।

प्रथम-खुदा का कलाम शब्द और अर्थ दोनों है, और जिब्रील ने कुर्आन को लौह महफ़ूज़ से याद करने के पश्चात् उसे उतारा है। किसी विद्वान का कथन है' कि लौह महफ़ूज़ में कुर्आन के अक्षर इस प्रकार बड़े-बड़े हैं, कि जिनमें से प्रत्येक अक्षर कोहकाफ़ (एक पहाड़ का नाम) के समान हैं। और उनमें प्रत्येक शब्द के नीचे इतने अर्थ हैं, जिनका अहाता (घेरा) खुदा के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता।

द्वितीय-जिब्रील विशेष कर अर्थों को ही उतारते थे और रसूल्लाह उन अर्थों को जान लेने के पश्चात् उन्हें अरबी भाषा में ले आते थे।

इस मत को मानने वालों ने कुर्आन की इस आयतः—
'नज़्ज़ला बिहिर्रुंहुल अमीन अला कल्बिका'

के प्रकट अर्थों से तात्पर्य लिया है।

तृतीयज़िब्रील ने रसूलसल्लअम (हज़रत मुहम्मद) पर केवल अर्थों का अल्का (प्रगटीकरण) किया है, और आपने इन शब्दों के साथ अरबी भाषा में उनको ताबीर (व्याख्या) कही, और यह कि आसमान निवासी कुर्आन को अरबी भाषा में ही पढ़ते थे, और फिर ज़िब्रील बाद में उसे उसी भांति लेकर आये।

ऊपर जो तीनों कथन कहे गये हैं, उनमें बड़ा अंतर है, यदि ज़िब्रील अर्थ ही कहते थे, तो अरबी भाषा हज़रत मुहम्मद की सिद्ध होती है।

तफ़सीर इत्तेकान, प्रकरण १६, पृष्ठ ११४

लोह महफ़ूज से कुर्आन कैसे उतारा गया

इस विषय में अल्लामा सियूती ने प्रथम यह आयतः—

'शहरो रमज़ा नल्लज़ी उनज़िला फ़ी हिल कुर्आनो'

कुर्आन, पारा २३, रकू ७

अर्थातः-रमज़ान के महीने के मध्य जो उतारा गया वह कुर्आन

द्वितीय आयतः—

'इन्ना अनज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़दरे'

अर्थात्—क़दर की रात में इस कुर्आन को उतारा।

उपरोक्त दोनों आयतें स्पष्ट करती हैं, कि यह कुर्आन, रमज़ान के महीने में कदर की रात को उतारा गया।

(अब इस पर अल्लामा सियूति ने जो विभिन्न कथन उद्धृत किये है, वह तफ़सीर इत्तोक़ान से ही पढ़िये)

कुर्आन मजीद के, लौह महफ़ूज़ से उतारे जाने के विवरण में तीन विभिन्न वचन आये है। जिनमें से एक बचन जो ठीक ठीक और विख्यात है, वह यह है, कि कुर्आन क़दर की रात में एक ही बार पूरे का पूरा (सम्पूर्ण) आसमाने दुनिया पर भेज दिया गया और फिर उसके पश्चात् २०, २३ या २५ वर्षों की अवधि में थोड़ा थोड़ा करके भूमि पर उतारा जाता रहा।

तफ़सीर इत्तोक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ १०४

उपरोक्त दोनों आयतों में रमज़ान के महीने में क़दर की रात को कुर्आन का उतारना लिखा है। इस हेतु एक और आयत लाई गई, और उससे यह सिद्ध किया गया कि कुर्आन धीरे धीरे उतारा गया। इस आयत को अल्लामा सियूति ने भी लिखा है। आयत इस प्रकार है:—

वा कुर्आनन फ़रकनाहो लितकरअहू अलन्नासे अला मुक्सिव्वां नज्जल्नाहो तनज़ीला।

कुर्आन, पारा १५, रकू १२/१२

अर्थात्—और कुर्आन को जुदा-जुदा किया हमने और अहिस्ता-अहिस्ता, उतारा ताकि तू पढ़े उसको और लोगों पर आहिस्तगी से उतारे।

ततफ़सीर जलालैन ने पृष्ठ २३९ पर कुर्आन उतरने की अवधि २० से २३ वर्ष तक लिखी है।

उक्त विषय में विभिन्न तफ़सीरो में मतैक्य नहीं है। अकरमा ने इब्ने अब्बास से बयान किया है—कि कुर्आन कदर

की रात में एकबारगी ही पूर्ण रूप से आसमाने दुनिया पर उतार दिया गया और फिर उसके बाद वह २० वर्षों में उतारा गया। और यह कह कर उपरोक्त आयत पढ़ी।

हाकम और इब्ने अबी शैबा ने हस्सन बिन हरीर के तरीक पर खारता सईद बिन जुबैर, ने इब्ने अब्बास से रवायत की है, कि कुर्आन के ज़िक्र से भिन्न-भिन्न कर के आसमाने दुनिया के बैतुल इज़्ज़त में लाकर रखा गया और फिर जिब्रील उसे लेकर नबी सल्लअम पर नाज़िल करने लगे। इस हदीस के समस्त असनाद सत्य हैं।

अल्लामा सियूति ने लिखा है-कि तिबरानी और बज़्ज़ार ने रवायत की, कि कुर्आन का नज़ूल (उतारना) एक ही बार (समय) हुआ है। यहां तक कि वह आसमाने दुनिया के बैतुल इज़्ज़त में रख दिया गया और जिब्रील ने उसे हज़रत मुहम्मद पर बन्दों के कलाम (वाणी) और एमाल (कर्मों) के उत्तरों में नाज़िल हुआ।

अल्लामा सियूति ने यह प्रथम कौल उदधृत किया है। इसमें और भी अनेक आयतें है। तात्पर्य यह है कि लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित तख्ती) से एक साथ ही सम्पूर्ण कुर्आन लाकर आसमान दुनिया के बैतुल इज़्ज़त में रख दिया गया और जिब्रील वहां से लाता रहा।

द्वितीय कथन है, कि कुर्आन का नज़ूल आसमाने दुनिया [illegible] या २३, या १५ क़दर की रातों मे इस भांति हुआ कि [illegible] लैलतुल कदर में जिस प्रकार हिस्सा एक वर्ष में खुदा को उतारना स्वीकार था, उतना एक साथ ही आसमाने दुनिया पर [illegible] दिया जाता और फिर वहां से वर्ष भर नाज़िल हुआ (उतरा) करता।

इमाम फ़ख़्रुद्दीन, रावी आदि उक्त कथन के समर्थकों में से हैं ।

तृतीय कथन है, कि कुर्आन का उतारा जाना लैलतुल क़दर से प्रारम्भ हुआ था और फिर उसके पश्चात् वह विभिन्न अवसरों पर उतरता रहा ।

तफ़सीर इत्तेक़ान प्रकरण १६ पृष्ठ १०४-५

हमने पूर्व में जो कुर्आन की तीन आयतें उद्धृत की है उनमें आसमाने दुनियां व बैतुल इज्ज़त की कोई चर्चा या उल्लेख नही हैं । यह उपरोक्त रवायतें विभिन्न रावियों (भाष्यकारों) की हैं । मक्का के लोग तो बारम्बार यही कहते रहे:—

वा कालल्लज़ीना कफ़रु लौ ला नुज़्ज़िला अलैहि कुर-आनों जुमलतंव्वाहिदतन ।

कुर्आन, पारा १९, रकू ३/१

अर्थात्–और कहा, उन लोगों ने जो काफ़िर हुए, कि क्यों नहीं उतारा गया कुर्आन इकट्ठा एक बार ही उनके ऊपर ?

इसका उत्तर भी इसी आयत में इस प्रकार है:—

कज़ालिका लिनुसब्बता बिहीं फ़ुवादका व रत्तलनाहो तरतीला ।

कुर्आन, पारा १९, रकू ३/१

अर्थात्–इस प्रकार उतरा हमने ताकि प्रमाणित करें उसके साथ तेरे दिल को और थम-थम कर पढ़ा हमने उसको थम-थम कर पढ़ना ।

अनुवाद शाह रफ़ीऊद्दीन

क्यों थम-थम कर पढ़ने से ही हज़रत मुहम्मद का दिल प्रमाणित होता था ? सम्पूर्ण कुर्आन एक साथ उतरने से प्रमाणित नही होता था ? यह सब पर्दापोशियां (गोपनीयतायें) हैं ।

वास्तव में बात यह है, कि कुर्आन एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें लोगों के प्रश्नों के उत्तर हैं, हज़रत मुहम्मद के गृह परिवार की चर्चाएं है, जिसमें हज़रत मुहम्मद के मुद्दों की बातें हैं। ऐसी समस्त बातें किस प्रकार होने (घटने) से पूर्व कहकर प्रश्न और उत्तर दोनों लिखे जाते ? जब कि अभी प्रश्न हो नहीं हुए थे, तो उत्तर सहित कैसे लिखे जाते ? उदाहरणार्थ ज़ैद की कथा है—अभी ज़ैद को ले पालिक पुत्र बनाया नहीं ? उसका ज़ैनब से विवाह नहीं हुआ ? तलाक नहीं हुआ ? तो फिर इस कथा (घटना) को कुर्आन में पहिले से कैसे लिखा जाता ? ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्हें लिखना उचित नहीं। अतः यह बात सर्वथा मिथ्या है कि कुर्आन बहर-ठहर कर उतारा गया कि स्मरण रखने, कंठस्थ करने और दिल को प्रमाणित करके के हेतु लाभप्रद है। यह बड़े दुख की बात है कि मुस्लिम विद्वानों ने गोपणीयता से काम लेकर वास्तविक बात को छुपाया है। भला ! बदर के युद्ध की कथा पूर्व से ही कैसे लिखी जा सकती ? इसी प्रकार और बहुत सी बातें हैं। इसमें कोई बात निरन्तर ज्ञानात्मक उपदेश की तो थी ही नहीं कि एक बार ही कह दी जाती। इसमें तो अधिकांश समयानुकूल नीति रीति के खेल थे, जो कि उनके घटित हुए बिना कैसे लिखे जाते, जब कि उनका नामो निशान भी न था।

सम्पूर्ण कुर्आन न तो जिब्रील लाया और न उसने हज़रत महम्मद को सम्पूर्ण कुर्आन ही दिया।

पूर्व में कहा गया है, कि सम्पूर्ण कुर्आन आसमाने दुनिया पर लाकर बैतुल इज्ज़त में रखा गया। परन्तु तफ़सीर इत्तिक़ान से यह बात प्रमाणित नहीं होती। क्योंकि लिखा है-कि

परवर-दिगार आलिम (खुदा) अपने रसूल के साथ जाग्रत अवस्था में बात करता, जैसा कि मेराज की रात की घटना है।

तफ़सीर इत्तिकान में पृष्ठ ११८ प्रकरण १६ में मेराज की रात की कथा है। अहमद आदि ने अकबह बिन आमर से मरफूअ (प्रमाणित) तौर पर रवायत की है, कि रसूल सल्लअम ने कहा, कि तुम इन दोनों (बकर की अन्तिम) आयतों को पढ़ा करो, क्योंकि खुदा ने यह दोनों अर्श (सिंहासन) के नीचे के कोष से मुझे प्रदान की हैं। कहा-यह बकर की अन्तिम आयतें अर्श के नीचे के खज़ाने से मुझे मिली हैं।

दूसरी आयत भी मुअक्कल बिन यसर की पिछली हदीस में आ चुकी है, और इसके अतिरिक्त मरदूयह ने इब्ने अब्बास से रवायत की है, कि जिस समय रसूल आयतुलकुर्सी पढ़ा करते थे, तो हंस कर कहा करते थे कि यह आयत मुझे अर्श के नीचे के खज़ाने का तोहफ़ा है !

इसी प्रकार हज़रत अली ने कहा—कि आयतुलकुर्सी तुम्हारे नबी (हज़रत महम्मद) को अर्श के नीचे के खज़ाने के नीचे से प्रदान हुई थी।

तफ़सीर इत्तोक़ान प्रकरण १५ पृष्ठ, १००

मेराज की रात्रि को क्या मिला ? ५. नमाज़ें, सूरत बकर की अन्तिम आयतें और उम्मत (इस्लाम) के उन लोगों के मुहलक गुनाहों (भयंकर अपराधों) की क्षमा, अतिरिक्त शिर्क के।

तफ़सीर इत्तोक़ान, प्रकरण ७, पृष्ठ ५६

मुस्लिम विद्वानों का सर्व सम्मति से इस बात पर विश्वास है कि आयतुलकुर्सी और बकर की अंतिम आयतें खुदा ने स्वयं हज़रत मुहम्मद को प्रदान की। इस स्थिति में यह सिद्ध

हुआ कि न यह लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित तख्ती) में थी और न जिब्रील ही इनको आसमाने दुनिया पर लाया। अतः उपरोक्त वर्णित समस्त ताना-बाना अप्रमाणित और निरर्थक हो गया। जिब्रील द्वारा आसमाने दुनिया पर कुर्आन लाने का यह नाटक इसलिये रचा गया कि कुर्आन हेतु, जो कुर्आन में वर्णन है कि उसको रमज़ान माह में क़दर की रात को उतरा गया, किन्तु २०-२५ वर्षो तक लोगों को उसको पहुँचना उक्त आयत के विरुद्ध था। इस कारण कुर्आन की लौह महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर उतारने की कल्पना की गई।

-: कुर्आन की स्थिति :-

कुर्आन तथा मनुष्यों के भाग्य को कलम ने खुदा के आदेश से लिखा। अतः जो स्थिति मनुष्यों के भाग्य की है, वही कुर्आन की हुई.....और मनुष्यों का भाग्य नित्य वस्तु नहीं। अतः इस अवस्था में कुर्आन भी नित्य न हुआ। जिस प्रकार क़यामत (प्रलय) के दिन भाग्य का लेखा और प्रभाव समाप्त हो जायंगे, उसी प्रकार कुर्आन का भी हो जायेगा। अस्तु ऐसी स्थिति में इसे ईश्वरीय ज्ञान या सन्देश नहीं कहा जा सकता! इसलिए ख़लीफ़ा मामूं ने 'खलके कुर्आन' का सिद्धांत प्रस्तुत कर मुस्लिम विद्वानों को कठिनाई में डाल दिया था।

-: सात आसमान क्या हैं ? :-

ऊपर लिखा गया है, कि कुर्आन को लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित तख्ती) से लाकर आसमाने दुनिया पर बैतुल इज़्ज़त में रखा गया।

अब देखना यह है, कि आसमान, क्या कोई वस्तु है? यदि मुसलमानों के हृदयों में इस सत्य को अंकित कर दिया जाए कि आसमान कोई वस्तु नहीं है, तो सम्भवतः उनके हृदय में यह विचार भी आ जाए कि जब आसमान का अस्तित्व ही नहीं, तो फिर उस पर कोई वस्तु लाकर रखी ही कैसे जा सकती है? यह तो सर्वथा असम्भव है। जैसे कोई कहे, कि मैंने आकाश-कुसुमों की माला देखी। जब आकाश में कुसुम (फूल) ही नहीं होते, तो फिर उनकी माला कैसे देखी जा सकती है?

अब ज़रा इस्लामी आसमानों को भी देख लें।

"अल्लाज़ी खलक सब्आ समावातिन तिबाका"

कुर्आन, सूरत मुलक, पारा २९, आयत ३

अर्थात्—उत्पन्न किये सात आसमानों को, ऊपर तले।

अनुवाद-शाह रफ़ीउद्दीन

वह ख़ुदा, जिसने उत्पन्न किये सात आसमान तबक़ा-तबका एक पर एक। मुआलिम में है-कि आसमाने दुनिया एक मौज मज़बूत (दृढ़ लहर) हो गई है। दूसरा आसमान सफ़ेद संगमर्मर, तीसरा लोहा, चौथा सीसा, (कुछ ने तांबा भी कहा है), पांचवा चांदी, छठा सोना और सांतवा आसमान याक़ूत, सुर्ख़ (लालमाणिक) का है।

तफ़सीर कादरी, भाग २, पृष्ठ ५५८

इसी प्रकार क़ससुल अंबिया, पृष्ठ ७ पर भी सात आसमान लिखे हैं, और अजायबुल कसस, भाग १, पृष्ठ २० में आसमानों का वर्णन है, कि आसमान प्रथम ज़मुर्द सब्ज से है और उनके निवासी फ़रिश्तें गायों की शक्ल के हैं। आसमान

द्वितीय याकूत सुर्ख और निवासी फ़रिश्ते अक़ाब (बाज़) की शक्ल के। आसमान तृतीय याक़ूत ज़र्दे और निवासी करगस (गिद्ध) की शक्ल के। आसमान चतुर्थ चांदी का निवासी घोड़ों की शक्ल पंचम सोने का, निवासी हूरुलईन (खूबसूरत लड़के) की शक्ल के। षष्ठम सफ़ेद मोतियों का, निवासी गिस्मानी की शक्ल के और सप्तम आसमान नूर का और निवासी मनुष्यों की शक्ल के है।

तफ़सीर क़ादरी

सात आसमानों के सम्बन्ध में तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ४ पृष्ठ ३३९ और तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ४६७/४ में भी सर्वथा यही है, जो हम उपर तफ़सीर कादरी से उद्धृत कर चुके हैं।

सात आसमानों के विषय में हम अत्यधिक न लिखते हुए मात्र इतना ही कहेंगे, कि क्या मुसलमानों के इन आसमानों का वजूद (अस्तित्व) प्रमाणित हो सकता है ? यदि नहीं, तो जब आसमान का अस्तित्व ही नहीं, तो उस पर होने वाली वस्तु भी नहीं हो सकती !

अतः कुर्आन, न तो लौह महफ़ूज़ में था, न आसमाने दुनिया पर लाकर (जिसका अस्तित्व ही नहीं) रखा, और न ज़िब्रील वहां से लाता रहा। यह तो समस्त प्रपंच आवश्यकतानुसार हज़रत मुहम्मद की ही उपज है। जैसा कि आगे उनके समकालीन काफ़िर कहलाने वाले और अन्यान्य लोगों के विचार आप पढ़ेंगे। हज़रत मुहम्मद लोगों के सम्मुख जब आयतें सुनाते और फिर बदलते, और बदलना भी ख़ुदा के नाम पर ! इन सब बातों को देख कर उस समय के बुद्धिमान् और विद्वान् लोग वैसी ही बातें कहते थे, जैसा कि हमने ऊपर लिखी:-

'वा इज़ा बद्दलना आयतम्मकाना आयतिव्वल्लाहो आलमो बिमा युनाज़्ज़िलो [illegible] इन्नमा अन्ता मुफ्तरीन ।'

कुर्आन, पारा १४, रकू १४/२

इसकी व्याख्या निम्न प्रकार की गई हैं-

कि जब कुछ आज्ञाएं निरस्त (मनसूख) हुई, तो मक्का के काफ़िरो ने यह बात कही कि मुहम्मद अपने मित्रों के साथ परिहास करता है। आज एक आज्ञा देता है और कल उसे मना कर देता है। बहुधा, वह खुदा को लांछित करता है और अपने मन से बातें बना कर कह देता है, तो उपरोक्त आयत उतरी-'और जब बदलते हैं हम एक रद्द (निरस्त) करने वाली आयत को, कि खुदा उस वस्तु का अत्याधिक जानता है जो हिकमत (प्रयास) और मसलेहत (समयानुकूल) के कारण निरस्त (रद्द) करके दूसरी आयत स्थापित करता है तो काफ़िर लोग कहते हैं (हज़रत मुहम्मद का) कि तू खुदा पर इफ़्तरा (मिम्यारोपण) करता है। अर्थात्-खुदा का नाम मिथ्या लेता है। तू मुफ़तरी (मिथ्याभाषी) है और अपनी ओर से बातें (आयतें) बनाकर खुदा का नाम लेता है।

तफ़सीर कादरी, पृष्ठ ५८१

और यह भी कहते हैं:—

यकूलूना इन्नमा या आल्लमोहू बशर ।

कुर्आन, पारा १४, रकू १४/२

अर्थात्-अतिरिक्त इसके कि नहीं, इसको (हज़रत मुहम्मद को) बशर आदमी ज़बर या अजुफ़क़ीह अर्थात् जबरन्या अजुफक़ीह कुर्आन सिखाते हैं।

तफ़सीर कादरी, पृष्ठ ५८२

देखिए ! कुर्आन, सूरत, फुरकान, पारा १८ की आयतें क्रमांक ४ व ५ । जिनमें यहां तक कहा गया है कि-काफ़िर लोग बोले, कि नहीं है यह कुरआन, जो मुहम्मद हमारे पास लाये हैं । यद्यपि यह झूठ स्वय (मुहम्मद) ने बांध लिया और सहायता की है । उसे, झूठ बनाने पर एक और कौम ने जैसे जबर और यसार या अदास या फ़क़ीह रूमी अर्थात् यह लोग अगली खबरें हज़रत मुहम्मद को कह देते हैं और वह अरबी भाषा में हमको सुनाता है, तो निसन्देह आए हैं उस क़ौम के लोग जुलम और झूठ पर अर्थात् सहायता देने वाले लोग..... और बोले काफ़िर, कि मुहम्मद ! अरबी का कलाम तो कहानियां है, नूर्वजों की, पुस्तको में लिखी हैं ।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ १३४

अरब के विद्वानों और तत्ववेत्ता लोगों ने कुर्आन की वास्तविकता को सत्यासत्य और ठीक-ठीक उसी समय कह दिया था, कि कुर्आन खुदा का कलाम (वाणी) नहीं है और मुहम्मद स्वयं ही बातें (आयतें) बनाता है तथा खुदा का नाम लेता है एवं पूर्व लिखित कहानियाँ सुनाता है, जो कि पूर्व लिखित पुस्तकों में वर्णित हैं ।.....इत्यादि !

यहां तक हमने कुर्आन की प्रारम्भिक अवस्थाओं का वर्णन किया । अब अन्तिम बात यह रह गई कि कुर्आन हज़रत मुहम्मद तक कैसे पहुंचा ! यह चित्र (दृश्य) भी आपके सम्मुख प्रस्तुत है ।

इस सम्बन्ध में मौलाना अबू मुहम्मद हक़्क़ हक़्क़ानी ने अपनी 'तफ़सीर हक्कानी' के मुकद्दमा में कुर्आन की एक आयत लिख कर इस प्रकार स्पष्ट किया है । आयतः—

वा मा काना लिबशरिन अंय्युकल्लिमा हुल्लाहो इल्ला वहयन

औ मिंव्वराए हिजाबन औ युर्सिला रसूलन फ़यूहिया बिइज़्नेही मा यशाओ इन्नहू अलिय्युन हकीम । वा कज़ालिका औ हैना इलैका रूहम्मिन अम्रेना मा कुन्ता तदरी मल किताबो व लल-ईमान ।

कुर्आन सूरत शूरा, पारा २५, रकू ५-६

अर्थात्-और नहीं है शक्ति किसी मनुष्य को, कि बात करे उससे अल्लाह, मगर वही (फरिश्ते) से या पर्दे के पीछे से या भेजे फ़रिश्ता (सन्देशवाहक) जी में डाल देवे उसके हुक्म के साथ जो कुछ चाहता है । निसन्देह वह उच्च पद पर और हिकमत वाला है, और इसी प्रकार वही किया रूह को (फ़रिश्ता भेजा) तेरी (हज़रत मुहम्मद की) तरफ़, वह अपने हुक्म से न था । तू जानता क्या है किताब और ईमान क्या है ? अर्थात्-ऐ मुहम्मद ! तू वही से (फ़रिश्ते से) पूर्व किताब और ईमान को नहीं जानता था ।

कुर्आन के हेतु मुसलमानों की यह धारणा है कि जिब्रील के द्वारा ही खुदा ने हज़रत मुहम्मद को कुर्आन सिखाया है । यद्यपि इस्लाम खुदा को सर्वव्यापक तो नहीं किन्तु सर्व शक्तिमान् तो मानता है । क्या खुदा जिब्रील के माध्यम बिना हज़रत मुहम्मद के हृदय में कुर्आन अंकित नहीं कर सकता था ? यदि वह सम्भव नहीं था, तो मेराज की रात्रिकी भांति पर्दे के पीछे रह कर हज़रत मुहम्मद को कुर्आन बता दिया करता । हम पूछते हैं कि जब मूसा से खुदा ने तूर पहाड़ पर और झाड़ियों के पास बातें की, तो उस समय कौनसा पर्दा खुदा और मूसा के मध्य में था ।

अरब के लोग यह आग्रह करते थे कि कुर्आन एक ही समय सम्पूर्ण क्यों नहीं आता, जैसा कि मूसा को "तौरात" दी गई ।

हम कहते हैं कि जैसे हज़रत मूसा को तख़्तियों पर लिखकर किताब (तौरेत) दी थी, वैसे ही ख़ुदा हज़रत मुहम्मद को भी यदि कुर्आन दे देता, तो अरब के लोगों का प्रश्न हल हो जाता। अस्तु..... !

जैसा कि ऊपर लिखा है, उसी के अनुसार:-

'दा नज़्ज़ला बिहिर्रुहुल अमीन अला कलबेका'

कुर्आन, पारा १९, रकू ११।१५

अर्थात्--और उतारा है इसके साथ रुहुल अमीन अर्थात् जिब्रील ने तेरे दिल के ऊपर।

'लितकना मिनल मुन्जेरीन। बिलिसानिन अरबिय्यिम्मुबीन वा इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल अव्वलीन।'

कुर्आन, पारा १९, रकू ११।१५

इस आयत का अर्थ करते हुए मुस्लिम मुफ़स्सिर (भाष्यकार) अत्याधिक घबराए हुए दीख पड़ते हैं, आयत के अर्थ नितान्त सरल हैं। अर्थात् निस्सन्देह वह (कुर्आन) उतारा गया है परवरदिगार आलमों (ख़ुदा) की ओर से (अर्थात्, कुर्आन ख़ुदा की ओर से उतारा गया है), उसके साथ उतरा है रूहुल अमीन अर्थात् जिब्रील तेरे दिल पर, ताकि तू (हज़रत मुहम्मद) हो ठराने वालों से, साथ अरबी भाषा के बयान करने वाली के और तहक़ीक़ (निस्सन्देह) यह कुर्आन अलबत्ता मज़कूर (वर्णित) है बीच किताबों पहिले पैग़म्बरों की।

अनुवाद, शाह रफ़ीउद्दीन

इन तीनों आयतों में दो बार "इन्नहू" आया है। दोनों जगह इन्नहूँ की ज़मीर कुर्आन की ओर फिरती है। कोई कुर्आन का अर्थ न लेते हुए कुर्आन की खबर (सूचना) कहता

है । कोई इन्नहू की ज़मीर हज़रत मुहम्मद की ओर फेरता है, कि हज़रत मुहम्मद का ज़िक्र (चर्चा) पूर्व किताबों में किया गया है । एक ओर तो तफ़सीर हक़्क़ानी के लेखक कहते हैं, कि यह इन्जील, और बाईबिल असली नहीं है, परन्तु इन नकली पुस्तकों में से ही हज़रत मुहम्मद को नबी (पैग़म्बर) प्रमाणित करने हेतु हाथ-पैर मारते हैं । इनको छोड़ कर अब क़ुर्आन के किस्सों और सृष्टि-उत्पत्ति आदि को मिलाओ, तो आपके क़ुर्आन के क़िस्से वहां से मिल जाएँगे, तो जब क़ुर्आन का अधिकांश भाग तौरेत, ज़बूर और इन्जील से मिलता है तो इसको अस्वीकार कैसे किया जा सकता है । अतः यह क़ुर्आन पूर्व पुस्तकों में है और दूसरे यह, आयत में है कि जिब्रील ने तेरे दिल पर उतारा है, किन्तु क़ुर्आन के उतरने के हालात इसके विरुद्ध हैं, जैसा कि आप आगे पढ़ेंगे ।

-: क़ुर्आन के उतरने की कहानी :-

क़ुर्आन के नाज़िल होने (उतरने) के सम्बन्ध में जो विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात होता है, वह इस आयत के सर्वथा विपरीत है ।

अल्लामा सियूती लिखते हैं कि वही (फ़रिश्तों) की बहुत सी अवस्थाएँ विद्वानों ने लिखी हैं । उनमें से प्रथम यह है जैसे इमाम बुख़ारी ने बयान किया है, कि अब्दुला बिन उमर के प्रश्न पर हज़रत मुहम्मद ने वही आने के सम्बन्ध में बताया कि मैं झनकार के स्वर सुनता हूं और उस समय मौन हो जाता हूँ । यह अवस्था मुझ पर अत्यन्त कड़ी और भयंकर हुआ करती है ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ ११७

उपरोक्त वर्णन इमाम बुखारी की हदीस से है । यह हदीस इस प्रकार है:-

'यातीनी मिसला तलसलातिल जरसे बइ अलयइ हनैया ।'

तजरीदे बुखारी, बाब बदाउल वही ।

अनुवाद ऊपर दिया गया है ।

द्वितीय--कभी मेरे पास फ़रिश्ता मनुष्य के रूप में आता है, और वह मुझसे वार्ता करता है । फिर मैं उसके कलाम को सुरक्षित कर लेता हूँ ।

हज़रत आयशा ने कहा कि मैंने कड़कड़ाते जाड़े में हज़रत मुहम्मद को वही (फ़रिश्ता) होते देखी है । उस समय आपका मस्तिष्क पसीने में तरबतर हो जाता था ।

यह वर्णन भी इमाम बुखारी की हदीस से है, और हदीस इस प्रकार है:-

'यतमस्सलो लियलमलको रजोलन फ़्युकललिमनी ।' आदि।

तज्रीदे बुखारी, बाब बदाउल वही

अनुवाद ऊपर दिया गया है ।

हज़रत मुहम्मद के पास जिब्रील के आने की यह अवस्था भी थी । जिसे बुखारी अरबी, पृष्ठ १३५ और मुस्लिम किताबुल-ईमान में लिखा है, कि अब्दुल्लाह बिन उमर से रवायत है, कि एक दिन हम बैठे थे, कि अकस्मात् एक पुरूष सफेद वस्त्र पहिने हुए, बाल बहुत काले थे और थकावट का उस पर कोई प्रभाव न था, वहां पर आया । उसके चले जाने के पश्चात् हज़रत मुहम्मद ने पूछा--ऐ उमर ! तू जानता है कि यह कौन था ? उमर ने कहा खुदा और उसका रसूल ही जानता है, तो इस पर हज़रत मुहम्मद ने कहा--कि यह जिब्रील था ।

अर्थात्—(१) जिब्रील मनुष्य के रूप में भी कभी-कभी हज़रत मुहम्मद के पास आता था। (२) कभी रसूलिल्लाह के हृदय में कलामे ख़ुदा की रूह फूंक दी जाती थी। जैसे 'अन्न रूहुल कुद्सा नफ़सा फ़ी रूअी' अर्थात्—रूहुल क़ुद्स ने मेरे दिल में फूंक मार दी। इस रवायत को हाकिम ने बयान किया है। [३] प्रथम अवस्था-झनकार के समान, द्वितीय हृदय में फूंक मारना और तृतीय अवस्था जैसा कि ऊपर वर्णन है कि फ़रिश्ता मनुष्य के रूपमें भी आता था और मुझसे वार्ता करता था। चतुर्थ [४] अवस्था यह-कि निद्रावस्था में मेरे पास आता था, और अधिकांश लोगों ने सूरत कौसर को इसी प्रकार की वही में गिना है। पंचम [५] अवस्था यह कि ख़ुदा स्वयं अपने रसूल से जागृतावस्था में बात किया करता था, जैसा मेराज़ की रात की घटना घटी या स्वप्नावस्था में, सुआज़ बिन जबल की हदीस में आया है, कि रसूलिल्लाह ने कहा मेरे पास मेरा ख़ुदा आया, और कहा-कि फ़रिश्ते किस विषय में झगड़ा हैं.....मगर जहां तक मुझे मालूम है, क़ुर्आन में इस प्रकार की वही से कुछ पाया नही जाता। हां, यह सम्भव है कि सूरत बक़र का अन्तिम कुछ भाग, सूरत जुहा का कुछ भाग और सूरत अलम नशरह इस किस्म से समझा जाए।

इमाम अहमद ने अपनी तारीख़ में दाऊद बिन अबीहिन्द के अनुसार शैबी से रवायत की है तो नबी सल्लअम पर ४० वर्ष की आयु में नबव्वत नाज़िल की गई [पैग़म्बरी दी गई] पस, आपकी नवव्वत से तीन वर्ष तक इसराफ़ील को आपके साथ रहने की आज्ञा दी गई और इसराफ़ील आपको कलमा और शय सिखाया करते थे] इसी समय हज़रत ने इल्म पढ़ा ज्ञात होता है] तीन वर्ष पश्चात् जिब्रील को आपके साथ रहने का आदेश प्राप्त हुआ और उनकी जुबानी २० वर्षों तक

कुर्आन नाज़िल किया गया। [मैं कहूंगा कि बकौल इब्ने असाकर जब इसराफ़ील के पश्चात् जिब्रील को हज़रत मुहम्मद के साथ किया गया तो आसमाने दुनिया से कुर्आन कौन लाता था]

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ ११८

अल्लामा सियूती ने कुर्आन की दो आयतें प्रमाण देकर क़ुर्आन के हेतु एक नई बात प्रस्तुत की है। आपने लिखा है और इब्ने मरदूया ने इब्ने मसऊद की हदीस से उसे उचित ठहरा कर रवायत की है, कि जिस समय अल्लाह पाक वही [फ़रिश्ता] के साथ कलाम कहता है, उस समय आसमन निवासी एक प्रकार की खड़खड़ाहट सुनते हैं, जैसे किसी लौहे की जंजीर सख्त पत्थर पर रगड़ खाकर उसके गुज़रने को आवाज होती है [ग्रामोफोन के रिकार्ड की भांति] पस, वह [आसमान निवासी] डर जाते हैं और ख्याल करते हैं, कि यह अमर क़यामत की निशानियों में से है, ओर असल हदीस में मौजूद है।

अली बिन सहल नेशापुरी की तफ़सीर में आया है कि विद्वानों की एक जमाअत ने कहा है--कुर्आन लैलतुल क़दर में सब एक बारगी ही लौह महफ़ूज़ से एक घर में उतर आया, जिसको बैतुल इज़्ज़त कहा जाता है। पस, जिब्रील ने उसको कंठस्थ कर लिया और कलाम अल्लाह की हैबत (भय) से समस्त आसमान निवासियों को ग़श [मूर्छा] आ गयी और फिर जिब्रील उनकी और से होकर गुजरा। अब वह होश में आ गये थे, तो उन्होंने [परस्पर] कहा-तुम्हारे रब्ब [ईश्वर] ने क्या कहा है? उन सबों ने कहा- 'हक़्क़' अर्थात् कुर्आन, और यही अर्थ ख़ुदा के कौल :—

'हत्ता इज़ा फज्जेआ अन क़ुलूबेहिम, कालू माज़ा काला रब्बोकुम कालुलहक्क।

कुर्आन, पारा २२, रुकू ३/६

यहां तक कि उसके आदेश की प्रतीक्षा में रहते हैं, यहां तक कि जब दूर हो जाए घबराहट उनके दिलों से कहते हैं, आपस में, क्या कहा तुम्हारे परवरदिगार ने ? कहते हैं-'हक़्क़' कहा ! फिर जिब्रील क़ुर्आन को बैतुल इज़्ज़त में लाए और उसके लिखने वाले फ़रिश्तों को ज़ुबानी इबारत बताई, और यही अर्थ है ख़ुदा के क़ौल:—

'फ़मन शाआ ज़करहु । फ़ी सुहुफिम्मुकर्रमतिम्मरफ़ूअतिम्मुतह्हरतिन बिएदी सफ़रतिन किरामिन वर्रह ।'

कुर्आन, पारा ३, रकू १।५ सू अबस-२

पस, जो कोई चाहे याद करले उसको बीच सहीफ़ों (पूर्वपुस्तकों) बड़ाई किये गयों के, बुलन्द किये गये, पाक किये गये बीच हाथ लिखने वालों बुज़ुर्ग नेकीकारों के ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ ११५

उपरोक्त कथन से यह ज्ञात हुआ कि क़ुर्आन में ख़ुदा कहता है, फ़िरश्ते भय से मूर्छित हो जाते हैं फिर जिब्रील याद करके फ़रिश्तों को लिखाता है.....इत्यादि !

उपरोक्त वर्णित कथन उस कथन से भिन्न है, जो पूर्व में लिखा जा चुका है ।

वही का विवरण बुखारी से

यद्यपि समस्त हदीसों में क़ुर्आन उतरने का विवरण प्रायः एक समान ही है, परन्तु हम यहां तज़रीदे बुखारी से उद्धरण दे रहे हैं ।

हज़रत आयशा से रवायत है, कि हारस बिन हशाम ने रसूलुल्लाह से वही आने के सम्बन्ध में पूछा, तो हज़रत ने कहा, कि कभी तो आती है, 'मिसले सलसलतिल जरस' अर्थात् घंटियों के स्वर समान, वह मुझ पर अधिक कठोर होती है। कभी 'यतमस्सलो लियलमलको रजुलन' अर्थात् फ़रिश्ता मनुष्य के रूप में आता है ।

हज़रत आयशा ने कहा-कि रसूलल्लाह पर भीषण सर्दी में वही आती है। उसके लौट जाने के पश्चात् आपका (हज़रत मुहम्मद का) माथा पसीने से तरबतर हो जाता है (हां ! वही का आना भी क्या किसी दंगल से कम है ?)

हज़रत आयशा ने कहा-कि सर्व प्रथम जो हज़रत पर उतरा वह सच्चे स्वप्न थे.....फिर आप ग़ारे हिरा (हिरा पहाड़ की गुफा) में तहन्नस (निरन्तर चंद रातों की भक्ति) करने चले गये । आप ग़ारेहिरा में ही थे कि फ़रिश्ते ने आकर कहा, पढ़िये:—

"वा हुआ फ़ी ग़ारे हिराइन फ़जाआहुल मलको, फ़काला इक़रा, फ़फुल्तो मा अना बकारिइन फ़ाल फ़ा ख़ज़नी फ़ग़तनी हत्ता बलग़ा मिन्निल जुहदा" आपने कहा–मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ ! कहा फिर [हज़रत ने] मुझको पकड़ा और दबोचा यहां तक कि मुझको बेहद दर्जे की मशक़्क़त हुई। इसी प्रकार बार-म्बार अर्थात् तीन बार मुझे पकड़ा और तीसरी बार के अन्त में कहा–'इकरआ बिस्मे रब्बे कजजी.....' इत्यादि, और यह उपरोक्त आयत सम्पूर्ण पढ़ाई जिसका अर्थ है 'पढ़ उस ख़ुदा के नाम से जो जगत्कर्ता है, और उत्पन्न किया मनुष्य को ख़ून बस्ता से, और वह ख़ुदा करीम है, जिसने विद्या दी कलम से, फिर आप हज़रत ख़दीजा के पास आए । आपका दिल

धड़क रहा था। और आपने कहा–चादर उढ़ाओ..... ।

तज़रीदे बुखारी, हदीस २, ३, ४ पृष्ठ ७, ८, ९

फिर आपने कहा– 'लकद खशीतो अला नफ़सी' फिर हज़रत मुहम्मद ने पूर्ण किस्सा हज़रत खदीजा को बताया और कहा– मुझे जीवन का खतरा है।

उद्धरण उपरोक्तानुसार

देखिए ! इधर खुदा अपना ज्ञान हज़रत मुहम्मद को प्रदान कर रहा है और उधर हज़रत मुहम्मद को अपनी जान का खतरा अनुभव हो रहा है, और फ़रिश्ता भी जैसे देहाती लड़के को मार-मार कर अध्यापक पढ़ाता है, वैसे पढ़ा रहा, है इधर ईश्वरी। ज्ञान दिया जा रहा है, और उधर हज़रत को ज्ञात ही नहीं कि यह खुदा की ओर से भेजा गया फ़रिश्ता है।

फिर हज़रत खदीजा, हज़रत मुहम्मद को अपने चचेरे भाई वस्का बिन नौफल के पास ले गई। उसने बड़ा आश्वासन दिया और कहा कि मत डरो फिर कुछ दिन वहीं रूकी रही। फिर हज़रत मुहम्मद ने कहा–कि मैं जा रहा था, कि मुझे 'समैतो सौतन मिनस्साये' आसमान से अचसमात् आवाज़ सुनाई दी; मैंने अपना सिर उठाया तो वही फ़रिश्ता जो कि हिरा की गुफा में मेरे पास आया था, ज़मीन और आसमान के मध्य एक कुर्सी पर बैठा है। मैं उससे भयभीत हुआ, फिर मैंने कहा– चादर ओढ़ाओ, चादर ओढ़ाओ। फिर खुदा ने सूरत मुद्दस्सिर नाज़िल की।

तफ़सीर इत्तिकान में लिखा है, कि इब्ने साद ने बीबी आयशा से रवायत की है, जब रसूलिल्लाह को वही ऊतरती

तब आपका सिर चकराने लगता और चेहरे की दशा अस्त-व्यस्त हो जाती। दांत कटकटाने लगते और पसीना आ जाता।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ १२०

पाठक वृन्द ! यह है कुर्आन के ज्ञान होने की प्रारम्भिक स्थिति। हज़रत मुहम्मद जानते ही नहीं कि यह ख़ुदा की ओर से मुझे ज्ञान-प्राप्ति हो रही है। क्या यह भी कोई ज्ञान होने का मार्ग है कि किसी को बलात् दबोच-दबोच कर पढ़ाया जाए ? क्या यह इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) हो रहा है या जबर्दस्ती ज्ञान अंकित किया जा रहा है ? यह है प्रारम्भिक अवस्था जिसमें हज़रत मुहम्मद को इलहाम हुआ, ऐसा कहा जाता है। वर्क़ा बिन नौफल ने आश्वस्त किया, कि डरो मत ! यह ख़ुदा का फ़रिश्ता है ! इत्यादि.....!

क्या कुर्आन के इस विचित्र प्रवटी करण को पढ़ कर कोई मननशील महानुभाव कुर्आन के ईश्वरीय ज्ञान होने पर कभी विश्वास कर सकता है ? क्या कभी ईश्वरीय ज्ञान इस प्रकार एक अपरिचित और अशिक्षित मनुष्य के हृदय में बलात् ठूंसा जा सकता है ? कोई भी साधारण शिक्षित मनुष्य भी, अतिरिक्त उनके जिन लोगों ने अपने मस्तिष्क व विवेक पर ताले लगा रखे हैं, कोई भी ऐसे इलहाम का समर्थन नहीं कर सकता ! अतः कुर्आन के ईश्वरीय ज्ञान के आविर्भाव होने के सम्बन्ध में जो प्रथम विवरण प्रस्तुत किया गया है, वह बुद्धिमान मनुष्यों के विश्वास से परे है।

कुर्आन, भिन्न-भिन्न क्यों उतारा गया

अल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने अपनी तफ़सीर इत्तिक़ान के प्रकरण १६ में पृष्ठ १०९ पर लिखा है--कि कुर्आन के एक

बारगी न उतारने का कारण यह है कि इसमें कुछ भाग नासिख है और कुछ भाग मनसूख (निरस्त) अर्थात् कुर्आन में कुछ आयतें ऐसी है, जिनको दूसरी आयतों ने निरस्त कर दिया है। यह निरस्त करने वाली आयत और निरस्त हो चुकी आयतें, दोनों पृथक्-पृथक् आने से ही उचित व्यवस्था रह सकती है। फिर कुआन में कुछ भाग ऐसे भी हैं जिनमे किसी के प्रश्नों के उत्तर भी है और कोई भाग किसी की बात और काम की अनुपयुक्तता के हेतु भी आया है यह बात पूर्व में इब्ने अब्बास के कथन में बयान हो चुकी है। उन्होंने कहा-और उसे (कुर्आन को) जिब्रील ने मनुष्यों के वक्तव्यों और कर्मों के उत्तर में धरती पर उतारा।

इब्ने अब्बास ने उक्त हेतु कुर्आन की एक आयत से दिया है। जिसका एक भाग अल्लामा सियूती ने यहां लिखा है, किन्तु हम यहा पूरी आयत लिख रहे हैं। आयत—

वा ला यातूनका बिमसलिन इल्ला जेनाका बिल हक्के व अहसना तफ़सीरा।'

कुर्आन, पारा १९, रकू ३/१

अर्थात्-और नहीं लाते मुशरिक लोग तेरे वास्ते कोई मसल अर्थात् तेरी नबव्वत (पैगम्बरी) को निरस्त करने और किताब (कुर्आन) पर तान (लांछन) करने की कुछ बात नहीं कहते। परन्तु हम तेरे लिये उचित उत्तर और खुली हुई दलील के साथ उनके कथन को निरस्त करते हैं।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ १४०

उपरोक्त लिखे उद्धरण से यह प्रमाणित हो गया कि कुर्आन का ज्ञान कोई स्थाई ज्ञान नहीं है। अत समय की

आवश्यकता की दृष्टि से कुछ आयतों की आज्ञाओं को निरस्त करना, किसी के प्रश्नों के उत्तर देना और किसी बात एवं कर्म पर घृणा करना आदि, यह कुर्आन के उतारे जाने का रहस्य है। हम बुद्धिमान् मनुष्यों से प्रार्थना करते हैं कि इन उपरोक्त बातों को दृष्टिगत रखते हुए कुर्आन ईश्वरीय ज्ञान कहलाने का क्या अधिकारी हो सकता है, देखें ?

ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक वह होती है, जिसमें सदैव प्रतिक्षण हेतु और सब मनुष्यों के लिये स्थाई आज्ञाएं हों। वह आज्ञाएं ऐसी नहीं होती कि समय की आवश्यकतानुसार घड़ ली जाएं और फिर अवसर बीतने पर उनके आदेश को निरस्त कर दिया जाये। ईश्वरीय ज्ञान में किसी व्यक्ति विशेष के प्रश्नों के उत्तर नहीं हो सकते, और न किसी व्यक्ति विशेष के कर्मों की समालोचना की होती है, और न यह बात होती है कि पूर्व पुस्तकों के किस्से-कहानियों को अशृंखलाबद्ध रूप से लिखा जाये, और ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक में किसी व्यक्ति विशेष के पारिवारिक झगड़ों और उनके निदान हेतु आज्ञाएं प्रसारित की जाएं। ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक में ऐसा विवरण होना कदापि सम्भव नहीं और ऐसा होता भी नहीं है।

कुर्आन को जिस ढंग से शृंखलाबद्ध किया गया है। कोई साधारणसा व्यक्ति भी उसको पसन्द नहीं करेगा। बारम्बार एक ही विषय को न्यूनाधिक करके उद्धृत करना और मिथ्या बातों की ओर लोगों को आकर्षित करना। इससे न केवल पुस्तक की गतिक्रमता ही बिगड़ती है, अपितु कथन में मतभेद और विरोधाभास भी उत्पन्न हो जाते हैं।

हम अपनी इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड में कुर्आन में वर्णित किस्से कहानियों को क्रमबद्ध कर यह दिखाएंगे कि

किस प्रकार एक ही व्यक्ति का वर्णन कहीं थोड़ा थोड़ा और कहीं अधिकाधिक उल्लेख किया है। कुर्आन के लेखक ने लिखते समय कथानक-प्रचलित-शैली और प्रवाह एवं शृंखला का तनिक भी ध्यान नहीं रखा। कुर्आन की लेखन-शैली एवं प्रस्तुतीकरण देख कर कोई भी लेखक उसे पसन्द नहीं करेगा।

उदाहरणार्थ--शैतान और खुदा का वार्तालाप, आदम के सजदा (नत मस्तक) न करने की घटना एक बार ही हुई परन्तु कुर्आन में बारम्बार विभिन्न स्थलों पर शैतान का किस्सा दुहराने पर उसमें शाब्दिक व वाक्यों की न्यूनता और अधिकता हो गई और फिर इसके परिणाम स्वरूप अर्थों में अन्तर उत्पन्न हो गया। ऐसी ही स्थिति हज़रत मूसा और अन्य लोगों की कथाओं में भी उत्पन्न हुई है। हम उन सबको विस्तार पूर्वक द्वितीय खंड में लिखेंगे।

इस्लाम-विरोधी लोगों के प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत करने में भी कुर्आन की तरतीब (शृङ्खला) में अन्तर आ गया, तथा पारिवारिक बातों में दख़ल (हस्तक्षेप) देने के कारण भी कुर्आन की प्रतिष्ठा व शृङ्खला में अन्तर आ गया, तथा पारिवारिक बातों में दख़ल (हस्तक्षेप) देने के कारण भी कुर्आन की प्रतिष्ठा घट गई। कुर्आन की आयतों से सम्बन्धित जितने भी विषय हैं, उन सबका वर्णन हम यथा स्थान करेंगे। जिससे आपको ज्ञात हो जाएगा कि कुर्आन की भाषा उच्चत्तम होने पर भी लेखन-शैली में कोई शृङ्खला न रही। यहां पर उनका वर्णन करना स्थानोचित प्रतीत नहीं होता है। कुर्आन उतरने सम्बन्धी जो कुछ हमने अब तक लिखा और जो अल्लामा सियूती ने तफ़सीर इत्तिकान में लिखा, उसका संक्षिप्तिकरण हम पाठकों के ज्ञानार्जन हेतु आगे लिखते हैं,

ताकि जो कुछ कुर्आन–विषयक कहा गया है। उसे भली प्रकार समझ लेवें।

१—जिब्रील कुर्आन के शब्द और अर्थ दोनों ही कहता था।

२—जिब्रील केवल अर्थों को ही बयान करता था।

३—जिब्रील कहता नही था, अर्थों को मन में अंङ्कित करता था।

४—जिब्रील ने कुर्आन को लौह महफ़ूज से कंठस्थ करने के पश्चात् उतारा।

५—लौह महफ़ूज़ में कुर्आन के अक्षर कोहेकाफ़ पहाड़ के बराबर हैं।

६—उनके नीचे अनगिनत अर्थ लिखे हैं।

७—जिब्रील विशेषकर अर्थ ही उतारते थे, और हजरत मुहम्मद उनको जानकर, उन्हें अरबी भाषा में बयान करते थे।

८—रसूलिल्लाह पर अर्थों को ही अङ्कित किया। हज़रत मुहम्मद ने उन्हें अरबी भाषा में कर के बयान किया।

९—आसमान निवासी कुर्आन को अरबी भाषा में पढ़ते थे, जिब्रील भी उसी प्रकार लेकर आए।

१०—जिब्रील ने ख़ुदा से कुर्आन सीखा।

११—जिस समय ख़ुदा वही से कलाम करता है, उस समय आसमान निवासी भयभीत हो, कम्पित हो जाते हैं।

१२—आसमान निवासी उस कलाम को सुनते हैं, तो वे चीख़ मार कर गिर जाते हैं।

१३- जिब्रील सजदे से पूर्व अपना सिर उठाता है ।

१४—उस समय खुदा अपनी वही के साथ कलाम करता है और जिब्रील उसे फ़रिश्तों तक ले जाता है ।

१५—फिर खुदा की आज्ञानुसार यथास्थान पहुँचा देता है ।

१६—जब जिब्रील ने कुर्आन कंठस्थ कर लिया, तो खुदा के कलाम के भय से आसमान निवासी मूर्छित हो गये ।

१७—फिर जिब्रील कुर्आन को बैतुल इज़्ज़त में ले आए और फ़रिश्तों को बोल कर लिखवाया ।

१८—खुदा ने जब जिब्रील को कहा, उसने वह हज़रत मुहम्मद को कह दिया, किन्तु जिब्रील की भाषा ज्यों की त्यों खुदा की भाषा न थी ।

१९- खुदा ने हज़रत मुहम्मद को सुविधा देने हेतु वही (फ़रिश्ते) को दो भागों में विभक्त कर दिया । एक तो वह जिसे उन्ही शब्दों और वाक्यों सहित बयान किया गया और दोयम, वह जिसमें सारांश बताया गया । यदि समस्त वही ज्यों का त्यों बयान कर देता तो यह बात उम्मत पर भार होती,

२०-जौहरी ने कहा-कि वही, वह कलाम है जो खुदा किसी नबी की ओर भेजता हैं, और वह उसके दिल में अंकित कर देता है... ..... इत्यादि !

हमने जो कुछ ऊपर लिखा है, वह बड़े-बड़े मुस्लिम विद्वानों, जो कुर्आन की व्याख्या करने में अद्वितीय एवं सर्व-श्रेष्ठ माने जाते हैं, यह उनके कथन है । यदि आप उपरोक्त कथनों को ध्यान पूर्वक पढ़ेंगे, तो उनमें अधिकांश पारस्परिक विरोध प्रतीत होगा । ऐसी पुस्तक कदापि प्रमाणित - कोटि में नहीं आ-सकती है । उपरोक्त विवरण से स्पष्ट सिद्ध होता है कि कुर्आन

के इलहामी होने का दावा ऐसा भ्रमात्मक है, जिसे कोई भी जिज्ञासु स्वीकारने हेतु तत्पर नहीं हो सकता, अतिरिक्त उन लोगों के जिन्होंने अपनी बुद्धि को किसी अन्य के हाथ विक्रय कर दिया हो। आगे हम कुर्आन के इसी विषय को और भी स्पष्ट करके आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

कुर्आन कैसे और किन किन स्थानों पर उतरा

कुर्आन, हज़रत मुहम्मद के पास कैसे पहुँचा। इसके पहुंचने की कुछ और भी स्थितियां है। जो पाठकों की जानकारी हेतु आगे लिखते हैं। वह है विभिन्न स्थानों पर कुर्आन का उतरना।

अल्लामा सियूती ने अपनी तफ़सीर इत्तिक़ान के प्रथम प्रकरण में ही लिखा है—कि मक्की और मदनी आयतों के पहिचान लेने से यह लाभ होगा कि पीछे उतरने वाली आयतों से, बाद में उतरने के कारण या पहिले आदेश के निरस्त होने का ज्ञान या हुकुम आम की तख़सीस (विशेषता) का पता लगेगा।

आप लिखते हैं कि अबुलकासिम हसन बिन मुहम्मद बिन हबीब नैशापुरी अपनी किताबुत्तम्बीह में कुर्आन के उलूम की फ़ज़ीलत (प्रतिष्ठा) पर लिखते हैं, कि कुर्आन के ईल्मों में सबसे अशरफ़ (महत्त्वपूर्ण) ज्ञान कुर्आन के उतरने का इल्म है। उसकी जिहात (दिशाएं) मक्का और मदीना में नाज़िल होने वाली सूरतों की तरकीब की सूरतों का इल्म है और इस बात को जानना कि कौन सी सूरत मक्का में उतरी और उसका आदेश मदनी है और कौन सी सूरत मदीना में उतरी और उसका आदेश मक्की है।.....और हज़फ़ा, बैतुल मुकद्दस,

ताइफ़ और हुदीबा में उतरने वाली सूरतों का ज्ञान रखना और इस बात से परिचित होना कि कौन सी सूरत रात के समय उतरी थी और कौन सी दिन के समय या कौन सी सूरत फ़रिश्तों के साथ और किस सूरत को अकेला जिब्रील ही लाया..... इस प्रकार के २५ कारण रावी (लेखक) ने बताएँ है, और लिखा है, जो कि व्यक्ति इनको भली प्रकार नहीं जानता और इनमें परस्पर अन्तर न कर सके, उसके लिए कदापि उचित न होगा कि वह कलामे अल्लाह के सम्बन्ध में कुछ कलाम कर सके ।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १, पृष्ठ १४

इब्ने अरबी ने आम तौर से कुर्आन उतरने के स्थान निम्न लिखित लिखे है-मक्की, मदनी सफरी, हज़री, लैली, निहारी, समावी ओर अर्ज़ी । इनके अतिरिक्त कुछ भाग आसमान और धरती के मध्य मुअल्लिक (लटकते हुए) उतरे हैं और कुछ धरती के नीचे ग़ार (गुफा) के भीतर उतरे ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १, पृष्ठ १५

मक्की और मदनी आयतों को जानने हेतु तीन परिभाषाएँ

प्रथम—कुर्आन का जो भाग हिजरत (देश त्याग) से पूर्व उतरा वह मक्की और हिजरत के पश्चात् उतरा वह मदनी ।

इसका तात्पर्य यों समझना चाहिये कि मक्का और सफ़र हिजरत में जो कलाम उतरा वह मक्की और मदनी था

और आपके सफ़रों (यात्राओं) में भी जो भाग उतरा, वह मदनी ।

द्वितीय—मक्की उसी को कहते है, कि जिसका नज़ूल मक्का में हुआ हो चाहे वह हिजरत के पश्चात् ही क्यों न हुआ हो और मदनी, वह है जिसका नज़ूल मदीना में हुआ हो । ऐसी स्थिति में सफ़र की हालत में नाज़िल होने वाला भाग मक्की या मदनी कुछ नहीं कहला सकता.....तिबरानी ने कबीर में लिखा है कि रसूलिल्लाह ने कहा है कि कुरआन तीन स्थानों पर उतरा है, मक्का, मदीना और शाम ।

तृतीय–मक्की वह भाग है, जो मक्का वालो को सम्बोधन करने हेतु उतरा और मदनी वह जिसकी बात से मदीना वालों का सम्बन्ध हो ।

कुछ ऐसी सूरतें भी है जिनका कुछ भाग मदीना और कुछ भाग मक्का में उतरा हुआ कहा जाता है ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १ पृष्ठ १५–१६

क़ुर्आन के सम्बन्ध में सूरतों के उतरने की जो शृङ्खला लिखी गई है । वह इस प्रकार है ८६ सूरतें मक्का में उतरी कही जाती है, जिनकी तरतीब तफ़सीर इत्तिक़ान में निम्न प्रकार लिखी हैं ।

(१) इकरा (२) नून (३) मुज्जम्मल (४) मुद्दस्सर (५) अल्हम्द (६) तब्बत (७) कुव्वेरत (८) अल अला (९) लैल (१०) फजर (११) वज्जुहा (१२) अलम नशरह (१३) वल असर (१४) अल आदेयात (१५) कौसर (१६) अलहाक मुत्तकासर (१७) अराऐत (१८) कुलया अय्यी: हल काफ़ेरून (९) अल फ़ील (२०) अल खलक (२१) कुल हुवल्लाह (२२) अन्नजम (२३) अबस (२४) क़दर (२५) वश्शम्स

(२६) अलबरूज (२७) वत्तीन (२८) लईलाफ़ (२९) अल्कारेआ (३०) क़यामत (३१) बैलुल्ले कुल्ले (३२) अल मुर्सेलात (३३) काहफ़ (३४) अल बल्द (३५) वत्तारक (३६) इवतर-बतिस्साअते (३७) स्वाद (३८) ऐराफ़ (३९) जिन्न (४०) यासीन (४१) फ़ुर्क़ान (४२) फ़ातिर (४३) का हा या ऐन स्वाद (४४) त्वाहा (४५) शुअरा (४६) नमल (४७) क़सस (४८) असरा (४९) यूनस (५०) हूद (५१) यूसुफ़ (५२) हजर (५३) अनआम (५४) जबह (५५) लुकमान (५६) सबा (५७) जुमर (५८) गाफ़िर (५९) फ़ुस्सेलत (६०) जखरफ (६१) दुखान (६२) जासिया (६३) अहकाफ़ (६४) अज्जारे-यात (६५) ग़ाशिया (६६) कहफ़ (६७) शूरा (६८) इब्राहीम (६९) अंम्बिया (७०) नहल (७१) मआजेआ (७२) नूह (७३) तूर (७४) अलफ़लाह (७५) अलमलक (७६) दाइयाह (७७) सालआ (७८) अम्मा (७९) ग़रक (८०) इन्फ़तार (८१) कदह (८२) रोम (८३) अन्कबूत (८४) मुतफ़फ़ीन

मदनी की २८

(१) इमरान (२ अनफ़ल (३) अहज़ाब (४) माएदा (५) इम्तेहान ६) अन्निसा (७, जुलज़लत (८) अल हदीद (९) मुहम्मद (१०) रअद (११) अर्रहमान (१२) अद्दहुर (१३) तलाक (१४) लम यकून (१५) अल हशर (१६) नसर (१७) नूह (१८) हज्ज (१९) मुनाफ़ेक़ीन (२०) मुजादेला (२१) हाजेरात (२२) तहरीम (२३) जुमा (२४) तग़ाबन (२५) सफ़ (२६) फ़तह (२७) तौबा। जो सफ़र में 'अकमअते लवम लाकिन्ना इज़ा दस-अन' यह है कुर्आन की सूरतों की तर्तीबवार गणना।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ७, पृष्ठ ६२-६४

(८६ मक्की सूरतें कही थी उममें २कम, और २८ मदनी में १कम है)

ऊ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद के कुर्आन में तीन सूरतें नहीं है, अलहमद-मऊज़तैन-२ अर्थात् कुल अऊज़ बेरुब्बिन्नास वा कुल अऊजो बेरब्बिल फ़लक़ ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १८, पृष्ठ १७३

अब हम आगे संक्षेप में आयतों और सूरतों के उतरने का समय लिखते हैं ।

तफ़सीर इत्तिकान में मक्की और मदनी आयतों पर बड़ी चर्चा [बहस] की गई हैं, और मक्की व मदनी कौन सी आयतें हैं, इस पर भी विस्तारपूर्वक लिखा गया है ।

अल्लामा सियूतो ने इस बात पर भी चर्चा की है, कि कौन सी आयतें मक्का में उतरी और उनकी आज्ञा मदनी है ?.....और वह कौनसी आयतें है, जो मदीना में उतरी किन्तु उनकी आज्ञा मक्की है ? और इस बात का भी उल्लेख किया है, कि किसी-किसी सूरत की, जो मदीना में उतरी, या कुछ आयतें मक्का में भी उतरी ।

तफसीर इतिक़ान में पृष्ट १५ से लेकर पृष्ठ ४१ तक इसी विषय पर लम्बी चर्चा है ।

अब हम इन मक्की और मदनी आयतों के इतने विस्तृत लेख को यहां लिखना व्यर्थ समझते हैं । अन्त में केवल मिर्ज़ा हैरत देहलवी की सम्मति लिख कर इस मक्की-मदनी की चर्चा को समाप्त करते हैं ।

मिस्टर म्यूर के इस आक्षेप पर कि कुर्आन की तारीख़ी तरतीब [शृङ्खला] जिस भांति दोषपूर्ण है, उसी

भांति उसके मज़ामीन (विषयों) की तरतीब और उसका निज़ाम (सम्बन्ध) भी दोषयुक्त (गलत) है, जिर्मा हैरत देहलवी उक्त आक्षेप के उत्तर में अपनी पुस्तक "मुकद्दम ए तफ़सीरुल फ़ुर्कान" के पृष्ठ१७ पर लिखते है कि सूरतों के मक्की व मदनी होने में स्वयं मुस्लिम विद्वानों में बहुत बड़ा मतभेद है, और अब तक इस अमर का निर्णय नहीं हुआ है कि इतनी सूरतें विश्वस्त मक्की है और इतनीं सूरतें निस्सन्देह मदनि हैं, परन्तु हम इसे भी स्वीकार करते हैं कि वह सूरत जो मदीना में उतरी थी, उस सूरत से पहिले आ गई है, जो कि मक्का में उतरी थी। इससे हम यह दलील [तर्क] नहीं पकड़ सकते कि तारीखी तरतीब ग़लत है। [हजरत मिर्ज़ा महोदय ! जब आपको तरतीब का ही पता नहीं है, तो ग़लत और सही कैसे कह सकते हो ? लेखक ग़लत का करीह लफ़ज़ घृणित शब्द] स्वयं किसी लेखक की ऐसी तसनीफ़ [प्रकाशन] की निस्बत [हेतु] आयद [प्रयुक्त] नहीं हो सयता । जिसने मज़मीन [बिषयों] की किसी मस्लेहत [समयानुकूलता] के कारण तरतीब हो [तरतीब तो अबुबकर या हज़रत उसमान ने ज़ैद से दिलवाई । और उसे अपने ढंग पर नवीन परिवेश]लिवास] दिया हो [इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि पुराना लिवास उतार कर फ़ेंक दिया-लेखक] मुसलमानों का सिद्धांत [अक़ीदा] यह है, कि कुर्आन ख़दा का कलाम है और आसमान से उतारा है । उसकी वही तरतीब हैं जो लौह महफ़ूज़ में थी [लौह महफ़ुज़ में कुर्आन के होने का प्रमाण तो एक और रहा, मिर्ज़ा महोदय ! पहिले लौह महफ़ूज़ का अस्तित्व [वजूद] तो प्रमाणित करो] फिर आप स्वयं ही]मिर्ज़ा देहलवी] लिखते हैं, कि यह उत्तर खस्म]विरोधो] के लिये पर्याप्त नहीं हैं । इसिलए हम मुफ़स्सला ज़ैल [निम्न-

लिखित] बहस करते हैं। [बहस भी देख लीजिये]

कुर्आन चाहे आसमान से उतरा या स्वयं हज़रत मुहम्मद ने लिखा हो। प्रत्येक स्थिति में यह लाज़मी तौर से मानना पड़ेगा कि बमुक़ताज़ाये वक़त [समय की माँग] वा ज़रूरत [आवश्यकतानुसार] नाज़िल होता था। साम्यवादी, जो ख़ुदा को नहीं मानते वह भी यही कहते हैं। और उसी प्रकार तल-कीन किया जाता था [अर्थात् कार्य रूप में परिणित हो जाता था] जितनी की उसकी आवश्यकता होती थी । यदि आगे-पीछे की तरतीब रखी जाती तो ग़लत मब्हस [मिथ्या, उलटी तर्तीब] हो जाती कि फिर कदापि समझ में नहीं आ सकती था।

मुक़द्दमा तफ़सीरुल फ़ुर्क़ान, पृष्ठ १७

मिर्ज़ा देहलवी ने जो उत्तर मिस्टर म्यूर को दिया है, उसे ध्यान पूर्वक पढ़े । प्रारम्भ में लिखा कि मक्की व मदनी आयतों का अब तक कोई निर्णय नहीं हो सका। यदि अब तक निर्णय नहीं हो सका तो आप तरतीब सही होने का दावा क्यों करते हैं ? आगे आप लिखते हैं, कुर्आन चाहे आसमान से उतरा हो या स्वयं हज़रत मुहम्मद ने बनाया हो, परन्तु समय को आवश्यकतानुसार उतरता था । समय की आवश्यकता-नुसार होना कोई इलहामी किताब की सिफ़त नहीं है। यह तो मनुष्य के मस्तिष्क की उपज है। आपने यह भी लिख दिया कि कुर्आन ख़ुदा का कलाम हो या हज़रत मुहम्मद ने बनाया हो, आपके इस विचार से ज्ञात होता है कि दोनों बातों में कोई भी बात सम्भव है । फिर आपने लिखा, कि यदि वैसे

कुर्आन लिखा जाता तो समझ में नहीं आता। कैसी ग़लत दलील है ? क्या कुर्आन के आरम्भ में सूरत इक़रा, फिर नून, फिर मुज्जम्मल और फिर मुद्दस्सिर रखी जाती तो कौन सी बात समझ से बाहर होती ? मिर्ज़ा महोदय ने जब यह लिखा कि अब तक मक्की और मदनि आयतों का निर्णय ही नहीं हो सका, तो अनिश्चित और अनिर्णीत विषय पर चर्चा [बहस] करना ही व्यर्थ है।

द्वितीय प्रकरण : हजरी व सफ़री आयतें:-

नफ़सीर इत्तिकान में इस प्रकरण को इस प्रकार प्रारम्भ किया गया है, कि हजरी आयतें वह हैं जो मक्का व मदीना ठहरने [निवास] की स्थिति में उतरी। उनके उदाहरण बहुत हैं, परन्तु सफ़री आयतें और सूरतें वह हैं जिनका उतरना किसी सफ़र [यात्रा] में हुआ। उनके उदाहरण लेखक ने लिखे हैं, किन्तु विषय के सविस्तृत हो जाने के भय से हम उदाहरण नहीं लिख रहे हैं।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण २, पृष्ठ ४२

—: तृतीय प्रकरण: निहारी और लैली: —

निहारी, कुर्आन का वह भाग है, जिसका उतरना दिन के समय हुआ। उसके बहुत उदाहरण है।

लैली, वह भाग है, जिसका उतरना रात्रि के समय हुआ। उसके उदाहरण जो अल्लामा ने दिये हैं, उनमें से कुछ यहां लिखते हैं, परन्तु इनमें भी मतभेद है। वैसे तो

कोई एक बात भी ऐसी नहीं मिलेगी कि जिसमें परस्पर विरोधाभास और मतभेद न हों, परन्तु इस किबला के रुख के बदलने में बड़ा मतभेद है कोई दिन को और कोई रात को कहता है।

अल्लामा सियूती ने लिखता है, कि रसूलिल्लाह ने १६ या १७ महीने बैतुल मुकद्दस की ओर मुँह कर के नमाज़ पढ़ी, परन्तु उनका दिल यही चाहता था कि उनका क़िबला [नमाज के लिए मुँह करना] बैतुल्लाह [मक्का] की ओर हो।

इस पर काज़ी जलालुद्दीन ने कहा-कि यह बात अधिक स्वीकारने योग्य है, कि 'कदनरा नुकल्लेबो' आयत रात को उतरी।

आगे तिबरानी और अबू उबैद ने सूरतुल अनआम की प्रशंसा करते हुए इब्ने अब्बास से रवायत की है, कि सूरते अनआम मक्का में रात्रि के समय एक साथ ही इस प्रकार उतरी, कि उसके गिर्द [आस पास] ७० हजार फ़रिश्ते तसबीह [जय जय कार] का शोर बुलन्द करते आ रहे थे।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ३, पृष्ठ ५०

हाँ! ठीक है, रात्रि के समय में अकेला ज्रिब्रील क्या करता? इसलिए ७० हजार फ़रिश्ते उसके साथ आए। यह रक्षक फ़रिश्ये ज्रिब्रील के साथ क्यों आते थे? इसका कारण अल्लामा सियूती ने निम्नलिखित बताया है-

इब्ने ज़रीक, जुहाक से रवायत करता है, कि जिस समय रसूलुल्लाह के पास वही लाने वाला फ़रिश्ता भेजा जाता था,

तो ख़ुदावन्द करीम उसके साथ और भी कई फ़रिश्ते भेजता ताकि वह हामिले वही के आगे-पीछे और दाँये-बांये प्रत्येक ओर से इसलिये रक्षा करते रहे, कि कही शैतान, फ़रिश्ता का रूप धारण कर रसूलुल्लाह [हज़रत मुहम्मद] के पास न जा पहुँचे । अतः इन रवायतों से प्रमाणित होता है कि कुर्आन की कोई भी आयत बग़ैर मशाएअत [साथियो] के नहीं पहुची ।

तफ़सीर इत्तिक़ान प्रकरण १४, पृष्ठ ९८--९९

शैतान भी कमाल की हस्ती है; कि ख़ुदा भी ख़ौफ़ खाता है कि शैतान न जाने कब क्या कारा [षडयन्त्र] कर जाए ? अस्तु-]

रात्री को वही आने का एक और उदाहरण हम प्रस्तुत कर रहें हैं, ताकि वही की यह स्थिति भी आप जान लें ।

सहीह बुख़ारी ने आयशा से रवायत की हैं, कि बीबी सूदा भली प्रकार पर्दा कर किसी आवश्यकतावश बाहर गई और वह एक जसीमा [मोटी] स्त्री थी । जिसका परिचित लोगों से गुप्त रहना असम्भव था । उमर ने उन्हें देख लिया और कहा—सूदह वल्लाह ! तू हमसे छिप नहीं सकती । अब तुम ही ग़ौर करो कि किस प्रकार बाहर निकलती हो [आयशा कहती है] उमर की यह बात सुन कर सूदा पीछे लौट आई । उस समय रसूलुल्लाह रात्रि का भोजन कर रहे थे और आपके हाथ में एक हड्डी थी, सूदा ने सारी बात कही । उसी समय ख़ुदा ने रसूले पाक पर वही भेजी । इस स्थिति में कि हड्डी बदस्तूर [पूर्व की भाँति] आपके हाथ में थी ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ३, पृष्ठ ५०-५१

इसी प्रकार के अनेक उदाहरण है, जिनमें से मात्र नमूना लिखा है ।

-:चतुर्थ प्रकरण: सैफ़ी और शताई :-

सैफ़ी और शताई वह आयतें है, जो सर्दी और गर्मी के मौसम में उतरी ।

वाहदी ने कहा–कलाला के विषय में दो आयतें एक सर्दी और एक गर्मी के मौसम में उतरी। कलाला का अर्थ है, जिसका वारिस बहिन के अतिरिक्त और कोई न हो ।

हज़रत उमर से रवायत है, कि मैंने कलाला के विषय में बारम्बार रसूलुल्लाह से पूछा, तो रसूलुल्लाह मुझ पर इतना क्रोधित हुए कि मेरे सीने में अपनी अंगुली मार कर कहा कि क्या मुझे वह गर्मी के मौसम की आयत पर्याप्त नहीं जान पड़ती ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४, पृष्ठ ५२

गर्मी की ऋतु की एक आयत और हम लिखते है । उससे आपको रहस्य ज्ञात होगा और आप कह उठेंगे कि क्या ऐसा भी हो सतका है ?

तफ़सीर इत्तिक़ान में तबूक के युद्ध के विषय में लिखा है, कि बैहकी ने किताबुद्दलाइल में इब्ने इसकाक़ के आधार पर आसिम बिन उमर बिन कतादा और अब्दुल्लाह बिन अबी कक़र बिन हज़म से रवायत की है, कि रसूलुल्लाह जब युद्ध हेतु प्रस्थान करते थे तो लक्ष्य की ओर के अतिरिक्त दूसरी ओर जाने का इज़हार [प्रकट] करते थे, दरन्तु आपने तबूक के युद्ध हेतु स्पष्ट बता दिया कि मैं रूमियों के मुक़ाबले पर जाने का विचार रखता हूं..... इस युद्ध में जाने हेतु आपने जद्द बिन कैस को

कहा, कि क्या तुझको बनिल असफ़र [रूमी] की बेटियों से भी कुछ उनस (प्रेम) है। जद्द बिन क़ैस ने निवेदन किया–कि या रसूलिल्लाह मेरी कौम को यह बात भली प्रकार ज्ञात है, कि मुझसे बढ़ कर स्त्रियों का फ़रेफ़ता (मोहित होने वाला) कोई अन्य व्यक्ति मुश्किल से होगा और मुझे भय है, कि यदि मैं बनी असफ़र की स्त्रियों को देखु तो कहीं उन पर मोहित न हो जाउँ और गुनाह (पाप) में मुबतिला (लिप्त) न हो जाऊं। ईसलिए आप मुझे यहां ही रहने की आज्ञा दीजिये। उस समय 'मंय्यक़ूलोज़ान' आयत उतरी।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ४ पृष्ठ ५३

आयत कुछ भी उतरी हो। हमें तो यह स्पष्ट करना था कि एक धर्म के पथ-प्रदर्शक और हिदायत देने वाले के एक व्यक्ति को युद्ध-हेतु प्रलोभन और उस व्यक्ति से कैसी वार्ता की, जैसे बाजारू-मटरगश्त मित्रों के मध्य में होती है।

– पंचम प्रकरण: फ़राशी और नौमी –

फ़राशी, कुर्आन का वह भाग हैं, जिसका उतरना उस समय हुआ, जब कि रसूलुल्लाह (हज़रत मुहम्मद) अपनी शैय्या पर अपनी किसी पत्नी के साथ जाग्रतावस्था में थे।

नौमी, कुर्आन का वह भाग है, जिसका उतरना स्वप्नावस्था और स्थिरता तथा अर्ध निद्रा की स्थिति में हुआ। फ़राशी में से प्रथम आयत यह है:—

'वल्लाहो यासिमुका मिनन्नास'

कुर्आन, पारा ६, रकू १०, १४

अर्थात्—तुझे (हज़रत मुहम्मद) लोगों से अल्लाह बचाएंगा !"

दूसरी आयतः—

'वा अलस्सलासा तिल्लाज़ीना ख़ुल्लेफ़ू'

कुर्आन, पारा ११, रकू १४।३

अर्थात्—उन तीन व्यक्तियों पर जो पीछे रह गये थे ।

हदीस में उल्लिखित है कि उक्त दोनों आयतों का उतरना उस समय हुआ, जब कि एक तिहाई रात्री शेष रही थी और उस समय रसूलुल्लाह अपनी पत्नी उम्मे सलमा के पास सोये हुए थे ।

उक्त अन्तिम आयत के सम्बन्ध में अल्लामा सियूती लिखते हैं, कि इसमें एक यह विवाद उपस्थित होता है, कि हज़रत मुहम्मद का कथन है, कि मुझे बीबी आयशा के अतिरिक्त अन्य किसी पत्नी के समीप होने में कोई आयत नहीं उतरी । इस स्थिति में उक्त दोनों परस्पर विरोधी कथनों का समन्वय होना कठिन है ।

आगे अल्लामा सियूती ने उक्त पारस्परिक विरोध को मिटाने हेतु दो विद्वानों की सम्मतियाँ प्रस्तुत की हैं:—

काज़ी ज़लालुद्दीन का कथन है, कि सम्भवतया रसूलुल्लाह ने यह बात उस समय कही होगी जब कि आयशा के समीप आयत उतरती रही हो, और उम्मे सलमा की घटना उसके बाद की होगी ।

अबू याली का कथन है, कि बीबी आयशा ने कहा कि मुझे ९ वस्तुएं दी गई हैं । इस हदीस में यह उल्लिखित है, कि

जब हज़रत मुहम्मद अपने परिवार में होते और आयत उतरती तो परिवार के सदस्य उनके पास से चले जाते, तथा जब ऐसे समय उतरती कि मैं [आयशा] और हज़रत मुहम्मद एक ही लिहाफ़ [रज़ाई या सौढ़] में शयन करते होते।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ५, पृष्ठ ५४

[तात्पर्य यह है कि अल्लामा ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि बीबी आयशा और हज़रत मुहम्मद जब एक ही लिहाफ़ में रहते थे, तब आयत उतरती, अर्थात बीबी आयशा के अतिरिक्त अन्य किसी पत्नी के समीप आयत नहीं उतरी। इस उक्त कथन से पारस्परिक उक्त दोनों कथनों का स्पष्टीकरण स्वतः ही हो जाता है, किन्तु हमारी दृष्टि में उक्त स्पष्टीकरण कोई महत्व नहीं रखता, क्योंकि उम्मे सलमा के पास जो आयत रात्रि काल में शयन स्थिति में उतरी, वह भी एक ही शैय्या पर शयन स्थिति में ही उतरी] पुनः उसे स्पष्ट नहीं किया।

नौमी में से प्रथम और आयत है:-

' इन्ना आतैना कल कौसर, फसल्ले लेरब्बेका वनहर, इन्ना शाने-अका हुवल अबतर '

कुर्आन, पारा ३०, रकू १।३३

अर्थात्—हमने [ख़ुदा ने] तुझे कौसर [नहर] प्रदान की, सो इस पुरस्कार के धन्यवाद स्वरूप अपने ईश्वर की नमाज़ पढ़ा कर और बलिदान दिया कर ['वनहर' शब्द से ऊँट का बलिदान, विशेष अर्थ रखता है।]

निस्सन्देह, आपका [हज़रत मुहम्मद का] शत्रु बिना नामोनिशान के है।

अनुवाद, इब्ने कसीर, पारा ३०, पृष्ठ ५३

(उक्त आयत में 'अबतर' शब्द है, जिसकी व्याख्या हम सविस्तार अन्य स्थान पर कर चुके हैं ।)

तफ़सीर इब्ने कसीर में उक्त आयत की व्याख्या करते हुए लिखा है, कि कौसर एक नहर है, जिसके दोनों किनारों पर मोतियों के तम्बू हैं । उसकी मिट्टी कस्तुरी है । उसके कंकर सुच्चे मोती हैं ।

आयत में दूसरा शब्द 'नहर' है ! नहर का अर्थ क़ुर्बानियों को क़त्ल करना है ।

तफ़सीर इब्ने कसीर, पारा ३०, पृ, ५३-५४

लीयतूबू इनल्लाहा हुवत्तव्वाबुर्रहीम '

कुर्आन, पारा ११, रकू १४।३

इस आयत का अनुवाद देखने से प्रत्येक को यह ज्ञात हो जाएगा कि कुर्आन को समझने के लिए उसकी आयतों के शाने नजूल [कि आयत क्यों उतरी] को जानना आवश्यक है । शाने नजूल पर हम बाद में लिखेंगे, परन्तु यह आयतें दूसरे प्रकरण के सम्बंध में आ गई हैं, इसलिये कुछ थोड़ा सा लिख रहे हैं ।

तफ़सीर क़ादरी में इस पर निम्न प्रकार लिखा है कि:- "निकट था कि टेढ़े हो जाएं अपने हाल से, बदल जाए दिल एक गिरोह के उनमें से, यह हाल पहुंचा था कि युद्ध की कठोरता व परिश्रम के कारण कुछ लोग जेहाद से फिर आये, या रसूलिल्लाह की आज्ञा को भग करें । फिर खुदा ने दरगुज़र की उन लोगों से जिनके दिल ईमान पर दृढ़ रहने से फिरे जाते थे । निस्सन्देह खुदा उन पर बड़ी दयालुता करने वाला

है, जब उन्होंने तौबा की, और क्षमा दी उन तीन व्यक्तियों को, जो पीछे रह गये थे और युद्ध से अवज्ञा की थी (वह-कौन थे ?)

पूर्व में वर्णन किया जा चुका है कि महाम बिन काब, हलाल और मुशरा यह ताख़ीर में पीछे पड़े रह गए थे। (अब देखिये इनकी तौबा क़ैसे स्वीकृत होती है) इन तीनों के लिए हज़रत मुहम्मद ने आज्ञा कर दी थी, कि कोई मुसलमान न तो उनसे मिले-जुले और न बात ही करे, और ४० दिनों के पश्चात् हजरत मुहम्मद ने पुनः आज्ञा की, कि वह अपनी स्त्रियों से भी दूर रहें।.....इन तीनों व्यक्तियों पर काम निहायत तंग हुआ। यहां तक कि उन पर धरती भी तंग हो गई अर्थात् अत्यधिक हैरानी और परेशानी से तंग हुए। उनके हृदय शोक और भय से तंग हो गए, इस प्रकार की हर्ष और प्रेम को उनके हृदय में कोई स्थान ही नहीं था, और उन्होंने जान लिया कि खुदा के अतिरिक्त और कोई आश्रय नहीं है, और उसी से ही क्षमा मांगनी चाहिए। फिर जब वह तीनों व्यक्ति विवश और लाचार हुए, तो अल्लाह ने उन्हें तौबा करने की शक्ति दी। तब उन्होंने तौबा की तो ५० दिनों के पश्चात् यह आयत उतरी, जिसमें उन तीनों व्यक्तियों की तौबा स्वीकृत हो गई।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १, पृष्ठ ४१७, ४१८

इस आयत से आप इस परिणाम पर अवश्य ही पहुँच चुके होंगे कि कुर्आन की आयतें किस हेतु उतरी जब तक यह न जान लिया जाये तब तक आयत का अर्थ नहीं जाना जा सकता है। आपने देखा कि हज़रत मुहम्मद ने किस प्रकार उक्त तीनों व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार कर उन्हें विवश किया

कि उनको पुनः हज़रत मुहम्मद की ही शरण में आना पड़ा। इससे जाना जा सकता है कि भविष्य में किसी भी व्यक्ति को हज़रत मुहम्मद की अवज्ञा करने का दुस्साहस न हो सकेगा।

इसी प्रकार की वही के सम्बन्ध में बीबी आयशा ने कहा है, कि मैं आपके साथ एक ही लिहाफ़ (ओढ़ने) में सोती थी, जब कि वही उतरती थी।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४, पृष्ठ ५४

— मूर्छित होना —

इमाम शफ़ई ने कहा-कि रसुलिल्लाह को वही स्वप्नावस्था में भी आती थी, और कुछ लोगों ने यह भी रवायत की है, कि आप (हज़रत मुहम्मद) उस समय मूर्छित हो जाते थे, और सम्भव है कि उस बार को उस स्थिति पर लागू किया जाए कि जो अवस्था रसूलिल्लाह पर वही उतरने क समय में हो जाया करती थी।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४, पृष्ठ ५५

जहाँ वही ऊंघने (अर्धनिंद्रा) में होती थी वहां मूर्छित अवस्था में भी होती थी।

-.: षष्ठम प्रकरण : अर्ज़ी और समावी :-.

इब्ने अरबी का यह कथन प्रथम ही वर्णन किया जा चुका है, कि कुर्आन के विभिन्न भाग विभिन्न स्थानों पर उतरे। कुछ भाग आसमान पर, कतिपय अंश धरती पर, कोई भाग आसमान व धरती के मध्य और कुछ भाग धरती के नीचे गुफ़ा के भीतर उतरे।

अबू बक़र असफ़ैरी ने कहा–कि सम्पूर्ण कुर्आन का उतरना मक्का और मदीना में हुआ है, परन्तु ६ आयतें ऐसे स्थानों में उतरी हैं, जिन्हें न धरती और न आसमान ही कहा जा सकता है ।

हज़ली ने क़िताब कामिल में कहा है, कि कुछ आयतें आसमान पर उतरी तथा अनमर्रसूलो से अंतिम सूरत बकर तक कुर्आन का विशेष स्थान काबे कौसीन में उतरा ।

काबे-कौसीन-वह स्थान है, जहां मैराज की रात्रि को हज़रत मुहम्मद और ख़ुदा के मध्य अन्तराल दो कमान के निकट रह गया था ।

—:सप्तम प्रकरण: प्रथम आयत कौनसी ?:—

सर्व प्रथम कुर्आन की कौन सी आयत उतरी, कही जाती है । इस विषय में मुसलमानों में परस्पर अत्यधिक मत-भेद है । अत्यधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि आज तक मुसलमान यह निर्धारित भी न कर सके कि कौन सी आयत सर्व प्रथम उतरी है ?

१—बीबी आयशा, मुस्लिम, बुखारी और तिबरानी आदि का विचार है कि सर्व प्रथम "इकरा बे इस्मे रब्बेकल्लजी" आयत उतरी ।

२—शेख़ैन ने अबी सलमा बिन अब्दुर्रहमान से रवायत की है, कि मैंने जाबर बिन अब्दुल्ला से पूछा—कि कुर्आन का कौन सा भाग प्रथम उतरा ? जाबर ने उत्तर दिया 'या अय्योहल-मुद्दस्सिरो' । मैंने कहा–'या इकरा बे इस्मे रब्बेका' यह सुन

कर जाबर ने कहा–कि मैं तुमसे यह बात कहता हूं जो रसूलिल्लाह ने मुझसे कही थी.....इत्यादि ।

३—कई एक भाष्यकारों की सम्मति में सर्व प्रथम उतरने वाली सूरत 'फ़ातिहुल' किताब अलहम्द) है ।

४—वाहदी ने अकरमा और हसन से प्रमाणित कर के रवायत की है, कि कुर्आन में सर्व प्रथम 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्हीम' उतरा ।

सूरत मुद्दस्सिर को भी सर्व प्रथम उतरने वाली सूरत कहा गया है !!

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्र० ४ पृष्ठ ५८ से ६१

— अष्टम प्रकरण : कुर्आन का अन्तिम भाग —

जिस प्रकार कुर्आन की कौन सी आयत सर्व प्रथम उतरी । इसमें मुसलमानों में परस्पर मतभेद है । उसी प्रकार कुर्आन के अन्त में उतरने वाले भाग के विषय में भी उच्च कोटि के मुस्लिम विद्वानों में परस्पर विरोधाभास व मतभेद है ।

१—शेख़ैन बराआ बिन आजिन से रवायत करते हैं, कि कुर्आन में सब से अन्तिम उतरने वाली आयत 'यस्तफ़तून का लिल्लाहो' है ।

२—और यह भी कहा जाता है कि सबसे अन्त में उतरने वाली सूरत बरात है ।

३—बुखारी इब्ने अब्बास से रवायत करते हैं, कि अन्तिम आयत "आयतरिबा" थी, और बेहक़ी भी उमर से ऐसी ही रवायत करते हैं, कि "आयतरिबा" ही सबसे अन्तिम आयत है । इसका समर्थन बहुत से मुस्लिम विद्वानों ने किया है ।

४–निसाई अक्रमा के आधार पर इब्ने अब्बास से रवायत करते हैं, कि कुर्आन में सबसे अंतिम आयत "वत्तक़ू यौमन तुरजऊना फ़ीहे" है । इसका समर्थन भी बहुत से विद्वानों ने किया है ।

५–इसी प्रकार इब्ने जरीह व अबू उबैद ने कहा–कि अंतिम आयत "दीन" है ।

६–बीबी उम्मे सलमा ने कहा कि सबसे अंतिम आयत "फ़स्तजाबो लहुम रब्बोहुम' है ।

७–अंस ने कहा-कि अंतिम आयत 'फ़इन ताबू बा अकामु-स्सलाता' है,.....इत्यादि ।

तफ़सीर इत्तिकान, पृष्ठ ६५ से ७०

कुर्आन के रक्षक और समर्थन का दावा करने वाले मुसलमान अब तक यह भी न जान सके कि कुर्आन की सर्व प्रथम और सबसे अन्तिम आयत व भाग कौन से है, तो फिर सम्पूर्ण कुर्आन को एकत्रित या संकलित करने का दावा किस प्रकार व आधार पर स्वीकारा जा सकता है ?

— कुर्आन का हफ़्त क़रात या हफ़्त हरूफ —

अर्थात्

— कुर्आन का सात प्रकार से पढ़ा जाना —

यह एक बड़ा भ्रान्तिजनक सिद्धान्त है, कि कुर्आन का अध्ययन सात प्रकार से किया जाए । हरूफ़, अक्षरों को कहते हैं और क़रात, पढ़ने के ढंग को कहते हैं । इन दोनों वस्तुओं की धातुओं में आकाश-पाताल का अन्तर है । अक्षर परिवर्तित हो जाते हैं, किन्तु पढ़ने के ढंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । फिर न जाने क्यों हरूफ़ के साथ क़रात जोड़ा गया है और वह भी दोनों की संख्याएं ७ मान लीं ? यह एक अत्यधिक विचित्र विषय है ।

कुर्आन का यह विषय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और कुर्आन के स्वाध्यायी पाठकों को समझना आवश्यक है । अतः हम भी इस विषय को आरम्भ से ही पाठको के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं । यदि आपने इस विषय को जान लिया तो कुर्आन का पूर्ण ज्ञान आपको प्राप्त हो जाएगा और भली प्रकार आप समझ सकेंगे कि कुर्आन क्या वस्तु है !

अल्लामा सियूती लिखते हैं–कि यहाँ कुर्आन के सात अक्षरों के सिद्धांत को कथन करना अभिप्रेत है **'नुज़्ज़ेलल कुरआनु अला सब्अते अहरफ़िन"** अर्थात्–कि कुर्आन सात अक्षरों पर उतारा गया है।

अल्लामा ने हज़रत मुहम्मद के बड़े-बड़े साथियों के २१ नाम लिखे हैं । जिनमें इब्ने अब्बास, इब्ने मसऊद, उस्मान बिन

अफ़्फान, उमर बिन खत्ताब तथा अबू हुरैरा.....इत्यादि जैसे मान्यता प्राप्त हज़रत मुहम्मद के विश्वस्त सहयोगियों के नामों के उल्लेख से इस सिद्धान्त का स्पष्टीकरण किया है।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ १२०

अल्लामा ने "उबय्य बिन काब" की हदीस से यह सिद्ध किया है-कि मेरे खुदा ने मुझको (हज़रत मुहम्मद को) यह आज्ञा भेजी कि मैं कुरआन को एक ही अक्षर पर पढ़ूं। पस, मैंने खुदा से प्रार्थना की, कि मेरी उम्मत पर आसानी कर, फिर खुदा ने यह आज्ञा भेजी कि उसे (कुर्आन) सात अक्षरों पर पढ़ो।

तफ़सीर इत्तिफ़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ १२१

क्या कोई शिक्षाविद् या भाषाशास्त्री इस बात को स्वीकार कर सकता है कि एक ढंग से पढ़ने के स्थान पर सात ढंग से पढ़ना सरल होगा ?

हदीस का तात्पर्य स्पष्ट है कि कुर्आन को सात ढंगों से पढ़ा जा सकता है।

अल्लामा सियूती ने आगे निसाई से रवायत की है, कि हज़रत मुहम्मद ने कहा-कि जिब्रील और मेकाईल दोनों मेरे पास आए.....कि एक हरूफ (अक्षर) पर कुर्आन पढ़ो किन्तु मेकाईल ने कहा कि इसे और भी बढ़ाओ। यहां तक कि वह सात अक्षरों तक पहुँच गया, तदनन्तर मेकाईल चुप हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि इसमें सात करातें मुराद है।

इस पर अल्लामा ने लिखा है, कि कुर्आन में ऐसे

कल्मात बहुत कम है जो सात प्रकार पढ़े जाते हों। जैसे:— 'अब्दत्ताग़ूत' सात प्रकार नहीं पढ़ा जा सकता। परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक कलमा एक-दो-तीन या सात प्रकार तक पढ़ा जाता है।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्र. १६, पृष्ठ १२१

पूर्वोक्त हदीस में सात क़िराते करना ख़ुदा के हेतु कहा गया है किन्तु द्वितीय में मेकाईल के कहने पर जिब्रील ने पढ़ाई ऐसा लिखा है। दोनों हदीसों में परस्पर मतभेद एवं विरोध है।

इन सात क़िरातों (पढ़ने के ढंगों) को निम्न प्रकार समझाया गया है:—

१—कतीबा ने कहा—इसका प्रथम उदाहरण हरकत (मात्रा) का परिवर्तित होना है किन्तु सूरत और अर्थ में अन्तर नहीं आता।

जैसे—ला यूज़ारा की ये को पेश और ज़बर के साथ पढ़ना।

२—जिसमें फ़ेल (क्रिया) परिवर्तित हो जाता है। जैसे–बऊदा और बाएदो, माजी और सीग़ा अमर होने की स्थिति में। (इसमें अर्थ का अन्तर हो गया)

३—लफ़ज (शब्द) परिवर्तित हो जाए। जैसे—'नुनसिज़ोहा' वह है ज़े के स्थान पर रे का परिवर्तन। जैसे—'नुनसिरोहा'

४—किसी क़रीबुल मख़रज अर्थात् निकटस्थ स्थान से बोले जाने वाले दो अक्षरों में परिवर्तन होना। जैसे—"तलहिन" के स्थान पर ऐन हो जाना, जैसे "तलइन"।

५—तक़दीमो ताख़ीर—प्रारम्भ को अंत में और अंतिम शब्द को

प्रारम्भ में कर देना, जैसे जाअत सकरतुल मौते बिलहक़्क़े' के स्थान पर 'सकरतल हक़्क़े बिल मौते' अर्थात् शब्द मौत' को आगे-पीछे कर दिया ।

६-वह वाक्य, जिसका परिवर्तन न्यूनाधिकता के द्वारा हो । जैसे-'वज्जकरो वल उन्सा' के स्थान पर 'वा मा खलवज्ज करोवल उन्सा' कर दिया गया ।

७-वह परिवर्तन, जो किसी वाक्य को दूसरे वाक्य से परिवर्तित करने से उपस्थित हो । जैसे-कल ए मिल मनक़ूश, के स्थान पर 'कस्सुफिल मन्क़ूश'.....इत्यादि ।

क़ासिम बिन साबित ने इस उक्त क़ौल पर इतना और हाशिया चढ़ाया है, कि जिस समय किताबत लिखने कलामे खुदा की आज्ञा मिली थी, उन दिनों अधिकांश अरब निवासी लिखना नहीं जानते थे और न रस्मे खत (लेखन कला) से परिचित थे ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्र० १६, पृष्ठ १२१-१२२

आगे अबुलफ़ज़ल राज़ी के उल्लेख से लिखा है, कि कलाम, परिवर्तन की स्थिति में सात प्रकारों से अधिक नहीं हो सकता ।

१-इस्मों (संज्ञा) का एक वचन, द्विवचन और बहुवचन पुल्लिग और स्त्रीलिंग होने में विभिन्नता को प्राप्त होना, अर्थात् एक वचन, द्विवचन या बहुवचन हो जाए या इसके प्रतिकूल हो जाय और पुल्लिग, स्त्रीलिंग हो जाये व स्त्रीलिंग, पुल्लिग हो जाए ।

२—फ़ेलों की गर्दान अर्थात् धातु रूपावली का परिवर्तन अर्थात् भूत-भविष्य और आज्ञा, लिंग की स्थिति से ।

३—मात्राओं के कारण अर्थात् ३ मात्राओं आ और इ में परिवर्तन पाया जाना ।

४—न्यून और अधिकता का परिवर्तन करना ।

५—तक़दीम व ताख़ीर (आदि और अन्त) का परिवर्तन अर्थात् आगे का पीछे और पीछे का आगे हो जाना ।

६—'अब्दाल' जैसे - वा का या से परिवर्तन होना ।

७—लुग़ात (कोष) का परिवर्तन ।

उक्त सात प्रकार के परिवर्तन कहे हैं ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ १२२

आगे इन सातों प्रकार के उदाहरण है, ताकि इस विषय को भली प्रकार समझा जा सके ।

१—मात्रा बदल जाती है परन्तु अर्थ नहीं बदलते । जैसे-'अलबुख़लुन' चार प्रकार से पढ़ सकते हैं--बुख़लन, बुख़लिन, बुख़लुन और अलबुख़ल ।

२—'यह सैबुन' को 'यह सबन' पढ़ सकते हैं ।

३—या केवल अर्थो में परिवर्तन होता है । जैसे--'फ़तलक़्क़ा' आदमुमिर्रब्बेहिकलेमातिन' को 'कलेमातुन' भी पढ़ते हैं । इस स्थिति में शब्द का रूप परिवर्तित नहीं होता किन्तु अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

४—अथवा अक्षरों का परिवर्तन होना । जिस प्रकार तबलू (आज़माना) और ततलू (पढ़ना) ।

५—या अर्थ न बदले और परिवर्तित रूप हो जाए । जैसे--अस्सेरात 'स्वाद' से और अस्सेरात 'सीन' से । यहाँ सीन से 'स्वाद' बदल गया है ।

६—या फिर तक़दीम और ताख़ीर (आदि-अन्त) पहिले और पिछले में अन्तर हो, जैसे-'फ़यक्तेलुना' और 'यक्तलूना'।
७—या अक्षर की कमीबेशी हो, जैसे-'औसाँ' और 'वस्सा'

इब्ने जज़ी ने एक और सूरत भी कही है,-जैसे 'अलाकुल्ले कलबिन मुत कब्बरिन जब्बार' किन्तु इब्ने मसऊद ने इसे इस प्रकार पढ़ा है-'अलाकल बेकुल्ले मुतकब्बरिन' इसमें 'कलब' और 'कुल' में परिवर्तन कर दिया गया है।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १६, पृष्ठ १२३

आप कुर्आन की सात क़रात (पढ़ने का ढंग) या सात हुरुफ़ (अक्षरों) पर पढ़ने का तात्पर्य उपरोक्त उदाहरणों से भली-भाँति समझ गये होंगे। हमने जो उपरोक्त उदाहरण दिये हैं, उनके अर्थों में कितना पारस्परिक विरोध है, यह नहीं बताया है। इसलिये की हम इसी पुस्तक के अन्य भाग में कुरआन की प्रत्येक आयत पर विवेचना करेंगे और यह भी बताएंगे कि जो शब्द आयतों में बदले गये हैं उनके अर्थों में कितना अन्तर है।

यह सात करात का नियम कुर्आन की प्रत्येक आयत में प्रयुक्त किया गया है। जिसे हम अन्य भाग में ही बताएंगे, परन्तु उदाहरण के रूप में एक, तीन पंक्ति की सूरत, जिसे अलहम्द और कंज भी कहा जाता है, और यह भी कहा जाता है कि यह अर्श (सिंहासन) के खजाने से नीचे उतरी है। इस सूरत की बहुत बड़ी प्रतिष्ठा इस्लाम मानता है। इस सुरत में इस हफ़्त क़रात के कारण कितने परिवर्तन मुस्लिम विद्वान्

मानते हैं, सूरत में जहां से परिवर्तन होता है, उतना भाग हम लिखते हैं:—

"मालिके योमिद्दीन इय्याका नाबुदो वा इय्याका नस्तईन' एहदे नस्सिरातल मुस्तक़ीम सिरातल्लाज़ीना अन अमता अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम व लज्ज़वालीन ।"

तफ़सीर बैज़ावी व तफ़सीर मज़हरी और इब्ने कसीर आदि में पहिला परिवर्तन "मालिके योमिद्दीन" में है ।

तफ़सीर बैज़ावी और तफ़सीर मज़हरी व इब्ने कसीर पृष्ठ ३३ में है, कि आसिम याक़ूब और कसाई की क़रात में 'मालिक' है, और शेष कारियों (शुद्ध उच्चारण करने वालों)की क़रात में 'मलिक' है । यहाँ पर 'मालिक' और 'मलिक' के मीम को मशद्द (द्वित्व) पढ़ा है । जैसे:–'वर्रहीमुममलिक' अर्थात् मीम को द्वित्व किया गया है ।

तफ़सीर मजहरी पृष्ठ ५

द्वितीय अन्तर है–'इय्या कानाबुदो इय्या' का व्याकरण की दृष्टि मफ़ऊल (कर्म) वाकिया (प्रतिपादित) हुआ । यद्यपि उसका पद फ़ेल (क्रिया) और फ़ाईल (कर्ता) से पीछे है, किन्तु यहां प्रतिष्ठा-श्रेष्ठता और हसर (परिमाण) के लाभ के उद्देश्य से पहिले रखा गया है । इय्याका को इया का और हय्य का भी पढ़ा गया है । (हम अल्लामा काज़ी मुहम्मद सनाउल्ला महोदय से पूछते है कि नहव (व्याकरण) में विधान (कायदा) कहाँ पर लिखा है कि प्रतिष्ठा के उद्देश्य से कर्म को क्रिया कर्ता से पूर्व रखा जाए ।) अस्तु.....

इब्ने अब्बास ने कहा है, कि 'नाबुदोका' अर्थात् मध्यम पुरुष का अनुसरण किया गया है ।

आगे तफ़सीर में यह लिखा है कि "इय्याकानाबुदो वा इय्याका" के मध्य में जो 'वा' है। वह आतिफा अर्थात् दोनों वाक्यों की सत्ता को दृढ़ करने वाला है, किन्तु कई व्याख्याकारों का यह कथन है, कि यह 'वाव' हालिया है अर्थात् हाल की (अवस्था बतलाने वाला) के अर्थो में आने वाला है।

तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ १०

तफ़सीर बैजावी और तफ़सीर मज़हरी इब्ने कसीर में 'सिरात' शब्द में मतभेद लिखा है, अर्थात 'सिरात' को स्वाद से लिखना या 'सीन' से लिखना।

आगे 'अल्लाज़ीना' में भी मतभेद है। तफ़सीर बैज़ावी ने लिखा है कि 'अल्लाज़ीना' के स्थान पर 'मन' भी पढ़ा गया है। हमज़ा ने 'अलैहिम' को 'अलेहुम' पढ़ा है, अर्थात् ज़ेर की बजाय पेश।

आगे तफ़सीर मज़हरी, पृष्ठ १२ में "ग़ैरलमग़ज़ूबे' को "ललमग़ज़ूबे" पढ़ा है।

तफ़सीर बैज़ावी ने लिखा—कि 'लज़्ज़ालीन' को ग़ैर-ज़्ज़ालीन' भी पढ़ा गया है, अर्थात् 'ला' के स्थान पर 'ग़ैर'।

यह इसका (कुर्आन का) इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) और उसका हफ़्त क़रात है। शब्द-शब्द में मतभेद और अन्तर है। कोई कुछ पढ़ता है और कोई कुछ पढ़ता है ?

क्या जिब्रील ने हज़रत मुहम्मद को इसी प्रकार इस "अलहम्द" सूरत को पढ़ाया था ? यदि मुस्लिम विद्वानों के पास कोई प्रमाण हो तो प्रस्तुत करें। अन्यथा इतना मतभेद व

अन्तर होने पर कोई भी विवेकी मनुष्य कुर्आन को ख़ुदा का कलाम नहीं मान सकता

हम इन सबके अर्थों की विवेचना भाग २ में करेंगे। यह सात क़रातों का सिद्धांत क्यों गढ़ा गया ? इसको हम आगे के पृष्ठों में वर्णित करेंगे।

कहा जाता है कि जिब्रील ने एक ही हुरूफ पर कुर्आन पढ़ाया। हदीस इस प्रकार है:--

"अनिब्ने अब्बास अन्ना रसूलिल्लाहे.....काला इकरानी जिबरीलो अला हरफिन फ़राजेअतोह फ़लम अज़ल असतजीदोहू वा युज़ीदनी हत्ता इन्तेहा इला सब्अते अहरुफ़िन"

बुखारी किताब, फ़ज़ायुलुल क़ुर्आन, पारा २०
(अहमदी प्रेस लाहोर) पृष्ठ १२४

'आईना मज़हब सुन्नी के लेखक डा. नूर हुसेन ने उक्त हदीस लिखकर इस बात को प्रकट किया है कि शिया लोग हफ़्त क़रात को नहीं मानते।

उपरोक्त हदीस का सारांश:—हज़रत मुहम्मद ने कहा कि ज़िब्रील ने मुझे पहिले अरब के एक ही मुहावरे पर कुर्आन पढ़ाया। मेरे आग्रह करने पर सात मुहावरों पर पढ़ने की आज्ञा मिल गई।

ऐसा ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद ने कई प्रकार से लोगों को कुर्आन याद कराया। इससे अत्याधिक विभिन्नता हो गई। इस विभिन्नता को देखते हुए हज़रत मुहम्मद ने कह दिया कि मुझे सात ढंगों से पढ़ने की आज्ञा मिली है।

"आईना मज़हबे सुन्नी" के लेखक डा. नूर हुसेन ने एक महत्वपूर्ण बात "तारीख़ुल खलफ़ा" के प्रमाण से लिखी है कि

हज़रत अली का कुर्आन जो उतरने की तरतीब के अनुसार था, यदि वह हमारे पास पहुँचता तो वह कुर्आन वास्तव में इल्म (ज्ञान) का बड़ा ज़ख़ीरा (कोष) था।

हाशिया बुख़ारी, पारा २०, पृष्ठ १२७

'किताब फज़ायालुल कुरान' से यह इब्ने सीरीन की रवायत है। 'तारीख़ुल ख़ुलाफ़ा' का अरबी हवाला यह:-'लौ-असी बजालिकल किताबा काना फी है। इल्मुन' है।

यह हफ़्त क़रात हफ़्त और हुरुफ़ का विवाद कहां से प्रारम्भ हुआ। जब कि किसी मनुष्य को इस बात का ध्यान भी न था कि सात क़रात क्या वस्तु है? परन्तु अक्समात् एक घटना घटित हो गई, जिसे हज़रत उमर ने कहा है। यह हदीस बहुत तिस्तृत है, किन्तु इस सात क़रात के निर्णय हेतु निम्न घटना अत्यावश्यक है। अतः हम पूरी हदीस नीचे लिखते हैं:—

'अन ऊमरब्निल खत्ताब, कालासमेतोहिशामिब्ने हकीम यकरओ सूरतल फुर्कांने फ़ी हयाते रसूलिल्लाहे फ़ास्तमातो ले किराते ही फ़इज़ा हुवा यकरओ अला हुरूफिन कसीरतिन लम युकरे नीहा रसूलिल्लाहे फ़क्रित्तो उसाविरोहू फ़ल्लालाते फ़तसब्बरतो हत्ता सल्लमा फ़लब्बतोहूबिरदाएही फ़कुलतो मन अकरअका हाज़ें-हिस्सूरतल्लती समेतुका तकरओ काला शकरआनीहा रसूलुल्लाहे फ़कुलतो कज़ब्ता फ़इन्ना रसूलुल्लाहे कद अकरआनीहा अला ग़ैरे मा करातो फ़न्तलकतो बेही अकूदोहू इला रसूलुल्लाहे फ़कुलतो इन्नी समेतो हाज़ा यकरूओ बिसूरतिल कुरआने अला हुरूफिन लम युकरे नीहा फ़काला रसूलुल्लाहे अरसिलहो इकरा या हिशा-मा फ़करा अलैहिल किरअतल्लती समतोहू यकरओ फ़काल

रसूलुल्लाह सल्लमा कज़ालिका उन्ज़िलत सम्मा काला इकरा या उमर फ़करातुल करातत्तली अकरअनी, फ़काला रसूलुल्लाहे कज़ालिका उनज़ेलक, इन्ना हाज़ल कुरआना उन्ज़ेला अला सब्अते अहरूफिनफ़करउमा तयस्सरा मिन हो ।

तजरीदे बुख़ारी, किताब फ़ज़ाएले कुर्आन, भाग २

हदीस क्रमांक ६२४-६२५

पृष्ठ ३०४--३०५

अर्थात्—उमर बिन खत्ताब से रवायत है, कि मैंने हिशाम बिन हकीम को रसूलुल्लाह के जीवन काल में सूरत फ़ुरक़ान पढ़ते सुना । जब मैंने कान लगाकर सुना तो अक्समात् वह इससे अति अधिक अक्षर पढ़ रहें थे, जितने अक्षर पर वह सूरत मुझे रसूलिल्लाहे ने पढ़ाई थी । बस, तत्पर था कि में नमाज़ में ही उसका सिर पकड़ूं, परन्तु मैंने धैर्य रखा नमाज की समाप्ति तक । तत्पश्चात् मैंने उसको अपनी चादर में बांधा और कहा कि तुमको यह सूरत किसने पढ़ाई ? उसने उत्तर दिया-मुझे रसूलिल्लाहने पढ़ाई । मैंने कहा तुम झूठे हो, क्योंकि रसूलिल्लाह ने मुझे तुम्हारी करात (ढंग) के विरुद्ध पढ़ाई है । फिर मैं उसको रसूलिल्लाह की सेवामें लेगया और मैंने निवेदन किया, कि मैंने इसको सूरत फ़ुर्क़ान ऐसे अक्षरों के साथ पढ़ते सुना, जो आपने मुझे नहीं पढ़ाई । आपने कहा इसे छोड़ दो ! और कहा ऐ हिशाम ! पढ़ । उसने उसको उसी प्रकार पढ़ा, जैसे कि मैंने पहिले पढ़ते सुना था । तब रसूलिल्लाह ने कहा-यह सूरत इसी प्रकार पढ़ते सुना था । तब रसूलिल्लाह ने कहा-यह सूरत इसी प्रकार उतरी है । फिर मुझसे कहा-ऐ उमर ! तू पढ़ ! मैंने उसको उसी प्रकार पढ़ा, जिस प्रकार मुझे रसूलिल्लाह ने

पढ़ाई थी। बस, रसूलिल्लाह ने कहा-कि इसी प्रकार भी उतरी है, अतः यह कुर्आन सात अक्षरों पर उतरा है। इसमें जो सरल हो उसे पढ़ो !

बेचारे हज़रत उमर को क्या पता कि हज़रत मुहम्मद ने किसी को कुछ और किसी को कुछ और पढ़ाया। इस घटना से पूर्व किसी को कल्पना तक नहीं थी कि कुर्आन सात अक्षरों पर उतरा है ? क्योंकि जब हज़रत उमर को ही ज्ञात नहीं, जो कि हज़रत मुहम्मद के प्रत्येक समय के सहयोगी, मित्र और हमराज़ थे। इनसे अधिक और किसी को जानकारी हो ही नहीं सकती थी।

यदि हज़रत उमर को हपत क़रात का ज्ञान होता तो वह उस ग़रीब हिशामको चादर में बाधकर हज़रत मुहम्मद के पास क्यों लाते ? यह भी अच्छा हुआ कि उस बेचारे की जान बच गई। हज़रत उमर ने कहा-कि अत्यधिक अक्षर पढ़ रहा था, अर्थात् एकाध अक्षर का अन्तर नहीं था। हज़रत मुहम्मद ने लोगों को विभिन्न ढंगों से कुर्आन पढ़ाया था। अतः यह कह कर टाल दिया कि कुर्आन सप्त अक्षरों पर उतरा है।

इस बात के समर्थन में मिर्जा हैरत ने अपनी पुस्तक 'मुकद्दमा तफ़सीरूल फ़ुर्क़ान' में पृष्ठ २५ पर 'अलमिललौ वन्नाहल" के हवाले से लिखा है:—

'इन्नाना मुख़त लेफ़ूना फी करातेकिताबना फबाजु़ना यज़ीदो हरुफ़न वा लिसत्कहा फ़लैसा हाज़ा इखतलाफ़न बलहोवा इत्तिफाकुन मिन्ना सहीहुन.....' इत्यादि।

अर्थात्-कुर्आन जानने वालों का यह क़ौल है कि हम

मुसलमान अपनी किताब को पढ़ने में मतभेद व विरोध रखते हैं, कि कुछ लोग कम अक्षरों और कुछ लोग अधिक अक्षरों को प्रयुक्त करते हैं। वास्तव में यह मतभेद नहीं है, अपितु हमारा सबका एक मत इत्तिफ़ाक सही है। इसलिये कि वह अक्षर और वह ढंग निरन्तर पैग़म्बर तक पहुँचा है। बस, उस क़रात में से हम कोई भी क़रात पढ़ें, उचित है।

इस पर हम कहते हैं, कि उपरोक्त कथन से कुर्आन के इलहामी होने की सम्पूर्ण वास्तविकता प्रकट हो जाती है। क्या कोई ऐसी किताब भी इलहामी होने की अधिकारिणी है कि जिसे जो चाहे, जैसे पढ़ ले। इलहाम के तो शब्द निश्चित होते हैं, वह न्यूनाधिक नहीं किये जा सकते। जिस पुस्तक में अपनी इच्छा--बुद्धि से शब्द घटाये-बढ़ाये जा सकते हों, वह किसी भी रूप में ईश्वरीय ज्ञान नहीं कहला सकती।

हज़रत मुहम्मद ने स्पष्ट ही लोगों को विभिन्न ढंगों से कुर्आन पढ़ाया और जब कभी विवाद उत्पन्न होता तो यह कह कर टाल दिया जाता कि कुर्आन सात ढंग पर उतरा है।

आगे के पृष्ठों में हम हज़रत उस्मान के कुर्आन एकत्रित करने के सम्बन्ध में लिखेंगे, तो पूर्ण रूप से इस हफ़्त क़रात की वास्तविकता ज्ञात हो जाएगी। इस हेतु तफ़सीर इत्तिक़ान प्रकरण १६, प्रष्ठ १२८ से १३० तक पढे।

—:मिर्जा हैरत की पर्दापोशी:—

मिर्ज़ा हैरत ने अपनी पुस्तक 'मुकद्दमा तफ़सीरूल' फ़ुर्क़ान के पृष्ठ ३० पर लिखा है:—

'अखरजाहुल हाकिमो वल बेहकीयों अनिब्ने मसूउद अनिन्नबीये काला कानल किताबुल अव्वल युनज़लो मिन बाबिन वाहिदिन अला हरफ़िन वाहेदिन, वा नज़लल कुर्आना मिन सब्अ। अबवाबिन अला सब्अते अहरूफिन ज़जर वा अमर वा हलाल वा हराम, मुहकम वा मुतशाबह वा अमसाल ।

उपरोक्त हदीस का अर्थ यह है:—
कि हाकम और बैहकी ने इब्ने मसऊद से रवायत की है-कि रसूलिल्लाह ने कहा कि कुर्आन पहिले एक ही बाब और एक ही अक्षर पर उतारा गया और फिर सात बाब और सात अक्षरों को प्रयुक्त किया । जैसे-यज़र, अमर, हलाल, हराम, मोहकम मुतशावह और अमसाल । यह सात बाब मिर्ज़ा महोदय ने लिखे हैं ।

मिर्ज़ा महोदय ने इस बात पर आवरण डाला है कि सात करात का अर्थ अक्षरों; शब्दों और वाक्यों का परस्पर परिवर्तन होना नहीं अपितु यह लिखित सात विषयों का बयान करना है ।

सात प्रकार से कुर्आन का पाठ होने के कारण अत्यधिक विवाद उत्पन्न हो गया और लोग विभिन्न प्रकारों से कुर्आन पढ़ने लग गये । इसका वर्णन हम आगे के पृष्ठों में करेंगे ।

हज़रत मुहम्मद की इस सात करात वाली युक्ति को देखकर लोग इस पर बड़ा खतरा अनुभव करते थे, सो वैसा ही हुआ।

मिर्ज़ा हैरत देहलवी आगे यह निष्कर्ष निकालते है कि वास्तविक रूप से हरूफ़ के अर्थ तरफ (और) या वजह (कारण) के है, और कुर्आन में भी हरूफ़ का अर्थ वजह का आया है, जैसे :—

'वा मय्या बदुल्लाहा अल्ला हरफिन वाहिदिन ए अलावदिन वाहिदिन'

अर्थात्–खुदा की भक्ति करना है, वह एक हरफ़ अर्थात् एक वजह पर होनी चाहिये।

-:अब अल्लामा सियूति की भी सुनिये:-

अल्लामा सियूति ने, जैसा कि हम पूर्व लिख चके हैं, कुर्आन के, सात अक्षरों पर उतरने का बड़े बलपूर्वक समर्थन किया है; परन्तु उसके पश्चात् शीघ्र ही उस समय के लोगों ने देखा कि जिस किताब को हम खुदा का कलाम मानते हैं, उसका विभिन्न क़रात मानने के कारण वह विश्वास के योग्य नही, क्योंकि लोग कुर्आन, को कई प्रकार से पढ़ने लग गये। इस विभिन्नता को दूर करने हेतु एक व्यवस्था सोची, जिसे अल्लामा सियूति ने 'अबेदोतुस्सलमानी' के आधार पर इस प्रकार लिखा:—

कि कुर्आन की वह करात जो रसूलिल्लाह के साले बफ़ात में जिब्रील ने उनके सम्मुख प्रस्तुत की, वह यही करात है, जिसे हम सब लोग आज पढ़ते हैं और उसे उसने इस ढंग पर प्रस्तुत किया।

इब्ने अश्ता ने इब्ने सीरीन से रवायत की है, कि प्रतिवर्ष माह रमज़ान में रसूलिल्लाह एक बार कुर्आन का दौर (पाठ) किया करते थे, किन्तु जब उनकी वफ़ात (मृत्यु) का वर्ष आया तो ज़िब्रील ने उनको दो बार कुर्आन का दौर कराया। इसलिए उलमा (विद्वानों) का यह विचार है कि हमारी यह क़रात (जिसे हम आज कल पढ़ते हैं) अंतिम दौर के अनुसार है।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १७, पृष्ठ १३२

तफ़सीर इत्तिक़ान के उक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है, कि जिस कुर्आन को आज कल मुसलमान पढ़ते हैं, वह हज़रत मुहम्मद के वफ़ात के वर्ष में दो बार कुर्आन का दौर कराया गया था। इसमें से अंतिम बार जो कुर्आन दोहराया गया वही कुर्आन है, जिसे आज कल मुसलमान पढ़ते हैं।

यद्यपि प्रति वर्ष ज़िब्रील द्वारा हज़रत मुहम्मद को कुर्आन का दौर कराना प्रमाणयुक्त नहीं है, केवल कुर्आन के पढ़ने में जो विवाद पड़ गया था, उसको दूर करने हेतु कुछ लोगों की अपनी उपज है। हमारा कहना है कि कुर्आन की अन्तिम आयत उतरने के बाद हज़रत मुहम्मद कितने वर्ष जीवित रहे?

हम पूछते हैं, कि जब कुर्आन पूर्व में एक ही क़रात पर हज़रत मुहम्मद को पढ़ाया गया तो उन्होंने अति नम्रता-पूर्वक प्रार्थना की, कि मेरी उम्मत पर एक प्रकार की क़रात का पाठ अत्यन्त कठिन हो जायेगा, तो ख़ुदा से या ज़िब्रील से सात क़रातों पर कराया? इससे स्पष्ट है कि अपने जीवन-काल में जिस सात हरूफ़ और सात क़रात वाले कुर्आन का वह दौर

करते रहे, वह कुर्आन यह नहीं है, जिसे आज कल मुसलमान पढ़ते हैं । वास्तविक बात यह हैं कि वफ़ात के वर्ष में अन्तिम बार कुर्आन के दोहराने का बहाना बना कर वो जो विभिन्न प्रकारों से लोग कुर्आन को पढ़ते थे, उस विभिन्नता को दूर करना था ।

इस सात क़रात के सम्बन्ध में 'तफ़सीर हक़्क़ानी' के लेखक मौलाना अबू मोहम्मद अब्दुल हक़ हक़्क़ानी लिखते हैं, कि सात क़रात या सात हरूफ का तात्पर्य इस प्रकार है:--कि अरब के सात विख्यात कबीले थे, जिनकी भाषा के आधार पर सात हरूफ़ का विषय हज़रत मुहम्मद के समक्ष प्रस्तुत होता था। जिस पर हज़रत मुहम्मद ने आपत्ति प्रस्तुत कर उम्मत की सुविधा हेतु जिब्रील से आज्ञा मांगी। जिब्रील ने सात क़रात पर पढ़ने की आज्ञा दे दी ।

आज्ञा कैसे दी ? इसके सम्बन्ध में हक़्क़ानी ने जो उदाहरण दिये हैं, वह सरलता से समझ में आ जायेंगे । जैसे:-गुनहगार (पापी) को कुछ अरबी मुहावरों के अनुसार फ़ाजिर' कहते है और क़ुरेश के मुहावरों में फ़ाजिर को 'असीम' कहते हैं, तो उन लोगों को इस वाक्यानुसार 'इन्नात्वामुल असीम' के स्थान पर कुर्आन में 'इन्नात्वामुल फाजिर' पढ़ने की आज्ञा मिल गई थी ।

तफ़सीर हक़्क़ानी, मुकद्दमा अलूमुल कुर्आन पृष्ठ १४९

हम कहते हैं--कि यदि 'त्वाम्' के स्थान पर भी किसी कबीले के मुहावरे को प्रयुक्त करने की आज्ञा दी जाती तो आयत का रुप ही परिवर्तित हो जाता। इससे यह बात तो स्पष्ट हो गई कि लोगों ने हज़रत मुहम्मद की आज्ञा से खुदा के शब्दों को पृथक कर अपने शब्द जोड़ दिये। इससे प्रत्येक

मनुष्य इस परिणाम पर पहुँचता है कि ख़ुदा के शब्दों को पृथक कर अपने शब्दों को प्रयोग करने की आज्ञा देना ख़ुदा के इलहाम की अवहेलना करना. नहीं तो और क्या है ?

अल्लामा सियूति ने एक बात और भी. लिखी है, कि बग़वी अपनी किताब 'शरह अलसिना' में लिखते हैः—

कहा जाता है कि ज़ैद बिन साबित इस कुर्आन के अंतिम दौर से उपस्थित रहे थे । जिसमें बयान किया गया था कि कितना भाग, कुर्आन का मन्सूख़ हो गया और किस प्रकार शेष रहा और ज़ैद बिन साबित ने ही उससे रसूलिल्लाह हेतु लिख कर फिर उसे आपको सुना कर पढ़ा था । चूंकि ज़ैद बिन साबित उसी कुर्आन को मरते दम तक लोगों को पढ़ाते रहे थे, इसलिए अबू बक़र और ऊमर ने इस कुर्आन को विश्वस्नीय मान कर संकलित कर लिया और उस्मान ने उसे कुर्आन में लिखने की सेवा प्रस्तुत की ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ १३२

यह बात कहां तक सत्य है कि ज़ैद ने कुर्आन के अंतिम दौर को लिख लिया था ? इस बात को हम नीचे लिखते हैं ।

अल्लामा सियूति ने लिखा है, कि हज़रत मुहम्मद के साथी (सहाबह) इस बात पर एक मत हैं कि उस्मान का कुर-आन हज़रत अबू बक़र के लिखे कुर्आन के आधार पर था और सहाबह (हज़रत के साथियों) ने इस बात पर भी इत्ति फ़ाक़ (एकमत) कर लिया था, कि अबू बक़र के कुर्आन के अतिरिक्त और जहां कहीं कुर्आन का कोई भाग पाया जाये वह सर्वथा त्याज्य है ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १६, पृष्ठ १३१

मगर, जिस समय सहाबह ने देखा, कि उम्मत (मुस्ल

मानों) में विभिन्नता और विरोध बढ़ता जाता है। यदि उन्होंने कुर्आन की क़रात में केवल एक ही हुरूफ़ पर इत्तिफ़ाक (एकमत) न किया तो भविष्य में अत्यंत विषम समस्याएं उपस्थित हो जायेगी। इसलिए उन्होंने उस्मान के कुर्आन पर मतैक्य कर लिया।

अल्लामा सियूति लिखते हैं, कि इसमें कुछ सन्देह नहीं किया जाता कि अंतिम दौर में कुर्आन के बाज़ हिस्से (कतिपय भाग) मन्सूख (निरस्त) कर दिये गये थे। अतः इस बात पर भी सहाबह की सम्मति एकमत हुई कि अन्तिम दौर में जिस प्रकार कुर्आन के भागों का निश्चित होना प्रमाणित हुआ है, उसे लिख लिया जाये और उसके अतिरिक्त को छोड़ दिया जाये।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १६, पृष्ठ १३२

उपरोक्त बयान से यह स्पष्ट हो गया, कि मुसलमान भिन्न-भिन्न प्रकारों (क़रातों) से कुर्आन पढ़ रहे थे, (इसकी आगे और भी पुष्टि करेंगे) इस कारण उस समय के सहाबह ने सोचा कि यदि इसी प्रकार कुर्आन के पढ़ने में विभिन्नता रही तों इस्लाम का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा और कई प्रकार के झगड़े उत्पन्न हो जायेंगे तथा कुर्आन के अन्तिम दौर का नाम लेकर जिन बातों को वह कुर्आन में लिखना नहीं चाहते थे, उन बातों का अन्तिम दौर की ओट लेकर निरस्त (मन्सूख) कह कर निकाल दिया।

हम कहेंगे, कि यदि अन्तिम दौर में जिब्रील ने कुर्आन का कोई भाग निरस्त कर दिया था, तो हज़रत मुहम्मद ने

स्वयं ही उसकी घोषणा कर उसे कुर्आन से क्यों नहीं पृथक किया ? और हज़रत उस्मान की खिलाफ़त (शासन) तक उस पृथक किये जाने योग्य भाग को मुसलमानों में प्रचलित क्यों रखा ? इस बात को हम हज़रत उस्मान के कुर्आन एकत्रित करने के प्रकरण में लिखेंगे कि ऐसा क्यों और किस हेतु से किया गया ?

पहिले ऊपरी लिखित इस बात को लिखते है, कि क्या ज़ैद बिन साबित ने अन्तिम दौर का कोई कुर्आन लिखा था ? इस बात को मिथ्या प्रमाणित करने हेतु हम ज़ैद बिन साबित की ही एक हदीस प्रस्तुत करते हैं। जिसे बुखारी तथा मुज़ाहरे हक़ (मिशकात) किताब फ़ज़ायलुल्कुर्आन, भाग २ पृष्ठ २४४ पर लिखा है और उसी हदीस का अनुवाद अल्लामा सियूती ने तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८, पृष्ठ १५५ पर किया है। यह हदीस 'तारीखुल खुलफ़ा' में कुर्आन एकत्रित होने के सम्बन्ध में पृष्ठ ५७ पर लिखी है। हदीस निम्न प्रकार है:—

'अखरजल बुखारी अन ज़ैद बिन साबित, काला अरसला अबी-बकरिन मक्तले अहलिल यमामा फ़जेआ उमर बिन खत्ताब इन्दहू फ़काला अबू बकरो इन्न उमरा अतानो फ़काला इन्नल कतला कदिसतहर्रा यौमल यमामते बिन्नासे वा इन्नी लअखशा अंय्यस्त-हिरल कतला बिलकराए फ़िल मवातेने, फ़यज़हवो कसीरूम्मि-नल कुरआने इल्ला अंय्यजमऊहो व इन्नी लअरा अंय्यजम अल कुरआना काला अबूबकरो फकुलतो ले उमरिन कैफ़ाअफ़अलो शयअन लम यफअल हो रसूलुल्लाहे सल्लम फ़काला उमरो हुवा वल्लाहे खैरून. फलम यजल उमरो युराजअनी फ़ीहे हत्ता शरह-ल्लाहो लेज़ालेका सदरी फरऐतुल्लज़ी रआ उमरो काला ज़ैदून व उमरो इन्दहू जलेसुन ला यतकल्लमो, फ़काला अबूबकरू।

इन्नका शाब्बुन आकलुन व कद कुन्ना तकतबुन त्रहया लिरसूलुल्लाहे फतत्ताबेइल कुर्आना फ़ अजमओ हू फवल्लाहे लौ फल्लफ़नो नक़ल जबला मिनल जबाले मा काना असकलो अलय्यामिम्मा अमरनी बेही मिन जमइल कुर्आने, फकुलतो कैफा तफअलाने शयअन लम यफ़अ लो हुन्निबिय्यो, फ़काला अबूबकरून हुवल्लाहे खैरून फ़लम अज़ल अराजेही हत्ता शरहल्लाहो सदरी लिल्लाज़ी शरहा लहू सदरे अवोबकर व उमर फततब्बअतुल कुर्आना अजमअहू मिनरूक्काए वल अकताफे वल अशबे वा सदूरिर्रजाले हत्ता वजत्तो निन सूरतित्तौबा आयतैन मआ खज़ीमह बिन साबित लम अजद हुमा मआ गैरही, लकद जाअकुम रसूलुम्मिन अनफुसेकम इला आखिरेहा फ़कान तिस्सुहोफिल्लती जुमेआ फ़ीहल कुर्आनो इन्दा अबी बकर हत्ता तवफ़्फ़ा हुल्लाहो सुम्मा इन्दे उमर हत्ता तवफ़्फ़ा हुल्लाहो, सुम्मा इन्दे हफ़सह विन्ते उमर वा अख़रजा अबू याली अन अलय्यिन काला आजमुन्नासे अज़रन फिल मुसाहिफें अब बकरिन अन्ना अबा बकरो कान अव्वलो मन जमअल कुर्आना बैनल्लौहैने ।

उपरोक्त हदीस का अनुवाद अल्लामा सियूती ने तफ़सीर इत्तिकान में किया है । हम वहां से ही लिख रहे हैं:—

बुखारी ने अपनी हदीस सहीह में ज़ैद बिन साबित से रवायत की है:—अबू बक़र को यमामा के युद्ध में सहाबा (हजरत के साथी) शहीद होने के समाचार मिले और उसी समय उमर भी आपके पास आये ।

अबू बक़र कहते हैं, उमर ने मेरे पास आकर कहा–कि यमामा के युद्ध में अधिक कारिया ने कुर्आन (कुर्आन का पाठ करने वाले (कतल किये गए हैं और मुझे भय है कि भविष्य के

युद्धों में भी क़तल होते जायेंगे तथा इस प्रकार अधिकतर कुर्आन हाथों से जाता रहेगा। मेरी सम्मति है कि तुम कुर्आन को एकत्रित किये जाने की आज्ञा दो। मैंने उमर को उत्तर दिया जिस कार्य को रसूलिल्लाह ने नहीं किया, मैं उसे किस प्रकार करूं ! उमर ने कहा–ख़ुदा की सौगंध, यह बात उत्तम है। अभिप्राय यह कि वह मुझे बारम्बार कहते रहे, यहां तक कि ख़ुदावन्द करीम ने भी मेरा दिल खोल दिया और मैंने भी इस विषय में अपनी वही सम्मति निश्चित कर ली, जो उमर की थी।

ज़ैद बिन साबित कहते हैं—अबू बकर ने मुझसे कहा, तू एक बुद्धिमान युवक है और हम तुझको तोहमत (दोष) नहीं लगाते अर्थात् अच्छा समझते हैं, और तू रसूलिल्लाह का कातिबे (लिपिक) वही भी था। इसलिये अब कुर्आन की तफ़तीश (जांच) वा तहक़ीक (प्रमाणित) कर उसे एकत्रित कर ले। (ज़ैद कहते हैं) वल्लाह ! मुझको एक पहाड़ उसके स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर रख देने की आज्ञा होती तो यह बात मुझ पर इतनी बोझिल न होती, जिस प्रकार कुर्आन एकत्रित करने की आज्ञा मुझ पर शाक़ (कठिन) गुज़री और मैंने अबू बकर व उमर से कहा–कि तुम दोनों महोदय वह कार्य किस प्रकार कर सकते हो ? जिसे रसूलिल्लाह ने नहीं किया। अबू बकर ने उत्तर दिया-ख़ुदा की सौगंध, यह बात उत्तम है, और फिर वह निरन्तर मुझसे इस विषय में बारम्बार कहते रहें, यहां तक कि ख़ुदा ने मेरा दिल भी इस बात के लिए खोल दिया। जैसे कि अबू बकर और उमर का दिल खोला था। फिर मैंने क़ुर्आन की तलाश और खोज प्रारम्भ कर दी और उसे खजूर की शाखों, सफ़ेद पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों और लोगों के

सीनों से एकत्रित करना आरम्भ किया तथा मैंने सूरत तौबा के अन्त की आयतें 'लक़द जाआकुम रसूलुन' केवल अबी खज़ीमा अंसारी के पास से पाई व उनके अतिरिक्त और किसी से यह आयतें न मिल सकीं। वह मनकूल सहीफ़े (एकत्रित कुर्आन) अबू बकर के पास रहे, यहां तक कि उन्होंने वफ़ात पाई, तो फिर उमर ने उनकी सुरक्षा की और उमर की मृत्यु पश्चात वह सहीफ़े ज्यों-के-त्यों ही बीबी हफ़सा, उमर की पुत्री के पास रहे।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८, पृष्ठ १५४-५५

आगे अल्लामा सियूति ने लिखा:--

इब्ने अबी दाऊद ने 'किताबुल मुसाहिफ़' में अब्द खैर से सनद हसन (विश्वस्त प्रमाणिकता) के साथ रवायत की है-उसने कहा, मैंने अली को यह कहते सुना कि मुसाहिफ़ (कुर्आन) के विषय में सबसे अधिक फल अबू बकर को प्राप्त होगा। ख़ुदा ! अबू बकर पर रहमत (कृपा दृष्टि) करें कि वह प्रथम व्यक्ति है, जिन्होंने किताब अल्लाह को जमा किया।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८, पृष्ठ १५५

इस हदीस से वह सब बातें मिथ्या सिद्ध हो गई, जिनमें कहा गया था कि अन्तिम दौर जो जिब्रील ने हज़रत मुहम्मद से कराया, वह ज़ैद ने लिख लिया था और न कि कोई कुर-आन हज़रत मुहम्मद ने लिखवाया था।

यहां तो अबू बक़र और ज़ैद दोनों कह रहे हैं, और कोई कुर्आन हज़रत मुहम्मद ने नहीं लिखवाया और न ज़ैद से तथा न किसी और ने लिखा। अतः अन्तिम दौर में जिब्रील

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८, पृष्ठ १५४-५५

आ॰ अल्लामा सियूती ने लिखा:—

इब्ने अबी दाऊद ने 'किताबुल मुसाहिफ़' में अब्द खैर से र॰ हसन (विश्वस्त प्रमाणिकता) के साथ रवायत की है- ने कहा, मैंने अली को यह कहते सुना कि मुसाहिफ़ (क़ुर्आन) के विषय में सबसे अधिक फल अबू बकर को प्राप्त होगा खुदा ! अबू बकर पर रहमत (कृपा दृष्टि) करे कि वह प्रथम व्यक्ति है, जिन्होंने किताब अल्लाह को जमा किया।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८, पृष्ठ १५५

अब हदीस से वह सब बातें मिथ्या सिद्ध हो गई, जिसमें कहा गया था कि अन्तिम दौर जिब्रील ने हज़रत मुहम्मद को कराया, वह ज़ैद ने लिख लिया था और न कि कोई क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद ने लिखवाया था।

यहां तो अबू बकर और ज़ैद दोनों कह रहे हैं, और कोई क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद ने नहीं लिखवाया और न ज़ैद ने तथा और किसी ने लिखा। अतः अन्तिम दौर में जिब्रील ने हज़रत मुहम्मद से क़ुर्आन न तो दुहराया और न ज़ैद ने उसे लिखा, न कुछ निरस्त किया और न सात करात को समाप्त ही किया।

इस हदीस में यह भी आपने जान लिया कि ज़ैद ने कहां-कहां से क़ुर्आन एकत्रित किया। यदि किसी को संपूर्ण क़ुर्आन कंठस्थ होता, तो ज़ैद इस प्रकार खजूर के छिलकों, पत्थरों के टुकड़ों व विभिन्न लोगों से क़ुर्आन को एकत्रित न करता।

आगे अल्लामा सियूती ने इसी प्रकरण को निम्नानुसार लिखा है:—

अबू अबैद का क़ौल है—हदीस की इस्माईल बिन इब्राहीम ने, उसने अय्यूब व नाफ़ा से और नाफ़ा से इब्ने उमर ने।

कि इब्ने उमर ने कहा—निस्सन्देह, तुम लोगों में से कोई व्यक्ति यह बात कहेगा, कि मैंने सम्पूर्ण कुर्आन अखज़ (प्राप्त) कर लिया है। इस स्थिति में कि उसे यह ज्ञात नहीं कि सम्पूर्ण कुर्आन कितना था ? क्योंकि कुर्आन का अधिकतर भाग जाता रहा है ? परन्तु उस व्यक्ति को यह कहना चाहिए, कि निस्सन्देह, मैंने कुर्आन से इतना भाग प्राप्त (अखज़) किया है जो कि ज़ाहिर (विख्यात) हुआ है।

इसी रावी (व्याख्याकार) अबैद ने कहा है–कि हदीस की इब्ने अबी मर्यम से, अबी लहका से, उससे अबित असवद ने, उससे अरवह इब्ने ज़ुबैर ने, उससे आयशा ने – कि बीबी साहिबा ने कहा कि रसूलुल्लिाह के अय्याम (समय) में सूरत अहज़ाब २०० आयतों को पढ़ी जाती थी। फिर जिस समय हमने सूरत में से अतिरिक्त वर्तमान परिणाम (मिक़दार) के और कुछ नहीं पाया। (अब सूरत अहज़ाब में ७३ आयतें हैं।)

यही व्याख्याकर (रावी) कहता है – हदीस की हमसे इस्माईल बिन जाफ़र ने, उसने मुबारिक बिन फ़जाला से, उसने आसिम बिन अबिलनजव्वद से, उससे ज़र बिन ज़ैश से और ज़र बिन ज़ैश ने कहा कि उससे उबय्य बिन काब ने पूछा--तुम सूरत अहज़ाब को किसी प्रकार शुमार (गणना) करते हो ? ज़र

बिन ज़ैथ ने उत्तर दिया–७२ या ७३ आयतें। उबय्य बिन काब ने कहा–कि यद्यपि यह सूरत, सूरत बकर के मुआदिल (बराबर) थी (सूरत बकर में २८६ आयतें है) और यद्यपि हम इसमें आयतें रजम (पथवार) की आयत को करात पढ़ा करते थे। जुर ने पूछा कि आयत रजम क्या थी ? उब्बय बिन काब ने उत्तर दिया—कि यह:—

"इज़ा ज़ुनइशैख़ो इइशैख़तो फ़रजमूहुमा अल्बत्तो निकालन मिन ल्लाहे वल्लाहो अज़ीज़ून हकीम" थी (इसमें जिना (व्यभिचार) करने वालों को संगसार (-पथराव) करना लिखा है) और कहा है–कि हदीस का हमसे अब्दुल्ला बिन सालह ने, उससे लैसन, उससे खालिद बिनयजीद ने, उससे सईद बिन अबी हलाल ने उससे मर्दान बिन उस्मान ने और उससे अबी अमामा बिन सहल ने कि अबी अमामा की मामी ने कहा निस्सन्देह हमको रसूलुल्लाह ने आयते रजम यों पढ़ाई थी— 'अइशैख़ो वइशैख़तो फ़रजमूहुमा....' इत्यादि। [यह आयत अब कुर्आन में नहीं है]

फिर हदीस है– हदीस की हमसे इजाज ने, उससे इब्ने जरीह ने, उससे खबर दी मुझको इब्ने अबी हमीद से हमादा.... यूनस ने, उनसे कहा, मेरे बाप ने, जिसकी आयु ८० वर्षो की थी, कि मुझको बीबी आयशा के मुस्हिफ से पढ़ कर सुनाया:—

"इन्नल्लाहा व मलाएकते ही युसल्लूना अलन्नबिय्ये या अय्युहल्लज़ीना आमनू सल्लू अलैहे व सल्लमू तसलीमा वा अलल्ला ज़ीनायसेलूनस्सफ़ फ़ल अव्वला,' व्याख्याकार (राविया) ने कहा यह आयत उस्मान के मुसाहिफ़ (कुर्आन) में परिवर्तन से पूर्व यों ही थी। अब यह आयत कुर्आन, पारा २२ रकू ७/४ में ' सल्लमू तसलीमा ' तक है और शेष भाग ' वा अलल्ला

जीना। यसेलूनस्सफ़ूफ़ल अव्वला ' कुर्आन में नहीं है। और कहा—कि कई नाम हैं,

अबी वाकद लैसी ने कहा—रसूलिल्लाह की प्रवृत्ति थी कि जब आप पर कोई वहीं आती थी, तो उस समय हज़रत हमको उसकी तालीम (शिक्षा) दिया करते थे। पस, एक दिन मैं रसूलिल्लाह की सेवा में आया। आपने कहा, अल्लाह पाक इरशाद (आज्ञा) करते हैं :—

"इन्ना अनज़ललनमाले लिअमामिरसलाते वा ईताइज्जकाते वा लो अन्न लि इब्ने आदमा वादियन लअहब्बा अंय्यकूना इलैहिस्सानि व लो काना इलैहिस्सानी लि अहब्बा अंय्यकूना इलैहिमस्सालिसा वा ला यमलओ जौफ़ब्ने आदमा इल्लत्तराबो वा यतबुल्लाहो अला मन ताबा" (यह आयत भी कुर्आन में नहीं)

फिर हाकम ने मुस्तदरिक मे उबय्य बिन काब से रवायत की है, कि उन्होंने कहा मुझसे रसुलुल्लाह ने कहा, निस्सन्देह मुझे ख़ुदा ने आदेश दिया है कि मैं तुमको कुर्आन पढ़कर सुनाऊं। फिर आपने यह क़रात कही.—

"लम यकुनल्लाज़ीना कफरू मिन अहलिल किताबे वल मुशरेकीना वमिन लबकेते हेमाली अम्नब्ये आदमा अअला वादिय्यम्मिन मालिन फ़ आती हे सअला सानियन व इन्ना सअला सानियन फ़ आती है मलला सालिसन व ला यम्लओ जौ फब्ना आदमा इल्लत्तराबो व यतूबूल्लाहो अला मन ताबा व इन्नाज़ातद्दीने इन्दल्लाहिल हनीफ़िय्यतो गैरल यहूदिय्यते व लन्नसरानिय्यती वा मय्यामल खैरन फ़लय्यकफ्फरहू"

अबू अबैद ने कहा है .....हदीस की अबी मूसा अश-अरी ने कहा, कि एक सूरत, सूरत बरात के समान उतरी थी, परन्तु फिर वह सूरत उठाली गई और उसमें से इतना भाग सुरक्षित रखा गया :—

"इन्नल्लाहा सुयव्वयदो हाज़ल्लज़ीना बे अकवामे ला खलाका लहुम वा लौं अन्ना ले इब्ने आदमा वादियैंने मिम्मालिन लत-मन्ना वादियन सालसन वा ला यमलओ जौफ़ब्ने आदमा इल्ल-त्तराबो वा यतूबुल्लाहो अला मन ताबा"

इसी प्रकार इब्ने अबी हातम ने अबू मूसा अशअरी से रवायत की है, कि उन्होंने कहाकि हम एक ऐसी सूरत पढ़ा करते थे, जिसे हम बड़ी सूरतों में से एक के समान ठहराते थे। हम उसको भूले नहीं; किन्तु अतिरिक्त इसके कि मैं उसे इतना ही याद रख पाया :—

"या अय्यो हल्लाज़ीना ला तकूलू मा ला तकिअलूना लतुकतबो शहादन फ़ी आनकेकुम फ़तअलूना अन हा यौमल कयामते"

इसी प्रकार अबू उबैद ने कहा.....अद्दी ने कहा, उमर ने कहा, हम लोग पढ़ा करते थे– 'ला तरग़बू अन अबा एकुम फ़इन्नहु कुफ़्रून बेकुम'। फिर उन्होंने ज़ैद बिन साबित से पूछा–क्या यह आयत ऐसी ही है? ज़ैद ने उत्तर दिया-हां ऐसी ही है।

और इसी व्याख्याकार (रावी) का कथन है.....हदीस की नाफ़ेआ.....बवास्ता इब्ने अबी मलीका–की उमर ने अब्दु-र्रहमान बिन औफ़ से कहा, कि तुमको हम पर उतारी गई [illegible]

(किताब) में यह नही मिला- 'अन जाहेंदुकुमा जाहदकुम अव्वला मर्रतिन' क्योंकि हम इसको नहीं पाते हैं ? अब्दुर्रह-मान ने उत्तर दिया-यह भी मिन जुमला उन (आयतों) के साकित (निरस्त) हो गई है, जो कि कुर्आन से साकित (निरस्त) की गई है ।

फिर इसी रावी का बयान है कि हदीस को..... कि अबू सुफ़यान कलाई ने एक दिन मुसल्लमा बिन मुखलद अन्सारी से पूछा-कि वह दो आयतें कौन सी है ? जो कि मुस्हिफ़ (कुर्आन) में नहीं लिखी गई । किसी व्यक्ति ने उसकी बात का उत्तर नहीं दिया । जब कि उस जलसा (समूह) में अब्दुल कन्व व साद बिन मालिक भी उपस्थित थे । फिर स्वयं ही मुसल्लमा ने कहा :—

"इन्नल्ला जीनाआमनु व हाजरू वा जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहे बि अमवालेहिम वा अनफ़सेहिम अला उब्शिरू अन्तिमुल मुफ़लेहून, वल्लज़ीना अबूहुम वा नसरूहुम वा जावलू अनह मुसकोमल्ला जीना गज़बल्लाहो अलैहिम उलाएका ला तालमोनप सुम्मा उख-फ़िया सहुम्मिन कुब्वातन ओयुनिन जज़ाउरमबिमा कानू यामलून" (यह है दो आयतें, जो कुर्आन में नहीं है)

तिबरानी अपनी (पुस्तक) 'किताब कबीर' में इब्ने उमर से रवायत करता है, उन्होंने कहा-दो व्यक्तियों ने एक एक सूरत पढ़ी । जिसको स्वयं रसूलुल्लाह ने उन्हें पढ़ाया था । वह दोनों नमाज़ में उसी सूरत को पढ़ा करते थे । एक रात को वह दोनों नमाज़ पढ़ने खड़े हुए, तो उनको सूरत का एक हरफ़ (अक्षर) तक याद न आया । प्रातः रसूलुल्लाह के पास आकर उन दोनों ने समस्त माजरा (घटना) बयान किया । रसूलुल्लाह

ने सुन कर कहा-वह सूरत मन्सूख (निरस्त) हुई कुर्आन में थी। अतः तुम उसकी ओर से निश्चित हो जाओ।

[अच्छा] यह कुर्आन का चमत्कार ही सही, इसे फिर कभी देखेंगे, अभी तो इतना ही अभिप्रेत हैं, कि कुर्आन में सूरत थी जो निकाल दी गई।]

सही हैन [मुस्लिम व बुखारी] में अंस की रवायत से उन, बेरमऊनो' के असहाब [साथियों] के किस्से मे जो क़तल कर दिये थे और रसूलुल्लाह ने उन लोगों के कातिलों पर बद्दुआ (शाप) करने हेतु दुआये क़नूत, पढ़ी थी, वह बात लिखी कि अंस ने कहा कि उन कतल हुए लोगों के हेतु कुछ कुर्आन उतरा और हमने उसको पढ़ा भी, यहां तक कि उसे उठा लिया गया, और वह कुर्आन यह था कि-'अन्न बल्लग़ा अन्ना कौमना इन्ना लकीना रब्बना फ़रज़ा अन्ना व अरजना और मुस्तदरक में हज़ीफ़ा से रवायत है, कि यह जो तुम पढ़ते हो, उसकी एक चौथाई सूरत बक़र है।

हुसैन इब्नेलमनारी ने अपनी पुस्तक 'अन्नासिखों वल-मनसूख' में बयान किया है-कि मिन जुमला [मिश्रीत] उन वस्तुओं के जिनकी बिताबत [लिखित आयतें] कुर्आन से रफ़ा [उठा] कर ली गई है किन्तु उसकी याद दिलों से नहीं उठाई गई। नमाज़ वितर में पढ़ी जाने वाली कनूत (प्रार्थना की-आयत) की दो सूरतें है, और वह 'सूरतुल खसा, और 'सूर-तुल हकद है।

तफ़सीर इत्तिकान. प्रकरण ४७, पृष्ठ ६५ से ६६

हमने ऊपर इस बात को सिद्ध किया हैं कि कुर्आन से

कितना भाग जाता रहा, किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इससे अतिरिक्त और भी कितना भाग कुर्आन का पृथक् हो गया, ? क्योंकि जैसा हमने पूर्व में लिखा है कि ज़ैद ने कहां-कहां से कुर्आन संकलित किया। यह भी सम्भव है कि और भी कुर्आन हो, जो ज़ैद को न मिल सका हो ? किन्तु मुसलमानों का यह दावा, तो सर्वथा मिथ्या हो जाता है कि एक भी मात्रा कुर्आन से इधर-उधर नहीं हुई। अस्तु,

जो कुछ हमने ऊपर लिखा उसे भी सत्यान्वेषी सज्जन गण इस निष्कर्ष पर अवश्य पहुचेंगे, कि जो कुर्आन हज़रत मुहम्मद ने लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया था, उसका अधिकतर भाग वर्तमान कुर्आन में नहीं है। जो उद्धरण हमने उद्धृत किये है, उनके प्रमाण आयतों व पुस्तकों को पृष्ठ सख्या सहित संलग्न लिखे है, जो कि विद्वान् और विश्वस्नीय लोगों के प्रमाण है।

आगे जमा कुर्आन और नासिख-मनसूख प्रकरणों में यह विषय पुनः आपके सम्मुख आयेगा कि कितना कुर्आन पृथक किया गया है।

ज़ैद ने कहां-कहां कुर्आन एकत्रित किया, यह पूर्व में लिखा जा चुका है, किन्तु तफ़सीर इत्तिकान से इस विषय पर और भी प्रकाश डाला गया है। वह भी पढ़िये।

अब तफसीर अनवारुल कुर्आन का मत भी देख लें

तफसीर अनवारूल्कुर्आन सय्यद राहतहुसेन साहिब भोपाल पूरी लिखते हैं

कि आये दिन वर्त्तमान शासक केवल रसूल के पुत्रों को (रसूल के पुत्रों से तात्पर्य हज़रत फ़ातेमा की सन्तान है)

और रईस शीआ मज़हब होने का कारण उनकी हत्या के लिये तत्पर रहते थे तारीख अहलेबैत वा बनू उमय्या व बनू अब्बास,

और (वह लोग) जिस क़दर शक्ति पा सके हज़रत फ़ातमा की सन्तान की हत्या करने से न रुके-यहाँ तक कि सहस्रों निर्दोष सादात दीवारों में जीवित चुन दिये गये।

तफ़सीर अनवारूल्कुर्आन भाग १, पृष्ठ ३२

हज़रत अली के कुर्आन को रद्द कर दिया, हज़रत अबूज़र वर्णन करते हैं, (जो सत्य वक्ता थे) कि हज़रत अली ने कुर्आन एकत्रित किया-तो हज़रत मुहम्मद साहिब की वसिय्यत के अनुसार उसको महाजेरीन (देश छोड़ने वाले) और अनसार के समक्ष उपस्थित किया-जब खलीफ़ा प्रथम ने खोला तो वही पृष्ठ निकल आया जिसमें सुहाबा (हज़रत के साथियक-लोग) तथा कुरेश की निन्दा और अपकीर्ति लिखी थी, यह देख कर दूसरे खलीफ़ा बहुत क्रोधित हुये, और बोले-कि-ए अली हम को ऐसे कुर्आन की आवश्यकता नहीं और ज़ोर से कहा कि ऐसा कुर्आन बना जिसे में महाजरीन और अनसार की निन्दा निकाल डाल। तफ़सील अनवारुल्कुर्आन पृष्ठ १२२, १२३

कुर्आन से निकाले गये—

सुन्नत जमाअत के इमाम बग़वी लिखते हैं कि कुर्आन में सत्तर कुरैशी स्त्री पुरुषों और बनु उमय्या के नाम थे-जो निकाल दिये गये। पुस्तक वही पृष्ठ १२७

सुन्नत जमाअत के इमाम मुहय्युद्दीन अरबी किबरयात में लिखते हैं कि यदि (लोगों के (उस्मान की ओर से) बद गुमानी का भय न होता..... तो मैं उन कुल चीजों को वर्णन कर देता जो उस्मानी कुर्आन से निकाल दी गई। पुस्तक वर्णित पृ,१८७

हजरत अली से वर्णित है, कि कुर्आन चार भागों पर उतरा-एक भाग हम अहलेबैत के पक्ष में है और एक भाग हमारे शत्रुओं के सम्बन्ध में है इत्यादि। पूर्ववर्णित पुस्तक पृष्ठ १९८

लेखक तफ़सीर अनवारुल्कुर्आन पूछता है कि कुर्आन मजीद में हस्तक्षेप करने के अर्थात कमी बेशी करने के विषय में आप क्या कहते हैं वह आयतें जो अहले बैत (सन्तान बानो-फ़ातेमा) की प्रतिष्टा के सम्बन्ध में थी और उनके विरोधियों की निन्दा में थी, निकाल दी गई या शेष है यदि निकाल दी गई तो पहला प्रश्न यह है कि किस कदर निकाली गई और क्यों निकाली गई और किस ने निकाली, और निकालने वाला किस सलूक का अधिकारी है-- और दूसरा प्रश्न यह है कि वे अहले-बैत के शत्रु कौन ऐसे लोग हैं कि जिनकी निन्दा में दस-बीस-पच्चीस, सो दो सौ नहीं बल्कि १५५९ आयतें उतारी गई थी, उत्तर सप्रमाण और दलील के साथ होना चाहिये।

पूर्ववर्णित पुस्तक पृष्ठ २०१

आगे बड़ा लम्बा वर्णन है, पुस्तक से ही देखना चाहिये।

,तफ़सीर अनवारुल्कुर्आन पृ. १८-१९ पृ. २४-२५

-: ज़ैद ने कुर्आन कहां-कहां से जमा किया:-

इस विषय में तफ़सीर इत्तिकान ने लिखा है-कि ज़ैद बिन साबित की हदीस पूर्व में आ चुकी है, कि ज़ैद ने खजूर की शाखों के डंठलों और पत्थर के टुकड़ों से कुर्आन एकत्रित किया और एक रवायत में चमड़े के टुकड़ों से, दूसरी में शाना की हड्डियों से, तीसरी में पसली की हड्डियों से, और चौथी रवा-

यत में ऊँट की काठियों की लकड़ियों से कुर्आन का नक़ल किया जाना भी आया है।

रवायत के अलफ़ाज़ (शब्दों) में 'लिख़ाफ़' शब्द जो कि 'लख़्फ़ा' का बहुवचन है, उसका अर्थ पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़े हैं अर्थात ख़त्ताबी के अनुसार पत्थरों की पतली पट्टियाँ। 'अकताफ़' शब्द का अर्थ ऊँटों या बकरियों के शाना की हड्डियां होता है और 'इकताब' का अर्थ ऊँट की काठी कहा जाता है।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८, पृष्ठ १५८

उपरोक्त उद्धरण लिखने का अभिप्राय यह है-कि इतने साधनों और वस्तुओं से ज़ैद ने कुर्आन को एकत्रित किया, तो इस बात का क्या विश्वास कि ज़ैद ने सम्पूर्ण कुर्आन एकत्रित कर लिया होगा ? क्योंकि कोई सूची तो ज़ैद के पास थी नहीं कि इतनी अमुक अमुक वस्तुओं पर कुर्आन पंक्तिबद्ध और क्रमानुसार लिखा हुआ है।

उपरोक्त हदीस से भली प्रकार विदित होता है कि उस समय कोई भी एक व्यक्ति सम्पूर्ण कुर्आन का हाफ़िज़ (कंठस्थ करने वाला) नहीं था। यदि होता तो ज़ैद इतनी तलाश क्यों करता ? हां ! कुछ लोगों को कुर्आन के कुछ-कुछ भाग और कोई-कोई सूरतें याद थी।

ऐसी घटना भी हमारे सम्मुख आई, कि हज़रत आयशा से रवायत है कि दो आयतें, एक रजम (पथराव करने) और दोयम रज़ाअतल कबीर (बड़ों को दुध पिलाने की) कागद पर लिखी मेरे तख़्त के नीचे पड़ी थी। हम रसूलिल्लाह की वफ़ात (मृत्यु) में संलग्न थे कि घर की पालतू बकरी आई और कागद खा गई।

यह लिखने का तात्पर्य यह है, कि वे समस्त पत्थर हड्डियां झिल्लियां, चमड़े के और काग़ज़ के टुकड़े इत्यादि, जिन पर कुर्आन अंकित था। वे सब वस्तुएं एक संदूक में बद कर या किसी एक सुरक्षित स्थान पर नहीं रखी गई थीं। इस कारण यह नहीं कहा जा सकता कि कितना कुर्आन उपलब्ध हो सका और कितना नहीं ?

हम पूर्व में यह लिख चुके हैं कि सर्व प्रथम अबू बकर ने ज़ैद से कुर्आन एकत्रित करवाया किन्तु वह मुस्हिफ (कुर्आन) पहिले अबू बकर महोदय के पास और फिर हज़रत उमर, उनकी बेटी हफ़सा के पास पड़ा रहा। तत्पश्चात् किन परिस्थितियों वंश हज़रत उस्मान ने कुर्आन को नया जन्म दिया ?

हज़रत उस्मान ने मौजूदा कुर्आन को क्यों और कैसे एकत्रित किया ?

प्रथम इस बात की जानकारी आवश्यक है कि हज़रत उस्मान किन कारणों से कुर्आव को वर्तमान रूप में लाने हेतु विवश हुए ? हम ऊपर लिख चुके हैं कि हज़रत अबू बकर ने जो कुर्आन ज़ैद से लिखवाया वह उनके पश्चात हज़रत उमर के और उनकी बेटी बीबी हफ़सा के पास पड़ा रहा, किन्तु कुर्आन के पढ़ने वालो में परस्पर जो विभिन्नताएं थीं वे ज्यों की ज्यों ही प्रचलित ही न रहीं अपितु और भी बढ़ गई और उसने भयंकर रूप धारण कर लिया। जैसे :—

तफ़सीर इत्तिकान में है कि-हाकम का बयान है, और तीसरी बार कुर्आन का एकत्रित किया जाना यह था कि हज़रत उस्मान के समय में सूरतों को शृङ्खलाबद्ध किया गया।

बुख़ारी ने अंस से रवायत की है, यह हदीस अधिक लम्बी है। तफ़सीर इत्तिकान में उसका सम्पूर्ण अनुवाद है। इस हदीस का आरम्भ :—

'अन अनसब्ने मालिक इन्नाहु जैक़ातब्न लयमाने से वा अरसला अला कुल्ले उफ़्फ़िन बिमुसहफ़िन मिम्मा नसखू व अमरो बिमारिवहो मिनलकुर्आने फ़ी कुल्ले सहीफ़तिन औ मुसहफ़िन अंय्यहरका' मुज़ाहिरे हक़्क़ किताब फ़ज़ाएबुल कुर्आन, भाग २, पृष्ठ २४५

अल्लामा सियूति इस हदीस का अनुवाद लिखते हैं, कि अंस से रवायत है कि हज़ीफ़ा इब्ने यमान, उस्मान के पास आए, जो कि अरमीनिया व आज़रबाइजान के विजित युद्धों में शाम और अराक वालों के साथ थे उनको इन दोनों देशों के मुसलमानों की क़रात (कुर्आन पढ़ने) में इख़्तलाफ़ (मतभेद) रखना सख़्त परेशान बना चुका था। इसलिये उन्होंने उस्मान से कहा-तुम उम्मत (इस्लाम) की इस बात से, पहिले ही खबर ले लो, जब कि व यहुदी और ईसाईयों के समान परस्पर मतभेद रखने वाले न बन जायें। उस्मान ने यह बात सुनकर बीबी हफ़सा से वह मुस्हिफ़ (कुर्आन) इस शर्त पर मंगवा लिए कि नक़ल करके उन्हें पुनः लौटा दूंगा। उस्मान ने ज़ैद बिन साबित, अब्दुल्लाह बिन जुबैर, सईद बिन आप़ और अब्दुर्रहमान बिन हारस को उनको नकल करने पर नियुक्त किया और तीनों ने कर्शी साहिबों से कहा-कि जहाँ कहीं कुर्आन के शब्दों में तुम्हारे और ज़ैद के मध्य मतभेद उत्पन्न हो वहां उस शब्द को कुरैश ही की भाषा में लिखना, क्योंकि कुर्आन उन्हीं की भाषा में उतरा है।

फिर इन चारों ने संयुक्त रूप से उस्मान की आज्ञा का पालन कर दिया और उन लिखित मुस्हिफ़ों (कुर्आनों) में से एक-एक मुस्हिफ़ मुस्लिम देशों की प्रत्येक दिशा में भेज दिये तथा आदेश दिया कि इस मुस्हिफ़ के अतिरिक्त जैसे भी सहीफ़ेया मुस्हिफ़ पूर्व के उपलब्ध हो उन्हें सौख्त (जला) कर दिया जावे । .... इब्ने हजर का कथन है कि यह उक्त कार्यवाही हिजरी २५ में हुई । तफ़सीर इत्तिकान. प्रकरण १८ पृ १५९

तफ़सीर इत्तिकान के लेखक अल्लामा सियूति का इस विषय में दूसरा बयान:—

इब्ने अशता ने अय्यूब के आधार पर अबी कुलाबा से रवायत की है । उसने कहा-मुझसे अन्स बिन मालिक नामक, बनी आमर एक व्यक्ति ने कहा कि उस्मान के अहद (समय) मे कुर्आन के भीतर इस प्रकार मतभेद बढ़ गया । जिसके कारण पढ़ने वालों बच्चों और मुअल्लिम (अध्यापक) लोगों के मध्य तलवारें चल गई । उस्मान को यह समाचार पहुंचा तो उन्होंने कहा कि-लोग मेरे सामने ही कुर्आन को झुठलाने और भूल करने लगे तो सम्भवतः जो मुझसे दूर होंगे वह उनकी निस्बत कहीं अधिक झुठलाते और त्रुटियां करते होंगे । ऐ मुहम्मद के साथियों ! सब एकत्रित हो जाओ और लोगों के हेतु इमाम (कुर्आन) लिखो । फलस्वरूप सब साथियों ने एकमत हो कर कुर्आन लिखना प्रारम्भ किया । जिस समय किसी आयत के विषय में मतभेद और विवाद (झगड़ा) उत्पन्न हो जाता तो वह आयत जिस व्यक्ति को रसूलुल्लाह ने पढ़ाई थी, उसको बुला कर आयत लिखने का निर्णय होता ।

इब्ने अबी दाऊद ने मुहम्मद बिन सीरीन के आधार

पर कसीर अफ़लह से रवायत की है, कि जिस समय उस्मान ने मुसहिफ़ों को लिखवाने का विचार किया तो उन्होंने १२ पुरुष कुरैश और अनसार के एकत्रित किये । फिर कुर्आन सहीफ़ों का वह सन्दूक मंगवाया, जो हफ़सा के घर में था । सन्दूक आने पर उस्मान ने लिखने वालों की निगरानी अपने ज़ुम्मे ली और जब किसी बात पर मतभेद हो जाता तो ऐसे व्यक्ति की तलाश में रहते जो अन्तिम दौर के समकालीन होता, फिर उसके कथनानुसार निश्चय होता ... .

अली ने कहा, कि वजुज़ कल्मए ख़ैर के और कुछ न कहो, क्योंकि वल्लाह उन्होंने मुसाहिफ़ में जो परिवर्तन किये वह सबकी सर्वसम्मति से किये । उन्होंने हमसे कहा कि-तुम लोग कुर्आन की क़रात के विषय में क्या कहते हो ? मुझे समाचार मिले हैं कि कुछ लोग दूसरों से कहते हैं, मेरी क़रात तुम्हारी क़रात से उत्तम है, और यह बात लगभग कुफ़्र के समान है । हम लोगों ने कहा फिर आपकी सम्मति क्या है ? उस्मान ने उत्तर दिया कि--मुझको तो यह बात उचित ज्ञात होती है कि समस्त मुसलमानों को एक ही कुर्आन पर एकत्रित कर दिया जाये, ताकि फिर अन्तर और मतभेद उत्पन्न न हो सके । और हम लोगों ने कहा-तुम्हारी सम्मति सर्वश्रेष्ठ है ।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८, पृष्ठ १६०-१६१

(देखिये, खुदाई ज्ञान लिखा जा रहा है या पंचायत के निर्णय से उत्पन्न विरोध की शांती हेतु लेखन किया जा रहा है ।)

-: उस्मान द्वारा एकत्रित कुर्आन का अबू बक़र के कुर्आन से अन्तर :--

उस्मान द्वारा एकत्रित कुर्आन का यह रूप हुआ कि

जिस समय क़रात के परिणाम स्वरूप अत्यधिक मतभेद फैल गया और यहां तक स्थिति बिगड़ गई कि लोगों ने कुर्आन को अपनी--अपनी भाषाओं में पढ़ना प्रारम्भ कर दिया .....तो इसका परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों में से प्रत्येक भाषा के लोग अन्य भाषा वालों को बरसरे (आमने--सामने) गलत बताने लगे और इस विषय में घोर कठिनाईयां उत्पन्न होने और बात बढ़ जाने का भय उत्पन्न हो गया। इसलिये उस्मान ने कुर्आन के सहुफ़ को एक ही मुसहिफ़ में सूरतों की तरतीब के साथ एकत्रित्र कर दिया (यह सूरतों की तरतीब भी हज़रत उस्मान की है) और समस्त अरबी भाषाएं छोड़कर केवल कुरैश की भाषा पर ही इक्तफ़ा (सीमित) कर ली।

इस बात हेतु उस्मान यह तर्क लाये कि कुर्आन का उतरना वास्तव में कुरैश ही की भाषा में हुआ है। यद्यपि प्रारंभ में दिक़्क़त और मुश्किल को दूर करने हेतु उसकी क़रात अन्य भाषाओं में भी करने की गुंजाइश दे दी गई थी, परन्तु अब उस्मान की सम्मति में वह आवश्यकता मिट चुकी थी। इस कारण उन्होंने कुर्आन की करात का आधार केवल एकही भाषा में कर दिया। तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १८ पृ. १६१

आपने कुर्आन की वास्तविक स्थिति देख ली कि २५ वर्षों में ही कुर्आन की दशा कैसी बिखर गई। उस समय तो हज़रत मुहम्मद ने यह कह कर कि कुर्आन सात अक्षरों पर उतरा है, उस बेचारे हशाम के प्राण उमर से बचा लिये परन्तु यह नहीं सोचा कि विभिन्न ढंगों से और विभिन्न वाक्यों में पढ़ने का परिणाम क्या होगा ? यदि उस्मान न सम्हालते तो हत्याओं का बाज़ार गर्म हो जाता और स्थान-स्थान पर झगड़े पड़ जाते।

- बीबी हफसा के पास जो कुर्आन था, वह भी जला दिया :-

जैसा कि हम तफ़सीर इत्तिकान के विवरण से अतिरिक्त में लिख चुके हैं, कि हज़रत उस्मान ने जब अपने कुर्आन लिखवा कर मुस्लिम देशों को भेजे, तो साथ में यह आदेश भी लिख भेजा कि इसके पूर्व जो सहीफ़े आपके पास है, वह समस्त जला दिये जायें। वह तो जल गये किन्तु बीबी हफ़सा का कुर्आन न जल सका।

जब मदीना का हाकिम मर्दान हुआ तो उसने बीबी हफ़सा से कुर्आना मांगा, परन्तु उसने नहीं दिया। जब बीबी हफ़सा की मृत्यु हो गई तो उसके भाई अब्दुल्लाह बिन उमर से लेकर वह सहीफ़ा भी जला दिया।

हाशिया बुखारी, पारा २०, पृष्ठ १८३ किताब
फ़ज़ायबुल कुर्आन. मज़ाहरे हक़, भाग २

—: देखिये-कुर्आनों की होली :—

१ तारीख खमीस मतबुआ मिसर, भाग २, पृष्ठ ३०४
२ सवाअके मुहतरका इब्न हजर मक्की मतबूआ मिसर, पृष्ठ १०१
३ रोज़तुल अहबाब मतबूआ, तेग बहादुर लखनऊ, भाग २ पृष्ठ २२६,
४ मिशकात मतबूआ मुहम्मदी देहली, पृष्ठ १५०
५ मिशकात मतबूआ अमृतसर, किताब फ़ज़ाएलुल कुर्आन, रूबा २ पृष्ठ १३१
६ तर्जुमा तारीख आसम कूफ़ी मतबूआ बम्बई, पृष्ठ १४७,

और

७ डा. हाजी नूरहुसैन आईनए मज़हब सुन्नी, पृष्ठ ११३ आदि में आप कुर्आनों में जलने-जलाने के विषय में सविस्तार सामग्री प्राप्त कर सकेंगे।

अब ख़ुदाई इलहाम (ईश्वरीय-ज्ञान) की होली हो गई और जो कुछ पूर्व लिखित थे, यहां तक कि जो हज़रत अबू बक़र ने लिखवाया था, उसको भी जलाकर हज़रत करात के सिद्धांत को भस्मीभूत कर दिया।

अब कहां गई वह आयत ? कि "हमने इस कुर्आन को उतारा है और हम ही इसके निगहबान हैं" यह निगहबानी यदि समाप्त न की जाती और उसकी प्रतीक्षा की जाता तो न जाने कितने कुशतो ख़ून (हत्यायें) होते और कितना फ़ितना फ़साद (झगड़ा) फैल जाता।

अब इस होली के पश्चात् कुर्आन के विषय में एक बात और रह गई है, जिसके कारण अब भी क़ारियों (कुर्आन को पढ़ने वालो) में पर्याप्त मतभेद हो गया है। वह बात आगे पढ़िये।

हज़रत उस्मान के कुर्आनों में ऐराब [मात्राएं] आदि न थे !

जब कुर्आन क़ुरैशी मुहावरों में लिखकर समस्त देशों को भेजे गये तो लोग उसके पाबन्द (आबद्ध) हो गये किन्तु उस समय की लिपि में ऐराब (मात्राएँ) न थे और न जुमलों (वाक्यों) पर ठहरने के चिन्ह (पूर्ण विराम) दिये गये थे तथा कुछ अक्षर मात्राओं ही के अधीन होकर लिखे जाते थे।

जैसे—मलिक में मात्रा न हों तो मुलक-मलक जो चाहे सो पढ़ लें।

अन्तिम दौर के सहाबा (मित्रों) इस कार्य की पूर्ति हेतु मतवज्जा (आकर्षित) हो गये और प्रत्येक प्रसिद्ध स्थान पर ऐसे विद्वान् पहुंच गये जो कि ठीक-ठीक पढ़कर सुना दिया करते थे ..... एक जुमले (वाक्य) को दूसरे जुमले में मिला देने से अन्य अर्थ उत्पन्न हो जाता है। इत्यादि,

सहाबा में बड़े सात क़ारी (कुर्आन को ठीक पढ़ने वाले) यह थे-- (१) उस्मान (२) अली (३) उब्बय बिन काब (४) ज़ैद बिन साबित (५) अब्दुल्लाह बिन मसऊद (६) अबू दरदा, और (७) अबू मूसा अशअरी।

फिर इन्हीं बड़े सातों क़ारियों के शिष्य प्रसिद्ध नगरों में फैले और अपने अपने उस्तादों के सिद्धांत के अनुसार पढ़ने-पढ़ाने लगे ।

इसके पश्चात् एक दूसरी बात और ध्यान देने योग्य है कि-जिस प्रकार इन क़ारियों ने लबौलहज्जा (शैली) आदि उसूर (क्रम) को उचित कहा। इसी प्रकार कतावत (लेखन) की रक्षा हेतु उसी युग में विद्वानों का एक समूह उठा और उन्होंने समस्त कुर्आन के एराब (मात्राएँ) लगा दिये और औकाफ़ (पूर्ण विराम) निश्चित कर दिये तथा ठहरने के आवश्यक ज़ाइज व नाजाइज़ ।उचित व अनुचित स्थान भी बता दिये और उन पर चिन्ह स्थापित कर दिये। इत्यादि

तफ़सीर हक़्क़ानी मुअल्लफा अल्लामा मौलाना
अबू मुहम्मद अब्दुल हक़्क़ हक़्क़ानी देहलवी
मुकद्दमाए तफसीर हक़्क़ानी, पृष्ठ १४६ से १५१

फिर आगे लिखा है कि--कंठस्थ करने वालों को सुविधा

हेतु कुर्आन को ३० भागों में बांट कर जुज़ या पारे बना दिये। प्रत्येक पारे के चार भाग किये और फिर, रकूअ की आयत पर चिन्ह लगाये... .....इत्यादि। मुकद्दमा हक़्क़ानी पृष्ठ १४६

इससे यह ज्ञात हुआ कि कुर्आन में जो यह सब चिन्हादि पाये जाते हैं, यह मुस्लिम विद्वानों के मस्तिष्क की उपज है? पहले कुर्आन में इस प्रकार की व्यवस्थाएं नहीं थी।

कुर्आन की सूरते-आयतें-वाक्य व अक्षर

अल्लामा सियूति ने तफ़सीर इत्तिक़ान में इस विषय पर प्रकाश डालते हुए लिखा है :—

जिन लोगों का सहमत होना मान्य है, उनके अनुसार कुर्आन में १४४ सूरतें हैं।

अबू शैख ने अबी रौक से रवायत की है—कि अनफ़ाल और बरात दोनों एक ही सूरत है। इस पर भी अल्लामा ने अनेक लोगों के मत दिये है और इस हिसाब से ११३ सूरतें होती है।

इब्ने अब्बास ने कहा—मैंने अली से पूछा-कि बरात में बिस्मिल्लाह क्यों नहीं लिखा गया। उन्होंने कहा-इसलिये कि वह अमान और बराअत है, जो तलवार के साथ उतरी है।

अल्लामा सियूति ने मालिक की रवायत से लिखा, कि जिस समय इस सूरत (बराअत) का प्रारम्भिक भाग साकित (जाता रहा, समाप्त हो गया या गिर गया) हुआ तो बिस्मिल्लाह भी उसके साथ निकल गया, क्योंकि यह अमर सिद्ध हो चुका है कि सूरत बराअत भी सूरत बकर के हमपल्लाह (बराबर) थी।

आगे अल्लामा ने लिखा, कि इब्ने मसऊद के कुर्आन में ११२ सूरतें ही हैं, क्योंकि वह मऊज़तैन को कुर्आन में लिख॥

उचित नहीं समझता था। (मऊज़तैन वर्तमान कुर्आन की अन्तिम दो सूरतें हैं) उबय्य के कुर्आन में ११६ सूरतें हैं। इसलिये कि उन्होंने कुर्आन के अन्त में अल हक़द और अम खला नामक दो सूरतें बढ़ा दी है। तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण १९, पृ. १७४

अबू उबैद, इब्ने सीरीन से रवायत करता है, कि उबय्य बिन काब ने मुसहिफ़ में अल्हमद-मऊज़तैन-'अल्लाहुमा इन्ना नस्तईनुका, अल्लाहुमा इय्याका नाबुदो' लिखा है (यह दोनों आयतें आगे लिख रहे हैं) और इब्ने मसऊद ने उनको छोड़ दिया है। फिर उस्मान ने उन्हीं में से अल्हमद और मऊज़तैन सूरतों को अपने मुस्हिफ़ में लिखा है।

तिबरानी ने किताबुद्दुआ में कतिपय रावियों (व्याख्याकारों) के वचन लिख कर अब्दुल्लाह बिन ज़ीरुल ग़ाफ़की का कथन लिखा है, कि मुझसे अब्दुल्मलिक बिन मखान ने यह बात कही कि मुझे ज्ञात है कि तू किस कारण से अबो तुराब से प्रेम करता है।..... मैंने उत्तर दिया–ख़ुदा की शपथ ! मैंने उस समय कुर्आन एकत्रित किया, जब कि तेरे माता-पिता एकत्रित भी नहीं हुवे थे और उस कुर्आन में से दो सूरतें मुझे अली बिन अबी तालिब ने सिखाई। उनको रसूलुल्लाह वे विशेष रूप से तालीम (बतलाई) दी थी।..... वह सूरतें यह हैं :—

"अल्लाहुम्मा इन्ना नस्तईनोका वा नस्तग़फ़िरोका वा नुस्नी अलैकल वा ला नक्फ़ुरोका वा नख़लओ वा नतरको मंय्यफ़जुरूका"

और

"अल्लाहुम्मा इय्याका नाबुदो व लका नुसल्ली वा नस्जुदो वा अलैका नस्आ वा नहखिदो वा नर्जू रहमतका वा नख़सा अज़ाबका इन्ना अज़ाबका बिल कुफ़्फ़ारे मुल्हिक"

(यह वही दो आयतें हैं, जो उबय्य बिन काब ने अपने कुर्आन में लिखी हैं और अन्य कुर्आनों में नहीं हैं ।) इस कारण कुर्आन की सूरतों में अन्तर है । आगे उपरोक्त दोनों सूरतों के हेतु कई प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि उक्त दोनों सूरतें भी पढ़ी जाती थी ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १९, पृष्ठ १७५

उबय्य ने सूरते फ़ील और लईलाफ़े दोनों को एक ही सूरत गिना है । इस कारण उसके कुर्आन में ११५ सूरतें है, और हजली की किताबुल कामिल में आया है, कि जफ़र सादिक ने वज़्ज़हा और अलम नशरह दोनों सूरतों को एक ही सूरत गिना है । अन्स ने कहा–कि जो हम में से दो सूरते पढ़ लेता, वह हम में प्रतिष्ठित गिना जाता है ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १९, पृष्ठ १७६–१७७

बैहकी और अबू दाऊद ने अल मरासील मे खालिद-बिन अबी इमरान से रवायत की है, कि जिस समय नबी सलअम ने नमाज़ की स्थिति में मज़र जाति के हेतु कनूत पढ़ कर बद्दुआ करने का क़सद [प्रयास] किया तो उस समय जिब्रील न वह सूरत इन्ना नस्तईनुक करीमा' आयत के साथ उतरा ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १०, पृष्ठ १७६

कुर्आन की सूरतों के विषय में आपने देखा कि हज़रत उस्मान के द्वारा एक कुर्आन प्रचलित करने तथा शेष अन्य समस्त कुर्आनों को जला देने के पश्चात भी सूरता क सम्बन्ध में मुसलमानों क मध्य मतैक्य स्थापित न हो सका ।

—: कुर्आन की आयतों का संख्या :—

आयत क्या है ? किसी का कौल है, कि आयत कुर्आन

का वह भाग है, जो अपने से पूर्व और पश्चात् वाले भाग से पृथक हो ... ...।

ज़मख़शरी का कथन है--कि आयत का ज्ञान एक तौफ़ीकी इल्म [स्वशक्ति विद्या] है, जिसमें क़यास को कुछ दख़ल नहीं।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १९, पृष्ठ १७८-७९

इब्नुल फ़रीस ने उस्मान बिन अता के आधार पर उसके पिता के उल्लेख से इब्ने अब्बास से रवायत की है, कि कुर्आन की कुल आयतें ६ हजार ६ सौ १६ हैं।

अद्यानी का कथन है, कि भूतकाल के समस्त विद्वानों का मतैक्य हैं कि आयतों की संख्या ६ हजार हैं और फिर अधिक होने के सम्बन्ध में उनका मतभेद हो गया है। कुछ लोगों ने संख्या अधिक नहीं मानी और कुछ लोगों ने २ सौ ४ आयतें अधिक कहीं हैं।

वैलमी ने किताब मसनदुल फ़िर्दोस में ..... इब्ने अब्बास से मरफूअन रवायत की है, कि स्वर्ग-द्वार कुर्आन की आयतों के समान है और कुर्आन में ६ हजार २ सौ १६ आयतें है। तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण १९, पृ. १७९

तफ़सीर हक़्क़ानी प्रकरण १९, पृष्ठ १८१ में समस्त आयतों की सूचि भी लिखी है।

सम्पूर्ण कुर्आन में सूरतें ११४ और आयतें जमहुर के अनुसार ६ हजार ६ सौ ६६ है, और कूफ़ा ने ६ हजार २ सौ ३६, मदीना वाले ने ६ हजार २ सौ १४ कही हैं।

मुकद्दमए तफ़सीर हक़्क़ानी, पृष्ठ १५१

मिर्ज़ा हैरत देहलवी ने मुकद्दमा तफ़सीरुल फ़ुर्क़ान में पृष्ठ ३५ पर ६ हजार ६ सौ ६६ आयतें ही लिखी है, और

मलिक दीनमुहम्मद ने अपने कुर्आन में पृष्ठ ३७ पर एक चित्र दिया है, उसमें आयतों की संख्या इस प्रकार आयतें बसरी ६२२६, आयतें, शामी ६२५०, आयतें मक्की ६२१२, आयतें अराकी ६२१४ और आयतें आमा ६६६६ लिखी है।

हम कहेंगे कि यह अन्तर कैसे भी हुआ। किन्तु मुसलमान इस अन्तर को भी निकालकर एकमत न हो सके और विभिन्न मार्गों से संख्या आंकी और कही।

मुस्लिम विद्वानों में आयतों-सम्बन्धी मतभेद कुर्आन की प्रत्येक सूरत में पाया जाता है। जिसे अल्लामा सियूति ने निम्नानुसार लिखा है :—

सूरत बक़र .... में २८५ आयतें हैं और कुछ एक ने २८६ व कुछ एक ने २८७ आयतें कही है।

आलै इमरान ... में २०० आयतें हैं, कुछ ने १ कम बताई।

अन्निसा ... में १७५ आयतें हैं, कुछ एक ने १७६ और कुछ ने १७७ आयतें कही है।

अलमाएदा ..... में १२० आयतें हैं, किसी ने २ अधिक कही है और किन्ही ने ३ आयतें अधिक कही हैं।

अनआम ..... में १७५ आयतें हैं, किन्हीं ने १७६ और किन्ही ने १७७ आयतें कही हैं।

अनफ़ाल ..... में ७० आयतें है, किसी ने ५, किसीने ६ और किन्हीं ने ७ आयतें अधिक कही हैं।

बराअत ..... में १३० आयतें हैं किसी ने १२९ आयतें कही है।

यूनस ..... में ११० आयतें है, किन्हीं ने १०९ कही है।

हूद ... .. में १२१ आयतें है, किसी ने १२२ ओर किन्ही ने १२३ आयतें कही है।

राद .....में १४३ आयतें हैं, किसी की दृष्टि में ४ और किसी की दृष्टि में ७ आयतें अधिक हैं।

इब्राहीम ... में ५१ आयतें है, कहा गया है भि इसमें ५२, ५४ और ५५ आयतें है।

इसरा.....में ११० आयतें है, किसी के विचार में १११ आयतें है

अल्कहफ़ ..... में १०५ आयतें है, कतिपय कथनों में १०६, ११० और १११ आयतें है।

मरियम.....में ९९ आयतें है, किसी के कथनानुसार ९८ आयतें है।

त्वाहा.....में १३३ आयतें है, किसी के मत में १३४, किन्हीं के मत में १३५ और किन्हीं के मत में १४० आयतें हैं।

अम्बिया .....में १११ आयतें है, किसी के मत में ११२ आयतें हैं।

हज .....में ७४ आयतें है, किन्हीं के मत में ७५, और किन्ही के मत में ७८ हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक सूरत में आयतों की संख्या के सम्बन्ध में मतभेद उपस्थित है।

तफ़सीर इत्तिकान, प्र. १९, पृष्ठ १८२ से १८४

—: कुर्आन की आयत संख्या :—

पंडित श्री सत्यदेवजी ने अपनी "कुर्आन में परिवर्तन" नामक पुस्तक के पृष्ठ ३८–३९ में कुर्आन की आयत संख्या निम्न प्रकार दी है:–

'दुआए मुतरबर्रक: कसीद: तुलकिराअत उम्द: तुलब्यान। फ़ी तफ़सीरिल्कुर्आन सिराजुलकारी तथा रमूजुल्कुर्आन के एक मतानुसार सम्पूर्ण कुर्आन की आयत संख्या ... .६६६६

इत्तेकान फ़ी उलूमिल्कुर्आन के मतानुसार ६२१४

मदनियों के समीप सम्पूर्ण कुर्आन में ६२१४
मक्कीयों के.... ....६२१२
शामियों के.... ....६२५०
बसरियों के ... .६२१६
ईराकियों के.... ....६२१४
कूफ़ियों के.... ....६२३६
अब्दुल्ला हिब्ने मसऊद के कथनानुसार कुर्आन में.... ....६२१८
इब्ने अब्बास ६६१६
अबू मन्सूर दव्वान ६०००
एवं मुहम्मद याक़ूब कुलेनी.... ....१७०००

आयतें थी और कतिपय लोगों की भिन्न-भिन्न दृष्टि में सम्पूर्ण कुर्आन की आयतों की संख्या ६२०४, ६२१४, ६२१९, ६२२५ और ६२३६ भी रही है और यदि हमारी खोज की हुई ६२५ आयत हज़रत आयशा के कथनानुसार वर्तमान कुर्आन की ६६६६ आयतों में मिला दी जाये तो वर्तमान् ज्ञात कुर्आन की आयत संख्या ७३०१ हो जायेगी।

—: कुर्आन के कल्मात :—

अल्लामा सियूती ने लिखा है, कि अधिकांश लोगों ने कुर्आन के कल्मात की संख्या ७७ हजार ९ सौ २३ बताई हैं, और कुछ लोगों ने ७७ हजार ४ सौ ३३ और कुछ ने ७७ हजार २ सौ ७७ कल्मात बताये हैं।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १९, पृष्ठ १८७

हमारा तात्पर्य यह है कि मुसलमान जिस प्रकार सूरतों और आयतों की संख्याओं में मतैक्य स्थापित नहीं कर सके,

उसी प्रकार कलमात--संख्या में भी परस्पर मतभेद उपस्थित है।

कुर्आन के अक्षर

अल्लामा सियूती लिखते हैं, कि इब्ने अब्बास के द्वारा कुर्आन के हुरुफों की संख्या पूर्व में कहीं जा चुकी है और वह ३ लाख २३ हजार ६ सौ ७१ है।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १९, पृष्ठ १७९

आपने लिखा है, कि इस विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है और हुरूफ़ सम्बन्धी विश्वास हेतु जो हदीसें आई हैं, उनमें से एक हदीस तिरमज़ी ने इब्ने मसऊद से मरफ़ूअन (विश्वस्त) रवायत की है, कि जो व्यक्ति किताब-अल्लाह (कुर्आन) का एक अक्षर भी पढ़ता है, उसको एक नेकी प्राप्त होती है। .. और तिबरानी ने उमर बिन खत्ताब से विश्वस्त रवायत की है, कि कुर्आन के १० लाख २७ हजार अक्षर हैं। जो व्यक्ति धैर्य सहित नेकी प्राप्ति के ध्येय से उसको पढ़ेगा। उस कुर्आन के प्रत्येक अक्षर के बदले एक-पत्नी हुरईन में से मिलेगी। (इस हदीस के समस्त व्याख्याकार विश्वस्त लोग है) परन्तु तिबरानी के शैख़ मुहम्मद बिन उबैद बिन आदम बिन अबी अयास के विषय में इस हदीस के कारण जहबी ने कलाम किया है और इसका हमल (आधार) उन वस्तुओं पर भी कर लिया गया है, जिनकी रस्म (पद्धति) कुर्आन से मनसूख (निरस्त) कर दी गई हैं। (अर्थात् जितना कुर्आन था सबके अक्षर गिन कर इतनी सख्या लिखी है) क्योंकि जिस प्रकार कुर्आन इस समय उपस्थित है, वह इस संख्या तक नहीं पहुँचता। मिर्जा हैरत देह-

लवी ने भी मुकद्दम ए तफ़सीरुल फ़ुर्कान, पृष्ठ ३५ पर कुर्आन के अक्षरों की सख्या ३ लाख २३ हज़ार ६ सौ ७१ लिखी है।

पं. श्री सत्यदेवजी द्वारा रचित 'कुर्आन में परिवर्तन' नामक पुस्तक के पृष्ठ ३४ पर कुर्आन के अक्षरों की संख्या निम्न प्रकार है :—

इब्ने अब्बास के कथनानुसार सम्पूर्ण कुर्आन में ३२३६७१ अक्षर —सियूति

उमरिब्ने खत्ताब— — — — — — —१०२७००० अक्षर —सियूति

अब्दुल्ला हिब्ने मसऊद— — — — — —३२२६७१ अक्षर

मुजाहिद— — — — — — — — —३२११२१ अक्षर —सिराज लकारी

अब्दुल्ला इब्ने मसऊद— — — — — —३२२६७० अक्षर —उम्दःतुल ब्यान

कसीदातुलकिराअत— — — — — — —३०२६७० अक्षर

उम्दातुलब्यान— — — — — — — —३५१४८२ अक्षर

सिराजुलकारी— — — — — — — —३२०२६७ अक्षर

और दुआए मुतबर्रक— — — — — —४४५४६३ अक्षर है

पाठकगण ! आप ध्यानपूर्वक देखिये कि सम्पूर्ण कुर्आन के समस्त अक्षर १० लाख २७ हजार थे और वर्तमान में उपस्थित कुर्आन की अक्षर-संख्या ३ लाख २३ हजार ६ सौ ७१ है तो इस प्रकार कुर्आन से ७ लाख ३ हजार ३ सौ २९ अक्षर कम हुए। इस हिसाब से कुर्आन के मूल भाग से कितना भाग कम हो गया। प्रत्यक्ष सिद्ध है कि कुर्आन का बहुत बड़ा भाग लुप्त हो गया और वर्तमान कुर्आन अपने मूल रूप में विद्यमान नहीं है,

इस सम्बन्ध में अल्लामा सियूति ने तफ़सीर इत्तिकान में लिखा है :—

इब्ने उमर का कथन है:—कि निस्सन्देह ! तुम लोगों में से यदि कोई व्यक्ति यह बात कहे कि मैंने सम्पूर्ण कुर्आन प्राप्त कर लिया है, ऐसी स्थिति में कि उसे यह ज्ञान नहीं है कि सम्पूर्ण कुर्आन कितना था। क्योंकि कुर्आन में से अधिकांश भाग लुप्त हो गया है, किन्तु उस व्यक्ति को यह कहना चाहिये कि मैंने कुर्आन में से इतना भाग प्राप्त किया है, जो कि प्रत्यक्ष है।

इसी रावी (व्याख्याकार उबैद) ने ... . बीबी आयशा से रवायत की है, कि रसूलिल्लाह के जीवन काल में सूरत अहज़ाब २०० आयतों की पढ़ी जाती थी। फिर जिस समय उस्मान ने कुर्आन लिखे, उस समय हम (आयशा) ने इस सूरत में जो कि वर्तमान् में उपलब्ध आयतें है, के अतिरिक्त और कुछ नहीं पाया (इस समय इस सूरत में मात्र ७३ आयतें ही हैं।

तफ़सीर इत्तेक़ान, प्र ४७, पृष्ठ ६४

—:कुर्आन के ऐराब [मात्राएँ]:—

अल्लामा सियूति के तफ़सीर इत्तिकान का प्रकरण ४१ अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इसमें अर्थ—जानने के विषय में लिखा है--कि ऐराब (मात्राएं) ही उचित अर्थ बताते हैं ..... गलत पढ़ने से अर्थ उचित नहीं जाना जा सकता और (गलत पढ़ने से) विनाश को प्राप्त होता है।

आगे लिखा कि--जो व्यक्ति कुर्आन का स्वाध्याय (पाठ) करना चाहता है, उसके लिए आवश्यक है कि वह मुबतदा,

खबर, फ़ाईल और मफ़ऊल (क्रिया, कर्म, कर्ता और संज्ञा) आदि से भी परिचित हो।

इसके आगे अल्लामा ने अत्यधिक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जो प्रायः सर्व साधारण को सरलता से समझ में नहीं आते हैं और न आ सकेंगे। अतः हमने उनको उद्धृत करना लाभप्रद नहीं समझा और छोड़ दिये हैं। अल्लामा ने इस विषय में जहां इतना मार्ग प्रशस्त किया है, वहां इसी प्रकरण में ३ आयतों में भूलें (नहवी) भी बताई हैं।

अल्लामा ने लिखा कि कभी एक ही शय में आयत के अर्थ और मात्रा (ऐराब) में रस्साकशी हो जाती है। अर्थात् कलाम में यह बात पाई जाती है कि अर्थ तो एक अमर की ओर आमन्त्रित करते हैं किन्तु ऐराब (मात्रा) उस ओर जाने से रोकते हैं। ऐसी स्थिति में अमर से तमस्सक अर्थात् अर्थ की बात देखी जाएगी और ऐराब की कोई मुनासिब (उचित) तावील (व्याख्या) कर दी जाएगी। जैसे--"**इन्नहू अला रजएही लकादेरून यौमा तुब्लस्सराएरा**" इस आयत में यौमा जो कि जर्फ़ (स्थानवाचक शब्द) है, उनकी निस्बत अर्थ की दृष्टि से रजआ मसदर से मुत-अल्लक (सम्बन्धित) होने की पाई जाती है। जैसे--"**इन्नहू अला रज्एही फ़ी जालेकल यौमे लकादरून**" (अर्थात्) निस्सन्देह (खुदा) उस दिन उसके (मनुष्य के) पुनः लौटाने पर क़ादिर (समर्थवान्) है, किन्तु ऐराब ऐसा अर्थ करने से रोकता है और उसका कारण मस्दर (धातु) और उसके मामूल (प्रभान्वित) के मध्य फ़ासला (दूरी) नहीं चाहिए। इसलिए उस जर्फ़ में एक ऐसा फ़ेल (क्रिया) लुप्त आमल गर्दानना (रखना) होगा जिस पर मस्दर का लफ़्ज़ (धातु का रूप) दलालत (मध्यस्थता) करे।

इसका तात्पर्य यह है कि--अर्थ को ठीक करने हेतु मात्राऐं ठीक करनी पड़ेगी और एक लुप्त क्रिया निकालनी पड़ेगी। ऐराब को लुप्त क्रिया निकाल कर अर्थ को ठीक करना होगा। यह उक्त आयत कुर्आन में सूरत तारक, पारा ३० की है। दूसरा उदाहरण है:-

'अकबरो मिम्मक्तेकुम अन्फुसकुम इज़ तुदओना'

कुर्आन पारा २४, रकू २।७

यहां भी अर्थ की दृष्टि से देखते हुए इज़ का सम्बन्ध मकत के साथ होना चाहिये और इज़ व मकत के मध्य दूरी होने से मात्रा इस बात से रोकती है। अतः यहां भी एक क्रिया मसदर (धातु) के दलालत करने से मुकद्दर (लुप्त) किया गया। इन दोनों बातों को यों समझना चाहिये कि ऐराब (मात्रा) के विषय में नहव (व्याकरण) के नियमों को दृष्टि में रखना आवश्यक है और अर्थ के बयान सम्बन्धी व्याकरण (नहव) का विरोध कुछ हानिप्रद नहीं है। **तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९२**

-आयतों में नहवी गलती [व्याकरण त्रुटि]-

अल्लामा लिखते हैं-कि अबू उबैद ने फ़ज़ायेलुल कुर्आन में लिखा है, कि अर्वा ने कहा-मैंने बीबी आयशा से ख़ुदा के वचन **"इन्ना हाज़ाने लिसाहराने"** और **'वल मुकीमीनस्सलात बस मोतूनज़्ज़कात"** ("पारा ६ रकू २) और **"वा इन्नल्लज़ीना आमनू वल्लज़ीना हादू वस्साबेऊन"** (पारा ६ रकू १४) के विषय में कुर्आन की ग़लती की निस्बत पूछा (कि क्यों कर आई ?) तो बीबी आयशा ने कहा कि मेरी बहिन के बेटे ? यह लिखने वालों का काम है, उन्होंने लिखने में गलती की। यह हदीस बुखारी और मुस्लिम की शर्तें पर सहीह (ठीक) है।

अबू उबैद ने कहा–विभिन्न व्याख्याकारों के नाम सहित अव रमा की रवायत है, कि मुसाहिफ़ (कुर्आन) लिखे जाने के पश्चात् जब उस्मान को प्रस्तुत किये गये तो उनमें कुछ शब्द ग़लत पाये गये। उस्मान ने कहा-इनको न बदलो, क्योंकि अरब, (के लोग) इनको स्वयं बदल लेंगे, या यह कहा कि-वह अपनी भाषाओं में उनका ऐराब कर लेंगे। काश ! कि यदि लिखने वाला कबीला सक़ीफ और जबानी बताने वाला कबीला हुज़ैल के व्यक्ति होते तो उसमें (कुर्आन में) यह हुरूफ़ गलत अक्षर) न पाये जाते।

इस रवायत को इब्नुल अन्वारी ने अपनी किताब अर्रहो अलामन खलिफ़ा मुस्हिफ़े उस्मान और इब्ने अशत्ता ने किताबुल मुसाहिफ़ में यही बयान किया है।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९२

बीबी आयशा ने तीनों आयतों में गलती होना स्वीकारा हैं, परन्तु कुर्आन के व्याख्याकारो ने इन तीनों आयतों पर किस-किस प्रकार विविध व्याख्याएं की है, उन्हें हम आगे के पृष्ठों में लिखेंगे। पूर्व में जो हमने अकरमा की रवायत लिखी है वह उन लोगों का मत है। फिर अब्दुल आला की रवायत से लिखा है, कि मुस्हिफ़ तैयार होने पर हज़रत उस्मान के पास लाया गया। उसमें कुछ ग़लतियां थी। उस्मान ने यह कहा था कि इनको शीघ्र ही अपनी भाषा में शुद्ध कर लूंगा।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९५

(प्रथम व्याख्याकार ने जो कहा था, कि–उस्मान ने कहा कि ग़लतियां रहने दो ! यह ठीक नहीं)

आगे तीन आयतें में रही ग़लतियां जो बीबी आयशा ने

स्वीकारी थी उसके विषय में लिखा है, कि बीबी आयशा के 'अखतु' शब्द का यह अर्थ है कि उन लोगों ने अक्षर 'सब्आ' में से लोगों को उस पर एकत्रित करने हेतु उत्तम अक्षर के चयन में भूल की है, न जाने उन्होंने भूल की है या नहीं ? लफ़्ज़ के स्पष्ट अर्थ है, फिर यह लिखना कि हुरूफ़ सब्आ (सात अक्षरों)में के चुकने में भूल की है, यह सर्वथा असत्य है । क्योंकि उस समय हफ़्त हुरूफ (सात अक्षर) का प्रश्न ही समाप्त था। । इस सात अक्षर के विवाद–समाप्ति हेतु ही उस्मान ने निर्णय किया था कि कुर्आन को क़ुरैश की भाषा में लिखो (यह हम पूर्व में लिख चुके हैं) अतः बीबी आयशा के इस शब्द की उन्होंने खता (भूल) की, इसको सात अक्षरों में से उत्तम चुनाव पर निर्भर कर के टाल देना किसी प्रकार भी उचित नहीं माना जा सकता क्योंकि सात अक्षरों का चुनाव तो समाप्त हो चुका था । अस्तु, आगे, इब्राहीम नखई से रवायत की है, कि 'इन्ना हाज़ाने लिसाहिराने' भी ठीक है और "इन्ना हाज़ैने लिसाहिराने' भी'। दोनों रीति से पढ़ना समान है ।

हम कहेंगे—क्या आप 'हाज़ाने लिसाहिराने' पाठ कुर्आन में अन्यत्र दिखा सकते हैं ? और यदि यह दोनों पाठ समान हैं, तो आपके व्याख्याकारों ने जो विभिन्न मार्गों का अनुसरण कर इस "हाज़ाने लिसाहिराने" को ठीक करने का प्रयास किया हैं, उनको इतनी व्याख्याएं न करनी पड़ती ।

आगे आपने लिखा कि-शायद मुस्हिफ़ (कुर्आन) की नक़ल करने वालों ने 'अलिफ़' को 'ये' के स्थान पर (और 'ये' को 'अलिफ' के स्थान पर) कर दिया ।

क्यों महोदय ! यदि दोनों पाठ समान थे, तो "शायद शब्द का प्रयोग क्यों किया ? और "शायद" शब्द की छाया में

यह भी लिख दिया "ये" के स्थान पर "अलिफ" । इसका स्पष्ट अर्थ है कि आप दोनों पाठ ठीक नहीं मानते ।

आगे द्वितीय आयत के उत्तर में लिखते हैं, कि 'बम्मा-बेऊन वरासेखूना" में "वाव" को "ये" स्थान पर लिख दिया है (आखिर क्यों लिख दिया ?)

इब्ने अश्ता कहते हैं—कि इब्राहीम की मुराद है कि यह अमर ऐसा है कि जैसे एक अक्षर को दूसरे अक्षर से परिवर्तित कर लिख दिया गया । जैसे-"अस्सलात अज्जकात" (इनमें 'अलिफ़' के स्थान पर 'वाव' लिखा गया) (इसकी वास्तविकता आगे लिख कर उत्तर देते हैं)

मैं कहता हूँ, कि यह उत्तर उस समय उत्तम रहता, जब कि इन मिसालों (उदाहरणों) में कताबत (लेखन) 'ये' के साथ अन्य कताबत इसके विरूद्ध होती, परन्तु स्थिति यह है कि कताबत रस्मुल्खत (लेखन शैली) के ही मुक्तजी (निर्भरता) पर होती है । इसलिए इस उत्तर को ठीक नही माना जा सकता ।
इस विषय में तफ़सीर अनवारूल्कुर्आन की सम्मति लिखते हैं

यद्यपि ऊपर लिखा जा चुका है मगर हम एक तो मुस्लिम विद्वान की सम्मति से दिखाना चाहते है कि जो हमने लिखा उस ने भी यही लिखा किन्तु उसने कुछ अधिक लिखा जैसे—

कुर्आन का पठन पद्धति में विरोध क्यों

जैसे कुफ़वन वाव के साथ और कुफ़्अन हम्ज़ा के साथ और यत्तहुनी तोए और है जज़्म के साथ और यत्तहुहनी शद्द के साथ ऐसा मिसाले कुर्आन मे बहुत है । इसका उत्तर यह लिखा कि कुर्आन तो [illegible] की और से है-यह विरोध कारियों की और से हैं । [illegible] कि [illegible] तो सब मुसलमान थे और

कुर्आन को खुदा की ओर से मानते थे-तो फिर विरोध का कोई कारण नज़र नहीं आता) आगे जुबैर कहते हैं कि मैंने अपनी मासी (हज़रत आयशा) से पूछा-कि खुदा के कलाम -इन हाजाने लसाहराने और तलमुकीमीनस्सलाता वल्मोतूनज़्ज़कात (सूरत-निसा आयत १६०) वा इन्नल्लजीना आमनू वल्लज़ीना हादू वस्साबऊना]सूरत माएदा आयत ७३] में गलतीया क्यों हैं। तो उत्तर दिया कि ए भान्जे यह लिखने वालों ने गलत लिखा

तफ़सीर इत्तिक़ान जिलद १ पृ. १५३ प्रकरण ४१ तम्बीह ३ नीचे ठीक क्या है यह भी लिखा हैं

इन्ना हाज़ैने लसाहिराने, वल्मुकीमूनस्सलाता वल्मोतूनज़्ज़-काता, और तीसरी मिसाल में वस्साएबीना ठीक है।

बुखारी मुस्लिम और इब्ने अब्बास कहते हैं कि हत्ता तस्तानेसू वा तुसल्लमू कातिब ने भूल से लिखा है वास्तव में तस्ताज़िनू वा तुसल्लेमू था इब्ने अब्बास ने अफ़लम यतबय्येनि-ल्लाज़ीना आमनू पढ़ा तो किसी ने कहा कि कुर्आन में तो अफ़-लम् यय्आसिल्ल ज़ीना आमनू है तो उत्तर दिया कि मेरा गुमान यह है कि लिखने वाला लिखते समय ऊघ गया था, इब्ने अब्बास कहा करते थे कि वकज़ा रब्बाका असल में व वस्सा रब्बोका था, लिखने वाले ने वाव को स्वाद से मिलाकर लिख दिया था। (**तफ़सीर इत्तिकान जिलद १ पृ. १८६ प्रकरण ४१ हज़ेल तज़नीब** हज़रत उस्मान ने सात कुर्आन लिखवाये थे जो मक्का, मदीना, शाम, बसरा, कूफ़ा, यमन और बहरैन भेज़ दिये थे। (**तफ़सीर इत्तिकान जिलद १ छापा मिसर प्रकरण २५ ता २७**) यमन और बहरैन के कुर्आनों की तो कोई हालत-मालूम न हुई [इत्तिकान जिलद [illegible] पृ. [illegible] पन्ना [illegible]] किन्तु शेष पाचों परस्पर विरोध रखते थे-इन हरब्तलाकों [विरोधों]

का विवरण हमने अपने रसाला तहरीफ़ कुर्आन में लिख चुके हैं–दो तीन मिसालें [उदाहरण] यहाँ वर्णन की जाती हैं [१] इब्ने आमर शामी ने कालुत्तुख़ज़ल्लाहो वलदन बिना वाव के पढ़ा क्योंकि शामी कुर्आन में इसी प्रकार था बाकी छे: कारियों ने वत्तख़ज़ल्लाहो वलदन पढ़ा और इब्ने आमर ने वा बिज़्ज़ुबोरे व बिल्किताबे दोनों में बे से पढ़ा क्योंकि शामी कुर्आन में यूं ही था और बाकी कारियों ने बिज़्ज़ुरे वल्किताबें पढ़ा और इब्ने कसीर मक्की ने तज्री मिन तहतेहलअन्हारो मिन के साथ पढ़ा बाकी कारियों ने तजरी तहतेहलअन्हारी पढ़ा । (तफ़सीर इत्तोक़ान जिलद १- अन्तिम पृ. ७७ का प्रकरण २१ ता २७ छापा मिसर) यह ग़लत कुर्आन यातो शहरों में रवाज दिये गये तफ़सीर अनवारूल्कुर्आन जिलद १, पृ. १८ से २० तक

आगे लिखा कि--मौलवी अब्दुल्अली साहिब वहरुल्उलूम फ़रन्गी महल्ली पर हाशिये लिखे हैं, जिनमें फ़ाश गल्तियों का इकरार और ठीक लफ़्ज़ पर तन्बीह करते हुये और खलीफ़ा साहिब से अदब और उनके अधिकार को दृष्टि में रखते हुए लिखते हैं कि कुर्आन की ग़लत भाषा को अपनी हालत पर छोड़ दी और ठीक (सहीह) को सुर्खी से लिख दो ।

इफ़सीर अन्वारुल्कुर्आन जिल्द १ पृ. २०-२१

आयतों का समाधान

प्रथम आयत "इन्ना हाज़ाने लिसाहिराने'

१—यह कि जिन लोगों को भाषा में तसनिय्या का सीग़ा [द्वित्व-चन] रफ़ा [पेश] नसब [ज़बर] और जर [ज़ेर] तीनों ऐराब [मात्रा] की स्थिति में 'अलिफ़' से ही आता है, यह आयत उन्हीं की भाषा में आई है और यह क़बीला कनाना और [एक और

वचन के विश्वास पर] क़बीला बनिलहारस का प्रसिद्ध लुग़त [कोष] है।

हम कहेंगे कि--जब हफ़्त क़रात [सात प्रकार से पढ़ने के ढंग] के बखेड़े से मुक्ति हेतु हज़रत उस्मान ने अन्य साथियों [सहाबा] से मिल कर यह निश्चय कर लिया था, कि अब संशोधित कुर्आन, कुरैश की भाषा में लिखा जायेगा और फिर कुर्आन लिखते समय जो भूलें रह गई थीं, उसको उस्मान ने शुद्ध भी कर दिया तो फिर यह कबीला कनाना और बनिलहारस की लुग़त [कोष] कहां से आई? या यह मानना होगा कि उस्मान ने कुर्आन में रही भूलों को शुद्ध नहीं किया। हम यह पूछते हैं कि--अरबी नहव [अरबी का व्याकरण] के अनुसार तो यह क़बीला क़नाना और बनिलहारस के पाठ शुद्ध है?

२–यह कि 'इन' [जो इन्ना मुशद्दद [द्वित्व] से तख़फ़ीफ़ [इन] कर लिया गया है] ज़मीर शान महज़ूफ़ [लुप्त] यहां से लुप्त है और "हाज़ाने लिसाहिराने" जुमला [वाक्य] इसमिय्या (संज्ञावाचक) मुब्तदा (संज्ञावाचक) और ख़बर से मिलकर इन्ना की ख़बर बना है।

यहां देखिए, इन का इन्ना बनाया और ज़मीर (प्रत्यक्ष) लुप्त बताई तथा इन्ना को इस्म बनाया (मैं कहूँगा कि इस प्रकार ती प्रत्येक ग़लत वाक्यों को भी सिद्ध किया जा सकता है)

३--'साहिराने' एक मुब्तदा महज़ूफ़ की ख़बर है, जिसकी तक़दीर 'लहुमा साहिराने है।'

४--यह कि 'इन' इस स्थान पर नअम [हां] के अर्थ में है।

५-[हाज़ाने को दो भागों में कर[हां को ज़मीर इन्न का इस्म और जाने लसाहिराने मुब्तदा और ख़बर है, किन्तु इसका

खण्डन पूर्व में किया जा चुका है। 'इन' को विभक्त लिखा जाना और 'हाँ' को वाक्य के साथ कतावत मुत्तसिल (समीप) करना ठीक नहीं।

६ और एक और तजवीज (विचार) (लेखक तफ़सीर कहता है) मुझे सूझी और वह यह कि 'हाज़ाने' मे 'साहिराने - 'युरीदाने' [साहिराने से अगला शब्द] की मुनासबत [तुलना] से अलिफ़ लाया गया है। जिस प्रकार 'सलासिलन' को 'अग़लालन' और 'मिनसबईन' को 'बिनबइन' की तुलना से तनवीन दी गई है। [हां महोदय ! हाथ-पैर तो फैकना ही चाहिए, सम्भव है कुर्आन की यह ग़लती ठीक हो जाए] किसी शब्द को तनवीन देना क्या ऐसा ही है। जैसे-'हाज़ैन' से 'हाज़ान' कर देना। इस 'हाज़ाने' को ठीक करने अर्थात् इस भूल के सुधार हेतु ऊपर ६ समाधान लिखे गये है। किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा है। जिस प्रकार लुप्त क्रियाएँ और सज्ञा आदि निकाल कर इस भूल को सुधारने का यत्न किया गया है, यदि इसे सूक्ष्म दृष्टि से देखे तो वह सुधारने के स्थान पर और विकृत हो गई है। जब ६ व्यक्ति किसी एक विषय को सिद्ध करने हेतु एक-दूसरे की सम्मति अमान्य कर अपने-अपने विभिन्न समाधान प्रस्तुत करते हैं, तो यह सिद्ध हो जाता कि एक ने दूसरे के समाधान नकार कर अपना पृथक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। ऐसी स्थिति में कोई भी समाधान मान्य नहीं होगा, परन्तु ६ प्रकार के समाधान प्रस्तुतकर्ताओं ने बीबी आयशा के कथन का कोई उत्तर नहीं दिया। जब तक यह बात स्पष्ट न हो जाये कि बीबी आयशा ने ठीक नहीं कहा या उसने समझा नहीं, तो फिर उसका समाधान कैसे हो सकता है ? अतः जो बीबी आयशा ने कहा, वही ठीक है, यह मान कर भूल माननी ही पड़ेगी। तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४१, पृष्ठ ८९६

द्वितीय आयत–"बल मुकीमी नस्सलाता"

१–यह कि वह मकतूअ इलल (स्तुति वाचक) है।

२–यह कि वह (पूर्व वाक्य) 'योमिनूना बिमा उन्जिला अलैका' में जो मजरूर (जेर वाला अक्षर) है, उस पर मातूफ़ (सम्बन्ध-सूचक) है। वाक्य इस भांति 'योमिनूना बिल मुकीमी नस्सलाते' बनेगा ... . और यह भी कहा गया 'योमेनूना, ब्दीनिल मुकीमीनां है" और कहा गया है कि वाक्य ऐसे होगा "व अजाबतल मुकीमीना"।

३–यह कि वह 'कबल' पर मातूफ़ (सम्बन्ध सूचक) हैं। वाक्य ऐसे होगा "व मिन कबलिल मुकीमीना" यद्यपि कबल (पूर्व) हजफ (लुप्त) किया और मुज़ाफ अलेह' उसका कायम मुकाम (स्थानापन्न) बनाया गया है।

४–यह कि वह 'कब्लिक' में जो खताब (मध्यम पुरुष) का 'काफ' है। यह उस पर मातूफ़ (सम्बन्ध सूचक है।

५–यह कि 'अलैका' के 'काफ़' पर मातूफ़ (सम्बन्ध सूचक) है।

६–यह कि यह 'मिनहुम' में जो जमीर (प्रत्यय) है, 'हुम' उस पर मातूफ़ है।

उक्त ६ प्रकारों से 'मुकीमीना' की सिद्धि की गई है। इनमें एक का कथन है कि वह अति स्तुति योग होने से, व लोश (सुललित) होने से ऐसा हुआ। दूसरा कहता है कि 'योमिनूना बिमा उन्जिला पर मातूफ़ सम्बन्धवाचक) है। तीसरा 'कबल' पर मातूफ़ कहता है। चौथे का 'पर' जो 'कब्लिका' का है। पांचवां 'अलैका" के 'काफ़' पर और छठा कथन 'हुम' पर मातूफ़ [सम्बन्धवाचक] कहा गया है। यह समस्त वचन इस भूल को ठीक करने हेतु दिये गये हैं, किन्तु यह साहस नही हुआ कि

बीबी आयशा के कथन का खंडन करे।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९६-४९७

उपरोक्त वर्णित आयत निम्न प्रकार है:—

"यकीमु नस्सलाता वा तो यू नज्जकाता"

कुर्आन पारा ६, रकू १२,
पारा १०, रकू १५, पारा १९ रकू १६ और
पारा २१ रकू १० इसी प्रकार है

तृतीय आयत-" वस्साबेउन " इसमें निम्न कारण कहे गये है।

१—मुब्तदा (संज्ञावाचक) है उसकी खबर हज़फ (लुप्त) कर दी गई है। वास्तव में "वस्साबेऊन कज़ालिका" था।

२—यह कि "अन्ना" के इस्म (संज्ञा) के साथ वह उसी के महल (स्थान) पर मातूफ है।

३—यह कि 'हादू' में जो ज़मीर (प्रत्यय) फ़ाइल (कर्ता) हैं, उस पर मातूफ़ (सम्बन्धवाचक) है।

४—यह कि 'इन' नअम (हां) के अर्थ में आया है।

५—यह कि 'वस्साबेऊना' जमा का सीग़ा (बहुवचन) है, किन्तु मुफ़रद (एकवचन) का स्थानापन्न बना दिया गया।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९७

उन भूलों के सुधार हेतु जितने भी समाधान प्रस्तुत किये गये वे सभी इसी प्रकार के हैं, क्यों नहीं कुर्आन से कोई और अन्य आयत प्रस्तुत की गई और लुप्त तथा अतफ़ (सम्बन्ध) के नियम प्रयोग करते रहे?

मैं कहूंगा कि कुर्आन में पहिले भी यह आयत आ चुकी है, जो इस प्रकार है:—

'वल्लाज़ीना हादू वस्साबईना"

कुर्आन, पारा १, रकू ८

इसके अतिरिक्त इसी प्रकार कुर्आन में :—

"इन्नल्लज़ीना आमनू वल्लज़ीना हादू वस्साबेईना वन्नसारा"

कुर्आन पारा १७, रकू ९

यह उक्त लिखित आयत को इसके ऊपर लिखित आयत से मिला लें ।

हमने कुर्आन की यह दो सूरतें और भी प्रमाण में दी कि इनमें किसी भी स्थान पर "साबिऊना" शब्द नहीं है । हमें तो केवल यह दिखाना था, कि कुर्आन में नहवी [व्याकरण की] ग़लतियाँ लोग मानते हैं ।

उपरोक्त समस्त उत्तर लिख कर आगे इत्तिकान में लिखा है-बीवी आयशा की जो रवायत पूर्व में बयान हो चुकी है, उसी के समीपस्थ इमाम अहमद की वह रवायत भी है, जिसको उन्होंने अपनी मसनद में कहा है ।

लिखा है, कि--एक समय अबी ख़लफ़, उबैद बिन उमैद के साथ बीबी आयशा के पास आया । उबैद ने कहा-यह एक आयत के विषय में आया है । आयत है-**अल्लज़ी यातूना मा अतो"** या **"अल्लाज़ीना योतूना मा आतू"** इन दोनों में कौनसी क़रात उचित है ? आयशा ने कहा--कि तुमको कौनसी क़रात पसन्द है ? अबी ख़लफ़ ने कहा—मूझे इन दोनों में अधिक प्रिय आयत "अल्लाज़ीना यातून मा कतो" लगती है । इस पर बीबी आयशा ने कहा-कि निस्सन्देह, रसूलिल्लाह इसी ढग पर इस आयत को पढ़ा करते थे और यह आयत इसी प्रकार उतरी है । (आयतों के मध्य ऐसी ही शकाए लोगों में थी ।)

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृ. ४६७

इब्ने अब्बास ने "[illegible] तुस्सलेमु" कुर्आन

पारा १८, रकू १० के सम्बन्ध में कहा--निस्सन्देह, कातिब (लिपिक) की ग़लती है। वास्तविक "हत्ता तस्ताज़ेनू व तुसल्लेमू था। इब्ने अबी हातम ने भी ऐसी ही रवायत की है।

इसके आगे इब्नुल अम्बारी अक्रमा के आधार पर इब्ने अब्बास से रवायत करता है, कि उन्होंने "अफ़लम ययअसिल्ला-ज़ीना आमनू अल्लओ यशा अल्लाहो" पढ़ा। लोगों ने कहा कि यह आयत तो मुसहिफ़ 'कुर्आन में अफ़लम यय अमिल्लाज़ीना आमनू" (कुर्आन, पारा १३, रकू १० है। इस पर ईब्ने अब्बास ने उत्तर दिया कि-मेरा गुमान (विचार) है कि कातिब ने जिस समय यह आयत लिखी, वह उस समय उंघ (अर्धनिद्रा) रहा था।

इसी प्रकार सईद बिन मन्सूर, इब्ने ज़बैर के आधार पर इब्ने अब्बास से रवायत करता है कि ख़ुदा के वचन वा, कज़ा रब्बोका' के विषय में वह कहा करते थे, कि वह वास्तविक 'वस्सा रब्बोका' (कुर्आन, पारा १५, रकू ३) था। 'वाव' 'स्वाद' के साथ जुड़ गया, और इसी करात को इब्ने अश्ता ने इन शब्दों में कहा है कि-कातिब (लिखने वाले) ने कलम में अधिक स्याही ले ली थी, इस कारण 'वाव' स्वाद से मिल गया है। इस रवायत को अनेक लोगों से तफ़सीर इत्तिकान में विभिन्न ढंग से कहा है।.....यहां पर वसिय्यत की बात है कि जिसके द्वारा ख़ुदा ने बन्दों को समझाया है, न कि आज्ञा दी। यदि आज्ञा होती तो किसमें शक्ति थी कि उसकी आज्ञा को निरस्त कर सकता ?

इसी के सम्बन्ध में सईद बिन मन्सूर से और इस रवा-यत को जुहक के आधार पर इब्ने अब्बास से यों बयान किया है, कि वह 'व वस्सा रब्बोका' पढ़ते थे, कातिब के अधिक

स्याही लेने से वाव स्वाद से मिल गया । इत्यादि

तफ़सीर इत्तिक़ान प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९८

ख़ुदा का नूर कन्दील की मिसल (सदृश) नहीं हो सकता .. ..और इब्ने अबी हातम ने अता के आधार पर इब्ने अब्बास से '**मसला नूरेही कमिशकातिन**" (कुर्आन, पारा १८, रकू ५।११) के विषय में यह कौल रवायत किया है। उन्होंने कहा यह कातिब की ग़लती है। ख़ुदा इस बात से बद-र्जहा (अत्यधिक) बढ़ कर साहिबे अज़मत (श्रेष्ठत्तर) हैं कि उसका नूर एक कन्दील की मिसल हो ।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९९

तफ़सीर इत्तिकान में इसी पृष्ठ पर आगे एक बड़े रहस्य की बात लिखी है। अधिकतर व्याख्याकारों के नामोल्लेख कर अन्त में अब्दुर्रहमान ने अपने पिता अबी ज़नाद के उल्लेख से ख़ारजा बिन ज़ैद की यह रवायत की है, कि लोगों ने ज़ैद से यह पूछा–अबा सईद ! तुमको यह भ्रम (क्यों) हो गया कि आयत करीमा '**समानियता अज़वाजे मिनज़्ज़ाने इसनैने वा मिनल माजे इसनैने इसनैने वा मिनलइबेले इसनैनेइसनैने वा मिनल बकरे इसनैने इसनैने**" (प्रत्येक में इसनैने की तकरार (पुनुरूक्ति दोष है।) ज़ैद ने उत्तर दिया-इसलिये कि (यह भ्रम इस हेतु से हुआ) अल्लाह पाक कहता है-"**फ़जअला मिन हिज़्ज़ौदे निज़्जकरा वलउन्सा**" (कुर्आन, पारा २९, रकू २--१८) अर्थात्-'पस, किये उसमें से दो जोड़े नर और मादाः । अतः वह दोनों दो जोड़े है, नर एक जोड़ा और मादा (नारी) एक जोड़ा ।

इब्ने अश्ता इस रवायत को बयान करने के पश्चात् कहता है, पस, यह ख़बर (बयान) दलालेत (निर्भरता) करती

कि लोग (सहाबा-हज़रत के मित्र) कुर्आन में लिखने हेतु ऐसे अक्षरों को चुन लिया करते थे, जो कि मुआनी (अर्थों) को जमा करने में सबसे बड़े हुवे जबानों (भाषाओं) में असीमित स्पष्ट (सलीस) स्थान प्राप्ति (माखज़) में अत्यधिक सरल (करीबुल-फहम) और अरबों के निकट ख्याति प्राप्त थे।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृ, ४९९ भाग १

इस विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत के मित्र ऐसे शब्द जो सरस-सरल और विख्यात हों, कुर्आन में प्रविष्ट कर देते थे। एक बात और ज्ञातव्य है कि जिस आयत के सम्बन्ध में ज़ैद से पूछा है कि 'इसनैने' शब्द दोबारा क्यों आया है? वर्तमान में उपस्थित कुर्आन में यह शब्द 'इसनैने' दोबारा नहीं अपितु एक बार ही है। जैसे:—"**सामानियाता अज़्वाजिन मिनज्ज़ानिसनैने वा मिनल माज़िसनैने कुल आज़्ज़करैने हर्रमा अमिल उनसयैने**" कुर्आन, पारा ८, रकू १७/४

(इस आयत के अतिरिक्त और कोई अन्य ऐसी सूरत कुर्आन में दृष्टिगोचर नहीं होती)

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४१, पृष्ठ ४९९

अल्लामा सियूति ने तफ़सीर इत्तिकान के प्रकरण ४१ में कुर्आन के ऐराब (मात्रा) आदि के विषय में विस्तारपूर्वक लिखा है। हमने उसमें से संक्षिप्त उदाहरण मात्र दिये हैं, किन्तु जब कुर्आन पर पुस्तक लिखी जायेगी, तो प्रत्येक आयत के सम्बन्ध में समीक्षा के रूप में यह प्रकरण ४१ उसमें आ जायेगा, क्योंकि प्रत्येक आयत के समस्त पहलुओं पर चर्चा की जायेगी।

स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिंग का प्रयोग

मर्यम के लिये सूरत तहरीम की आयत—

"वा कानत मिनल कानेतीन"

कुर्आन, पारा २८, रकू २०

अर्थात् – मरियम आज्ञाकारियों में से थी ।

इसमें 'कानत' (स्त्रीलिंग-एकवचन) और कानेतीना (पुल्लिग-बहुवचन) है । कोई व्याकरण का साधारण जानने वाला मनुष्य भी स्त्रीलिंग एकवचन के साथ पुल्लिग बहुवचन का प्रयोग कदापि नहीं करेगा, और यहां कुर्आन में ऐसा प्रयोग स्पष्टतः किया गया है । इसके प्रारम्भ में भी इसी प्रकार है । आयतः—

"व मरयमब्नता इमरानल्लती अहसनत् फ़र्जहा कनफ़खना फ़ी हे मिरूंहैना" कुर्आन, पारा २८, रकू २०

अर्थात्-और इमरान की बेटी मरियम जिसने अपनी शरमगाह (गुप्तस्थान) की रक्षा की । पस, हमने उसके मध्य अपनी रूह को फूंका ।

इस आयत में सब वचन स्त्रीलिंग है और 'फ़र्जहा' में 'हा' ज़मीर भी स्त्रीलिंग ही है किन्तु फ़ीहे' पुल्लिग की ज़मीर का प्रयोग किया हैं । एक ही आयत में दो स्थान पर यह व्याकरण की भूलें प्रत्यक्ष है । हम इस आयत के ही अर्थ की एक अन्य आयत आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं । जिसमें सर्वथा ठीक लिखा गया है । आयतः—

"बल्लती अहसनत् फर्जहा फ़नफ़खना फ़ीहा मिरूंहेना"

कुर्आन, पारा १७, रकू ६१६

यहां पर जिस प्रकार 'फ़र्जहा' में 'हा' स्त्रीलिंग ज़मीर पड़ी हैं, उसी प्रकार 'फ़ीहा' में भी 'हा' की स्त्रीलिंग ज़मीर है जब कि प्रथम आयत में 'फ़ीहे' में है' की पुल्लिग जमीर का प्रयोग

है । कुर्आन में घटित इन व्याकरण की भूलों पर व्याख्याकारों की लीपापोती देखिये—

तफ़सीर कुरर्आनुल अज़ीम, पृष्ठ १३६ पर-मरियम को पुल्लिग से क्यों सम्बोधित किया गया ? 'मिनल कौमिल मुतीईन' अर्थात् वह आज्ञाकारियों की जाति में से थी (इसलिए पुल्लिग से सम्बोधित किया।)

तफ़सीर सिराजे मुनीर, पृष्ठ ३३६ पर-'कीला' लिख कर आगे लिखा है, 'अल कौमिल कानेतीन'--अर्थात्-आज्ञाकारी जाति से थी।

तफ़सीर क़ादरी, पृष्ठ ५५७ पर-'कानेतीन' पुल्लिग वचन इस ओर संकेत करता है, कि मरियम की भक्ति समस्त मनुष्यों से कम न थी। जलालैन, पृष्ठ ४६६ और बैजावी, पृष्ठ ५३४ पर भी ऐसा ही है।

व्याख्याकारों के उपरोक्त कथनों से ज्ञात होता है, कि यह लोग स्त्री जाति को संयमी मानने को तत्पर नहीं। मरियम संयमी थी, अतः उसको पुल्लिग से सम्बोधित किया गया।

द्वितीय—'फ़नफ़खना फ़ीहे' है।

इस सम्बन्ध में तफसीर बैजावी, पृष्ठ ५४४ पर-अर्थात 'फ़ी फ़र्जेहा' (गुप्त स्थान) और पढ़ा गया 'फीहा ऐ फी मरयमे' है।

तफसीर जलालैन, पृष्ठ ४६६ पर--'फ़नफ़खना फ़ीहे मिर्रुहेना ए जिब्रिलो हसा नफ़खा की जैवे दरएहा बिखल लिल्लाहे फ़अलाहुल वासिला इला फ़र्जेहा फ़हमलत बिईसा" अर्थात्—हमने अपनी रूह को फूंका. अर्थात् जिब्रील ने जब उसकी चोली की जेब में फूंका साथ उत्पन्न करने, अल्लाह के मिलाने उसके फ़र्ज (गुप्त स्थान) की ओर।

हाशिया क्रमांक १८ अर्थ—उसकी चोली की जेब में, सकेत इस

ओर इस मुराद के साथ फ़र्ज़ (गुप्त स्थान) उसकी चोली का जेब, और कहा बकाई ने या बीच फर्ज हक़ीकी (वास्तविक गुप्त स्थान के मध्य) के ।

हाशिया क्रमांक १६ अर्थ--अल्लाह का उत्पन्न करना मुतअल्लक (सम्बन्धित) है फूंका हमने के साथ ..... इत्यादि।

तफसीर कादरी पृष्ठ ५५७ पर-फिर फूंका हमने फ़ीहे उसके ग़रेबान में मिरुंहेना अपनी निर्मित रूह को ।

तफमीर कुरआनुल अज़ीम, पृष्ठ १३६ पर-'फ़नफ़खना फीहे मिरूंहेना' अर्थात्--जिब्रील ने चोली के गरेबान में रूह को फूंका ।

तफ़सीर सिराजे मुनीर, पृष्ठ ३३६ पर—और जिब्रील ने जब हमारे रूह से चोली की जेब में फूंका, व कालल बकाई, 'औ फ़ी फ़र्जेहा' अर्थात् गुप्त स्थान में ।

बयानुल कुर्आन, भाग २, पृष्ठ १८६८ पर--और इमरान की बेटी मरियम, जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) को सुरक्षित रखा, तो हमने अपना कलाम (रूह) उसमें फूंका । चूंकि वास्तव में उसमें उल्लेख तो मोमिन का था न कि मरियम का, इसलिए 'नफ़खना फ़ीहा' के बदले, नफ़खना फ़ीहे' कहा । यद्यपि अन्य स्थान पर जहां मरियम का उल्लेख लक्ष्य था, 'फीहा' कहा । जिससे ज्ञात हुआ कि यहां मोमिन का उल्लेख लक्ष्य है और इसी में रूह फूंकने का उल्लेख है तथा कुछ ने ज़मीर को हज़रत ईसा की ओर लगाया है ।

तफसीर हक़्क़ानी में शैखुल अल्लामा मौलाना अबू मुहम्मद अब्दुल हक़्क़ देहलवी ने इमरान की बेटी मरियम की स्थिति का बयान किया है और मरियम कौन थी ? इसका भी उल्लेख

किया है जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) को सुरक्षित रखा, (यह इसलिए कहा कि यहूद उन पर व्यभिचार का कलंक लगाते थे और हज़रत ईसा को (तौबा-ए) हरामी कहते थे।) उसकी पवित्रता के कारण हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी, जिससे वह गर्भवती हो गई। 'फ़ीहे' की ज़मीर फर्ज (गुप्त स्थान) की ओर फिरती है और फर्ज का इतलाक (सम्बन्ध) उस गुप्त स्थान से नहीं। इसलिए कि अरब के मुहावरे (परिभाषा) में कुर्ते और उसके दामन या ग़रेबान को भी फ़र्ज कहते हैं।

इब्ने अब्बास कहते हैं कि जिब्रील ने उनके गिरेबान में फूंक दिया था। अन्य कहते हैं, कि 'फ़ीहे' की ज़मीर हज़रत ईसा की ओर रजू (संकेत) करती है, और अन्य करात में फ़ीहा' मुअन्नम (स्त्रीलिंग) की जमीर है, वह नफ़्स (अस्तित्व) ईसा की ओर रजू करती है तथा ('फीहा' की जमीर) हज़रत मरियम की ओर भी रजू हो सकती है, इसलिए कि हज़रत मरियम के अन्दर रूह फूंकी गई थी, जिससे गर्भ हुआ।

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा २८, पृष्ठ १३४

आगे कानतीन (पुल्लिग) के विषय में लिखा, कि बैतुल मुकद्दस में जो पुरूषों की जमाअत दिन-रात भक्ति करती रहती थी; मरियम भी उसमें से थी अथवा यह कि वह स्त्री थी किन्तु मर्दाना (पुरुषवत्) थी, इसलिए कानतीन (पुल्लिग) कहां न कि कानतात (स्त्रीलिंग)।

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा २८, पृष्ठ १३६

हमने ऊपर जो विभिन्न तफसीरों के प्रमाण उद्धृत किये, उन पर हम क्या विवेचना करें ? व्याख्याकारों की विभिन्न व्याख्याएं स्वयम् ही विवेचना स्वरूप ।

किसी ने कहा-फ़र्ज में फूंका और 'फ़ीहे' को 'फीहा' पढ़ा गया। किसी ने कहा-जिब्रील ने चोली की जेब (ग़रेबान) में फूंका। किसी ने, खुदा को ही फूंकने वाला कहा। किसी में है, कि हमने जिब्रील के द्वारा फूंका। किसी ने कहा, कलाम फूंका, किसी ने कहा, ज़मीर चोली के गिरेबान की ओर फिरती है, और किसी ने कहा ज़मीर मोमिन की ओर। इस हेतु ज़मीर पुल्लिग की लाई गई। किसी का कुछ ठिकाना ही नहीं. कभी ग़रेबान में, कभी मरियम में, और जितने मुंह उतनी बातें।

हम कहेंगे कि जब वही आयत अन्य स्थान में सही हालत में है, तो यहां भूल को स्वीकार करना ही होगा, क्योंकि एक आयत में पुल्लिग और एक में स्त्रीलिंग ? यह सम्भव नहीं हो सकता। अतः यह समस्त व्याख्याएं निस्सार, निरर्थक और कल्पना मात्र हैं।

एक और आयत उदाहरणार्थ प्रस्तुत है। आयतः—

'वा मा लिया ला आबुद्दुल्लाजी फ़तरनी वा इलैहे तुर्जऊन"

कुर्आन, पारा २३, १ (प्रथम आयत)

अर्थात्—और क्या है मेरे लिए कि नहीं करता इबादत मैं उसकी, जिसने उत्पन्न किया मुझको और तुम उसकी ओर फेरे जाओगे।

व्याकरणानुसार एक ही वाक्य में इस प्रकार उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष का उल्लेख होना किसी प्रकार भी उचित नहीं। इस आयत में 'ली' और 'नी' की 'ये' तथा 'अ़बुदु मुतकल्लम (उत्तम पुरुष) की ज़मीरे और 'आबदो' वाहिद का सीगा (एक वचन) है, और 'तुर्जऊन' मध्यम पुरुष का बहुवचन है, इस प्रकार एक वाक्य में नहीं हो सकता। हम तफ़सीर सिराजे मुनीर से इसकी व्याख्या लिखते हैं। अतः ठीक से समझ में आ जाएगा।

सिराजे मुनीर में लिखा है-'मा लिया ला आबुद्दुल्लाजी फत्र रनी' का वास्तविक रूप' मा लकुम ला ता बदूना..... वा इलैहे तुर्जऊन' है, अर्थात् समस्त मध्यम पुरुष के बहुवचन शब्द कर दिये।

तफसीर सिराजे मुनीर, भाग ३ पृष्ठ ३४४-४५

तफसीर जलालैन में 'वा मा लिया ला आबूद्दुल्लाजी फतरनीवा फतरकुम व इलैहे तुर्जऊन वा अरज औ'

तफसीर जलालैन, पृष्ठ ३९९

कैसे पढ़ेंगे इसको "वा मा लिया ला आबुद्दुल्लाजी फ़तरना व इलैहे अर्जाओ या फिर मा लकुम ला ताबद्दुल्लजी फतरकुम व इलैहे तुर्जऊन ।

तफसीर कादरी ने बड़ी सरलता से आयत ठीक करने का यत्न किया । 'वा मालिया' का अर्थ करते हैं क्या है हमको सच्चाई की रो से (अर्थात् 'ली' का अर्थ 'लना' एक वचन का अर्थ बहु-वचन में कर दिया) नहीं इबादत करते उसकी जिसने हमको उत्पन्न किया । यहां भी एकवचन मुझको' स्थान पर 'हमको' बहुवचन कर दिया और नेस्त से इस्त (भाव) कर दिया तथा 'हम' के हुक्म जज़ा (कर्मफल) की ओर फेरे जाओगे। इतना लिख कर क़ादरी ने आगे लिखा है, क़यामत के दिन अपनी ओर उत्पन्न करने की इज़ाफ़त (संकेत) शुकर ज़ाहिर करना है और फिर जीवित होकर उठने की इज़ाफ़त काफ़रों के साथ झिड़क और धमकी में अधिकता है। (बस, हो गई सफ़ाई उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष की तथा एकवचन और बहुवचन की, सब धमकी में समाप्त हो गये) इस प्रकरण को यहां ही समाप्त करते हैं । इस कुर्आन का यह प्रकरण कुर्आन को समझने में बहुत सहायता देगा ।

नज़ूल आयाते कुर्आन

अर्थात्

आयतें उतरने का कारण क्या है ?

इस प्रकरण को तो हम नज़ूले आयाते कुर्आन में लिखेंगे, परन्तु उसके पूर्व कुर्आनी आयतों की एक झाँकी आपको दिखाना चाहते हैं, वह झांकी है, शराब के सम्बन्ध में, ताकि आप कुर्आन के लेखक की लेखन-शैली को जान लें। इससे आपको नज़ूल के विषय को ग्रहण करने में सहायता प्राप्त होगी।

कुर्आन में शराब हराम होने की विचित्र गाथा

शराब के सम्बन्ध में जो आदेश कुर्आन में हैं, उनको देखने से अपको यह भली भांति ज्ञात हो जायगा, कि, कुर्आन खुदा का कलाम नहीं है। यह तो किसी ऐसे व्यक्ति का कथन है, जो वहां के निवासियों की इच्छानुसार, उनकी हां में हाँ मिलाकर, उनको अपना साथी-मित्र सहयोगी और अनुयायी बनाना चाहता था।

अरब--निवासी मद्यपान के अत्यन्त आदी थे, इसलिए उनको अपनी ओर आकर्षित करने हेतु जो चाल चली गई, वह यह कि प्रथम मद्यपान (शराबखोरी) का समर्थन करना प्रारम्भ कर दिया और खुदा के नाम से एक आयत भी प्रस्तुत कर दी। आयत यह है--कि कुर्आन में यह उल्लेख हो रहा है 'कि खुदा ने तुम्हारे हेतु बहुत-कुछ किया। पहले कहा, कि मैं आसमान से वर्षा करता हूँ और उससे मृत भूमि को जीवित करता हूँ फिर आया, कि पशुओं के उदर गोबर और लहू के मध्य से दूध देता हूं। फिर आया:--

"वा मिनस्समरा तिन्नखीले वल आनाबे तत्तखेज़ूना मिनहो सकरंव्वा रिज़कन हसना" कुर्आन, पारा १४, रुकू ९।१५

तफ़सीर हक़्क़ानी में लिखा है:—

'मिन लिल इब्तदाय मुतअल्लक है नस्काकुम.....और मह्ज़ूफ़ से मुतअलक है ऐ नस्काकुम मिन समायते इसमें नस्काकुम लुप्त है। अर्थ यह होगा, कि पालते हैं हम तुमको फलो से.....खजूर और अंगूर की चर्चा करता है। तत्तखेज़ूना मिनहो सकरन सकर से तात्पर्य शराब है। यद्यपि सम्बोधन कुरैश मक्का की ओर है और मक्का में शराब हराम भी नहीं हुई थी।

तफ़सीर हक़्क़ानी. पारा १४, पृष्ठ ३६

'तुम्हारे हेतु है मेवों से, खजूरों के और अंगूरों के, जो कुछ लेते हो तुम उमसे मस्त करने वाली वस्तुएं, यह आयत शराब हराम होने के पूर्व उतरी। यहां शराब का तात्पर्यहै-जो खजूर या अंगूर से लेते है। (अर्थात् शराब निकालते है।)

तफ़सीर कादरी, भाग १, पृष्ठ ५७०

स्मरण रहे कि कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि सिरका भी अर्थ किया जा सकता है, किन्तु हम कहेंगे कि आयत में तो 'सकर' शब्द है, जिसका अर्थ मस्त करने वाली या नशा उत्पन्न करने वाली वस्तुएं हैं। अतः सिरका (अर्क़) अर्थ नहीं हो सकता।

इसी प्रकार:—"ऐ व नुस्कीकुम मिनस्समरा तिन्नखीले वल एनाबे, वस्सके मस्दर माने बहिल खमरे'

तफ़सीर बैज़ावी, पृष्ठ २२७

अर्थात्—सकर का अर्थ शराब है।

तफ़सीर जलालैन पृष्ठ २२१ में भी है कि सकर से अर्थ शराब है, और यह भी लिखा है कि यह आयत शराब के हराम

होने से पूर्व की है। इस आयत में शराब निकालना एक नेमत (उत्तम वस्तु) के रूप में दर्शाई है, कि अंगूरों और खजूरों से तुम नशा लाने वाली वस्तुएं निकालते हो।

क्या कहें जब खुदा की मुहर इस बात पर लग गई कि अंगूर और खजूर खाने और शराब निकालने हेतु है, तो इस्लाम में निर्भयतासहित अत्यधिक रूप से शराब प्रचलित रही और वर्षों तक प्रचलित रही।

अल्लामा सियूति लिखते हैं कि शराब सम्बन्धी तीन आयतें उतरीं, अर्थात् शराब-बन्दी विषयक, आयत है:-

'यस्अलूनका अनिल खमरे वल मैसिरे कुल फ़ीहिमा इस्मुन कबीरूंव्वा मना फ़िओ लिन्नासे वा इस्मोहुमा अकबरो मिन्नफएहिमा'।

कुर्आन, पारा २, रकू २७।११

अर्थात्-तुझसे (हजरत मुहम्मद से) प्रश्न करते हैं शराब और जुए के विषय में ? कह इन दोनों में पाप बड़ा है या लाभ लोगों के हेतु, किन्तु लाभ से गुनाह (पाप) बड़ा है।

जब यह आयत उतरी तो कहा जाने लगा कि शराब हराम हो गई। (इससे सम्बन्धित दूसरा कौल आगे लिखेंगे) लोगों ने कहा या रसूलिल्लाह (हजरत मुहम्मद) ! हमको इनसे लाभ उठाने दे जैसा कि खुदा ने कहा है। रसूलिल्लाह मौन रहे।

तफ़सीर इत्तिकान,-१ पृष्ठ ६४

(किन्तु मुझे तफसीर मजहरी का कथन युक्तियुक्त प्रतीत होता है, लेखक)

तफसीर मजहरी में काज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह ने इस विषय में सविस्तृतरूप से लिखा है, उसका कुछ भाग इस प्रकार है कि--जब रसूलिल्लाह मदीना में पधारे, उस समय वहां के

निवासी शराब पीते तथा जुआ खेलते थे । उन्होने स्वयं ही इन दोनों (शराब व जुआ) के विषय में पूछा तो उपरोक्त आयत उतरी (किन्तु तफसीर मज़हरी पृष्ठ ५५८ पर है कि मुआज़ बिन ज़बल और हज़रत उमर ने पूछा) लोग कहने लगे कि इस आयत से हम पर इसका हराम होना सिद्ध नहीं होता, क्योंकि केवल इतना कहा गया है कि इन दोनों में बड़ा गुनाह (पाप) है' और यह विचार कर वह निरन्तर शराब पीते रहे .. ..(यहाँ तक कि यह आयत उतरी कि नशे की स्थिति में शराब न पिया करो, इसको आगे लिखेंगे ।) तफ़सीर मज़हरी, पारा २, पृष्ठ ४३६ कि शराब के विषय में प्रथम आयत वह है (जिसे हम पूर्व में लिख आये हैं—लेखक ।) उस समय समस्त मुसलमान मदिरा (शराब) पिया करते थे और उस समय में वह उनको हलाल भी थी (वाह, शराब और हलाल ?) (फिर जो आयत क्रमांक २ है) उसके पश्चात् कुछ लोग शराब पीते रहे और कुछ ने छोड़ दी, जिन्होंने नही छोड़ी वह आयत के इन शब्दों से 'इसमें लाभ है लोगों के हेतु' इस उदाहरण को मान मदिरापान करते रहे । इसी मध्य में एक घटना घटी कि एक दिन अब्दुरहमान बिन औफ़ ने अर्थात् सत्कार किया और उसमें हज़रत मुहम्मद के अधिकांश मित्रों को भी आमन्त्रित किया और उस दावत (भोज) में मदिरापान भी करवाया । उसी स्थिति में सायँकालीन नमाज़ का समय हो गया तो उन्होंने एक व्यक्ति को नमाज़ पढ़ाने हेतु खड़ा कर दिया किन्तु उसने सूरत काफ़िरून ग़लत पढ़ी । फलस्वरूप खुदा ने निम्न आयत उतारी कही गई :—

' या अय्यु हल्लज़ीना आमनू ला तकरबुस्सलाता व अंतुम सुकारा' कुर्आन, पारा ५, रकू ७/४

इस आयत से नमाज़ के अवसरों पर शराब हराम करदी और कुछ लोगों ने नशा एकदम छोड़ दिया.... .....और कुछ लोग नमाज़ के अवसरों को छोड़ कर अन्य समयों में पीते रहे ।

तफ़सीर मज़हरी पारा २, पृष्ठ ४४०

उपरोक्त आयत की व्याख्या तफ़सीर मज़हरी में निम्नानुसार है:—तुम नमाज़ की स्थिति में हो तो नशे के समीप न जाओ। यहाँ तक कि जो कुछ मुंह से निकाल रहे हो, उसको समझ लो, नशा जिस सीमा तक नमाज़ पर प्रतिबंधक है, ऊसका निश्चय (तायीन) इस शब्द से कर दिया (अर्थात् सीमित नशा सलात (नमाज़) को रोकने वाला (प्रतिबंधक) नहीं, जब तक नशा इतना न हो कि मनुष्य यह समझ न सके कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ, नमाज़ पढ़ सकता है।) **तफ़सीर मज़हरी, पारा ५, पृ. ८७**

व्याख्याकार का अभिप्राय यह है कि सीमित अर्थात् आंशिक नशे की स्थिति में मनुष्य नमाज़ पढ़ सकता है। आगे चौथी आयत इस प्रकार है:—

'या अय्यु हल्लज़ीना आमनू इन्नमल ख़मरो वल मैसिरो वल अनसावो वल अरहामो रिजसुम्मिन अमलिश्शैताने फज्तनेबूहो ल अल्लकुम तुफलेहून' कुर्आन, पारा ७, रकू १२।२

अर्थात्-ऐ ईमानवालों ! शराब और जुंआ व अनसाब (मूर्तिगृह एवं अरहाम (बाण पर जुंआ) की गंदगी है. शैतानी अमल [काम] है पस, इस गंदगी से बचो। **तफ़सीर मज़हरी पारा ७, पृ. ४२**

आगे फिर इसी उक्त पृष्ठ पर दोहराया है कि शराब और जुआ गन्दगी है तथा शैतान के कार्य हैं। (पृष्ठ उक्त ४२)

यह शराब-विषयक आयतें सम्पन्न हुई।

सत्यानुगामी सज्जनो ! आपने उक्त लिखित शराब का

सम्पूर्ण कांड पढ़ लिया है। अब विचार कीजिये कि प्रथम आयत में शराब निकालने व पीने की प्रेरणा है। द्वितीय आयत में आंशिक अस्वीकृति के साथ लाभप्रद बताया तथा तृतीय आयत में मदिरापान की स्वीकृति इस प्रतिबन्ध सहित दी कि नशे की स्थिति में नमाज़ वर्जित है, नमाज़ के पूर्व या पश्चात् पी लिया करो और चतुर्थ आयत में कहा गया है कि शराब और जुआ गन्दगी तथा शैतान का कार्य है किन्तु अर्श पर विराजे खुदा और उसके पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद दोनों मुसलमानों को गन्दगी पीते हुए देखते रहे, यहां तक कि हज़रत मुहम्मद की पैग़म्बरी का अन्तिम समय आ गया, और अन्त समय में हज़रत मुहम्मद को शराब गन्दगी दिखाई देने लगी तथा खुदा भी नित्य प्रति मुसलमानों में प्रचलित मदिरापान देख मौन साधे रहा व पहले यह शैतानी कार्य उसे भी दृष्टिगोचर न हुआ ? कितने आश्चर्य एवं विचारपूर्ण बात है ?

क्या कोई भी विवेकशील मनुष्य ऐसे कथन को खुदा का कलाम स्वीकार कर सकता है, जो शराब जैसी निकृष्ट वस्तु का समर्थन करता रहा, लाभप्रद बताता रहा और वर्षों तक मौन रहा। यदि शराब हराम वस्तु है ? तो वह सदैव ही हराम है ! सामायिक गतिविधियों से उसका हराम या हलाल होना सर्वथा अनुचित है; और यदि खुदा ऐसा करता है, तो ऐसा खुदा ? कभी खुदा (ईश्वर) कहलाने का अधिकारी नहीं ?

खुदा के फ़रमान के पश्चात् भी मुसलमानों में शराब बन्दी न हुई और हज़रत अबूबकर एवं उनके पश्चात् हज़रत उमर को अपनी खलाफत (राज्याधिकार) में मदिरापान

के लिये ४० कौड़े दन्ड की व्यवस्था करनी पड़ी ।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ७ (हाशिया) पृष्ठ ४१

अब एक चर्चा यह चली कि शैतानी कार्य (मदिरापान) जिन व्यक्तियों ने किया, जीवित या मृत है ? उनका क्या होगा ? तो तत्काल उच्च न्यायालय (ख़ुदा से) से निर्णय होकर आ गया कि: -

'लैसा, अल्लाज़ीना आमनू व अमिलुस्सा लिहाते जुनाहुन फ़ीमा तएमू' कुर्आन, पारा ७, रकू १२।२

अर्थात--उन लोगों पर कोई गुनाह नहीं है, जिन्होंने अच्छे काम किये और ईमान लाये तथा इसके मध्य उन्होंने वह हराम वस्तु खा पी ली और वह उन पर हराम न थी। जीवितों पर भी कोई अपराध नहीं है, जिन्होंने हराम होने के पूर्व मदिरापान किया.....इत्यादि । तफ़सीर इब्ने कसीर, पारा-७ पृ. १२

तफ़सीर कादरी-१-पृ. २४३

अब हम भी इस शराब की चर्चा को बन्द करते हैं, क्योंकि जब उच्च न्यायालय से ही निर्णय हो गया तो फिर इस विषय पर चर्चा का अधिकार नहीं रह जाता है !

प्रकरण ८ : सबब्बे नुज़ूल

—अर्थात् -

कुर्आन की आयतें उतरने के कारण

हम इस प्रकरण के सम्बन्ध में आग्रहपूर्वक और साहस के सहित यह कहेंगे कि जब तक कुर्आन के इस विषय को पूर्ण रीति से न समझ लिया जाये, जब तक कुर्आन का सारांश एवं

अभिप्राय कदापि नहीं जाना जा सकता है। कुर्आन के ठीक अर्थ जानते हेतु आयत का शाने नज़ूल (उतरने का कारण) जानना अत्यंत आवश्यक है।

शाने नज़ूल क्या है ? पहले यह जान लेना चाहिए। कुछ लोगों ने हज़रत मुहम्मद से प्रश्न किये या ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती थीं कि जिनका निराकरण एवं समाधान अनिवार्य एवं आवश्यक होता था। तब हज़रत मुहम्मद तत्काल उत्तर देने की क्षमता न होने पर यों टाल दिया करते थे कि उत्तर ख़ुदा से प्राप्त होगा। फिर सोचने-समझने के पश्चात् ख़ुदा के नाम ही से आयत के रूप में उत्तर उपस्थित करते थे। हज़रत मुहम्मद के इस शस्त्र ने बहुत बड़ा कार्य किया। यदि किसी प्रश्न के उत्तर में विलम्ब हो जाता तो कह देते कि जायत का भेजना ख़ुदा के अधिकार मे है, जब चाहे भेजे।

अल्लामा सियूति ने अपनी तफ़सीर इत्तिकान में ज़ाबरी के कथन को उद्धृत किया है:—

नज़ूले कुर्आन (कुर्आन उतरने) की दो किस्में हैं। एक किस्म (प्रकार, आरम्भिक उतरने की है। दूसरी किस्म (प्रकार) किसी घटना या प्रश्न के पश्चात् की है।' इसका स्पष्टिकरण अल्लामा सियूति इस प्रकार करते है, कि उतरने के कारणों को जान लेने' के पश्चात् ही आयतों के अर्थों का स्पष्टीकरण हो सकता है, और उन आयतों के समझने मे उलझन नहीं पढ़ती।

वाहदी कहते है कि आयत की कथा और उतरने के कारण को जाने बिना उसकी व्याख्या कर सकना नितान्त असम्भव है।

इब्ने दक़ीक़ुल ऐद का कथन है कि कुर्आन के अर्थों को

समझने हेतु सबसे बड़ा मार्ग असबाबे नज़ूल (उतरने के कारण) का कथन है... .....।

शैखुल इस्लाम इब्ने तस्मीया के मत में है, कि आयत के उतरने के कारण जानने पर आयत को समझने में सहायता प्राप्त होती है। तफ़सीर इत्तिकान,-९, पृष्ठ ७१

इसके आगे अल्लामा सियूति ने कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जिसका अर्थ है कि शाने नज़ूल ही उचित रूप से आयतों के अर्थ निश्चित कर सकता है। यथा:—

मर्दान बिनल हुकुम को आयत करीमा '**लातहसब्बनल्लज़ीना यफ़रहूना बिमा**' का अर्थ समझने में कठिनाई उत्पन्न हो गई। पूर्ण आयत निम्न प्रकार है:—

'ला ताह सबन्नल्लज़ीना यफ़रहूना बिमा अतब्बा यहिब्बूना अंय्यहमेदू बिमा लम यफ़अलू फ़लातहसबन्नाहुम बिमफ़ाज़ तिम्मिनल अज़ाबे वलहुम अज़ाबुन अलीम'

कुर्आन, पारा ४, रकू १९।१०

मर्दान इसका अर्थ यह समझता था कि यद्यपि प्रत्येक मनुष्य उसी वस्तु पर हर्षित होता है, जो उसको दी गई है, और मित्रता रखता है कि जिस काम को उसने अज़ाब पाने के योग्य नहीं किया है, उस कारण से वह स्तुति के योग्य माना जाये। परन्तु खुदा कहता है-निस्सन्देह हम उन सबको अज़ाब (कष्ट) देंगे, और मर्दान इसी ग़लती पर दृढ़ रहा। यहाँ तक कि इब्ने अब्बास ने उससे बयान किया कि यह आयत अहले किताब (खुदा की दी हुई किताब को मानने वालो) के विषय में उस समय उतरी थी जब कि रसूलिल्लाह ने उनसे किसी बात

की जानकारी चाही थी और उन्होंने असल बात को आप ने गुप्त रख कर कुछ कह दिया था तथा उन्होंने इस बात का दृढ़ विश्वास दिला दिया था कि जो हमने कहा वही ठीक है और इस प्रकार रसूलिल्लाह के सम्मुख सुर्खरू (छुटकारा पाने वाले) और क़ाबिले तारीफ़ (प्रशसा योग्य) बन गये थे । (अर्थात् स्वयं रसूलिल्लाह को वास्तविकता का ज्ञान न हुआ)

तफ़सीर इत्तिकान, ९-प्रकरण पृ. ७१

इसका तात्पर्य यह है कि मर्दान बिनल हुकुम आयत के शाने नजूल (उतरने का कारण) को नही जानते थे और ग़लत अर्थ समझते थे । इब्ने अब्बास ने उन्हें शाने नजूल को समझाया तो उन्होंने आयत का सही अर्थ समझा । इस आयत पर विभिन्न तफ़सीरों ने भिन्न-भिन्न अटकल लगाई हैं। हम जिस समय कुर्आन की प्रत्येक आयत की समीक्षा करेंगे तो उस समय विस्तारपूर्वक इन आयतों पर लिखेंगे । इसके आगे अल्लामा सियूती ने एक और आयत लिखी है:--

लैसा अलल्लाज़ीना आमनू वा अमेलुस्तालेहाते जुनाहुम फ़ीमा तएमू इज़ा मत्ताकव्वा आमनू वा अमेलुस्सालेहाते सुम्मत्तकव्वा आमनू सम्मत्तकव्वा अहसनू वल्लाहो युहिब्बु लमुहसेनीन'

कुर्आन, पारा ७, रकू २

उक्त आयत के सन्दर्भ में अल्लामा ने निम्नप्रकार लिखा है--

उस्मान बिन मतऊन और अमर बिन मादी करब के सम्बन्ध में कहा गया है कि यह दोनों व्यक्ति शराब को मुबाह (उचित) कहा करते थे और अपने पक्ष मे कुर्आन की उपरोक्त आयत प्रस्तुत करते थे । यदि उनको इस आयत का नज़ूल (उतरना) ज्ञात होता तो कदापि ऐसी बात न कहते ।

इस आयत के उतरने का कारण यह था कि अत्यधिक लोगों ने शराब हराम होने की आज्ञा उतरने के समय कहा कि उन लोगों की दशा क्या होगी, जो शराब को अपवित्र होने पर भी उपभोग करते थे और अब वह राहे खुदा के अन्तगत जहाद (धर्मयुद्ध) करते हुए मारे गये हैं या अपनी मौत मर चुके हैं। उन लोगों के संतोष हेतु यह (उक्त) आयत उतरी थी।]

तफ़सीर इत्तिकान, ९ पृष्ठ ७२

उक्त आयत की व्याख्या करते हुए तफ़सीर कादरी में लिखा है, कि जब शराब हराम होने की यह आयत उतरी तो सहाबी (हजरत के मित्रों) ने निवेदन किया कि या रसूलिल्लाह ! हमारे भाई लोग जो शराब पीते थे और मर गये हैं उनकी क्या दशा होगी ? तो यह आयत उतरा:—(हम पूर्व में शराब-प्रकरण में लिख चुके हैं) "उन लोगों पर कोई गुनाह नहीं है, जिन्होंने अच्छे काम किये और ईमान लाये तथा इसके मध्य उन्होंने वह हराम वस्तु खा-पी ली और वह उन पर हराम न थी। जीवितों पर भी कोई अपराध नहीं है, जिन्होंने हराम होने के पूर्व मदिरा पान की। जब शिरक (अन्य खुदा) से पहहज़ (दूर रहे) करे और अपने ईमान पर दृढ़ रहे, और भले काम किये, और हराम वस्तुओं से दूर रहे, और उन वस्तुओ के हराम होने पर ईमान लाये, और प्रमाणित रहे अपनी त्यागवृत्तियों पर और भले काम करें। अल्लाह नेक काम करने वालो को अपना मित्र रखता है।"

उक्त आयत के (अर्थ) में स्पष्ट आज्ञा है कि मुसलमान होने से पूर्व या मुसलमान होने की स्थिति मे जो वस्तु हराम नहीं हुई थी, उसको उन्होने खाया व पिया, तो जो मर चुके

या जीवित हैं और ऐसी वस्तुएं खाते-पीते रहे किन्तु हराम होने के पश्चात् उन्होने खान-पान त्याग दिया तो उन पर कोई गुनाह (अपराध या पाप) नहीं। खुदा ऐसे मनुष्यों को मित्र रखता है। तफ़सीर कादरी-१-पृष्ठ २४३

हम पूछते हैं कि क्या मुसलमान होने से पूर्व वह मनुष्य नहीं थे ? और उस स्थिति में पाप या अपराध करने पर वे पापी या दोषी क्यों नहीं माने जायेंगे ? और शराब को हराम करने की खुदा को बीसियों वर्ष बाद सूझी, जब कि वह मुसलमान होने पर भी गटागट शराब पीते रहे ? कहने का अभिप्राय यह है कि कोई वस्तु कितनी ही बुरी या हानिप्रद क्यों न वह अपने बुरे होने के कारण हराम नहीं हैं, जब तक कि इस्लाम उसके हराम होने की घोषणा न कर दे। क्या शराब शराब होने से हराम है ? या कि हज़रत मुहम्मद या कल्पित खुदा की आज्ञा आने के पश्चात हराम अर्थात् बुरी है। हम इस विषय पर पूर्व में भी गत पृष्ठों मे पूर्णरूपेण प्रकाश डाल चुके हैं।

सत्यान्वेषी एवं विद्वज्जनों को ध्यानपूर्वक यह सोचना चाहिए कि बीसियों वर्षों तक मुसलमान मदिरापान करते रहे और उनके खुदा को यह ध्यान ही नहीं आया कि शराब बुरी वस्तु है, इसका तत्काल निषेध कर दिया जाये, और पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद भी उन मुसलमानों को मदिरापान करते देखते रहे और कुछ न बोले।

हम पूछते हैं, कि क्या शराब उस समय बुरी वस्तु नहीं थी, जब मुसलमान पीते थे और यदि थी, तो बीसीयों वर्षों तक हज़रत ने उनको मदिरा पान करने क्यों दिया ? इसका स्पष्ट

अर्थ यह है कि खुदा के आदेश से वर्जित की गई, न कि शराब बुरी वस्तु होने से मुसलमानों से वर्जित हुई।

इससे आगे अल्लामा सियूति ने कुर्आन की एक सुप्रसिद्ध आयत लिखी है, और यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि शाने नजूल के जाने बिना आयत का स्पष्टीकरण नहीं होता। आयत —

'वालिल्लाहिल मशरिक़ो वल मग़रिबो फ़ऐन मा तवल्लुर फसम्मा वजहुल्लाहा' कुर्आन, पारा, १ रकू १४

अर्थात्-पूर्व और पश्चिम अल्लाह के लिये हैं। पस, जिस ओर तुम मुंह करो, उस ओर ही अल्लाह का मुंह है।

(इस आयत को न समझ कर कई मुस्लिमपरस्त हिन्दू, इस्लामी खुदा के सर्वव्यापी होने का ढिंढोरा पीटते हैं।)

जो मनुष्य इस आयत के उतरने का कारण (शाने नजूल) नहीं जानता, वह अवश्य ही भ्रमित हो जायेगा। यदि खुदा का मुंह प्रत्येक ओर माना जाए तो पूर्व की ओर भी मुंह करके नमाज पढ़ लेना उचित होगा, परन्तु ऐसा नहीं किया जा रहा क्योंकि यह आज्ञा आम (सार्वजनिक) नहीं है।

तफसीर इत्तिकान के पृष्ठ ७३ में यह आज्ञा विशेषतः उस मनुष्य हेतु है, जो कि काबे की दिशा को न जानते हुए मात्र अपने विश्वास पर ही काबे की दिशा, मान कर नमाज़ पढ़ ले और पीछे उसको अपनी भूल का ज्ञान हो गया हो।

इस आयत के उतरने का कारण यह कि बेहकी और दारे कुत्नी ने रवायत की है, कि हज़रत जाबर ने कहा है कि जनाब रसूलिल्लाह ने एक छोटा-सा युद्ध करने के लिये लश्कर (सेना) को किसी स्थान पर भेजा, उसमें मैं भी था। मार्ग मे हमें अन्धेरे

में आ घेरा और क़िबला की पहचान नहीं रही, सबने अपने अपने विचारानुसार नमाजें पढ़ी..... जब हम सफ़र (यात्रा) से वापिस लौटे और इस घटना को रसूलिल्लाह के समक्ष कहा, तो आप सुन कर मौन हो गये। उस समय यह (उक्त) आयत उतरी।

तफ़सीर मजहरी, पृष्ठ २०२
तफ़सीर हक़्क़ानी, पृष्ठ ६६
तफ़सीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ७०-७१
तथा 'लबाबन्नकूल फ़ी असबाबिन नजूल' पारा-१

उक्त आयत के सन्दर्भ में ऐसी व्याख्याएं अन्य कई और भी तफ़सीरों में हैं। तफ़सीर बैजावी और तफ़सीर क़ादरी में इब्ने उमर से लिखा है, कि यह आयत यात्रियों हेतु है, अस्तु, कुछ भी हो, क्योंकि मुस्लिम विद्वानों में कहीं भी मतैक्य हुआ ही नहीं।

इस आयत पर क़ादियानी उम्मत की भी सुन लें—

तफसीर बयानुल कुर्आन के पृष्ठ १०७ में लिखा है. कि मुसलमानों को नमाज़ से रोका जाता था और खानाकाबा से भी रोका गया था, इसलिए यह आयत उतरी कि अल्लाहतआला की दृष्टि खानाकाबा में ही सीमित नहीं है। तुम मुसलमान हो जहाँ जाओगे, अल्लाह की दृष्टि तुम्हारे साथ होगी।

(क्या अहमदी मुसलमान इसके अनुसार पूर्व की ओर मुंह कर नमाज़ पढ़ने को तत्पर हैं ?)

एक अहमदी ने तो उक्त बात कही, अब दूसरे की भी सुनिये—

क़ादियानी खलीफ़ा दोयम हज़रत नूरुद्दीन साहिब के 'दर्से (पाठ) क़ुर्आन' के अंश लेकर जो तफ़सीर शेख याक़ूबअली तुराब ने लिखी है, उसमें इस आयत की व्याख्या निम्नानुसार है:—

तुम प्रत्येक कार्य में ख़ुदा की अनुकूलता को प्रथम स्थान

दो। हजरत मुहम्मद के साथियों को बड़ी-बड़ी विजय प्राप्त होने वाली थी। इसलिये कहा कि तुम पूर्व और पश्चिम में विस्तृत हो जाओगे, विजय प्राप्त करोगे, पूर्व हो या पश्चिम, खुदा दोनों स्थानों पर प्रतिष्ठित है। तफसीर नूरुद्दीन पृष्ठ १३५

उक्त दोनों अहमदी विचारकों की सम्मति में धरती-आकाश का अन्तर प्रतीत होता है। अस्तु, 'दरोग़ बर गर्दनें रावी' अर्थात् झूठ, रवायत करने वालों (व्याख्याकारों) की गर्दन पर है।

इस आयत के उतरने का कारण ज्ञात होने से अब पाठकों को भली प्रकार विदित हो गया कि आयत के उतरने का कारण क्या है और (शाने नज़ूल) जाने बिना आयत का अर्थ नहीं जाना जा सकता, क्योंकि यह आयत तो हजरत मुहम्मद ने उन लोगों के विश्वास हेतु घढ़ी थी, जो अंधेरे के कारण या जहाज यात्रा के कारण दिशा से अपरिचित हो जायें और मक्का की दिशा को स्थिर न कर सकें।

आगे अल्लामा सियूती ने इसी विषय को और स्पष्ट करने हेतु निम्न आयत लिखी है:—

'इन्नस्सफ़ावल मर्वता मिन शआएरल्लाहे'

कुर्आन, पारा २, रकू ३

अर्थात—सफ़ा व मरवा पहाड़ियां अल्लाह की निशानियों में से हैं। (जो मुसलमान हज करने जाते हैं, वे इन दोनों पहाड़ियों के मध्य मन्द-गति से दौड़ लगाते हैं)

इस आयत के उतरने का कारण यह है, कि सफ़ा और मरवा दो पहाड़ियां हैं। इस्लाम से पूर्व सफ़ा पर एक बुत (मूर्ति) था, जिसका नाम असाफ था और मरवा पर भी एक बुत (मूर्ति) था, उसका नाम नाइला था। इस्लाम से पूर्व इन

मूर्तियों की पूजा होती थी और लोग पूजा हेतु दोनों पहाड़ियों की परिक्रमा किया करते थे, तथा उनका स्पर्श भी करते थे।

बैजावी के कथनानुसार जब इस्लाम का प्रभुत्व बढ़ा तो मूर्तियों को तोड दिया गया किन्तु फिर जो लोग मुसलमान हुए वह सफा और मरवा के मध्य दौड़ने से आपत्ति और घृणा करते थे।

अंसार का भी ऐसा ही विचार था। इन दोनों पहाडियों के हेतु जो आयत उतरी कही जाती है। वह पूर्ण आयत निम्न प्रकार है:—

'इन्नस्सफा वल मवता मिन शआए रिल्लाहे फ़मन हज्जलबैंता अवेतमरा फला जुनाहा अलैहे अंय्यत्तव्वफा बिहिमा,

कुर्आन, पारा २, रकू ३

अर्थात्—निस्सन्देह, सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियां में से है। पस, जो व्यक्ति काबा का हज करे, उमरा करे, पस, उस पर गुनाह (पाप या अपराध) नहीं कि सफा और मरवा पहाड़ियों की परिक्रमा भी करें। **तफसीर कादरी-१ पृ, ३९**

इब्ने कसीर-२ पृ, १४

(यहां पर कुर्आन दोनों पहाडियों की परिक्रमा करना बताता है, जो स्पष्ट ही मूर्ति पूजा की द्योतक है, और हज़रत मुहम्मद ने भी इस प्राचीन परम्परा को प्रचलित रखा।]

बुखारी ने आसिम से रवायत की है, कि मैंने हज़रत अंस से सफ़ा व मरवा के मध्य दौड़ने के सम्बन्ध में पूछा, तो उसने कहा कि हम इस्लाम के पूर्व इस दौड़ने को जहालत (मूर्खता) की बात समझते थे। जब इस्लाम आया तो दौड़ना छोड़ दिया

इसपर यह उक्त आयत उतरी है। तफ़सीर-इब्ने-कसीर-२-पृष्ठ-१४
तफ़सीर मज़हरी-पारा-२ पृष्ठ २६०

तफ़सीर जलालैन के पृष्ठ २३ में है, कि सफ़ा पहाड़ी का नाम हज़रत आदम के बैठने और मरवा पहाड़ी का नाम हव्वा (आदम की पत्नि) के बैठने के कारण है।

किताब लबाबिन्नक़ूल फ़ी असबाबिन नज़ूल में भी इस (उक्त) आयत का उतरने का यही कारण लिखा है।

यह बात अत्यन्त विचारणीय है कि इस्लाम के ५ अरकानों (कर्तव्यों) में हज्ज करना भी एक कर्तव्य है। किसी सम्प्रदाय की सभ्यता उसके रस्मों-रिवाजों (प्रथाओं वा रिवाजों) से जानी जाती है। इन दोनों पहाड़ियों के मध्य दौड़ना और दौड़ना भी विचित्र प्रकार से अर्थात् कांधे हिला-हिला कर दौड़ना कोई सभ्यता का चिह्न प्रतीत नही होता और हज्ज का अर्थ भी दर्शन करना ही है। इन पहाड़ियों की सात परिक्रमाएं करना और दौड़ना इन दोनों का सम्बन्ध प्रभु-भक्ति से तो कोई दृष्टि-गोचर नहीं होता और न इससे कोई सुधार ही सिद्ध होता है, जैसा कि ऊपर लिखा गया 'प्राचीन मूर्ति-पूजकों की प्रथा थी' जिसे मुसलमानों के साथ भी बांध दिया गया है। पुरुषों और स्त्रियों का इस प्रकार विचित्र ढंग से दौड़ना एक तमाशा-सा दृष्टिगोचर होता है।

दुख है ! कि हज़रत मुहम्मद सफ़ा व मरवा पहाड़ियों में दौड़ कर सात परिक्रमाएं करना और हजरे असबद की परिक्रमा करने तथा उसको चूमने की प्रथाओं को दूर न कर सके। यह विचारणीय है कि किसी पहाड़ या पत्थर के आस पास सात बार फिरना या उसे चूमना स्पष्ट यह मूर्ति पूजा ही कही जा सकती है।

शाने नज़ूल के विषय में एक बात और भी समझ लेना आवश्यक है कि अनेक आयतें ऐसी भी हैं कि जिनका नज़ूल (उतरना) विशेष कर एक-दो या कुछ लोगों के संदर्भ में ही हुआ है किन्तु बाद में वह आदेश सर्व साधारण के हेतु माना गया।

दूसरी आयतें ऐसी भी हैं कि जिनके लिये उनका उतरना हुआ, उसी के साथ उनका सम्बन्ध माना गया।

प्रथम प्रकार की आयतें इस प्रकार हैं कि—चोरी की आयत का उतरना एक स्त्री विशेष के हेतु हुआ किन्तु बाद में सब चोरी करने वालों के हेतु उस आयत की आज्ञा मानी गई। वह आयत निम्न प्रकार है:—

'वस्सारिको वस्सारिकतो फक्तऊ ऐदीहुमा'

कुर्आन, पारा ६, रकू ६/१०

अर्थात्—चोरी करने वाले और चोरी करने वाली के हाथ काट दिये जायें। तफ़सीर इत्तेकान पृ. ९ पृ. ७५

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया का कथन है, वह कहते हैं ज़ुहार की आयत साबित बिन कैस की पत्नी, कलाला की आयत जाबर बिन अब्दुल्ला और 'अनेहकुम बैनहुम' आयत बनी कुरेज़ा और बनी नसीद के सम्बन्धों में उतरी। इत्यादि।

तफ़सीर इत्तिकान, ९ पृ. ७५

दूसरी प्रकार की आयत जो किसी व्यक्ति विशेष के लिये है:—

'सयोजन्नबोहल अतकल्लज़ी योती मालहू यतज़क्का'

कुर्आन, पारा ३० सूरतुलैल

सब लोग इस बात पर एकमत हैं कि यह आयत हज़रत अबूबकर के हेतु विशेष उतरी। अर्थ इस प्रकार है:—

निकटतम है कि आग से दूर कर दिया जाये परहेज़गार

अर्थात् अबूबकर सिद्दीक, जो कि देता है अपना माल और तलाश करता है उससे नेकनामी और पवित्रता ! काफ़िर कहते थे कि बलाल (यह गुलाम था, इसको हज़रत अबूबकर ने क्रय कर मुक्त किया था) उसका कुछ हक़ अबूबकर के जिम्मे था कि हज़रत सिद्दीक ने उसे मोल लेकर स्वतन्त्र कर दिया। खुदा ने उन काफ़िरों की बात रद्द करने के हेतु कहा:—

इत्तेक़ान प्र. ९-पृ-७६

आयत:—

व मा लि अहदिन इन्दह मिन्नेमते तुज्ज़ा। इल्लब्तेग़ाआ वज्हे रब्बेअहिलाला:— कुर्आन, पारा ३० सूरत लैल

अर्थात्—किसी के हेतु अबबकर के पास कोई बात नहीं थी कोई नेमत या अहसान का बदला लिया जाये, किन्तु उसने वे कार्य अपने ईश्वर की प्रसन्नता चाहने को, जो बहुत बड़ी है किया।

तफसीर कादरी, पृष्ठ ६३५

यह आयत विशेष कर हजरत अबूबकर के लिये है।

तफसीर इत्तिकान, पृष्ठ ७६

इस प्रकार की और बहुत सी आयतें हैं। आगे एक आयत और लिखते हैं। आयत :—

'अलम तरा इलल्लज़ीना ऊ तू नसीबम मिनल किताबे योमिनूना बिल जिबते वत्तागू ते व यकूलूना लिल्लज़ीना कफ़रू हाओ लाए अहदा मिनल्लज़ीना आमनू सबीला'

कुर्आन पारा ५ रकू ७/७

इस आयत के सम्बन्ध में अल्लामा सियूति लिखते हैं कि इसका संकेत काब बिन अशरफ और उसके सदृश अन्य यहूदी विद्वानों

की ओर है। जिस समय वह लोग मक्का गये थे और उन्होंने बदर के युद्ध में कत्ल हुए मुशरकों की लाशें देखी थी तो उन्होंने मक्का के मुशरकों को रसूलिल्लाह से लड़ने और अपने कत्ल हुए भाईयों का प्रतिशोध लेने हेतु उभारा। मक्का के मुशरकों ने उनसे ज्ञात करना चाहा कि प्रथम तुम यह बताओ कि हम दोनों में से कौन सन्मार्ग पर है ? काब बिन अशरफ और उसके साथियों ने कहा कि तुम लोग सीधे सत्य मार्ग पर हो !

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ९, पृष्ठ ७७

तफ़सीर जलालैन ने भी इस आयत का सम्बन्ध काब बिन अशरफ से ही बताया है। **तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ७८**

बुखारी ने अक्रमा के आधार पर इब्ने अब्बास की यह हदीस रवायत की है कि हलाल बिन उमैया ने अपनी पत्नी पर लांछन लगाया। आयत इस प्रकार है :—

'वल्लज़ीना यरमूनल मुहसैनाते सुम्मा लम यातू बिअरबअते 'शुहदाआ फ़ज्लदूहुम समानीना जल्दतन'

कुर्आन, पारा १८, रकू १/७

अर्थात्-और जो लोग कलंक लगाते हैं, अपनी विवाहित स्त्रियों पर व्यभिचार का, और पुरुष मुहसन (निर्देश) भी इस आदेश में सम्मिलित हैं।

यहां मुहसन का तात्पर्य स्वतंत्र, बालिग़, बुद्धिमान् और व्यभिचार से पवित्र रहने से हैं। जो लोग किसी ऐसे पुरुष या स्त्री को व्याभिचारपरक (ज़ना) का दोष लगाते, फिर चार साक्षी न उपस्थित करे.....तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो।

तफ़सीर कादरी २, पृष्ठ १०८

उपरोक्त आयत से ज्ञात होता है कि अभिप्राय क्या है ? इसके

पश्चात् द्वितीय आयत लुआन की उतरी। कथा इस प्रकार है:--

बुखारी ने अकरमा के आधार पर इब्ने अब्बास की यह, हदीस कही है, कि हलाल बिन उमैया ने अपनी पत्नी पर नबी के सम्मुख शरीक बिन समहा के साथ समागम (सम्भोग) करने का लांछन लगाया। हजरत ने कहा कि-अपने अभियोग के प्रमाण हेतु साक्ष्य प्रस्तुत करो या तुम्हें मिथ्या आरोप लगाने के दोष में हद्द (कौड़े मारने) का दंड दिया जायेगा। इस पर हलाल ने कहा,—यदि हम किसी अन्य पुरुष को अपनी पत्नी के साथ चलते देखें, तो हम से अभियोग का प्रमाण भी माँगा जाएगा ? **तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ६, पृष्ठ ८४**

इस घटना के साथ, दूसरी घटना तफ़सीर कादरी ने लिखी है। इन दोनों को एक करने हेतु यह कह दिया कि इत्तिफ़ाक (अकस्मात्) दोनों की घटना एक ही समय में हो गई। (इत्तिकान, पृष्ठ ८४) इस घटना में हलाल बिन उम्मैया की तफ़सीर इत्तिकान ने लिख मारा और तफ़सीर कादरी में घटना निम्न प्रकार है: -

उपरोक्त आयत उतरने के पश्चात् आसम बिन हदरी ने निवेदन किया, कि या रसूलिल्लाह ! सम्भवतः कोई पुरुष हम में से अपनी पत्नी को किसी पर-पुरुष के साथ देखें और यदि साक्ष्य ढूंढने लग जाये और जब तक साक्षी एकत्रित हों, तब तक वह पर-पुरुष अपनी हाजत से फ़ारिग (निवृत) होकर चल देगा। यदि साक्षीरहित आता है तो अस्सी कोड़े खाये और फ़ासक़ (मिथ्यावादी) भी कहलाये ? हजरत मुहम्मद ने कहा-ऐ आसम ! खुदा ने ऐसा ही आदेश भेजा है। पस, आसम जैसे ही नबी की सभा के बाहर निकला, उनका चचेरा भाई

जिसका नाम अवमैर था, मिल गया (वह भी इसी रोग से रोगी थे) उसने कहा—ऐ आसम ! शरीक बिन समहा को मैंने अपनी स्त्री खवैला के पेट (उदर) पर देखा है। आसम ने कहा शोक ! कि जो बात मैंने पूछी थी, आप भी उसी में मुब्तला (ग्रस्त) हैं। पुनः वह दोनों हज़रत के पास आये और स्थिति कही ! हज़रत ने खवैला को बुलाकर पूछा, उसने अस्वीकार किया। तब यह लुआन की आयत उतरी।

(हमारे विचार में तो यह स्पष्ट आता है, कि हज़रत मुहम्मद ने सोचा होगा कि साक्षी तो मिल ही नहीं सकते और यह रोग भी अत्यधिक ज्ञात होता है। जहां कहते थे कि कोड़े मारना ही ख़ुदा की आज्ञा है, वहां एक अन्य मार्ग सोचकर तत्काल एक आयत प्रस्तुत करदी, जो निम्नानुसार है।)

आयत :—

'वल्ला ज़ीना यरमूना अज़्वाजहुम वा लम यकुल्लहुम शुहदाओ इल्ला अनफ़ुसोहुम फ़शहादतो अहदेहिम अबरओ शहादातिन बिल्लाहे इन्नहु लमिनस्सादेकीन। वल ख़ामिसतो अन्ना लानत-ल्लाहे अलैहे इन काना मिनल काज़ेबीन'

कुर्आन पारा १८, रकू १।७

अर्थात्-और जो लोग अपनी पत्नियों पर व्यभिचारपरक लांछन लगाते हैं, और उनके पास साक्ष्य न हो, तो उचित है उनकी स्वयं की चार साक्षियां इन शब्दों में कि ख़ुदा के हेतु वह अर्थात् पति सच्चों में से हैं, इस स्त्री को व्यभिचार के साथ मनसूब (निस्बत करना) करने में, और एक बार साक्षी सौगंध सहित एवं साक्ष्य के स्थान पर (चार बार स्वयं ही ऐसा कहें) और पांचवी साक्षी यह कि लानत (धिक्कार) ख़ुदा की

मुहम्मद भूल गये थे और बारम्बार भूल जाते थे तो जिब्रील उन्हें स्मरण कराने हेतु बारम्बार आते रहते थे।

एक विवादास्पद आयत :—

'निसाओकुम हर्सूल्लकुम फ़ातु हर्सकुम अन्ना शेतुम'

कुर्आन, पारा २, रकू २८/१२

अल्लामा सियूती ने तफ़सीर इत्तिकान में इस आयत का शाने नजूल (उतरने के कारण) के प्रकरण में लिखा है, किन्तु कोई शाने नजूल नहीं कहा है। हां! इतना अवश्य लिख दिया कि इस आयत में अत्यधिक मतभेद है, और यह भी लिख दिया कि बुखारी ने इब्ने उमर से रवायत की है, कि 'निसाओकुम ..... का नजूल स्त्रियों के साथ अप्राकृतिक ढंग से सम्भोग करने के विषय में हुआ था। (अर्थात् गुदा-मैथुन करना) परन्तु यह सम्मति एकपक्षीय है, सब इस में सहमत नहीं।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ९, पृष्ठ ८०

तफ़सीर कादरी ने इस आयत के उतरने के विषय में यह लिखा कि यहूद कहते थे कि स्त्री के सम्भोग के समय जब स्त्री की पीठ पुरुष की ओर होगी तो सन्तान वक्र कार (टेढ़ी) उत्पन्न होगी। जिन मुसलमानों ने ऐसा किया था, उन्होंने रसूलिल्लाह से पूछा तो उत्तर मिला कि चित्त-पट (सीधे-उल्टे) गोद में जैसे भी चाहो तुम सम्भोग करो।

तफ़सीर कादरी भाग १, पृष्ठ ६१

कादरी, वती फ़िद्दुबर (गुदा-मैथुन) के पक्ष में नहीं। इसी प्रकार तफ़सीर मजहरी ने दोनों पक्ष लिखे हैं। जहां उसने

बजार ने अबी हुरैरा से रवायत की है, कि उहद के युद्ध में हजरत मुहम्मद हमजा के शव पर खड़े हुए और हमजा का मुसला हुआ देख (मृत्यु पश्चात् शव के नाक-कान काटने को मुसला कहते हैं) कहने लगे-निस्सन्देह, मैं तुम्हारे प्रतिशोध में ७० व्यक्तियों को मुसला बनाऊंगा। हजरत मुहम्मद आवेश में कह तो गये किन्तु पश्चात विचारने पर यह बात असंभव प्रतीत होने पर तत्काल एक (उक्त) आयत उतारी। जहां उक्त बात असम्भव थी, वहाँ वह उत्तेजित भी थी, किन्तु हम देखते हैं कि हजरत मुहम्मद ने कहा-'**मा यान्तिको अनिलहवा**' अर्थात् कि मैं स्वयं इच्छा से नहीं बोलता, तो हजरत यहां कैसे बोले थे कि अपनी बात को टालना पड़ा और खुदा का अवलम्बन ग्रहण कर अपने कथन के खडन हेतु उक्त आयत उतारना पड़ी। कहते हैं कि हजरत मुहम्मद वहाँ ही खड़े थे कि जिब्रील उपरोक्त आयत लेकर आये।

तिरमजी और हाकम ने उबय्य बिन काब से रवायत की है,कि उहद के युद्ध में ६४ अंसारी और ६ महाजर मुसलमान शहीद हुए (इस हदीस मे अत्यधिक विवाद है।)

इब्नल हसार कहता है कि आखिर सूरत नहल का नजूल (उतरना) प्रथम मक्का में, दोयम इन सूरतों का उतरना उहद के युद्ध के अवसर पर और तृतीय समय मक्का-विजय के दिन हुआ।

तफसीर इत्तिक़ान, प्रकरण ९, पृष्ठ ८६

अब सोचने योग्य बात यह है, कि जब बहुत पहले यह आयत उतर चुकी थी, तो पुनः इसका ३ बार उतरना किसी भी प्रकार उचित नहीं है। हाँ ! यह तो कहना सम्भव है, कि हजरत

मुहम्मद भूल गये थे और बारम्बार भूल जाते थे तो जिब्रील उन्हें स्मरण कराने हेतु बारम्बार आते रहते थे।
एक विवादास्पद आयत :—

'निसाओकुम हर्सूल्लकुम फ़ातु हर्सकुम अन्ना शेतुम'

कुर्आन, पारा २, रकू २८/१२

अल्लामा सियूती ने तफ़सीर इत्तिकान में इस आयत का शाने नजूल (उतरने के कारण) के प्रकरण में लिखा है, किन्तु कोई शाने नजूल नहीं कहा है। हां! इतना अवश्य लिख दिया कि इस आयत में अत्यधिक मतभेद है, और यह भी लिख दिया कि बुखारी ने इब्ने उमर से रवायत की है, कि 'निसाओकुम..... का नजूल स्त्रियों के साथ अप्राकृतिक ढंग से सम्भोग करने के विषय में हुआ था। (अर्थात् गुदा-मैथुन करना) परन्तु यह सम्मति एकपक्षीय है, सब इस में सहमत नहीं।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ९, पृष्ठ ८०

तफ़सीर कादरी ने इस आयत के उतरने के विषय में यह लिखा कि यहूद कहते थे कि स्त्री के सम्भोग के समय जब स्त्री की पीठ पुरुष की ओर होगी तो सन्तान वक्र कार (टेढ़ी) उत्पन्न होगी। जिन मुसलमानों ने ऐसा किया था, उन्होंने रसूलिल्लाह से पूछा तो उत्तर मिला कि चित्त-पट (सीधे-उल्टे) गोद में जैसे भी चाहो तुम सम्भोग करो।

तफ़सीर कादरी भाग १, पृष्ठ ६१

कादरी, वती फ़िद्दुबर (गुदा-मैथुन) के पक्ष में नहीं। इसी प्रकार तफ़सीर मजहरी ने दोनों पक्ष लिखे हैं। जहां उसने

अप्राकृतिक मैथुन का विरोध किया, वहाँ उनका दृष्टिकोण भी लिख दिया, कि जो लोग इस फ़ेल (काम) अर्थात् शौच स्थान में मैथुन क्रिया को उचित मानते हैं, उन्होंने इब्ने उमर की रवायत को अपना उदाहरण बनाया है, जो इनके अंधकतम ढंगों सहित सहीह (सत्यप्रमाणित) रूप से मरवी (उद्धरण) है, कि औरतों की दुबरवती (गुदा-मैथुन) के विषय में उन्होंने कहा है कि (नसाओकुम हर्सुल्लकुम.....) अर्थात्-तुम्हारी स्त्रियां तुम्हारी खेती है, अब तुम अपने खेत में जहां से चाहो, आओ। इसे बुखारी ने रवायत किया है, और इसी प्रकार तिबरानी ने अति श्रेष्ठ प्रमाण सहित इनसे रवायत की है। उन्होंने कहा, कि यह आयत दुबरवती (गुदा-मैथुन) जायज (वैध) होने के विषय में उतरी है।

इब्ने उमर से यह भी उद्धृत किया गया है, कि नबी सल्लअम के ज़माने में एक व्यक्ति ने स्त्री के साथ दुबरवती (गुदा-मैथुन) कर ली थी। लोगों ने उसे बुरा-भला कहा, तो अल्लाह ने यह आयत उतारी।

तफ़सीर मज़हरी भाग १ पृष्ठ ४६७

एक आयत और उसका आकर्षक नज़ूल

(हज़रत मुहम्मद की खुशमिज़ाजी-उर्फ उमर बिन अज़्वा की कथा)

उमर बिन अज़्वा खुर्मे बेचा करते थे। एक रूपवती युवती उनके पास खुर्मे लेने आई तो उमर बिन अज़्वा ने कहा मेरे घर में अति उत्तम खुर्मे हैं। जब वह स्त्री घर के भीतर गई तो उमर बिन अज़्वा ने उसका मुख चूम लिया, और तत्काल

ही लज्जित हो कर हज़रत मुहम्मद की बैठक (मजलिस) में उपस्थित हुआ तथा सारी घटना कही । उसी समय यह (निम्न) आयत उतरी । आयत:--

'इन्नल हसनाते युज़िहबनस्सय्येआते ज़ालेका ज़िकरा लिज़्ज़ा' केरीन'

कुर्आन, पारा १२, रकू १०/१०

अर्थात:-निस्सन्देह, पांचों समय की नमाज़ भलाईयों को ले आती है और मिटा देती है बुराईयों को, जो गुनाह कबीरा (महापाप) न हो ।

हज़रत रसूलिल्लाह ने उमर बिन अज़बा से पूछा-तुने मेरे साथ जौहर (दोपहर) की नमाज़ पढ़ी है ? उमर ने कहा-हाँ ! आपने (हज़रत मुहम्मद ने) कहा कि यही नमाज़ इस गुनाह का कफ़ारा (अपराध का प्रायश्चित है । सहाबा (हज़रत के मित्रों) ने कहा-या रसूलिल्लाह ! क्या यह स्थिति इसी के हेतु विशेष है ? आपने कहा-अलल असूम अर्थात् सब लोगों के हेतु है ।

उपरोक्त कथन के समर्थन का विषय हदीस में आया है कि एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक जो गुनाह होते हैं किन्तु कबीरा (महापाप) न हो, तो नमाज़ उन अपराधों का कफ़ारा (प्रायश्चित) है ।

इब्ने कसीर पारा १२ पृष्ठ ३७-३८

तफ़सीर क़ादरी भाग १ पृष्ठ ४८१-८२

क्या नमाज़, ख़ुदा की भक्ति है या व्यक्तिगत पापों या अपराधों का प्रायश्चित्त ? आश्चर्य है ! इब्ने कसीर में विस्तृत तौर से लिखा है जो बड़ा ही दोषपूर्ण है । --लेखक

किसी कवि ने कहा है कि--

रात को खूब ही पी, सुबह को तौबा कर ली,
रिंद के रिंद रहे, हाथ से जन्नत न गई।

हज़रत मुहम्मद का अपने शिष्यों, भक्तों, मित्रों और अनुयाईयों से कैसे खुले सम्बन्ध है ? कि गुप्त से गुप्त और भली-बुरी सभी बातें लोग आकर उनसे कहते है और हज़रत मुहम्मद भी कितने हितचिन्तक--दयावान् और खुशमिजाज हैं कि गुनाह होने पर भी उन लोगों पर किंचित आंच नहीं आने देते ?

उमर बिन अज़्ज़ा ने अपने कृत्य को प्रकट कर सबके हेतु मार्ग प्रशस्त कर दिया, कि यह साधारण अपराध (किसी स्त्री का मुख चूमना) तो नमाज़ से ही जाते रहते हैं, क्योंकि चुम्बन का अपराध तो मात्र साधारण है ? इसमें स्त्री का क्या बनता बिगड़ता है ? यह तो उसका हानिरहित किसी मनुष्य के प्रेमेच्छा--पूर्ति हेतु दान मात्र है ? सम्भवतया इसीलिए खुदा और उसके पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद ने उदारतापूर्वक सबको छूट दे दी कि आनन्द करो ! नमाज़ तो पढ़ते ही हो। इस अपराध को दूर करने हेतु तुम्हें कोई यत्न नहीं करना पड़ेगा। गुप्त का अपराध है, गुप्त में ही दूर हो जायगा। किसी कवि ने ठीक ही कहा--

ज़ाहिद का क्या बिगड़ा है, जो थोड़ी सी पीली है।
कोई डाका तो नहीं डाला, कोई चोरी तो नहीं की है।

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर जलालैन में लिखा है, जो निम्नानुसार है--

इन्नल हसनाते कल्लातिल खुम्से युज़्हब्नस्सय्ये आतिज़्ज़ुब-स्सग़ाइरे नज़ुलत फ़ी अन ख़ज़ला अज़ नबिय्यते फ़ अख़बरहू

रसूलल्लाह फ़काला अला हाज़ा काला ल जमीया उम्मति कुल-हुम खाटूश्शैखान (हाशिया क्रमांक ९ भी देखिये)
नजलत फ़ीमन व हुवा व हुवा अबुलयशर काला आततन इमरअतुन तत्तबाए तमरन फ कुल्तो लहा अन्ना फ़िल बैते तमरन अतयबुन मिन हा जा फ़दखलत मइलबैते फ़कब्बल तोहा ।'

(इतना यह अन्श तो तफ़सीर जलालैन का वह अन्श है, जिसका अर्थ हम पूर्वोक्त पंक्तियों में तफ़सीर कादरी के उद्धरण से दे चुके हैं, किन्तु मध्य में इतना और विशेष है, जो आगे दिया गया है)

'फ़ आतैना अबू बकर फ ज़करतो ज़ालेका लहू फ़काला असतर अला नफसेका वा तब्ब ला तखबिर अहदन फ़ आतैतो उमरा फ़ ज़करतो ज़ालैका लहू फ़ काला असतर अला नफसेका व तब ब ला तखबिर अहदन फ़लम असबरो हत्ता आतैतो रसूलिल्लाहे फ़ ज़करतो ज़ालेका फ अतरको तबील नहत्ता ऊ हिया इलैहे व अकिमुस्सलाता इला कोलेही इन्ना हसनाता युजब्हिनस्सय्ये आते जालिका ज़िकरा लिज़्ज़ाकेरीन फ़कराहा रसूलिल्लाह फकुलतो अली हाज़ा खासतन अम लिन्नासे आमतन फ़ काला बलिन्नास आमतन ।

तफ़सीर जलालैन, पृष्ठ १८९ (हाशिया ९)

(जलालैन में उमर बिन अज़बा के स्थान पर अनलयम कहा है) अर्थात्–फिर उसने कहा कि मैं अबूबकर के पास गया और सब बात कही, तो अबूबकर ने कहा–इस बात को गुप्त रख और किसी से न कह ।

फिर वह कहता है कि मैं उमर के पास गया और उसको सारी बात सुनाई तो उमर ने यही कहा कि–यह बात अपने मन में रख और किसी से न कहो ।

फिर वह कहता है कि मैं हजरत रसूलिल्लाह के पास गया और उनको सारी बात सुनाई तो वही फ़रिश्ता) 'आई-कि कायम कर नमाज़ आखिर तक नेकियाँ बुराईयों को' पस, हज़रत रसूल ने यह पढ़ा तो मैंने कहा–यह मेरे लिये विशेष है या सब लोगों के हेतु है, तो हजरत ने कहा–सब लोगो के लिये ही है ।

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर बेजावी पृष्ठ १४३, तफ़सीर कुर्आनिल अज़ीम पृष्ठ १४३ और तफ़सीर मज़हरी भाग ६ पृष्ट १०५ भी देखिये ।

हमने इस आयत की व्याख्या विस्तारपूर्वक इस हेतु से लिखी है कि यह एक ऐसी बात थी, कि जिसका विश्वास ही नहीं हो सकता है, कि क्या कभी ऐसा सम्भव है कि व्यक्ति अपराध करे और उसको दंड या प्रायश्चित के स्थान पर और स्वच्छंदता दे दी जाये कि ऐसे साधारण अपराध तो नमाज़ से ही दूर हो जाते हैं। साथ ही न केवल उस दोषी व्यक्ति को अपितु समस्त मुसलमानों को ऐसे अपराध हेतु प्रोत्साहन प्राप्त होगया।

तौबा (प्रायाश्चित्त) की समस्या, अपराधों की क्षमा हेतु कुर्आन ने गढ़ी थी और-कहा था, कि यदि कोई प्रायश्चित करे और पुनः अपराध न करने की प्रतिज्ञा करे तो अपराध क्षमा हो जाते हैं, किन्तु यहाँ तौबा का भी दख़ल नहीं,कोई प्रायश्चित नहीं, नमाज तो पढ़ना ही होती है, पढ़ेगे ही, बस फिर क्या !

ऐसे-वैसे गुनाह (पाप-अपराध) तो स्वयमेव ही समाप्त हो जायेंगे ।

लोग कहते हैं कि-संसार में एसा कौन सा मज़हब है जो गुनाह करने की आज्ञा देता है ?

हम कहते हैं—आप स्वयं ही देख लें कि किस प्रकार खुले रूप से पाप करने की आज्ञा दी जा रही है । क्या ऐसा कलाम, खुदा का कलाम कहा जा सकता है, जो ऐसे अपराधों के लिये मनुष्यों को दण्ड न देते हुए और प्रोत्साहित करे ?

कुर्आन की आयतों के उतरने सम्बन्धी जिसे शाने नज़ूल कहा जाता है, उस पर अल्लामा सियूती ने भी संक्षिप्त ही लिखा है वैसे तो यह विषय इतना व्यापक और विस्तृत है कि इसका सम्बन्ध कुर्आन की, अनुमानतः कुछ को छोड़कर समस्त आयतों से जुड़ा है ।

हमने भी इस विषय पर अधिक लिखना उचित नहीं समझा; क्योंकि पुस्तक के द्वितीय भाग में जहां हम प्रत्येक आयत पर विवेचना करेंगे, वहां मुख्य विषय सर्वप्रथम आयतों का शाने नज़ूल अर्थात् उतरने के कारण क्या हैं ? यही लिखा जायेगा । क्योंकि यह तो सर्वथा निश्चित है कि जब तक आयत के उतरने का कारण (शाने नज़ूल) ज्ञात न किया जाये तब तक आयत के ठीक अर्थ नही समझे जा सकते हैं । जैसा कि गत पृष्ठों में भी बताया गया है । अतः इस विषय को वहां ही लिखेंगे ।

प्रकरण १० : कुर्आन में विभिन्न लोगों के कलाम

कुर्आन के अनुसार मुसलमानों के सिद्धांत पूर्व ही में लिखे जा चुके हैं; कि वह सम्पूर्ण कुर्आन को लौह महफूज़

(सुरक्षित पट्टिका) पर लिखित है, ऐसा मानते हैं और वहाँ से जिब्रील ने लाकर आसमाने-दुनिया पर रख दिया तथा वहां से २०-२२ एवं २५ वर्षों में आवश्यकतानुसार समय-समय पर हज़रत मुहम्मद तक पहुंचा दिया। एवं वह कुर्आन ख़ुदा का कलाम (कथन, वाणी) है।

मुसलमानों के इस दृष्टिकोण का समर्थन कुर्आन से नहीं हो पाता है, क्योंकि कुर्आन में हमें सैकड़ों विभिन्न व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न कलाम दृष्टिगोचर होते हैं, जैसे-शैतान फ़रिश्तों, आदम, पैग़म्बरों और उनके विरोधियों फ़िरऔन के जादूगरों आदि। तो क्या उन समस्त व्यक्तियों के कलामों को ख़ुदा का कलाम मान लिया जाये? कदाचित् मुसलमान कह देंगे, कि इन बातों का हज़रत मुहम्मद को पता न था। यह बातें तो ग़ैब (अप्रत्यक्ष) की ख़बरें हैं जो ख़ुदा ने हज़रत को बताईं। इसलिए ऐसी ख़बरें कुर्आन में ही समझी जाती हैं।

ख़बरें ग़ैब (अप्रत्यक्ष) की हो या अन्य किसी पुस्तक से ली गई हों किन्तु जिसकी होगी, उसी की समझी जायेंगी। कलाम जिसका होगा, उसी का माना जायेगा। सन्देशवाहक वाणिपति नहीं हो सकता।

उदाहरणार्थः- शैतान ने कहा-मैं आदम को सिजदा नहीं करता, मैं उससे श्रेष्ठ हूँ, या फ़रिश्तों ने कहा:-तू मनुष्य को ऐसा बनाने वाला है, जो लड़ाई करे और रक्त गिराये। यह कथन जिसने कहे हैं, उसी के माने जायेंगे या ख़ुदा के मानेंगे? आप कह सकते हैं कि कुर्आन में भी जिसके कलाम है, वह उसी के नामोल्लेखित हैं। मैं कहता हूं कि प्रथम तो सब जगह यह बात ही नहीं की जिसका कलाम है; उसके नाम से ही

लिखित है, जैसे हज़रत उमर आदि के कलाम, उनके साथ उनके नाम कहां लिखे हैं ? मैं पूछता हूँ कि लौह महफ़ूज में जो कुर्आन लिखित था, क्या उसमें भी इन सब के कलाम थे या नहीं ? यदि थे, तो जो लौह महफ़ूज में था उसी को कुर्आन के नाम से सम्बोधित किया गया है अर्थात् जो कुछ उसमें था, वह कुर्आन में है। इस दृष्टि से जितने भी अन्य व्यक्तियों के कलाम हैं, वह भी कुर्आन हैं, और यदि कहो कि लौह महफ़ूज वाले कुर्आन में हज़रत उमर, शैतान, फ़रिश्तों, आदम तथा फ़िरऔन आदि के कलाम नहीं थे, तो फिर इन अन्य व्यक्तियों के कलामों को कुर्आन में क्यों सम्मिलित किया गया ?

मैं कहता हूं, कि नित्य प्रति प्रातःकाल एक व्यक्ति श्रद्धा और भक्ति से कुर्आन का पाठ करता है, और वह हज़रत उमर, शैतान, फ़रिश्तों, आदम और फिरऔन, काफिरों के कलाम को कुर्आन (ख़ुदा का कलाम) समझ कर श्रद्धा से पढ़ता है। क्या आप इसे उचित समझते हैं कि लोग मनुष्यों व इतर जनों के कलामों को ख़ुदा का कलाम समझ कर श्रद्धावत पाठ करें ? और यदि आप यह कहें कि फ़रिश्तों ने हज़रत उमर की ज़बान पर डाल दिया, तो क्या इसी प्रकार मक्का निवासी उन काफ़िरों की ज़बान पर भी किसी ने डाल दिया था ? या स्वयं उन्होंने कहा था ?

यह बात भी विचारणीय है कि यदि फरिश्तों ने हज़रत उमर की ज़बान पर कुर्आन डाल दिया, तो क्या हज़रत मुहम्मद को फ़रिश्तों ने सम्पूर्ण कुर्आन नहीं दिया था ? एक बात और, लौह महफ़ूज (सुरक्षित पट्टिका) पर ख़ुदा ने क़लम (लेखनी) से लिखवाया था, तो जो लोग, मक्का के काफ़िर और हज़रत

उमर आदि, उस समय नहीं थे और जो कुछ उन्हें कहना था, वह क़लम ने उनके उत्पन्न होने के पूर्व ही कैसे लिख दिया ? अर्थात् आदम का वजूद (अस्तित्व) मान कर भविष्य में घटित होने या कहीं जाने वाली बात को कलम ने लौह महफ़ूज पर लिखा, यह असम्भव है ! इसे कदापि नहीं स्वीकारा जा सकता।

अब इस प्रकरण में हम विभिन्न व्यक्तियों के कलामों के संक्षिप्त उदाहरण मात्र ही लिखेंगे, ताकि यह ज्ञान हो जाये कि कुर्आन में मुसलमानों के मतानुसार केवल एकमात्र ख़ुदा का ही नहीं, अपितु कई लोगों के विभिन्न कलाम भी सम्मिलित हैं ?

क़ुर्आन के वह अंश,

जो अन्य लोगों की ज़बान पर उतरे

तफ़सीर इत्तिकान में अ़ल्लामा सियूती ने इस विषय पर जो लिखा है, उसे ध्यानपूर्वक पढ़ें। अ़ल्लामा ने इस विषय को प्रारम्भ करते हुए लिखा है कि:—

वास्तव में यह क़िस्म कुर्आन के उतरने से ही सम्बन्धित है, और इसकी असल (मूल) उमर के मुआफ़िक़ात (कुर्आन से तुलना होना) है। अर्थात्-वह बातें जो उन्होंने कही और फिर उन्हीं के अनुसार कुर्आन का नज़ूल (उतरना) हो गया। (है न, आंखों में धूल झोंकना और लोगों को दिग्भ्रमित करना) उमर ने कहा और उसी को ख़ुदा ने कुर्आन में उतार दिया। अब यह बात लोगों के सम्मुख आ गई तो फिर उनके उतरने का प्रश्न ही क्या ? और दोयम ख़ुदा का ज्ञान हज़रत उमर के पश्चात् उसका समर्थक (अनुयाई) हो गया तथा उस वाक्य से यह भी प्रकट हो जाता है, कि लौह महफ़ूज़ में उमर के इन कथनों का

कोई लेख नहीं था, क्योंकि उमर के कहने के पश्चात् खुदा ने उस से मुवाफ़क़त (कथनानुसार) करके कुर्आन उतारा ॥

इस बात को आगे और भी स्पष्ट करते हुए लिखा है कि इब्ने उमर से रवायत है कि रसूलिल्लाह ने कहा:—

'जअलल हक्का अला लिसानिन उमरा वा कल्बिही'

अर्थात्-निस्सन्देह, खुदा ने उमर की जबान और उसके हृदय को सत्य का केन्द्र बनाया है । इब्ने उमर कहते हैं—जब कभी भी किसी मुआमले (प्रकरण) में उमर और लोगों की सम्मति में विभिन्नता होती, तो कभी ऐसा नहीं होता कि कुर्आन का उतरना (नज़ूल) उमर की सम्मति के सामीप्य न रहा हो ।

इब्ने मरदूया ने मुजाहिद से रवायत की है कि उमर के विचार में कोई बात आती थी, तो कुर्आन भी उसी के अनुसार उतरता था ।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण १०, पृष्ठ ८८-८९

उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि लौह महफ़ूज़ पर कुर्आन का लिखा होना वास्तव में क्या है ? और लौह महफ़ूज़ उमर के विचारों के पीछे चक्कर लगाती रहती थी ?

बुखारी ने अन्स से रवायत की है, कि उमर ने कहा—या रसूलिल्लाह ! यदि हम मुकामें इब्राहीम को मुसल्ला (नमाम पढ़ने का स्थान) बनाते तो अच्छा रहता ? तो उसी समय उमर की कही बात उतर आई । आयत:—

'वत्तखिजो मिम्मुकामें इब्राहीमा मुसल्ला

कुर्आन, पारा १, रकु १।१५

अर्थात्-और पकड़ो तुम, स्थान इब्राहीम को नमाज के हेतु। दूसरी आयत जो उमर ने कही, वह आयत हिजाब है। उमर ने हजरत मुहम्मद से कहा था– रसूलुल्लाह:–'लौ अमरता निसा-अन्ना अंय्यह तजिब्ना' से 'फ नज़लत आयतुल हिजाब' तक।

तजरीदे बुखारी, किताबुरसलात, पृष्ठ ९८

अर्थात्– मैंने [हजरत उमर ने] रसूलिल्लाह से प्रार्थना की, कि ऐ रसूलिल्लाह ! काश, कि आप अपनी पत्नियों को आज्ञा देते कि वह पर्दा करतीं, क्योंकि उनके साथ नेक और बद (भले व बुरे) कलाम करते हैं। पस, पर्दे की आयत उतर आई।

(हदीस का अनुवाद)

उमर के कथनानुसार पर्दे (हिजाब) की आयत उतर आई। तीसरी आयत तफ़सीर इत्तिकान ने लिखी है। हदीस का बयान इस प्रकार है, उमर ने कहा:—

'वजतमआ निस्साउन्नबिय्ये फ़िल ग़ैरते अलैहे फ़कुलतो लहुन्ना असा रब्बोहू तल्लदबा कुन्ना अंय्यो बद्दिलाहु अज़्वाज खैरन मिन कुन्ना फ़नज़लत हाज़ोहिल आयत'

तजरीदे बुखारी, हदीस २६२, पृष्ठ ९८

अर्थात्-(जब) नबी सल्लअम की समस्त स्त्रियों ने आपसे एराज (मुंह फिरा लिया) कर लिया, तो मैं (उमर) ने उनसे कहा कि– निकट है कि नबी सल्लअम (हजरत मुहम्मद) का खुदा, यदि वह तुमको तलाक़ (संबंध विच्छेद) दे दे, तो वह (खुदा) उनको (हजरत को) तुमसे श्रेष्ठ पत्नियां अता फ़रमावे (प्रदान करे)। पस, यह ही आयत उतर आई। (हदीस का अनुवाद)

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण १० पृ. ८६

फिर यही (उक्त) उमर के शब्द कुर्आन की आयत में आ गये और इन शब्दों के साथ इतना और जोड़ दिया—

'मुसलैमातिन, मोमिनातिन, कानेतातिन, ताएबातिन, आबेदातिन, साएहातिन, सय्येबातिन, वा अबरारन'

कुर्आन, पारा २८, रकू १/१९

इसका अभिप्राय है-हम इस सम्पूर्ण कथा को न लिखते हुए तफ़सीर क़ादरी से इसका संक्षिप्त विवरण ही दे रहे हैं, ताकि पाठकों को समझने में सुविधा रहे। तफ़सीर क़ादरी में लिखा है:—

'वा इजा असर्रन्नबिय्यो' से **'अबरारन'** तक (अर्थात् जो आयत ऊपर की लिखी है, उसके साथ ही उसके ऊपर की आयत भी है।)—और स्मरण करो ऐ मोमिनों ! जब राज़ (भेद) कहा पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद) ने और पोशीदा (गुप्त) किया अपनी अन्य पत्नियों (से) अर्थात् हज़रत हफ़सा की ओर बात को, कि बीबी मारिया कब्तियाह (हज़रत की दासी) को अपने ऊपर हराम कर लेना या शहद को, या हज़रत शैख़ैन की खलाफ़त (राज्याधिकार) का ज़िक्र आपने हज़रत हफ़सा से गुप्त रखने को कहा था और उसने बीबी आयशा पर प्रकट कर दिया। बीबी हफ़सा ने हज़रत आयशा को यह भी सूचित कर दिया कि अल्लाह ने अपने रसूल को सूचित कर दिया और उस बात को सूचित कर दिया बीबी हफ़सा के प्रकट करने को, तो रसूल ने बीबी हफसा को वह बात बता दी और अन्य भी अर्थात्-मैंने तुम से अमुक-अमुक बात कही थी और तुमने उसमें से इस भांति बात प्रकट कर दी, अर्थात्-बीबी मारिया कब्तियोह को हराम कर लेना, और मुंह फेर रसूलिल्लाह ने अन्य

दूसरी.....सब बातों से, अपनी उदारता की राह से सब बातें नहीं जताई। हालांकि बीबी हफ़साने रसूल की सब गुप्त बातें कह दी थीं। उन सब बातों को हज़रत मुहम्मद, हज़रत हफ़सा के सम्मुख (मुँहपर) नहीं लाये। फिर जब बीबी हफ़सा को उस बात से सूचित किया.....तो बीबी हफ़साने कहा-किसने आपको इस बात की सूचना दी कि मैंने आपका भेद प्रकट कर दिया है! हज़रत ने कहा-मुझे खुदा ने सूचित किया है, जो प्रत्येक के हृदय में छुपी हुई बातों का जानने वाला है। यदि तुम दोनों पश्चाताप करो, ऐ हफ़सा और आयशा! और खुदा की ओर फिरो। हज़रत का हृदय दुखाने में बाहम पुश्त-पनाह (परस्पर सहायक) न हों तो तुम्हारे लिये हितकर है। पस, तहक़ीक़ (निस्सन्देह) कि तुम्हारे हृदय पवित्रता (स्वाब) से फिर गये हैं, कि रसूलिल्लाह के भेद की रक्षा नहीं करती और यदि तुम दोनों परस्पर एक-दूसरी की सहायक होंगी रसूल का हृदय दुखाने में (आगे है देखने वाली बात-लेखक) तो यकीनी (निश्चयात्मक) अल्लाह, वह तो यार और मददग़ार (मित्र व सहायक) है अपने पैगम्बर का, आपको नुस्रत (विजय) देगा, और जिब्रील उसके रफ़ीक़ (मित्र) सहायता करेंगे, और मोमिन सालेह (सदाचारी) उनके अधीन और सहायक हैं. उन मोमिनों से सब सहाबा हज़रत के मित्र) मुराद है। और एक, कौल (वचन) के अनुसार हज़रत अबाबकर तथा उमर (बीबी, आयशा और बीबी हफ़सा के पिता) आपके सहायक हैं..... और सब आसमान व धरती के फरिश्ते अतिरिक्त इस बात के कि खुदा, जिब्रील मित्रगण आपके यार-मददगार और मुआवन (मित्र-सहायक तथा परम हितैषी)' हैं और परस्पर एक-दुसरे के भी सहायक और आपकी

मित्रता में और खिदमतगुजारी (सेवा भावना) में, शायद कि उसका ईश्वर, यदि वह (हज़रत) तलाक़ दे तुमको (यह अपनी पत्नियों को भयभीत करना था मान लिया जाये,) तो उसका ख़ुदा तुम्हारे से श्रेष्ठ पत्नियां प्रदान करेगा .....फिर उन पत्नियों की प्रशंसा की गई है, कि वह कैसी होंगी, ख़ुदा के एकत्व पर श्रद्धा करने वाली, उसकी आज्ञाकारिणियाँ, तस्दीक (प्रमाणित) करनेवाली, विश्वास करनेवाली, नमाजी आज्ञाकारिणियां और अपराध का पश्चाताप करनेवाली, भक्ति करनेवाली और रोने वाली,) हिजरत (धर्म हेतु विदेश गमन) करनेवाली व रोज़ा रखने वाली, शौहर (पति) को देखी हुई और कुंवारियां ।

इब्ने अब्बास ने कहा है, कि शौहर देखी हुई (विधवा) तो बीबी आसिया फ़िरऔन की पत्नी है और क्वाँरी हज़रत मरियम ईसा की मां; कि हक तआला ने वादा फ़रमाया कि क़यामत के दिन इन दोनों बीबीयों को रसूलिल्लाह (हज़रत मुहम्मद) की पत्नी बनाएगा ।

तफ़सीर कादरी, भाग २, पृष्ठ ५५४-५५५

कुर्आन की आयत पर तफ़सीर क़ादरी की व्याख्या आपने देख ली कि दो स्त्रियों को भयभीत करने के लिये करोड़ों व्यक्तियों के सहायक होने की धमकी किस प्रकार दी गई है । क्या इन दोनों स्त्रियों के पास लाखों की सख्या मे सेना थी कि जिसके मुकाबले हेतु ख़ुदा तथा आसमान व धरती के समस्त फ़रिश्तों और समस्त मुसलमानों को अपना साथी बना कर डराया गया है और तौबा (पश्चाताप) करने हेतु विवश किया गया है, और फिर इस आयु में और पत्नियां करने की लालसा भी आश्चर्यजनक है ?

इब्ने अब्बास जैसे विख्यात व्यक्ति की बात भी कितनी विचित्र और हास्यास्पद है कि ईसा के जन्म के पश्चात् मरियम, यूसुफ से पाँच सन्तान और भी यहां ही उत्पन्न कर चुकी थी, फिर भी वह क्वांरी (अविवाहित) की क्वांरी ही रही ।

(लेखक)

हम तो यह कह रहे थे, कि 'कुर्आन में उमर का कलाम' किन्तु यह प्रसंग मध्य में उपस्थित हो गया । अस्तु, पुनः उसी विषय को प्रारम्भ करते हैं । अल्लामा सियूती ने आगे, जो आयत कुर्आन में हैं, उसका वर्णन इस प्रकार किया है:—

जब यह आयत उतरी (उमर ने कहा):

'लकद खलक़नल इन्साना मिन सुलालतिन मिन तीन (तो मैंने कहा) फ़तबार कल्लाहो अहसनुल खालेकीन'

कुर्आन, पारा १८, रकू १/१

फिर (खुदा की ओर से भी) यही नाज़िल हुआ ।

तफसीर इत्तिक़ान, प्रकरण १०, पृष्ठ ८६

अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से रवायत की गई है; कि एक यहुदी उमर बिन खत्ताब को मिला और उसने कहा–निस्सन्देह, जिब्रील जिसकी चर्चा तुम्हारा मित्र करता है, वह हमारा शत्रु है । उमर ने उसको उत्तर दिया:—

'मन कान अदुव्वुल्ल लिल्लाहे वा मलाए कतेही वा रसुलेंही वा जिब्रीला वा मीकाला फ़ इन्नल्लाहा अदव्वुल्ल लिल काफ़ेरीन'

कुर्आन, पारा १, रकू १२/१२

(क्यों मोमिनों ! उमर ने बिना सोचे, और बिना समझे खुदा के कुर्आन की आयतें घढ़ लीं ? यह क्या बात है ?)

अर्थात्--जो कोई शत्रु है, खुदा का और उसके फ़रिश्तों का और उसके पैग़म्बरों का और जिब्रील और मेकाइल का तो, पस, अल्लाह शत्रु है उन काफ़िरों का ।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण १०, पृष्ठ ८६

(इस आयत के विषय में विभिन्न प्रकार की रवायतें हैं)

अब्दुर्रहमान का कथन है—पस, यह आयत उमर की ज़बान पर उतरी, और उन्हीं के कथनानुसार ही खुदा ने कहा ।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण १०, पृष्ठ ८६

उमर के साथ खुदा की मवाफ़कत (एकाकार) के विषय में मुसलमानों में मतभेद है, किन्तु हज़रत उमर के समस्त मवाफ़क़ात (एकाकार) तारीखुल खुलफ़ा में एक ही स्थान पर जमा (एकत्रित) कर दिये हैं ।

यह स्मरणीय है कि 'तारीखुल खुलफ़ा' भी मौलाना अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान सियूती की ही लिखी हुई है । जिसकी तफ़सीर इत्तिकान भी है । इसमें विश्वस्त, रवायतों के आधार पर हज़रत उमर की खुदा से २० मवाफ़ेक़ात का उल्लेख है । जिन्हें हम लिख रहे हैं । यह तो हम पूर्व ही लिख चुके है—कि **'इब्ने असाकर अन अलय्यिन काला इन्ना फिल कुर्आने लेरायम्म मिनल रायें उमर व अखरजा इब्ने उमर मरफूअन मा कालन्नासो फ़ी शैइन व काला फ़ीहे उमर'**

तारीखुल खुलफा, पृष्ठ ८७

प्रसंगवश पुनः लिख रहे हैं । इसका अर्थ है--

हज़रत अली ने कहा--कुर्आन में बहुधा उमर की सम्मतियां उपस्थित हैं ।

इब्ने असाकर ने इब्ने उमर से रवायत की है, कि जहां भी हज़रत उमर और लोगों की सम्मति में मतभेद होता तो कलामे खु़दा (खु़दा का कथन) प्रायः अधिकतर उमर की सम्मति-अनुसार ही उतरता था।

पाठक वृन्द ! यदि आप ध्यानपूर्वक इस उपरोक्त हदीस का मनन करेंगे तो कुर्आन खु़दा का कलाम (ईश्वरीय वचन) होने की वास्तविकता स्वयं ही प्रकट हो जायगी। कारण कि उमर एक शक्तिशाली और अपनी बात का हठी (जिद्दी) मनुष्य था, इस हेतु उमर की सम्मति को ही प्रमुखता के साथ स्वीकारा जाता था। वैसे ज्ञान की दृष्टि से तो हज़रत मुहम्मद ने हज़रत अली को ही प्राथमिकता दी है, कि 'अना मदीनतुल इल्मे वा अलय्युन बावहू' अर्थात्-हज़रत ने कहा-मैं ज्ञान का नगर हूं और अली उसका द्वार है। (लोग, व्यर्थ ही हज़रत मुहम्मद को अशिक्षित कह रहे है।')

'किताब फ़जायेलुल अमामैन' में अब्दुल्लाह शैबानी ने लिखा-उमर से खु़दा ने २१ बातों में मवाफिकत (एकाकार) बताई है। (जिन ६ बातों को हम पूर्व में लिख चुके हैं, उनको छोड़ कर शेष बातें निम्नानुसार हैं।)

७-जब अब्दुल्लाह बिन उबय्य मरा तो हज़रत मुहम्मद ने लोगों को नमाजे जनाज़ा के हेतु बुलाया। उमर ने कहा-इब्ने उबय्य खु़दा का विशेष शत्रु था। पस, नमाजे जनाना पढ़ना उचित नहीं, तो आयत उतरी:—

'ला तुसल्ले अला अहदिम्मिन हुम्माता अबदंव्व ला तकुय अला कब्रेही'

कुर्आन पारा १०, रूकू ११/१७

अर्थात्-और मत पढ़ नमाज, उनमें से जो कभी अल्लाह से काफिर हुए और मर जाए कभी, उन पर, और उनकी कब्र पर भी खड़ा न हो।

८-जब रसूलिल्लाह (हजरत मुहम्मद) एक कौम पर दुआऐ मग-फ़ेरत (क्षमा की प्रार्थना) मांगने लगे तो उमर ने कहा—'सवा-उन अलैहिम' तो यह आयत उतरी:—

'स्वाउन अलैहिम अस्तग़फर्ता लहुम'

कुर्आन, पारा २८, रकू १।१३

अर्थात्-तू दुआ मांगे, अल्लाह नहीं बख़्शेगा।

९-बदर के युद्ध के विशेय में मुसलमान कराहत(घृणा) रखते थे, जाना नहीं चाहते थे तो उमर ने बदर के युद्ध में प्रस्थान की सम्मति दी तो यह आयत उतरी: -

'कमा अख़रजका रब्बोका मिन बैतका विल हक्के इन्ना फरीक-म्मिनल मोमिनीना लकारेहून'

कुर्आन, पारा ९, रकू १।१५

अर्थात्-जिस प्रकार तुझे तेरा ईश्वर (खुदा) काफ़िरों से युद्ध हेतु मदीना से बाहर लाया सहयात्रा के लिये'

तहकीक, मुसलमानों से एक गिरोह(टोली) बदर जाने से कराहत (घृणा) रखता है।

इस आयतानुसार हजरत उमर की सम्मति पर हजरत मुहम्मद युद्ध हेतु निकल पड़े थे।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १, पृष्ठ ३५७

इस आयत को भी उमर की आयत कहा गया है।

१०-हजरत आयशा के विषय में, इलज़ाम (आरोप) के सम्बन्ध में मैंने(उमर ने) कहा:—

'हाज़ा बोहतानुन अज़ीम'

कुर्आन, पारा १८, रकू ३/९

अर्थात्--पवित्रता है तुमको, यह बोहतान बड़ा (सर्वथा मिथ्या आरोप) है ।

११--इस्लाम के प्रारम्भिक काल में रमज़ान में अपनी पत्नियों से सम्भोग वर्जित था । हज़रत उमर के ही कहने पर यह आयत उतरी:—

'ओ हिल्ला लकुम लेलतस्सेयामिर्रफ़सो इला निसाएकुम'

कुर्आन, पारा २, रकू २३/७

अर्थात्--तुम्हारे लिये रोजे (रमज़ान) की रात में अपनी स्त्रियों से सम्भोग हलाल किया गया । अर्थात् करने की आज्ञा है ।

१२- फ़ला व रब्बे का ला योमिनून हत्ता योहक्केमूका'

कुर्आन पारा ५, रकू ९/६

अर्थात्--ख़ुदा की क़सम, वह ईमान नहीं लायेंगे ।

इब्ने अबी हातिम और इब्ने मरदूया ने इस कथा को यों लिखा है कि दो व्यक्तियों में किसी बात पर झगड़ा हो गया । दोनों रसूलिल्लाह के पास पहुँचे । रसूल ने निर्णय कर दिया किन्तु जिस व्यक्ति के विपक्ष में निर्णय हुआ था, उसने कहा-चलो उमर के पास चलें ! जिस व्यक्ति के पक्ष में निर्णय हुआ था, उसने उमर से कहा--रसूलल्लाह ने मेरे पक्ष में निर्णय किया है, फिर भी इसने कहा कि चलो उमर के पास चलें । हज़रत उमर ने कहा--तुम अपने घर चलो, मैं आता हूँ । इसके पश्चात् हज़रत उमर नंगी तलवार लेकर उसके घर चले गये, जिसने कहा था कि उमर के पास चलो । उसको उसके घर जाकर क़त्ल कर दिया । दूसरे व्यक्ति

ने जो उसका साथी था, उसने हज़रत मुहम्मद से जाकर कहा--हज़रत ! उमर ने मेरे साथी को कत्ल कर दिया है। हज़रत ने कहा--मूझे तो आशा नहीं कि उमर किसी मूसलमान को क़त्ल करने का साहस करेंगे। इस पर यह (उपरोक्त) आयत उतरी। रसूलिल्लाह ने उसका खून क्षमा कर दिया और हज़रत उमर को उसके क़त्ल से मुक्त कर दिया।

व्याख्याकार कहता है, कि इस बात के प्रमाण अन्य कई तफ़सीरों में उपलब्ध है।

(अरबी) तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पृष्ठ ८८

तफ़सीर क़ादरी ने मुआलम के आधार पर झगड़ने वाले दोनों व्यक्तियों के नाम ज़बैर और हातिब लिखे हैं, और झगड़े का कारण पानी था।

इब्ने कसीर पारा-५ पृष्ठ ५३

तफ़सीर क़ादरी, पृष्ठ १७५ (और)

तफ़सीर मज़हरी, पृष्ठ १५८-१५९

(यह है ख़ुदाई पैग़म्बर हजरत मुहम्मद का न्याय और हज़रत उमर की मनमानी कि केवल इतनी सी बात हेतु उस मुसलमान को उसके घर जाकर क़त्ल कर दिया।)

१३-'आज्ञा लेकर मकान में प्रवेश' पर आयत का उतरना। इसकी कथा इस प्रकार है कि एक दिन हज़रत उमर सो रहे थे कि उनका एक ग़ुलाम उनके शयन कक्ष में बिना आज्ञा चला आया। हज़रत उमर ने दुआ की, कि बिना आज्ञा प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाया जाये, तो ख़ुदा ने एक आयत उतार कर बिना आज्ञा के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

१४–आपने कहा, कि यहूदी दृढ़ कौम हैं, फिर उसी के अनुसार आयत भी उतरी।

१५–'सुल्लतुम्मिनल अव्वलीन वा सुल्लतुम्मिल आखेरीन'

कुर्आन, पारा २७, रकू १।१४ (अन्त)

किन्तु इसके पूर्व यह आयत उतरी;—

'सुल्लतुम्मिल अव्वलीन वा कलीलुम्मिल आखेरीन'

कुर्आन, पारा २७, रकू १।१४ (प्रारम्भ)

अर्थात्–(प्रथम आयत) बड़ी जमात है पहलों में से, और पिछलों में थोड़े हैं। (द्वितीय आयत) थोड़े हैं पिछलों में से, यह आयत उतरी तो हज़रत उमर रोने लगे और हज़रत मुहम्मद से कहा--या नबी ! हम आप पर ईमान लाये, और हमने आपकी तस्दीक़ [समर्थन] की, और हममें से थोड़े [अल्प] ही व्यक्ति स्वर्ग [नजात] पायेगे ? बस फिर क्या था, तत्काल दूसरी जो सबसे ऊपर लिखी है, आयत उतर गई। अर्थात् कलीलुन के स्थान पर सुल्लतुन ही उतर गया। और थोड़े शब्द कट गया।

यह है–कुर्आन उतरने को वास्तविकता ? तनिक उमर की आंखें बदली नहीं कि उसके साथ आयत भी बदल गई। जैसे कुछ समय पूर्व था कि थोड़े ही मुसलमान स्वर्ग में जायेंगे किन्तु उमर के अल्प परिवर्तन से, तत्काल आज्ञा हो गई कि मुसलमान अत्यधिक रूप से जायेंगे।

इब्ने कसीर पारा २७ पृष्ठ ६९

तफ़सीर क़ादरी, भाग २ पृष्ठ ५००

इस आयत के अनुसार फिर कितने मुसलमान हो गये। आदम से लेकर हज़रत मुहम्मद तक, आधे सब उम्मतों (सम्प्रदायों) के और आधे मुसलमान। हजतत ने कहा:—

विषय में भी यह प्रश्न हज़रत उमर ने किया था।

१९–'आ तकरेबुस्सलातो वा अन्तुम सुकरा, उमर का ही विचार था।

२०–बदर के बन्दियों के विषय में उमर की सम्मति स्वीकारी गई। बलाल बांग में 'अशहदो अन ला इलाहा इल्ललाह ही' कहते थे किन्तु हज़रत उमर ने 'अशहदो अन्ना मुहम्मदूर्रसूलुल्लाह' बाद में और बढ़वा दिया।

तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पृष्ठ ८७ से ८९

अब मुसलमान देखें कि उमर की अरबी और कुर्आन की अरबी भाषा में क्या उनको कोई अन्तर दिखाई देता है? उमर ने तो बिना सोचे ही कुर्आन जैसी अरबी बना दी और उसे कुर्आन में ही स्थान भी मिल गया, और कुर्आन का यह दावा असत्य सिद्ध हो गया कि समस्त संसार के जिन्न और मनुष्य भी एकत्रित हों, तो भी ऐसी आयत न बना सकें। अब तो अकेले उमर ने ही आयतें बना दी।

यहां तक ही नहीं, आगे हम तथाकथित काफ़िरों की आयतें भी कुर्आन में दिखायेंगे।

अब उमर की इस कथा के पश्चात् तफ़सीर इत्तिकान में जो लिखा है, उसको लिखते हैं। कुछ विरोध तो आयेगा, क्योंकि जिन आयतों के विषय में उमर ने कहा है, उनमें से कुछ के लिये दूसरों ने भी कहा है, उसका उत्तरदायित्व उनके ऊपर हो है।

सुनैद ने अपनी तफ़सीर में सईद बिन जुबैर से रवायत की है, कि जिस समय मुआज़ ने बीबी आयशा की प्रतिष्ठा में कही बुरी बात सुनी, तो उन्होंने कहा–'हाज़ा बोहतानुन अज़ीम'

फिर आगे लिखा है कि जैद बिन हारसा और अबू अय्यूब जब कभी ऐसी बात सुनते तो उक्त वचन कहते।

एक स्त्री के शब्द कुर्आन की आयत में-

अल्लामा सियूती ने लिखा, इब्ने अबी हातम ने अक्रमा से रवायत की है, कि जिस समय उहद के युद्ध के समाचार स्त्रियों तक पहुँचने में विलम्ब हुआ तो वह समाचार जानने हेतु नगर मदीना से बाहर निकलीं। उस समय अचानक दो व्यक्ति एक ऊँट पर सवार हो रणभूमि से नगर की ओर आ रहे थे। किसी स्त्री ने उनसे पूछा-रसूलिल्लाह ? उन ऊँट सवारों में से एक ने कहा-वह जीवित है। एक स्त्री ने कहा—

'फ़ला उबाली यत्तखे़ जुल्लाहो मिन इबादे हिश्शुहदाओ'

(इसी के अनुसार) कुर्आन, पारा ४, रकू १४/५

अर्थात्—फिर मैं चिन्ता नहीं करती कि खुदावन्द अपने बन्दों में से जिसको जो चाहे शहादत (बलिदान) का रुतबा (पद) अता (प्रदान) करे।

उक्त आयत उस स्त्री के कथनानुसार कुर्आन में उतरी।

यत्त़खे़ ज़ो मिन कुम शाइदाओ

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण १०, पृष्ठ ९०

अब इस आयत के उतरने का कारण (शाने नज़ूल) देखिये :—

' (कौलोहू तआला व यत्तखेज़ी मिनकुम शुहदाआ) अखरजा अन इब्ने अबी हातिम अन अक्रमा काला लम्मा अब्ता अल-

ज़िसा इल खबरे खरजना लियस्तखबरूना, फ़इज़ा रजुलान मुका-बलाने अलल बईरे फ़कालत इमरआतिन मा फ़अला रसूलल्लाहे काला हय्युन कालत ला उबाली यत्तखे ज़ल्लाहो मिन इबादे हिश्शुहदाओ व नज्जलल कुर्आना मा कालत वा यत्तखेखो मिनकुम शुहदाआ ।'

किताब लबाबन्नकूल फ़ी असबाबिन्नज़ूल
लिल जलालुद्दीन सियूती, पृष्ठ, ५७

उक्त उद्धरण का अनुवाद उपर्युक्तानुसार है।

यह विषय विचारणीय है, कि जब अरब की साधारण स्त्रियां अपनी आम (सार्वजनिक) भाषा में कुर्आन की आयत जैसी भाषा बोल लेती थीं, तो फिर हज़रत क्यों नहीं बोल सकते थे ?

तफ़सीर जलालैन में है कि उस दिन शैतान ने प्रसिद्ध कर दिया था, कि हजरत मुहम्मद कत्ल हो गये।

बयानुल कुर्आन में है, कि उहद के युद्ध में इब्ने कमना ने रसूलिल्लाह पर एक विशाल पाषाण खण्ड फेंका, जिससे आपके सामने के दांत शहीद हो गये और मुँह व माथा घायल हो गये, तथा वह व्यक्ति आगे बढ़ा कि कत्ल कर दें किन्तु अस-अब बिन उमैर ने मध्य में हाइल हो (आड़े आ) कर आपको बचा लिया और स्वयं शहीद हो गया परन्तु आप घावों के कारण गिर गये।

बयानुल कुर्आन भाग १, पृष्ठ ३९९

तफसीर इत्तिकान की ही भाँति तफसीर मज़हरी में भी पृष्ठ ३७५ पर अरबी का अनुवाद किया गया है।

इसके आगे अल्लामा सियूती ने कुर्आन की एक और आयत का वर्णन किया है। जिसको मुसलमान और विशेष रूप से अहमदी अति अभिमान से पढ़ा करते हैं। आयतः—

'मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल कद खलत मिन कब्लिहिरूसुल अफा इम्माता औ कुतेलन कलब्तुम अला अका बेकुम वा मय्यन कलिब् अला अकेबैहे फ़लंय्यज़रंल्लाहा शंअनः

कुर्आन, पारा ४, रकू १५:६

अर्थात्—मुहम्मद सल्लअम (हजरत मुहम्मद) एक रसूल (खुदा के दूत) हैं कि उनके पूर्व भी बहुत से रसूल गुजर [हो] चुके हैं। फिर क्या यदि वह फौत हो (मर) जाये या क़त्ल कर दिये जायें, तो तुम लोग पीठ दिखाकर भाग निकलोगे।

इसके पश्चात् उनका बाँया, हाथ भी कट गया और अब उन्होंने झुककर निसान [ध्वज] को दोनों कटे बाजुओं की सहायता से वक्ष के साथ लगा लिया; और अभी उनकी जबान पर वही कल्मात **'मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल'** थे। इसके पश्चात् वह क़त्ल हो गये, जिसके कारण निसान भी गिर गया।

इस हदीस (हज़रत मुहम्मद का कथन) का व्याख्याकार मुहम्मद बिन शराहबील कहता है कि यह आयत **'मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल'** उस समय, उस घटना के पश्चात् ही उतरी।

तफ़सीर इतिकान, प्रकरण १०, पृष्ठ ९०

तफ़सीर बैज़ावी में है--

'फ़काला अन्स बिन नज़र या कौम इन काना कुतेला मुहम्मदुन फ़इन्ना रब्बे मुहम्मदुन हय्युन'

अर्थात्-अन्स बिन नजर ने कहा-यदि मुहम्मद कत्ल हो गया तो हजरत मुहम्मद का खुदा तो जीवित है।

आयत.—

'कदजाआ कुम बसाएरो मिर्रब्बेकुम फ़मन अबसरा फलेनफ़सेही वा मन अमेया फ़अलैहा, व मा अला अलैकुम । बहफ़ीज'

कुर्आन, पारा ७, रकू १३/१६

अर्थात्-निस्सन्देह, तुम्हारे पास, तुम्हारे रब्ब (ईश्वर) की खुली हुई निशानियां आई है। जिसने अपने नफ़्स (आत्मा) के हेतु देख लिया और जो अन्धे हुए उसकी हानि उसी पर है, और नही हूं. मैं तुम पर निगहबान (दृष्टिवान)।

अल्लामा सियूती लिखते हैं, कि इस आयत को रसूल (हज़रत मुहम्मद) की जबान से वारद (कहलाया) किया गया, क्योंकि आयत के अन्त में कहा 'कि मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ' इसमें 'मैं' शब्द की निस्बत (संकेत) हजरत मुहम्मद की ओर है, खुदा की ओर नहीं।

तफ़सीर बैज़ावी में है, कि यह कलाम (कथन) रसूल की ज़बान से वारद हुआ।

अगली आयत भी रसूल की ओर निस्बत (संकेत) की गई।

आयत:—

'अफ़ा ग़ैरल्लाहे इब्तगी हुकमंव्वा हुवल्लाज़ी अनजला अलैकुमुल किताबा मुफ़स्सला'

कुर्आन पारा ८, रकू १

अर्थात्-क्या फिर खुदा के अतिरिक्त मैं चाहूँ किसी को ? मेरे तुम्हारे मध्य यह आज्ञा करे, और वह है जिसने तुम्हारी ओर कुर्आन विस्तारपूर्वक उतारा।

यह आयत भी हज़रत मुहम्मद की ज़बान से वारद की गई है। इसी प्रकार फ़रिश्तों की ओर जिस आयत की निस्बत (संकेत) है, वह लिखी और अन्त में एक आयत, जिसमें बन्दों (भक्तों) की ओर निस्बत है, वह लिखी है। आयतः—

'इय्याका नाबुदो वा इय्याका नस्तईन' (अल्हम्द में)

अर्थात् - हम तेरी ही भक्ति करते हैं, और हम तुझसे ही सहायता चाहते हैं।

तफसीर इत्तिकान प्र० १०, पृ. ६१

तफ़सीर इत्तिकान में केवल इतना ही लिखकर विषय को समाप्त कर दिया गया है, किन्तु मैं उन आयतों को भी लिखना चाहता हूँ, जिनमें अन्य और लोगों के भी कलाम कुरआन में उपस्थित हैं, जिसे सर्व साधारण कुर्आन (खुदा का कलाम) समझ कर ही पढ़ते हैं।

इनमें वह कलाम (कथन) है, जिसको उन लोगों ने कहा है, जिन्हें मुसलमान काफ़िर कहते हैं और उनकी वार्ता (बातचीत) हज़रत मुहम्मद के साथ रूबरू (आमने-सामने) है। काफ़िर कहलाने वालों का कलाम तो ज्यों का त्यों है; किन्तु हज़रत मुहम्मद का उत्तर खुदा के नाम से है और दोनो कुर्आन में हैं। इसके अतिरिक्त आदम, शैतान आदि के कलाम जैसा कि हम पूर्व में लिख चुके हैं, कुछ कथन उनमें से लिखेंगे।

पूर्वोक्त वर्णित आयत के हेतु मुसलमानों ने यह लिखा कि आयत नाज़िल हुई, (उतरी), किसको नाज़िल हुई यह स्पष्ट नहीं बताया। आयत देखने से, उसके अर्थो से ज्ञात हो सकता है कि जिस समय यह कहा गया. उस समय लोगों ने यह विचार कर लिया था, कि हज़रत मुहम्मद मारे गये। इसी

कारण अन्स बिन नज़र ने कहा; कि यदि मुहम्मद मर गया तो मुहम्मद का ख़ुदा तो जीवित है । आयत के शब्द 'माता' मर गया, 'कुतेला' कत्ल किया गया, तो लिखे हैं, और ऐसी बात तब कही जाती है, जब कोई मनुष्य मर जाता है, कि यदि वह मर गया या कत्ल किया गया, तो क्या तुम फिर जाओगे, मुहम्मद रसूल था, उससे पूर्व बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं । तुम फिर जाओगे, तो तुम्हारा यह कार्य अल्लाह को ज़रर (हानि) नहीं देगा ।

अगली आयत के शब्द भी यही कहते हैं, कि खुदा कि आज्ञा के बिना कोई नही मरता ।

तफसीर मज़हरी ने भी लिखा है, कि यह बात प्रसारित हो गई (फैल गई) थी, कि मुहम्मद क़त्ल कर दिये गये ।

तफसीर मज़हरी पृष्ठ ३८१

जिस समय यह बात फैल रही थी उस समय उमरने यह आयत पढ़ी । यदि लोगों को ध्यान होता कि हज़रत मुहम्मद जीवित हैं, तो इस आयत को पढ़ने की नोबत नहीं आती अस्तु,

अब तक जितने लोगों के कलाम हम प्रस्तुत कर चुके हैं वे सभी कुर्आन में सम्मिलित कर लिये गये हैं । यह कह कर कि आयत भी ऐसी ही उतरी है, मुसलमान इस बात पर विचार नहीं करते, कि एक व्यक्ति एक बात कह रहा है, वह खुदा की ओर से उतरी कैसे मानी जायेगी । यह तो स्पष्ट रूप से लोगों को पथ भ्रष्ट करना है ! परमात्मा, मुलसमानों को बुद्धि दे कि वह इस यथार्थ बात को समझे और वास्तविकता से परिचित हों!

अल्लामा सियूती ने आगे एक विचित्र बात लिखी है कि इसी के करीब-करीब कुर्आन के वह भाग (हिस्से) हैं, जो सौर

अल्लाह की ज़बान पर उतरे है। जैसे-हज़रत मुहम्मद, जिब्रील और फ़रिश्तों की ज़बान पर, (तात्पर्य यह कि जिस प्रकार और आयतों में ख़ुदा की ओर निस्बत है, इसी प्रकार उन आयतों की निस्बत हज़रत मुहम्मद और जिब्रील आदि की ओर होगी।)

कुर्आन में विविध व्यक्तियों के कलाम

पाठक वृन्द ! हम पूर्व में अनेक व्यक्तियों के कथन (कलाम) लिख चुके हैं, जिनको अल्लामा सियूती ने तफसीर इत्तिकान में लिखा है, आपने देखा है कि किस प्रकार उमर आदि के साधारणतया कथन कुर्आन की आयतों के अंश बन गये। यहां तक कि एक साधारण स्त्री का कथन तक कुर्आन की आयत का भाग बन गया।

अब हम वह आयतें लिख रहे हैं, जिनके संबंध में अल्लामा सियूती ने कोई चर्चा नहीं की। कुर्आन के आरम्भ में ही आता हैं, कि जब काफ़िरों को कहा जाता है कि फ़साद (झगड़ा) न करो, तो वे कहते हैं:—

'कालू इन्नमा नहनो मुसलेहून' (काफिरों का कलाम)

कुर्आन, पारा १, रकू २

अर्थात्-हम कामों को भक्ति और नेकी के कारण संवारने वाले हैं।

तफ़सीर क़ादरी, पृष्ठ ५

यह उपरोक्त कथन काफ़िरों का कहा जाता है, जो अर्आन में लिखा है। आगे है, कि काफ़िरों को कहा जाता है कि ईमान लाओ, तो वे उत्तर देते हैं:—

'कालू अनोमिनी कमा आमनस्सु सुफ़ाहाओ'

कुर्आन, पारा १, रकू २

अर्थात्-हम क्या ईमान लायें ? जैसे कि मूर्ख और बुद्धिमान ईमान लाये हैं ।

यह कथन भी कुर्आन की आयत के रूप में विद्यमान् है। फिर जब काफ़िर मुसलमानों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान रखते हैं, और जब अपने शैतानों अर्थात् अपने आगेवानों की ओर जाते हैं, तो कहते हैः—

'कालू इन्ना मआकुम इन्नमा नहनो मुस्तहज़ेऊन'

कुर्आन, पारा १, रकू २

अर्थात्–(अपने आगेवानों से कहते हैं) कि हम तो तुम्हारे साथ है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं, हम तो परिहास (ठट्ठा) करते हैं ।

आगे है, कि यहूद के बारह व्यक्तियों ने गोष्ठी की और इसकी सूचना किसी प्रकार हज़रत मुहम्मद को प्राप्त हो गई –

'वा कालत्ताइफ़ा तुम्मिन अहलिल किताबे आमनू बिल्लज़ी उनज़्लो अलल्ला ज़ीना आमनू वज्हन्नहारे वा कफ़रू आख़िरहूल अल्लहुम यहज़ोऊन'

कुर्आन, पारा ३, रकू ८/१६

अर्थात्–(गोष्ठी यह थी, कि एक जमात ने कहा (सोचा) जो अहले किताब (तौरते वाले) थे, कि प्रातः काल मुसलमान हो जाओ और सायंकाल फिर जाओ, शायद कि वह भी फिर जायें (वह अर्थात् कुछ वह लोग भी इस्लाम त्याग दे)

मैं कहता हूँ, कि कथन तो उन्हीं का है, जिन्हें तुम काफ़िर कहते हो ! भले ही किसी भी प्रकार उस गोष्ठि के भेद की सूचना प्राप्त हुई हो। यह भी आयतरूप में कुर्आन में अंकित है ।

तफ़सीर मज़हरी में लिखा है, कि यह विवाद बैतुल मुकद्दस (यरूशलम के पवित्र मन्दिर) से मक्का की ओर मुंह करने के परिणामस्वरूप हुआ ।

तफ़सीर मज़हरी १, पृष्ठ २६९

जब यहूद को मुसलमान होने को कहा गया तो काब बिन अशरफ, मालिक बिन ज़फ़, वहब बिन यहुदा, ज़ैद बिन ताबूत, फ़खाज बिन आज़ूरा और हय्य बिन अखतब ने रसूलिल्लाह से कहा—हमारी तौरेत में लिखा है, कि किसी पैग़म्बर पर तब तक ईमान (विश्वास) न लाओ जब तक:—

'इन्नल्लाहा अहिदना इलैना नौमिनो लिरसूलिन हत्ता यातीना बिकुर्बानिन ताकुलुन्नार' (यहूद का कलाम)

अर्थात्—उन लोगों (यहूद) ने कहा—अल्लाह ने तौरेत में हमारे साथ अहद (वचन बद्धता) की है, कि हम ऐसे पैग़म्बर पर ईमान न लावें और न उसकी तस्दीक (समर्थन) करें, जब तक कि वह हमारे हेतु कुर्बानी (बलिदान) लाये और उसको अग्नि खा जाय ।

यहूद ने यह भी मांग की, कि आप इस प्रकार की कुर्बानी कर दिखायें (तो हम विश्वास करें) हज़रत मुहम्मद ने उनको टालने हेतु इतना ही कहा—जो तुम कहते हो, सो ठीक है, परन्तु ऐसे रसूल (पैग़म्बर) आये, जिन्होंने ऐसे चमत्कार दिखाये, फिर उनको तुमने क्यों मार दिया ?

उपरोक्त आयत का उक्त अर्थ तफ़सीर कादरी, तफ़सीर मजहरी, तफ़सीर हक़्क़ानी आदि में इसी प्रकार किया गया है।

हजरत मुहम्मद को कैसे ज्ञात हुआ कि उन पैग़म्बरों के क़ातिल (हत्यारे) यही लोग थे। अस्तु हज़रत वा पूर्नजन्म को मानने का स्पष्ट कारण है।

यह उपरोक्त कथन तो उन लोगों (यहूद) ने हज़रत मुहम्मद के सम्मुख कहे और हज़रत मुहम्मद ने भी उसी समय उत्तर दिया, तो यहूद लोगों का कथन भी कुर्आन में आयत के रूप में उपस्थित है। अब मुसलमान बतायें की इस यहूद की भाषा में और कुर्आन की अन्य अरबी भाषा में कुछ आपको अन्तर दिखाई देता है ? यदि नहीं, तो कुर्आन की मिसल (समान) आयत लाओ क्या यह उक्त आयत नहीं है ?

यहूद के द्वि-अर्थी कथन

की आयत

'वा यक़ूलूना समेना वा असैना वस्मा ग़ैरा मुस्मइंव्वा राएना लय्यन बिअल सिनतेहिम वा तानन फिद्दीने'

कुर्आन, सूरा ५, रकू ७।

अर्थात्–यहूंद कहते हैं–सुना हमने तेरा क़ौल (वचन) व असैना (न माना हम ने) और नाफ़रमानी (अवज्ञा) की तेरे हुक्म (आज्ञा) की अनाद (शत्रुता) की राह से।

तैसियर में लिखा है, कि प्रत्यक्ष में तो कहते थे, कि हमने आज्ञा-पालन की और छुपाकर (अप्रत्यक्ष) कहते थे, कि हमने नाफ़रमानी (अवज्ञा) की, और वास्तविकता यह है कि उनकी

ज़बान की भाषा तो 'समेना' कहते थे, अर्थात् सुना हमने और उन की ज़बान हाल (वास्तविक) अमैना (स्पष्टरूप से) के साथ बोलती थी, अर्थात् हमने नाफ़रमानी (अवज्ञा) की, और कहते थे 'वस्मा गैरा मुस्मइन' और सुन इस स्थिति में कि न सुना गया हो, तो यह कल्मा (कथन) दोरूआ (द्विअर्थी) है।

एक अर्थ तो स्तुति से है और एक अर्थ निन्दा से सम्बंधित है। 'अस्मा' का अर्थ गाली देता हूँ, तो इस कथन का यह अर्थ हुआ कि गाली दिया हुआ, और बुरी बात सुनने वाला न हो, यह मदह (स्तुति) का अर्थ हुआ, और इस प्रकार दुआ (प्रार्थना) उसके हेतु होगी और निन्दा का अर्थ इस प्रकार है, कि 'अस्माअ' का अर्थ सुनाता हूं, तो यह अर्थ होगा कि यहूद कहते है कि सुन, इस स्थिति में कि न सुनाया गया हो, अर्थात् गूँगा (न सुनने योग्य) और बद्दुआ है। उस पर यहूद ने मदह (स्तुति या प्रशंसा) के अर्थ को नफ़ाक़ (विरोध) का पर्दा बनाया और उन्हें मुज़म्मत (निंदा) स्वीकार थी।

हजरत मुहम्मद को बाज़ (कुछ एक) ने कहा—यहूद 'राएना' को 'राईना' कहते थे, अर्थात् ऐ हमारे चरवाहे! अर्थात् हज़रत (मुहम्मद) के गाय-बकरी चराने पर तान और तारीज़ (ताना देते निंदा) करते थे। बहर तक़दीर (साधारण सया) यह कल्मा कहते थे 'वा राएना लय्यन' [बि असिनताहम] अपनी ज़ुबान [भाषा] के साथ बात को फिरा और लपेट कर, अर्थात् जो फ़ेल [क्रिया] ज़बाने अरब [अरब की भाषा] में मुराआत [सज्जनता] का वाचक हैं, उसे अपनी ज़बान [भाषा] में रऊनत [घृणा] की ओर फेरते हैं, अथवा अरब की भाषा को उसकी फ़साहत [उत्कृष्टता] से पेंच देकर लहन [गाली या

अपशब्द) के ढंग पर 'राईना' कहते है और उससे हजरत मुहम्मद की मुजम्मत (निंदा) चाहते हैं । 'वा तानन फ़िद्दीने' और दीन (धर्म) इस्लाम में तान (व्यंग) चाहते है । (उनका अभिप्राय यह था कि जिस धर्म का पैग़म्बर चरवाहा हो वह धर्म क्या होगा ? अर्थात् बकरियाँ चराने वाले का धर्म क्या महत्व रख सकता है ? —लेखक

तफ़सीर कादरी, पारा ५, पृष्ठ १६८

पाठक गण ! हमने यहूद की यह एक द्विअर्थी आयत आपके समक्ष प्रस्तुत की । सम्भवतः ऐसी आयत सम्पूर्ण कुर्आन में न हो, जिसके दो अर्थ निकले स्तुति का और निन्दा का भी, और एक शब्द 'राएन' को 'राईना' पढ़ने से आयत का रंग-रूप ही परिवर्तित हो जाये । यह यहूद की सारगर्भित आयत भी कुर्आन में है, (वह काफ़िर कहते हैं, कि हम सीधी राह पर है ।) आयतः—

'यक़ूलूना लिल्ला जीना कफ़रू हाऊलाए अहदा मिनल्लज़ी मा आमनू सबीला'

कुर्आन, पारा ५, रकू ८/५

अर्थात्—यहूद कहते हैं, कि हम सीधे मार्ग पर हैं ।

यहूद का यह कथन भी कुर्आन मे सम्मिलित है ।

कुछ दुरगे लोगों के कलाम यदि इस्लाम (मुसलमानों) को विजय हो, तो कहते हैः—

अलम नकुम्मआकुम ।

कुर्आन, पारा ५, रकू २०/१७

अर्थात—क्या हम तुम्हारे साथ न थे, और हमने सहा-

यता नहीं की, लूट से हमारा भाग दो, और यदि काफ़िर ग़ालिब (विजेता) आ जाये:—

'अलम नस्तहविज़ अलैकुम'

क़ुर्आन, पारा ५, रकू १७।२०

अर्थात–(तो उनको कहते हैं) क्या हम तुम पर ग़ालिब (प्रभावकारी) नहीं थे, और हम शक्ति रखते थे कि तुमको कत्ल कर दें, किन्तु हमने हाथ खेंचा (रोंका) और तुम्हें सुरक्षित कर दिया, और मुसलमानों की सहायता करने में हमने सुस्ती की और उन्हे ऐसी बातें कहीं कि उनके दिल टूट गये, यहां तक कि तुम उन पर ग़ालिब (विजेता) आ गये, हमें लूट से हिस्सा (भाग) दो।

तफ़सीर कादरी, पृष्ठ २००-२०१

उन लोगों [यहूद] के कथन के यह छोटे–छोटे अंश इस हेतु दिये, ताकि आपको यह ज्ञात हो जाये कि यहूद आदि के कलाम से कुर्आन ऐसा गड्डमड्ड (मिश्रीत) हो गया है, कि पता लगाना कठिन है कि यहूद आदि के कलाम]कथन] कौन से हैं ? बस ऐसे लोगों के कथनों के छोटे-छोटे अंश सम्मिलित कर क़ुर्आन की ईबारत बनाई गई है। काफ़िर कहे जाने वालों का कलाम:—

लौ ला उनजेला अलैहे मलकन'

कुर्आन, पारा ७, रकू १।७

अर्थात्–और कहा–क्यों नहीं उनके ऊपर फरिश्ता उतारा गया? आगे निशानी आने पर काफ़िर कहते है:—

'लन्नोमिना हत्ता नोता मिस्ला मा ऊतेया रसूलुल्लाहे'

कुर्आन, पारा ८, रकू १५।२

अर्थात्--हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे, यहां तक कि जो पैग़म्बर दिये गये है, उसके मानिन्द (समान) भी दिया जावे आगे वह (काफ़िर) लोग कहते है, कि हमने इसी मार्ग पर अपने बापों (पूर्वजों) को पाया:—

'वजदना अलैहा आवाअना' वल्लाहो अमरना बेहो।

कुर्आन, पारा ८, रकू ३।१०

अर्थात्:-हमने उसके ऊपर अपने पूर्वजों (बापों) को और अल्लाह ने हमको ऐसा करने की आज्ञा दी है।

नर्कवासी काफ़िरों का कथन

[नर्क [दोज़ख] में अ़रबी बोलेंगे]

जो अ़रबी भाषा के उद्धरण दिये जा रहे हैं वह सब काफ़िरों के कलाम कहे जाते हैं।

जब यहूद और अग्निपरस्त नर्क में परस्पर मिलेंगे तो कहेंगे:—

'कालत उखराहुम लि ऊला म रब्बना हाऊलाए अज़ल्लुना फ़आतेहिम अज़ाबन दीफ़ेम्मिनन्नारे'

कुर्आन, पारा ८, रकू ४।११

अर्थात्-अनुसरण करने वाले अपने आगेवानों के हेतु नर्क में कहेंगे-ऐ हमारे ईश्वर ! इस गिरोह [समूह] ने हमें पथभ्रष्ट किया। इनको नर्क की ज्वाला से दुगना दुःख दे। [रफीउद्दीन साहिब]

यह बात आपके सम्मुख इस दृष्टि से भी प्रस्तुत की गई है, कि आप इससे भी परिचित हो लें कि लोगों को आतंकित और भीरु बनाने हेतु ऐसी कपोल कल्पित बातें भी कुर्आन में लिखी गई हैं, जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है।

चाहे उपरोक्त कथन की सूचना खुदा ने भेजी हो, किन्तु है तो काफ़िरों का कथन। खुदा तो केवल संदेशवाहक ही होगा। हज़रत मुहम्मद ने ऐसी आधारहीन और अस्तित्व शून्य बातें कह-कह कर अपने शिष्यों और समर्थकों को खूब बहकाया है।

यह भी जानने योग्य बात है, कि यह लोग दोज़ख [नर्क] में जाकर अरबी पढ़ गये और कुर्आन सदृश्य आयतें भी बनाने लगे? और आश्चर्य तो यह कि उनके कथन [कलाम] को कुर्आन [खुदा की वाणी] में स्थान प्राप्त हो गया।

आपने एक बात नर्कवासियों की सुन ली। अब एक बात स्वर्ग [बहिश्त] वासियों की भी सुनें, किन्तु उससे पूर्व उन आगेवानों का उत्तर, जो नर्कवासियों को देंगे, वह भी सुन लें। आगेवान [गुरु] अपने अनुगामियों से कहेंगे:—

'वा कालत ऊलाहुम लि उखराहुम फ़मा काना लकुम अलैना मिन फ़ज़्लिन फ़ज़ूकुम अज़ाबा बिमा कुन्तुम तक्सेबुन'

कुर्आन, पारा ८, रकू ४.११

अर्थात--तुम्हें हम पर कुछ अधिकार नहीं है, अपितु कुफ्र [बेदीनी] में हम--तुम दोनों समान हैं। पस, अपने कर्मों के कारण से दुःख भोगो।

भले ही यह ग़ैब (अगम्य) के समाचार क्यों न हों, जिसका न सिर है न पैर ही है, किन्तु हज़रत मुहम्मद ने इसे प्रस्तुत कर अपने भक्तों और समर्थकों को तो मिथ्यावाद का दृढ़ विश्वासी बना लिया, और दोनों (गुरु-चेलों या आगेवान और अनुयाइयों) को, उनके अपने मुख से ही और वह भी नर्क की अग्नि ज्वालाओं के मध्य जलते हुए ही प्रश्नोत्तर भी करवा दिया (ख़ुदा भी कैसा सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान और चमत्कारिक है, कि अभी न तो सृष्टि का सृजन ही हुआ और न कोई-कुछ भी उत्पत्ति ही हुई, सब भविष्य के गर्भ में है कि ख़ुदा ने कलम से ही यह सब कुछ घटित होने के पूर्व ही सम्पूण वृतांत-वार्ता इत्यादि लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखवा दिया, तो यह माननाही पड़ेगा क्योंकि न मानने वाला काफ़िर होकर उसी दोज़ख (नर्क) में सदा के लिये अवश्य हो जायेगा ?) अस्तु ।

नर्क की ज्वालाओं में इन जलने वालों को छोड़ कर अब उन लोगों की बात भी सुनिये, जो बहिश्त (स्वर्ग) में शराब कबाब में मदमस्त हो हुरों (अपसराओं) और गिलमानों (नारी से भी अति सुन्दर किशोरों) के साथ रागरग और नृत्य आनन्द में अपना समय व्यतीत करने वाले हैं । उनकी भी बात सुनिये:—

'वा कालू अल् हम्दो लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा वा मा कुन्ना लिनह तदेया लौ ला अन्हदा मल्लाहो, लकद जाअत रूसूलो रब्बना बिल हक़्के'

कुर्आन, पारा ८, रकू ५।१२

अर्थात्-और स्वर्ग-निवासी कहेंगे, जब अपने भवन और स्थान देखेंगे पवित्रता और स्तुति सब ख़ुदा के हेतु है । जिसने हमें

मार्ग दिखाया उसी का फल यह स्थान है । हम अपनी शक्ति से मार्ग नहीं पा सकते थे, यदि वह हमें मार्ग न दिखाता ..... और निस्सन्देह, हमारे रसूल ईश्वर के साथ से अधिकारपूर्वक और हमने उनकी सहायता से तौहीद (अद्वैत) का मार्ग पाया ।

तफ़सीर कादरी, पृष्ठ ३०७ ३०८

उपरोक्त कथन, कैसा हृदय को प्रभावित करने वाला है, और सम्पूर्ण उपदेश या कथन का अभिप्राय स्वर्गवासियों से रसूल (हज़रत मुहम्मद) के सत्य प्रमाणित करने और सन्मार्ग दिखाने से ही है, ताकि रसूल की प्रतिष्ठा भविष्य में भी सुरक्षित रहे ।

फिर दोंनो ही स्वर्ग और नर्कवासी हां में हां मिलायेंगे और स्वर्ग निवासी, नर्कवासियों को कहेंगे :—

'वा नादा असहाबुल जन्नो असहाबन्नारे अत कद वजदनामा वअदना रब्बना हक्कन फ़हल वजत्तुम्मा वअदा रब्बकुम हक्कन'

कुर्आन पारा ८, रकू ५।१२

अर्थात्—और स्वर्ग वाले, नर्क-वालों को मुलामत (निन्दनीय) ढंग से कहेंगे कि हमने यह वस्तु पाई, जिसका खुदा ने हमको वचन दिया था सत्य । फिर तुमने क्या पाया ? तुमको तुम्हारे ईश्वर ने जो वचन दिया था दुःखों का । नर्क वाले कहेंगे-हाँ । यह नर्क वालों, और स्वर्ग वालों का कलाम (कथन) हमने इस हेतु से लिख दिया कि यह कथन भी मनुष्यों का ही है, चाहे कहीं भी क्यों न हों ? उपरोक्त आयतों से ऐसा प्रतीत होता है, कि स्वर्ग और नर्क इतने समीप हैं, कि वहां वाले दो पड़ोसियों की भांति परस्पर बातें कर सकते हैं । परन्तु यह नर्क तो बहुत नीचे है और बहिश्त ऊपर, बातें कैसे हो सकती है ?

नज़र बिन हारस का कथन और उसका दावा

जब बदर के युद्ध में नज़र बिन हारस को मिकदाद ने बंदी बना लिया तो हजरत मुहम्मद ने उसको क़त्ल करने की आज्ञा दी। मिकदाद ने कहा - या हजरत !यह तो मेरा बंदी है ? इस पर हजरत ने कहा – इसका क़त्ल आवश्यक है। यह कुर्आन की प्राचीन कथाएँ कहता था। (शोक कि ऐसे विद्वान् को हजरत मुहम्मद ने कहानियों की कहानियाँ कहने के दोष में मौत के घाट उतार दिया।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ९, पृष्ठ ८९

तफ़सीर कादरी में है, कि नज़र बिन हारस फ़ारस के नगरों में व्यापार हेतु गया था। वहां से रुस्तम और इसफन्द-यार के क़िस्से मोल लिये और अरबी में अनुवाद कर मक्का में ले आया और कहने लगा कि-मैं जो यह कथाएं लाया हूँ, उन कथाओं से श्रेष्ठ है, जो मुहम्मद पढ़ कर हमें सुनाता है।

तफ़सीर कादरी १, पृष्ठ ३६५

ऊपर हम कह आये हैं, कि जब खुदा के कलाम (आयतें) सुनाये जाते हैं तो नज़र बिन हारस कहता है, जैसे :—

'कालू कद समेना लौ नशाओ लकुल्ना मिस्ला हाज़ा इन हाज़ा इल्ला असा तीरल अव्वलीन'

कुर्आन, पारा ९, रकू ४।१८

अर्थात्-तहकीक़ (निस्सन्देह) सुना हमने यह कलाम। यदि हम चाहें तो अलबत्ता हम इसके मिस्ल (समान बना सकते हैं) यह

नहीं है, परन्तु अगले (पूर्व) लोगों की कथाएं और हमें भी यह कथाएं स्मरण है।

तफ़सीर कादरी १, पृष्ठ ३६५

इसके उत्तर में हजरत मुहम्मद ने कहा-यह खुदा का कलाम है। इसके प्रत्युत्तर में नज़र बिन हारस ने जो उत्तर दिया उससे ज्ञात होता है, कि यह व्यक्ति ईश्वरवादी, दृढ़ विश्वासी और प्रभु भक्त था तथा इसकी अरबी भाषा भी कितनी उच्च है:-

'अल्ला हुमा इन कान हाज़ा हुवल हक्का मिन इन्देका फ़ अमतिर अलैना हिजारतम्मिनस्समाए अवेतेना बिअज़ाबिन अलीम'

कुर्आन, पारा ९, रकू ४/१८

अर्थात्--जब नज़र और उसके समर्थकों ने कहा-ऐ अल्लाह ! यदि सत्य ही यह कुर्आन तेरे पास से उतारा गया है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर अज़ाब (कष्ट) दुःख देने और हलाक़ (मारने) करने वाला था।

तफ़सीर कादरी १, पृष्ठ ३६५

इब्ने जरीर ने सईद बिन ज़ुबैर के उल्लेख से लिखा है, कि यह बात कहने वाला नज़र बिन हारस ही था।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ५, पृष्ठ ९०

इसका उत्तर हज़रत मुहम्मद ने खुदा के नाम पर यह दिया:--

'वा मा कानल्लाहो लियुअज़्ज़िबहुम वा अन्ता फीहिम'

कुर्आन पारा ९, रकू ४।१८

अर्थात्-और नहीं है खुदा कि अज़ाब करे उन्हें, यद्यपि वह दुआ (प्रार्थना) करके अज़ाब (कष्ट) माँगते हैं और शीघ्रता करते

हैं, परन्तु स्थिति यह है कि तू उनमें है (अर्थात् हज़रत मुहम्मद उन लोगों में से है इस कारण अज़ाब नहीं आ सकता।)

तफ़सीर क़ादरी-१-पृष्ठ ३६५

इस विवरण से यह तो ज्ञात हो गया कि नजर बिन हारस अरबी भाषा में कुर्आन जैसी पुस्तक लिख कर लाया था और उसने अपनी पुस्तक के सम्बन्ध में कहा था-मेरी पुस्तक हज़रत मुहम्मद के कुर्आन से श्रेष्ठ है।

हज़रत मुहम्मद के ख़ुदा से आई हुई यह बात कहाँ तक सत्य सिद्ध हुई, कि हज़रत की उपस्थिति में उन पर अज़ाब (कष्ट) नहीं आ सकता, हज़रत के होते अज़ाब आया, जब कि हज़रत मुहम्मद बलशाली हो गया। तब जो उनकी हत्या हुई उसे अज़ाब के नाम से ही सम्बोधित किया गया। अस्तु,

मुसलमान भली प्रकार देख लें कि नज़र बिन हारस की यह उक्त दोनों आयतें क्या कुर्आन की आयतों के समान हैं या नहीं ? यदि हैं, तो तुम्हारा बारम्बार का यह आग्रह कि कुर्आन की आयत के मिसल (समान) आयत लाओ, दिन के प्रकाश में लोगों की आखों में धूल झोंकना नहीं है, तो फिर और क्या है ? मुसलमान प्रतिदिन कुर्आन में भिन्न-भिन्न स्थानों पर वर्णित अन्यान्य व्यक्तियों की आयतों का पाठ भी करते रहते हैं और साथ ही साथ यह भी कहते ही जाते है कि कुर्आन की आयत के समान आयत लाओ ! यह खूब तमाशा है, कि एक आयत तो क्या ? नज़र बिन हारस ने तो कुर्आन जैसी पुस्तक ही बना दी थी, परन्तु जब उसको ही समाप्त कर दिया गया तो फिर इस्लामी शासन में उसका कलाम कैसे सुरक्षित रह सकता था ! चलो, हम मुसलमानों को इस दिन--प्रतिदिन की तोतारटन्त को आज समाप्त ही कर देते हैं।

हज़रत मुहम्मद के समय में अन्य लोगों द्वारा नबव्वत [पैग़म्बरी] का दावा और अन्य कुर्आन सृजन-

हज़रत मुहम्मद के समय में ही अन्य और लोगों ने भी नबव्वत (पैग़म्बरी) के दावे किये तथा अन्य कुर्आन (ख़ुदा की वाणियों) के सृजन भी किये । इन लोगों के विषय में अइ-म्मए तलबीस' में उसके लेखक ने लिखा है । जिसे हम सक्षेप में लिख रहे है ।

लेखक किताब ने लिखा है, कि कुछ लोगों ने नबव्वत का दावा किया और साथ ही इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) का भी और कुर्आन के मानिन्द (समान) आसमानी किताबें भी बनाईं ।

नबव्वत के दावेदार-

प्रथम-इब्ने सय्याद मदनी

इब्ने सय्याद मदनी [इसने] ने नाबालग़िय्यत [अल्पव-यस्कता] में ही नबव्वत [पैग़म्बरी का दावा किया था, किन्तु इसने कोई पुस्तक कुर्आन के समान प्रस्तुत नहीं की ।

लेखक ने आगे लिखा है, कि नबव्वत का दावा करने वालों में से जिन्होंने कुर्आन की मानिन्द पुस्तकें प्रस्तुत की उनमें प्रथम असवद अनसी है ।

असवदी अनसी

यह असवद अनसी बड़ा शोबदेबाज़ [मिथ्या चमत्कारी] था । इसके पास एक गधा था, जो उसके कहने मात्र से ही

सिजदा (माथा नमाना) करता था और उठता-बैठता भी था। इस गधे को अबसद की आज्ञा मानते देख नजरान निवासी और मजजह कबीला वाले असवद की नबव्वत के काइल (विश्वासी) हो गये थे। कुछ देशों पर भी उसने अधिकार कर लिया था।

आगे लेखक ने लिखा है, कि असवद नबव्वत का दावा करता था, इस हेतु आवश्यक था कि वह भी कोई आसमानी कलाम अपने जाल में फंसे हुए लोगों के लिये उतारे। उसने कुर्आन की नकल करते हुए कुछ अबारतें (वाक्य रचना) लिख रखी थी, जिन्हें उसके पैरों (शिष्य) बुरहाने मुकद्दस के सदृश विचार करते थे।

लेखक ने उसकी एक आयत का उदाहरण भी दिया है:--

'वल माएसाते मैसन वद्दारेसाते दरसन, युहिज्जूना जमअंव्व फ़रादया अला कलाएसा बीजिव्वा सुफ़रिन'

इसके साथ ही लेखक ने कुर्आन की आयत भी उदाहरणार्थ प्रस्तुत की है ताकि आप समझ सकें। कुर्आन की आयत:—

'वन्नजेआते गरकंव्वन्नाशेताते नशतंव्वस्साबेहाते सब्हन'

कुर्आन, सूरत नाजेआत, पारा ३०

तलैहा असदी

तलैहा असदी ने इस्लाम त्याग कर नबव्वत (पैगम्बरी) का दावा किया था। अल्पावधि में ही हजारों व्यक्ति उसके हलकये (घेरा) नबव्वत में सम्मिलित हो गये थे। तलैहा ने कुछ

मिथ्या कथाएं जोड़ कर उनका मुसज्जा (वाक्य बंदी) किया था और अपनी नई-नई शरीयत लोगों के समक्ष प्रस्तुत की। उसकी वही (आयत) की बानगी:—

'वल हमामे वल यमामे वस्सरें वस्सवामे कद ज़मना कबल कुम बिलहवामे लियबलु ग़न्ना मुलकनल अराका वश्शमा'

अर्थात्—शपथ है पारिवारिक पक्षियों और वन्य पक्षियों की, और तुमंती की, जो खुश्क (सूखी) भूमि में रहती है। वर्षों पूर्व भूतकाल से यह निश्चित हो चुका है कि हमारा देश अराक और शाम तक तिस्तृत हो जायेगा।

अइम्माए तलबीस, पृष्ठ २६

मैं कहता हूं, कि ऐसी कुर्आन की आयतें भी बहुत हैं, किन्तु मैं तुलानात्मक दृष्टि से केवल एक आयत ही लिखता हूं। देखिये कुर्आन की निम्न आयत :—

'वल फ़जरे वा लयालिन अशिर्रंव्वश्शफ़ए वल वत्रे वल्लैले इज़ा यस्र। कुर्आन, पारा ३०, सूरत फ़जर

अर्थात्—शपथ है प्रातःकाल और दस रात्रियों की और जुफ्त [जोड़े] की और ताक (इकाई) की और रात की, जब चलने लगे। [लेखक]

इब्ने तलैहा ने हज़रत मुहम्मद को भी अपने दीन (धर्म) की दावत [निमन्त्रण] दी थी। हज़रत मुहम्मद ने कहा—तुम झूठे हो। उसने कहा—वह व्यक्ति कैसे झूठा हो सकता है, जिसको लाखों मखलूक [सृष्टि] अपना पथ-प्रदर्शक और मुक्तिदाता मानती है।

अइम्माए तलबीस पृष्ठ १६ से २६

मुसैलमा बिन कबीर बिन हबीब

अइम्मए तलबीस का लेखक लिखता है, कि इस्लाम के प्रारम्भ में मुसैलमा सर्वाधिक सफल और उच्चस्तरी मिथ्यावादी नबी (पैग़म्बर) था। जब इसने नबव्वत (पैग़म्बरी) का दावा किया, इसकी आयु सौ वर्षों से भी अधिक थी। इसका पूर्व नाम रहमाने यमामा था। यह योग्यता में व्याख्यान शक्ति, फ़साहत (उत्कृष्टता) भाषा-विज्ञान आदि में बेमिसाल था। यह भी वही और इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) के फ़साने (कथाएँ) सुना—सुना कर लोगों को अपना मुरीद (भक्त) बनाता था। बनु हनीफ़ा इस्लाम त्याग कर मुसैलमा के पैरो (शिष्य) बन गये। मुसैलमा के अनुशरणकर्ता कहते थे, कि मुसैलमा पर खुदा ने सहीफ़ा (कुर्आन) उतारा था, जो फ़ारूके अव्वल के नाम से प्रसिद्ध था। उनका कथन है, कि इस पुस्तक ने भी बड़े-बड़े विद्वानों की ज़बान बन्द कर दी थी। वह लोग कहते हैं, कि खुदा ने मुसैलमा को एक और पुस्तक दी थी, जिसका नाम फ़ारूके सानी है। यह मुसैलमा हज़रत मुहम्मद के पश्चात भी जीवित रहा। मुसैलमा के शिष्य नमाज़ में फ़ारूके अव्वल की शायरी (काव्य) ही पढ़ते थे।

लेखक अइम्मए तलबीस लिखते हैं, कि अल्लामा शैख़ हीन आफ़न्दी अलूसी साबिक (भूतपूर्व) वज़ीर तूनस ने किताब अल जवाबुल फ़सीह में अब्दुल मसीह नसरानी का कथन उद्धृत किया है, कि मैंने मुसैलमा का सम्पूर्ण मुस्फ़िह पढ़ा है, जिससे ज्ञात होता है कि उसने एक ज़ख़ीम किताब (वृहद् ग्रन्थ) ही बना डाली थी और यह दावा था, कि यह एक इलहामी (ईश्वरीय ज्ञान की) पुस्तक है।

मुसैलमा की वही [आयतों] का उदाहरण

मुसैलमा की वही का उदाहरण निम्नानुसार है:

'सब्बेह इस्मा रब्बेकल आलज़्ज़ी यस्सिर अलल हुब्बा मा खरजा मिनहुमा मुस्तलिन तस्आ मिम्बैना अज़लाआ वा हुशेबा फ़मिन्हुम मंय्यसूनो व यदेसा फ़िस्सरा वा मिन हुन मंय्यईशा । यब्का इला अजलिन वा मुन्तहा वल्लाहो यालमुस्सिरो वा अखफ़ा व ला तुखफ़ा अलैहिल आखिरते वल ऊला अज़कुरू नेमतल्ला। अलैकुम वशकुरू ही इज जअलश्शमसा सिराजन वलगैसा फ़ज़ा-जंब्ब जअला लकुम कबाशन वा नआजन वा फ़िज्जतिब्बा जुजा-जब्बा जहवब्बा दीबाजम्मिन नेमतेही अलैकुम अन अख़रजा लकुम्मिनल अर्जे रूमानंब्बा अनबंब्बा रीहानब्बा हिन्ततंब्बा जुबा नन वल्लेलुद्दाम सो वज्जाबिल हमामसो मा कवातु असीदो मिन रतबे व ला याबिसे वल्लैलो असहमा वद्दब्बुल अदलमा वल जिज-उल अज़लमा मा इन्तहक असीदो मिम्महर मिन वा काना यक-सदो विज़ालेका नुसरतन उसादो अला खपूमतिन लहुम वश्शआ वा अलवानहा वा आजबहस्सौदा वा अलबानहा वश्शातस्सौदाआ वल्लब्नल अबयज़ो इन्नहू ल अज़बुन महज़ान इन्ना आतैनाकल ज्वाहिरा फ़सल्ले लिरब्बेका वा हाजरान मब्ग्रजकल फ़ाजिरह वल मब्दियाते जारअन वल हासेदाते हसदन वद्दारेसात कमहन वल्लाहेनाते तहनन वल खाबेजाते खब्बान वश्शारेदाते शरदन वल्लामेकाते लकमन लहमंब्बा समनन लकद फ़ज़्ज़लएतोकुम अला अहलिल दबरे वा मा सबक़कुम अहलल मदरे रफ़ीककुम फ़मन-ऊहो वल मोतरेफ़ून वबहो वल बाशी फ़नायऊहो वश्शमसो वज़्ज़ो हा हा वा जूएहा व वजलालेहा वल्लैले इज़ा अदाहा यत-लबोहा लियग़शाहा अद्दरकहा हत्ता अताहा वा अतफ़ा नूरेहा

फ़महाहा वा कद हरमल मज़का फ़काला मालकुम ला तम्ज़ऊन'

हमने यह लम्बी इबारत इस हेतु लिखी कि इसे पढ़ कर मुसैलमा के मुस्हिफ़ (कुर्आन) का भली प्रकार ज्ञान हो जाये कि मुसलमानों के कुर्आन के समान ही उसकी भी भाषा है या कुछ अन्तर है ? कुछ भी हो, मुसलमानों का यह दावा तो नितांत ही मिथ्या है कि कोई आयत कुर्आन के मिसल [समान] लाओ । आयत क्या ? नज़र बिन हारस और मुसैलमा ने तो पूरा का पूरा कुर्आन ही बना दिया । नज़र बिन हारस भी एक विद्वान् व्यक्ति था; परन्तु मुसैलमा तो उस समय का एक अद्वितीय विद्वान् माना जाता था । अस्तु—

अइम्मए तलबीस के लेखक ने लिखा है, कि मुसैलमा ने कुर्आन की सूरत आदियात जैसी एक सूरत बनाई हैं । यह सूरत कुर्आन के पारा ३० में है । हम दोनों सूरतों को अर्थ सहित पाठकों की जानकारी हेतु लिख रहे हैं । कुर्आन पारा ३० की सूरत आदियात निम्न है:—

'वल आदियाते जब्हन० फल् मूरियाते कद्हन, फ़ल मुगीराते सुब्हन फ असर्ना बिही नक्अन फ़ वसत्ना बिही जम्अन इन्नल इन्साना लिरब्बेही लकनूद० व इन्नाहू अला ज़ालिका लशहीद् वा इन्नाहू लिहुब्बिल खंरे लशदीद अफ़ला यालमो इज़ा बोसिरा मा फ़िल कुबूर वा हुस्सेला मा फ़िस्सदूर, इन्ना रब्बहुम बिहिम यौमए जिल्लखबीर'

कुर्आन, पारा ३०, सूरत आदियात

अर्थात्—शपथ है हाँप कर घोड़े दौड़ाने वालों की, फिर पत्थर झाड़ कर आग निकालने वालों की। फिर गांवों मारने वालों की प्रातः कर, पस, इसके साथ उठाते हैं गुबार (धूल का चक्रवात) को, पस, उस समय बैठ जाते हैं, उस जमात के साथ। निस्सन्देह मनुष्य अपने ईश्वर [रब्ब] के साथ अलबत्ता नाशुक्रगुज़ार (कृतघ्न) है और तहकीक (निस्सन्देह) वह इस बात पर अवश्य साक्षी है, और माल की मुहब्बत (सम्पदा के प्रेम) में अलबत्ता कठोर है। क्या पस, नहीं जानता कि जब कब्रों से उठायें जायेंगे और जो कुछ सीनों (वक्ष) के मध्य हैं, प्राप्त किया जावेगा, और तहकीक (निस्सन्देह) उनका ईश्वर उस दिन उनके हेतु सावधान है, अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन, कुर्आन

अब मुसैलमा की सूरत, जो उक्त सूरत के समान है। वह देखिये :—

'वज्जारिआते ज़र्अन वज़् हासिदाते हसदन वज़्ज़ारियाते कमहन वत्ताहिनाते तहनन वल् खाबिजाते खुब्ज़न वस्सारिदाते सरदन वल्लाकिमाते लक्मन अहालतन वा सम्नन लकद फ़ज़्ज़लतुम अला अहलिल वबरे वा मा सब्ककुम अहलिल मदरे रीककुम फ़म्नऊ हो फ़ल्माना फ़ावूहो वल्बाग़ी फ़तव्वूहो।'

अर्थात्--शपथ है खेती करने वालों की, और शपथ है खेती काटने वालों की, और शपथ है भूसा स्वच्छ करने हेतु गेहूँ को हवा में उड़ाने वालों की, और शपथ है आटा पीसने वालों की और शपथ है रोटी पकाने वालों की, और शपथ है सालन [मांस] पकाने वालों की, और शपथ है तैल और घी के लुकमे

(कौर) खाने वालों की, कि तुमको सूफ़वाले (बनवासी) अरबों पर फ़ज़ीलत (बड़प्पन) दी गई है, और मिट्टी वाले (मकान बनाने वाले शहरी अरब) तुमसे बढ़कर नहीं है। तुम अपनी रूखी-सूखी रोटी की रक्षा करो। अनाथ और दुखियों को शरण दो। याचक और भिक्षुक को अपने पास ठहराओ।

अइम्मए तलबीस, पृष्ठ ३१

उपरोक्त दोनों सूरतों की वाक्यरचना और शैली में तो कोई अन्तर अनुभव नहीं होता, किन्तु दोनों के अर्थों में अत्यधिक अन्तर ज्ञात होगा।

मुसैलमा की सूरत में एक ही विषय प्रारम्भ से समाप्ति तक प्रतिपादित है। अन्तिम वाक्य भी उससे सम्बन्धित है। दी गई शपथों का उत्तर अपनी प्रतिष्ठा और अरबों की निकृष्टता का द्योतक है, परन्तु कुर्आन की सूरत का विषय प्रत्येक वाक्य में भिन्न-भिन्न है। ऐसा ज्ञात होता है, जैसे जहां से भी वाक्य-पूर्ति हेतु गठित सामग्री उपलब्ध हुई, वहां से ही सलग्न कर दी गई।

आप देखेंगे, कि प्रथम आयत में घोड़ों की शपथ और द्वितीय आयत में गांवों को मारना और फिर धूल उड़ना है, फिर मनुष्य की नाशुक्रगुज़ारी (कृतघ्नता) का उल्लेख। फिर ऊनके कर्मों को देखना है। क़ब्रों से उठाने की चर्चा है। माल की मुहब्बत का भी उल्लेख इत्यादि है। विषय में शृंखला-बद्धता का कौशल नहीं है।

आगे कुर्आन में ऊँट के लिये लिखा है, तो मुसैलमा ने हाथी के विषय में लिख दिया है। देखिये कुर्आन की आयतः—

'अफ़लायन्ज़ुरूना इलल इबिले फ़ैफ़ा खुलेक़त'

कुर्आन, पारा ३०, रकू १।२१

अर्थात् क्या ऊँटों की ओर नहीं देखते ? क्यों कर उत्पन्न किये गये है। अब मुसैलमा की आयत को भी देखिये। आयत:—

'अलफ़ीलो व मलफीलो लहू जंबुब्न वोलुन वा खुरतूमुन तवीलुन इन्ना जालिका मिन खल्के रब्बेनल जलील'

अर्थात्–हाथी ! और वह हाथी क्या है ? उसकी बदनुमा दुम (बेढंगी पूँछ) और लम्बी सून्ड, यह हमारे रब्बे जलील (महान् उत्कृष्ट) की मखलूक़ (कृति) है।

हमने मुसैलमा के मुस्हिफ (कुर्आन) की पर्याप्त आयतें लिख दी हैं, ताकि लोग इस भ्रान्ति से बचें कि कुर्आन के समान आयत नहीं बनती, और न किसी ने बनाई।

मुसैलमा के अनेक चमत्कार प्रसिद्ध हैं। उनमें से उसके मुरीद (भक्त) मुहम्मद क़ुली ने बताया कि—मुसैलमा के संकेत से चांद उतर आया और उसकी गोदी में बैठ गया।

अइम्मए तलबीस, पृष्ठ ३५

मुख़तार इब्ने उबैद सक़फ़ी

अइम्मए तलबीस के लेखक ने आगे कुर्आन बनाने वालों में मुखतार इब्ने उबैद सक़फ़ी का नाम लिखा है। यह मुख़तार वही है, जिसने कर्बला में शहीद होने वालों का प्रतिशोध लिया था। इसके विषय में लिखा है—यह एक महान् उच्च श्रेणी के सहाबियों (मित्रों) में से था। जब यह हज़रत हुसैन के हत्यारों को मौत के घाट उतार चुका, तो अत्यधिक जनप्रिय हो गया। आखिर इसने पैगम्बरी का दावा कर दिया।

उक्त उद्धरण 'अल फ़र्क़' पृष्ठ ३४ और तिबारी, भाग ७, पृष्ठ १३१ से लिया गया है। अइम्मए तलबीस, पृष्ठ ७९

आगे लिखा है, कि मुख़्तार के हालत वा वाकेआत ने ग़ैर-मामूली तवालत इख़्तयार कर ली, अर्थात् उसके क्रिया-कलाप असाधारण रूप से असीमित बढ़ गये।

जो महाशय उसकी छन्द योजना और उच्च वाक्य रचना देखना चाहें वह अब्दुल काहिर की पुस्तक 'अल फ़र्क़ बैलन फ़र्क़' पृष्ठ ३४-३५ और किनाबुद्दुआत, पृष्ठ ६४-६५ में देख सकते है। अइम्मए तलबीस पृष्ठ ८७,

हमें उपरोक्त दोनों पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो सकी, परन्तु हमारे दावे के हेतु इतना ही पर्याप्त है, कि मुख़्तार ने पैग़म्बरी का दावा किया था और अपने इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) का एक कुर्आन भी बनाया था, जिसकी भाषा अति उच्च श्रेणी की थी यह 'अइम्मए तलबीस' के लेखक ने लिख ही दिया है।

सालिहा द्वारा पैग़म्बरी का दावा और उसका क़ुर्आन

अइम्मए तलबीस का लेखक लिखता है, कि 'सालिहा कहता था, कि मुझे भी हज़रत मुहम्मद की भांति इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) होता है। और कुर्आन उतरता है। चुनांचे

उसने अपनी क़ौम के समक्ष जो कुर्आन प्रस्तुत किया, उसमें ८० सूरतें थी और उसकी सूरतों के नाम भी आदम, नूह, मूसा, फ़िरऔन तथा हारून आदि थे। अन्तिम सूरत का नाम ग़राए हुनिया था। उसके मुरीदों (भक्तों) के सिद्धांतानुसार इसमे अनेक इसरार (रहस्य) और हक़ाईक़ (वास्तविक) दर्ज थे। इसने हिज्री १२५ या १२७ में नबव्वत का दावा किया था।

सालिहा ४७ वर्षों तक नबव्वत के दावे सहित अपनी क़ौम का धार्मिक व सांसारिक हाकिम (शासक) रहा और फिर हिज्री १७४ में ताजो तख्त (राज्य सिंहासन) से पृथक होकर पूर्व की ओर चला गया तथा एकान्त स्थान मे जाकर बैठ गया सालिहा ने जाते समय अपने बेटे इलियास को वसिय्यत की, कि मेरे धर्म पर दृढ़ रहना। इलियास से लेकर जितने, इनके स्थानापन्न हुए, वह पाँचवी सदी हिज्री के मध्य तक उसके ताजो-तख्त और धर्म के उत्तराधिकारी रहे।

अइम्मए तलबीस, पृष्ठ १०४-१०५

सालिहा के वंशजों ने लगभग ३२५ वर्षों तक राज्य किया। सालिहा ने जो कुर्आन प्रस्तुत किया वह कुर्आन; इस कुर्आन से तनिक संक्षिप्त है, क्योंकि इस कुर्आन में कुल ११४ सूरतें हैं और सालिहा के कुर्आन में ८० सूरतें ही थी। अस्तु,

हमें तो केवल यह सिद्ध करना था कि सालिहा ने भी अपना कुर्आन बनाया था। अन्य मुसलमानों का यह कथन कि सच्चा नबी (पैग़म्बर) हलाक (नष्ट) हो जाता है, मिथ्या है,

क्योंकि यह तो ३२५ वर्षों के लगभग राज्य करते रहे और हलाक न हुए ?

हम इस बात को पाठकों के सम्मुख रख रहे थे कि मुसलमानों का यह दावा सर्वथा भ्रान्तिजनक है, कि कुर्आन के समान (मिसल) आयत लाओ ! मैंने पर्याप्त प्रमाण इस विषय में आपके सम्मुख प्रस्तुत किये, कि कुर्आन जैसी पुस्तकें अनेक लोगों ने लिखी हैं और उनके उदाहरण भी प्रस्तुत किये। मुसलमान जन तो सम्भवतः अब भी न स्वीकारें, परन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि इन अकाट्य प्रमाणों को देख कर अन्य सज्जन उनके इस भ्रम से बचेंगे।

हज़रत मुहम्मद से लेकर आज तक पैग़म्बरी के कितने दावेदार हुए। उनके नामों और कामों का एक वृहद् ग्रन्थ बन सकता हैं ! उन सभी ने पैग़म्बरी का दावा किया है और इलहाम का भी।

आप दूर क्यों जाते हैं, अभी एक शतक पूर्व सन १८६३ में मिस्टर बहाउल्लाह ईरानी ने पैग़म्बरी और अवतार होने का दावा किया था और अपना बहाई सम्प्रदाय चलाया तथा इस्लाम को बचपन के समय का मज़हब बताकर समाप्त करना चाहा एवं कुर्आन की प्रतिद्वन्द्वता में पुस्तक "किताबे अक़दस" और उसके गुरु बाब ने 'किताबे मुबीन' और 'किताबे बयान' को लिखा। रोज़ २० कर दिये, नमाज़ें ३ रख दीं और नमाज़ों में कुर्आन की तलावत (पाठ करना) निरस्त कर अपनी अरबी आयतों का पाठ प्रारम्भ करवा दिया। अब बहाई लोग बहाउल्लाह के बहाई मत का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

इसी प्रकार इन बहाईयों के सदृश्य ही मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी ने भी नबव्वत और इलहाम का दावा किया। ऐसी स्थिति में यदि उनका इलहाम भी खुदा की ओर से माना जाये तो वह भी कुर्आन से घटिया कैसे हो सकता है ?

विचारणीय है कि जब हमारे सम्मुख न्यायालय का एक साधारण मुन्शी पैग़म्बरी और इलहाम का दावा कर सकता है तथा उसकी पुस्तकें भी हैं, जो समाप्त नहीं हुई हैं। ऐसी स्थिति में भी आप अब भी कुर्आन की मिसल (समान) आयत ढूँढ रहे हैं ? बड़ी आश्चर्यजनक बात है ! अस्तु

इस विषय को हमने ' कुर्आन में विविध लोगों के कलाम" में इस हेतु सम्मिलित कर लिया कि वास्तव मे यह एक ही विषय है। अन्यान्य लोगों के कलाम क़ुर्आन में प्रत्यक्ष आयतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, हज़रत मुहम्मद के समय ही में कितने कुर्आन बने और इस्लामी शासन के कारण नष्ट हो गये। यह कहना कठिन ही नहीं अपितु प्रायः असम्भव-सा है। अतः इस विषय को यहां ही समाप्त कर हम अपने उसी विषय को प्रारम्भ करते हैं। हमारा विषय है, कुर्आन में विभिन्न लोगों का कलाम। उनका कथन है कि यक़ूलूनाः—

'हाउलाए शुफ़ आओ ना इन्दल्लाहे'

कुर्आन, पारा ११, रकू २/७

अर्थात्-(काफ़िर कहते हैं) कि यह बुत (मूर्ति) हमारी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाले हैं, खुदा के पास।

पुनः आगे कहते हैं:—

'मता हाजल वादा इन कुन्तम सादेकीन'

कुर्आन, पारा २१, रकू ५/१०

अर्थात्–वह वादा कब पूर्ण होगा, यदि तुम सच्चे हो।
यह कथन ख़ुदा का नहीं अपितु अन्य का कथन है। वास्तव में सत्यता यह है कि इस प्रकार अन्य लोगों के छोटे—छोटे वाक्य दे कर कुर्आन को दिलचस्प (मनोरंजक) बनाया गया है। आगे जो निम्न आयत है, वह भी काफ़िरों का कथन है। देखिये आयतः—

'आ इज़ा कुन्ना तुराबन आ इन्ना लफ़ी ख़लकिन जदीद'

कुर्आन, पारा १३, रकू १।७

अर्थात-(वह कहते हैं) जब हम मृत्यु के पश्चात् ख़ाक (मिट्टी) हो जायेंगे, तो क्या नये जन्म में होंगे ?

आगे पुनः आयतः—

'यकूलुल्ला जीना कफरू लौ ला उन्जिला अलैहे आयतुम्मिन रब्बेही' कुर्आन, पारा १३, रकू १।७

अर्थात्-(काफ़िर कहते हैं) क्यों नहीं ख़ुदा की ओर से हज़रत मुहम्मद पर निशानियां भेजी जाती हैं ? जैसी हज़रत मूसा पर आती थीं। इसका उत्तर हज़रत मुहम्मद ने निम्न प्रकार दियाः—

'इन्नमा अन्ता मुन्ज़िरून' अर्थात्—मैं तो डराने वाला हूं।

वह (काफ़िर) लोग हज़रत मुहम्मद को दिवाना कहते थेः—

'या अय्यो हल्लज़ी नुज़्ज़िला अलै हिज़्ज़िकरो इन्नका लमजनून लौ मा तातीना बिल् मलाएकते इन कुन्ता मिनस्सादेकीन'

कुर्आन, पारा १४, रकू १।१

अर्थात्--ऐ ! तू वह व्यक्ति, जो कुर्आन के उतरने का दावा करता है, निस्सन्देह, तू दीवाना है। यदि तू सच्चा है, तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता।

आयतों के परिवर्तन पर वह लोग हज़रत मुहम्मद को झुठ बांधने वाला कहते थे:—

'कालू इन्नमा अन्ता मुफ़तरिन'

कुर्आन पारा १४, रकू १४ १३।१९

(जब हम एक आयत के बदले दूसरी आयत रखते हैं।)
अर्थात्--निस्सन्देह; तू मुफ़तरी (झूठ बांधने वाला) है; ख़ुदा पर इफ़्तरा (झूठ बांधता है) और अपनी ओर से बातें बना लेता है।

तफ़सीर क़ादरी १ पृष्ठ ५८१

मिट्टी होने के पश्चात् कैसे जीएँगे

आयत:—

'कालू आ इज़ा कुन्ना अज़ामंव्वा रो फ़ातन आ इन्ना लमब्ऊसूना ख़ल्कन जदीदा' कुर्आन, पारा १५ रकू ५।५

अर्थात्—जब हम हड्डियां और गले हुए हो जायेंगे, तो क्या नई पैदाअश (अत्पत्ति) में उत्पन्न किये जायें।

उनका अभिप्राय है, कि शरीर तो सड़-गल जायेगा, कोई जल जायेगा, किसी को दरिन्दे (क्रूर पशु) खा जायेंगे, शरीर के जलने पर समस्त तत्व (अनासर) पृथक्-पृथक् हो, अपने अपने तत्वों में मिल जायेंगे, तो फिर वह शरीर कैसे बन सकते है ?

चमत्कार दिखाओ, मुसलमान हो जाएँगे ?

हज़रत मुहम्मद के समय में अरब में अधिकतर यहूदी और इसाई लोग रहते थे। वह लोग अपनी पुस्तकों में प्राचीन पैग़म्बरों के चमत्कार पढ़ते थे। इसीलिये उन्होंने हज़रत मुहम्मद से भी चमत्कार दिखाने को कहा:—

'कालू लन्नोमिना लका हत्ता तफ़जुरा लना मिनल अर्ज़ी यम्बूअन, औ तकूना लका जन्नतुम्मिन्नखी लिव्वा इनबिन फ़तु फ़ज्ज़ेरल अनहारा ख़लालहा तफ़जीरा औं तुस्कितस्मा आ कमा ज़अम्ता अलैना किसफ़न औ तातिया बिल्लाहे वल मलाएकते कबीला औ यकूना लका बैतुम्मिन ज़ुख़रो फिन औ तर्का फ़िस्समाए वा लन्नामेना लिरोकिय्येका हत्ता तुतज्जेला अलैना किताबन्नकर ऊहो' कुर्आन, पारा १५, रकू १०।१०

अर्थात्–हम तुझ (हज़रत मुहम्मद) पर कभी भी ईमान (विश्वास) नहीं लाएँगे। जहाँ तक कि धरती से पानी के चश्में (सोते) भर दे, जो कभी पानी की कमी न करें, या तेरे हेतु खुरमें और अंगूरों के वृक्षों के उद्यान हों और उनके मध्य पानी की नहरें आरम्भ कर, या हम पर तू आसमान को खंड-खंड कर डाल जैसे तूने घमन्ड किया और वईद या ख़ुदा और फ़रिश्तों को प्रकट कर हमें प्रत्यक्ष दिखा; या उन्हें अपनी रसालत (पैग़म्बरी) पर साक्षी ला, या कोई सोने का घर (गृह) तेरे हेतु हो वहाँ बैठ, या आसमान पर चढ़ जा, और न विश्वास करेंगे तेरे आसमान पर चढ़ जाने का, जब तक कि तू हम पर किताब उतार लाये, और हम उसको पढ़ें कि उसमें तेरी तस्दीक़

(प्रमाणित होना) 'लखी हो । उपरोक्त मांगे उन लोगों ने मुसलमान होने हेतु प्रस्तुत की, जिसका उत्तर हज़रत मुहम्मद ने मात्र यह दिया:—'हलकुन्तो इल्ला बशररंमूला' अर्थात्-किन्तु मैं बशर (मनुष्य) हूं, और संदेशवाहक हूं ।

अभी तक तो वह लोग छोटे-छोटे वाक्य कहते थे किन्तु उपरोक्त कथन, यह तो अत्यधिक विस्तृत है । कुर्आन की अरबी के साथ इस कथन की अरबी की तुलना कर देखिये, कैसी उच्चस्तरीय यह अरबी भाषा है ! अरब के लोगों ने हज़रत मुहम्मद के सम्मुख जो बातें कहीं वह क्या मुसलमानों को कुरआन में यह आयतें नहीं दिखाई देती ? किन्तु दिखाई भी दें तो क्या अर्थ है ? क्योंकि स्वयं हज़रत मुहम्मद, जिनके साथ वह बातचीत करते थे, उन को भी दृष्टिगोचर नहीं हुई और खुदा को भी ज्ञात न हो सका, और प्रतिदिन उनके सम्मुख इस प्रकार की आयतें आती गई । प्रतिदिन मुसैलमा और नज़र जैसे लोग कुर्आन बना-बना कर सर्वसाधारण के सम्मुख रखते रहे किन्तु यह तो रट लगाते ही रहे कि कुर्आन की आयत के समान आयत लाओ !

आजकल के मुसलमान तो तोतारटत के सदृश है, वह तो यह रट लगाते ही रहेंगे कि कुर्आन की आयत के समान आयत लाओ इन बेचारों का क्या दोष है ? आजकल के मुसलमान हज़रत मुहम्मद के चमत्कारों का बखान कर लोगों को बहका रहें हैं, किन्तु हज़रत मुहम्मद के सम्मुख ही अरब के लोग बारम्बार चमत्कारों की मांग करते रहे किन्तु उनको चमत्कार तो देखने को नहीं मिले और उसके बदले मैं तलवार की धार अवश्य देखने हेतु मिली ।

आगे है, कि दोनों में कौन उत्तम है (काफ़िरों की अरबी देखते जाएँ) :—

'वा कालल्लज़ीना कफ़रू लिल्ला ज़ीन आमनू अय्युल फ़रीकैन खेरूम्मका मंव्वा अहसनो नदिय्या'

कुर्आन, पारा १६, रकू ५।८

अर्थात्–(क़ुरैश के आगेवान मुसलमानों से कहते हैं) दोनों समूहों में से कौन सा समूह उत्तम है तुम या हम ? मकान और स्थान की दृष्टि से हमारे मकान अति उत्तम हैं, और जीवनयापन की समस्त वस्तुएँ हमारे हेतु प्राप्य हैं, और तुम्हारे पास न बैठने को स्थान है और न मुँह को कौर (निवाला) किसकी सभा सुसज्जित और आरास्ता व ब्रांरौनक (व्यवस्थित व रमणीक) है, और हमारे समाज में सब सरदार और चरित्रवान् हैं और तुम्हारी सभा में दास (गुलाम) व निर्बल हैं।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ २३

इस आयत से प्रतीत होता है, कि उस समय मुसलमानों की स्थिति दयनीय थी । अस्तु, हमें क्या कोई ग़ुलाम हो या कोई सरदार हो ? हमें तो मुसलमानों से मात्र यही कहना है, कि अपने ख़ुदा के कुर्आन की अरबी से इन अरबों की अरबी मिलाते जाओ, आपको कुछ अन्तर तो नहीं दिखाई देता ?

कुर्आन कवि का काव्य है

आयत :—

'वल काजू अज़्ज़ासो अहलामिन बलिफ़तराहो बल हुवा शाएरून,

फ़ल्यातेना बिआयतिन कमा उर्सिलल अव्वलून'

कुर्आन, पारा १७, ११

अर्थात्—उन लोगों ने कहा-कुर्आन बातें हैं, जैसे ख्वाबे परेशान (बेचैन) अर्थात् हर स्थान से गंदा (बिखरा हुआ) और वह ऐसा भी नहीं, अपितु बंदिश कर लिया गया है अपनी ओर से ओर खुदा का नाम झूठा लिया है, और वह ऐसा भी नहीं अपितु वह कवि है, कविता कहता है और श्रोतागणों के विचारों में मात्र अवास्तविक मज़मून (विषय) स्थापित करता है ।

तात्पर्य यह है कि काफ़िर लोग हज़रत (मुहम्मद) को विवश और बेचैन होकर कभी तो जादूगर (तांत्रिक) कहते, कभी कवि, कभी मिथ्याभाषी और कभी उखड़ी हुई परेशान बातें करने वाला कहते हैं, और फिर यह भी कहते हैं, कि यदि ऐसा नहीं है तो चाहिये कि हमारे हेतु कोई चमत्कार लाये । जैसे कि भूतपूर्व पैग़म्बर चमत्कार सहित भेजे गये थे । जैसे-ऊँटनी असा, यदे बैज़ा, मुर्दे जलाना आदि

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ-५०-५१

हूद के सरदार भी ऐसा ही कहते थे । मध्य में तनिक चर्चा उपस्थित है, सो उनकी भी सुन लें । हां कुर्आन की अरबी से इनकी अरबी की तुलना भी करते जायें । हूद के सरदार कहते थे:—

मा हाज़ा इल्ला बशरुम्मिरलो कुम यकुलो मिम्मा ताकुलूना मिन्हो वा यशरबो मिम्मा तशरबूना वा लइन अतातुम बशरम्मिस्लकुम इन्न कुम इजल्ला खासिरून, अयाइदो कुम अन्न

कुम इज़ा मित्तुम वा कुन्तुम तुराबंव्वा इज़ामन अन्नकुम्मुख़रजून हैहाता व हैहाता लिमा तूअदून, इन् हिया इल्ला हयातु नद्दुनिया नमूतो वा नहया वा मा नहनो बिमब्ऊसीन. इन् हुवा इल्ला रजो-लुन निफ़्तरा अलल्लाहे कज़ो बंव्वा मा नहनो लहू बिमोमिनीन'

कुर्आन, पारा १८, रकू ३।३

अर्थात्–यह रसूल (पैग़म्बर) नहीं है जो हक़ (सत्य) की ओर बुलाता है, अपितु तुम्हारे समान मनुष्य है। जिसमें से हम खाते है, उसमें से खाता है. और जिसमें तुम पीते हो; उसमें पीता है। यदि नबी होता तो उसमें फ़रिश्तों के गुण होते। वह न खाता, न पीता। यदि तुम विधि और निषेध में उस व्यक्ति की आज्ञा पालन करोगे, जो कि तुम्हारे ही सदृश्य है, तो अवश्य हानि उठाओगे। जब तुम अपने जैसे मनुष्य के आज्ञाकारी और अधीनस्थ हो जाओगे! क्या यह वचन देता है, कि जब तुम मर जाओगे और तुम्हारी हड्डियां गल-सड़ जायेगी तो तुम कब्रो से जीवित कर बाहर लाये जाओगे? दूर है, दूर यह क़यामत (प्रलय) का वचन अर्थात् कदापि ऐसा नहीं हो सकता। यह जीवन हमारा नहीं है किन्तु हम मरते हैं, और जीते हैं, (आवागमन करते हैं) और हम कब्रों से उठाये जाने वाले नहीं हैं। यह मर्द सालेहा (नेक मनुष्य) नहीं है, किन्तु खुदा पर झूठ बांधता है, जो यह कहता है कि खुदा ने मुझे रसूल बना कर भेजा है। हम तो उस पर और उसकी बात क स्वीकार करने वाले नहीं।

उस रसूल की कौम के सरदारों में से एक समूह ने, जो विश्वास नहीं करते थे, (उपरोक्त) वचन कहे और क़यामत को असत्य समझा तथा संसार में धन-सम्पदा व सन्तान जिनको प्राप्त था

और अत्यधिक ऐश्वर्य (अमीरी) में पले थे। उनमें से कुछ, कुछ से (उपरोक्त) बोले)

तफ़सीर कादरी, पारा १८ पृष्ठ ६७

आपने देख लिया कि यह लोग खुदा के कैसे अनन्य भक्त हैं, कि किसी मनुष्य की बात पर, जो उनकी बुद्धि को स्वीकार नहीं, दास होने को तत्पर नहीं, और यह बात भी कैसी लचर और मिथ्या है कि यह शरीर ही मिट्टी में मिला, यही मनुष्य बनेगा ? जो कि इस संसार में नहीं है। कल्पना करो कि एक ज़ैद नामक व्यक्ति को मछलियों ने खा लिया, दरिन्दों ने खा लिया तो क्या खुदा उन सबके मल (विष्ठा) से उस व्यक्ति के शारीरिक तत्वों को एकत्रित करेगा ? और फिर वह मल भी तो मिट्टी होकर अपने-अपने तत्वों में विलीन हो जाती है। मिट्टी का तत्व मिट्टी में, जल का जल में और वायु का तत्व वायु में, तो यह सम्मिलित तत्व अपने तत्वों के समूह से पृथक कैसे हो सकते हैं ? कल्पना कीजिये की आपने एक कुंए के जल का एक लोटा भरा है, एक बाल्टी जल अन्य दूसरे कुएं का है। उन दोनों पृथक-पृथक कुओं के जल को आपने एकाकार कर दिया तो फिर वह पृथक-पृथक कुओं का जल कैसे पृथक हो सकता है ? यह असम्भव है !

मुसलमान जन इस असम्भव बात को कादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान्) की छाया में लाकर असत्य परिणाम निकालते हैं। आकाश कुसुमों की माला नहीं होती। बाँझ के पुत्र नहीं होता। किन्तु इन मुसलमानों का मन और मस्तिष्क एक व्यक्ति की दासता में ऐसा जकड़ा हुआ है वह कहते हैं वह स्त्री तीन काल बाँझ ही रहेगी किन्तु उसके पुत्र का विवाह भी हो जायेगा

यही बात वह लोग कहते थे, कि क़ब्र में मिट्टी हुआ और सड़ी गली हड्डियों से वही शरीर कैसे बन जायेगा ?

हमारा कथन है, कि ख़ुदा पूर्व शरीर से अति श्रेष्ठ शरीर चाहे जब बना ले किन्तु वह शरीर, जो कब्र में सड़-गल कर मिट्टी हो गया, या जल गया, या मछलियों या दरिन्दों द्वारा खा लिया गया हो, वह कैसे बन सकता है ? मुझे फ़िजी निवासी पण्डित श्री हरदयाल शर्मा ने बताया—कि जब हम आरम्भ में फ़िजी गये तो वहां के आदिवासियों ने सैकड़ों मनुष्यों को अपना आहार बना लिया। अब आदिवासियों द्वारा भक्ष्य मनुष्यों के शरीर तो उन आदिवासियों का मल (पाखाना) बन गया। मल बने हुए मनुष्य शरीरों के तत्वों को क्या ख़ुदा क़ब्रों में ढूंढता फिरेगा ? कैसी असम्भव बात है ! अतः यह कयामत (प्रलय) का ढकोसला भी मिथ्या और मनगढ़न्त गढ़ा गया है, इसमें कोई सत्य तथ्य नही है।

यह कुर्आन खुदा का कथन नहीं; मिथ्या है।

लोग कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद जो कुर्आन लाए हैं, वह:—

'इन हाज़ा इल्ला इफ़्फ़ुन निफ़्तराहो वा अआनहू अलैहे कौमुन आख़रून फ़कद जाऊ जुल्मव्वज़ूरा. वा कालू अला तीरूल अव्वली नक्तत्बहा फ़हिया तुमला अलैहे बुकरतव्वा असीला'

कुर्आन, पारा १८, रकू १।१६

अर्थात्—नहीं है यह कुर्आन, जो मुहम्मद हमारे पास लाये हैं, किन्तु उसने स्वयं ने मिथ्या बांध (गढ़) लिया है, और सहायता

दी है उसे वह मिथ्या बनाने पर एक और क़ौम ने, जैसे जबर और यसार, या अदास, या फ़कह रूमी, अर्थात् वह लोग अगली (पूर्व की) बातें हजरत मुहम्मद को कहते हैं, और वह अरबी भाषा में हमें सुनाता है, तो निस्सन्देह उस कौम के लोग अन्याय और अत्याचार पर उतर आये हैं। .... और वह कहते हैं—कुर्आन मिथ्या है, और एक क़ौम की सहायता से बनाया जाता है। वह शिर्क (अन्य ख़ुदा) और ज़ुल्म (अत्याचार) और बोहतान (आरोप लगाने) पर है, और कहते हैं, कि मुहम्मद, अरबी का कलाम (वचन) तो प्राचीन कहानियां है, जो पुस्तकों में लिखी हैं, उन्हें लिखवाता है। उसके सम्मुख लिखा हुआ पढ़ा जाता है, जिसे वह स्मरण (कंठस्थ) कर लेता है और हमारे सम्मुख पढ़कर कहता है कि वही (आयत) है।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ १३४

फिर क़ुरैश के सरदारों अबू जेहल, अतबा और आस आदि ने कहा कि यह मुहम्मद जादूगर है, या फिर इस पर जादू किया गया है। कहते हैं:—

'माले हाज़ारसूले याकुलुत्तोआमा वा यमशी फ़िल् अस्बाके लौ ला उन्ज़िला अलैहे मलकुन फ़यकुना मआहू नज़ीरा वा युल्का इलैहे कन्जुन औ तकूनो लहू जन्नतुंय्याकुलो मिनहा वा कालज़्ज़ालिमूना इन तत्तबेऊना इल्ला रजुलम्मसहूरा'

कुर्आन, पारा १८, रकू १।१३

अर्थात्–उसको क्या हो गया है, कि पैगम्बरी का दावा करता है ? लोगों की भांति भोजन करता है, और निर्वाह हेतु बाज़ारों में चलता फिरता है। यदि उसका दावा ठीक हो तो उसकी स्थिति अन्यान्यों से भिन्न होनी चाहिये.....।

वह बात हंसी उड़ाने वाले रूप में कही गई है, कि क्या हुआ है इसे ?

मुशरिक कहते थे, कि वह स्वयं फ़रिश्ता होता, अन्यथा उसकी ओर फ़रिश्ता क्यों न भेजा गया कि जो उसके साथ भयभीत करने वाला होता, या आसमान से उसकी ओर खजाना डाल दिया जाये ताकि उससे सन्तुष्ट होकर बाज़ारों में रोज़ी प्राप्त करने से मुस्तग़नी (मुक्त) हो जाये, या उसके लिये बाग़ (उद्यान) हो, कि वह उसके मेवे (फलादि) खाये और उसकी आय, उसकी रोटी का माध्यम बन जाये. और लोगों ने कहा-किन्तु तुम एक जादू किये हुए का अनुकरण क्यों करते हो जिसकी बुद्धि उस जादू से जाती रही है ।

तफसीर मावरदी में यह अर्थ है—तुम एक जादूगर की पैरवी (अनुशरणता) करते हो, जो कि तुमको बात में फुसला लेता है ।

तफ़सीर कादरी भाग २ पृष्ठ १३५

हज़रत मुहम्मद की साक्षी हेतु फ़रिश्ते क्यों नहीं उतरते ?

'लौ ला उन्ज़िला अलैनल मलाएकतो औनरा रब्बना' !

कुर्आन, पारा १९, रकू ३।१

अर्थात्–क्यों नहीं हम पर फ़रिश्ते उतारे गये । या हम अपने ख़ुदा को देखें ।

'लौ ला नुज़्ज़िला अलैहिल कुर्आनों जुलमतव्वा हिदतन'

कुर्आन, पारा १९, रकू ३ १

अर्थात्-हज़रत मुहम्मद पर एक साथ ही कुर्आन क्यों नहीं उतारा जाता सम्पूर्ण तौरेत और इंजील के सदृश्य ?

तफ़सीर कादरी–२, पृष्ठ १४०

यह समस्त आयतें कुर्आन में तथाकथित काफ़िरों की ओर से कही गई हैं । साथ ही उपरोक्त कथन कुर्आन, पारा २० रकू ३।१ में भी ऐसा ही आया है उन लोगों ने कहा कि मूसा की भांति मुहम्मद को चमत्कार क्यों नहीं दिया:—

'लौ ला ऊतिया मिस्ला मा ऊतिया मूसा,

कुर्आन, पारा २०, रकू ५ ८

अर्थात्–मूसा को असा (दंड) और हाथ का चमत्कार दिया गया उसके समान मुहम्मद अरबी को क्यों नहीं दिया गया ?

तफसीर कादरी, भाग २, पृष्ठ २००

कुछ लोगों ने कहा—हमें अरब से निकाल देंगे:—

'इन्नत्तबे इल् हुदा मअका नुतख़त्तफ़ मिन अर्जेना'

कुर्आन, पारा २०, रकू ६।९

अर्थात्--यदि हम तेरे साथ राहे हिदायत (शिक्षा के मार्ग) की पैरवी (अनुशरणता) करें तो अरब लोग हमें इस देश से निकाल देंगे ।

काफ़िर लोग कहते है, कि मुहम्मद मिथ्याभाषी है अथवा पागल है:—

'हल नदुल्लो कुम अला रजुलिय्यु नब्बेओ कुम इज़ा मुज़्ज़ेक़तुम कुल्ला मुमज़्ज़ेकिन इन्नकुम लफी ख़लिकनन जदीद, अफ़्तरा अलल्लाहेकजेबन अम बिही जिन्नत'

कुर्आन, पारा २२, रकू १७

अर्थात्:--हम क्या दलालत (युक्ति प्रयोग) करें. अर्थात बतायें तुमको उस मर्द पर जो समाचार तुमको देता है । अर्थात् हज़रत

मुहम्मद, जो कहता है–जब टुकड़े किये जायेंगे, अर्थात् जब समस्त अंग खड़-खंड़ किये हुए पृथक-पृथक हो जायेंगे, अर्थात् जब तुम्हारे शरीर पूर्णतः मिट्टी में मिल जायेंगे रेज़ा-रेज़ा (खड़ खंड़) हो जायेंगे निस्सन्देह तुम नई उत्पत्ति में होगे।

अर्थात्—पुनः नये ढंग से जीवित किये जाओगे। जो यह खबर (समाचार) देता है, उसने अल्लाह पर (या) जानबूझ कर झूठ बांध लिया, अथवा उसे पागलपन है, कि जो वस्तु नहीं जानता वह कहता है।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ २७७

क्यों मुसलमानो! यह आयतें भी कुर्आन की अन्य आयतों के समान है या नहीं? अथवा कुछ अन्तर है?

उन्होंने कहा:—

'लन्नोमेना बिहाज़ल कुर्आने वा ला बिलल्ज़ी बैना यदैहे'

कुर्आन, पारा २२, रकू ४/१०

अर्थात्--हम इस कुर्आन का विश्वास नहीं करते और न उस पुस्तक का भी, जो इसके पूर्व उतरी है।

तफ़सीर क़ादरी,-२-पृष्ठ २८४

वह कहते हैं--मुहम्मद हमें हमारे धर्म से विमुख करना चाहता है:—

'मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्यरीदो अंय्यसद्दो कुम अम्मा काना याबुदो आबाओकुम बा कालू मा हाज़ा इल्ला इफ्कुम्मुफतरन' (और कहते हैं हक् के हेतु) इन हाज़ा इल्ला सेहरूम्मुबीन'

कुर्आन, पारा २२, रकू ५/११

अर्थात्--यह कुर्आन (ख़ुदा की वाणी) नहीं है, जो यह व्यक्ति पढ़ता है, अर्थात् हज़रत मुहम्मद, किन्तु एक पुरुष है, कि चाहता है यह कि तुमको उस वस्तु से [illegible] जिसे सदा से तुम्हारे पूर्वज पूजते थे .....और जो नया आईन (मार्ग) उसने बनाया है, उस पर लाये और लोगों को अपना ताबिआ (आधीन) बनाये .....और यह कलाम (वाणी) नहीं है, जो वह पढ़ता है अर्थात कुर्आन, किन्तु झूठ बाँधा (गढ़ा) हुआ है और ख़ुदा की ओर उसे मनसूब (प्रस्तुत) किया गया है। अर्थात् ख़ुदा का नाम असत्य लिया गया है, और मक्का के काफ़िर कहते है कि यह (कुर्आन) नहीं है, किन्तु स्पष्ट जादू।

तफ़सीर क़ादरी-२ पृष्ठ २८६

मक्का के सुशिक्षित जन तो पुकार-पुकार कर स्पष्ट रूप से हज़रत मुहम्मद को झूठा और ख़ुदा का असत्य नाम लेकर स्वयं ही आयतें बनाता है, ऐसा कह रहे हैं किन्तु हमारा यहां यह विषय नहीं है। हमारा अभिप्राय तो मात्र यह है कि समस्त लोग यह देख लें कि कुर्आन का यह दावा कितना मिथ्या है कि कुर्आन की आयतके समान आयत लाओ, जब कि स्वयं कुर्आन में ही दूसरों की सैकड़ों आयतें उपस्थित हैं।

काफ़िर लोग उपहास से कहते हैं, कि मुहताजों (निस्सहाय) को भोजन देना ईश्वर-इच्छा विरुद्ध है:—

'अनुतइमो मल्लौ यशा उल्लाहो अतअमहू'

कुर्आन, पारा २३, रकू ३।२

अर्थात्—हम उनको भोजन क्यों दें ? अर्थात् उसे नहीं देंगे यदि ख़ुदा चाहता तो उनको खाना देता। अर्थात तुम्हारे (मुसल-

मानों के) गुमान (निश्चय) में खुदा खलक (संसार) को रिज़क (धन-खाद्यान्न) पहुंचाने पर कादिर (शक्ति सम्पन्न) है, तो उसे चाहिये कि उनको भोजन देता । जब असी (खुदा) ने नहीं दिया तो हम क्यों दें ? और काफ़िरों ने मोमिनों से कहा—नहीं हो तुम ऐ मोमिनों ! किन्तु हमको खुदा की मशिय्यत (इच्छा) के विरूद्ध स्पष्ट गुमराही करने की आज्ञा देते हो ।

तफ़सीर कादरी··२, पृष्ठ ३०७

वे कहते हैं :—

'आ इन्ना लितारेकू आले हतेना लिशाएरिन मजनून

कुर्आन, पारा २३, रकू २।६

अर्थात्—हम अपने देवताओं की भक्ति को एक शायर (कवि) दीवाना (पागल) के हेतु छोड़ने वाले नही ।

क़यामत के दिन नर्क में प्रवेश होते समय इनकी परस्पर लम्बी बातें हैं । स्पष्ट यह है कि कौम के धनवान् और निर्धन आपस में एक-दूसरे को फटकारेंगे और कहेंगे एक-दूसरे से, तुमने हमें पथभ्रष्ट किया । इत्यादि

कुर्आन पारा २३, रकू २।६

यह झूठा जादूगर है

काफ़िर कहते है :—

'हाज़ा साहिरुन कज़्ज़ाब, अजअलल आलेहता इलाहंव्वाहेदन इन्ना हाज़ा लशंउन उजाब, वन्तलकल मलओ मिन्हुम अनिम्शू

वस्बेरु अला आले हतेकुम इन्ना हाज़ा लशैउंय्युराद, मा समेना बिहाज़ा फिल्मिललतिल आखेरते इन हाज़ा इल्लखतेलाक'

कुर्आन, पारा २३, रकू १।१०

अर्थात्—यह (हज़रत मुहम्मद) भयभीत करने वाला जादूगर है.... ..... झूठा है दावा नबव्वत (पैग़म्बरी) में, अथवा कुर्आन खुदा की ओर से आया बताने में ।

आगे लिखा है, कि जब हज़रत हमज़ा और हज़रत उमर मुसलमान हो गये, तब कुरैश हज़रत के चचा अबू तालिब के पास आये और कहने लगे कि तुम अपने भतीजे से हमारा निर्णय कर दो, कि वह हमारी कौम के एक-एक मूर्ख को अपने दीन (धर्म) में ले जा रहा है और हम में फूट डाल रहा है । इत्यादि

मुहम्मद ने हमारे खुदाओं को क्या एक कर दिया ? और यह एक खुदा का होना भी विचित्र वस्तु है । .....और कौम के प्रमुख व्यक्ति शीघ्रता से अबू तालिब के घर में चले गये; यह कहते हुए एक-दूसरे से कि चलो और संतोष करो अपने देवताओं को पूजने में । यह मुहम्मद का विरोध हमारे साथ कालचक्र की गति है, यह होकर रहेगा ।.... हमने नहीं सुना कि जो मुहम्मद खुदा का एक होना कहते हैं; प्रथम दीन (धर्म) मे, हमने जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है । ईसा का दीन भी तीन खुदा मानता है । यह तौहीद (एक खुदा का होना) नहीं है, जो मुहम्मद कहते हैं, किन्तु अपनी ओर से बना लेना है ।

तफ़सीर कादरी २, पृष्ठ ३२८

हमारे हेतु शीघ्र अज़ाब [कष्ट] ला

वह कहते है :—

'रब्बना अज्जिल्लना कित्तना कब्ला यौमिल हिसाब'

कुर्आन, पारा २३, रकू २।११

अर्थात्-(कुरैश के साथी नज़र बिन हारस आदि कहते हैं) ऐ हमारे ईश्वर ! हमें शीघ्र अज़ाब (कष्ट) दे, जिसके नाम से हमको मुहम्मद धमकाता है; अथवा शीघ्र दे हमें हमारा कर्मपत्र कि उसमें हम देखें हिसाब के दिन से पूर्व ।

वह कहते हैं, कि हम बुत (मूर्ति) पूजा इस हेतु से करते हैं:—

'मा नाबुदो हुम इल्ला लियुकर्रेबूना इलल्लाहे ज़ुलका'

कुर्आन पारा २५, रकू ३/९

अर्थात्-हम मूर्तिपूजा इसलिये करते हैं कि वह हमको खुदा के समीप करें ।

खुदा की ओर से कुर्आन होता तो किसी प्रमुख अथवा प्रतिष्ठित व्यक्ति पर उतरना वह कहते है :—

'लौ ला नुज्जेला हाज़ल्कुर्आनो अला रजो लिम्यनिल्कर्य तैने अजीम' कुर्आन, पारा ३५, रकू ३।९

अर्थात्-यदि कुर्आन खुदा की ओर से है, तो इन दोनों नगरों मक्का व ताइफ़ के किसी प्रतिष्ठित धनी एवं उच्च पद-प्राप्त पर क्यों नहीं उतारा गया ?

इस आयत के ऊपर यह आयत है:—

'हाजा सेहरून वा इन्ना विही काफ़ेरून'

अर्थात्–और निस्सन्देह, हम इसके साथ काफ़िर हैं और विश्वास नहीं करते कि यह (कुर्आन) खुदा की ओर से उतारा है।

तफ़सीर कादरी, २, पृष्ठ ४०३

—यदि हम उठाये जायेंगे, तो प्रथम हमारे पूर्वजों को लाओ--वह कहते है:—

'इन हिया इल्ला मौततुनल ऊला वा मा नहनो बिमुन्शरीन ० फ़ातु बिआबाएना इन कुन्तुम सादेकीन्'

कुर्आन, पारा २५, रकू १५

अर्थात्-संसार में कोई प्रथम मृत्यु हमारी नहीं जो परिणामदायक होगी और इसके पश्चात् जीवन नहीं है; और हम न जीवित किये हुए हैं, और न मृत्यु के पश्चात् ही उठाये हुए। यदि तुम सत्यवादी हो तो हमारे पूर्वजों को लाओ ० हम मरते हैं, और जीवित होते हैं।

उन्होंने कहा :—

'मा हिया इल्ला हयातु नद्दन्या नमूतो वा नहया वा मा युहिलिकुना इल्लद्दहर'

अर्थात्--यह जीवन नहीं है, किन्तु सांसारिक जीवन जो हमें प्राप्त है। हम मरते हैं और जीवित होते हैं, अर्थात् हमारी रूह (आत्मा) दूसरे शरीर मे प्रवेश करती हैं। और उसके गुमान

में जो शाकमूर पैग़म्बर था। उसने जो कहा वह उद्धरण है कि मैंने स्वयं को १७ सौ योनियों में देखा है।

कहते हैं, कि हमको नहीं मारता है, किन्तु ज़माना (काल) गुज़रना और पुराना हो जाना तथा बुढ़ापा (आना) इत्यादि।

तफ़सीर कादरी २, पृष्ठ ४२३

हम (लेखक) कहते हैं, कि आपके फ़रीद्दीन ने क्या नहीं कहा:—**हप्त सद हप्ताद कालिब दीदा अम्, मिस्ले सब्ज़ा बारहा रोईदा अम्'**

अर्थात्-मैंने ७ सौ ७० कालिब (योनियां) देखे है और सब्ज़ा के समान अनेक बार उगा (उत्पन्न हुआ हुँ) (लेखक)
जो आयतें बारम्बार विभिन्न स्थानों पर दोहराई गई है, वह नहीं लिखी है।

वलीद का कलाम

वलीद ने कहा:—

'इन्न हाज़ा इल्ला सेहरुंय्योसरो, इन हाज़ा इल्ला कौलुल्बशर'

कुर्आन पारा २९ रकू

अर्थात्-जो मुहम्मद कहते हैं, यह (क़ुर्आन) नहीं है किन्तु, जादू की तालीम (शिक्षा) किया जाता है, यह (क़ुर्आन) शायरों (कवियों) से, नहीं है किन्तु पाबी, अवा, फ़क़ीह और जबर तथा यसार आदि मनुष्यों का कथन है।

तफ़सीर क़ादरी २ पृष्ठ ५८९

मक्का वालों का कलाम

मक्का वाले कहते हैं:—

'रब्बना अख़्रिजना मिन हाज़िहिल्कर्यतिज्ज़ालिमे अहलुहा, वज्अल्लना मिल्लदुनका वलिय्यंव्वज्अल्लना मिल्लदुनका नसीरा'

कुर्आन, पारा ५ रकू १०।७

अर्थात्–ऐ हमारे ईश्वर। हमको इस बस्ती (मक्का) से निकाल, जिसके निवासी अत्याचारी हैं, और हमारे ग़ैब (अप्रत्यक्ष) से कोई मित्र खड़ा कर दे अर्थात् सहायक या रक्षक बतादे, जो मुशरिकों से हमारी रक्षा करें।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ३. पृष्ठ १६९

मुसलमानों का कलाम

मुसलमान कहते हैं:—

'रब्बवा लिमा कतब्त अलै नल्कताल। लौ ला अख़्ख़रतना इला अजलिन करीब' कुर्आन, पारा ५, रकू ११।८

अर्थात्–ऐ हमारे ईश्वर ! तूने हम पर धर्मयुद्ध (जहाद) क्यों कर्तव्य (फ़र्ज़) कर दिया। हमको किंचित् मुद्दत और मोहलत (अवधि) दे दी होती।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ३, पृष्ठ १७२

साधारण मुसलमानों की अरबी भाषा भी देखिये ! कुर्आन की अरबी भाषा के सदृश्य ही है,

नजाशी का कलाम

हब्श में नजाशी के दरबार में हज़रत ज़ाफर ने आयत पढ़ कर सुनाई। जब तक आप आयत पढ़ते रहे, तब तक वह (नजाशी) रोते रहे और उन्होंने कहा:—

'रब्बना आमन्ना फक्तुब्ना मअश्शाहेदीन'

कुर्आन, पारा ७, रकू ११।१

अर्थात्--ऐ हमारे ईश्वर ! मान लिया (हमने तेरे रसूल मुहम्मद को और तूने उस पर पुस्तक (कुर्आन) उतारी है) तो हमको भी उन्हीं लोगों के साथ लिख ले जो समर्थन करने वाले हैं।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ४, पृष्ठ १८

जब ऐसा हुआ, तो अहले हब्शाने (हब्शा के लोगों ने) नजाशी से कहा--तू उस व्यक्ति पर ईमान (विश्वास) लाया, जिसे तूने देखा तक नहीं,

तफ़सीर क़ादरी १, पृष्ठ १४०

तो नजाशी ने कहा:—

'वा मा लना ला नोमिनो बिल्लाहे वा मा जाअना मिनल्हक्के वा न तमओ अंय्युद खिलना रब्बना अमल कौमिस्सालिहीन'

कुर्आन, पारा ७ रकू १।१

अर्थात्—और क्या कारण है, कि हम अल्लाह पर और उस हक़ (सत्य) पर जो हमारे पास आ गया है, विश्वास न करें और इस बात की आशा न करें कि हमारा ईश्वर हमको नेक लोगों के समूह में सम्मिलित कर दे।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ४, पृष्ठ १८

हम मुसलमानों से पूछते हैं, कि क्या सममुच ही नजाशी ने ऐसा (उपरोक्त) वचन कहा था अथवा और अन्य आयतों के समान हज़रत मुहम्मद ने स्वयं ही यह आयत नजाशी के नाम से कुर्आन में सम्मिलित कर दी । अस्तु

वास्तविकता कुछ भी हो, हमारे सम्मुख तो कुर्आन में नजाशी का यह कथन आया है । हमें तो नजाशी का ही मानना पड़ेगा और ऐसी स्थिति में मुसलमान कुर्आन के समान आयत अन्यत्र (बाहर) क्यों ढून्ढ रहे है ? कुर्आन के पृष्ठों में ही सदृश आयतें क्यों नहीं मान लेते हैं । अस्तु

यथार्थता कुछ भी हो, हज़रत मुहम्मद ने कुर्आन में कैसे भी लिखा हो किन्तु कथन [कलाम] तो नजाशी का ही है ।

अब आपके मनोरंजन हेतु एक कथा लिख रहा हूं, यद्यपि वह ईसा के शिष्यों की है किन्तु कुर्आन में उसका उल्लेख है और परस्पर वार्तालाप है वह कुर्आन में उपस्थित है और वह भी आयतों के रूप में । इस हेतु मेरे विषय से सम्बन्धित होने के फलस्वरूप लिख रहा हूं ।

ईसा के शिष्यों के चमत्कार

और

हबीब नज्जार की विचित्र कथा

यह कथा कुर्आन की निम्नलिखित आयत से प्रसारित हैं । आयत :—

'वज़रिब लहुम्मसलन असहाबल्क़र्याते इज़ जा आ हल्मुर्सलून'

कुर्आन, पारा २२, रकू अन्तिम

अर्थात्-ऐ मुहम्मद ! मक्का निवासियों के लिये इन्ताकिया की कहानी बयान करो । जब उस गांव में भेजे हुए गये ।
हम इस कथा का संक्षिप्तिकरण तफ़सीर कादरी से लिख रहे हैं । लिखा है—

हज़रत ईसा के आसमान पर उठ जाने के पूर्व शमऊन-रसफ़ा के साथ दो हवारियो ने जिनके नाम यहया और तूमान अथवा नारूस व मारूस है, को इन्ताकिया की ओर इस हेतु भेजा कि वह वहां की जनता को खुदा की ओर बुलायें ।

जब यह नगर के समीप पहूंचे तो एक वृद्ध व्यक्ति बकरियां चराते हुए इन्हें मिला । वृद्ध के पूछने पर इन लोगों ने कहा—हम हज़रत ईसा के भेजे हुए हैं, लोगों को भटके मार्ग (गुमराही) से निकाल कर हिदायत (सन्मार्ग) की ओर लाते हैं। यह सुन कर वृद्ध ने कहा—आप अपने दावे के हेतु कोई उदाहरण भी रखते हो ? उन्होंने उत्तर दिया-हां, हम रोगियों को स्वस्थ करते हैं कोढ़ियों और अंधों को उचित स्थिति पर ले आते हैं। चरवाहे ने कहा-वर्षो बीत गये, मेरा पुत्र रोगग्रस्त है, और हकीम (वैद्य) उसके उपचार से हार चुके हैं। यदि तुम उसको ठीक कर दो, तो मैं तुम्हारे खुदा पर विश्वास करूंगा। उन्होंने दुआ (प्रार्थना) की फलस्वरूप उसका पुत्र स्वस्थ हो गया। तब वह वृद्ध जिसका नाम हबीब नज्जार (सुथार) था अथवा उस यासीन भी कहते हैं । ईमान ल आया ।

(आगे तफसरी कादरी का व्याख्याकार लिखता है—हमारे रसूले अकरम के ज़माने में यह ६०० वर्ष पूर्व ईमान (विश्वास) लाया था । (किस पर हज़रत मुहम्मद अथवा ईसा पर ? द्विअर्थी बात लिख दी है)

इन दोनो के समाचार इन्ताकिया में फैल गये, उन्होंने अधिक लोगों को अच्छा किया। बादशाह जिसका नाम इन्तखीश था, उस तक भी समाचार पहूँचा कि यह लोग मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं। उसने उनको कारागृह में पहुंचा दिया (किन्तु तफ़सीर सिराजे मुनीर में बेद (कोड़े) मारना भी लिखा है, इसी भांति रसूलों के ऐमाल, बाब १६, आयत २३ पृष्ठ १५६ में बेद (कोड़े) मार कर क़ैद करना तथा इनके नाम पोनिस और सैलास लिखे है।)

और शमऊन उनके पश्चात् आये। शमऊन ने बादशाह के साथ मित्रता और प्रेम गाँठना प्रारम्भ कर दिया और विशेष निकटस्थ बन गया।

कुर्आन में इस कथा का समाचार इस प्रकार दिया है—

'इज़ अर्सलना इलैहे मुस्नैने फ़क्क ज़ज़बूहुमा फ़अज़्ज़ज़ना बिसालेसिन फकालू इन्ना अलैकुम्मुर्सलून'

कुर्आन, पारा २२, रकू अन्तिम

अर्थात्--स्मरण कर। जब हमने इन्ताकिया के लोगों की ओर दो पैगम्बर भेजे अर्थात् ईसा और शमऊन ने हमारी आज्ञा से दो हवारी भेजे और गांव वालों ने उन दोनों को झुठलाया और कैद में डाल दिया। फिर हमने उन दोनों को शक्ति दी, तीसरे के भेजने के कारण से।

और ठीक यह है कि वह तीसरा शमऊन है। किसी ने शमआन, सलूम औरयूनिस भी कहा है। उन भेजे गये हुओं ने इन्ताकिया वासियों से कहा—हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं। उस नगर के लोगों ने कहा तुम हमारे समान मनुष्य हो, फिर तुमको

पैग़म्बरी सहित विशेष क्यों किया ? और अल्लाह ने किसी को पैग़म्बरी देकर नहीं भेजा।

मा अन्ज़लर्रहमानो मिन शैइन इन अन्तुम इल्ला तक्ज़ेबून। क़ालू रब्बना यालमो इन्ना इलैकुम लमुर्सलून वा मा अलैना इल्लल बलाग़ुल्मुबीन'

कुर्आन, पारा २२, रकू अन्तिम

अर्थात्—(कुछ अनुवाद उपरोक्त है) भेजे हुओं ने कहा हमारा ईश्वर जानता है, कि निस्सन्देह, हम तुम्हारी और पहूँचाये गये है, और हम पर पहूंचाया जाना स्पष्ट है, किन्तु ..... हमने पहूंचा दिया। यदि हमारा दीन (धर्म) नहीं स्वीकारोगे तो तुम पर अज़ाब (दुःख कठोर) होगा। फिर नगरवासियों ने कहा:—

कालू इन्ना ततय्यर्ना बिकुम ल इल्लम तन्तहू लनर्जुमन्नकुम व लयमस्सन्नकुम्मिन्ना अज़ाबुन अलीम, कालू ताइरूकुम्मआ कुम आइन जुक्किर्तुम, बल अन्तुम कौमुम्म सरेफून'

कुर्आन, पारा २२, रकू अन्तिम

अर्थात्-हमने तुम्हारे आगमन से अपशकुन देखा है, कि जब से तुम इस नगर में आये हो, वर्षा नहीं हुई और हमारी समस्त फसलें सूख गई हैं। यदि तुम अपने दावे से बाज़ (हट) न आओगे तो हम तुमको अवश्य ही पत्थरों से मार डालेंगे और हम से तुमको अवश्य ही बहुत (कष्ट) पहुंचेगा।

उन दूतों ने नगरवासियों से कहा—अपशकुन ! तुम्हारे असत्य विचारों और बुरे कर्मों के फलस्वरूप है। क्या तुम नसीहत (शिक्षा) दिये जाने पर अपशकुन लेते हो और मार डालने की धमकी देते हो ? तुम सीमा से आगे बढ़े हुओं का समुह हो।

यहाँ तक ही नहीं, एमान में है, कि यूनिस को पत्थरों से मार डाला और बाहिर फेंक आये किन्तु वह पुनः उठ खड़ा हुआ। एमाल १४-१६

यह लिखा जा चुका है, कि शमऊन ने बादशाह से मित्रता गाँठ ली थी। तब (एक दिन) शमऊन बादशाह के साथ बुतखाने (मूर्तिगृह) में आये और हकतआला (खुदा) को सिजदा (नतमस्तक होना) किया (व्याख्याकार की कल्पना देखिये, यहां बुत्तखाने में खुदा कहाँ था। यहां तो बुत्त (मूर्ति) थे) इससे बादशाह परम प्रसन्न हुआ और उस पर अत विश्वास करने लगा। (स्पष्ट अर्थ है कि शमऊन ने मूर्ति को माथा नमाया) और बादशाह उसके बिना परामर्श के किसी बात को नहीं करता था। एक दिन शमऊन ने बादशाह से कहा-बादशाह सलामत ! मैंने सुना है कि आपने दो यात्री बन्दी बना रखे हैं क्या कारण है ? बादशाह ने कहा—वह दावा करते हैं, कि तुम्हारी मूर्तियों के अतिरिक्त और भी खुदा है। शमऊन ने विस्मित होकर कहा-आज्ञा दीजिये, तनिक उनको उपस्थित तो किया जाए क्योंकि वह तो आश्चर्यजनक बात कहते हैं अन्ततोगत्वा बादशाह की आज्ञा से वह दोनों बन्दी उपस्थित किये गये। शमऊन को देख कर वह प्रसन्न हो गये। शमऊन ने उनसे पूछा—तुम किसकी भक्ति करते हो ? वे बोले—हम उसकी भक्ति करते हैं, जिसने धरती-आकाश उत्पन्न किये। शमऊन बोला—तुम्हारा खुदा क्या करता है ? वे बोले—अधों को आँखें देता है। तब बादशाह ने, शमऊन के कहने से, कई अधे उपस्थित करा दिये। शमऊन ने, उन दोनों से कहा—भला अपने खुदा से कहो, कि इन अधों को आंखों वाला कर दे। उन दोनों ने प्रार्थना की, पस, वह तत्काल

आंखों वाले हो गये। शमऊन बोले—बादशाह सलामत ! हम भी अपने ख़ुदाओं से प्रार्थना करें कि वे भी यह कार्य कर दिखायें। बादशाह ने चुपके से कहा-शमऊन ! तुम नहीं जानते, कि यह ख़ुदा न देखते हैं, न सुनते हैं और न किसी वस्तु पर क़ुदरत (शक्ति) ही रखते हैं। पुनः शमऊन ने कहा-ऐ युवकों ! तुम्हारा ख़ुदा और क्या कर सकता है। मृतकको जीवित भी कर सकता है, इस पर शमऊन ने कहा-यदि तुम्हारा ख़ुदा यह कार्य करता हैं, तो हम सब उस पर ईमान (विश्वास) लाते हैं। तब एक बादशाह को, जिसे मरे हुए मुद्दत गुज़र चुकी थी अथवा सात दिन से मरे हुए किसी शव को मंगाया और उन्होंने प्रार्थना कर जीवित कर दिया। बस (फिर क्या था) बादशाह, समस्त कौम सहित उसी समय ईमान ले आया।

(अभी नाटक का किंचित् दृश्य और भी है, उसे भी देखिये)

और कुछ लोगों ने मोमिनों को दुःख देने और कत्ल करने का कसद (प्रयत्न) किया। यह सुन कर हबीब सुथार उस ओर आकृष्ट हुआ :—

'वा जाआ मिन अक्सल्लमदीनते रजुलुंय्यस्आ काला या कौमि-त्तबेउल्मुर्सलीन्त्तबेऊ मंल्ला यस्अलोकुम अज्रव्वा हुम्महतदून'

कुर्आन, पारा २२, रकू अन्तिम

(मूर्दों को जीवित करने का उल्लेख ऐमाल, बाब २० आयत १०, ११ व १२ में हैं।)

अर्थात्—और नगर के दूसरे छोर से दौड़ता हुआ एक मनुष्य आया और बोला—ऐ मेरी कौम !इन भेजे हुओं का समर्थन करो जो बदले में कुछ नहीं मांगते और यह भलाई का मार्ग प्राप्त किये है,

फिर हबीब ने कहा—क्या है, सच्चाई की रो (अनुसार) से उसकी भक्ति नहीं करते, जिसने उत्पन्न किया ? और यह बुत्त (मूर्ति) तुमको कुछ नहीं दे सकते, न इनकी सिफ़ारिश काम आयेगी। जब काफ़िरों ने हबीब सुथार की यह बात सुनी, तो उन्हें कत्ल करने का यत्न किया तो वह पैग़म्बर की ओर ध्यान कर के बोला :—

तो तुम मेरा विश्वास सुनो ! ताकि कल क़यामत के दिन मेरे विश्वास की साक्षी दो।

और क़ौम के लोग उन्हें पत्थर मारने लगे। यहां तक कि वह मर गया, और इन्ताकिया के बाज़ार में उसकी कब्र है।

एक और कथन है, कि लोगों ने उसको मार डाला और ख़ुदा ने उसे पुनः जीवित कर स्वर्ग में पहुँचा दिया :—

'कीलदख़ुलिल जन्नता काला यालैना कौमी यालमून, बिमागफर ली रब्बी वा जअलनी मिनल्मुकरमान'

कुर्आन पारा २३, रकू १

अर्थात्--जब वह प्रवेश कर स्वर्ग में पहुँचे, तो बोले--काश ! मेरी क़ौम के लोग वह वस्तु जानते जिसके कारण मेरे ईश्वर ने मुझको क्षमा कर दिया ओर उन लोगों में प्रतिष्ठा सहित सम्मिलित कर दिया, जो श्रेष्ठ किये गये हैं।

नफसीर क़ादरी भाग २, पृष्ठ ३०२ से ३०४

अब यह नाटक समाप्त हुआ। अस्तु, हमें इस मिथ्यावाद पर कुछ नहीं कहना है। हमें तो यह दिखाना है, कि इस विस्तृत कथा में रसूलों, शमऊन, बादशाह, हबीब सुथार और इन्ताकिया,

नगर के निवासियों के कलाम हैं। क्या इन कलामों की अरबी और कुर्आन की अन्य आयतों की अरबी में आपको तनिक भी अन्तर दिखाई देता है ?

इस कथा में आपने देख लिया, कि किस प्रकार बाईबिल के एक प्रसंग को लेकर और कुछ इधर-उधर से जोड़कर कुर-आन बनाया जा रहा है। हज़रत मुहम्मद के समकालीन व्यक्तियों के कथन जो कुर्आन में उपस्थित है, वह हमने लिखे हैं। इसके अतिरिक्त प्राचीन कथाएं, जो कि सार्वजनिक रूप से लोगों ने हज़रत मुहम्मद के सम्मुख कहीं और वे ज्यों की त्यों ही कुर्आन में आयतों के रूप में उपस्थित हैं। ऐसी स्थिति में भी मुसलमान जन यह रट लगाये ही चले जा रहे है, कि आयत के समान आयत लाओ ! हमने एक आयत ही नहीं, अनेक आयतें प्रस्तुत की और यह भी कहा कि वही (फ़रिश्ता) का गतिक्रम अभीतक चल रहा है।

इस उपरोक्त भाग के वर्णन से आप यह भलीभांति जान गये हैं कि हज़रत मुहम्मद और कुर्आन के विषय में समकालीन विद्वानों और बुद्धिजीवियों के कैसे विचार थे।

कुर्आन में शैतान का कलाम

हमने पूर्व विभिन्न लोगों के कथनों को कुर्आन से लिखा हैं, अब इस प्रकरण में हम शैतान के कथन को, जो कुर्आन में है, लिख रहे हैं।

हम पूर्व में लिख चुके हैं कि कुर्आन में प्रकरण और तारतम्य का किंचित् भी ध्यान नहीं रखा गया, परिणामस्वरूप

कुर्आन में क्रमान्तर और परस्पर मतभेद और विरोधाभास उत्पन्न हो गये हैं। ऐसी बहुत सी कथाएं कुर्आन में बारम्बार अधूरी वर्णित हैं।

इसी प्रकार की कथाओं में से एक शैतान की भी कथा है, हम आगे के पृष्ठों में बतायेंगे कि बारम्बार लिखने से परस्पर कितना विरोधाभास प्रकट होता है। इसमें जहां आप शैतान का कथन कुर्आन में देखेंगे वहाँ शब्दों और अर्थों में गभीर मत-भेद भी पायेंगे।

मुसलमान यह बात निर्विवाद मानते हैं कि शैतान और खुदा के मध्य वाद-विवाद आदम के सजदा (नतमस्तक) न करने के समय केवल एक बार ही हुआ किन्तु इस कथा को बारम्बार कुर्आन में दोहराने के फलस्वरूप अत्यधिक मतभेद और परस्पर विरोध आ गया और कहीं कुछ व कहीं कुछ लिखा गया।

शैतान और खुदा के विवाद को लिखने से पूर्व आप शैतान की शक्ति का परिचय प्राप्त कर लें और यह अनुमान लगा लें कि शैतान अपने उद्देश्य में कहां तक सफल रहा व उसे कितनी सफलता मिली।

शैतान ने कहा :—

व काला ल उत्तखेज़न्ना मिन इबादेका नसीबन्मफरू ज़ व्वलओ हुम वल उमन्ने यन्नहुम वल आमुरन्नहुम फल्यो बत्तेकुन्ना आज़ानल्अनआमे वल आमुरन्न हुम फ़ल युग़य्यरुन्ना खल्कल्लाहे।

कुर्आन पारा ५, रकू १८।१५

अर्थात्–शैतान ने कहा (खुदा से) कि शपथ है तेरी प्रतिष्ठा और जलाल की, जब तक बनी आदम में जीवन रहेगा, उस समय तक मैं बराबर उनको बहकाता रहूंगा।

तफ़सीर मज़हरी, पा. १८ पृ. २७७-२७८

उक्त आयत के सम्बन्ध में इसी प्रकार की व्याख्या तफ़सीर हक़्क़ानी पारा ५ पृष्ठ ३५–३६, तफ़सीर क़ादरी पृष्ठ १९३ और सहीह हदीस में भी की गई है। अगली आयत का भी यही अर्थ है।

(शैतान ने कहा) कि मैं तेरे भक्तों में से अपना निश्चित भाग (बहकाने व गुमराह हेतु) अवश्य लूंगा।

(भाग क्या है ?)

हसन के कथनानुसार प्रति हजार में से ९९९ नर्क को और शेष मात्र एक स्वर्ग को जायेगा।

हदीस वोसन्नार में आया है—और अवश्य ही सत्य मार्ग से उनको भटकाऊँगा अर्थात् उनके मनो में भ्रम डालूँगा और मन की इच्छा को सुन्दर ढंग से उनके सम्मुख लाऊँगा।
(व्याख्याकार क्या कहता है उसे निम्न पंक्तियों में ध्यान से देखें)

अपराध करने हेतु शैतान तो निमित्त है, वास्तव में गुमराह करने वाला और हिदायत देने वाला अल्लाह ही है। शैतान तो गुमराही का मात्र एक साधन है।

हज़रत अबू हुरैरा से रवायत है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि शैतान तुम्हें खुदा के विषय में बहकायेगा तो तुम्हें अल्लाह की शरण मांगनी चाहिये। –बुख़ारी व मुस्लिम

बुख़ारी व मुस्लिम ने रवायत की है कि शैतान कहता है, कि - मैं निश्चय उनको मिथ्या आशाएँ दिलाऊँगा (हज़रत अस ने कहा कि—रसूलिल्लाह ने कहा कि मनुष्य के अंदर जहाँ रक्त दौड़ता है, वहा शैतान दौड़ता है) और मैं उनको पढ़ ऊँगा कि वह चौपायों के कान काटा करेंगे और निश्चय मैं उनको आज्ञा दूँगा तो वह अल्लाह की बनावट को बदल डालेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा ने कहा कि—रसूलिल्लाह ने कहा है कि हर बच्चा फितरते (स्वभाव) इस्लाम पर उत्पन्न होता हैं, फिर उसके माता पिता उसको यहूदी, ईसाई या मजूसी बना देते हैं। तफ़सीर मज़हरी, पृष्ठ २७७ से २७९

उपरोक्त व्याख्या से आपको स्पष्ट ज्ञात हो गया है कि मनुष्यों में कितना भाग शैतान का और कितना भाग ख़ुदा का है। व्याख्याकार के अनुसार तो शैतान निमित्त मात्र ही है, वास्तव में तो ख़ुदा ही गुमराह (पथभ्रष्ट) करता है। इस दृष्टि से तो शैतान, ख़ुदा का एक आज्ञाकारी सेवक है और ख़ुदा के उद्देश्य को पूर्ण करने वाला है। क्या कहें, ऐसे ख़ुदा से बंदो को वह मालिके हक़ीक़ी (संसार का स्वामी) ही बचाये।

अब मुसलमान शैतान की अरबी भाषा भी देख लें कि कैसी फ़सीह और उत्तम अरबी है। यदि मुसलमान यह कहें कि अरबी तो ख़ुदा की है शैतान का कथन अवश्य है। हम पूर्व में लिख चुके हैं कि आसमान पर फ़रिश्ते अरबी बोलते हैं। और यह कैसे हो सकता है कि शैतान अरबी न जानें।

यदि मुसलमान इस बात को न मानें तो वे इस बात के लिये प्रमाण प्रस्तुत करें कि शैतान नें किस भाषा में उपरोक्त

आयतें कही थीं। ख़ुदाने जिनका अनुवाद अरबी में कर कुर्आन के लिये भेजा। यदि इसका प्रमाण मुसलमानों के पास नहीं है तो मानना होगा कि यह अरबी शैतान की ही है।

जब ख़ुदा ने आदम का निर्माण कर लिया, तब फ़रिश्तों को कहा कि आदम को सजदा (प्रणाम) करो:—

तो फ़सजदा इल्ला इब्लीस अबाबस्तकबरा वा काना मिनल काफ़ेरीन. कुर्आन, पारा १ रकू ४।४

अर्थात्–पस, सिवाय शैतान के सबने सजदा किया। शैतान बड़ा बना और तकब्बर (घमण्ड) किया और काफ़िर हो गया। वह अल्लाह के इल्म (ज्ञान) में पूर्व से ही काफिर था।

तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ ९४

जब शैतान ने सजदा न किया तो ख़ुदा शैतान से पूछता है कि—

'काला मा मनअका अल्ला तस्जुदा इज़ अमर्तुका'

ख़ुदा ने शैतान से कहा–जब मैंने तुमको आदेश दे दिया (कि सजदा करो) तो सजदा न करने का कौनसा कारण है ? शैतान ने उत्तर दिया कि —

'काला अना ख़ैरूम्मिन्नहो खलक्तनी मिन्नारिव्वां खलक्तहु मिन तीन' कुर्आन पारा ८ रकू–२।९

अर्थात्–मैं उत्तम हूं उस (आदम) से कि उत्पन्न किया तूने मुझे आग से और बनाया उस (आदम) को मिट्टी से। आग से तात्पर्य

है ऊपर को उठने वाला नूरानी जौहर (ज्योति अंश) और मिट्टी अर्थात् नीचे गिरने वाली अंधकारयुक्त वस्तु से है।

शैतान ने यहाँ पर शरीयत (धर्मशास्त्र) की आज्ञा के सम्मुख अपने क़यास (विचार) से काम लिया।

इब्ने अब्बास ने कहा—जो व्यक्ति दीन को विचारों पर कसता और अपनी सम्मति प्रकट करता है, उसको अल्लाह शैतान का जोड़ीदार बना देता है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ८, पृष्ठ २७५ २७६

इस पर ख़ुदा ने कहा:—

काला फ़हवित मिन्हा फ़मा यकूनो लका अन ततकब्बरा फ़ीहा फ़खरूज इन्नका मिनस्सा ग़रीन।

कुर्आन, पारा ८, रकू २।९

अर्थात्—पस, अल्लाह ने शैतान से कहा यहां अर्थात् स्वर्ग और आसमान से उतर जा। यह स्थान मेरे अनन्य भक्तों का है। हो नहीं सकता कि तू आसमान में रहकर घमण्ड (तकब्बर) करे। शैतान ! इसलिए यहां से तू निकल जा। निस्सन्देह तू ज़िल्लत (निकृष्टता) पाने वालों में से है।

शैतान ने इस पर कहा:—**काला अन्ज़िरनी इला यौमे युब असून'**

कुर्आन, पारा ८, रकू २/९

अर्थात्—कि मुझे उस दिन तक मृत्यु की छूट दे दे जिस दिन तक मुर्दे उठाये जायें अर्थात् मेरी जिन्दगी को अमर कर दे उस दिन तक कि दुबारा सूर (नरसिंहा) फूँका जाये और लोगों को क़ब्रों से उठाया जाये; उस दिन तक मुझे मृत्यु प्राप्त न हो।

खुदा ने कहा:-'काला इन्नका मिनल मुल्जेरीन' अर्थात्-खुदा ने कहा—निश्चित तू मुहलत पाने वालों में से है अर्थात् तुझे जीवन दान दे दिया गया ।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ४, पृष्ठ २७१

अब आजीवनता का वरदान पाकर शैतान ने कहा:—

काला. फ़बे ग अराबैतनीलअक अवन्ना लहुम सिराते कल मुस्ते कीम सुम्मा लआते यन्नाहुम्मिन बैने ऐदी हिम वा मिन खलफे-हिमवा अन ऐमानेहिम वा अन शमाइले हिम वाला तजेदो अकसरोहुम शाकेरीना ।

कुर्आन, पारा ८, रकू २।१

अर्थात्-तूने (खुदा ने) मुझे पथ भ्रष्ट कर दिया है, तो मैं भी शपथ लेता हूँ कि उनको पथभ्रष्ट करने हेतु तेरे सीधे मार्ग पर बैठूंगा, उनके मार्ग को अवरूद्ध करने का असीम प्रयास करूंगा फिर मैं आक्रमण करूंगा उन पर सामने से और पीछे से भी, दांए और बाएं से भी, (इन चारों दिशाओं की कई प्रकार से व्याख्याएं की गई हैं किन्तु उन्हें लिखने की आवश्यकता नहीं) और तू उनमें से अधिकांश को शुक्र करने वाला न पायेगा । इस पर खुदा ने कहा कि-'**कालखरुज़ मिनहा मज़ऊमम्मदहूरा लिमन तबे अका मिनहुम लअमल अन्ना जहन्नमा मिन्कुम अजमईन ।** कुर्आन, सूरत एराफ़ पारा ८ पृष्ठ १८५

अर्थात्-अल्लाह ने कहा· (स्वर्ग या आसमान से) निकल जा ज़लील (लज्जित) और ख्वार (निष्कृष्ट) होकर, उनमें (मनुष्यों में) से जो तेरे पीछे चलेंगे मैं उन सबसे नर्क को भर दूंगा ।

उपरोक्त आयत में खुदा और शैतान के वादविवाद व झगड़े का पूर्ण विवरण वर्णित है। शैतान ने सजदा क्यों नहीं किया और अपना सम्पूर्ण अग्रिम कार्यक्रम भी खु.दा को कह दिया। खु.दा ने भी अपनी बात कह दी और शैतान ने मृतकों के उठाने तक जीवन-दान भी मांग लिया जो खु.दा ने स्वीकार कर लिया और शैतान को स्वर्ग या आसमान से निकाल भी दिया; किन्तु फिर भी खु.दा को इससे सन्तोष नहीं हुआ और कई प्रकार से शैतान से बारम्बार सजदा न करने का कारण पूछने लगा।

यह सब कुर्आन के लेखक के मस्तिष्क की उपज है खु.दा की नहीं। कुर्आन का लेखक शैतान को भयानक अवस्था में मनुष्यों के सम्मुख प्रकट करना चाहता है और शैतान के अस्तित्व को खु.दा के नाम के माध्यम से जन-साधारण के मन और मस्तिष्क में ठूंसना चाहता है और बारम्बार खु.दा को शैतान से प्रश्न करने के हेतु प्रस्तुत करता है।

आगे लिखा है कि खु.दा ने कहा:–**काला या इब्लो सोमा मनअक्रा अन्तसजुदा लिमा खलक्तो बय दय्या अस्तकबर्ता अम-कुन्ता मिनल आलीन।** कुर्आन पारा २३, रकू ५/४

अर्थात् खु.दा ने कहा—ए इब्लीस! किस वस्तु ने बाज़ (अलग) रखा तुझे इस बात से कि तू सजदा न करे उसे जिसे पैदा किया हमने अपने दोनों हाथों से.....क्या घमण्ड (तकब्बर) किया तूने या तू अपने आपको महान् समझता है।

तफ़सीर कादरी पारा २३, पृष्ठ ३३९

इसका उत्तर शैतान नें इस प्रकार दिया—'**काला अना खैरुम्मिन हो**'

अर्थात् - मैं इस आदम से श्रेष्ठ हूँ, क्योंकि '**खलक्तनी मिन्नारिनव खलक्तोहू मिन तीन**' उत्पन्न किया तूने मुझे आग से-कि उसमें सूक्ष्मता और प्रकाश है; और आदम को तूने मिट्टी से उत्पन्न किया, जिसमें कसाफत (ठोसपन) और अंधकार है।

खुदा ने इसके उत्तर में कहा:—**काला फ़खरूज मिनहा फ़इनका रजीम**' पस, निकल जा तू आसमान या स्वर्ग से तथा फ़रिश्तों की आकृति से, तू निकृष्ट है। (आयोग्य है) **वा इन्ना अलैका लानती इला यौमिद्दीन**' तुझ पर फटकार है और मेरा रोष है कयामत के दिन तक। (क्या कयामत के दिन के पश्चात् रोष दूर हो जायेगा ?)

शैतान ने कहा:— '**काला रब्बे फअन्जिनीं इला यौमे युब्असून**' मुझे तू मुहलत दे (मृत्यु से मुक्त करदे) उस दिन तक कि कब्रों से मृतकों को उठाया जाये (शैतान का अभिप्राय यह था कि मैं मृत्यु से बच जाऊँ)

इस पर खुदा ने कहा:-'**काला फ़ईन्नका मिनल मुन्जेरीन**' (इतना पहिले कहा था और आगे का वाक्य अधिक कह दिया) **इला यौमिल्वक्तिल मालूम**' कि तुझे मृत्यु से मुक्ति दी गई वक्त मालूम तक, अर्थात् पहली सूर (नरसिंहा) फूंकने तक (यह पहला सूर विश्व में प्रत्येक प्राणी की मृत्यु के लिये होता है) '**काला फ वे इज्ज़ते का ल उग़वेयन्ना हुम अजमईन**' शपथ है तेरी प्रतिष्ठा की, कि मुझ से जैसे हो सकेगा, बन पड़ेगा, मैं

आदम की सन्तान को अवश्य पथभ्रष्ट करूंगा । इल्ला एबा-दैका मिनहो मूल मुखलसीन' किन्तु में तेरे असली भक्तों को नहीं बहका सकूंगा । शैतान की इस बात पर खुदाने कहा— 'कालाफ़ल्हक्को अक़ूलो' सत्य मुझ से है और मैं सत्य कहता हूं:-

ल अम्ल अन्ना जहन्नमा मिन्का वा मिम्मन तबेअका मिन्हुम अजमईन । कुर्आन, सूरत स्वाद, पारा २३ रकू ५/१४

अर्थात्-कि अवश्य भर दूंगा मैं नर्क को तुझ से और उन लोगों से जो तेरे पीछे चलेंगे । मनुष्यों और जिन्नों से, सब से । (जिन शब्दों का प्रयोग ऊपर किया गया है, वह पूर्व की आयतों में उपयोग किये गये शब्दों से सर्वथा भिन्न हैं ।)

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ ३४०

पूर्व की गई भूल का सुधार

हां ! इस स्थान पर इतनी बात यह की गई है कि जो हमने पूर्व में उपरोक्त आयतें उद्धृत की हैं, उनमें जो भयंकर भूल की गई थी, जो कि इस्लाम के सिद्धांतों के सर्वथा विपरीत थी अर्थात् शैतान को मृतकों के जीवित होने तक जीने का वर-दान दे दिया था कि—तुझे उस दिन तक जीवित रहने की अवधि दी गई जब मूर्दों को उठाया जायेगा ।

पहली आयत में की गई भूल का सुधार इस दूसरी आयत से कर दिया 'इला यौमिलवक्तिल्मालूम, हो यह वाक्य पूर्व वर्णित आयत में नहीं था । यह वाक्य लिखकर कि—वक्त मालूम तक

तेरे जीवन को स्थिर रखा जायेगा। वक्त मालूम का अर्थ हम पूर्व में लिख चुके हैं कि प्रथम सूर के फूँकने तक अर्थात् प्रथम सूर और दूसरे सूर के फूँकने के मध्य जो अन्तराल है, उसमें तुझे मृत्यु प्राप्त होगी।

अतः पहली आयत में जो कहा गया था कि मृतकों के जीवित होने तक तुझे जीवित रखा जायेगा। इसके अनुसार तो शैतान मृत्यु से मुक्त हो अमर हो गया था!

हम नम्रता पूर्वक मुसलमानों से निवेदन किया चाहते हैं कि इतनी भयंकर भूल करने वाला क्या ख़ुदा हो सकता है? कि पहले तो शैतान को मृत्यु से मुक्ति दे दे और फिर दूसरी आयत में अपनी उस भूल का सुधार करे। यह तो केवल मनुष्य से ही सम्भव है।

आगे फिर इसी कथा को दूसरे शब्दों में वर्णन किया गया है, जो इस प्रकार है:—

वा नफ़ख़तो फीहे मिरूँही फकऊ लहू साजदीन।

कुर्आन, पारा १४ रकू ३।३

अर्थात्-कि जब मैं (ख़ुदा) उसमें अपनी रूह (आत्मा) फूँक दूँ तो तुम उसके (आदम के) आगे सजदे में गिर पड़ो। फिर जब ख़ुदा ने आदम में रूह फूँक दी अर्थात् जीवित कर दिया तो समस्त फ़रिश्तों ने सजदा किया किन्तु शैतान ने अस्वीकार कर दिया और सजदा न किया।

इस पर ख़ुदा के नाम से कहा गया, कि:—

काला या इब्लीसो मालका अल्ला तकूनो मअस्साजेदीन।

कुर्आन, पारा १४ रकू ३।३

अर्थात्-कि ऐ शैतान ! सज़दा करने वालों में सम्मिलित न होने का क्या कारण है ? क्योंकि मालिक की आज्ञा पालन करना तुझे आवश्यक था।

शैतान ने कहा—'काला लम् अकुल्लि अस्जुदा लिबशरिन खल-क़तहू मिन सल्सालिम्मिन हम इम्मस्नून'

अर्थात्—मैं तो एक कसीफ (स्थूल) मनुष्य को सज़दा नहीं कर सकता (अर्थात्-निकृष्ट व्यक्ति को) जिसको तूने खन-खनाती सड़ी हुई मिट्टी से बनाया है और मुझे तूने आग से बनाया जो समस्त तत्वों से सूक्ष्म और श्रेष्ठ है तथा प्रति-ष्ठित है।

इस पर ख़ुदा ने कहा—'काला फख़रूज मिन्हा फइन्नका रजीम' अर्थात्—कि जब तूने मेरी आज्ञा नहीं मानी, तो स्वर्ग या आस-मान व फ़रिश्तों के समूह से निकल जा। निस्सन्देह तू दुत्कारे हुओं में से है और प्रतिष्ठा से वंचित हो गया है पत्थरों से मारा हुआ है। अर्थात् जो अल्लाह की दरगाह से धिक्कारा जाये, वह पत्थरों से मारा जायेगा। इसका तात्पर्य यह है कि भविष्य में जब तू आसमान के निकट आयेगा तो तुझ पर अंगारों को बरसाया जायेगा, टूटे तारे तुझ पर पत्थरों के समान पड़ेंगे 'वा इन्ना अलैकल्लानती इला यौमिद्दीन' और क़यामत तक तुझ पर फटकार निश्चित है।

इस पर शैतान ने कहा—काला रब्बेका अन्जिरना इला यौमे युब्असून' अर्थात् कि ए मेरे ख़ुदा ! जब तूने मुझे निकाल ही दिया है, और फटकार भी दे दी है, तो मेरे जीवन को उस दिन तक सुरक्षित रख, कि जिस दिन क़ब्रों से मुर्दे उठाये

जायेंगे। (शैतान का यह जीवनदान मूर्दे उठाये जाने तक मांगने से यह अभिप्राय था कि वह मौत से बच सके।)

इस पर व्याख्याकार ने लिखा है कि यह मृत्यु से छोड़ देना उसकी प्रतिष्ठा के लिये नहीं अपितु उसके दुर्भाग्य तथा आपत्तियों में वृद्धि करने हेतु था।

मैं कहूंगा कि पूर्व आयतों में जिसे हमने सर्व प्रथम लिखा है कि खुदा ने शैतान को मृतकों के उठने तक जीवन का वरदान दे दिया; किन्तु बाद में जब कुर्आन के लेखक को सूझा कि यह तो महान् भूल हो गई, इसलिए इस आयत में यह कह कर **'इला यौमिल बक्तिल मालूम'** सुधार कर दिया।

शैतान ने कहा :—

काला रब्बे बिमा अगवेतनी ल ओ ज़य्येनन्ना लहुम फिलअर्ज़े वल उगवियन्नहुम अजमईन।

अर्थात्-शैतान ने कहा-ऐ मेरे खुदा! तूने मुझे पथभ्रष्ट कर ही दिया है, इसलिए मैं भी अवश्यमेव संसार में गुनाहो को व्यवस्थित रूप से लेकर उनके सम्मुख आऊँगा और उनको मार्ग से च्युत कर दूंगा। **'इल्ला एबादेका मिन्हुमुल मुसैलीन'** (शैतान ने कहा) अर्थात् तेरे वे चुने हुए पवित्र मनुष्य बहकाये नहीं जा सकेंगे। पारा १४ रकू, ३।३

अल्लाह ने कहा- **काला हाजा सिरातुन अलय्या मुस्तकीम'** अर्थात्-मुझ (अल्लाह) तक पहुंचने का यह सीधा मार्ग है, इसमें कोई टेढ़ापन नहीं।

हसन ने कहा है-कि सत्य का मार्ग सीधा है.....अखदश ने कहा है-सीधा रास्ता बताना मुझ (अल्लाह) पर है अर्थात् मेरे (अल्लाह) जिम्मे है.....इससे इस आशय की

ओर संकेत है कि अल्लाह अपने चुने हुए भक्तों को पथभ्रष्ट नहीं होने देगा ! शैतान की बहकावट से बचाने का दायित्व अल्लाह का है । यथा:

इन्ना एबादी लैसा लका अलैहिम सुल्तानुन इल्ला मनित्तबअ का मिनल गावीन ।

अर्थात्–निस्सन्देह मेरे (अल्लाह के) उन भक्तों पर तेरा तनिक भी वश नहीं चलेगा; किन्तु जो पथभ्रष्ट लोगों में तेरी राह पर चलने लगेंगे उनको नर्क में ले जाया जायेगा । ' **व इन्ना जहन्नमुमाल मौइदाहुम अजमईन** ' और जो लोग तेरे मार्ग पर चलेंगे उन सबसे नर्क का वादा है । अर्थात् उन सबको नर्क में डाल दिया जायेगा । तफ़सीर मज़हरी पृ. ३४५ से ३४८

इसी प्रकार शैतान और खुदा के झगड़े के सम्बन्ध में कुर्आन पारा १५, रकू ६/६ में लिखा है, जो कि पूर्वोक्त आयतों से सर्वथा भिन्न है ।

जब सब फ़रिश्तों ने आदम को सजदा किया और शैतान ने न किया और अपने आप ही कहा--'**काला आ अस्जुदो लिमन् खलक्ता तीनन**' कि मैं सजदा नहीं करूंगा उस व्यक्ति को जिसे तूने मिट्टी से उत्पन्न किया । फिर खुदा ने उसे धिक्कार देकर अपनी दरगाह से निकाल दिया । फिर शैतान ने खुदा से प्रश्न किया ' **काला अरा एतकाहाज़ल्लज़ी करंमता अलय्या** ' शैतान ने खुदा से जवाब तलब किया कि तू मुझे इस बात से सूचित कर कि तूने इस व्यक्ति को मुझसे क्यों श्रेष्ठता दी है, उस स्थिति मे जब कि वह मिट्टी से उत्पन्न है और मैं आग से हूँ फिर मेरी अपेक्षा उसे क्यों उत्कृष्टता दी '**लइन अख़्ख़र्तनि इला यौ**

मिल क़ियामते' यदि तू अन्त तक मुझे जीवित रखे और मेरी मृत्यु को क़यामत के दिन तक छोड़ दे तो 'लअख़्तने कन्ना ज़ुर्रीयतहू इल्ला कलीला' अवश्य मैं उसकी (आदम की) सन्तानों को बहका कर जड़ से उखाड़ और ऐसी दशा कर दूँ कि तेरे संताप से भस्मीभूत हो जायें, किन्तु थोड़े कि उन्हें तेरी हिमायत (पक्षपात) के कारण पथभ्रष्ट न कर सकूँगा।

इस पर ख़ुदा ने कहा कि—जो तेरा अनुसरण करेगा उसको नर्क में डालूँगा और तू उनको बहका कर, उनको पतित कर अपनी आवाज से, और खेंच ला उन पर अपने सवारों और प्यादों को जो भ्रम में डालने में तथा बहकाने में तेरे सहायक है, और प्रेरणा दे ताकि वे हराम का माल जमा करें या ब्याज (सूद) पर दें या पाप में व्यय करें और उनकी सन्तान में भी सम्मिलित हो ताकि व्यभिचार से सन्तानोत्पत्ति करे, और वायदा (प्रतिज्ञा) कर उनसे असत्य वायदा जैसे—मूर्तियों की शिफ़ायत (सिफ़ारिश) या तौबा (पश्चाताप) करने में बाधा डाल या मृतकों के उठने और क़यामत तथा स्वर्ग व नर्क के अस्तित्व को अस्वीकार करने वाला बना। और शैतान वादा नहीं करता इनसे मगर फ़रेब का अर्थात् पाप को पुण्य के रूप में प्रस्तुत करता है। यथा:-इन्ना इबादी लैसालका अलैहिम् सुल्तानुन' (ख़ुदा कहता है) निस्सन्देह मेरे विशेष भक्त .....जो स्वर्ग हेतु उत्पन्न किये गये हैं वे तेरे बहकाने में नहीं आ सकेंगे। 'व कफा बे रब्बिका वकीला' और ख़ुदा अपने भक्तों को शैतान को गुमराही से बचाने के लिये पर्याप्त है।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १, पृष्ठ ६०५--६०६

(पाठक! शैतान के इस प्रकरण को ध्यान पूर्वक पढ़ें)

पाठक वृन्द ! जो आयतें हमने ऊपर उद्धृत की हैं, उनके शब्दों और वाक्यों में परस्पर अत्यधिक विभिन्नता है। हम पूर्व में लिख आये हैं कि खुदा ने एक ही अवसर पर आदम को सजदा न करने के समय शैतान से चर्चा की और शैतान ने भी वाद-विवाद किया। इस घटना को कुर्आन में बारम्बार दोहराये जाने पर भी कथा की भाषा व शब्दावली एक समान होनी चाहिये थी। यदि आप आयतों को पढ़ सकें तो क़ुर्आन में भी पढ़ कर देख लेवें तो इन आयतों में आपको अत्यधिक अन्तर प्रतीत होगा। कहीं कुछ है और कहीं कुछ।

इसलिए ऐसा ज्ञात होता है कि कुर्आन के लेखक ने शैतान की सत्ता को जन साधारण के मन-मस्तिष्क में अंकित करने हेतु बारम्बार इस प्रसंग को विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया है, और एक ही प्रसंग को बारम्बार दोहराना पुनःरुक्ति दोष माना जाता है। उचित तो यह होता कि जैसे एकबार खुदा का झगड़ा शैतान से हुआ उसे एक ही बार क़ुर्आन में लिखा जाता, क्यों झगड़े के पश्चात् खुदा ने शैतान को बहिश्त से निकाल दिया था।

उपरोक्त आयतों में वर्णित है कि शैतान ने खुदा से प्रश्न किया कि 'आदम को मुझसे अधिक महत्व क्यों दिया गया इस से मुझे सूचित करो।' इस बात को लक्ष्य में रखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि शैतान के सम्बन्ध में आपको पूर्ण-रूपेण परिचित कराया जाये कि उसका पद क्या था ? उसका महत्व क्या था ? क्योंकि शैतान ने भी आसमान पर फ़रिश्तों के साथ ही शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की थी और वह पृथ्वी तथा आसमान का स्वामी बन गया था।

शैतान का परिचय

अजायबुल क़सस भाग १ पृष्ठ ३१-३२ में शैतान का परिचय देते हुए लिखा गया है कि—उन असीरों (प्राणियों में एक अजाजील था। जिसने फ़रिश्तों के साथ ही आसमान पर शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की थी। उत्तरोत्तर प्रतिदिन उसका महत्त्व बढ़ता गया। उसके आसमान पर जाने के सम्बन्ध में एक प्रसंग इस प्रकार है कि बनो जान से झगड़े के कारण वह एक कोने में छुप गया और खुदा से प्रार्थना करने में लीन हो गया, और इतनी भक्ति की कि फ़रिश्तों ने अत्यन्त विनम्रता-पूर्वक खुदा से निवेदन किया कि ऐसे आज्ञाकारी और श्रद्धालु का हम लोगों के मध्य होना अधिक उत्तम है। उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई और खुदा ने उसे प्रथम आसमान पर स्थान दिया, वहां पर वह एक दीर्घकाल तक उसी प्रकार प्रार्थना करता रहा, फिर द्वितीय आसमान के फ़रिश्तों ने खुदा से प्रार्थना की और वह भी स्वीकार हुई और वह द्वितीय आसमान पर लाया गया तथा इसी प्रकार वह सप्तम (सातवें) आसमान पर पहुँच गया। एक दीर्घकाल तक वह स्वर्ग में भी रहा। वहां भी उसने प्रार्थना की व लीन रहा और अर्श (खुदा के सिहासन) के नीचे याक़ूत की मेज़ पर नूर का झण्डा खड़ा करके उपदेश दिया। उसके प्रवचन में इतने फ़रिश्ते एकत्रित हुए कि उनकी गणना खुदा के अतिरिक्त किसी से सम्भव नहीं।

कुछ लोगों का यह भी कथन है कि यह शैतान फ़रिश्तों में से ही था किन्तु अवज्ञा करने से उसे शैतान का परिवेश पहिना कर उसे फ़रिश्तों से पृथक कर दिया गया।

जब बनी जान एक कालान्तर पश्चात् अपने स्थानों से बाहर आये और उन्होंने पृथ्वी के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया तथा उपद्रव करने लगे तो शैतान ने खु.दा से प्रार्थना की कि यदि आदेश हो तो मैं जाकर उन्हें पापाचार से रोकूं तथा उन्हें उचित मार्ग पर लाऊं। उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई और वह फ़रिश्तों के एक दल के साथ पृथ्वी पर आया और उन्हे निमंत्रित किया।

अजाज़ील (शैतान) ने एक फ़रिश्ते को दूत (एलची) बना कर बनी जान के पास भेजा। उन्होंने उसकी हत्या कर दी। इसी प्रकार एक दीर्घकाल तक फरिश्ते एलची (दूत) के रूप में भेजे जाते रहे और उनका वध होता रहा, जिसका पता शैतान को न लग सका। अन्ततः उसने एक और दूत को भेजा, उसे भी उन लोगों ने मार डालने का प्रयास किया, परन्तु वह किसी प्रकार उनसे छल-प्रपंच कर बच निकला और सम्पूर्ण विवरण अज़ाज़ील को कहा। अज़ाज़ील ने अल्लाह से आज्ञा प्राप्त कर उनसे मुकाबला (युद्ध) किया और उनमें से अधिकांश को कत्ल कर डाला तथा जो शेष रहे वे पृथ्वी के अन्य भागों में भाग गये।

(फिर) खु.दा ने शैतान को सम्पूर्ण पृथ्वी का स्वामी और आसमान तथा स्वर्ग की खिलाफ़त (सर्वाधिकार) देकर सम्मानित किया. ऐसे उच्च पद प्राप्त व्यक्ति (शैतान) का आदम को सजदा न करना एक स्वाभाविक बात थी। इसीलिए उसने खु.दा से प्रश्न किया था कि तूने (खु.दा) आदम को मुझसे अधिक महत्त्व क्यों दिया? (परन्तु इसका कुछ भी उत्तर उसे प्राप्त नहीं हुआ)

पाठक वृन्द ! शैतान और खुदा के विवाद का प्रसंग और शैतान का वास्तविक परिचय आपने भलीभांति पढ़ लिया और मैं विश्वास रखता हूं कि आप भी इसी परिणाम पर पहुंचे होंगे कि यह गाथा सर्वथा कपोल कल्पित और गल्प मात्र है। खुदा को ऐसे विवादों में पड़ने की क्या आवश्यकता थी ? यह खुदा और शैतान का पूरा विवाद ऊपर लिखा गया।

अब इसी प्रकार की एक और अन्य गाथा जो अत्यन्त ही मनोरंजक है । आपके समक्ष कुर्आन के ही शब्दों में प्रस्तुत है:—

आदम को शैतान ने कैसे बहकाया

जब सजदे का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया तो फ़रिश्ते आदम का तख्त उठा कर स्वर्ग में ले गये। फिर खुदा ने कहा:-

व कुल्ना या आदमुस्कुन अन्ता व जौजोकल्जन्नता व कुला मिन्हा रग़दन हैसो शेतुमा व ला तकरबा हाजेहिश्शजरता फतकूना मिनज़्ज़ालेमीन। कुर्आन, पारा १, रकू ४।४

अर्थात्—और हम (खुदा) ने कहा कि तुम (आदम) और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में बसो। (पत्नी कहां थी)

बग़वी का कथन है कि स्वर्ग में हज़रत आदम का कोई हम जिन्स (स्वजातीय) न था और साथी के अभाव में प्रायः उनकी तबीयत घबराया करती थी। एक दिन वह सो रहे थे

कि अल्लाह ने उनकी बाँई जानिब (वामांग) से हजरत हव्वा को उत्पन्न किया। जब वह सोकर उठे, तो देखा कि सिर के पास एक सुन्दर स्त्री बैठी हुई है। हज़रत आदम ने पूछा कि तू कौन है ? उसने उत्तर दिया कि मैं हव्वा तुम्हारी पत्नी हूं !.... उस समय ख़ुदा ने कहा कि और इसमें से अच्छी प्रकार से खाओ, जहां कहीं से तुम्हारा दिल चाहे, और इस वृक्ष के पास न फटकना, यदि ऐसा करोगे तो हानि उठाओगे (अर्थ तो यह है कि तुम इस वृक्ष को खाने से ज़ालिमों (अत्याचारियों) में से हो जाओगे)

वृक्ष के विषय में मतभेद है कि वह कौन सा वृक्ष था ? इब्ने अब्बास और मुहम्मद बिन काब तो इसे गेहूं की बाली कहते हैं । इब्ने मस्ऊद इसे अंगूर, इब्ने जरीह इसे अंजीर और हज़रत अली इसे काफूर (कर्पूर) कहते हैं । ... . इत्यादि । तफ़सीर मज़हरी, पारा १, पृष्ठ ९४-९५

हम लिख चुके हैं कि पृथ्वी के विभिन्न स्थानों से मिट्टी मंगवा कर आदम का पुतला मक्का और ताइफ के मध्य बनाया, और उसके क़द की लम्बाई साठ गज़ और चौड़ाई सात गज थी। आदम का पुतला उक्त भूमि में ४० वर्षों तक पड़ा रहा। अजाएबुल क़सस पृष्ठ ३५-१

आदम की उत्पत्ति आपने भली प्रकार जान ली किन्तु हव्वा की उत्पत्ति आपके सम्मुख उचित प्रकार से स्पष्ट नहीं हुई है, उससे भी परिचित हो लें। क़ुर्आन में लिखा है:—

या अय्यो हन्नासुत्तकू रब्ब कुमुल्लाजी खलक कुम्मिन्नफ़्सिव्वाहिद तिव्वं व खलका मिन्हा ज़ौजहा व बस्सा मिन्हुआ रिजालन कसीरन। कुर्आन, सूरत निसा, पारा ४ रकू १/१९

अर्थात्-ऐ लोगों ! अपने खुदा से डरो, जिसने उत्पन्न किया तुमको एक व्यक्ति (आदम) से और उसी से उत्पन्न किया उसके जोड़े को, अर्थात् हज़रत हव्वा को बांई पसली से ।

हज़रत अबू हुरैरा का कथन है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि स्त्रियां आदम की बाँई पसली से उत्पन्न की गई हैं ।

अबुल शैख ने इब्ने अब्बास का कथन लिखा है कि— हव्वा को आदम की सब से छोटी पसली से उत्पन्न किया गया है, और आदम और हव्वा से फैलाया बहुत मनुष्यों और स्त्रियों को। तफ़सीर मज़हरी पारा ४ पृष्ठ ४७०-४७१

यह है हव्वा की उत्पत्ति । आदम से ही हव्वा को उत्पन्न किया और उसी की पत्नी बना दिया । हम शैतान और आदम की कथा लिख रहे थे; किन्तु प्रसंगवश मध्य में हव्वा की भी उत्पत्ति लिखना पड़ी ।

जब से आदम को स्वर्ग में रखा, शैतान इस अवसर की चिन्ता में था कि किस प्रकार आदम और हव्वा को भ्रमित किया जाये ।

अल्लामा बग़वी क[illegible] है कि जब शैतान आदम व हव्वा को बहकाने का विच[illegible] स्वर्ग में प्रविष्ट हेतु स्वर्ग के द्वार पर

गया तो स्वर्ग के चौकीदारों ने उसे स्वर्ग में जाने से रोक दिया। इतने में उसके पास सर्प आया। सर्प और शैतान में पूर्व से ही मित्रता थी और यह सर्प सभी जानवरों से अधिक सुन्दर था, उसके चारों पैर ऊंट के समान थे और वह भी स्वर्ग के पहरेदारों में से था। उसको शैतान ने कहा कि तू मुझे अपने मुंह में रखकर स्वर्ग के भीतर पहुँचा दे उसने स्वीकार कर लिया और मुंह में रखकर शैतान को स्वर्ग में ले गया, और स्वर्ग के चौकीदारों को तनिक भी सूचना न हो सकी कि शैतान इस प्रकार स्वर्ग में प्रविष्ट हो गया है। न खुदा को पता लगा।

शैतान स्वर्ग में जाकर आदम और हव्वा के पास खड़ा हो गया। वे नहीं जानते थे कि यह शैतान है। शैतान वहां जाकर अत्यधिक रोने लगा। उसके रोने से आदम और हव्वा का हृदय पिघल गया, फिर दोनों ने उससे रोने का कारण पूछा। शैतान ने कहा कि मेरा रोना तुम्हारे ही हेतु है कि अब तुम दोनों ही मरोगे और स्वर्ग की सर्वश्रेष्ठ खाद्य सामग्री से वंचित हो जाओगे। यह सुनकर आदम और हव्वा दोनों ही शोकातुर हो गये। यह देखकर शैतान ने सोचा कि मेरा जादू चल गया, तो सहानुभूतिपूर्वक कहने लगा.. .....कि मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूं और वह यह है कि अमुक वृक्ष के खाने से मनुष्य अमरता को प्राप्त हो जाता है। आदम ने उस वृक्ष को खाने से मना कर दिया और कहा कि मैं उस वृक्ष का कदापि न खाऊंगा। जब शैतान ने देखा कि शिकार हाथ से निकल जाता है तो बोला—खुदा की शपथ मैं तुम्हारा शुभेच्छुक हूं, इसमें कोई हानि की बात नहीं। आदम और हव्वा शैतान की बातों में आकर धोखा खा गये और विचार किया कि कौन ऐसा है जो

खुदा की मिथ्या शपथ खायेगा । पहिले फल हव्वा ने और फिर हज़रत आदम ने खाया ।

सईद बिनल मुस्इब खुदा की शपथपूर्वक कहते थे कि हज़रत आदम ने होशोहवास में फल नहीं खाया अपितु हव्वा ने उन्हें शराब पिला दी थी । जब वे नशे में मस्त हो गये तो हव्वा उन्हें खींच कर वृक्ष के निकट ले गई तब उन्होंने फल खाया । तफ़सीर मज़हरी, भाग १, पृष्ठ ९५-९६

हज़रत आदम ने पहिले भी शराब पी रखी थी

एक कथन में है कि हज़रत आदम अभी उज्र(विरोध) न कर चुके थे कि हज़रत हव्वा एक प्याला स्वर्ग की शराब का हज़रत आदम के पास लाई और हज़रत आदम ने उसमें से पिया चूंकि वे (आदम) पहिले ही शराब में मस्त थे । दोबारा पीने से मस्ती अत्यधिक हुई और मदहोशी से बुद्धि स्थिर न रही । अजाएबुल क़सस, भाग १, पृष्ठ ४६

(यह है इस्लाम का प्रथम पैग़म्बर और मनुष्य मात्र का पिता, जो शराब के नशे में खुदा की आज्ञा को भी भूल जाता है ।)

शैतान द्वारा आदम को बहकाने सम्बंधित आयतें

प्रथम आयत:—

फ़ अज़ल्ला हुमश्शैतानो अन्हा फ़ अख़रजाहुमा मिम्मा काना

फीहे व कुल्नहबेतू बाजुकम लिबाज़िन अदुव्व व लकुम फ़िल अर्ज़े मुस्तकर्रुंव्वां मताउन इला हीन।

कुर्आन, पारा १, रकू ४।४

अर्थात्–फिर डिगाया (गिरा दिया) और स्थान से ले गया आदम और हव्वा को शैतान स्वर्ग से, और शैतान मोर और सर्प की सहायता से स्वर्ग में आया था, और उसने हव्वा व आदम को वस्वसा (भ्रम में डाला) दिलाया; फिर निकाला उन दोनों को उस वस्तु से जो करामत (प्रतिष्ठा) और नैमत (सम्पदा) थी, और कहा हम (खुदा) ने मोर और साँप तथा आदम और हव्वा एवं शैतान को कि तुम सब स्वर्ग से संसार में उतर जाओ (शैतान को तो स्वर्ग से पहिले ही निकाल दिया गया था । अब दुबारा पुनः निकालने का क्या अर्थ ?) बाज़े (कुछ) तुम्हारे बाज़ों (कुछों) के शत्रु हैं और तुम्हारे व तुम्हारी सन्तानों के लिये पृथ्वी में ही ठहरने का स्थान है।

तफ़सीर क़ादरी भाग १ पृष्ठ १०–११

इसमें विशेष इतना ही है कि मोर को दण्ड इस कारण दिया गया कि उसने वह वृक्ष बताया था।

अल्लाह ने आदम से कहा कि तूने यह कर्म (फल खाने का) क्यों किया ? उन्होंने (आदम ने) कहा कि हव्वा ने ऐसी बातें बताई कि वह वृक्ष मुझे भला प्रतीत हुआ। इस पर खुदा ने आदेश दिया कि मैं इस (हव्वा) पर अज़ाब (कष्ट) निश्चित करूँगा अर्थात् गर्भ होने पर इसे दुःख होगा और फिस प्रसव के समय पीड़ा–कष्ट और संताप होगा और प्रतिमाह जो रक्त (मासिक धर्म) आया करेगा वह (दुख) पृथक है। इस पर

हव्वा रोने लगी, आदेश (खुदा का) हुआ कि तुझ पर और तेरी समस्त बेटियों पर रोना अनिवार्य किया गया ।

तफ़सीर मज़हरी पारा १, पृष्ठ ९६-९७

द्वितीय आयतः—

फ़ वस्वसा लहो मश्शैतानों लियुब्दिया लहुमा मा वुरेया अन्हुमा मिन सौआतेहिमा व काला मा नहाकुमा रब्बोकुमा अन् हाजे हिश्शजरते इल्ला अन तकूना मलकैने औ तकूना मिनल्खालेदीन् । व कासमहुमा इन्नी लकुमा लमे नन्नासेहीन । फ़दल्लाहुमा बिग़ुरुर फ़लम्मा जाक़श्शजरता बदत लहमा सो आतुहुमा व तफ़ेकन यखसेफाने अलैहे मा मिव्वरकिलजन्नते व नादाहुमा रब्बोहुमा अलम् अन्हकोमा अन् तिल्कोमश्शजरते व अकुलकुम्मा इन्नश्शैताना लकुमा अदुव्वंम्मुबीन ।

कुर्आन, सूरत एराफ़ पारा ८ रकू २।६

अर्थात्-फिर शैतान ने दोनों (आदम और हव्वा) के दिलों में भ्रम (वस्वसा) डाला ताकि उनके आवरण का शरीर (गुप्ताँग) जो अब तक दोनों से पोशीदा (गोपनीय) थे, दोनों के समक्ष करदे, और गुप्ताँग जिनको दोनों में से कोई भी नहीं देखता था न स्वयं के न दूसरे के (हाँ भाई ! कैसे देख सकते थे इनके शरीर पर सम्भवतः स्वर्ग के वस्त्र रहे होंगे?) शैतान ने कहा, कि तुम्हारे खुदा ने तुम दोनों को इस वृक्ष के खाने से इसलिए रोका था कि तुम (इसे खाकर) कहीं फ़रिश्ते हो जाओं या हमेशा रहने वालों में से हो जाओ, और दोनों के सम्मुख शपथ खाई कि विश्वास करो कि मैं तुम दोनों का शुभचिन्तक हूं । पस,

उन दोनों को धोखे से नीचे ले आया अर्थात् आज्ञा पालन के स्थान से पाप में प्रवृत्त किया फिर जब उन दोनों ने उस वृक्ष के फल का मजा (स्वाद) चख लिया तो दोनों के गुप्तांग एक दूसरे पर प्रकट हो गये और लज्जा के कारण वे अपने नग्न अँगों पर स्वर्ग के (वृक्षों के) पत्ते चिपकाने लगे। उस वर्जित वृक्ष का मजा चखने मात्र से ही लिबास (स्वर्ग के वस्त्र) उतर गये।

अब्द बिन हमीद ने वहब बिन मंबा का कथन उद्धृत किया है कि-दोनों का लिबास वेशभूषा) नूर (प्रकाश) का था।

इब्ने अबी हातिम ने.... .. इब्ने अब्बास का कथन लिखा है—आदम और हव्वा का पहिनावा नाखून का था किन्तु उस वृक्ष के फल का मजा चखने से ही कुल लिबास उतर गया और केवल नाखून ही रह गये। पत्तों से तात्पर्य है अंजीर के पत्ते, हजरत उबय्य बिन काब से रवायत की (कथन) है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि आदम का कद इतना लम्बा था, जैसे खजूर का पुराना वृक्ष। सिर पर बड़े-बड़े बाल थे। जब पाप में पड़ गये और उनके गुप्तांग प्रकट हो गये.....तो भाग कर एक उद्यान (बाग़) में पहुँचे उद्यान के एक वृक्ष ने उनके बालों को उलझा दिया। आदम ने कहा—मुझे छोड़ दो। वृक्ष ने कहा—मैं तुमको छोड़ने वाला नहीं हूँ। इस पर अल्लाह की आवाज आई—आदम! क्या तू मुझ से भाग रहा है? आदम ने कहा—नहीं मेरे खुदा! अपितु मुझे तुझसे लज्जा आ रही है (इस वर्णन से ज्ञात होता है कि स्वर्ग के वृक्ष भी बोलते थे और समझते थे। साथ ही आदम का यह कथन कि मुझे तुझ से लज्जा आ रही है, खुदा को एक शरीरधारी सिद्ध करता है, जैसे बाइबिल में लिखा है—कि खुदा शीतल समय में उद्यान की सैर करता था)

बाईबिल में आदम की गाथा

आदम तथा शैतान की इस गाथा में बाईबिल का उल्लेख उपस्थित हो गया है। मैं चाहता हूँ कि प्रसंगवश इस सन्दर्भ में बाईबिल में वर्णित इस कथा को भी लिख दिया जाये, क्योंकि आदम की इस कथा को हज़रत मुहम्मद ने वहीं से लेकर कुछ न्यूनाधिक कर कुर्आन में लिखा है।

सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई ? यह एक वैज्ञानिक विषय है, जिससे हज़रत मुहम्मद परिचित नहीं थे। यदि यह कुर्आन ख़ुदा की ओर से उतारा गया होता तो आवश्यक था कि इसमें वर्णित सृष्टि-उत्पत्ति का विषय, जो कि अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इस प्रकार विज्ञान के विरुद्ध न होता।

६ दिन में धरती की उत्पत्ति

सर सय्यद अहमद ने अपनी कुर्आन की तफ़सीर के भाग ३, पृष्ठ १७० पर "६ दिन में भूमि का उत्पन्न होना" के शीर्षक से लिखा हैं कि—भूमि का ६ दिन में उत्पन्न होना यहूदियों के अनुसार ही क़ुर्आन में आया है।

६ दिन में दुनिया का निर्माण होने पर बड़े-बड़े आक्षेप थे, क्योंकि ६ दिन में दुनिया उत्पन्न नहीं हुई किन्तु बहुत अधिक समय में उत्पन्न हुई है। इस पर ऐसे जटिल और दृढ़ तर्क थे कि उनका निवारण नहीं हो सकता था। इस पर ईसाइयों ने अन्ततः यह उत्तर दिया कि दिन से अभिप्राय जमाना (काल) है।
इस पर सर सय्यद अहमद अपनी सम्मति लिखते हैं कि—

ख़ुदा ने तौरेत के आरम्भ में कहा है कि—ख़ुदा ने ६ दिन में धरती और आसमान बनाए और अरब निवासी यहूदियों से संबधित थे, और प्रत्यक्ष यह है कि उन्होंने यहूदियों से यह बात सुनी थी। इस कारण ख़ुदावन्द ने फ़रमाया है कि -

तुम बुतों की पूजा में संलग्न मत होओ, क्योंकि तुम्हारा पालने वाला वही है कि जिसके विषय में तुमने बुद्धिमानों से सुन रखा है, कि निस्सन्देह उसने आसमानों और ज़मीनों को अपनी अलौकिक शक्ति और असीम सामर्थ्य से ६ दिनों में उत्पन्न किया है।

यहां छः दिन का शब्द यहूदियों के विश्वास के अनुसार आया है, न कि वास्तविकता को बयान करने हेतु।

हम लिख रहे थे कि हज़रत मुहम्मद ने बाईबिल के आधार पर ६ दिन में ज़मीनों और आसमानों की उत्पत्ति को क़ुर्आन में लिख दिया। इस सम्बन्ध में बाइबिल का कथन निम्न प्रकार है:—

और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रच कर उसके नथुनों में जीवन का श्वांस फूंक दिया और आदम जीता प्राणी बन गया, और परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई, और उसमें आदम को रख दिया, और भांति-भांति के सुन्दर और स्वादिष्ट वृक्ष उसमें लगाये, और वाटिका के मध्य में जीवन के वृक्ष को तथा भले और बुरे की पहिचान के वृक्ष को भी लगाया.... .....आदम को उस वाटिका में रखा ताकि उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। तब परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि तू वाटिका के सब वृक्षों के फल बेखटके खा सकता है, परन्तु भले और बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खायेगा, उसी दिन अवश्य मर जाएगा। (किन्तु मरा तो नहीं) फिर यहोवा ने कहा-आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊँगा, जो उससे मेल खाय। और परमेश्वर भूमि में से सब पशुओं को लाया और आदम से उनके नाम रखाये, परन्तु आदम को उसका कोई सहायक नहीं मिला जो उससे मेल खा सके। तब

परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और उसकी एक पसली निकाल कर उसमें माँस भर दिया, और परमेश्वर ने उस पसली को स्त्री बना दिया, और उसको आदम के पास ले आया.... .....और आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते नहीं थे ।

परमेश्वर ने जितने वन्य पशु बनाये थे, उनमें सर्प बड़ा धूर्त था, और उसने (सर्प ने) स्त्री (हव्वा) से कहा–कि क्या यह सत्य है कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना ? स्त्री ने सर्प से कहा, कि–वाटिका के मध्य में जो वृक्ष है उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा कि–न तो उसके फल को खाना और न उसे छूना अन्यथा तुम मर जाओगे तब सर्प ने स्त्री से कहा कि-तुम निश्चय ही न मरोगे, वरना परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखे खुल जाएगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पा कर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे । सो, जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनमोहक और बुद्धि देने के हेतु चाहने योग्य भी है । तब उसने उसमें से तोड़ कर खाया और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया । तब उन दोनों की आंखे खुल गई और उन दोनों को प्रतीत हुआ कि वह नग्न हैं, सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ २ कर लंगोट बना लिए । तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठन्डे समय वाटिका में फिरता था, उसका शब्द उनको सुनाई दिया । तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के मध्य मे परमेश्वर से छिप गए । तब परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा-कि तू कहां हैं ? उसने कहा–मैं वाटिका में तेरा शब्द सुन कर डर गया, क्योंकि मैं नग्न था, इस कारण छुप गया । उसने कहा कि किसने तुझे बताया कि तू नग्न है, जिस वृक्ष का फल खाने

से मैंने तुझे रोका था, क्या तूने उसका फल खाया है ? (खुदा को पता नहीं लगा कि उसने फल खा लिया है।) आदम ने कहा जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को मुझे दिया है, उसी स्त्री ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया और मैंने खाया। तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा कि तूने यह क्या किया है ? स्त्री ने कहा कि सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया। तब परमेश्वर ने सर्प से कहा कि-तूने जो यह किया है, इसलिए तू सब घरेलू पशुओं और वन्य पशुओं से अधिक शापित है। तू पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा और मैं तेरे और इस स्त्री के मध्य में, और तेरे वंश और स्त्री के वंश में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा। फिर उसने स्त्री से कहा कि--मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बढ़ाऊंगा। तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा, और आदम से उसने कहा--जो तूने अपनी पत्नी की बात सुनी और जिस वृक्ष का फल न खाने के विषय में मैंने तुझे कहा था, तूने उसे खाया। इस कारण भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा, और तेरे लिए वह कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खायेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा।

उपरोक्त बाईबिल का वर्णन इसलिए लिख दिया कि आप यथार्थ से परिचित हो लें। अब आगे हम पुनः अपने विषय पर आते हैं और पृष्ठ २८४ से आगे लिखते हैं।

बाइबिल उत्पत्ति अध्याय ३ क्रमांक २२ तक

और उनके (आदम व हव्वा के) खुदा ने दोनों को आवाज़ देकर कहा-क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष (के निकट जाने) से रोक नही दिया था, क्या तुमसें नहीं कह दिया था कि शैतान तुम दोनों का वास्तविक शत्रु है.....?

मुहम्मद बिन कैस ने कहा है कि अल्लाह ने आवाज़ दी कि जब मैंने तुम्हें इस वृक्ष के खाने ने मना किया था, तो तुमने क्यों खाया ? आदम ने कहा —मुझे हव्वा ने खिला दिया ! अल्लाह ने हव्वा से पूछा कि तूने क्यों खिलाया ? तो उसने उत्तर दिया कि—मुझे सर्प ने परामर्श दिया। सर्प से पूछा कि—तूने ऐसा क्यों किया ? तो सर्प ने कहा कि—मुझे शैतान ने प्रेरित किया। इस पर अल्लाह ने कहा—ऐ हव्वा ! तूने इस वृक्ष को रक्त से पोषित किया, तू भी प्रतिमास खून आलूद (रक्तयुक्त) रहेगी और ऐ सर्प ! तेरे पैर मैं काट देता हुं तू मुँह (उदर) के बल (आधार) चलेगा और तुझे जो भी पायेगा तेरा सिर फोड़ देगा, और शैतान से कहा कि—तू फटकारा और धिकारा हुआ है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ८, पृष्ठ २८१ से २८३

जब शैतान ने सजदा न किया तो उस समय खुदा ने आदम को कहा वह निम्नलिखित आयत में वर्णित है !

तृतीय आयत—

कुल्ना या आदामो इन्ना हाज़ा अदुव्वअल्लका व लिज़ौजेका फ़ला युख़रेजन्नकुमा मिनल्जन्नते फ़तश्का। इन्ना लका अल्ला तजुवा फ़ीहा व ला तअरा। वअन्नका ला तज़मऊव फ़ीहा ला तज़हा, फ़वस्वसा इलैहिश्शैतानौ, काला या आदमौ हल अदुल्लोका अला शजरतिल्खुल्दे व मुल्किल्ला यब्ला। फ़ अकला मिन्हा फ़ब्दत

लहुमा सौ आतुहुमा व तफ़िका यख़्सेफाने अलैहे मा मिंव्वर किल्जन्नते व असा आदमो रब्बहू फ़ग़वा ।

क़ुर्आन, सूरत त्वाहा, पारा १६ रकू ७।१६

अर्थात्-तो हम (खुदा) ने कहा कि ऐ आदम ! निश्चित ही यह सैतान तेरा और तेरी पत्नी को, जो हव्वा है (जब शैतान ने आदम को सजदा न किया, उस अवसर पर आदम को पत्नी हव्वा का नामोनिशान भी न था किन्तु खुदा दोनों को सम्बोधित कर रहा है) न निकाल देवें तुम दोनों को स्वर्ग से, फिर तू कष्ट में पड़े ! निश्चय ही तेरे लिये स्वर्ग है और उसमें उपलब्ध है सब तेरे लिये उत्तम पदार्थ, और न तू नग्न होता है, इसलिए जो लिबास [वेशभूषा] चाहिये वह उपस्थित है, और न उसमें प्यासा होता है इस कारण कि चश्में और नहरें निरन्तर बहते हैं, और न धूप है कि स्वर्ग के वृक्षों की छाया सदैव फ़ैली हुई है ।

फिर शैतान ने स्वर्ग में आने के पश्चात् मिथ्या विचार डाला और प्रथम उसने स्वर्ग में आकर हजरत हव्वा को देखा और मृत्यु से उसे आतंकित किया । हजरत हव्वा ने आदम से कहा-वह भी मृत्यु से डरे, और शैतान जो वृद्ध का रूप धारण कर स्वर्ग में आया था, उससे मृत्यु का उपचार पूछा ? तो शैतान ने कहा कि ऐ आदम ! 'शजरतुल्खल्द' अर्थात् सदैव जीवनदायक वृक्ष के फल खाना ही इस रोग का उपचार है । क्या मार्ग दर्शन करूँ मैं तुम्हारा उस अनादि जीवन प्रदान करने वाले वृक्ष हेतु ? जो कोई उसमें से खाये कभी उसको मृत्यु न आए और बताऊँ मार्ग तुझे ऐसी बादशाही [राज्य-सत्ता] का जो कभी पुरातन न हो ! इस पर आदम ने कहा

कि-बतादे ! शैतान ने वही वृक्ष बता दिया, जिसके खाने से खुदा ने रोका हुआ था फिर खा लिया आदम और हव्वाने उस वृक्ष में से तो खुल गये उन दोनों के लिये उनके गुप्त स्थान अर्थात् स्वर्ग की वेशभूषा उन दोनों के शरीर से उतर गई और दोनों नग्न हो गये, और खड़े हो रहे, और चिपकाते (ढांपते) थे अपने गुप्तागों पर स्वर्ग के वृक्षों के पत्ते, और अवज्ञा की आदम ने अपने खुदा की आज्ञा। दुर्भाग्यवश उस वृक्ष का मेवा खा लेने से वह अपने लक्ष्य से वंचित हो गया।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ ४६

पाठक वृन्द ? आपने उपरोक्त उद्धृत तीनों आयतों और उनकी व्याख्याएं पढ़ ली। इनमें परस्पर कितना शाब्दिक मतभेद है। प्रथम आयत में है कि शैतान ने खुदा की शपथ खाई इस हेतु हमने खा लिया। द्वितीय आयत में है कि आदम फल नहीं खा रहा था किन्तु हव्वा ने उसे खिला दिया, और यह भी आप पढ़ चुके है कि आदम ने शराब पी रखी थी, हव्वा ने और भी पिला दी। फलस्वरूप आदम मदहोश हो गया तो उस समय हव्वा ने उसे वह फल खिलाया। उक्त दोनों आयतों (स्थानों) में सब जगह पर यही कहा कि शैतान के प्रेरित करने पर आदम और हव्वा ने फल खाया।

परन्तु अन्त की तृतीय आयत जो ऊपर उद्धृत है, उसमें न तो शैतान ने धोखा दिया, न प्रेरित ही किया। केवल मृत्यु से भयभीत किया। आदम व हव्वा ने मृत्यु का उपचार पूछा तो शैतान ने उसी वृक्ष को खाने हेतु कहा, जिसके लिये खुदा ने मना किया था। शैतान के बताने पर आदम ने कोई अस्वीकृति

प्रकट नहीं की और न हव्वा ने ही खिलाया, अपितु दोनों स्वयं वृक्ष के निकट जाकर फल खा आये ।

इन उपरोक्त उद्धृत आयतों में परस्पर कितना अन्तर और मतभेद दृष्टिगोचर हो रहा है ! क्या ऐसी पारस्परिक विरोधात्मक वाणी (कलाम) खुदा की ओर से हो सकती है ? कि कही शैतान द्वारा बहकाने पर खाना और कहीं अपने आप स्वयं जा कर खा लेना । सत्य और यथार्थ क्या है ? इसका निर्णय पाठक स्वयं कर वास्तविकता से परिचित हों ।

आदम और हव्वा के बहकने से-

कुर्आन पर एक जटिल प्रश्न

कुर्आन मे बारम्बार यह वर्णन आता है कि जो खुदा के नेक बंदे (भक्त) है, उनको शैतान नहीं बहका सकेगा । उन (भक्तों) की रक्षा का दायित्व खुदा पर है ।

हमने भी उपरोक्त उद्धृत आयतों में वर्णित इस बात का उल्लेख कुर्आन से कई बार किया है ।

कुर्आन के लेखक (?) ने खुदा की उक्त घोषणा को विभिन्न स्थानों पर बारम्बार दोहराया हैं और शैतान के मुख से भी इसकी पुष्टि करा ली कि खुदा के नेक बन्दों को मैं पथ-भ्रष्ट अथवा भ्रमित नहीं कर सकूंगा ।

प्रश्न यह है कि जिस आदम को खुदा ने स्वयं अपने दोनों हाथों से बनाया और फ़रिश्तों आदि से सजपा करवाया तथा प्रथम पैग़म्बर, समस्त पैग़म्बरों का पिता बनाया व उसे स्वयं

में स्थान दिया, इस (आदम) से अधिक नेक बन्दा और कौन होगा ? और आदम का स्वर्ग में रहना भी इस बात का प्रमाण है कि आदम ख़ुदा का नेक बन्दा और पैग़म्बर था किन्तु शैतान ने स्वर्ग में पहुंच कर उसको बहका दिया।

कुर्आन के अनुसार ख़ुदा ने जो नेक बन्दों की रक्षा के दायित्व की घोषणाएँ की थी ख़ुदा उसे पूर्ण न कर सका और ख़ुदा ने जो स्वर्ग के पहरेदार रखे थे उनकी आंखों में धूल झोंक कर शैतान स्वर्ग में प्रविष्ट हो गया और ख़ुदा के प्रथम पैग़म्बर और नेक बन्दे आदम को भ्रमित कर पथभ्रष्ट कर दिया !

कुर्आन के लेखक को भी कहना पड़ा कि **'व असा आदमो रब्बहू फ़ग़वा'** (कुर्आन, पारा १६ रकू ७:१६) अर्थात्-और नाफ़रमानी (अवज्ञा) की आदम ने अपने रब्ब (ख़ुदा) की और गुमराह (पथभ्रष्ट) हुआ। **(अनुवाद-शाह रफ़ीउद्दीन)**

हम पूछते हैं कि क्या आदम नेक बन्दा नहीं था ? यह तो कोई भी मुसलमान कहने को तत्पर नहीं हो सकता। यदि था ? तो फिर जब शैतान ने आदम को बहका कर अवज्ञाकारी और पथभ्रष्ट बना दिया तो उन बहुसख्यक आयतों का क्या मूल्य होगा और उनको प्रामाणिक कैसे स्वीकार किया जायेगा ? जिन में बारम्बार घोषित किया कि मेरे (ख़ुदा के) नेकबन्दों को तू (शैतान) नहीं बहका सकेगा। उनकी (नेक बन्दों की) रक्षा का दायित्व (ज़िम्मा) हम (ख़ुदा) पर है।' किन्तु अब आदम के भ्रमित होने से वे समस्त आयतें अन्यथा और अप्रामाणिक सिद्ध हो गई। क्या उन समस्त आयतों को सत्य प्रमाणित करने का मुसलमानों के पास कोई ठोस आधार है ? उपरोक्त

वर्णन से स्वत: ही सिद्ध हो जाता है, कि कुर्आन ख़ुदा का कलाम (कथन) नहीं. क्योंकि इन आयतों से ख़ुदा पर प्रतिज्ञा भंग करने का दोष आता है और मिथ्या आश्वासन भी प्रकट होता है। कुर्आन के समर्थकों और श्रद्धावान् लोगों को इन आयतों पर विचार कर निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए कि सत्य और यथार्थ क्या है ?

आदम और शैतान: कुछ विशेष वाक्य

हम पूर्व में लिख चुके हैं कि ख़ुदा ने आदम को मक्का और ताइफ के मध्य उत्पन्न किया। तफ़सीर मज़हरी के अनुसार **'मा कुन्तुम तक्तमून'** की व्याख्या में लिखा है कि-अल्लामा बग़वी ने इब्ने अब्बास का कथन उद्धृत किया है कि हज़रत आदम का शरीर जब मक्का और ताइफ के मध्य पड़ा था तब शैतान उधर से गुज़रा और कहा कि इसको क्यों उत्पन्न किया गया है ? फिर उसके मुँह के मार्ग से भीतर प्रविष्ट हो पीछे के मार्ग से निकल आया और उसने कहा कि यह सृष्टि में अपने आपको नहीं बचा सकेगा, क्योंकि यह भीतर से खोखला (पोला) है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा १, पृष्ठ ९०

फ़रिश्तों ने ख़ुदा की आज्ञा से मक्का और ताईफ के मध्य नेमान नामक स्थान पर आदम का पुतला बनाया और ख़ुदा ने अपने हाथों की शक्ति से उसकी आकृति, हाथ-पैर, मुँह-नाक आदि बनाए।

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा १, पृष्ठ ९४

एक शंका और उसका समाधान

खुदा ने फ़रिश्तों से कहा कि—जब आदम में जीवन स्थिर हो जाये तो उसके लिये सजदा करो। (इस बात से पाठकों को संदेह (शंका) होगा कि आदम को तो मक्का और ताइफ के मध्य बना कर जीवित (उत्पन्न) किया और सजदा का कार्यक्रम आसमान पर हुआ, तो आदम पृथ्वी से आसमान पर कैसे पहुंच गया ? पृथ्वी से आसमान पर ले जाने हेतु खुदा ने फरिश्तों से कहा कि एक तख्त आदम के लिये बनाओ। उस तख्त के ३०० पाये थे। एक पाये से दुसरे पाये तक सैकड़ों वर्षो का मार्ग था। तख्त बनाया गया (और आदम का शृंगार किया गया) स्वर्ग के रत्नादि उसके कानों में और स्वर्ग के दस्ताने उसके हाथों में और अमूल्य अंगूठियां ऊँगलियों में डाल दी तथा नेकी की पोशाक (वेशभूषा) पहना दी और मस्तक पर करामात [प्रतिष्ठा] का ताज पहनाया. .. .... फिर फ़रिश्ते उस सौभाग्यशाली तख्त को अपने कंधों पर उठाकर आसमान पर ले गये और उसे खुदा के सिंहासन [अर्श] के बराबर [फ़रिश्तों ने ले जाकर] रख दिया। फिर उस समय खुदा ने सज्दा करने का आदेश दिया। सजदा का कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात् फ़रिश्तों ने आदम को स्वर्ग के आभूषण पहिनाए और रत्न-जड़ित मुकुट व लाल जवाहिरातों से जड़ा कमरबन्द [करधनी] पहना कर तख्त पर आरूढ़ कर दिया और ७-७ हजार फ़रिश्ते उस तख्त के दांए एव बांए उठाने हेतु लग गये और ७ हजार फ़रिश्ते आदम के प्रशंसा-गीत गाते हुए चले और फ़रिश्तों ने आदम के तख्त को लेजाकर स्वर्ग में रख दिया।

अजायबुल क़सस पृष्ठ ४०-४२

सजदा में कितनी देर रहे

कुछ लोगों का कथन है कि सजदा में १०० वर्षों तक और कुछ लोगों ने कहा है कि फ़रिश्ते ५०० वर्षों तक आदम के सम्मुख सजदे में पड़े रहे। अब आप शैतान के कलाम को देखते जायें।

जब शैतान ने आदम को सजदा न किया तो उसे खुदा ने निकाल दिया, और एक रवायत [कथन] में है कि शैतान को आसमान से दरिया [समुन्द्र] में डाल दिया और वह कई वर्षों तक उसमें डूबा रहा। यह आदम की गाथा आप ध्यानपूर्वक पढ़ें और देखें कि जब आदम को स्वर्ग में रक्खा गया, उस समय आदम अकेला ही था। खुदा ने उस समय आदम को कुछ नहीं कहा। अ़जाएबुल क़सस पृष्ठ ४१-४२

शैतान का यूसुफ़ को मार डालने का परामर्श

कथा इस प्रकार है कि यूसुफ़ के अन्य भाई भी थे और यूसुफ़ अपने पिता को प्रिय था। अन्य भाईयों ने सोचा कि हम अत्यधिक कार्य करने वाले हैं, परन्तु पिता यूसुफ और उसके छोटे भाई से ही अधिक प्रेम करते हैं। वे परस्पर चर्चा कर रहे थे, जिसे सुन कर शैतान वृद्ध पुरुष के रूप में उनके निकट आया व बोला कि यूसुफ़ तुम्हें दास (गुलाम) बनाना चाहता है। उन्होंने पूछा कि बड़े मियां! तो फिर क्या उपाय करें? इस पर शैतान ने कहा-**निक्तुलू युसूफा अवितरहूहो अर्जंय्यांल्लो लकुम वज्हो अबीकुम व तकूनू मिम्बादेही क़ौमन स्वालेहीन।**

क़ुर्आन, पारा १३ रकू २।१२

अर्थात्–शैतान ने कहा कि–हत्या करो यूसुफ़ की या डाल दो उसे किसी भूमि पर जो बस्ती से दूर निर्जन हो या ऐसे स्थान पर जहाँ हिंसक पशु निवास करते हों, जिससे उसकी अनुपस्थिति में तुम्हारे पिता का ध्यान पूर्णरुपेण तुम्हारी ही ओर आकृष्ट हो जायेगा। तफ़सीर क़ादरी भाग १, पृष्ठ ४८६

तफ़सीर हक़्क़ानी ने इस कथा पर विस्तृत प्रकाश डाला है, जिसे पाठकों के ज्ञातव्य हेतु उद्धृत कर रहे हैं–याक़ूब (यूसुफ़ का पिता) अपने पिता के निर्देशानुसार हारान की ओर अपने सगे मामा नहूर के पुत्र लाबुन के पास चले गये। लाबुन की दो पुत्रियां थी। जिसमें बड़ी का नाम लियाह था, जिसकी आँखे चौधियाती थीं और छोटी का नाम राहिल अथवा राहील था, जो अतिव सौन्दर्यवान् थी। याक़ूब राहील पर आसक्त (आशिक) हो गया (यह ऐसे हैं इस्लाम के पैग़म्बर) ७ वर्षो तक लाबुन की बकरियाँ चराने के अनुबंध पर विवाह निर्धारित हुआ और अवधि पूर्ण होने पर याक़ूब का विवाह राहील के साथ कर दिया गया, किन्तु प्रातः जागने पर उसने राहील के स्थान पर लियाह को पाया तो उसने इस धोखे की शिकायत अपने मामा से की, तो उसने एक सप्ताह के उपरांत याक़ूब का विवाह राहिल से भी कर दिया। लियाह के गर्भ से ६ सन्तानें और उसकी दासी ज़ुल्फा, जो दहेज में आई थी के भी २ सन्तानें हुई और राहील से यूसुफ़ हुआ जो अत्यन्त रूपवान था और दूसरा लड़का बिनयामीन हुआ। इसके पश्चात् राहील की मृत्यु हो गई और राहिल के साथ जो दासी आई थी, उससे भी २ पुत्र हुए। फिर २० वर्षो वहां निवास करने के पश्चात् याक़ूब अपनी पत्नीयों, सन्तानों तथा बकरियों की रेवड़ सहित अपने

पैतृक प्रदेश के ग्राम सैलून मे आकर बस गया। यहीं से यूसूफ़ के भाईयों ने यूसुफ़ को ले जाकर एक वीरान कुएँ में डाल दिया था। तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा १३ पृष्ठ २६-२७

यूसुफ़ अपने पिता को इसलिए अत्यधिक प्रिय था कि वह उनकी चहेती पत्नी राहील के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। यह यूसुफ़ को कुएँ में डालने का कृत्य यूसुफ़ के भाईयों ने शैतान के परामर्श और निर्देश पर किया।

क़यामत के दिन शैतान का प्रवचन

क़यामत की कल्पना सर्वथा मिथ्या है और इसका कोई प्रमाणित आधार नहीं। यह केवल कुर्आन के लेखक की मात्र निराधार कल्पना हैं।

कुर्आन के लेखक ने अपने अनुयाईयों को प्रलोभन व सन्तोष हेतु यह सिद्धांत प्रस्तुत किया है और उसे बिना प्रमाण के ही खुदा के नाम पर कुर्आन में लिख दिया है। क़यामत के दिन जब सब निर्णय हो चुकेंगे तो उस समय शैतान कहेगा:--

'वा कालश्शेतानों लम्मा कुज़्ज़ियलअमरी इन्नल्लाहा वाअदकुम वादल्हक़े व वअद्तुकुम फ़अख़्लफ़्तोकुम वा मा काना लिया अलैकुम्मिन सुल्तानिन इल्ला अन दअौतुकुम फ़स्तजब्तुमली फ़ला तलूमूनीवालूमू अन्फ़सकुम मा अना बेमुस्रिख़िकुमव मा अन्तमबे-मुस्रिख़िय्या इन्नी कफ़र्तो बिमा अशरक्तुमूने मिन कब्लो इन्न-ज़ालेमीना लहुम अज़ाबुन अलीम

कुर्आन पारा १३, सूरत इब्राहीम, रकू ४।१६

अर्थात्-क़यामत में जब सब प्रकरणों का निर्णय हो चुकेगा अर्थात् स्वर्ग को जाने वाले स्वर्ग में और नर्क को जाने वाले नर्क में जा चुकेंगे तो शैतान काफ़िरों से कहेगा ।

मक़ातल ने कहा है कि-शैतान के लिये एक तख़्त रखा जायेगा । जब सब काफ़िर अपने नेताओं सहित उस तख़्त के समीप एकत्रित होंगे, और मनुष्यों व जिन्नों के मध्य वह (शैतान) अपना प्रवचन करेगा ।

इब्ने जरीर, इब्ने मरदूय्या, इब्ने अबी हातिम, बग़वी तिबरानी और इब्ने मुबारक ने हज़रत अक़बा बिन आमर के कथनानुसार लिखा है कि रसूलिल्लाह ने कहा है, कि जब अल्लाह उन सब अगलों-पिछलों को एकत्रित करके उनका निर्णय कर चुकेगा... ... तो सब लोग जाकर हज़रत आदम से निवेदन करेंगे । आदम हज़रत इब्राहीम के पास भेजेगा । हज़रत इब्राहीम हज़रत मूसा के पास भेजेगा और हज़रत मूसा हज़रत ईसा के पास भेजेगा और हज़रत ईसा कहेंगे कि तुम उम्मी नबी अरबी (हज़रत मुहम्मद) के पास जाओ । वह सबसे अधिक प्रतिष्ठित और सम्मानित है ।

हज़रत मुहम्मद कहते हैं कि अन्त में मनुष्य मेरे पास आयेंगे और अल्लाह मुझे खड़ा होकर प्रार्थना करने की आज्ञा देंगे । फिर मेरी मजलिस (सभा) अद्वितीय, अत्यन्त पवित्र एवं सुगंधित करदी जायेगी । फिर मैं अपने ख़ुदा के सम्मुख उपस्थित होकर शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करूंगा और अल्लाह मेरी सिफ़ारिश स्वीकार करेगा और मुझे सिर के बालों से पैर के नाखूनों तक नूर अर्थात् दैवी आभा से परिपूर्ण कर देगा । यह दृश्य देख कर काफ़िर कहेंगे कि मुसलमानों को तो सिफ़ारिश करने वाला

मिल गया; अब हमारी सिफारिश कौन करे ? फिर स्वयं ही उत्तर देंगे अब तो शैतान ही, जिसने हमको पथभ्रष्ट किया था, हमारे साथ है, और कोई सिफारिश करने वाला विद्यमान ही नहीं है। सुतराम् (अन्ततः) यह लोग शैतान से जाकर कहेंगे कि तूने ही हमें पथभ्रष्ट किया था; अब तू ही हमारी सिफारिश कर। शैतान ज्योंही सभा में उठेगा तो अत्यधिक दुर्गन्ध व्याप्त हो जायेगी। फिर शैतान उन्हें नर्क की ओर ले जाएगा और कहेगा–निस्सन्देह अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था, उसने उसको पूर्ण कर दिया और मैंने तुमसे असत्य वादा किया था.... कि बुत्त (मूर्तियाँ) तुम्हारी सिफारिश करेगी। बस, मैंने आज वचन भंग किया अर्थात् मेरे वचन के प्रतिकूल परिणाम हुआ। पुनः शैतान कहेगा कि मैंने तुम्हें कुफ्र (अधर्म) व पाप मे प्रवृत्त करने के लिये शक्ति का प्रयोग नहीं किया मैंने तो केवल परामर्श दिया था और उसके पक्ष में तुम्हारे सम्मुख कोई दलील तक उपस्थित नहीं की थी। मैंने तो मात्र तुमको कुफ्र और अपराध की ओर बहकावा (भ्रम) देकर आमन्त्रित किया था और यह बहकावा कोई दलील न था। बस, तुमने मेरी बात अंगीकार कर ली और जिसने सत्य मार्ग प्रस्तुत किया था, उसकी बात अस्वीकार कर दी। अब तुम मेरे बहकाने पर मेरी निन्दा न करो अपितु अपनी ही मलामत (निंदा) करो, क्योंकि तुमने मेरी बात मानी और खुदा की नहीं मानी। (कैसी मिथ्या कल्पना है)

फिर शैतान बोला–मैं तुम्हारी फ़रियाद (पुकार)को पूर्ण नहीं कर सकता, कि तुमको अज़ाब (दुःख) से बचा लूं और न तुम मेरी ही फ़रियाद को पहुँचा सकते ही, कि मुझे दुःख से

बचा लो। मैं स्वयं तुम्हारे इस कर्म से दुखी हूं कि तुम संसार में मुझे खुदा का शरीक (साथी) बनाते थे। मैं तुम्हारे इस कर्म से घृणा करता हूँ। निस्सन्देह अत्याचारियों के लिये बड़ा ही दुःख और कष्ट है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा १३ पृ २९८ से ३००

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा १३, पृष्ठ ३२-३३ में भी शैतान ने यही बात कही हैं, जो ऊपर लिखी गई है।

शैतान ने पैग़म्बरों [यहां तक कि हज़रत मुहम्मद] को भी नहीं छोड़ा

घटना इस प्रकार है कि जब हज़रत मुहम्मद सूरत नज्म की आयतें पढ़ रहे थे, तो शैतान ने उनकी तलावत (प्रवचन) में मिश्रण कर दिया। जिसका विवरण हम विस्तार-पूर्वक लिख रहे हैं:—

व मा अरसलना मिन कब्लिका मिर्रसूलिव्वाला निबिय्यन इल्ला इज़ा तमन्ना अल्कश्शैतानों फ़यन सखुल्लाहो मा युल्कि-श्शैतानों सुम्मा युह कमुल्लाहो आयातेही वल्लाहो अलीमुन हकीम। क़ुर्आन, सूरतहज्ज, पारा १७ रकू ७।१४

तफ़सीर क़ादरी में लिखा है कि विश्वसनीय और प्रामाणिक पुस्तकों, जैसे मौतमिद'—"फिलमुक्तदा" और "रोज़ातुलए हबाब" आदि में यह प्रकरण वर्णित है। जो अहले सुन्नत के निकट मुस्तहसन (अर्थात् अहले सुन्नत जमाअत जिसको निर्विवाद सत्य एवं श्रेष्ठ मानता) है।

लिखा है कि—जब सूरत नजम नाज़िल हुई अर्थात् खुद्ध

से उतरी, तो हज़रत मुहम्मद मस्जिदे हराम (मक्का) के भीतर क़ुरैश के समूह में यह सूरत पढ़ते थे, और आयतों के मध्य ठहरते जाते थे, ताकि लोग ध्यान से सुनकर याद करलें। जब पढ़ते-पढ़ते हज़रत यहां तक पहुँचे—'अफ़रा ऐतुमुल्लाता वल्उज्जा व मनातिस्सालिस्तिल उख़्रा' (क़ुर्आन पारा २७) और ठहर गये तो शैतान ने अवसर पाकर मुशरकों के कान में पहुंचा दिया कि-'तिल्कलग़रा नीक़ल्उल्ला वा शफाअत हुन्नालि-तुर्तजा' अर्थात् लात, उज्ज़ा और मनात कौम के बुजुर्ग हैं (यह तीन मूर्तियां थी, जिनको क़ुरैश पूजते थे) या ऊँचे उड़नेवाले पक्षी हैं। उनसे सिफ़ारिश करने की (ख़ुदा से) आशा करना चाहिए। काफ़िर लोग यह वाक्य सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और समझे कि हज़रत मुहम्मद ने उनके बुतों (मूर्तियों) की प्रशंसा की। सूरत के अन्त में सजदा की आयत पढ़कर मुहम्मद सा० ने सजदा किया तो अक्सर (बहुधा) मुशरिक भी अन्य मुसलमानों के साथ सजदे में सम्मिलित हो गये।

उसके पश्चात् हज़रत मुहम्मद के पास आकर जिब्रील ने यह सारा हाल कहा। इस बात को सुनकर हज़रत मुहम्मद का हृदय अत्यन्त शोकातुर हो गया तो ख़ुदा ने उनके हृदय को संतोष देने हेतु आयत उतारी जिसका अर्थ है-और हम (ख़ुदा) ने तुझसे पूर्व किसी रसूल और नबी को नही भेजा.....किन्तु जब भी उन्होंने तलावत (पढ़ना प्रारम्भ) की तो शैतान ने उनकी तलावत में जो कुछ भी चाहा, डाल दिया (पढ़ते समय) इस कारण लोगों को भ्रम हुआ कि यह भी पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद) ही ने पढ़ा है, जैसे हमारे रसूललिल्लाह ने जब तलावत की (पढ़ा) तो उस शैतान ने, जिसका नाम अवयज़ है,

आप जैसी आवाज [स्वर] बनाकर यह वाक्य 'तिल्कलगरा नीकल्उला वा इन्ना शफाअत हुन्नालितुर्तजा' पढ़ दिया। उस समय हज़रत मुहम्मद सूरत नजुम पढ़ रहे थे और यहां 'वा मनातस्सालिस्तल उख़्रा' तक पहुंचे थे। तब लोगों ने यह गुमान किया कि उपरोक्त वाक्य भी हज़रत मुहम्मद ने ही पढ़े हैं।

फिर ख़ुदा बातिल [मिथ्या] को ज़ाइल [निरस्त] कर देता है, उस अंश को जो शैतान ने सम्मिलित कर दिया हो। फिर प्रमाणित करता है अल्लाह अपनी आयतें जो उसका पैग़म्बर [हज़रत मुहम्मद] पढ़ता है, और अल्लाह जानने वाला है, उन लोगों के हाल, और उन पर सत्य का आदेश करने वाला है।

तफ़सीर क़ादरी, पारा १७, पृ. ८४-८५

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट प्रमाणित है कि हज़रत मुहम्मद के पढ़ने के समय शैतान ने अपने कुछ वाक्य मिला दिये, जिनसे मूर्ति पूजा प्रमाणित होती थी।

इसी प्रकार इस प्रकरण को तफ़सीर क़ुर्आनुल अ़ज़ीम ने और भी विस्तृत रूप से स्पष्ट किया है और पुष्टि की है।

(व मा अरसलना मिन कब्लिका मिंरसूलन) हुवन्नबिय्यो अमरून बित्तबलीग़े (व ला नबिय्यिन) ऐ लम योमिरू बित्तबलीग़े (इल्ला इजा तमन्ना) करा (अल्कश्शैतानों फ़ी उमनिय्यते) करा-अतहू मा लैसा मिनल्कुर्आने मिम्मा यजां मल्मुसैला अलैहिय वा कद करन्नबिय्या सल्लअम फ़ी सूरतिन्नजमे बमजलिसे मिन कुरैशिन वाद अफ़रा ऐतुल्मुल्लाता वल्उज्जा वा मनातिस्सालिसा तुल उख़्रा व अल्कश्शैतानों अलालिसाने ही सलिल्लाहे अलैहे वा सल्लम मिनग़ैरे इल्मेही सल्लअम बिही तिल्कलग़ारानी कल्उला व इन्ना शफ़ाअत हुन्ना लतुर्तजा, फ़कहू बिज़ालेका

सुम्मा अखबरहू जिब्रीलो बिमा अल्कश्शैतानों अलालिसानेही मिन ज़ालिका फहुज़्ने ही फ़सला बिहाज़ो हिमायते लियुत म अन्ना (फयन सखुल्लाहो) व यब्तलो (मा युल्कश्शैतानो सुम्मा योह कमुल्लाहो आयाते ही) युसब्बिनुह (वल्लाहो अलीमुन) बा अल्काहिश्शैतानों। तफ़सीर कुर्आनुल अज़ीम, भाग २, पृष्ठ २६

यह सूरतुल हज्ज की व्याख्या है। यद्यपि इसके अर्थ पूर्व में आ चुके हैं; किन्तु किंचित अन्तर होने से पुनः लिख रहे हैं। इन आयतों में हज़रत मुहम्मद को सम्बोधित किया गया है।

ऐ मुहम्मद ! हम [खुदा] ने तुझसे पूर्व कोई रसूल या और नबी नहीं भेजा, कि जब उसने पढ़ा [तलावत की] किन्तु इसके पढ़ने में शैतान ने अपनी ओर से कुछ मिश्रण कर दिया [अर्थात् जितने भी रसूल और नबी मैंने तुझसे पूर्व भेजे, उन सभी के पढ़ने में शैतान ने अपनी ओर से कुछ मिश्रण कर दिया]

इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद क़ुरैश की सभा में सूरत नजम पढ़ रहे थे। जब इस स्थान "लात उज्ज़ा और मनात" तक पहुंचे तो उस समय शैतान ने हज़रत मुहम्मद की ज़बान [वाणी] में यह डाल दिया, कि यह तीनों देवियाँ लात--उज्ज़ा और मनात महान् हैं और इनसे ही सिफ़ारिश की आशा की जा सकती है। इससे क़ाफिर लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर इस बात की सूचना जिब्रील ने मुहम्मद सा० को दी कि यह शब्द शैतान ने आपकी ज़ुबान पर डाल दिये थे। यह सूचना पाकर हज़रत मुहम्मद अत्यन्त शोकातुर हुए। हज़रत मुहम्मद को सन्तोष देने हेतु उपरोक्त सूरत हज्ज की आयतें [ऐसा कोई भी रसूल या नबी तुझसे पूर्व नहीं हुआ, जिसके वचनों में शैतान ने अपनी ओर से कुछ न मिलाया हो] उतारी।

अस्तु खुदा शैतान के मिश्रण को भलिभांति जानता है। अतः शैतान जो मिश्रण करता है, उसे खुदा निरस्त कर देता है और अपनी आयतों के शुद्ध स्वरूप की पुष्टि करता है।

जो कुछ तफ़सीरूल अज़ीम में लिखा है, अक्षरशः वही तफ़सीर जलालैन पारा १७ पृष्ठ २८४ में और लगभग ऐसा ही और लबाबन नक़ूल फ़ी असबाबिन्नज़ूल भाग २ पृष्ठ २२ में भी लिखा है।

हमने इस पुस्तक में प्रारम्भ से ही इस बात का प्रतिपादन किया है कि मुस्लिम विद्वान् किसी भी विषय पर एकमत नहीं हैं। यहां पर भी यही स्थिति है।

कुछ मुस्लिम विद्वान् इस प्रसंग को अस्वीकार और बहुत से विद्वान् (मुस्लिम) इसे स्वीकार करते है। जैसा कि हमने पूर्व में तफ़सीर कादरी के आधार पर लिखा कि अहले सुन्नत-वल जमायत शैतान के मिश्रण की इस कथा को स्वीकारते हैं।

तफ़सीर जलालैन ने दोनों पक्षों के मत देकर लिखा:—

अलकिस्सातो क़त्तबे आह्ल मफ़स्सेरूना फ़ अनकराहू जमाअतुन बा आखेरूना हाग्निया। तफ़सीर जलालैन पृष्ठ २८४

अर्थात्-कुछ विद्वानों ने शैतान के मिश्रण को स्वीकारा है व कुछ ने अस्वीकार किया है।

परन्तु हम अधिकारपूर्वक कहेंगे कि सूरतुल हज्ज की आयतों में शैतान के मिश्रण को अस्वीकार करने हेतु किञ्चित् मात्र भी स्थान नहीं है। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए हम कह सकते हैं कि जिन लोगों ने इसे नकारा (अस्वीकारा) है, वह दोष पर आवरण (पर्दा) डालने के लिये ही है।

उक्त तीनों अरबी तफ़सीरों के प्रमाण जो ऊपर उद्धृत

किये है, उनसे स्पष्टतया सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद की जिव्हा पर शैतान ने अपने वचन डाले; किन्तु तफ़सीर कादरी में जो यह लिखा है कि हज़रत महोदय ठहर-ठहर कर पढ़ते थे, तो जब इस स्थान पर आकर ठहरे तो शैतान ने हज़रत मुहम्मद के स्वरों में ये वाक्य बोल दिये, परन्तु कोई भी व्यक्ति इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि पढ़ने में इतना लम्बा विराम (ठहराव) सम्भव हो सके। अतः कादरी (तफ़सीर) के लेखक ने भी यह बात लिखकर वस्तुस्थिति पर पर्दा (आवरण) डालने का यत्न किया है।

हां, एक बात मुस्लिम बन्धुओं से अवश्य कहना है कि शैतान की अरबी (भाषा) को कुर्आन की अरबी से मिलाकर देख लें। क्या शैतान की अरबी कुर्आन की अरबी से न्यून (कम) है ? इससे यह सिद्ध हो गया कि शैतान भी खुदा के समान अरबी में आयतें बना सकता है ! तो मुस्लिम बन्धुओं, का यह दावा (दृढ़ विश्वास) कहाँ तक मान्य और उचित हो सकता है कि कुर्आन जैसी (समान) आयतें कोई नहीं बना सकता !

हमने इस प्रकरण में शैतान की बहुत सी आयतें लिखी हैं, जो कुर्आन के साथ ही पढ़ी जाती है, परन्तु आज तक किसी भी मुस्लिम बन्धु को यह भान नहीं हो सका कि शैतान की आयतों की अरबी, कुर्आन की अन्यान्य आयतों से सादृश्य में किंचित् भी न्यून है ? अतः, इस प्रकरण के लिखने का यही प्रयोजन है कि मुस्लिम बन्धुजन इस बात से परिचित हों कि शैतान जैसा पथभ्रष्ट और मिथ्याभाषी व्यक्ति भी कुर्आन जैसी आयतें बना सकता है।

संसार में इस समय भी अर्बों मनुष्य हैं, किन्तु एक भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि उसके पास शैतान बहकाने को आया हो। मैंने सैकड़ों व्यक्तियों से पूछकर यही निष्कर्ष देखा-पाया कि शैतान किसी के भी पास नहीं आता और उसके अस्तित्व व सत्ता का कोई भी चिन्ह नहीं है। यह एक निराधार, निरर्थक, कपोल-कल्पना मात्र ही है।

अब हम शैतान के इस प्रकरण को यहीं समाप्त करके अग्रिम प्रकरण 'कुर्आन में फ़रिश्तों के कलाम' विषयक विचार विनियम लिखेंगे।

कुर्आन में फ़रिश्तों का कलाम

जब साधारण मुसलमान जन कुर्आन पढ़ते हैं, तो अपने विश्वास और आस्था के अनुसार जो कुछ क़ुर्आन में लिखा है, सबको ही ख़ुदा का कलाम (वाणी) समझते हैं, क्योंकि वे क़ुर्आन का पाठ करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते। यह कितनी गम्भीर भ्रान्ति है कि भारत के ८०./' प्रतिशत से भी अधिक मुसलमान काफ़िरों-अरबवासियों-हज़रत मुहम्मद के सहाबा (मित्रो) शैतान, फ़रिश्तों, समस्त पैग़म्बरों--फ़िरऔन--उसके जादूगरों और पैग़म्बरों के समकालीन मूर्तिपूजकों आदि के कलाम (कथनों) को ख़ुदा की वाणी (कलाम) ही मान कर कुर्आन का पाठ करते हैं। क्या यह मिथ्या विश्वास और अविवेकता नहीं है ?

अस्तु इस बात से हमारा कोई विशेष प्रयोजन नहीं। हम तो यहां पर यह लिख रहे है कि **'कुर्आन में फ़रिश्तों का कलाम'** भी है। सो उसी विषय को प्रारम्भ करते हैं।

कुर्आन के प्रथम पारा (अध्याय) में ही लिखा है कि खुदा ने फ़रिश्तों के सम्मुख अपना यह विचार प्रकट किया कि मैं पृथ्वी में एक खलीफ़ा बनाने वाला हूँ, तो फ़रिश्तों ने इस विचार के सम्बन्ध में आपत्ति प्रस्तुत की:—

कालू अ तजअलो फ़ीहा मंय्यु फ़सेदो फ़ीहा व यस्फ़े कुद्दे मा आ व नहनो नुसब्बेहो बेहम्देका व नुकद्दे सोलक्, काला इन्नी आलमो माला तालमून। कुर्आन, पारा १, रकू ४।४

अर्थात्—(खुदा के खलीफ़ा बनाने के विचार पर) फ़रिश्तों ने कहा कि-क्या तू उत्पन्न करता है पृथ्वी में से उसे जो फ़साद करे, अवज्ञाकारी हो, पृथ्वी में गिराये लहू मनुष्यों का बिना कारण ही (व्याख्याकार ने लिखा कि मनुष्य के फ़सादी (झगड़ालू) और हत्यारा होने का पता फ़रिश्तों को खुदा या लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित तख्ती) से हुआ और स्थिति यह है कि हम (फ़रिश्तें) पवित्रतापूर्वक तेरी उपासना करते हैं, और कि वह तेरी स्तुति का कारण है, और चर्चा करते हैं तेरी पवित्रता से।

इस पर अल्लाह ने कहा – इस खलीफ़ा के विषय में जो मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते:—

व अल्लमा आदमल्अस्माआ कुल्लहा, सुम्मा अरज़हुम अलल्मलाएकते, फ़काला अंबेऊनी बेअस्माए हाऊलाए इनकुन्तम स्वादेकीन। कुर्आन, पारा १, रकू ४।४

अर्थात्-और सिखाये नाम सृष्टि के सब के सब खुदा ने, फिर प्रस्तुत किया उन नाम वालों की जातों (व्यक्तियों) की उन फ़रिश्तों के (सामने), फिर कहा— उनके नाम बताओ यदि

तुम सच्चे हो (यह वही फ़रिश्ते थे जिन्होंने कहा था, कि मनुष्य पृथ्वी पर फ़साद [झगड़ा] करेगा) फ़रिश्तों ने उत्तर दिया:—

कालू सुब्हानका ला इल्मा लना इल्ला मा अल्लमतना इन्नका अन्तलअलीमुल्हकीम। [फरिश्तों की अरबी कैसी उत्तम है]

अर्थात्-[फ़रिश्तों ने कहा] कि पवित्रता है तेरे लिये, हमको इसका कोई ज्ञान नहीं, किन्तु उसी का ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया। **तफसीर कादरी, भाग १, पृष्ठ ९-१०**

पाठकवृन्द ! आपने इस (उक्त) कथा को पढ़ लिया, जब खुदा ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं पृथ्वी में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं, तो फ़रिश्तों ने उस पर यह आपत्ति की, कि ऐसा व्यक्ति ख़लीफ़ा बनाओ जो परस्पर फ़साद (झगड़ा) और हत्यायें करें ! (तो उचित था कि खुदा इस आपत्ति का कुछ युक्तियुक्त समाधान करता किन्तु खुदा ने यह कह कर उन्हें मौन कर दिया) कि जो मैं जानता हूं तुम नहीं जानते।

इसके पश्चात् खुदा ने एक समाधान सोचा, कि आदम को कुछ नाम सिखा दिये और फ़रिश्तों के सम्मुख आदम को और उन वस्तुओं को प्रस्तुत कर उनसे कहा कि इन वस्तुओं के नाम बताओ ? उन फ़रिश्तों ने उन वस्तुओं को कभी न देखा था और न उनके नाम ही सुने थे। वह क्या और कैसे बताते ! (परीक्षक छात्रों को यदि कोई ऐसा प्रश्न दे कि उसके प्रश्नों के सम्बन्ध में न कभी पढ़ा हो और न वे वस्तुएँ व्यवहार में आई हो तो छात्र उस पर क्या लिख सकते हैं, वे तो उन्हीं प्रश्नों के उत्तर देंगे जो फ़रिश्तों ने खुदा को दिया[उन्हीं [फ़रिश्तों] ने कहा-हमें

इनका ज्ञान नहीं, क्योंकि आप [खुदा] ने कभी हमको यह बतायें ही नहीं ! [ऐसे परीक्षक को, जो छात्रों को ऐसा प्रश्न-पत्र दे जिसे हल करने की उनमें योग्यता [पात्रता] ही नहीं, तो इसके अतिरिक्त क्या कह सकते हैं कि परीक्षक की नीयत छात्रों को अनुत्तीर्ण करने की है ।] यही खुदा ने उन फ़रिश्तों के साथ किया । इधर आदम को वह प्रश्न-पत्र भली प्रकार समझा दिया, उधर फ़रिश्तों को ज्ञात नहीं था, तो आवश्यक था कि फ़रिश्ते अपनी विवशता प्रकट करते । आदम तो खुदा से प्रश्न-पत्र समझकर ही गया था । उसके नेकनीयत परीक्षक [खुदा[ने वही प्रश्न [जो समझाये थे] आदम से किये, तो उसने तत्काल उत्तर दे दिये । [क्यों खुदा कैसा परीक्षक है ?] फ़रिश्तों ने सभ्यतापूर्वक कह भी दिया कि हमें तो तूने [खुदा ने] आज तक यह बताया ही नहीं [अर्थात् उसे बताया और हमें नहीं]

फ़रिश्तों ने जो कहा था वह कुर्आन के निम्न क़ौल (वचन) के अनुसार है । कुर्आन में आया है 'मा ख़लक़र्तुल्जिन्ना वल्इन्सा इल्ला लेयाबोदून' अर्थात्—हम (खुदा) ने मनुष्यों और जिन्नों को इसलिए उत्पन्न किया, ताकि वे हमारी उपासना करें । फ़रिश्तों ने भी ठीक यही कहा था कि हम आपकी स्तुति प्रार्थना और उपासना करते हैं । कोई पाप भी नही करते । आप (खुदा) इस फ़सादी [झगड़ालू] और निष्पाप मनुष्यों के घातक को क्यों ख़लीफ़ा बना रहे हो ? इसका उत्तर तो यह होना चाहिए था कि जिसे मैं खलीफ़ा बना रहा हूं वह तुमसे अधिक बढ़कर मेरा उपासक और पवित्र है । किन्तु इस न्यायकारी खुदा ने यह किया कि आदम को कुछ वस्तुओं के नाम सिखा—

पढ़ा कर परीक्षा ली और फ़रिश्तों पर अपनी कृति (आदम) को उच्च प्रमाणित कर दिया (क्या इस प्रकार अन्याय से उच्चता प्रमाणित करना ख़ुदा (ईश्वर) का काम है और ख़ुदा को क्या आवश्यकता थी कि वह छल-प्रपंच में प्रवृत्त होता)

क्या उपरोक्त कथा को पढ़ कर ख़ुदा को न्यायकारी कहा जा सकता है ? ख़ुदा स्वयं ही शिक्षक, स्वयं परीक्षक और स्वयं ही आदम को प्रश्न पत्र बताने वाला और फिर इस पर अपनी स्वयं गरिमा प्रदर्शित करना कि मैंने तुमको पहिले ही कहा था, कि जो मैं जानता हूं. तुम उसे नहीं जानते । फ़रिश्ते बेचारे आज्ञाकारी दास थे, सत्य वचन महाराज ! कह कर मौन हो गये ।

हम कहेंगे कि किसी भी वस्तु का नाम याद करके बता देना यह भी कोई महत्वपूर्ण वस्तु या प्रतिष्ठा है ? यदि यह महत्वपूर्ण वस्तु होती तो आदम को शैतान से बचा देती या सुरक्षित रखती ।

आदम को नाम सिखा-पढ़ा कर फ़रिश्तों के सम्मुख उपस्थित करना, यह एक स्पष्ट षड़यन्त्र (जालसाजी) है । ख़ुदा कभी ऐसा नहीं कर सकता । यह कुर्आन के लेखक की कल्पना मात्र है कि उसने ख़ुदा को इस प्रकार कलंकित किया है ।

हम तो यह कहते हैं कि उपरोक्त कथा का औचित्य ही सिद्ध नहीं होता । जब आदम मे जीवन डाला तो वे पृथ्वी पर थे और फ़रिश्ते आसमान पर फिर फ़रिश्ते आदम को तख़्त पर बिठा कर ख़ुदा के अर्श (सिंहासन) के समीप ले

गये । उस समय आदम द्वारा नाम बताने का कोई प्रमाण नहीं है, और यदि कहो कि 'फ़ककऊहोलहू साजेदीन्' तो जब खुदा की आज्ञा फ़रिश्तों को थी कि जब मैं इसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम सब सजदा में गिर पड़ना । रूह तो पृथ्वी पर फूंकी गई और सजदा आसमान पर हुआ । इस अवसर के मध्य ऐसा कौन सा समय था कि खुदा ने आदम और फ़रिश्तों की यह नाम बताने वाली परीक्षा की कार्यवाही सम्पन्न की और यदि की तो पृथ्वी पर की या आसमान पर, सजदा करने के पूर्व या पश्चात् की, इसका कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया और यदि हो तो मुसलमान प्रस्तुत करें, और जिस समय खुदा ने आदम के निर्माण का विचार फ़रिश्तों के समक्ष रखा था, उस समय से लेकर जब आदम स्वर्ग में चला गया, तब तक के मध्य कौन सा समय परीक्षा के लिये था कि आदम को फ़रिश्तों के सम्मुख उपस्थित कर वस्तुओं के नाम पूछे जाते और वह वस्तुएं कौन सी थी । इसका भी विवरण होना चाहिये । मुसलमान बंधु उत्तर देवें

इसी प्रकार की दूसरी कथा है कि–खुदा ने आदम को कहा कि तू और तेरी पत्नी स्वर्ग में रहो । स्वर्ग के सब फलों को खाना किन्तु इस वृक्ष के निकट न जाना । खुदा की यह आज्ञा तो उस समय होनी चाहिये थी, जब कि आदम को स्वर्ग में भेजा गया था, और जब फ़रिश्तों ने आदम को स्वर्ग में छोड़ा उस समय आदम अकेला था । ऐसी स्थिति में यह कैसे कहा जा सका कि तू और तेरी पत्नी स्वर्ग में रहो, क्योंकि पत्नी तो स्वर्ग में ही उत्पन्न की गई थी । वह भी तब, जब कि आदम साथी के अभाव में अकेला उदासीन रहने लगा और तबीयत घबराने लगी थी । उस समय भी यह कहने की आवश्यकता नहीं

थी कि तुम स्वर्ग में रहो. क्योंकि वे दोनों (आदम और हव्वा) तो उस समय स्वर्ग में ही थे ।

मुसलमान जन यह कहेंगे कि जब हव्वा उत्पन्न की जा चुकी तो उस समय खुदा ने यह बात कही ।

हम कहते हैं कि प्रथम तो कुर्आन की भाषा शैली से ही यह सिद्ध नहीं होता कि हव्वा की उत्पत्ति के पश्चात यह बात कही गई; परन्तु उक्त तर्क स्वीकारने में यह दोष है कि जब आदम को स्वर्ग में रखा उस समय आदम को क्यों नहीं कहा कि इस वृक्ष के फल को नहीं खाना । तब तो आदम को रोका नहीं गया, तो वह फल को खा सकता था ।

मुसलमानों से यह प्रश्न है कि यदि यह आयत 'या आदमुस्कुन' हव्वा की उत्पत्ति के पश्चात् खुदा ने दोनों से कही तो जब आदम पहिले स्वर्ग में अकेला प्रविष्ट हुआ तो उस समय उस वृक्ष के फल न खाने का उन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था । चाहे वह उन फलों को खाते रहते । या फिर मुसलमान जन इस आयत को उस समय की स्वीकारे जब आदम को स्वर्ग में प्रवेश दिया, किन्तु आपत्ति यह है कि उस समय हव्वा नहीं थी ।

अतः यह दोनों आयतें ऐसे ही बना कर कुर्आन में सम्मिलित कर दी हैं । न तो आदम में खुदा ने जब अपनी रूह फूंकी उस समय फ़रिश्तों ने सजदा किया, न हज़रत आदम के स्वर्ग-प्रवेश के समय उस वृक्ष के फलों को खाने से रोका । यदि किसी मुसलमान बन्धु के पास इस विषय में कोई प्रमाण हो तो वह प्रस्तुत करें ।

हज़रत इब्राहीम, उनकी पत्नी सारा तथा हज़रत लूत और उनकी क़ौम से फ़रिश्तों की चर्चा

कुर्आन, सूरत हुद, पारा १२, रकू ७/७ में हज़रत इब्राहीम, उनकी पत्नी सारा तथा हज़रत लूत और उनकी क़ौम से फ़रिश्तों की बातचीत, परस्पर निम्नानुसार है:—

'व लकद जाअत रुसुलुना इब्राहीमा बिल्बुश्रा' और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के समीप इस्हाक़ और इस्हाक़ बिन याकूब की उत्पत्ति (या क़ौम लूत के विनाश) की शुभ सूचना लेकर सुन्दर लड़कों का रूप बना कर पहुँचे।

इब्ने अब्बास व अता के विचार में ३ फ़रिश्ते जिब्राईल, मेकाईल और इसराफील थे। मुहम्मद बिन काब ने कहा कि जिब्राईल के साथ ७ फ़रिश्ते और थे। जुहाक़ ने ९, मकातल ने १२ और सादी ने कहा ११ फ़रिश्ते थे। (जितने मुंह उतनी ही बातें।)

'कालू सलामन' फ़रिश्तों ने आकर सलाम कहा और उत्तर में इब्राहीम ने भी कहा 'काला सलामुन' तुम पर भी सलाम हो, **'फ़मा लबेसा अन् जाआ बेइज्जिल हनीज़'** (फिर इब्राहीम ने) देर न की और एक बछड़ा भूना हुआ (उनके लिये) ले आया **'फ़लम्मा रआ ऐ दिया हुम ला तसेलो इलैहे नकेरहुम'** जब इब्राहीम ने देखा कि वह खाने की ओर प्रवृत नहीं हो रहे तो **'व ओंजसा मिन्हुम खीफ़तन'** (और तब इब्राहीम) उनसे भयभीत हुआ।

कतादा ने कहा—कि उस समय यह प्रथा थी कि यदि अतिथि किसी के घर आयें और वहां खाना न खायें तो गृहपति यह विचार करता था कि यह लोग बुरे विचारों से आये हैं। इस पर फ़रिश्तों ने कहा—'**कालू ला तखफ़ इन्ना उर्सिल्ना इला कौमे लूत**' कि मत भय कर, हम लूत की कौम पर आपत्ति डालने हेतु भेजे गये हैं। **वम्रअतोहू काइमतुन फ़ज़ेहकत्**' और इब्राहीम की स्त्री सारा खड़ी हुई उनकी बातें सुन कर हँस रही थी (अकरमा ने कहा कि सारा को उसी समय हैज़ (मासिक धर्म) आने लगा '**फ़बश्शर नाहा बि इस्हाका व मिव्व-राए इस्हाका याकूबा**' पस, हमने स्त्री को इस्हाक़ के उत्पन्न होने की और इस्हाक़ के पश्चात् (इस्हाक के पुत्र) याकूब के उत्पन्न होने की शुभ सूचना दी। इब्राहीम की पत्नी सारा बाँझ थी, पुत्रोत्पत्ति की सूचना सुन कर उसने कहा '**कालत् या वैलता आ अलेंदो व अना अजूजुंव्व हाज़ा बाली शैखन, इन्ना हाज़ा लशैउन अजीब**' तो कहने लगी की क्या खूब, भला इस वृद्धावस्था में हमारे बच्चे होंगे, यह बड़ी विचित्र बात है।

हज़रत इब्राहीम की पत्नी सारा की आयु उस समय, इब्नें इस्हाक के कथनानुसार ९० वर्ष, मुजाहिद के ९९ वर्ष थी और इब्राहीम की आयु उस समय १२० वष तथा मुजाहिद के कथन से १०० वर्षो की थी। फ़रिश्तों ने कहा—'**अ ताजबीना मिन् अमरिल्लाह**' क्या तुझे अल्लाह के आदेश पर आश्चर्य हो रहा है '**रहमतुल्लाहे व बरकातुहू अलैकुम अहलल्बैते**' ऐ! इस घरवालों! तुम पर अल्लाह की रहमत (दया) और बरकतें (वृद्धियां) हैं '**इन्नहु हमीदुम्मजीद**' वह बड़ी ही शान वाला है '**फ़लम्मा ज़हबा अन इब्राहीमुर्रोओ, व जाअत हुल्बुश्शरा**' फिर

जब इब्राहीम के हृदय से भय जाता रहा, और उसके पास (इस्हाक व याकूब की) शुभ सूचना आ गई 'युजादेलूना फ़ी कौमे लूतिन' तो हम (फ़रिश्तों) से लूत की कौम के विषय में झगड़ा करने लगा। अर्थात् फरिश्तों ने कहा--लूत को हम बचा लेंगे। फरिश्तों ने कहा—या इब्राहीमो आरिज़ अन हाज़ा, इन्नहु कद जाआ अमरो रब्बेका' इब्राहीम ! यह झगड़ा छोड़ो (अज़ल के मुवाफिक लूत की कौम पर अज़ाब (आपत्ति) आने का) तुम्हारे खुदा का आदेश हो चुका है। व इन्नहुम आतीहिम अज़ाबुन गैरो मर्दूद' उन पर यह अज़ाब (विनाश) अवश्य आयेगा; जो झगड़े या प्रार्थना से हटाया नहीं जा सकता। 'व लम्मा जाअत रसुलुना लूतन सी आ बेहिम व ज़ाका बेहिम ज़र्अन' और जब हमारे वही फरिश्ते लूत के पास आये, तो नवयुवक दाढ़ी-मूंछ रहित लड़कों के रूप में पहुंचे (या थे) तो लूत को उनका आना रूचिकर न लगा और उनको कौम की ओर से भय हुआ कि कहीं कौम वाले उनके लिये बुरा विचार न करें और उन कासदों (आने वाले दूतों) के कारण लूत का दिल बहुत तंग (संकुचित) हुआ और लूत ने कहा:—

'व काला हाज़ा यौमन असीब' यह आज का दिन कठोर दिन और भयंकर दिन है।

फिर फ़रिश्ते हज़रत लूत के साथ उनके घर की ओर आ गये। हज़रत लूत लकड़ियाँ उठाये आ रहे थे और फ़रिश्ते उनके पीछे-पीछे थे। एक समूह के समीप से उनका गुज़रना हुआ। उन लोगों ने [इनको देख कर] आपस में आंख मारी। अन्ततः लूत अपने घर पहुँच गये।

यह भी रवायत (कथन) है कि फ़रिश्ते हज़रत लूत के घर गुप्त रीति से आये थे और लूत की पत्नी ने जाकर लोगों से कहा कि लूत के घर ऐसे लोग आये हैं कि मैंने उनसे सुन्दर कोई मनुष्य नहीं देखा।

'व जाआ कौमुहू योहरऊना इलैहे' और लूत के पास उसकी क़ौम के लोग लपकते हुए अर्थात् दौड़ कर आये **'व मिन कब्लो कानू यामलूबस्सय्येआते'** और उससे पूर्व भी वे बुरी हरकत करते रहे अर्थात् मनुष्यों से सम्भोग (समलैंगिक) करते थे, (इसी विचार से वह आये थे) इस पर लूत ने कहा — **'काला या कौमे हा ओलाए बनाती'** ऐ मेरी कौम ! यह मेरी पुत्रियां हैं, **इन्ना अतहरो लकम'** वह अधिक पवित्र है तुम्हारे लिये **फत्तकुल्लाहा व ला तुख़ज़ूने फी जैफी'** पस, ख़ुदा से डरो और मुझे मेरे अतिथियों के विषय में लज्जित न करो **अलैसा मिन्कुम रजुलुर्रशीद'** क्या तुममें कोई भी शिक्षित नहीं है, जो सत्य पर चले और बुरी हरकतों से बचे **'कालूकद अलिम्ता मा लना फ़ी बनातेका हक्किन व इन्नका ल तालमो मा नुरीद'** कौम के लोगों ने कहा- तुम (लूत) जानते हो, कि तुम्हारी पुत्रियों पर हमारा कोई अधिकार नहीं। उनसे हमारा विवाह नहीं हुआ।

कुछ ने यह अर्थ भी किया है-कि तुम्हारी पुत्रियों की हमें आवश्यकता नहीं और हमारा तो विचार है, उसको तुम भली भांति जानते हो अर्थात् हम लड़कों को चाहते हैं।

इस पर लूत ने कहा **'काला लौ अन्न ली बिकुम कुव्वतन, आवी इला रूक्निन शदीद'** यदि मुझमें शक्ति होती, तो मैं तुमसे रक्षा कर लेता या मैं किसी शक्तिशाली का आश्रय प्राप्त कर सकता.....इत्यादि।

इब्ने असाकर और इस्हाक ने जरीर की सनद (प्रमाण) से और मकातल ने ज़ुहाक की रवायत (कथन) से इब्ने अब्बास का बयान लिखा है तथा बग़वी ने भी यही लिखा है कि हज़रत लूत ने द्वार बन्द कर लिया था और भीतर से ही क़ौम के साथ झगड़ा कर रहे थे, और फ़रिश्ते घर के भीतर ही थे। लोग फिर दीवार लांघ कर भीतर प्रविष्ट होने की युक्ति सोचने लगे।

जब फ़रिश्तों ने लूत की यह स्थिति देखी तो उन्होंने कहा.-'कालू या लूतो इन्ना रूसुलो रब्बेका लंय्यसिल्लू इलैका' लूत ! हम तुम्हारे खुदा के भेजे हुए हैं। इन लोगों की ओर से कोई आपत्ति तुझ पर नहीं हो सकेगी। दरवाज़ा खोल दीजिए और हमको इनसे निपटने दीजिये। इस पर लूत ने दरवाजा खोल दिया।

फिर जिब्रील ने खुदा से उन पर आपत्ति डालने की आज्ञा लेकर अपनी असली शक्ल (यथार्थ स्वरूप) धारण कर ली, पर फैला दिये, मोतियों का वह हार पहिने चमकदार दांत, झलकती पैशानी, सिर के घुंघराले बाल बर्फ के समान सफ़ेद आदि।

जिब्राईल ने फिर अपना पख उन लोगों के मुँह पर मारा, जिसके कारण उनकी आँखे अन्धी हो गई और फिर यह कहते हुए भागे कि भागो-भागो, लूत के घर सबसे बड़े जादूगर आए हैं.....।

लूत ने फ़रिश्तों से अपने क़ौम के विनाश की अवधि, पूछी, तो फ़रिश्तों ने प्रातःकाल के लिये कहा.....और फिर फरिश्तों ने लूत से कहा-'फ़ अस्रे बे अहलेका बे किताइम्मल्लेलें'

कि आप अपने घर वालों को लेकर कुछ रात से ही चल दीजिये 'व ला यल्तफ़ित मिन्कुम अहदून' और कोई तुममें से पीछे मुड़ कर न देखें, 'इल्लम्रअतका' अर्थात् तुम्हारी पत्नी के अतिरिक्त कोई पीछे मुड़ कर न देखें, जो अज़ाब (विनाश) कौम पर आयेगा वो उस पर भी आएगा। 'इन्नामौइदहु मुस्सुब्हो' अर्थात् उनके विनाश का समय प्रातः है।

हज़रत लूत ने प्रार्थना की, कि विनाश शीघ्र होना चाहिए। इस पर फ़रिश्तों ने कहा--'अलैसस्सुब्हो बि करीबिन' क्या प्रातःकाल समीप नहीं है? फ़ल्म्मा जाआ अमरोना जअल्ना आलीहा साफिलहा व अमर्तना अलैहा हिजारतुम्मिन सिज्जील' और जब हमारे (अज़ाब का) आदेश आ गया, तो हमने उन बस्तियों को उलट कर नीचे-ऊपर कर दिया। (अर्थात् ऊपर का भाग नीचे और नीचे का ऊपर कर दिया।)

बगवी ने लिखा है कि कौम लूत की पांच बस्तियां थीं। हज़रत जिब्रील ने नीचे अपना एक बाज़ू (पख) डाल कर इतना उठा दिया कि ऊपर (आसमान) वालों ने मुर्गों की बांग और कुत्तों के भौंकने के स्वर सुने, और किसी का कोई पात्र (बर्तन) भी न उलटा और न कोई सोया हुआ जागा। हाँ, किन्तु उलट दिया, किन्तु सब नीचे से ऊपर हो गये। इन पाँचों बस्तियों की जनसंख्या ४ लाख या ४ करोड़ थी [जनसंख्या में ४ का अक़ तो बराबर है, शेष जो अंतर है वह साधारण बात है] इन बस्तियों को उल्टी हुई बस्तियां कहा जाता है, और हमने उन पर कंकरीले पत्थर बरसाये।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ६, पारा १२ पृष्ठ ६३ से ७४

उक्त सम्बन्ध में तफसीर क़ादरी के पृष्ठ क्रमांक ४७१ से ४७४/१ तक लगभग उपरोक्त जैसा ही वर्णन है।

उक्त सम्पूर्ण लम्बे—चौड़े वृत्तांत में उद्धृत कुर्आन की आयतों में हज़रत इब्राहीम, उनकी पत्नी सारा, हज़रत लूत व उनकी क़ौम और फ़रिश्तों का ही कथन है। [जिसे क़ुर्आन में देखा जा सकता है]

यहां तो आपने पढ़ा कि बस्तियों को उलट दिया गया और उन पर कंकरीले पत्थरों की बरसात की गई किन्तु कुर्आन सूरत शोअ़रा, पारा १९, रकू ९।१३ में केवल पत्थरों की वर्षा की, ऐसा लिखा है। बस्तियों को उलटाने का उल्लेख नहीं है!

तफसीर कादरी, भाग २, पृष्ठ १६४ में पत्थरों के साथ पत्थर का, गंधक या आग का मेह लिखा है।

इसी प्रकार कुर्आन, सूरत हजर, पारा १४ रकू ५।५ में है कि उन लोगों को सूर्योदय के समय आवाज (स्वर) ने पकड़ा यह आवाज का पकड़ना उपरोक्त दोनों विवरणों (स्थानों) में नहीं है, और कुर्आन सूरत कमर, पारा २७, रकू ९ में भी केवल पत्थरों की वर्षा करने का वर्णन है।

इसी प्रकार जितने भी पैग़म्बरों इत्यादियों की कथाएँ कुर्आन में हैं उनमें परस्पर ऐसा ही तीव्र मतभेद है। [जिसे हम अन्य प्रकरण में लिखेंगे] यहां तो इसमें केवल यह बताना ही हमारा उद्देश्य है कि 'कुर्आन में फ़रिश्तों का कलाम' है तो ऊपर फरिश्तों के कलाम के साथ और अन्य सम्बन्धित जनों के कलाम भी सम्मिलित है। अतः वह भी उसके साथ लिखना पड़ा।

हज़रत मर्यम के साथ फ़रिश्ते का कलाम

आयत:—

वज़्कुर फ़िल्किताबे मर्यमा इज़िन्तबज़त मिन अहलेहा मकानन शर्किय्या, फ़त्तख़ज़त मिन दूनेहिम हिजाबन फ़अर्सलना इलैहा रूहना फ़त मस्सला लहा बशरन सविय्या । कालत इन्नी अऊज़ो बिर्रहमाने मिन्का इन्कुन्ता तकिय्याकाला इन्नमा अना रसूलो रब्बेका लिअहदा लका गुलामन ज़किय्या कालत् अन्ना यकूनो ली गुलामुं व्वलम यम्सस्नी बशरूं व्वलम अको बग़िय्या, काला कज़ालेका काला रब्बोके हुमा अलय्या हय्यनो व लेनज्अलहू आयतल्लिन्नासे व रहमतम्मिन्ना व काना अमरम्म क़िज़्या।

कुर्आन, सूरत मर्यम, पारा १६, रकू २/५

अर्थात्-और याद कर कुर्आन में कथा मर्यम की, और (वह) सदा बतुल्मुकद्दस की मस्जिद में रहती (थी) । एक बार वह (मर्यम) अपनी मौसी के घर में थी और उन्हें गुसल की हाजत (स्नान की इच्छा) हुई। स्नान हेतु जब मर्यम पूर्व की ओर गई तो उन्होंने पर्दा कर लिया, ताकि वहां स्नान कर सकें । जब स्नान कर चुकी और वस्त्र पहिन लिये, तो भेजा हमने (खुदा ने) उनकी ओर अपनी रूह (अर्थात् जिब्रील) को, तो जिब्रील ने मनुष्य का पूर्ण रूप धारण कर लिया ।

हजरत मर्यम ने जब अपने स्नान के स्थान में एक पराये मनुष्य को देखा, तो कहा मैं पनाह (शरण) मांगती हूं खुदा से तेरी बुराई से यदि तू सदाचारी है । इस पर जिब्रील ने कहा कि-मे खुदा की ओर से भेजा हुआ आया हूं, ताकि तुझे एक नेक पुत्र प्रदान कर जाऊँ। इस पर मर्यम ने कहा कि-मुझे पुत्र कैसे

होगा ? जब कि मुझे किसी मनुष्य ने छुआ तक नहीं और न मैं व्यभिचारिणी थी । जिब्रील ने कहा-इसी प्रकार कहा है तेरे खुदा ने, और बिना पिता के पुत्र उत्पन्न करना खुदा के लिये आसान है, और, ताकि करे खुदा निशानी लोगों के लिये, और करे रहमत (दया) ईमान लाने वालों के लिये उसको बिना पिता के उत्पन्न होने की आज्ञा दी गई है ।

फिर हज़रत जिब्रील हज़रत मर्यम के समीप आये, तो उनकी (मर्यम की) आस्तीन (बांहों) या गिरेबान (वक्ष) या मुंह में फूंका 'फ़हमलत हो' तो मर्यम उसी समय गर्भवती हो गई और ईसा उसके गर्भ में आ गये । 'फ़न्तबज़त बेही मकानन कसिय्या' फिर नगर से दूर चली गई हज़रत ईसा को उदर (गर्भ) में लेकर और कुछ एक ने कहा कि पूर्व की ओर पहाड़ों पर चली गई, या बैतेलहम के मैदान में जो कि एलिया नगर से ६ मील दूर था, और ८ या ९ मास के पश्चात् हज़रत ईसा उत्पन्न हुए, और कुछ ने कहा है, कि गर्भ रहना और ईसा का उत्पन्न होना एक ही समय मे हुआ, और जादलमसीर में लिखा हैं, कि ९ घड़ी में (उत्पन्न हुए), मकातल ने कहा है, कि एक घड़ी में लोथड़ा (मास पिण्ड) हुआ, एक घड़ी में सूरत बनी और एक घड़ी में उत्पत्ति हुई ।

अस्तु हमारा प्रयोजन ईसा के जन्म की कथा लिखने से नहीं अपितु केवल फ़रिश्तों का कलाम बताना था, सो जो आयतें ऊपर उद्धृत हैं वह फ़रिश्ता और मर्यम का कलाम है ।

जब कौम (स्वजातीय) के लोगों ने मर्यम से पूछा कि यह बच्चा कैसे उत्पन्न हुआ ? तो मर्यम ने संकेत किया कि इसी बच्चे से पूछो । (हमारी दृष्टि में ईसा उस समय कुछ दिनों का ही होगा)

लोगों ने कहा-(लोगों का कलाम)-'कालू कैफा नुकल्लेमो मन काना फ़िल्महदे सबिय्या' कि पालने में बच्चा जो बात नहीं समझता, उससे क्या बात करें ? जब ईसा ने यह बात सुनी तो मां का दूध [स्तन पान] छोड़ कर कहने लगे:—

काला इन्नी अब्दुल्लाहे आताने यल्कितावा वा जअलनी नबिय्यंव्वजअलनी मुबारकन ऐन मा कुन्ता व औसा ो बिस्सलाते वज़्ज़काते मा दुस्तो हय्या। व बरंन बेवालेदति व लम्य-ज्अलनी जब्बारन शकिय्या वस्सलामो अलय्या यौमा वु लित्तो व यौमा अमूतो व यौमा उब्असोहय्या।

कुर्आन पारा १५, रकू मर्यम रकू २'५

अर्थात्-ईसा ने कहा कि मैं खुदा का बंदा हूं ! उसने मुझे पुस्तक [इन्जील] दी है और किया मुझको बरकतवाला, और जब तक मैं सन्सार में रहूं अर्थात् जीवित रहूँ, मुझे नमाज़ पढ़ने और ज़कात [निश्चित दान] देने का आदेश दिया है, और मुझे मेरी मां के साथ भलाई करने वाला और मेहरबान [कृपालु] किया और नहीं किया मुझको सरकश (घमण्डी) और बदबख्त (अवज्ञाकारी) और खुदा का सलाम मुझ पर है, जिस दिन मैं [ईसा] उत्पन्न हुआ और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन [जीवित होकर] उठाया जाऊँ।

(वाह अपने मुंह मियाँ मिठ्ठू, जकात भी खूब दी)

तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ १३ से १५

उक्त कथा व प्रसग पर कोई समालोचनादि कुछ नहीं करना है। हमें तो केवल यह स्पष्ट करना है कि कुर्आन में कुर्आन लेखक के अतिरिक्त अन्य लोगों का भी बहुत कलाम है, जिन पैग़म्बरों का उल्लेख कुर्आन में हैं, उनके कलाम नहीं लिख रहे हैं, । (क्योंकि पुस्तक बड़ी बन जायेगी)

हज़रत दाऊद के साथ फ़रिश्ते का कलाम

हज़रत दाऊद के लिये कुर्आन में लिखा है कि हमने दाऊद को शक्तिशाली शासन-व्यवस्था और न्याय करने की शक्ति दी थी :—वज़कुर अब्दना दाऊदा ज़ल ऐदे, इन्नहू अव्वाब ।

कुर्आन सूरत स्वाद, पारा २३, रकू ११२

तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ ३३० में कुर्आन की आयत 'इन्ना सख़्ख़रनल्जबाला' की व्याख्या में लिखा है कि निश्चय हम (ख़ुदा) ने मुसख़्ख़र (आज्ञाकारी) कर दिया पहाड़ों को कि जहां दाऊद चाहते पहाड़ वहां चले जाते, और प्रातः व सायं पहाड़ हज़रत दाऊद के साथ उपासना करते थे ।

इस बात को सिद्ध करने हेतु व्याख्याकार ने एक कथा लिखी है कि-एक वली (ख़ुदा का मित्र) ने देखा पत्थर को कि वर्षा की बून्दों की भांति पानी उस पत्थर से टपकता है । वली ने कुछ समय वहां ठहर कर ध्यानपूर्वक देखा, तो पत्थर उस वली से बातें करने लगा और कहा कि—ऐ अल्लाह के वली ! कई वर्ष हुए कि अल्लाह ने मुझको उत्पन्न किया और उसकी सियामत [आतंक] के भय से शोक के आंसू बहाता हूँ । इस पर ख़ुदा के वली ने ख़ुदा से प्रार्थना की, कि ऐ ख़ुदा ! इस पत्थर को निर्भय कर दे । प्रार्थना स्वीकार हुई और सुरक्षा की सूचना उस पत्थर को प्राप्त हो गई ।

कुछ समय के पश्चात् वह वली उस स्थान पर पुनः पहुंचा तो देखा कि वह पत्थर पूर्व से भी अत्यधिक आंसू बहाता

है। वली ने पूछा—तुझे तो खुदा ने अभय कर दिया था। अब यह रोना किस कारण है। उस (पत्थर) ने उत्तर दिया कि पूर्व रोना मेरा भय के कारण था और अब का रोना शांति की प्रसन्नता से है।

पहाड़ों और पत्थरों की निस्बत [सम्बन्धित] अत्यधिक विचित्र कथाएं हदीसों में वर्णित हैं।

हज़रत मूसा के वस्त्र पत्थर ले भागा

फ़जहबा मर्रतन यग़तसेलो फ़वजआ सौबहू अला हजारिन फ़फ़र्रल्हजरो बेसौबेही, फ़ख़रजा मूसा फ़ी इस्रेही यकुलो सोबी या हजरो सोबी'

तज़रीदे बुखारी, हदीस १९७, बयान गुसल पृ. ७४

अर्थात्—एक बार हज़रत मूसा पत्थर पर कपड़े (वस्त्र) रख कर नहाने लगे। पत्थर उन वस्त्रों को लेकर भागा। मूसा उसके पीछे-पीछे कहते जाते थे, मेरे वस्त्र. ऐ पत्थर! मेरे वस्त्र.... इत्यादि!

तफ़सीर मज़हरी में 'अलम्तरा इन्नल्लाहा यस्जुदो लहू' कुर्आन की इस आयत की व्याख्या में लिखा है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि एक पहाड़ दूसरे पहाड़ का नाम लेकर पुकारता और बातें करता कि तुझ पर कोई अल्लाह की याद (स्मरण) करने वाला भी आया है या नहीं? वह (दूसरा पहाड़) यदि यह उत्तर देता कि हाँ आया है! तो उसे [पहले पहाड़] को हर्ष होता है।

तफ़सीर मज़हरी भाग १ पृष्ट ७२-७३ में भी इस हदीस को तिब्रानी ने इब्ने मसऊद से बयान किया है ।

पहाड़ों के ज्ञानवान् होने का वर्णन मध्य में आ गया है। अतः इस विषय पर कुछ मनोरन्जन बातें नीचे मैं लिख रहा हूँ।

अल्लाम बग़वी ने कहा—कि हज़रत मुहम्मद बसीर पहाड़ पर गये थे । काफ़िर हज़रत की टोह [तलाश] में लगे हुए थे; तो पहाड़ बोल उठा—कि ऐ अल्लाह के नबी ! आप मुझ पर से उतर जाईये । मुझे भय है कि कहीं काफ़िर आपको पकड़ लें और मुझे उसके सबब (कारण) अल्लाह अज़ाब करे । और हिरा पहाड़ ने निवेदन किया—या रसूल ! आप यहां पधारें और मेरे पास आए

अल्लामा बग़वी ने अपनी सनद (प्रमाण) से जाबर बिन समरह से रवायत की है, कि रसूलिल्लाह ने कहा कि मैं मक्का के उस पत्थर को भली प्रकार पहचानता हूं, जो मेरे नबी होने से पूर्व मुझे सलाम किया करता था । यह हदीस सही [सत्य] है और इसे मुस्लिम ने रवायत किया है ।

हज़रत अनस से रवायत है—कि आपको (हज़रत को) उहद पहाड़ नज़र पड़ा, तो कहा कि यह वह पहाड़ है, जो हमको मित्र रखता है ।

हज़रत अबू हुरैरा से रवायत है, कि हमें रसूले खुदा (हज़रत मुहम्मद) ने प्रातःकाल की नमाज़ पढ़ाई और फिर कहा कि एक बैल हांकने वाला थक गया तो वह उस पर सवार हो गया, तो बैल बोल पड़ा—कि हम सवारी हेतु नहीं उत्पन्न किये गये, खेती के लिये हैं..... ....!

रसूलिल्लाह [हज़रत मुहम्मद] हिरा पहाड़ पर गये और उनके साथ हज़रत अबू बक़र, उमर, उस्मान, अली व तलहा तथा ज़ुबेर भी थे। एक पत्थर हिलने लगा। हज़रत मुहम्मद ने कहा–ठहर जा ! कि तुझ पर एक नबी या सिद्दीक या शहीद के अतिरिक्त और कोई नहीं। इस हदीस को मुस्लिम ने रवायत किया है।

हज़रत अली से रवायत है, कि हम मक्का में रसूलिल्लाह के साथ थे, सो जब हम मक्का से बाहर इधर-उधर, पहाड़ों और वृक्षों में गये, तो जिस वृक्ष या पहाड़ से हमारा गुजरना होता था, तो वह पुकारता था–अस्सलामो अलैका या रसूलिल्लाह।

इसी प्रकार सहीह मुस्लिम में जाबर से रवायत है, कि हज़रत मुहम्मद (मिम्बर (मच) तैयार होने से पूर्व) मस्जिद के एक स्तून (खम्बा) से जो खजूर की लकड़ी का था, तकिया (टेका) और सहारा लेते थे। जब मच तैयार हो गया और उस पर रसूल सुशोभित हुए, तो वह स्तून [खजूर का खम्बा] अधीर होकर ऊँटनी के सदृश्य रोने लगा। यहां तक कि उसकी आवाज मस्जिद वालों ने सुनी। रसूलिल्लाह मंच से नीचे उतरे और उसे गले लगाया। गले लगाते समय वह बिल्कुल मौन हो गया। (प्रभु ऐसे अन्ध विश्वास से बचाये)

इन सब हदीसों से ज्ञात हुआ; कि जमादात [जड़ पदार्थों] में भी विवेक और जीवन है।

तफ़सीर मज़हरी, सूरत बकर, भाग १, पृष्ठ १४४-१४५

हम हज़रत दाऊद और फ़रिश्तों का कलाम लिख रहे थे, किन्तु मध्य में उपरोक्त कथा-प्रसंग उपस्थित होने के फल-स्वरूप हमें यह भी लिखना पड़ा ताकि पाठकों को ज्ञातव्य हो।

तफ़सीर कादरी से हम इस कथा को उद्धृत कर रहे हैं- कि रात्रि के समय सदैव ३६ हजार मनुष्य उसके [हज़रत दाऊद के] घर की रक्षा करते थे।

इमाम अबुल्लैस ने कहा है, कि शासन की दृढ़ता का यह कारण था कि खुदा ने एक जंजीर आसमान से लटकाई। वह जंजीर हज़रत दाऊद के महकमा (न्यायालय) पर ठहरी। अभियोगी और अभियुक्त दोनों में जो सच्चा होता, उसका हाथ जंजीर तक पहुंच जाता और झूठे का हाथ नहीं पहुंचता था।

हज़रत दाऊद की कथा इस प्रकार है [कि उसका सेनापति औरया था] [व्याख्याकार ने लिखा] कि हज़रत दाऊद की कथा में और सेनापति औरया की स्त्री के साथ विवाह करने में अत्यधिक मतभेद है।

कुछ व्याख्याकारों ने इस कथा को जिस प्रकार लिखा है, वह पढ़ कर, विवेक स्वीकार नहीं करता है। [किसी का विवेक स्वीकार करे या न करे] किन्तु कुर्आन की आयत तो वही कहती है, जो उन विद्वान् व्याख्याकारों ने व्याख्या की है-आपने कुर्आन की आयतों के प्रतिकूल मनमानी तावील (व्याख्या) की है।

व्याख्याकार लिखता है कि औरया ने एक स्त्री को अपने साथ विवाह करने का सन्देशा पहुंचाया, और हज़रत दाऊद ने भी पहुंचाया। हज़रत दाऊद के ९९ पत्नियाँ थीं।

ज़ादुल्मसीर में है कि खुदा का क्रोध हज़रत दाऊद पर इसलिए हुआ कि औरया के सन्देश देने के पश्चात् दाऊद ने विवाह-सन्देशा क्यों पहुँचाया ? (यह पर्दा डालने वालों की बातें हैं)

यह प्रसंग कुर्आन में निम्न प्रकार है :—

'व हल अताका नब्ऊल्खसमों इज़ तसव्वरो वल्मेहराब' क्या आई तेरे पास सूचना उन दो दलों की, जिन्होंने झगड़ा किया तिबयान में । जिब्रील और मेकाईल (दो फ़रिश्ते) दोनों पक्ष और विपक्ष के रूप में हज़रत दाऊद के यहां आये और दोनों के साथ फ़रिश्तों का एक-एक दल था । हज़रत दाऊद ने विभिन्न कार्यों के हेतु भिन्न-भिन्न दिन निश्चित कर रखे थे, उनमें एक दिन न्याय के लिये भी था । उस दिन फ़रिश्ते मनुष्य का रूप धारण कर हज़रत दाऊद के घर आये और उनके उपासनागृह में चले गये और उनके चौबारे पर चढ़ गये । 'इज़ दख़लू अला दाऊदा फ़ फ़जेआ मिन्हुम' जब वे भीतर दाऊद के सम्मुख आये तो उनसे दाऊद भयभीत हुए, क्योंकि वे बिना आज्ञा आ गये थे । फरिश्तों ने कहा कालू ला तख़फ ख़स्माने बगा बाजुना अला बाज़िन ' भय मत करो ! हम दो दल हैं, पक्ष और प्रतिपक्ष के रूप में किसी एक ने अत्याचार किया है दूसरे पर 'फ़हकुम बैनना बिल्हक्के व ला तुश्तित बहादेना इला स्वा-ईस्सरात' पस, न्याय कर हमारे मध्य सत्य से व जुल्म न कर और अपने निर्णय में मार्ग दर्शन कर हमें सन्मार्ग की ओर । दाऊद ने कहा-दावा प्रस्तुत करो ! उनमें से एक ने कहा- 'इन्ना हाज़ा अखीलहू तिसउव्वितिम्ऊना नाजतन व लेया नाज-तुंव्वाहिदातन' निस्सन्देह यह मेरा भाई है और इसके ९९ भेड़े हैं तथा मेरे पास केवल एक ही भेड़ है । ' फ़काला तक्फ़-लनीहा वा अज्ज़नी फ़िल्खेताब' तो इसने मुझसे कहा कि इसको (एक भेड़ को) भी मुझे दे दे और शक्ति प्रयोग किया मुझ पर बात करने में, और मुझे उज्र (प्रतिरोध) करने की भी मुहलत

(अवसर) न दी "बालाद बद उलमका बिसोआले नाजतेका इला ने आजेही, व इन्ना कसीरिमनल्खुलताये लयबग़ी बाजहुम अला बाजिन इल्लल्लाजीना आमनू व अमेलुस्सालेहाते व कलीलुम्मा हुम' दाऊद ने कहा—यदि यही बात है, तो खुदा की शपथ, उसने तुझ पर अत्याचार किया है । तेरी भेड़ मांगने और सम्मिलित करने अपनी भेड़ों में, और निश्चित बहुत से शरीकों [साथियों] में से जो परस्पर माल-खलत [हड़प] करते हैं, निस्सन्देह वह अत्याचार करते हैं एक— दूसरे पर और अपने अधिकार से अधिक मांगते हैं किन्तु वह लोग जो ईमान लाये और काम अच्छे किये और सीमित (कम) हैं यह लोग शरीकों (साथियों) में । कुर्आन पारा २३ रकू २/११

जब हजरत दाऊद ने यह बात कही, तो वे सब लोग उठ खड़े हुए और दृष्टि से ओझल हो गये । (यह उपरोक्त आयतें भी फ़रिश्तों का कलाम हैं ।)

तफ़सीर क़ादरी, सूरत स्वाद, भाग २, पारा २३, पृष्ठ ३३०-३३१

पाठकों की जानकारी हेतु हजरत दाऊद की वह कहानी भी हम संक्षेप में लिख रहे हैं जिसे मिथ्या कहा जाता है ।

एक दिन की चर्चा है कि एक पक्षी कबूतर की आकृति का उनके (हजरत दाऊद के) पास आ गया । हजरत दाऊद उसकी सुन्दरता देख कर विस्मित हुए और उसे पकड़ने लगे, वह उड़ गया । हजरत दाऊद कोठे पर चढ़ कर उसको चारों ओर देखने लगे कि अकस्मात् उनकी दृष्टि एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री पर पड़ी, जो हौज़ के तट पर नहा रही थी । उसे देखने मात्र से दाऊद का मन उसकी ओर झुक गया ।

दो विशेषज्ञों को उस स्त्री का पता लगाने हेतु नियुक्त किया। उन्होंने जानकारी दी की यह स्त्री औरया के निकाह में है या उसकी मंगेतर है।

उन दिनों औरया क़िला वल्लाह का घेरा डाले हुए लड़ रहा था। तब वहाँ के सेनापति स्वाब को कहला भेजा कि ताबूते सकीना देकर औरया को किले के द्वार पर भेजें (ताबूते सकीना अर्थात् इस प्रकार का युद्ध कि जिसका परिणाम विजय या मृत्यु में से एक होता है)

कुछ एक का कथन है कि औरया ने वह किला विजय कर लिया था। उसे फिर दूसरे किले पर भेजा, वह भी जीत लिया और फिर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

कुछ का कथन है कि वह (औरया) प्रथम युद्ध में ही मारा गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उस अफ़ीका को दाऊद ने विवाह सन्देशा भेजा। उसने इस अनुबन्ध पर विवाह स्वीकार किया कि जो मेरे गर्भ से बच्चा उत्पन्न हो वह ताजोतख्त (शासन) का स्वामी हो। दाऊद ने स्वीकार कर लिया और विवाह हो गया। उसके गर्भ से सुलेमान हुआ जो राज्य का स्वामी हुआ।

अजाएबुस क़सस, भाग १ पृष्ठ ३५८--३५९

हम इस पर कोई समालोचना न करते हुए पाठकों से कहते हैं कि वह कुर्आन की आयतों के साथ मिला कर देख लें आपको ! सत्य क्या प्रतीत होता है ?

हज़रत अजीज से फ़रिश्ते का कलाम

कुछ व्याख्याकारों ने इसको यर्मियाह और अर्मियाह भी कहा है। यह कथा-प्रसंग कुर्आन, पारा ३ रकू ३४।३ में वर्णित है.

ईसा से ६०० वर्षों पूर्व बाबिल के सम्राट बख्तेनसर ने सहस्त्रों स्त्रियों को मृत्यु के घाट उतार दिया और यरूशलम को जला कर नष्ट कर दिया। बैतुलमुक़द्दस को ढहा कर वीरान कर दिया और ७० हज़ार मनुष्यों को बन्दी बना कर ले गया।

हज़रत यर्मिया [अजीब] ने नष्ट हुए उस नगर को देख कर कहा कि इस नगर को खुदा कैसे आबाद करेगा? खुदा ने उन्हें अपनी अलौकिक शक्ति का तमाशा दिखाया, और वह यह कि उर्मिया (अज़ीब) सो गये और खुदा नें उसे मृत्यु दे दी वा सैकड़ों वर्षों के पश्चात् उसे पुनः जीवित किया।

तफ़सीर हक्कानी, पारा ३ पृष्ठ ६

जीवित होने के पश्चात् खुदा ने यर्मिया के पास एक फ़रिश्ता भेजा। उसने यर्मिया से पूछा "**काला कम लबिस्ता**" कि आप यहां कितना समय ठहरे? तो यर्मिया ने कहा-'**काला लबिस्तो यौमन्**' में एक दिन यहां ठहरा अथवा '**औ बाज़ा यौमिन**' या दिन से भी कुछ कम समय। इस पर फरिश्ते ने कहा- **काला बल लबिस्ता मेअते आमिन**' यहां आप सौ वर्षों तक ठहरे **फ़न्ज़ुर इला तुआमिका व शराबेका लम यतसन्नहो**' अब अपने खाने-पीने अर्थात् अन्जीर और मद्य को देख लो (इनमें) कोई वस्तु बिगड़ी तो नहीं हैं!

(तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ ४१)

और वन्जुर इला हेमारेका' और अपने गधे की ओर देखो' कि उसकी हड्डियाँ रह गई थीं । [उस समय कहा गया कि तुझे मृत्यु के पश्चात् जीवित किया गया, ताकि मेरी कुदरत (खुदाई चमत्कार) की निशानी तेरी जात (व्यक्तित्व) पर प्रकट हो) और यह बात भी कि—'लेनज्अलका आयतल्लिन्नासे वन्जुर इलल इजामें केफ़ा नुन्शिरोहा सुम्मा नक्सूहा लहमन' और दूसरे यह कि कर हम निशानी (खुदाई प्रमाण) उन लोगों के हेतु जो कयामत में शरीरो (शवों) के उठाने में सन्देह करते हैं । तू अपने गधे की हड्डियों की ओर देख ! ताकि तू जान ले कि (हम) अपनी कुदरत से बिना कारण कैसे हरकत देते हैं और एक-दूसरे पर जमाते हैं 'फ़लम्मा तबय्यना लहू काला आलमो' इन्नल्लाहा अला कुल्ले शैइन कदीर' फिर पहिराते हैं हम (खुदा) उन हड्डियों को गोश्त (मांस) ।

फिर जब प्रत्यक्ष हो गई अजीज पर खुदा की क़ुदरत और उसके चिन्ह मृतक को जीवित करने में, तो कहा-मैं जानता हूं कि खुदा सब वस्तुओं को मार डालने और जीवित करने पर सामर्थ्यवान् है ।

तफ़सीर कादरी पारा ३, पृष्ठ ७९-८०

लोगों को कयामत का विश्वास दिलाने हेतु ऐसी कई मनगढ़न्त कथाओं का अवलम्बन किया गया है । कुर्आन में बारम्बार यह बात दोहराई गई है कि, एक बार हम (खुदा) जीवित करेंगे, फिर मारेंगे, फिर कयामत के दिन उठायेंगे ।

अज़ीज को मध्य में मारना और कयामत के पूर्व जीवित करना और फिर मारना तथा फिर कयामत को उठाना ? उन समस्त आयतों के विरूद्ध है ?

हमने कुर्आन में वर्णित विभिन्न लोगों के कलाम (कथन) के सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप में लिखा। यदि समस्त वर्णन लिखा जाये तो इसी विषय की एक बड़ी पुस्तक बन जाये।

जिन पैग़म्बरों का वर्णन कुर्आन में हैं। उसमें यह विषय विस्तृत रूप में है, जैसे मूसा का बृतांत, जो कुर्आन में है, उसमें यह विषय आपको अत्यधिक मिलेगा, उसे हम अपने अन्य दूसरे ग्रन्थ में लिखेंगे। अतः यहाँ इस पुस्तक के बढ़ जाने के भय से नहीं लिख रहे हैं।

अब आगे के पृष्ठों में कुर्आन का एक विख्यात और विचित्र विषय "मुहकमात और मुतशाबेहात" है। उसका वर्णन करेंगे।

कुर्आन के लेखक की विलक्षण कल्पना

प्रत्येक विद्वान्-लेखक या सुधारक जब किसी ग्रन्थ की रचना करता है तो उसके अन्तरात्मा में यही भावना होती है कि उसके विचारों को जिन्हें वह ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत कर रहा है; अधिकाधिक पठन-पाठन एवं श्रवण कर जन साधारण संमार्ग ग्रहण करें।

अतः वह इस बात का यथा सम्भव पूर्णतः प्रयास करता है कि उसके विचार बुद्धिगम्य-शिक्षाप्रद एवँ कल्याणकारी मार्ग के प्रदर्शक एव प्रेरणादायी हो। वह यह भी प्रयत्न करता है कि उसके ग्रन्थ की भाषा-शैली, वाक्य-रचना एवं प्रस्तुतीकरण निरर्थक या मिथ्या भावना प्रसारण करने वाले न हो। भाषा इतनी जटिल-दुरुह एवं द्विअर्थी अथवा उलझी हुई न हो कि जिसे

पाठक पढ़ कर ग्रहण न कर सके । कठिन स्थलों-वर्णनों एवं भावों को स्पष्ट करने हेतु ग्रन्थकार उनके अर्थ भी लिख देता है । इतना ही नहीं अपितु अपने ग्रन्थ को बोधगम्य बनाने, अपने विचारों को प्रत्येक जन साधारण तक पहुंचाने तथा उन्हें अपने विचारों से प्रेरित एवं प्रभावित करने हेतु अपनी कठिन एवं क्लिष रचना की कुञ्जी भी प्रकाशित कर देता है । जिस ग्रन्थ की यहां चर्चा है और जिसके विषय में हम इस पुस्तक में अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं दावा तो उसका भी यही है कि:-

'किताबुन अन्ज़ल्ना हो इलैका लुख्रेजन्नासा मिनज़्ज़ुलोमाते इलन्नूर' —कुर्आन, सूरत इब्राहीम, पारा १३, रकू १/१३

अर्थात्—(ऐ मुहम्मद ! हमने (खुदा ने) इस पुस्तक को तेरी ओर उतारा ताकि तू लोगों को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाये ।

परन्तु यह उपरोक्त दावा (घोषणा) न तो तर्क की कसौटी से ही सिद्ध होता है और न शिक्षा से ही । क्योंकि उक्त पुस्तक (कुर्आन) की शिक्षा (उपदेश) मे प्रकाश की ओर ले जाने वाला कोई ज्ञान नहीं अपितु इसके प्रतिकूल अन्य मनुष्यों में द्वेष-घृणा, पक्षपात-हत्या-कुकर्म तथा लूट-मार आदि अन्धकार की ओर अग्रसर करने वाले विचारों का ही बाहुल्य है, इन बातों का वर्णन हम पुस्तक में यथा स्थान करेंगे । यहां तो केवल इतना ही प्रतिपादन करना है कि यह कुर्आन ही एक ऐसा ग्रन्थ है कि जिसका कथन है कि "मेरा एक भाग (आयतें) ऐसा है जो बुद्धि में आ सकता है, अर्थात् समझ में आने योग्य है, और इसका एक भाग ऐसा है जो मानव-बुद्धि की पहुंच से परे [दूर] है, अर्थात् उसे मनुष्य समझ ही नहीं सकता ।"

पाठक ! कदाचित् सोचते होंगे कि बड़े कठिन भाग को भी कठिन परिश्रम द्वारा समझा जा सकता है; परन्तु बात ऐसी नहीं है । वहां तो स्पष्ट लिख दिया गया है कि उसको [कठिन भाग को] खुदा के अतिरिक्त कोई समझ ही नहीं सकता । इतना ही नहीं अपितु उसके समझने और उसकी तावील (व्यवस्था) का यत्न करने वाले को टेढ़े दिल वाला इस्लाम का शत्रु और अवज्ञाकारी कहा गया है वहाँ पर तो प्रतिबन्ध है कि इन वचनों (आयतों) पर तो ईमान (विश्वास) लाना है कि यह खुदा का कलाम (कथन) है, किन्तु समझने का यत्न नहीं करना चाहिये और अपने ईमान को यहां तक ही सीमित रखना कि इन आयतों (वचनों) के अर्थ खुदा के अतिरिक्त कोई (भी) समझ ही नहीं सकता ।

पाठक ! सम्भवतः आप विचार करेंगे कि अपनी पुस्तक [ग्रन्थ] के हेतु कौन लेखक-रचयिता या ग्रन्थकार ऐसा लिख सकता है ? परन्तु जब हम आपके समक्ष अकाट्य एवं ठोस प्रमाण प्रस्तुत करेंगे तब आपको भी विश्वास हो जायेगा कि एक ऐसी भी पुस्तक है, जिसमें ऐसा भी लिखा है । जब यह एक विलक्षण कल्पना प्रतीत होती है तो इसका कारण क्या है ? यह विचारणीय है, क्योंकि कोई बात या कार्य बिना कारण के सम्भव नहीं ।

यह बात स्वत सिद्ध है कि जब मनुष्य के मुख से कुछ ऐसी बातें निकल जाती हैं, जो युक्ति और प्रमाणों से सिद्ध न हो सकें, निराधार-निरर्थक और मिथ्या हो तो वह वक्ता उन बातों की पुष्टि के हेतु कोई ऐसी बात प्रस्तुत करता है कि लोग भ्रम में पड़ कर उस पर अविश्वास न करने लग जाएं । बस,

यही कारण इस धारणा का है कि 'इन आयतों का अर्थ खुदा के अतिरिक्त कोई समझ ही नहीं सकता ।

कुर्आन ने ऐसी बातों पर आवरण डालने हेतु विचित्र मार्ग अपनाया है । कुर्आन के अन्दर ऐसी आयतें बहुत आती हैं, जिन्हें बुद्धि और विवेक स्वीकार नही कर सकते ।

कुर्आन के निर्माता ने प्रथम लोगों को चकित करने हेतु बुद्धि-विरुद्ध बातों का प्रयोग तो कर लिया और पश्चात् ध्यान आया कि इन बातों से सन्देह होता है । ऐसा न हो कि मुसलमान इन बातों पर अविश्वास कर मुझसे विमुख हो जाये और मेरी पैग़म्बरी की सीमा से निकल जायें । अतः उसने एक ऐसी युक्ति सोची कि जिसके मान लेने से समस्त कार्य व बातें सिद्ध हो जायें और किसी के मन में अविश्वास भी न हो सके । यह वही युक्ति है, जिसके द्वारा कुर्आन को दो भागों में विभक्त कर दिया गया है, जिन्हें हम नीचे लिख रहे हैं ।

कुर्आन के दो भागः मुहकमात और मुतशाबेहात

हम इस प्रकरण को कुर्आन के उच्च कोटि के विद्वान् और व्याख्याकार अल्लामा जलालुद्दीन सियुति की जगत् विख्यात पुस्तक 'तफ़सीर इत्तिकान' से उद्धृत कर रहे हैं ।

अल्लामा ने मुहकमात और मुतशाबेहात आयतों की वास्तविकता को अधिक भली प्रकार से स्पष्ट किया है–प्रथम उसने कुर्आन की उस आयत को लिखा है, जिसमें मूल रूप से मुहकमात और मुतशाबेहात का वर्णन है । कुर्आन की वह आयत निम्न प्रकार हैः—

हुवल्लजी अन्जला अलैकल किताबा मिनहो आयातुम्मुहकमातुन हुन्ना उम्मूल किताबे वा उखरो मुतेशाबेहातुन ।

कुर्आन, पारा ३. रकू १/६

अर्थात्-उसी (खुदा) ने तुझ पर किताब (कुर्आन) उतारी, उसमें कुछ आयतें पक्की हैं और वो ही किताब का मूल हैं और दूसरी (आयतें विभिन्न अर्थ वाली हैं।

तफ़सीर इत्तिकान भाग २, पृष्ठ १

अल्लामा ने आगे लिखा है कि मुहकम और मुतशाबह के निश्चित करने के संबन्ध में विभिन्न प्रकार के वचन आये हैं:—

१—यह कि जिस विषय का तात्पर्य स्पष्ट रीति से या व्याख्या द्वारा ज्ञात हो जाये, वह मुहकम है, और जिस वस्तु का ज्ञान खुदा ने अपने ही लिये विशेष कर बनाया है, जैसे कयामत (प्रलय) का कायम (स्थापित) होना। दुज्जाल अर्थात् इस्लाम के सिद्धांतानुसार दुज्जाल नामक एक व्यक्ति होगा, जो लोगों को पथभ्रष्ट करेगा। और सूरतों के जो प्रथमाक्षर आये हैं, जैसे अलिफ़-लाम व मीम्, यह सब मुतशाबह हैं।

२—जिस वस्तु के अर्थ स्पष्ट प्रतीत हो जायें, वह मुहकम है और जिस वस्तु के अर्थ इसके प्रतिकूल हो (अर्थात् जिसके अर्थ न जाने जा सकें) वह मुतशाबह है।

३—जिस अमर [आयत] की एक ही वजह पर व्याख्या हो सके वह मुहकम है, और जिसकी व्याख्या कई प्रकार के अर्थों को प्रकट करती हो, वह मुतशाबेहात है।

४—जिस बात के अर्थ बुद्धि स्वीकार करती हो, वह मुहकम है, और जो अमर (आयत) बुद्धि के प्रतिकूल हो, वह मुतशाबह है। जैसे नमाजों की गणना, रमज़ान माह में ही रोजे रखना और अन्य महीनों में न होना। (यह कथन मावर्दी का है।)

५—जो वस्तु अपनी सत्ता में दृढ़ हो वह मुहकम और जो वस्तु अन्य की ओर फेंरी जाये, अर्थात् अपने अर्थो पर निर्भर नहीं करती, वह मुतशावह है।

६—जिसकी व्याख्या उसकी सत्ता के अन्तर्गत है वह मुहकम है, और जो बिना व्याख्या के समझ में न आ सके वह मुतशाबह है।

७ जिसके शब्द बारम्बार न आये हों, वह मुहकम है, और जिसके शब्द बारम्बार आये हों, वह मुतशाबह है।

८—मुहकम नाम है कर्तव्य का और आदेश आदि का और मुतशाबह गल्प और गाथाओं (कथाओं) को कहते हैं।

९—इब्ने अबी हातम आदि ने, इब्ने अब्बास से रवायत की है कि मुहकमात क़ुरआन की मान्यता प्राप्त आयतों, हलाल हराम-मर्यादाएँ तथा कर्तव्य आदि का नाम है, जिस पर ईमान लाया जाता है और उन्हें कार्यान्वित किया जाता है, और मुतशाबेहात कुर्आन की निरस्त की गई, आयतों, आदि अन्त आदि बातों का नाम है, जिन पर ईमान तो लाया जाता है किन्तु उन पर अमल (पालन) नहीं किया जाता।

१०—फ़रियाबी, मुजाहिद से रवायत करता है कि मुहकमात उन्हीं आयतों का नाम है, जिसमें हलाल और हराम का वर्णन हुआ हैं । इसके अतिरिक्त कुर्आन का जितना भाग है वह सब मुतशाबेहात है ।

११—इब्ने अबी हातम, रबी से रवायत करता है कि मुहकमात, कुर्आन के झिड़कने और फटकारने वाली आज्ञाओं का नाम है ।

१२—अबू फ़ाख्ता ने कहा कि इससे सूरतों के आरम्भ से तात्पर्य है । याहया ने कहा, नहीं अपितु कर्तव्य-विधि और निषेध आदि है ।

१३—हाकम आदि ने इब्ने अब्बास से रवायत की है कि 'सूरत अनआम की अन्तिम ३ आयतें मुहकमात हैं, जैसे 'कुलताआलू' और दो आयतें उसके पश्चात् की, और इब्ने अबी हातम ने दूसरे ढंग पर ही इब्ने अब्बास से रवायत की है अर्थात् 'कुल-लाआलू' से ३ आयतों तक और यहां से अर्थात् 'वा कज़ा रब्बेका अल्लालबोदु' से उसके पीछे की ३ आयतों तक मुहकमात हैं ।

१४—अब्द बिन हबीब, ज़ूहाक से रवायत करता है कि मुहकमात वह वस्तु है, जो कि कुर्आन में निरस्त नहीं हुई और मुतशाबेहात वह है, जो निरस्त हो गई । इब्ने अबी हातम कहता है कि निस्सन्देह अकरमा और कतादा और उनके अतिरिक्त दूसरे लोगों ने भी कहा है, मुहकम वह कुर्आन है जिस पर अमल किया जाता है, और मुतशाबेहात वह है जिस पर ईमान लाना आवश्यक है, किन्तु अमल नहीं किया जाता है ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, भाग २, पृष्ठ ३

इसके आगे अल्लामा सियूति ने इस विषय में मुस्लिम विद्वानों का परस्पर मतभेद लिखा है कि विद्या-विशारद और भाषाशास्त्री लोग मुतशाबह आयतों को जान सकते हैं या नही ? किन्तु इस विचार के लोग सीमित (कम) हैं, जिसका पक्ष है कि जान सकते हैं, परन्तु बहुसम्मत मुस्लिम विद्वानों का यह मत है कि मुतशाबह आयतों के अर्थों को [तात्पर्य को] खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं जान सकता, जैसा हम आगे लिख रहे हैं ।

सर्व प्रथम तो यह जान लेना आवश्यक है, जैसा कि हम पूर्व में लिख चुके हैं कि प्रत्येक विषय पर मुस्लिम विद्वानों में परस्पर मतभेद हैं । जब कोई इस्लाम के सिद्धांतों पर आक्षेप करता है, तो वह उन लोगों की सम्मति प्रस्तुत करके, जो अत्यधिक न्यून हैं और आम मुसलमान उनके कथन को मानते भी नहीं, उन चन्द लोगों की सम्मति से मुंह बन्द करने का यत्न करते हैं ।

हम आगे इस बात के प्रमाण उपस्थित करेंगे कि अधिकांश मुसलमानों का यही मत है कि, मुतशाबेहात (आयतों) का अर्थ केवल खुदा ही जानता है,और मुहकम-मुतशाबह के अर्थों से भी यही प्रमाणित होता है । मुहकमात, मुहकम का बहुवचन है । मुहकम वह है कि जिसके शब्द और अर्थ की सत्ता [हैसियत] में कोई सन्देह नहीं उत्पन्न हो,.... .....पस, फ़साद (झगड़ा) या खलल (विरोध) को रोकने पर भी यह शब्द बोला जाता है, अर्थात् सन्देह और विवाद को रोकता है, क्योंकि उसका कथन (बयान) स्वयं अपने में दृढ़ होता है और दूसरों का मुहताज [अभिलाषी] नहीं होता ।

रूहुल्मुआनी में है कि 'वाजेहतुल्माने जाहिरतुद्दलालते मीहकमतुल्इबारते' अर्थात्–जिसके अर्थ स्पष्ट हों और प्रत्यक्ष दृढ़ वाक्यों पर निर्भर हो वह मोहकम है।

मुतशाबेहात—मुतशाबह शुबह (सन्देह) से है और किसी वस्तु का सन्देह वह है, जो उसकी कैफ़ियत [यथार्थ] के मान से उसकी मिसल हो अर्थात् जो किसी की वास्तविकता में सम्मिलित हो।

लेखक ने मुहकम और मुतशाबह पर अत्यधिक चर्चा करने के पश्चात् लिखा है कि एक और रंग में मुतशाबह तीन प्रकार का है।

१—वह एक जिसकी यथार्थता [हकीकत] पर मनुष्य ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, जैसे—क़यामत आदि।

२—एक वह जिसे जान सकता है मनुष्य, जैसे सरल और कठिन आदेश।

३—और, एक वह जो इन दोनों के मध्य में है; जिसको विद्वान् जान सकता है, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति नहीं जान सकता।

तफ़सीर बयानुल्क़ुर्आन, भाग १, पृष्ठ २७१

इसी प्रकार बैजावी में कहा गया है कि 'उहकमत इबारतोहा बेअन्ना हफ़ज़त मिनल्अजमाले वल इहतमालें' अर्थात्-ऐसी रचना को हुकुम [आदेश] कहते हैं, जो हर प्रकार के सन्देह और विवाद से स्वरक्षित हो। फिर आगे लिखा है कि-मोहकम वह है, जो अर्थ के विवाद से स्वरक्षित हो और-मुतशाबह वह है, जो अर्थ की दृष्टि से सन्देह में डाले।

तफ़सीर बैज़ावी, सूरत आले इमरान्, पृष्ठ ४३

इस विषय में इसी प्रकार के अर्थ तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ४५-४६ व तफ़सीर कुर्आने अजीम, पृष्ट ३०, तफ़सीर हक्कानी पृष्ठ ११९ लिखते हैं कि मुहकम और मुतशाबेहात के विषय में मुकद्दम उलमा (मुस्लिम विद्वानों) के विभिन्न वचन हैं। कुछ कहते हैं कि मुहकम वह कलाम है, कि जिसकी मुराद (अर्थ) मालूम हो, चाहे स्पष्ट रूप से या तावील (व्याख्या) द्वारा, और मुतशाबह वह कलाम है, कि जिसको खास (विशेष) खुदा ही जानता है। जैसे कि दज्जाल का खरूज (आक्रमण) तथा कयामत [प्रलय]।

कुछ एक कहते हैं कि जिसके अर्थ स्पष्ट हो वह मुहकम और जिसके अर्थ अस्पष्ट हो वह मुतशाबह.....इत्यादि। आगे है, कि जो इल्लल्लाह पर ठहरना आवश्यक समझते हैं, तो उनके निकट खुदा के अतिरिक्त मुतशाबह के अर्थ कोई नहीं जानता, और फिर उसके कुर्आन में नाज़िल करने (उतारने) से केवल विद्वानों की परीक्षा करना ही उद्देश्य है. कि इन उमूर [आज्ञाओं] में केवल खुदा के फ़रमान [कथन] पर भी ईमान लाते हैं या नहीं ? **तफ़सीर हक्कानी, मुकद्दमा पृष्ठ ११९**

तफ़सीर हक्कानी में कुर्आन की आयत '**ला यालमो तविलहू इल्लल्लाह**' इब्ने अब्बास, आयशा, हसन और मलिक बिन अन्स, कसाई, फ़रार और अबू हनीफ़ा इत्यादि उलमा (विद्वान) यह कहते हैं कि 'इल्लल्लाह' पर कलाम समाप्त हो गया और यहां ठहरना अनिवार्य है: और 'वर्रासेखीना' भिन्न कलाम है : 'वावअत्फ़' दो वाक्यों की सधि के लिये नहीं अपितु वाक्य का प्रारम्भ है। इस पद्धति से यह अर्थ होंगे, कि मुत-

शाबेहात से जो कुछ मुराद (अर्थ) है उसको खुदा के अतिरिक्त कोई नहीं जानता और यही उचित है।

तफ़सीर हक्कानी, पारा ३, पृष्ठ ३६

तफ़सीर इब्ने कसीर पारा-३-पृष्ठ-३८-३९

अभी तक हमने मुहकम और मुतशाबह के अर्थ विभिन्न विद्वानों और व्याख्याकारों की दृष्टि मे बतलाये हैं परन्तु अब कुर्आन की दृष्टि से बतायेंगे कि कुर्आन मुहकमात को क्या मानता है ? कुर्आन, पारा ३ की आयत में लिखा है 'हुन्ना उम्मुल किताब' यह आयतें मुहकमात असल (शुद्ध) और मग़ज़ (मस्तिष्क) कुर्आन हैं।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १ पृष्ठ ६५ में बैज़ावी ने भी उम्मुल किताब का अर्थ (अस्लाहू) लिखा, अर्थात् क़ुर्आन का असल (मूल) यही मुहकमात हैं, और बयानुल क़ुर्आन, पृष्ठ २७० पर लिखा, कि उम्मुल किताब का अर्थ उसूल (सिद्धांत) है, तथा तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ १७७ पर लिखा, कि मुहकमात कुर्आन की आज्ञाओं के उसूल हैं..... .....'दूसरी शिक (पद्धति) पर यह अर्थ होगा, कि मुहकमात कुर्आन की मदार (निर्माता) और सहारा (आधार) है, तथा समस्त आयतों की सरदार (अग्रणी) है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १७७

तफ़सीर जलालैन और तफ़सीर कुर्आनुल अज़ीम में भी ऐसा ही लिखा है, तथा तफ़सीर इत्तिक़ान, भाग २, पृष्ठ १ पर ही

लिखा है, कि मुहकम की पहचान बयान पर निर्भर नहीं रहती और मुतशाबह का बयान ही एक खिलाफ़ तवक्का अमर है, अर्थात् विचारों के प्रतिकूल आयत है।

प्रथम में ही हम मुस्लिम विद्वानों के इत्तकान से १४ प्रकार के वचन लिख चुके हैं जिनसे आपको विभिन्न विचार रखने वाले मुस्लिम विद्वानों के विचार ज्ञात हुए। उन सबको ध्यान में रखते हुए निम्न विचार देखिये:—

कुर्आन में दो प्रकार की आयतें मुहकमात और मुतशाबेहात हैं। मुहकम, वह है जो सरल और स्पष्ट अर्थ रखने वाली है और वही कुर्आन का मगज़ (मस्तिष्क) है, वही कुर्आन की असल (मूल या शुद्ध) है। मुहकमात को समझा जा सकता हैं, तथा चुतशाबेहात मनुष्य की बुद्धि से परे है.... .....इत्यादि।

जब स्वयं ही कुर्आन की सम्मति हैं कि मुहकमात ही कुर्आन का मगज़ और असल है तथा सहारा व मदार हैं, तो (अर्थापत्ति) से यह स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि दूसरी प्रकार की आयतें (मुतशाबेहात) न तो कुर्आन का मगज़ है, न असल हैं, न सहारा और मदार ही हैं। ख़ुदा के कलाम (ईश्वरीय (कथन) में यह तफ़रीक़ (अन्तर) कभी नहीं हो सकती, क्योंकि एक सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, सर्वाधार और जगत्पिता परमेश्वर की वाणी में इतना अन्तर होना सम्भव नहीं कि उसकी वाणी का एक अंश स्पष्ट और दूसरा अस्पष्ट और एक शुद्ध तथा दूसरा अशुद्ध हो। जब कि उसकी वाणी का उद्देश्य मनुष्यों का सुधार करना और अँधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर करना हो!

मुजमल और मुतशाबह क्या है ?

जिसमें तावील (व्याख्या) की गुञ्जायश नहीं, वह भी दो प्रकार का है-या तो नसख़ (निरस्त) की भावना, या नहीं। यदि निरस्त (नसख़) की भावना है, तो उसे मुफ़स्सर कहते हैं और यदि निरस्त की भावना नहीं है, तो उसे मुहकम कहते हैं।

पैगम्बर अलैहिस्सलाम के पश्चात् समस्त आयतें अहकाम (जिनमें हुकुम हो) और सब क़िस्से (कथाएँ) तथा ख़ुदा की तौहीद (अद्वैत) के सम्बन्ध में समस्त आयतें मुहकम हैं।.... ....जिस कलाम के अर्थों में पोशीदगी (अस्पष्टता) हो या शब्दों से अतिरिक्त हो, या केवल शब्दों में ही गिफ़ा (गोपनीयता) है, प्रथम को ख़फ़ी (गोपनीय) कहते हैं-और द्वितीय को-जिसके शब्दों में अशकाल (कठिनता) है, जो विचार करने तथा प्रकरण पर ध्यान से दूर हो जाता है, उसे मुश्किल कहते हैं, और जो (द्वितीय) दूर नहीं होता, वह भी दो अवस्थाओं से रिक्त नहीं, या तो उसके लेखक की ओर से कठिनाई दूर करने की व स्पष्ट करने की आज्ञा हो तो उसे मुजमल कहते हैं, या फिर स्पष्ट करने हेतु आज्ञा न हो तो उसे मुतशाबह कहते हैं, जैसे-ख़ुदा तख़्त पर बैठा है, ख़ुदा का मुंह और ख़ुदा के हाथ ... ... -इत्यादि सफ़ाते मुतशाबह हैं, और हरुफे मुक़त्तेआत [प्रारम्भिक अक्षर] जो सूरतों के आरम्भ में आते हैं, जैसे अलिफ-लाम और मीम बक़र के आरम्भ में, अलिफ लाम,-मीम-,स्वाद एराफ़ के, तथा त्वा सीन और मीम् कसस के आरम्भ में आते हैं।

तफ़सीर हक़्क़ानी, मुकद्दमा, पृष्ठ ११६

इस उपरोक्त कथन से भी आपको ज्ञात हो गया कि-मुतशाबह वह है जो कि लेखक की ओर से भी जिसकी कठिनता (अशकाल) को दूर करने की आज्ञा नहीं है, उसे मुतशाबह कहते हैं। इससे स्पश्ट है कि मुतशाबह को न तो स्वयं जाना जा सकता है, न किसी को जताने की आज्ञा है।

यहां तो कुर्आन की आयतों को दो भागों में विभक्त किया गया किन्तु कुर्आन में दो आयतें और ऐसी हैं, जिनसे प्रमाणित होता है, कि कुर्आन की समस्त आयतें मुहकम हैं और दूसरी आयत से जान पड़ता है, कि कुर्आन की समस्त आयतें मुतशाबह हैं। वह दोनों आयत निम्न प्रकार हैं—

अलिफ़, लाम, रा, उहकेमत् आयातोहू सुम्मा फ़ुस्सेलत् मिल्लदून हकीमिन खबीर।

कुर्आन, सूरत हूद, की पहली आयत पारा १७ अर्थात्-कुर्आन एक ऐसी पुस्तक है, जिसकी आयतें तर्क से मुहकम की गई है [फिर उसके साथ] स्पष्ट रूप से कही भी गई है। यह एक हकीम वा खबरदार (सर्वज्ञाता) की ओर से है। **तफ़सीर मज़हरी भाग ६, पृष्ठ १७**

इस आयत के अनुसार कुर्आन की समस्त आयतें मुहकम हैं। किन्तु उपरोक्त व्याख्या में लिखा कि 'स्पष्ट रूप से कही भी गई हैं यहां तो केवल जो मुहकमात आयतें हैं, वही स्पष्ट रूप से कही जाने वाली, कही गई है। जो मुतशाबह आयतें हैं, जैसा कि ऊपर लिख चुके हैं कि वह आयतें ऐसी हैं जिन्हें खुदा ही जानता है, तो फिर उनको 'स्पष्ट रूप से कही गई' लिखना सर्वथा मिथ्या है। यहां कुर्आन की समस्त आयतों को मुहकम कहा

क्या है, और जैसा कि हमने पूर्व में लिखा कि कुर्आन की आयतों को दो भागों में विभक्त किया गया है, जो मुहकमात और मुतशाबेहात हैं। अतः उस पारा ३ की आयतानुसार कुरआन की समस्त आयतें मुहकम नहीं हो सकती। यह एक प्रत्यक्ष विरोधाभास और मतभेद है।

द्वितीय आयत :—

अल्लाहो नज़्ज़ला अहसनल्हदीसे किताबम्मुतशाबेहा।

अर्थात्-यह किताब (कुर्आन) अच्छी हदीस है, खुदा ने उतारी है इसकी आयतें मुतशाबह हैं।

कुर्आन, सूरत जूम्र, पारा २३, रकू ३।१७

उपरोक्त इन दोनों आयतों के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी भाग २, पारा ३, पृष्ठ १७८ पर लिखा है कि-सूरत हूद की आयत में कुर्आन की समस्त आयतों को मुहकम लिखा परन्तु दूसरी आयत में मुतशाबेहा, [हमने यह आयत ऊपर दी है] जिससे ज्ञात होता है कि पूर्ण कुर्आन मुतशाबह है। यह विरोध क्यों ?

आगे व्याख्याकार ने इस विरोध का उत्तर देने व स्पष्टीकरण करने का साहस किया है; किन्तु किसी भी सत्याभिलाषी को सन्तोष, इतने स्पष्ट विरोध को देखते हुए, नहीं हो सकता। दूसरे-कुर्आन के अनुवादकों व व्याख्याकारों ने मुतशाबह का अर्थ मुशाबह-एक-दूसरे-का परस्पर समर्थन कर इस विरोध को समाप्त करने का यत्न किया है।

हमने पूर्व में लिखा कि कुर्आन की कुछ आयतें कुर्आन का मग़ज़ और असल है। मैं कहता हूं कि उपरोक्त द्वितीय

आयत के वाक्य ने समस्त विवादों का निर्णय स्वयं ही कर दिया है, कि मुहकमात और मुतशाबेहात एक है या इनमें अन्तर है। यदि अन्तर है तो उस अन्तर का प्रभाव आयतों का मनन करने वालों पर क्या होता है ? मुहकमात के अनुगामी होने की ताईद (समर्थन) तो प्रत्येक ने की परन्तु मुतशाबेहात के लिये लिखा है कि:—

फ़अम्मल्लज़ीना फ़ी कुलूबेहिम ज़ैगुन फ़यत्तबेऊना मा तशा बहा मिन् हुब्ते ग़ाअलिफ़तनते बन्तेगाआ ताबी लेही व मा यामलो तावा लहू इल्लल्लाह।

कुर्आन, सूरत आले इमरान, पारा ३, रकू १।९

अर्थात्–पस, जिन लोगों के दिलों में सत्य से टेढ़ापन है, अर्थात् टेढ़े दिलोंवाले कुर्आनों मुतशाबेहात के पीछे पड़ जाते हैं कि वह अपनी मानसिक इच्छाओं के प्रभाव में आकर मुतशाबह के उन अर्थो में रत होते हैं, जो उनके चलन [प्रवृति] के सदृश हों और शब्दों में उन अर्थो का समावेश होता है। वह न तो मुहकम आयतों और न हदीसों की ओर मन को फेरते हैं, और न मुहकमात के अर्थो की ओर ध्यान देते हैं। या तात्पर्य यह है मुतशाबेहात पर विश्वास रखते हुए और उनके अर्थो को मानते हुए मौन धारण नहीं करते अपितु अपनी ओर से तावीलें [व्याख्याएं] करते हैं। पस, जहां तक सम्भव हो सके मुतशाबेहात को मुहकमात की ओर लौटाना आवश्यक है, ताकि गुप्त अर्थ स्पष्ट हो सके, और उस पर अमल किया जा सके। जैसे—नमाज़–ज़कात–सूप आदि। गुप्त अर्थ–युक्त मुतशाबेहात हैं। अतः दूसरी आयतों [मुहकम] और हदीसों की ओर आकृष्ट होकर, उनके अर्थो को दृढ़ करना चाहिये, या मुतशाबेहात की

ताबील [व्याख्या] त्याग कर, या निश्चित अर्थों को त्याग कर मौन धारण कर लिया जाये और इस बात पर ईमान [विश्वास] रखा जाये कि जो कुछ शारा [व्याख्याकार] की मुराद है, वह सत्य है। हम उसको मानते हैं जो उम्मते इस्लाम की सर्व सम्मति और सहीह [ठीक] हदीसों से प्रमाणित हो चुका है कि कयामत के दिन ईमानदारों को खुदा के प्रत्यक्ष दर्शन होंगे पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान, तो इस पर ईमान रखना और यह कहना अनिवार्य है, जैसे कि कुर्आन की आयत में है :—

वुजूहुंयोमए ज़िन्नाज़िरतुन इला रब्बेहा नाज़ेरह ।

कुर्आन, सूरत कयामत, पारा २९

अर्थात्-कितने मुंह उस दिन खुदा को देखने वाले हैं दृष्टि से। तात्पर्य आँखों से देखना है, हां ! यदि विश्वस्त प्रमाण से निश्चय न हुआ हो, जैसे—**यदिल्लाहो फ़ौका एदीहिम** ' अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है, और ' **अर्रहमानों अलल अर्शिस्तवा** ' इन दोनों [आयतों] में खुदा का हाथ और खुदा के अर्श (सिंहासन) पर बैठने का निश्चय किसी मोहकम आयत में न हुआ और सहीह [प्रमाणित] हदीस से भी नहीं हुआ. तो ऐसी आयत के अर्थ में मौन धारण करना चाहिये, परन्तु उन पर ईमान लाना अनिवार्य है, और ऐसे मुतशाबह के अर्थ स्पष्ट न किये जायें तथा मुहकम आयत **'लैसा कमिस्लेही शय-अन'** उस खुदा की मिसल कोई वस्तु नहीं। इस बात को मानते हुए कह दिया जाये कि अल्लाह मुम्कनात (सम्भव) वस्तुओं की समस्त सफ़ात (गुणों) से पवित्र है, और मुक़त्तेआत (सूरतों

के प्रथमाक्षर अलिफ़-लाम-मीम आदि) की व्याख्या में कष्ट न किया जाये, क्योंकि उसकी आज्ञा नहीं !

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १७७ से १८०

तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि 'इब्तगा अल्फ़ित्नते' अर्थात् वह मुतशाबेहात के पीछे इस उद्देश्य से पड़ते हैं कि मुसलमानों में दीन की ओर से फ़ित्ना बिपा कर दें अर्थात् कलह और आपत्ति उत्पन्न कर दें सन्देह डाल दें और शंका उत्पन्न कर दें तथा मोहकम की मुतशाहबह से तुलना कर मुहकम को तोड़ दें । (अब इसे पढ़कर कुर्आन में और तफ़रीक़ (अन्तर) क्या होगी कि मुतशाबेहात मुहकम को भी तोड़ने की शक्ति रखती है । तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १८०

जैसा कि हमने आरम्भ में लिखा कि हज़रत मुहम्मद ने ऐसी आयतें लोगों के समक्ष प्रस्तुत कीं, जो बुद्धि से परे थी और कुर्आन के प्रारम्भ-काल में ही लोग इन आयतों पर आक्षेप करने लग गये थे । तफ़सीर मज़हरी ने इस बात को निम्न शब्दों में लिखा है:—

कि कुछ यहूदी मुसलमान बन गये और मुतशाबेहात की गलत व्याख्या और मिथ्या मतों का प्रसार प्रारम्भ कर दिया; चुनांचे हरूरया-मोतिज़ला जौर रा़फ़ज़ी बन गये ।

तफसीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १८१

उपरोक्त वाक्यों से आपको पता लग सकता है कि इन मुतशाबेहात आयतों ने इस्लाम में कितना विवाद और द्वेष

उत्पन्न कर दिया था कि विद्वानों ने अपने मत पृथक बना लिये ।

दारमी ने सुलेमान बिन यसार की रवायत से लिखा है, कि सब्बीग़ नामक एक व्यक्ति मदीना में आया और क़ुर्आन के मुतशाबेहात के विषय में पूछने लगा, तो हज़रत उमर ने उसे बुलवाया और खजूर की नगी कम्चियाँ उसके लिये तैयार रखीं जब वह आया तो हज़रत उमर ने पूछा कि–तू कौन है ? उसने उत्तर दिया कि मैं अल्लाह का बन्दा सब्बीग़ हूं ! हज़रत उमर ने कहा, कि मैं अल्लाह का बन्दा उमर हूं ! हज़रत उमर ने यह कहने के पश्चात् खजूर की एक कम्ची लेकर मारी और उसके सिर को लहूलुहान कर दिया । तब सब्बीग़ बोल उठा–अमीरुल मोमेनीन ! बस कीजिये ! वह वस्तु जो पूर्व में मेरे मस्तिष्क में थी, जाती रही । (सब्बीग़ को छोड़ तो दिया किन्तु अबू उस्मान सिन्धी का कथन है) हजरत उमर ने बसरा (सब्बीग़ के निवास स्थान) में लिख भेजा कि सब्बीग़ के साथ बैठना उठना न किया जाये और अबू मूसा अन्सारी (बसरा के हाकिम) को लिख भेजा कि सब्बीग़ के सम्बन्ध बैठने-उठने तक का भी न रखा जाये तथा उसका वेतन भी बन्द कर दिया जाये ।

इमाम शाफ़ई (चार इमामों में से एक) ने कहा कि मेरा निर्णय अहले कलाम (मोतिज़ला और कदरया सम्प्रदाय आदि) के हेतु भी यही है ।

दारमी ने हज़रत उमर का फ़रमान (आदेश) उद्धृत किया है, कि निकट भविष्य में तुम्हारे पास ऐसे लोग आयेंगे कि जो मुतशाबेहात क़ुर्आन में तुमसे झगड़ा करेंगे, तुम सुन्नते रसूल से उनकी पकड़ करना ।.....

हज़रत अबू हुरैरा का कथन है, कि हम हज़रत उमर के पास थे कि एक व्यक्ति ने आकर (हज़रत उमर से) पूछा कि-कुर्आन मख़लूक़ है या ग़ैर मख़लूक़ ? अर्थात् कुर्आन ख़ुदा ने उत्पन्न किया है या ख़ुदा का ज्ञान हैं ? तो हज़रत उमर खड़े होकर उसके वस्त्रों से लिपट गये और उसे खींच कर हज़रत अली के पास ले गये, और कहा कि यह मुझसे आकर पूछने लगा कि कुर्आन मख़लूक़ है या ग़ैर मख़लूक़ ?

.....हज़रत अ़ली ने कहा कि खिलाफ़त (सज़ा अधिकारी आप हैं;) यदि मेरी होती तो मैं इसका सिर उड़ा देता ।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १८० (हाशिया)

मुतशाबेहात के सम्बन्ध में स्वयं हज़रत मुहम्मद को संदेह था

हज़रत आयशा की रवायत है—कि रसूलिल्लाह ने मुहकमात और मुतशाबेहात वाली आयतों के विषय में कहा है, कि यदि तुम ऐसे लोग देखो, जो कि मुतशाबेहात कुर्आन के पीछे पड़े हैं; तो समझ लेना कि यह वही लोग हैं; जिनकी चर्चा अल्लाह ने की थी । उनसे सावधान रहना ।

रवाहूल बुखारी हदीस, तज़रीदे बुखारी भाग २, पृष्ठ २६६

हज़रत अबू मालिक अन्सारी ने कहा—कि मैंने स्वयं रसूलिल्लाह से सुना, कहते थे मुझे अपनी उम्मत (सम्प्रदाय) के सम्बन्ध में केवल तीन बातों की चिन्ता है । उसमें प्रथम तो यह

है, कि कुछ लोग किताब [कुर्आन] खोल कर मुतशाबेहात की तावीलें [व्याख्याएँ] करने के इच्छुक होंगे। जब कि उनकी व्याख्या अल्लाह के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता !

पक्के इलम [ज्ञान] वाले तो यही कहते हैं, कि हमारा इस [कुर्आन] पर ईमान है। यह सब हमारे मालिक [खुदा] की ओर से आया है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १७६

'बल्तेग़ाआ तावेलेही' अर्थात् –वह अपनी इच्छा के अनुकूल मुतशाबेहात की तफ़सीर [व्याख्या] करने हेतु उनके पीछे पड़ते हैं। तफ़सीरे मुतशाबेहात की तलब [जिज्ञासा] कभी जहालत [मूर्खता] पर निर्भर होती है ? जैसा कि पूर्व में भी नवीन बातें मानने वालों ने किया है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृ १८१

अल खिताबी कहता है, कि मुतशाबह की जातियां हैं। एक तो वह कि यदि उसको मुहकम की ओर फेर कर और उसके साथ मिला कर ध्यानपूर्वक देखें तो उस मुतशाबह के अर्थ तत्काल स्पष्ठ हो जाते हैं और दूसरी जाति वह है, कि उसको हक़ीक़त (यथार्थता) की जानकारी प्राप्त करने का कोई मार्ग ही नहीं है। इस प्रकार के मुतशाबह का अनुकरण टेढ़ी चाल वाले लोग करते हैं, और वह उसकी तावील ढूंढ कर उसकी वास्तविकता तक न पहुंचने के कारण धोखे और फ़ितने [विवाद] में पड़ जाते हैं।

तफ़सीर इत्तिक़ान, भाग २, पृष्ठ ८

तावील (व्याख्या) का मतलब (अर्थ)

तावील [व्याख्या] का मतलब (अर्थ) एक वस्तु को यथार्थ और वास्तविकता की ओर आकृष्ट करना अर्थात् एक वस्तु को उसके शुद्ध कारण की ओर लौटाना, (जिसके लिये उसे बनाया गया है) आयत का शेष भाग यह है :—

व मा यालमो तवीलहू इल्लल्लाह । वर्रासेखूना फिल्इल्म यकूलूना आमन्ना बेही, कुल्लुम्मिन इन्दे रब्बेना व मा यज्जकरो इल्ला उलुल् अलबाब । कुर्आन पारा ३, रकू १।९

अर्थात्–और नहीं जानता कोई व्याख्या उस आयत की जो मुतशाबह है, किन्तु अल्लाह जिसने वह आयत उतारी है ।

इमाम सजावन्दी ने कहा है कि अहलेसुन्नत वल जमाअत (इस्लाम का सम्प्रदाय) के मज़हब में यहां पर वक़्फ़ अनिवार्य है, अर्थात् इल्लल्लाह पर ठहरना चाहिये, ताकि रासखाने इल्म (ज्ञान) जो इस आयत के पश्चात् आता है, आयतें मुतशाबह की व्याख्या जानने हेतु प्रविष्ट न हो जाये । इसलिए कि वास्तव में ' हक़ सूबहानहू तआला ' के अतिरिक्त उसकी व्याख्या का ज्ञान और किसी को नहीं और साबित [प्रमाणित] कदम विद्वान् लोग जो मोमिन अहले किताब हैं या जिस किसी को ज्ञान में योग्यता प्राप्त है, (वे) कहते हैं बिश्वास लाये हम मुतशाबह के साथ । सब मुहकमात और मुतशाबह आयतें हमारे

खुदा की ओर से हैं, और मेधावी ज्ञान वाले लोग ही शिक्षा को मानते हैं । तफ़सीर इत्तिक़ान भाग १, पृष्ठ ९५

तफ़सीर कादरी ने स्पष्ट बता दिया कि अहले सुन्नत वल-जमाअत इस बात को नहीं मानते कि रासिख लोग मुतशाबेहात को जानते हैं, क्योंकि रासखूना का वाक्य भिन्न है और मध्यका 'वाव' नया वाक्य बनाने हेतु है । पिछले वाक्य को जोड़ने हेतु वाव आतेफ़ा नहीं । अतः विद्वान् और ज्ञानी लोग मुतशाबह का नहीं जान सकते ।

तफ़सीर मज़हरी के लेखक अल्लामा काज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह उस्मानी लिखते हैं, कि सत्य बात तो वही है, जो हमने सूरत बकर के आरम्भ में लिख दी है कि मुतशाबेहात अल्लाह और उसके रसूल के मध्य एक रहस्य है । साधारण लोगों को उनका ज्ञान प्रदान करना अभिप्राय ही नहीं है । अपितु उनके लिये मुतशाबेहात का ज्ञान सम्भव ही नहीं है ।

तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ १८१

तफ़सीर मज़हरी ने कुछ लोगों की सम्मतियाँ भी लिखी हैं, जो यह मानते है कि रासिख लोग मुतशाबह को जानते हैं । हमारा उनसे कुछ अभिप्राय नहीं, हमारा आक्षेप तो उन पर है, जो इस बात को मानते हैं कि मुतशाबह का ज्ञान मात्र खुदा को है, दूसरा कोई नहीं जानता !

मैं कहता हूं कि जब आत्मा (रूह) के विषय में प्रश्न किया गया तो कुर्आन ने ऐसा ही उत्तर दिया 'व मा ऊतीतुम मिनल इल्मे इल्ला कलीला' अर्थात्, सम्पूर्ण आत्मा (रूह) खुदा

का अमर है। तुम्हें इस विषय में किञ्चित् ज्ञान दिया गया है। यहां मुतशाबेहात में भी वही कंयास (अनुमान) किया जा सकता है कि मुतशाबेहात का ज्ञान भी कुर्आन के लेखक ने मनुष्यों को नही दिया !

तफ़सीर मज़हरी का लेखक इस बात को मानता है कि अधिकता उन लोगों की है, जो यह मानते हैं, कि मुतशाबह का ज्ञान केवल ख़ुदा को है। आप लिखते हैं कि प्रायः (अधिकांश) विद्वानों का मत है कि ,वर्रासेखूना में 'वाव' नये वाक्य हेतु है। गत वाक्य 'इल्लल्लाह' पर समाप्त हो गया, यहां से नया वाक्य प्रारम्भ हुआ है।

यही कथन हज़रत उबय्य बिन काब, हज़रत आयशा और हज़रत अरवा बिन जुबैर तो उस की रवायत में इस पक्ष में हेतु इब्ने अब्बास की ओर भी की गई है। हसन बसरी और अकसर ताबेइन भी इसी पक्ष को मानते हैं। कसाई-फरा व अखफ़श भी इसी के समर्थक हैं, और इब्ने मसऊद के द्वितीय पाठ (क़राअत) से भी इसका समर्थन होता है जो क़राअत में निम्न प्रकार है, और 'मा यामलो तावीलहू' के स्थान पर निम्न लिखित शब्द आये हैं:—

'इन् तावीलोहू इल्ला इन्दल्लाहे वर्रासेखूना फिल् इलमे यकूलूना'

अर्थात्-अल्लाह ही जानता है। हज़रत उबय्ये बिन काब की क़राआत से भी इसी बात का समर्थन होता है, यथा **'यकूलुर्रासेखूना फिल इलमें आयन्ना बेही'** अर्थात् रासेखून उस पर ईमान लाते हैं। 'कुल्लुन' अर्थात् मुहकम और मुतशाबह, नासिख व मनसूख और जिसको मुराद से परिचित है और जिसको मुराद

से हम परिचित नहीं हैं। वह समस्त हमारे खुदा की ओर से आया है।

बग़वी ने लिखा है, कि यह वचन जाहिर (प्रसिद्ध) आयत भी अनुकूल है, और अरबी के क़वाइद (नियम) के भी अधिक सदृश है। बग़वी का तात्पर्य है कि 'वाव' को आतफ़ा (संयोजक) न करार देना और रासेखूना से नया कलाम होना इलमें नहब (व्युत्पत्ति का व्याकरण) के अधिक सदृश है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १८३

तफ़सीर इत्तिकान में अत्याधिक विस्तृत कथन है। कुछ तो वही है जिसे हमने ऊपर लिखा है। हाकिम ने इब्ने मसऊद के उल्लेख से रसूल करीम का यह वचन उद्धृत किया है.. ..... कि मुहकम पर अमल करो और मुशाबाह पर ईमान लाओ।

बैहक़ी ने भी किताबे शाब में अबू हुरैरा की हदीस से ऐसी ही रवायत की है। इब्ने जुरैर ने इब्ने अब्बास से सत्य हदीस के आधार पर रवायत की है, जिसके क्रमांक ४ में यह लिखा है कि क्रमांक ४ और मुतशाबह, उसको खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता तथा खुदा के अतिरिक्त यदि कोई घोषणा (दावा) करे उसके ज्ञान की, तो वह काज़िब (झूठा) है।

फिर रावी ने उपरोक्त दूसरी वजह पर इब्ने अब्बास से रवायत की है। इब्ने अबी हातम ने ओफ़ी ने तरीक (अधार) पर इब्ने अब्बास से रवायत की है, कि हम मुहकम पर ईमान लाते और उसे दीन (अनुकरणीय) मानते हैं, और उस पर अमल करते हैं, तथा मुतशाबह पर ईमान लाकर उस पर अमल

नहीं करते । इस स्थिति में कि वह समस्त खुदा की ही ओर से है ।

उपरोक्त रावी हज़रत आयशा से रवायत करता है कि बीबी साहिबा ने कहा. कि उन लोगों का ज्ञान में दृढ़ होना यह था, कि वह मुतशाबह कुर्आन पर ईमान लायें, जबकि वह उसे जानते न थे ।

आगे हज़रत उमर की रवायत से लिखा, जिसका कुछ भाग ऊपर लिख आये हैं और कुछ यहां लिख रहे हैं.....कि यह समस्त हदीसें और विद्वानों के वचन इस बात की पुष्टि करते हैं कि मुतशाबह.कुर्आन का ज्ञान .खुदा के अतिरिक्त और किसी को नहीं है । तफ़सीर इत्तिक़ान

—:इस विषय का संक्षेप:—

यह विषय (उपरोक्त) इतना विचित्र है,कि इस पर मुस्लिम विद्वानों ने भारी-भारी ग्रन्थ रचे हैं, किन्तु हमने इस विषय को स्पष्ट करने हेतु मात्र सक्षेप में लिखा है, और जिसका .खुलासा यह है:—

.कुर्आन की आयतों के दो भाग हैं मुहकमात और मुतशाबेहात । मुहकमात—वह आयते हैं जिनके अर्थ स्पष्ट और उनमें उसूल (सिद्धांत) हैं और यही आयतें शुद्ध व .कुर्आन का मस्तिष्क भी है, और मुतशाबेहात—वह आयतें हैं जिनका ज्ञान मनुष्य-बुद्धि से परे हैं और उनकी वास्तविकता को जानना-समझना सम्भव नहीं किन्तु वह लोग जो टेढ़े दिल वाले हैं और विवाद डालना चाहते हैं । वह मुतशाबेहात

की ओर आकृष्ट हैं, लोगों को सदेह में डालते हैं तथा उसकी व्याख्या करने लग जाते हैं, किन्तु उनकी व्याख्या ख़ुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। जो लोग विश्वास करने वाले हैं, वे तो मुहकमात के पीछे चलते हैं और उनकी आज्ञाओं पर अमल करते हैं तथा मुतशाबेहात की ओर अपना दृष्टिकोण मात्र इतना ही रखते हैं कि यह आयतें भी ख़ुदा की ओर से उतारी गई हैं। जिनका ज्ञान केवल ख़ुदा को है। इन पर तो मात्र ईमान रखना चाहिए और मुहकमात पर अमल करना चाहिए।

हमने : इस विषय के प्रारम्भ करने से पूर्व लिखा था, कि क़ुर्आन का एक भाग ऐसा है, जिसको मनुष्य नहीं समझ सकता ! तो हमने इस बात को इस प्रकरण में भली प्रकार, स्पष्टतः प्रमाणित कर दिया है, कि कुर्आन का मुतशाबेहात आयतों वाला अंग मनुष्य नहीं समझ सकते। वह तो ख़ुदा और उसके रसूल के मध्य एक रहस्य है।

उपरोक्त पंक्तियों में हमने दो प्रकार के लोगों का वर्णन किया है, जो इस बात को मानते हैं, कि आयतों से, कोई आयतों का अर्थ नहीं समझ सकता, यद्यपि ख़ुदा उसको बता सकता है और यह लोग भी मुतशाबेहात आयतों को दो प्रकार का मानते हैं। एक तो वह जिनका अर्थ ख़ुदा से समझा जा सकता है, और दोयम वह कि जिनको समझने की योग्यता मनुष्य की बुद्धि नहीं रखती, और अन्य मुसलमान जिनकी सख्या अत्याधिक है, उनका विश्वास है, कि मुतशाबेहात की आयतें ख़ुदा ही जानता है। मनुष्यों को उनके समझने का प्रयत्न ही नहीं करना चाहिए। जो ऐसा

(प्रयत्न) करता है वह पथभ्रष्ट है । इनके अतिरिक्त एक प्रकार के अन्य लोग और हैं जिनका कहना है कि जिस मुतशाबह आयत को हदीस ने प्रमाणित कर दिया है, उसका अर्थ हदीसानुसार समझ लेना चाहिये । जैसे कि पूर्व में कुर्आन की आयत लिखी है—कि कयामत के दिन खुदा को पूर्णिमा के चन्द्रमा के सदृश्य देखोगे, तो इसको मान लेना चाहिये । अन्य मुतशाबेहात आयतों को समझने का यत्न नहीं करना चाहिये, केवल उन पर विश्वास ही रखना चाहिये । यही अहले सुन्नत वल जमाअत की मान्यता है ।

अब हम दो आयतें उद्धृत कर अपने उपरोक्त लेख की पुष्टि करेंगे । आयतें इस प्रकार हैं । प्रथम आयतः—

वल्अर्जो जमीऊन कब्जतोहू योमल्कयामते वस्समावातो मत्विय्यातुंन बेयमीनेही । कुर्आन, सूरत जूमर, पारा २४, रकू ७।४

अर्थात्—और पृथ्वी सब उस (खुदा) की मुट्ठी में कयामत के दिन पकड़ी हुई होगी और दाहिने हाथ में आसमान लिपटे होंगे ।

मुअलिम में है, कि इब्ने उमर नकल करते हैं कि रसूलुल्लाह ने कहा कि-खुदा कयामत के दिन अपने दाहिने हाथ में आसमानों को लपेट कर कहेगा, कि मैं बादशाह हूँ ! कहां है जब्बार [अत्याचारी] और कहाँ हैं मुन्किर [नास्तिक] फिर पृथ्वी को अपने बांए हाथ में लपेट लेगा और उपरोक्त वचन कहेगा (दोहरायेगा)

तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ ३५४-३५५

यही वाक्य बुखारी ने, तजरीदे बुखारी, २९३ में कहें हैं और बाब तफ़सीरे कुर्आन हदीस क्रमांक ५९० ने भी इसी की पुष्टि की है ..... आगे लिखा है, ईमानदार ऐसी बातों में खुदा को उपमा से पवित्र समझते हैं यथाँत् खुदा की ऊपमा नहीं है (फिर तशबीह उपमा तो प्रत्यक्ष है. इसके हेतु कहा) बहरुल हकायक के लेखक ने कहा है, कि हमारा मजहब (सम्प्रदाय) इस आयत की तहक़ीक (सत्यता) में यह है, कि हम उसे, उस माने (अर्थ) पर छोड़ दे, जो अल्लाह ने उससे मुराद लिये हैं। (अर्थात् कुछ न कह कर अर्थो को खुदा के हेतु छोड़ दें, और स्वयं किन्चित् भी हस्तक्षेप न करें) इसलिये कि ऐसे शब्द मुतशाबेहात में गिने गये हैं।

उस पर ईमान लाना चाहिये और उसकी यथार्थता में कुछ बात न कहना चाहिये। अब तो स्पष्ट हो गया कि मुतशाबेहात का ज्ञान खुदा को ही है। हमें उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। खुदा जाने और उसका कलाम जाने।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ ३५५

द्वितीय आयत :—

वल्वज़नों योमएज़िन निल्हक़ फ़मन सकोलत् मवाज़ीनाहू फ़ उलाएका हुमूल्मुफ़लेंहून।

कुर्आन, सूरत एराफ़, पारा ८, रकू १।८

अर्थात्–और क़यामत के दिन प्रत्येक के फर्मो का तौल उचित और सत्य हैं। कुछ एक ने कहा है कि कर्मपत्रों को तोलेंगे, और उस तराजू में कि उसकी एक डंडी और दो पलड़े होंगे, और

सम्पूर्ण सृष्टि उसे देखेगी और यह व्यवस्था न्याय को प्रकट करने के लिए है। तफ़सीर कादरी भाग १ पारा ८, पृ, २९८

तिब्यान में इब्ने अब्बास से लिखा गया है—कि तराजू की डन्डी की लम्बाई ५० हजार वर्षों का मार्ग है, और उसका एक पलड़ा नूर का है और एक पलड़ा अन्धकार का है, परन्तु जिन लोगों का नेकियों का पड़ला भारी होगा, वह छुटकारा पाने वाले हैं। तकसीर कादरी, भाग १, पृष्ठ २९८

अब आपके मनोरन्जन हेतु इस आयत की व्याख्या तफ़सीर मज़हरी से उद्धृत करते हैं। जिससे आपको यह भी ज्ञात हो जाएगा कि खुदा का न्याय कैसा पक्षपातरहित है ? तनिक ध्यानपूर्वक पढ़ें :—

और उस दिन (क़यामत के दिन) ठीक-ठीक तोल होगा .....इसमें सन्देह नहीं। इस पर विश्वास रखना अनिवार्य है। हज़रत मुहम्मद के वचनानुसार तराजू को मानना भी ईमान का एक भाग है।

अबू शैख ने अपनी तफ़सीर में इब्ने अब्बास के प्रमाण से लिखा, कि तराजू को ज़ुबान और दो पलड़े होंगे। वज़न किस वस्तु का और किस प्रकार होगा इसमें मुस्लिम विद्वानों में मतभेद है। रसूलुल्लाह ने कहा कि क़यामत के दिन मेरी उम्मत (सम्प्रदाय) के एक व्यक्ति को लाया जायगा और उसके ९९ कर्मपत्रों को खोला जायेगा, और उन कर्मपत्रों के सत्य होने की साक्षी उस कर्मकर्ता से करा ली जाएगी किन्तु अल्लाह

कहेगा – क्यों नहीं ? तेरी एक नेकी हमारे पास उपस्थित है। उसके पश्चात् एक छोटा सा पर्चा (कागद) निकाला जायेगा। जिसमें : **अशहदो अन लाइलाहा इल्लल्लाहो व अश्हदो अन्न मुहम्मदन अब्दोहू व रसूलोहु** ' लिखा होगा। वह व्यक्ति निवेदन करेगा—मेरे मालिक ! इन दफ्तरों [९९ कर्मपत्रों] की तुलना में इस छोटे से पर्चे की क्या महत्ता होगी ? फिर समस्त ९९ कर्मपत्र तराजू के एक पलड़े में रख दिये जायेंगे और वह छोटा सा पर्चा दूसरे पलडे में परन्तु पर्चे वाला पलड़ा भारी हो जायेगा। (कहिए महोदय ! खुदा की न्याय तुला कैसी है)

इमाम अहमद ने हसन सनद (ठोस प्रमाण) से लिखा है, कि रसूलुल्लाह ने कहा—कयामत के दिन तराजूएं स्थापन की जायेगी। फिर एक व्यक्ति को लाकर एक पलड़े में रख दिया जायगा। तराजू उसको लेकर झुक जाएगी। परिणाम स्वरूप उसको नर्क में भेज दिया जायेगा ज्योंही उसकी पीठ फिरेगी, खुदा की ओर से एक घोषणा करने वाला उच्च स्वर से पुकारेगा, कि शिघ्रता न करो अभी इसका कुछ रह गया है [खुदा को उचित समय पर याद आ गई, नहीं तो फरिश्ते उस बेचारे व्यक्ति को नर्क में डाल ही देते] इतने में एक छोटा पर्चा निकाला जाएगा, जिसमें ' **ला इलाह इल्लिल्लाह** ' लिखा होगा वह पर्चा आदमी वाले पलड़े में रख दिया जाएगा, तत्काल तराजू उधर झुक जायेगी।

इसी प्रकार इब्ने अबी दुनिया ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर का वचन लिखा है, कि हज़रत आदम कयामत के दिन ऐसे स्थान पर ठहरेंगे कि जहां से नर्क में जाने वालों को देखेंगे उस समय हजरत मुहम्मद की उम्मत के एक व्यक्ति को नर्क

की ओर जाता देखकर आदम पुकारेंगे-अहमद ! (हज़रत मुहम्मद को) मैं (हज़रत मुहम्मद) उत्तर दूँगा—मनुष्यों के पिता ! मैं यहां हूँ। हज़रत आदम कहेंगे—कि तुम्हारी उम्मत के इस व्यक्ति को नर्क में ले जाया जा रहा है ! मैं शीघ्रातिशीघ्र फ़रिश्तों के पीछे जाऊँगा और कहूँगा—ऐ अल्लाह के दूतो ! ठहर जाओ। फ़रिश्ते कहेंगे—कि अल्लाह जो आदेश देता है, हम उसके विरूद्ध नहीं कर सकते।

रावी कहता है, जब हज़रत मुहम्मद निराश हो जायेंगे, तो बाँये हाथ की मुठ्ठी में अपनी दाढ़ी पकड़ कर अर्श (ख़ुदा का सिंहासन) की ओर मुँह कर के निवेदन करेंगे, कि मेरे मालिक ! तूने मुझसे वादा किया था, कि मुझे मेरी उम्मत में रुसवा (लज्जित) न करेगा, तत्काल अर्श से आवाज आयेगी कि मुहम्मद का कहना मानो और उस बन्दे को तराजू के पास ले आओ। फ़िर मैं (हज़रत मुहम्मद) पोरे समान एक सफेद पर्चा अपनी गोदी से निकाल कर बिस्मिल्लाह कह कर तराजू के दाहिने पलड़े में रख दूँगा, जिससे नेकियों का पलड़ा झुक जायेगा, तत्काल आवाज़ आयेगी सफल हो गया, इसको स्वर्ग में ले जाओ ! तफ़सीर मज़हरी, पारा ९, पृष्ठ २६८-२६९ (कहो उस्ताद ! कैसी पकड़ मारी। ख़ुदा के हुक्म तक को उलट दिया)

यह है ख़ुदा की तुला और उसका न्याय। क्या कोई भी सत्याभिलाषी मनुष्य ऐसी मिथ्या बातों पर विश्वास कर सकता है ? आगे देखिये:—

अबू हाली, इब्ने हबान और हाकम ने अबू सईद ख़ुदरी से रवायत की है और हाकम ने इसे सहीह (सत्य) भी लिखा

है, कि रसूलुल्लाह ने कहा-अल्लाह ने हज़रत मूसा से कहा कि सातों आसमान और सातों जमीनें (पृथ्वी) और समस्त सृष्टि एक पलड़े में और दूसरे पलड़े में 'ला इलाह इल्लल्लाह' हो तो 'ला इलाह' वाला पलड़ा भारी होगा।

इसी प्रकार तिबरानी ने इब्ने अब्बास से रवायत की, कि रसूलुल्लाह ने कहा-वही शब्द हैं जो उपर लिखे हैं।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ८, पृष्ठ २७०

तफ़सीर मज़हरी में आगे भी इसी प्रकार की बहुत रवायतें हैं। जिनमें मुसलमानों को अत्याधिक विश्वास दिलाया गया है, कि मुसलमान स्वर्ग को ही जायेंगे।

अब देखिये, ऐसी आयतें जिनके अर्थों का प्रमाणित होना असम्भव है। उनको यह कह कर टाल दिया गया कि यह मुतशाबेहात है। इनको खुदा ही जानता है और मनुष्यों द्वारा इनके जानने का प्रयत्न करना, पथभ्रष्ट होना है, और यदि कोई भूला भटका इस विषय में कुछ पूछ बैठे तो उसकी वही अवस्था होगी जो हज़रत उमर ने की थी। इस्लाम के खलीफ़ों ने ऐसा आतंक जमा रखा था, कि कुर्आन के विषय में कोई बात भी पूछने का सहास नहीं कर सकता था। इसके आगे अल्लामा सियूती ने जो आयतें मुतशाबेहात के विषय की लिखी हैं, उन्हें हम नीचे लिखते हैं।

तफसीर इत्तिकान में मुतशाबेहात

आयतों के कुछ नमूने।

खुदा के अर्श (सिंहासन) पर बैठने सम्बन्धी अनेक आयतें कुर्आन में हैं किन्तु अल्लामा सियुती ने सर्वप्रथम यह निम्न

लिखित आयत लिखी, जो कि मुतशाबेहात है। आयतः—

' अर्रहमानो अलल अर्शिस्तवा '

कुर्आन सूरत त्वाहा पारा १६

इस आयत की व्याख्या में तफ़सीर क़ादरी में शैखुलइस्लाम का वचन लिखा है, कि खुदा का सिंहासनारूढ़ होना कुर्आन में है, और मुझे इस बात का विश्वास है। मैं व्याख्या नहीं ढूँढता, इसलिये कि इस विषय में व्याख्या करना, मार्ग से भटकना है। मैं प्रत्यक्ष में स्वीकार करता हूँ और अन्तरात्मा में मान लेता हूं. इस हेतु से कि सुन्नियों का यही विश्वास है। (इतना लिखने के पश्चात् आगे अपने मन की बात लिखते हैं) मैं यह जानता हूं कि वह (खुदा) न मकान का और न अर्श का मुहताज है।

तफ़सीर क़ादरी, पारा १६, पृष्ठ २७

शैख साहिब ! आपका हृदय तो इस बात को नहीं मानता कि खुदा किसी मकान की क़ैद में है, किन्तु कुर्आन तो वही कहता है, जो आप पूर्व में लिख चुके हैं और उस पर आपका विश्वास है; परन्तु आप उसकी वास्तविकता को कहना नहीं चाहते, क्योंकि उसकी व्याख्या करना मार्ग से भटकना है। इस्लाम के माने हुए एक विद्वान की यह राय है, कि कुर्आन तो खुदा का सिंहासनारूढ़ होना स्वीकार करता है। ऐसा मान कर भी शैख साहिब यह कहते हैं।

आगे कहते हैं कि मैं खुदा को गृह निवास के अन्तर्गत नहीं मानता। शख साहिब के इस हार्दिक विश्वास हेतु उनका धन्यवाद करते हैं, किन्तु आपने (शैख साहिब ने) यह नहीं सोचा कि इस

बात को पढ़ने वाले आपकी इस बात को कि दृष्टि से देखेंगे ? कि विश्वास (ईमान) तो आपका यह है कि कुर्आन तो खुदा को अर्श पर मानत है' किन्तु मैं जानता हूँ कि उसे मकान की आवश्यकता नहीं । अस्तु जो आप मानें या जानें यह आपकी ईच्छा है । किन्तु हम शैख साहिब के इस विश्वास के विषय में कहेंगे कि-यहां तो आपने ऐसा मान लिया परन्तु सूरत नज्म की इस आयत के विषय में क्या कहेंगे व क्या मानेंगे ? आयत है :--

सुम्मा दना फ़तदल्ला फकाना काबा कौसैने औ अदना ।

इस आयत में खुदा और हज़रत मुहम्मद के मध्य दो कमान [धनुष] या .स से भी कम अन्तर लिखा है । अस्तु.....

इस आयत के पूर्व लिखित उपरोक्त अर्श पर बैठने वाली आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर इत्तिक़ान में विस्तृत चर्चा की है । आप लिखते हैं, कि विभिन्न व्याख्याकारों ने उसमे सलमा से रवायत की है । उन्होंने कहा कि "**अर्रहमानों अलल अर्शिस्तवा**" के सम्बन्ध में कहा-'**अल कैफ़ो ग़ैर माक़ूलिन, वल इस्तवा ग़ैर मज्हूलिन, वल इकरारो मिनल ईमाने वल्जहूदो बेही कुफ़रून**" अर्थात्---बुद्धि में विवरण नहीं आता और इस्तवा एक ज्ञात आयत है, (इस्तवा का अर्थ-उचित होना, जमना या सभल कर बैठना, आदि है) उसको स्वीकार करना विश्वास मे सम्मिलित है और उसको जान-बूझ कर न मानना कुफ्र [अधर्म] है । तात्पर्य यह है कि इस्तवा आ अर्थ तो ज्ञात है, किन्तु यह बात बुद्धि में नहीं आती कि खुदा कैसे मुस्तवी [सिंहासनारूढ़] हुआ ।

[यदि बुद्धि में आ जाती, तो इसे मुतशाबेहात न कहते ?]

रबीआ बिन अब्दुर्रहमान से रवायत है, कि उससे उक्त आयत के विषय में प्रश्न किया ? तो उसने उत्तर दिया कि— विश्वास कोई गुप्त वस्तु नही, और विवरण (कैफ) समझ में नहीं आता। खुदा ने संदेश भेजा और रसूल ने उसे स्पष्ट रीति से (लोगों तक) पहुँचा कर अपना कर्तव्य सम्पन्न किया। अब हमारा कर्तव्य है, कि हम उसे सत्य मानें। फिर यही रावी (व्याख्याकार) मालिक से रवायत करता है, उसमें अर्थानुवाद ऊपर आ गया तथा शेष का यह है कि-उस पर विश्वास लाना अनिवार्य है, और उस पर प्रश्न करना बिदअत (रसूल से विरोध या अवज्ञा करना) है।

बैहकी ने मालिक से रवायत की है, कि उसने कहा कि—खुदा वैसा ही है, जैसा कि उसने अपनी जात पात की सिफ़त [सद्गुण] कही है, और ऐसा न कहना चाहिये कि 'क्यों कर'। इसलिए कि खुदा से कैफ़ (विवरण) का प्रश्न उठा लिया गया है।

लालकाई ने मुहम्मद बिनल हसन से रवायत की है, कि पूर्व से पश्चिम तक समस्त विद्वानों (फुक़हा) ने खुदा की सिफ़त पर बिना तफ़सीर (व्याख्या) व तशबीह (उपमा) ईमान [विश्वास] लाने हेतु सर्व सम्मति से यह माना है, और तिर्मज़ी हदीस रोयत [दर्शन] पर कलाम करते हुए कहता है, कि-विद्वान् इमामों (पेशवा) जैसे सुफ़यान फ़ौरी, मालिक, इब्नुल्मुबारिक, इब्ने एनिया और बकी आदि के पास इस सम्बन्ध में अपनाया हुआ मज़हब यही है। इन लोगों ने कहा है कि-हम उन हदीसों की इस प्रकार रवायत करते हैं जिस प्रकार यह आती हैं, और उन पर ईमान लाते हैं, और इनके बिषय में यह न कहना

चाहिये, कि ऐसा क्यों कर रहे हैं ? और न हम उनकी व्याख्या करते हैं, न उनके सम्बन्ध में कोई भ्रम [वहम] रखते हैं ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४३ पृष्ठ ११-१२

आगे और भी विभिन्न लोगों की सम्मतियाँ दी हैं, जो अधिक विस्तारपूर्वक हैं, उनको लिखने हेतु यहां स्थान नहीं है। ऊपर हमने पर्याप्त लिख दिया है, कि जैसा भी लिखा है, उस पर ईमान लाना प्रत्येक मुसलमानों को अनिवार्य है। 'क्यों और कैसे' का प्रश्न नहीं आना चाहिये ।

तफ़सीर मज़हरी ने 'इस्तवा अलल अर्श' को इस प्रकार लिखा है:- 'सुम्मस्तवा अलल अर्शे' [फिर सिंहासन पर] मुतमक्कन [स्थान पकड़ा[हुआ ।' बग़वी ने लिखा है कि मौत ज़ला के मत में इस्तवा का अर्थ गलबा पाना है । अहले सुन्नत कहते हैं, कि-अर्श पर इस्तवा [बैठना] अल्लाह की एक सिफ़त है, जो बेकैफ़ है । अर्थात् उसकी कैफ़ियत [विवरण] हालत [अवस्था] है अते वजा (आकृति) नहीं समझी जा सकती व उस पर ईमान लाना अनिवार्य है तथा उसका ज्ञान अल्लाह पर छोड़ देना चाहिये ।

उक्त बात को और भी स्पष्ट रूप से समझने हेतु निम्न उदाहरण देखिये:- एक व्यक्ति ने मालिक बिन अंस से 'अर्रह-माना अला अर्शिस्तवा' का विवरण पूछा ? इमाम ने कुछ देर सिर झुका लिया और फिर कहा-इस्तवा मालूम [का अर्थ] है विवरण अज्ञात [मजहूल] है और बुद्धि में आने योग्य ही नहीं इस पर विश्वास अनिवार्य है और इसको पूछना बिदअत (रसूल से विरोध व अवज्ञा करना) है । अर्थात् हज़रत मुहम्मद

की आज्ञा के प्रतिकूल और मन की उपज है। [फिर कहा] मेरी दृष्टि में तू पथभ्रष्ट है। फिर इमाम ने उसे अपनी सभा में से निकाल दिया।

सुफ़याने सौरी औज़ाई, लैस बिन सईद, सुफ़यान बिन ऐनिया और अब्दुल्लाह आदि समस्त, सुन्नत जमाअत के विद्वानों का इन आयतों के सम्बन्ध में, जिनमें मुतशाबेहात की सिफ़तों का वर्णन है, उनको इसी प्रकार बिला कैफ़ (बिना व्याख्या व बिना विवरण) मानना चाहिये, जिस प्रकार वह आई हैं। तफसीर मज़हरी, पारा ८, पृष्ठ ३१४-३१५

उपरोक्त बात का समर्थन तफ़सीर मज़हरी ने दूसरे स्थान पर भी किया है। कुर्आन की आयत है :—

हल यन्ज़ोरून इल्ला अंय्यातिया हुमुल्लाहो फ़ी ज़ुल्लिम्मिनल ग़मामे। कुर्आन, सूरत बकर, पारा २ रकू २५९

अर्थात्-क्या वे उसके इन्तज़ार [प्रतिक्षा] में हैं कि आ जाये अल्लाह उन पर बादल के सायेबानों में। अर्थात् अल्लाह बादल के पर्दे में आये जिसको पृथ्वी वाले देख न सकें। बनी इस्राईल पर यही बादल रहता था।

आगे 'कुज़ैयल अमरो' की व्याख्या में लिखा है, कि सुन्नत जमाअत खुदा को शरीरिक गुणों से पृथक मानती है. किन्तु आगे लिखा है—कि इस आयत में [जिससे शरीरिक अवयवों का ज्ञान होता है] उन्होंने [अहले सुन्नत] दो मार्गों का अवलम्बन किया है। प्रथम यह कि इस विषय में वाद-विवाद

से पृथक रहा जाये और कहा जाये कि–इसका ज्ञान ख़ुदा को ही है और इस पर विश्वास लाया जाये ।

कलबी कहते हैं कि–यह गुप्त अमर आयत है, जो व्याख्या के योग्य नहीं तथा मकहूल, जौहरी, अजाई, मालिक इब्ने मुबारिक, सुफ़यान सौरी, लैसे, अहम और इसहाक आदि विद्वज्जन ऐसी आयतों के विषय में कहते रहते थे कि उन्हें ऐसे ही (यथावत्) रहने दो जैसी वारिद [उतरी] हुई हैं ।

सुफ़यान बिन एनिया ने कहा कि अल्लाह ने अपनी जात (व्यक्तित्व) को जिन सिफ़तों से अपनी किताब (कुर्आन) में स्वयं को मुत्तसिफ़ [गुणवान्] बताया है, उसकी व्याख्या यही है, कि उसको पढ़ते रहो और उसके बाद-विवाद से मौन धारण कर लो (क्योंकि) अल्साह और उसके रसूल के अतिरिक्त किसी को अधिकार नहीं की ऐसी आयतों की व्याख्या अपनी ओर से करने लगे ।

अबू हनीफ़ का भी यही मत है, क्योंकि उन्होंने मुतशा-बेहात के विषय में कहा कि–इनकी व्याख्या अल्लाह ही जानता है । तफ़सीर मज़हरी, पारा २, पृष्ठ ४१६

इसी तफ़सीर मज़हरी में आगे हैं, कि अल्लामा सियूति ने लिखा है कि– मैंने शैख़ बदरुद्दीन ज़रकशी का हस्तलिखित लेख देखा कि सलमतिब्नल्कासिम ने किताब ग़राएबुल्उसूल में यह हदीस प्रतिलिपि कर, कि अल्साह, क़यायत के दिन जलता अफ़रोज [आगमन] होगा । (कहा है) कि अल्लाह का बादल के आवरण में आना इस पर निर्भर [महमूल] है, कि अल्लाह

खलकत (सृष्टि) की दृष्टि को परिवर्तित कर देगा, कि उनको ऐसा ही दृष्टिगोचर होगा, परन्तु वह सिंहासन पर होगा।

तफ़सीर मज़हरी, पारा २, पृष्ठ ४१६

खुदा के शरीरधारी होने का वर्णन कुर्आन में बहुत स्थानों पर आता है। इस समय हमारा यह विषय नहीं। हम तो यह लिख रहे हैं, कि-मुतशाबेहात आयतों के अर्थ को खुदा ही जानता है। सो हमने उपरोक्त उद्घणों के अकाट्य प्रमाणों से यह सिद्ध कर दिया है, कि यह आयतें मनुष्य और मनुष्य की बुद्धि से परे हैं। क्यों? इसका कारण मैं आरम्भ ही में लिख चुका हूँ, कि यह सत्य की कसौटी से प्रमाणित नहीं होती। इस कारण लोगों से यह कह दिया गया कि यह आयतें मुतशाबेहात हैं। इनकी व्याख्या खुदा ही जानता है। तुम मत तलाश करो, मार्ग से भटक जाओगे!

अल्लामा सियूति ने आगे कुर्आन की दो आयतें लिखी हैं, किन्तु हम पश्चात्वाली आयत को प्रथम लिख रहे हैं, और प्रथम आयत को पश्चात् लिखेंगे, पश्चात् वाली आयत है:—

कुल्लोमन अलैहा फ़ आनिंव्व व यब्का वज्ही रब्बेका जुल्जलालै वल्इकराम। कुर्आन सूरत रहमान, पारा २७, रकू २।१२

अर्थात्-पृथ्वी पर जो कोई प्राणी है, वह अन्त में समस्त समाप्त हो जायेंगे और खुदा का व्यक्तित्व (जात) शेष रह जायेगा। कहा जाता है जब उक्त [यह] आयत उतरी तो—'**व काल इब्ने अब्बास लस्मा नज़लत् हाजेहिल आयतों कालाल्त मलाएकतो फ़**

हलकत अहलल् अर्जे । अर्थात्-फ़रिश्तों ने कहा, कि पृथ्वी पर रहने वाले नष्ट हो जाएँगे ।

सिराजे मुनीर, भाग ४, पृष्ठ १६४

फिर सूरतुल कसस के अन्त की यह आयत 'कुल्लो शैइन हालेकुन इल्ला वज्हहू' अर्थात्-खुदा के अतिरिक्त समस्त वस्तुएँ नष्ट होने वाली हैं, 'फ़ऐकना तिल्मला एकतो बिल्हलाके' पस, इस आयत से फ़रिश्तों को भी अपने विनाश का विश्वास हो गया ।—सिराजे मुनीर भाग ४, पृष्ठ १६४

अब देखिये ! खुदा की तनिक सी भूल से दो आयतें उतारनी पड़ी । अब एक प्रकार से 'सूरत रहमान' वाली आयत नो सर्वथा निरर्थक हो गई । अस्तु वह खुदा है, उसकी इच्छा जो चाहे सो करे ।

इस अन्तिम आयत से तो ज्ञात होता है, कि आत्मा [रूह] महा नाश को प्राप्त हो जाएगी । अस्तु हो जाये तो हो जाये । जिस प्रकार खुदा कयामत के दिन, सड़े-गले, मिट्टी बने जंगली पशुओं, समुन्द्री प्राणियों, गिद्ध आदि पक्षियों के खाये गए शरीर जो संसार में थे, बना लेगा । यह रूह भी बना लेगा । उसके तो केवल कहने की देर है ।

कुछ एक ने तो इस पिछली आयत पर भी मतभेद प्रकट किया है । सिराजे मुनीर ने बहरल्कलाम के प्रमाण से लिखा कि-७ वस्तुएँ नष्ट नहीं होगी—(१) अर्श [सिंहासन] (२) कुर्सी (३) लौह महफ़ूज़ [सुरक्षित तख्ती] (४) कलम (५) जिन्नत (६) दोज़ख [नर्क] और उसमें रहने वाले फ़रिश्ते (७) हुरुलईन [अप्सरा] रूह [आत्मा]

सिराजे मुनीर, भाग ३, पृष्ठ १२३

इन आयतों को भी अल्लामा ने मुतशाबेहात में रखा। इस पर विचार करना चाहिये, कि यदि इनके अर्थों तथा वास्तविकता को देखा जाये तो यही मानना पड़ेगा कि प्रलय में खुदा के अतिरिक्त और कुछ शेष न रहेगा, तो खुदा का सिंहासन और उनके उठाने वाले फरिश्ते भी न रहेंगे। तब खुदा की क्या गति होगी ? कहां बैठेगा और कौन उठायेगा ?

दूसरी बात यह है कि ऐसी वस्तुएँ क्यों उत्पन्न की गई जिनका कोई प्रयोजन भी नहीं था और किसी के उपयोग में भी नहीं आई। जैसे—हूरे (अप्सराएँ) ग़िलमान् [अति सुन्दर लड़के] आदि। जब यह अनुपयोगी थे, तो प्रलय के पश्चात् जब मुर्दे उठाये जाते, तब ही खुदा बना लेता। अस्तु, खुदा की बातें खुदा ही जाने ?

अल्लामा सियूती ने जो चतुर्थ आयत लिखी। वह हज़रत मूसा के विषय में है। उस समय फ़िरऔन शासक था। उसने आज्ञा दे रखी थी, कि मेरी राज्य में जितने नवजात लड़के हों उन्हें क़त्ल कर दिया जाये। जब मूसा उत्पन्न हुए तब खुदा ने मूसा की मां को वही (फ़रिश्ता) द्वारा सूचित किया कि:—

अनिक्जो फ़ीहे फ़ित्ताबूते फ़क्जो फ़ीहे क़ल्यम्मे फ़ल्युल्के हिल-यम्मो बिरसाहेले, या खुज़्हो अदुव्वुल्ली व अदुव्वुल्लाहू व अल्क़ैतो अलैका मुहब्बतम्मीन्नी, व लेतुस्नआ अला ऐनी।

क़ुर्आन, सूरत त्वाहा, पारा १६, रकू २।११

अर्थात्-(हज़रत मूसा को कहा गया है) जब तेरी माँ की ओर फ़रिश्ता भेज कर कहा कि नवजात मूसा को रूई

(कपास) में लपेट कर सन्दूक में डाल दे और दरिया (समुन्द्र) में बहा दे । दरिया उसे तट पर डाल देगा ताकि मेरा और इसका शत्रु जो फ़िरऔन है, ले लेगा और मेरा प्रेम मैंने अपनी ओर से तुझ पर डाल दिया है, और पाला जायेगा तू मेरी (खुदा की) आंखों से ।

सम्भवतः अल्लामा सियूती ने इस उक्त आयत को मुतशाबेहात में पिछले वाक्य पाला जायेगा मेरी आंखों ...'के कारण लिखा है । अल्लामा ने पांचवी आयत को भी मुतशाबेहात लिखा है । आयतः—

इन्नल्ला जीना युबायेऊनका इन्नमा योबायेऊनल्लाहा यदुल्लाहे फ़ौका एदीहिम ।

कुर्आन, सूरत फ़तह, पारा २६, रकू १।९

अर्थात्-निस्सन्देह जो लोग बैअत (वचनबद्धता) करते हैं, तुझसे (हज़रत मुहम्मद से) अतिरिक्त इसके नहीं कि वे अल्लाह से बैअत करते हैं, उनके हाथ पर अल्लाह का हाथ है । (वचन बद्ध होते समय हाथ पर हाथ रखते हैं)

अल्लामा ने इस कारण कि खुदा ने हज़रत मुहम्मद के हाथ को अपना हाथ कहा है और इसमें अल्लाह का हाथ प्रमाणित होता है' यह आयत मुतशाबेहात में लिखी ज्ञात होती है । छठी आयत वही है, जिसे हम पूर्व में लिख चुके हैं, कि क़यामत के दिन पृथ्वी-आसमान खुदा की मुठ्ठी में होंगे ।

इतना लिखने के पश्चात् अल्लामा ने लिखा है, कि सब सुन्नत जमाअत, पूर्व के नेक लोगों और हदीसों के मानने वालों

ने सर्व सम्मति से इस बात को स्वीकार किया है, कि इन आयतों पर विश्वास लाना अनिवार्य है और इनके अर्थ और अभिप्राय का ज्ञान खुदा ही के सुपुर्द करना चाहिये ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, भाग २, पृष्ठ ११

अल्लामा सियूति ने आगे मुतशाबेहात के लाभ लिखे हैं उनको भी लिखना आवश्यक समझता हूँ, क्योंकि उसमें विषय को उचित प्रमाणित करने का विचार होता है । उनका न लिखना अन्याय होगा !

कुछ एक विद्वानों ने कहा है, कि यदि यह आक्षेप किया जाए कि खुदा की ओर से अपने बन्दों के लिये बयान और हिदायत का विचार होने के बावजूद इस बात में क्या, हिकमत [रहस्य] थी ? कि मुतशाबेहात आयतें नाज़िल की [उतारी गई] जिनसे बयान और हिदायत का पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं होता । इसके उत्तर मे हम [अल्लामा] कहेंगे, कि यदि मुतशाबेहात इस प्रकार की हैं कि उसका ज्ञान सम्भव है । [बीसियों पृष्ठ तो आपने लिखे है, कि उनका ज्ञान असम्भव है, तो फिर सम्भव होने की कल्पना क्यों करते हो ?] अस्तु, प्रथम लाभ तो यह है कि, यह मुस्लिम विद्वानों की ऐसी ग़ौर [धारणा] पर उद्यत करने का कारण होगा, कि जिससे कुर्आन की गुप्त बातों का ज्ञान प्राप्त हो और उसके सूक्ष्म रहस्यों को शोध की जिज्ञासा उत्पन्न हो । इसमें सन्देह नहीं कि कुर्आन के जटिल ज्ञान को प्राप्त करने की ओर झुकना बहुत बड़ी नेकी, पुण्य और निकटता [कुर्ब] प्राप्त करने का साधन है ।

द्वितीय लाभ यह है, कि इस प्रकार के मुतशाबेहात से मनुष्यों की बुद्धि में न्यूनाधिक होना। जिसके उनसे पदों (दर्जों) में अन्तर होता है, अन्यथा, यदि सम्पूर्ण कुर्आन इसी प्रकार का मुहकमात ही होता जिसमें व्याख्या और शोध की आवश्यकता न पड़ती, तो उसके समझने के विषय में समस्त मनुष्यों का पद (दर्जा) एक साथ या समान हो जाता (हां अल्लामा महाशय ! एक समान पद होने से ग़ज़ब हो जाता ?) और विद्वानों की महत्ता जन साधारण पर प्रकट न हो सकती। (यह बात मतलब की कही है, मौलाना महोदय ने)

जब आप यह मानते है कि मुतशाबेहात का ज्ञान मनुष्यों की बुद्धि से परे है, तो उपरोक्त कथन इस बात को स्पष्ट करता है, कि आप भी सन्देह में हैं, अन्यथा आपका यह वर्णन तो निरर्थक है ।

उपरोक्त विषय के सम्बन्ध में द्वितीय पक्ष है, कि यदि मुतशाबेहात इस प्रकार का है, जिसका ज्ञान प्राप्त होना असम्भव है, तो भी वह लाभरहित नहीं है। जैसे :—

प्रथम लाभ यह है, कि ऐसे मुतशाबेहात के साथ बन्दों की आज़मायश की गई है, ताकि वे उनकी सीमा पर आकर ठहरे रहें, उनके सम्बन्ध में आगे न बढ़े । इनका ज्ञान खुदा के अपने करते हुए, अपनी अल्प बुद्धि का निश्चय करते हुए, इक़रार करते हुए खुदा की आज्ञा को स्वीकार करें, और उनके पढ़ने को वैसी ही इबादत (भक्ति) जानें, जैसा मि मनसूख (निरस्त) आयतों का पढ़ना इबादत है। यद्यपि उसका आदेश प्रचलित (लागू) नहीं। अर्थात् उन आयतों के अर्थों पर अमल करना उचित नहीं।

यह उपरोक्त लाभ तो आपने बहुत बड़ा कह दिया। क्या विद्वान् की महत्ता या प्रतिष्ठा आप केवल ज्ञान के पढ़ लेने मात्र से समझते हैं। केवल पढ़ने वालों के लिये तो एक शायर [कवि] ने क्या खुब कहा है:—

'न मुहक्किक् बवद न दानिशमंद्र, चार पायाबिरो किताबों चन्द'

केवल ज्ञान के पढ़ने वालों की तुलना तो पुस्तके उठाने वाले गधे के साथ की है। विद्वान् की उत्कृष्टता, उसके सदाचार, पवित्रता तथा सत्यता पर होती है। पढ़ने मात्र से पुण्य होगा, यह एक अंधविश्वास है। पढ़ना तो नेकी पर जाने वाले मार्गकी खोज करना है, न कि केवल पढ़ना स्वयं में कोई नेकी है। विभिन्न मतावलम्बियों नें भीषण भ्रान्तियां फैला रखी है कि अमुक ग्रन्थ या पुस्तक के पाठ मात्र से ही स्वर्ग की प्राप्ति या मुक्ति हो जाएगी। अतः यह कोई लाभ नहीं है, जो आपनें कहा।

द्वितीय लाभ यह है, कि ऐसे मुतशाबेहात के द्वारा खुदा ने बन्दों पर, खुदा की ओर से कुर्आन नाजिल होने की दलील स्थापित की है, अन्यथा क्या कारण था कि अरब लोग इतने विद्वान् होते हुए भी मुतशाबेहात को समझने से वंचित रहे? कैसी मिथ्या बात है। जहां तक अरबी भाषा का सम्बन्ध है, वहां तक तो कोई आयत ऐसी नहीं कि जिसका अनुवाद न किया गया हो, किन्तु जिसका अर्थ ही ऊपटांग हो, वहां भाषा शास्त्री (जुबानदान) क्या करें? किसी ने कह दिया कि आकाश कुसुमों की माला पहनो, और आप इस पर भी कह दो कि भाषा जानने वाले इसको समझने से वंचित रह गये। ऐसी बातें तो आपके मुतशाबेहात की है, कि सातों आसमान खुदा के हाथ में लिपटे होंगे क़यामत के दिन। क्या आकाश-कुसुमों के

ही समान सातों आसमान नहीं हैं ? तो अरबी को जानकर इसको समझने हेतु क्या शीर्षासन करेगा ? कर्म तौले जायेंगे—कर्म क्या कोई शरीरधारी वस्तु या ठोस भौतिक वस्तु है, कि तोले जायेंगे ? इस पर अरबी भाषा का ज्ञाता क्या करे ? महान् दुःख की बात है, कि इतने बड़े-बड़े विद्वान् भी ऐसी मिथ्या बातो के द्वारा लोगों को बहकाते हैं।

आगे लिखा है, कि इमाम फ़ख़्रूद्दीन का वचन है कि वह मनुष्य मुल्हिद (काफ़िर) है, जो कुर्आन पर इस कारण तान (लांछन) करता है, कि उनमें मुतशाबेहात आयतें सम्मिलित हैं। (अब आगे कुर्आन को समझने की बात आई) इसके साथ ही हम देखते हैं कि सभी ने क़ुर्आन को एक तमाशा बना रखा है और प्रत्येक मज़हब का मनुष्य इसी कुर्आन से ही अपने मज़हब को प्रमाणित करता है। [मौलाना महोदय ! ऐसा क्यों है ?] **'ख़िश्ते अव्वल चूं निहद मेमार कज, ता सुरय्या मेरवद दीवार कज'** अर्थात्—जिस सिलावट [मिस्त्री] ने प्रथम ईट ही टेढ़ी रखी, तो दीवार सुरय्या [शिखर] तक टेढ़ी ही जायेगी। इसका उदाहरण तो वही आयतें हैं, जो आपने दी हैं। देखिए अपनी ही आयत:—

व जअल्ना अला कुलूबेहिम अकिन्नतन अंय्यफ़क़हूहो व फ़ी आज़ानेहिम वकरा। कुर्आन, पारा, ७, रकू ३।९

अर्थात्—और हम [ख़ुदा] ने उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, ताकि उसको [क़ुर्आन को] समझ न सकें और उनके कानों में डाट दे रखी है।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ७, पृष्ठ १२६-१२७

अब, मौलाना ! आप ही बताइये, कि ऐसी शिक्षा जिस पुस्तक में होगी, उसके मानने वाले बहक जायेंगे या नहीं ? और यह उस पुस्तक को तमाशा बनायेंगे या नहीं ? भला ! ख़ुदा को क्या आवश्यकता थी कि दिलों पर पर्दे डाले और कानों में डांट दे दे ? जब कि उसने पुस्तक को मनुष्यों की शिक्षा के हेतु भेजा है ।

इसी प्रकार की एक आयत जो ' इज़ा करात ' से चलती है । क़ुर्आन, पारा १५, रकू ५ । ५ सूरत बनी इस्राईल में हैं, और उसका भी लगभग यही अर्थ है, और क़ुर्आन, सूरत कहफ़, पारा १५ रकू ८/२० की आयत भी ऐसी ही है ।

आगे, इमाम महाशय लिखते हैं, कि—कदरी (इस्लाम का एक सम्प्रदाय) कहता है, कि यह काफ़िरों का मज़हब है, जिसकी दलील यह है, कि ख़ुदा ने उनकी इस स्थिति की कहानी, उन्हीं की ज़बानी और उनकी निन्दा करने के अवसर पर की है । जैसा कि:—

कालू कुलूबुना फ़ी आकन्नतिम्मम्मा तदऊना इलैहे व फ़ी आज़ानेना वक़रूंव्वमिनबैननाव बैनका हिजाबुन ।

क़ुर्आन, पारा २४, रकू १।१५

इस आयत का भी लगभग वही अर्थ है, जो उपरोक्त आयतों का है । यदि अन्तर है, तो केवल इतना कि वे ख़ुदा की ओर से दर्शाई गई हैं और यह काफ़िर कहलाने वालों के मुंह से । अर्थात् अपराध स्वीकार है ।

आगे इमाम साहिब ने जो दूसरी आयत लिखी हैं, उसमें कुछ अन्तर है। आयत:—

व कालू कुलूबुना गुलुफ़, बल्लान हुमुल्लाहो बेकुफ़्रेहिम फ़कलीलम्मा यौमनून्। कुर्आन, पारा १, रकू ११।११

अर्थात्—और कहते हैं, कि हमारे दिल गुलाफ़ों (खोल) में ही, नहीं बल्कि अल्लाह ने उनको फटकार दिया है। उनके कुफ़्र के कारण, पस, कम ईमान लाते हैं।

अब तक तो कुर्आन में बारम्बर यही कहा गया, कि खुदा ने मुहरें लगा दीं आंखों और दिल पर व कानों में डांट दे दिये यह ईमान नहीं लायेंगे। किन्तु इस आयत में यह लिख दिया कि किञ्चित ईमान लायेंगे। अस्तु खुदा के पर्दे और मुहरें व डाटं किञ्चितों से तो उतर जायेंगे। ऐसी ही अन्य आयत कुर्आन, पारा १. रकू २ में है। वहां लिखा है कि थोड़े ईमान लायेंगे यह खुदाई कलाम है। इतने से मतभेद का खुदा के कलाम पर कोई प्रभाव नहीं, और भी सम्प्रदायों के विषय में लिखा कि उन्होंने भी अपना सम्प्रदाय कुर्आन से ही प्रमाणित किया है।

तफ़सीर इत्तिकान, भाग २, पृष्ठ३०

हम तफ़सीर इत्तिकान से मुतशाबेहात आयतों से लाभ का वर्णन लिख रहे थे उसे पुनः लिखते हैं।

तृतीय लाभ यह लिखा कि मुतशाबेहात को असल मुराद तक पहुंचने के लिये अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। जितना परिश्रम अधिक होगा, उतना ही पुण्य भी अधिक प्राप्त होगा। (हज़रत! जब मुतशाबेहात को खुदा के अतिरिक्त कोई समझ ही नहीं सकता, तो कौन मूर्ख उस पर परिश्रम करेगा ?)

चतुर्थ लाभ यह है, कि यदि सम्पूर्ण कुर्आन मुहकमात होता तो वह एक ही मज़हब का प्रतिपादन करता। विभिन्न मज़हबों का कोई समर्थन ही नहीं कर सकता था। अपितु वह प्रत्यक्ष उस एक मज़हब के अतिरिक्त समस्त मजहबों को बातिल (मिथ्या) ठहराता..... इत्यादि) (उधर तो पूर्व में यह कहा कि- जो मुतशाबेहात के पीछे जायेगा, वह पथभ्रष्ट, टेढ़े दिलवाला और काफ़िर होगा।) अब इसके विपरीत मुतशाबेहात से यह लाभ बता रहे हैं, कि अन्य सम्प्रदाय कैसे बनते, उसका समर्थन कौन करता ? हमें तो यह चतुर्थ लाभ; लाभदायक नहीं; घोर हानिप्रद दृष्टिगोचर होता है। क्योंकि सत्य एक होता है। सत्य धर्म भीं एक होता है, विभिन्नता और मतभेद सत्य के बाधक हैं, किन्तु अल्लामा महाशय तो बाधक को साधक सिद्ध करने पर तुले हैं, अजीब तमाशा है ! हां प्रसिद्ध शायर ज़ौक ने अवश्य ही अल्लामा का समर्थन करते हुए कहा है:—'गुल हाये रंगा रंग से है ज़ीनते चमन, ऐ ज़ौक इस जहां को है ज़ेब इख़्तलाफ़ से' (लेखक)

तफ़सीर इत्तिक़ान, भाग २, पृष्ठ ३१

अल्लामा सियूती द्वारा मुतशाबेहात से जो लाभ बताये गये हैं, वह सर्वथा अव्यावहारिक और सारहीन हैं तथा प्रभावित नही करतेहैं।

हमने मुहकमात और मुतशाबेहात आयतों के सम्बन्ध मे स्पष्ट रूप से लिख दिया है, और यह मुतशाबेहात का अड़गा इस हेतु लगाया गया कि वह आयतें ज्ञान-बुद्धि और शिक्षा के प्रतिकूल थीं। अतः यह कह कर कि इनकी वास्तविकता ख़ुदा ही जानता है, मनुष्यों को उसे जानने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए अन्यथा वह पथभ्रष्ट, टेढ़े दिलवाले, काफ़िर हो जायेगे।

क़ुर्आन का एक और भ्रान्तिपूर्ण विषय
नासिख़ो मनसूख़

आपने मुहकमात और मुतशाबेहात आयतों के विषय में भली प्रकार जान लिया, कि क़ुर्आन की कुछ आयतें मुहकम और कुछ मुतशाबह है। जिसका अर्थ स्पष्ट बुद्धिगम्य हो वह मुहकम और जिनका अर्थ न समझा जा सके वह मुतशाबह आयतें हैं।

परन्तु अब हम जिस विषय की चर्चा करने वाले हैं, उसमें एक जैसी आयतें हैं। एक तो वह जिनका पाठ (पढ़ना) और आदेश (हुक़ुम) दोनों प्रभावशील है, किन्तु दूसरी आयतें वह हैं जिनका पाठ तो नेकी का देने वाला है, पर आदेश निरस्त (मनसूख़) कर दिया गया है। कठिनाई यह है कि यह दोनों प्रकार की आयतें क़ुर्आन में सम्मिलित हैं। उनको कोई पहिचान नहीं सकता, कि नासिख (निरस्त करने वाली) और मनसूख़ (निरस्त) आयत कौन सी है ?

क़ुर्आन की व्याख्याओं से अपरिचित कई श्री विनोबा भावे जैसे निरस्त आयतो के आधार पर इस्लाम की लोकप्रियता का ढिंढोरा पीटने लग जाते हैं, किन्तु तफ़सीर और हदीस से अपरिचित होने के फलस्वरूप वह स्वयँ भी धोखा खाते है, और इन जैसों के कारण लोग भी धोखे में पड़ जाते हैं। कई व्यक्ति ऐसे हैं जो उन्हीं आयतों का सहारा लेकर जन साधारण को भ्रमित करते हैं, जो कि अन्य किसी आयत से निरस्त हो चुकी हैं। अब क़ुर्आन के पाठक के लिये अति कठिन समस्या यह है कि वह कैसे जाने कि यह आयत नासिख़ (निरस्त करने वाली)

और यह आयत मन्सूख (निरस्त) है। जब कि उन्हें पहिचानने हेतु कुर्आन में कोई तालिका या चिन्ह नहीं है। अतः सर्व साधारण जन भ्रम में पड़ जाते हैं'।

हम पाठकों के समक्ष इस विषय को स्पष्ट करते हैं ताकि वे भ्रम में न पड़ें और अन्यान्य लोगों को भी भ्रम से बचाएँ।

एक भ्रम और उसका निवारण

कहा जाएगा कि जब क़ुर्आन लौह महफ़ूज पर लिखित है, तो फिर वह निरस्त कैसे हो सकता है? किन्तु मैं बताऊँगा कि लौह महफ़ूज (सुरक्षित तख्ती) पर लिखा हुआ भी मिटाया व बदला जा सकता है।

तफसीर मज़हरी में:—

यमहूल्लाहो मा यशाव्यो व युस्बितो व इन्दहू उम्मुलकिताब।

कुर्आन, पारा १३, रकू ६।१२

अर्थात्—अल्लाह जो कुछ चाहता है मिटाता है और जो कुछ चाहता है वह सुरक्षित रखता है, और उसके पास उम्मुल किताब है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने कहा, कि लौह महफ़ूज (खुदा की सुरक्षित तख्ती) में से (खुदा) जो कुछ चाहता है, मिटा देता है; परन्तु 'तकदीर ऐ मुअल्लक' मिटने वाली) को ख़ुदा मिटा देता है और 'तकदीर ऐ मुबरम' नहीं बदल सकता है।

तफ़सीर मज़हरी का व्याख्याकार लिखता है कि–हज़रत मुजद्दद ने दिव्य दृष्टि से मुल्ला ताहिर के मस्तिष्क पर शक़ी (अभागा) लिखा हुआ देखा। उसने यह बात अपने पुत्रों से कह दी। वे दोनों पुत्र मुल्ला ताहिर के पास पढ़ते थे। लड़कों ने हज़रत मुज़द्दद से निवेदन किया कि आप ख़ुदा से प्रार्थना कीजिए कि ख़ुदा इस शक़ावत (दुर्भाग्यता)को सआदत(सौभाग्य) से बदल दें। हज़रत ने कहा–मैंने लौह महफ़ूज़ में इसे कज़ाए मुबरम लिखा देखा हैं। यह अपरिवर्तनीय है। लड़कों ने पुनः प्रार्थना करने का आग्रह किया। हज़रत मुज़द्दद ने कहा—मुझे स्मरण आया कि हज़रत शैख़ुल सकलैन, शैख़, मुहैय्युद्दीन और अब्दुल क़ादिर जीलानी ने कहा था 'मेरी प्रार्थना से कज़ाए मुबरम भी बदल दी जाती है. अतः मैं दुआ करता हूँ। हज़रत मुजद्दद कहते हैं—मेरी प्राथना स्वीकार हुई और मुल्ला ताहिर के मस्तिष्क पर दुर्भाग्य के स्थान पर सौभाग्य अकित कर दिया।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ६, पृष्ठ २७४-७५

हज़रत अ़ता ने कहा–कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने कहा कि अल्लाह की एक लौह महफ़ूज है [इतनी बड़ी कि] लगभग ५०० वर्षों की राह के [इतनी लम्बाई है] सफेद मोतियों की बनी हुई है। उसके दोनों पक्ष याक़ूत के हैं। अल्लाह प्रतिदिन ३३० बार उसका निरीक्षण करता है। जो कुछ चाहता है, उसमें मिटा देता है और जो कुछ चाहता है सुरक्षित रखता है।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ६, पृष्ठ २२७

जैसा कि हम पूर्व में लिख चुके हैं कि ऐसा कोई विषय नहीं है जिसमें मुस्लिम विद्वानों में पारस्परिक मतभेद न हों।

शोक से लिखना पढ़ रहा है कि यह विषय भी मतभेद से मुक्त नहीं है। हम तो उस बात को लिख रहे हैं, जिसे बहुसंख्यक मुसलमान मानते हैं। इससे आगे हम अल्लामा सियूति के 'नासिखो-मनसूख' प्रकरण को प्रारम्भ करते हैं।

अल्लामा सियूति ने लिखा है कि इस विषय 'नासिख-मन्सूख' पर मुस्लिम विद्वानों ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। जिनमें अबू उबेद कासिम बिन सलाम, अबू दाऊद सजस्तानी अबू जाफ़र नुहहास, इब्नल अंवारी और इब्नल अरबी आदि विद्वान् है। इमामों का कथन है कि जब तक कोई व्यक्ति कुर्आन के नासिख और मन्सूख का पूर्ण परिचय न प्राप्त कर लें, तब तक उसके लिये कुर्आन की व्याख्या करना उचित नहीं है।

हज़रत अली ने एक ऐसे व्यक्ति से, जो कुर्आन का अर्थ और तात्पर्य दोनों का वर्णन करता था, पूछा कि तू ! कुर्आन के नासिख व मनसूख प्रकरण को भी जानता है ? उस व्यक्ति का उत्तर था–नहीं जानता। फिर हज़रत अली ने उससे कहा–तू स्वयं भी हलाक (नष्ट) हुआ और दूसरों के नास का भी साधन बना।

इस प्रकरण में कई विषय है। नसख़ शब्द का अर्थ मिटा देना है, और उसका उदाहरण है :—

फ़यन्सखुल्लाहो मा युल्किश्शैतानो सुम्मा योहकेमुल्लाहो आयातेही। कुर्आन, पारा १६, रकू ७।१४

अर्थात्—खुदा मिटा देता है उसको जो शैतान मिला देता है, और अपनी आयत को दृढ़ करता है।

यह सूरतुल्हज्ज की आयत है। इसके सम्बन्ध में हम पूर्व ही सविस्तार लिख चुके हैं, कि हज़रत मुहम्मद जब सूरत नजम पढ़ रहे थे, तब शैतान ने उनके पाठ में अपने वाक्य मिला दिये। दूसरी आयत जो अल्लामा ने लिखी वह निम्नलिखित है। आयत :—

वा इज़ा बद्दलना आयतम्मकाना आयतिंव्वल्लाहो आलमो बिमा युनज़्ज़ेलो कालु इन्नमा अन्ता मुफ़्तर।

कुर्आन, पारा १४, रकू १४।२०

अर्थात्—जब हम एक आयत को बदल कर उसके स्थान पर दूसरी आयत रख देते हैं, अल्लाह जो आदेश भेजता है, उसको वह भली प्रकार जानता है। तो यह लोग कहते हैं कि आप (हज़रत मुहम्मद) स्वयं ही आयतें घड़ लेते हैं और अल्लाह का नाम झूठा लेते हैं। वे कहते हैं, कि तू (हज़रत मुहम्मद) मिथ्यावादी है।

अर्थात्—परिवर्तन से तात्पर्य, किसी आयत के पाठ को निरस्त करना है या किसी आदेश को निरस्त करके उसके स्थान पर दूसरा आदेश प्रसारित करना है। अल्लाह जो कुछ उतारता है, उसे वही भली प्रकार जानता है कि पूर्व आयत समयानुकूल थी, परन्तु उसे पूर्ववत् स्थिर रखना निरथक है या उससे पूर्वादेश बिगाड़ का कारण बन गया था। इसलिए उसको परिवर्तित कर ऐसा आदेश प्रसारित कर दिया जो लोगों की भलाई करने वाला है। तात्पर्य यह कि लोगों के हेतु कब और कौन सा आदेश उचित है, उसे अल्लाह ही भली प्रकार जानता है। **तफसीर कादरी, भाग ६, पृष्ठ ४३६–४३७**

तफ़सीर कादरी ने और भी स्पष्ट लिखा है । जैसा कि बाज़ (कुछ) आदेश निरस्त हुए तो मक्का के काफ़िरों ने कहा, कि–मुहम्मद अपने मित्रों के साथ मसख़रापन (परिहास) करता है । आज उन्हें एक आदेश करता है तो कल उसे निरस्त कर देता है । निस्सन्देह वह खुदा पर अवश्य लांछन लगाता है और अपने मन से बातें बना कर कह देता है । (उसके उत्तर में) उपरोक्त आयत उतरी, कि जब हम निरस्त आयत के स्थान पर निरस्त करने वाली आयत उतारते हैं और खुदा. बड़ा जानने वाला है, उस वस्तु को जो उतारता है और हिकमत (बुद्धिमता) और मस्लिहत (समयानुकूल नीति) के कारण निरस्त कर देता है, तो काफ़िर कहते हैं । इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि तू (ऐ मुहम्मद) छली है और झूठमूठ खुदा का नाम लेकर अपनी बातें बना लेता है ।

तफ़सीर कादरी भाग १, पृष्ठ ५८१

दोनों व्याख्याकारों ने उपरोक्त आयत से यह भली प्रकार प्रमाणित कर दिया है कि खुदा कुर्आन कीं आयत को समयानुसार दूसरी आयत में परिवर्तित कर देता है और वहां के लोग कहते हैं कि (हज़रत मुहम्मद) अपने मित्रों के साथ परिहास करता है तथा खुदा का नाम झूठमूठ लेकर स्वयं ही आयतें बना कर रख देता है । इसी प्रकार तफ़सीर जलालैन, पृष्ठ २२६ और तफ़सीर बैज़ावी, पृष्ठ २३० में भी उक्त (इस) आयत की व्याख्या की गई है । हम इसका एक उदाहरण प्रस्तुत कर और भी स्पष्ट कर देते हैं । यथा :— ।

या अय्यो हन्नबिय्यो हर्रेंजिल सोमिनीना अलल् किताबे इंय्यकु-म्मिनकुम इश्रूना साबेरूना यग्लिबू मेअतैने इय्यंम्मिनकुम्-

मेअतुंय्यग्लिबू अलफ़म्मिनल्लजीना कफ़रू बेअन्नाहुम कौमुल्ला यफकेहून । कुर्आन, पारा १०, रकू ९।५

अर्थात्—ऐ नबी [मुहम्मद] ! मुसलमानों को उभारो, काफ़िरों का वध करने के लिये । यदि युद्ध में धैर्य रखने वाले तुममें २० व्यक्ति हो तो २०० काफ़िरों पर विजयी होवेंगे । यदि १०० व्यक्ति हो तो ख़ुदा के सहारे हजार काफ़िरों पर विजय पाएंगे, इसलिए कि वह ऐसा समूह है, जो नहीं समझते । क्योंकि वे प्रलय और मुक्ति से अनभिज्ञ हैं और मुसलमानों के समक्ष दृढ़ रहने की शक्ति नहीं रखते ।

इस आयत के उतरने के पश्चात् एक-एक मुसलमान दस-दस काफ़िरों से लड़ने में भयभीत हुए और यह आदेश अति भारी पड़ा, तो ख़ुदा ने इस आयत को निरस्त कर कहा—

अलआना ख़फ़्फ़ क़ल्लाहो अनकुम व अलेमा अन्ना फ़ी कुम ज़ाफ़न फ़इंय्यकुम्मिन कुम्मिअतुन साबिरा तू यग्लिबू मेअतैने व इंय्यकुमिम्मनकुम अलफ़ुंय्यग्लिबू अलफ़ैने बेइज़ निल्लाहे वल्लाहो मा अस्साबेरीन । कुर्आन, पारा १० रकू ९।१५

अर्थात्—(उक्त आदेश भारी पड़ा तो] अल्लाह ने कमी कर दी तुमसे और देखा कि तुममें दुर्बलता है । पस, यदि १०० व्यक्ति तुममें से युद्ध में धैर्यवान हो तो तुम २०० काफ़िरों पर विजयी होओगे । अर्थात् एक मुसलमान दो काफ़िरों पर । यदि हों तुममें से एक हजार व्यक्ति, तो दो हजार काफ़िरों पर विजय पाओगे ख़ुदा की आज्ञा व सहायता से । और अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है ।

पाठक वृन्द ! उक्त प्रथम आयत में १० मुसलमानों का १०० पर विजय होना और १०० का १००० पर विजय होना, खुदा की ओर से आदेश प्राप्त होना कहा गया हैं, परन्तु जब परिस्थिति प्रतिकूल देखी तो दूसरी आयत गढ़नी पड़ी और कहना पड़ा, कि ख़ुदा ने जान लिया कि तुममें दुर्बलता है। इस दुर्बलता को जानकर ख़ुदा ने जहाँ १०० का १००० पर विजयी होने के लिये कहा था, वहां उस परिमाण को घटा कर २०० मात्र सीमिति कर दिया।

यह है, इस्लाम का हाज़िर-नाज़िर और अन्तर्यामी ख़ुदा कि जिसे प्रथम इस बात का ज्ञान नहीं था कि मुसलमानों में दुर्बलता है और अनुभव होने के पश्चात् ख़ुदा को ज्ञात हुआ कि यह मापदण्ड निर्वाह योग्य नहीं, तो तत्काल प्रथम आयत को निरस्त कर द्वितीय आयत उतार दी।

हम आयतों के साथ 'उतारना' क्रिया प्रयुक्त करते हैं। इससे आप यह न समझें कि हम क़ुर्आन को कहीं आसमान से उतरा हुआ मानते हैं। हमारी दृढ़ धारणा है कि यह समस्त रचना, जो कुर्आन में है, वह सब मुहम्मद साहिब की ही कल्पना है।

यदि ऐसा न माना जाये, तो कोई साधारण व्यक्ति भी इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता, कि प्रथम आयत में ख़ुदा ने १० मुसलमानों को १०० काफिरों पर विजयी होने का आदेश दिया, और जब असफलता का कटु अनुभव हुआ, तो, १०० के स्थान पर २०० ही रह गये। क्या ऐसे ख़ुदा को सर्वशक्तिमान् ख़ुदा माना जा सकता है ? ऐसी बातों के कारण ही, तो मक्का में बुद्धिमान् लोग कहते थे, कि मुहम्मद अपने पास से बातें बना

कर खुदा का नाम लगा देता है। यदि कुर्आन का लेखक अंतर्यामी होता तो ऐसे मिथ्या आदेश कदापि न देता।

मुस्लिम विद्वानों ने कुर्आन के सन्मुख होने के सम्बन्ध में, अर्थात् आयतों के सन्मुख होने के सम्बन्ध में मतभेद व्यक्त किया है। एक कथन तो यह है, कि कुर्आन का निरस्त होना, कुर्आन के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु से नहीं हो सकता, जैसा कि कुर्आन में स्वयं खुदा ने कहा :—

मा नन्सख़ो मिन् आयतिन औ नुनसिहानाते व ख़ैरिम्मिनहा औ मिसलिहा। कुर्आन, पारा १, रकू १३/१३

अर्थात—जो कुछ निरस्त कर दिया हमने कुर्आन की आयतों से, दुनिया की मस्लिहतों के समान या ज़माने का हाल देख कर, अर्थात् दुनिया की भलाई और समानुसार स्थिति को देखते हुए, या तो भूला देते हैं हम उसे और दिलों से निकाल लेते हैं। लाते हैं हम उस निरस्त की हुई आयत से श्रेष्ठतर। जैसे १० काफ़िरों के साथ एक ग़ाज़ी [योद्धा] का सामना निरस्त कर के २ काफिरों के साथ निश्चित कर दिया। या लाते हैं हम उस निरस्त की हुई आयत के सदृश [अन्य आयत] लाभ और नीति में। जैसे किब्लाको [जिस ओर नमाज़ में मुंह किया जाये] बैतुल मुकद्दस से काबे की ओर फेर देना इत्यादि।

कुछ अन्य लोगों का कथन है कि कुर्आन का नसख़ [मिटा देना] कुर्आन पर ही निर्भर नहीं अपितु वो सुन्नत (हदीस) से भी निरस्त हो जाता है, इसलिये कि सुन्नत का भी खुदा की

तरफ़ से होना प्रमाणित हैं, क्योंकि .कुर्आन स्वयं ने फरमाया है :—

व मा यंतेको अनिल हवा, इन हुवा इल्ला वहयुं य्यूहा अल्लमहू शदीदुल कुवा । .कुर्आन पारा २७ सूरत नजम रकू १।५

अर्थात्—(हजरत मुहम्मद) बात नहीं करता है, अपने मन की इच्छा से और वास्तविक बात यह है कि आपका (हजरत मुहम्मद) बोलना कुर्आन के साथ है अपनी इच्छा से नहीं और उसी बात को बोलता है जो उसकी तरफ वही (फ़रिश्ता) भेजा जाता है। उसको वही सिखाता है अर्थात् जिब्राईल।

तफ़सीर क़ादरी भाग २ पृष्ठ ४७८

इस दृष्टि से हदीस से भी .कुर्आन की आयत निरस्त हो सकतीं है।

तीसरी बात यह है कि यदि हदीस खुदा के हुक्म से हो तो वह कुर्आन को निरस्त कर सकेगी। इब्ने हबीब नेशापुरी ने अपनी तफ़सीर (कुर्आन की व्याख्या) में लिखा है, और शाफई का कथन है कि जहाँ पर कुर्आन का निरस्त होना सुन्नत से सिद्ध हो वहाँ कुर्आन उस सुन्नत को शक्ति देनेवाला अवश्य होगा।

तफ़सीर इत्तक़ान भाग २ प्रकरण ४७ पृष्ठ ५४

जिस आयत को हमने ऊपर लिखा है, यही इस विषय की मूलाधार है। तफ़सीर मज़हरी ने इस आयत की व्याख्या इस प्रकार लिखी है-जो कोई आयत हम कुर्आन से निरस्त कर देते हैं उसके सम्बन्ध में कई प्रकार के प्रमाण है।

(१) या तो किसी आयत को पढ़ने को निरस्त कर देना और हुक्म का अपने स्थान पर शेष रहना जैसे आयते रज्म (पथराव करना) का आदेश शेष है और उसका पढ़ना निरस्त हो गया है।

(२) या हुक्म का समाप्त हो जाना और आयत का पढ़ना अपने स्थान पर शेष रहना जैसे कुटुम्बियों के लिये वसीय्यत करने की आयत (इसका पाठ बाकी है और हुक्म निरस्त है)

(३) वह आयत जिसमें मरने के पश्चात् एक वर्ष की अवधि है (एक वर्ष की अवधि निरस्त होकर ४ माह १० दिन की रह गई है)

(४) अथवा आयत का पढ़ना और हुक्म दोनों निरस्त हो जायें जैसा कि कहते हैं सूरत अहज़ाब सूरत बक़र के सदृश्य लम्बी थी। उसके बहुत से हिस्सों का पढ़ना और हुक्म दोनों ही (कुर्आन से) निरस्त कर दिये गये।

निरस्त होने वाली आयतें दो प्रकार की होती हैं। एक वह कि उसके हुक्म के स्थान पर दूसरा हुक्म स्थापित न हो जैसे अपने कुटुम्बियों को वसीयत करना मीरास (उत्तराधिकारिता) की आयत से निरस्त हो गया। अर्थात् जब मीरास की आयत उतरी तो कुटुम्बियों को दी जाने वाली सम्पत्ति का अधिकार समाप्त हो गया और एक वर्ष इद्दते वफ़ात [पति की मृत्यु–पश्चात् पुनर्विवाह का समय] का होना ४ माह १० दिन वाली आयत से समाप्त हो गया।

दूसरी किस्म वह है कि दूसरा हुक्म स्थानापन्न न हो। जैसे स्त्रियों की परीक्षा आरम्भ में थी, वह बाद में समाप्त

हो गई । हम आपको (हज़रत मुहम्मद) या जिब्राइल को किसी आयत को निरस्त करने का आदेश देते हैं या भूला देते हैं। इब्ने कसीर और अबू उमर के अनुसार यह अर्थ होंगे कि किसी आयत के हुक्म को पीछे कर देते हैं और उसके पढ़ने को समाप्त कर देते हैं। इसका अर्थ यह होगा कि पढ़ने और हुक्म दोनों को निरस्त कर देते हैं, या यह अर्थ होंगे कि हम उस आयत को लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित तख्ती जिस पर कुर्आन अंकित है) में पीछे कर देते हैं। अर्थात् आप पर उसे नहीं उतारते या तेरे दिल से उस (आयत को) मिटा देते हैं (उदाहरणार्थ) अबु इमामा बिन सहल् बिन हनीफ से बयान किया गया है कि कुछ सहाबा (मुहम्मद के दोस्त) एक रात नमाज़ के लिये खड़े हुए और एक सूरत पढ़नी चाही तो उन्हें वह सूरत सर्वथा विस्मृत हो गई। प्रातः उन्होंने हज़रत मुहम्मद साहब से उक्त घटना के सम्बन्ध में पूछा तो हज़रत साहिब ने कहा–उसका पाठ और हुक्म दोनों उठा लिये गये हैं।

कुर्आन कहता है कि जब हम किसी आयत को निरस्त कर देते हैं या भूला देते हैं तो उससे अधिक लाभप्रद या उसके सदृश अधिक लाभदायक, सुविधाजनक और भलाईपूर्ण आयत हो, उसे उतारते हैं।

(व्याख्याकारों के इन प्रमाणों से भी भली प्रकार प्रमाणित हो गया कि कुर्आन की आयतें निरस्त की जाती हैं और उनके स्थान पर दूसरी आयतें लाई जाती हैं)

तफसीर मज़हरी, पारा १, पृष्ठ १९२-१९३

अल्लामा जलालुद्दीन सियूति लिखते हैं कि कुर्आन में नासिख और मनसूख की दृष्टि से कई प्रकार कुर्आन की सूरतें

विभक्त है । एक क़िस्म वह है कि उसमें नासिख और मन्सूख नहीं है । इस प्रकार की ४३ सूरतें हैं और जिनमें नासिख व मन्सूख है, इस प्रकार की २५ सूरतें हैं ।

अल्लामा सियूति ने कुरान की आयतों के निरस्त होने के कई प्रकार लिखे हैं । उनमें से एक यह भी है कि जिसके लिये किसी कारण से आदेश दिया गया था किन्तु जब बाद में वह कारण समाप्त हो गया, जैसे मुसलमानों की निर्बलता और संख्या कम होने के समय सतोष और सहनशीलता धारण करने की आज्ञा दी गई थी और जब यह स्थिति नहीं रही तो युद्ध को अनिवार्य बना कर पूर्व के आदेश को निरस्त कर दिया । यह सन्तोष करने वाली आयत, आयतुस्सैफ (युद्ध की आयत) के उतरने से निरस्त हो गई । हम आगे चल कर यह बतायेंगे कि इस्लाम के सम्बन्ध में जो अरबी से अपरिचित लोग इस्लाम को मित्रता-युक्त व शांतिप्रिय बताते हैं वह उन्हीं आयतों का आधार लेते हैं जो आयतुस्सैफ़ से निरस्त हो चुकी है ।

अल्लामा सियूति ने कई प्रकार से कुर्आन की आयतों का निरस्त होना लिखा है । उन सभी को विस्तार सहित लिखना आवश्यक प्रतीत नही होता है । जैसे रात की नमाज़ का पढ़ना पहिले अनिवार्य था किन्तु जब इसमें कठिनाईयां आने लगीं तो फिर उसे समाप्त करने के लिये सूरत मुज्जम्मिल में यह आयत उतारी गई कि जिसमें तुम्हें सुविधा हो वही करो । आगे वही बातें अल्लामा सियूति ने लिखी हैं जिसे हम तफ़सीर मज़हरी से ऊपर लिख चुके हैं ।

फिर अल्लामा सियूति ने लिखा है कि मैंने कुर्आन की निरस्त आयतों के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी है परन्तु संक्षेप में यहां भी लिखता हूँ ।

पहली आयत अल्लामा ने यह लिखी है:—

कुतेबा अलैकुम ईजा हज़रा आहदा कोमुल मौतो इन्तरका खैरन निल वसीय्यतो लिल वालेदैन वल अकरबीना बिल मारूफे हक्कन अलल मुत्तकीन। कुर्आन पारा २ रकू २२/६

अर्थात्—तुम्हारे लिये लिखा गया अर्थात् अनिवार्य किया गया कि जब तुम में से किसी की मृत्यु उपस्थित हो, यदि वह अधिक सम्पत्ति छोड़े तो वसीयत करे वह अपने मां-बाप, कुटुम्बियों और बेटों के लिये न्याय के साथ। फिर इस आयत का आदेश मीरास की आयतों से निरस्त हो गया।

तफ़सीर क़ादरी पारा २ पृष्ठ ४५

तफसीर कादरी में लिखा है कि मूर्खता के समय में लोग अपने मां-बाप और कुटुम्बियों को अपनी सम्पत्ति से वंचित रखते थे, इसलिए यह आयत उतारी गई थी। तफ़सीर मज़हरी ने पृष्ठ ३१८ पर लिखा है कि इस्लाम के आरम्भ में इस आयत के कारण वसीयत अनिवार्य थीं, किन्तु मीरास की आयत से यह आयत निरस्त हो गई।

तफ़सीर मज़हरी भाग १ पृष्ठ ३१९

ऐसा ही तफ़सीर हक्कानी ने पृष्ठ ४० पर, जलालैन पृष्ठ २६ और बेज़ावी पृष्ठ २६ पर भी लिखा है।

ऐसे मृत पुरुष की सम्पत्ति के सम्बन्ध में एक और आयत लाई गई है और वह भी मीरास की आयतों से निरस्त हो गई

है। उसकी कथा इस प्रकार है कि—ओमबिन सामत की विधवा स्त्री हज़रत मुहम्मद के पास आई और उसने कहा कि मेरा पति मुसलमान हुआ था और अब वह मर चुका है तथा उससे मुझे तीन पुत्रियां उत्पन्न हुई हैं। मेरा पति बहुत सम्पत्ति छोड़ गया है और उस सम्पत्ति पर चचेरे भाईयों ने अधिकार कर मुझे उससे वंचित कर दिया है। इस पर हज़रत साहिब ने चचेरे भाईयों को बुलाया तो उन्होंने प्रचलित, कानून प्रस्तुत कर अपने आपको सम्पत्ति का अधिकारी प्रमाणित किया। इस पर यह आयत उतारी कही गई 'लिर्रिजालि नसीबुम्मिम्मा' इत्यादि। (पारा ४ रकू १)

अर्थात्—पुरूषों के लिये उस सम्पत्ति में से जो उनके माता-पिता ने छोड़ी है और निकट के कुटुम्बियों और स्त्रियों के लिये भी उसमें हिस्सा है, जो मां-बाप और अन्य कुटुम्बिजन छोड़ मरे। उसमें से खुदा ने निश्चित हिस्सा कर दिया और जब सम्पत्ति का बँटवारा हो उस समय वह कुटुम्बी जो कि सम्पत्ति का अधिकारी न हो और अनाथ व असहाय हो उनको भी कुछ भाग दिया जाये। यह आयत भी मीरास की आयतों से निरस्त हो गई है।

तफ़सीर क़ादरी, पारा ४, सूरत निसा, पृष्ठ १५१

आयत मीरास की, जिससे यह उपरोक्त आयतें निरस्त हुई है, उसे नीचे लिखते हैं:—

' युसी कुमुल्लाहोफ़ी औलादेकुम् लिज्जकरे मिसलो हज्जिल उन्सयैने फइन कुन्ना निसाअम फोकस्नतैने फलहुन्ना सुलोसा मात-रका वा इन् कानत वाहेदातन फलाहन्नस्फो वलै अब वैहे

लिकुल्ले वाहेदिम्मिन्हो मस्सुदोसो मिम्मा तरका'

इत्यादि । पारा ४, रकू २/१२ सूरत निसा

अर्थात्–खुदा तुम्हें आदेश देता है, तुम्हारी सन्तान और उनकी सम्पत्ति की राशि में इस प्रकार बटवारा किया जाये । दो स्त्रियों के बराबर एक पुरुष का हिस्सा और यदि पुरुष न हो तथा केवल स्त्रियां ही दो से अधिक हो तो उनके वास्ते जो मृतक ने छोड़ा है उस सम्पत्ति में २ तिहाईयाँ उनकी हैं और यदि एक ही पुत्री हो तो मृतक की सम्पत्ति में से आधा भाग उसका होगा तथा मां-बाप के लिये छठा भाग होगा । यदि मृतक की सतान पुत्र या पुत्री हो और यदि न हो तो उसकी सम्पत्ति के अधिकारी माँ बाप इस प्रकार होंगे–मां के लिये कुल सम्पत्ति का तिहाई भाग और शेष पूर्ण सम्पत्ति पर बाप का अधिकार होगा। यदि मृतक के सगे भाई अथवा क़ेवल माता से या केवल बाप से उत्पन्न भाई हों तो मृतक की माँ के लिये सम्पत्ति का छठा भाग कर्ज चुकाने के बाद निर्धारित है ।

तफ़सी कादरी पारा ४, पृष्ठ १५३

इस आयत का शाने नज़ूल [उतरने का कारण]

काज़ी इस्माईल ने 'अहकामुल कुर्आन' में अब्दुल मलिक बिन मोहम्मद बिन हज़म के अनुसार बयान किया है कि अमराह बिन्त हराम हज़रत साद बिन रवी की पत्नी थी और अमराह के उदर से साद की एक पुत्री थी । अमराह अपनी पुत्री की सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त करने हेतु हज़रत मोहम्मद की सेवा में उपस्थित हुई तो उसके पक्ष मे यह आयत (यूसीकुम) उतरी । तफ़सीर मजहरी पारा ४, पृ. ५००

रोज़ा सम्बन्धी आज्ञाएँ

इससे आगे अल्लामा सियूति ने इब्ने अरबी के प्रमाण से निम्न मन्सूख (निरस्त) आयत लिखी है :—

वा अलल्लाज़ीना युतीकूनहू फ़िदयातुन त़आमो मिस्कीन, फ़मन ततव्वआ खैरन फ़होवा खैरुल्लाह ।

कुर्आन पारा २, रकू २३७

अर्थात्—उन लोगों के लिये जो कि शक्तिवान् है कि रोज़ा रखें और जो रोज़ा न रखना चाहें तो उसके बदले में एक फ़कीर को भोजन करना होगा । यह आदेश इस्लाम के आरम्भ में था किन्तु बाद में यह निरस्त हो गया ।

तफ़सीर कादरी पारा २, पृष्ठ ४६

इस आयत के सम्बन्ध में अल्लामा बग़वी लिखते हैं कि इस आयत के आदेश और व्याख्या में मुस्लिम विद्वानों का मतभेद है । अधिकतर विद्वान् तो यह कहते हैं, कि यह आयत निरस्त है । इब्ने उमर और सलम् बिन अक्रू और अन्य सहाबा का भी यही मत है । इसकी शाने नज़ूल इस प्रकार है कि इस्लाम के आरम्भ में खुदा ने लोगों को उनकी इच्छानुसार स्वतंत्रता दे रखी थी कि साहस हो तो रोज़ा रखो अन्यथा न रखो और रोज़े के बदले में एक फकीर को भोजन करा दो । यह आदेश इस कारण था कि (आरम्भ में) रोज़ा रखने का स्वभाव न था । यदि आरम्भ में रोज़े का आदेश हो जाता तो लोगों को

अधिक कठिनाई होती। फिर इसके पश्चात् 'फमन शहेदा मिन्कुम से यह स्वतन्त्रता निरस्त हो गई और रोज़ा रखना अनिवार्य हो गया।

तफ़सीर मज़हरी, पारा २ पृष्ठ ३२८

तफ़सीर हक़्क़ानी ने लिखा है कि इस्लाम के आरम्भ में स्वस्थ नागरिक को भी रोज़ा रखने में समर्थ थे, उन को भी स्वतन्त्रता थी कि वह चाहें तो रोज़ा रखें या रोज़े के बदले एक फ़कीर को भोजन करादें परन्तु अगली आयत से यह आदेश निरस्त हो गया।

तफ़सीर हक़्क़ानी पारा २ पृष्ठ ४३

जिस आयत से उक्त आयत निरस्त हुई वह नीचे लिखे अनुसार हैं:--फ़मन शहेदा मिन को मुश्शहरा फ़ल यसुमहो।

कुर्आन पारा २ रकू २३।७

रोज़ा रखने वाले लोगों तुम में से जो भी किसी नगर में रमज़ान के महीने में उपस्थित हो, उसे चाहिये कि वह रमज़ान में रोज़ा रखे।

तफ़सीर मज़हरी में पृष्ठ ३३४--३३५ में भी यही लिखा है।

(२) अल्लामा सियुती ने लिखा है कि रमज़ान के दिनों में सोने के पश्चात् खाना-पीना एवं नारी संम्भोग वर्जित था। इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित आयत प्रकाश डालती है:—

ओहिल्ला लकुम लैलतिस्सीया मिर्रफसो इला निसाएकुम हुन्ना लिबासुल्लाकुम्म वा अंतुम लिबासुल्लहुन्ना अले मल्लाहो अन्ना-

कुम कुन्तुम तख्तानूना अन फ़सकुम फताबा अलैकुम वा अफा अनकुम फ़ल्आना बाशेरूहन्ना वब्तगू मा कता बल्लाहो इत्यादि।

कुर्आन पारा २ रकू २३।७

अर्थात्— मुसलमानों को रमज़ान की रातों में इशा की नमाज़ पढ़ लेने तक या सो रहने तक खाने-पीने एवं स्त्री समागम करने की आज्ञा थी। सहाबा का एक दल काम के वशीभूत होने के कारण अपनी काम वासना को न रोक सका और जिस समय नारी समागम वर्जित था, उस समय इस कर्म हेतु उद्यत हुआ और उसको करने में रत हुआ। दूसरे दिन यह बात हज़रत मुहम्मद के पास पहुंची तो उस पर यह उक्त आयत उतारी गई। इसका अर्थ यह है कि हलाल की गई (आज्ञा दी गई) तुम्हारे वास्ते रोज़ों की (सारी) रातों में अपनी स्त्रियों से सम्भोग करना। वह तुम्हारे लिये पहिनावा हैं और तुम उनके लिये पहिनावे हो।

खुदा ने जान लिया कि तुम खयानत करोगे अपनी आत्मा के साथ अर्थात् आज्ञा भंग करोगे (असमय) अर्थात् जिस समय स्त्री सम्भोग की आज्ञा नहीं थी उस समय सम्भोग कर स्वयं के प्रति अपराध करोगे, पस फिर आया (खुदा) तुम पर दया के साथ रोजों की रातों में खाने-पीने और स्त्री सम्भोग करने की आज्ञा तुमको प्रदान कर दी और जो तुमने खनायत कर पाप किया था वह क्षमा कर दिया। पस, अब तुम रोजों की रातों में अपनी स्त्रियों के साथ सम्भोग किया करो और उस बात को खोजो जो अल्लाह ने लौह महफ़ूज में तुम्हारे लिये लिख दिया है, इत्यादि।

तफ़सीर क़ादरी भाग १ पृष्ठ ४८

इसकी व्याख्या में तफ़सीर हक्कानी ने इस प्रकार लिखा है। अधिकतर कुर्आन के व्याख्याकार कहते हैं कि इस्लाम के आरम्भ में रोज़ा खोलने के पश्चात् जब तक इशा की नमाज़ न पढ़ें और न सोयें, उस समय में खाना पीना एवं स्त्री सम्भोग करना उचित था। और जब वह इशा (संध्या के २ घंटे बाद) की नमाज़ पढ़ चुके या रोज़ा खोल कर सो जाये तो दोनो अवस्थाओं में खाना-पीना एवं स्त्री-सम्भोग वर्जित था। उपरोक्त आयत का शाने नज़ूल इस प्रकार है, कि उसका नाम मुआज़ अबू शरमा और बरा में से कोई एक था। वह दिन भर का थका हारा सध्या को अपने घर आया। भोजन बनने में कुछ विलम्ब था सो वह सो गया। फिर (भोजन बनने पर) उसे जगाया गया तो उसने भोजन नहीं किया, क्योंकि सोने के पश्चात् भोजन करना वर्जित था और उसी प्रकार बिना खाये पीये दूसरे दिन भी रोज़ा रख लिया। फलस्वरूप कमजोरी के कारण उसकी स्थिति दयनीय और चिन्ताजनक हो गई। जब यह सूचना हज़रत मुहम्मद को दी गई तो उस समय हज़रत उमर ने कहा कि या हज़रत मैंने इशा की नमाज़ के पश्चात् अपनी स्त्री के साथ सम्भोग किया था। अन्य लोगों ने भी इसी प्रकार कहा (फिर वहाँ क्या देर थी तुरन्त आयत उतर गई) [तफ़सीर कबीर] इसी प्रकार तफ़सीर मज़हरी पारा २ पृष्ठ ३४७ में लिखा है। लगभग ऐसा ही तजरीदे बुखारी प्रकरण 'रोजों का बयान' के पृष्ठ ३०१ और हदीस क्रमांक ९११ में लिखा है।

पाठकवृन्द! आपने इस आयत को भली प्रकार देख लिया होगा कि इससे खुदा ने जान लिया कि तुम खयानत करते हो, जिस कार्य की आज्ञा नहीं है, वह छिप कर करते हो और इस

बात का पता खुदा को उस समय लगा जब हज़रत साहेब को एक अन्सारी और हज़रत उमर तथा अन्य लोगों ने कहा कि वर्जित समय में हम अपनी स्त्रियों से समागम करते है तो उसी समय उपरोक्त आयत उतारी गई जिसमें रात्रि के लिये खानेपीने-एवँ स्त्री-सम्भोग हेतु स्वतन्त्रता दे दी गई। क्या कोई बुद्धिजीवी और विवेकशील मनुष्य इस बात पर विश्वास कर सकता है कि अन्तर्यामी प्रेभु इस प्रकार से आयतें उतार सके। यह तो समस्त कल्पना हज़रत मुहम्मद साहेब की अपनी ही है ! सृष्टिकर्ता ईश्वर को मनुष्यों के सांसारिक व्यक्तिगत कार्य-कलापों से क्या सम्बन्ध जो इस प्रकार की आयतें उतारे और हज़रत उमर के कृत्य को देख कर अपने ही आदेश में परिवर्तन करने हेतु तत्पर हो जाए।

आगे निरस्त आयत इस प्रकार है:—

'यस्अलूनका अनिल्शहरिल्हरामे' को **'कातेलुल मुशरेकीना** ने निरस्त कर दिया।

कहानी इस प्रकार है कि हज़रत मुहम्मद साहेब ने अब-दुल्लाह बिन जहश को कुछ सहाबा के दल के साथ एक पत्र देकर भेजा कि इस पत्र के आदेशानुसार कार्य करना। अब्दुल्ला बिन जहश एक स्थान जिसका नाम बतने नखला है, वहां पहुंच कर ठहर गया। वहां पर कुरैश के व्यापारियों का एक काफ़िला विहेश से सामान लेकर आ रहा था। जब वह काफ़िला वहां पहुंचा तो अब्दुल्ला बिन जहश ने उस काफ़िले को लूट लिया और हजरमी की हत्या कर कुछ लोगों को बन्दी बना लिया और हज़रत मुहम्मद के सन्मुख ले आया। जब कि उस महीने

में लड़ाई करना वर्जित था। शेष बात का पता आयत की व्यख्या से लग जायेगा। आयत इस प्रकार है :—

यरअलूनका अनिश्शहरिल हरामे क्तालिन फीहे कुल कितालुन फीहे कबीर, वासद्दन अन सबी लिल्लाहे वाकुफरुन बिही इत्यादि

कुर्आन, पारा २, रकू २७।११

अर्थात् (ऐ मुहम्मद) मुसलमान आपसे माह हराम (उसे कहते है जिसमें युद्ध वर्जित होता है) में युद्ध के सम्बन्ध में पूछते हैं, इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने तथा तिबरानी ने कबीर में और इब्ने साद और बैहकी ने अपनी अपनी सुनत में जन्दब बिन अब्दुल्ला से रवायत (बयान) की है कि बदर के युद्ध से दो मास पहिले दो हिजरी अपने फूफ़ीज़ाद भाई अब्दुल्ला बिन जहश को और उनकी सहायतार्थ आठ व्यक्तियो को उसके साथ भेजा। उन आठों व्यक्तियों के नाम (१) साद बिन अबी विकास जौहरी (२) अकास बिन मोहसिन असदी (३) अतबा बिन रज़वान सलमी (४) अबुहुज़ेफा बिन अतबा रबीया (५) सोहेल बिन बेज़ा (६) आमर बिन रबीया (७) वाकद बिन अब्दुल्ला और (८) खालिक बिन वकेर है। इब्ने साद का कथन है कि १२ व्यक्ति साथ में थे और एक एक ऊँट पर दो-दो व्यक्ति सवार थे। हजरत मुहम्मद साहेब ने उस दल के नायक अब्दुल्लाह बिन जहश को एक आज्ञा पत्र लिख कर दे दिया था और कहा था खुदा का नाम लेकर प्रस्थान करो और जब तक दो दिन की यात्रा पूरी न कर लो तब तक इस आज्ञा पत्र को खोल कर नहीं देखना और जो कुछ इसमें लिखा है अपने साथियो को भी सुना देना। फिर हमारी आज्ञानुसार जो कुछ इस पत्र मे लिखा है वैसा ही करना। चलते समय अब्दुल्ला नें पूछा-या रसूलिल्लाह ! मे

किस ओर जाऊँ तो आज्ञा दी गई कि नज्दीया की ओर जाओ। अब्दुल्ला ने दो दिन की यात्रा करने के पश्चात् उस पत्र को खोला तो उसमें लिखा हुआ था कि-विदित हो कि तुम अल्लाह की कृपा पर भरोसा कर अपने साथियों को, जो कि तुम्हारे कहने मे हों, उन्हे अपने साथ लेकर चलो और जिस समय बतने नखला में पहुंचों तो क़ुरैश के काफिले की प्रतीक्षा करो। उनका माल तुम्हारे हाथ लगने की आशा है। तुम उस माल को प्राप्त कर हमारे पास लाओ। अब्दुल्ला ने अपने साथियों को आज्ञा पत्र पढ़ कर सुनाया और कहा कि जिसकी इच्छा हो मेरे साथ चले और जो बलिदान न देना चाहे वह लौट जाए परन्तु कोई लौटा नहीं। जब यह लोग नज़रान के पास पहुंचे तो साद बिन अबी विकास और अतबा बिन रज़वान का ऊँट खो गया। यह दोनों अपने ऊँट की तलाश में पीछे रह गये और अब्दुल्ला अपने शेष साथियों के साथ बतने नखला में पहुँच गया, अभी यह लोग ठहर भी न पाये थे कि कुरैश का काफ़िला दिखाई दे गया। जो चमड़ा किशमिश और अन्य व्यापार का माल लेकर आ रहा था उनमें अमरू हज़रमी, हुकुम बिन कैसान, मौला हश्शाम बिन मोगीरा, असमान बिन अब्दुल्ला बिन मगीरा खज़ुमी और उसका भाई अब्दुल्ला मखज़ुमी भी थे। जिस समय उन लोगों ने इन मुसलमानों को देखा तो वे भयभीत हो उठे। अब्दुल्ला बिन जहश ने कहा कि वे लोग अपने से भयभीत हो गये हैं। अब तुम यह करो कि अपने एक साथी का सिर मूंड कर उनके पास भेज दो (ताकि उन्हें सन्तोष व विश्वास प्राप्त हो) (सिर मुन्डाने का अर्थ यह है कि इस महीने में युद्ध वर्जित है और हम इस आज्ञा के पालनकर्ता हैं अर्थात् हम मुसलमान युद्ध नही करेंगे) इसलिए अकाशा का सिर-मून्ड कर उनकी ओर भेज

दिया गया। जब अकाशा उनके पास पहुंचा तो कुरैश (वह) देखते ही कहने लगे यह तो हमारी जाति का व्यक्ति है, इससे भय करने की कोई बात नहीं है। अतः वे निर्भिक हो गये। उस पर मुसलमानों ने आपस में मन्त्रणा की यदि आज की रात तुम उन्हें छोड़ देते हो तो फिर यह हरम (काबे की सीमा) में प्रवेश कर लेंगे और अपने हाथों से निकल जायेंगे। क्योंकि हरम मे लड़ाई करना उचित नहीं है। यह समझौता होने के बाद वाकद बिन अब्दुल्ला सहमी ने अमरू हज़रमी को तीर मार कर जान से मार डाला और शेष मुसलमानों ने बड़ी मर्दानगी से काफ़िले पर आक्रमण किया। उसमान बिन अब्दुल्ला बिन मगीरा और हकम बिन कैसान को बन्दी बना लिया तथा नोफल भाग गया। फिर इन दोनों बन्दियो और ऊंटों (माल से लदे) को लेकर हज़रत मुहम्मद के पास आये।

तफ़सीर मज़हरी पारा २, भाग ४२१ से १३३

जब इस घटना की सूचना मक्का में पहुंची तो क़ुरैश ने मक्का निवासी मुसलमानों को उलाहना देते हुए कहा—ऐ अधर्मियों! तुमने उन महिनों में, जिनमें युद्ध वर्जित है, उनमें भी लोगों के प्राण लिये तथा युद्ध द्वारा हत्या की। यह सुनकर उन सैनिकों को बहुत दुख हुआ और उन्होंने विचारा कि हमसे बहुत बड़ी भूल हुई। वे लोग हज़रत मुहम्मद के पास गये और निवेदन किया कि या रसूलिल्लाह इन्ने हज़रमी की हत्या के पश्चात् हमने रजब का चांद देखा किन्तु हमें यह ज्ञात नहीं कि यह हत्या हमने रजब में की या उसके पूर्व महिने में, जिसमें लड़ाई वर्जित नहीं थी। उस समय खुदा ने यह आयत उतारी कही जाती है। आयत उतरने के पश्चात् हज़रत मुहम्मद ने लूट के माल का ५ वां भाग ले लिया और बंदियों से ४०-४०

ओकिया (प्रचलित सिक्के) लेकर मुक्त कर दिया । उनमें से हकम बिन कैसान तो मुसलमान हो गया और उस्मान बिन अब्दुल्ला मक्का चला गया ।

प्रश्न करने वालो से ए मोहम्मद ! उनसे कह दो इस महिने (रजब) में लड़ना गम्भीर अपराध है । अधिकांश मुस्लिम विद्वानों का कथन है कि यह आयत 'क़त्तलुल मुशरेकीना' से निरस्त है । तफ़सीर मज़हरी, पारा २. पृष्ठ ४३३-४३४

पाठक ! इस कहानी का ध्यानपूर्वक मनन करें कि स्वयं हज़रत मोहम्मद ने अब्दुल्ला बिन जहश को आज्ञा पत्र देकर काफिला लूटने को भेजा और यह भी आदेश दिया कि लूट का माल मेरे पास लाना तथा पत्र में यह भी सूचित कर दिया कि दो दिन पश्चात् क़ुरैश का काफिला बतने नख़ला में मिलेगा । क्या हज़रत मोहम्मद सा० को यह ज्ञान नहीं था कि दो दिन पश्चात् रजब (युद्ध वर्जित) का महीना प्रारम्भ हो जायेगा ? ऐसा होते हुए भी हज़रत मोहम्मद सा० ने अब्दुल्ला बिन जहश और उसके साथियों को अपराधी ठहराया और कहा कि मैंने इनको लड़ने का आदेश नहीं दिया था ।

तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ ४३३

एक व्यक्ति का सिर मुन्डाया और हज़रत ने माल लेकर आने को कहा क्या मतलब निकाला ?

तफ़सीर कादरी में लिखा है कि—ऐ मोहम्मद ! हराम के महीनों में लड़ना बुरा काम है। उस समय तक हराम के

महीनों में लड़ना वर्जित था किन्तु पुनः यह आदेश आयते सैफ़ से निरस्त हो गया।

तफ़सीर क़ादरी पृष्ठ ५८

हराम के महिनों में युद्ध वर्जित था, को निम्नलिखित आयत ने निरस्त कर दिया.—

वा कातेलुल मुशरेकीना काफ़तन कमा युकातेलुनकुम काफ़तन वालमु अन्नल्लाहा मअल मुत्तक़ीन।

कुर्आन पारा १०, रकू ५।११

अर्थात्—और मुशरकों से युद्ध करो सामूहिक रूप से जैसा कि वे तुमसे युद्ध करते हैं और जान लो कि अल्लाह आचारशील लोगों के साथ है।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन।

तफ़सीर क़ादरी में इसकी व्याख्या इस प्रकार है कि—लड़ाई करो मुशरिकों से, सब मुशरिकों से। युद्ध वर्जित महीनों में और उनके अतिरिक्त शेष महीनों में, जैसे कि वो सब तुमसे युद्ध करते हैं।

तफ़सीर क़ादरी भाग १ पृष्ठ ३९०

एक आयत क़ुर्आन की सूरत बक़र में आती है, जो निम्नानुसार है :—

'वा फातेलु फी सबीलिल्लाहिल्लाज़ीना योकातेलुनकुम'

अर्थात्—अल्लाह की राह में लड़ो, उनसे जो तुमसे युद्ध करें। इससे अभिप्राय उन लोगों से हैं, जिनसे युद्ध की सम्भावना हो।

तफ़सीर मज़हरी पारा २, पृष्ठ ३६२

कुछ व्याख्याकारों ने कहा है—इस्लाम के आरम्भ में ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद को मुशरिकों की हत्या करने से रोक दिया था। फिर जब हजरत मुहम्मद मदीना की ओर से हिजरत कर गये तो इस उपरोक्त आयत में यह आदेश दे दिया कि जो तुमसे लड़े, तुम भी उनसे लड़ो और उसके पश्चात् पुनः यह आदेश हुआ कि :— **कातिलुल मुशरेकीना काफतन।**

अर्थात्—तुम मुशरिकों को क़त्ल करो, चाहे उनमें से कोई तुमसे लड़े या न लड़े। इस आधार पर यह आयत निरस्त हो गई। **तफ़सीर मज़हरी, पारा २, पृष्ठ ३६३**

आगे क़ुर्आन की निम्न आयत है:—

वा कातेलू हुम हत्ता लातकूनो फ़ित्नतुंव्व यकूनद्दीनो लिल्लाहे,

क़ुर्आन, पारा १०, रकू २४८

अर्थात्—और लड़ो उनसे जब तक कि कोई फ़साद न रह जाये। फ़साद से अभिप्राय शिरक (ख़ुदा के साथ अन्य किसी ईश्वर को मानना) और झगड़ा है। तात्पर्य यह है कि उपासना और भक्ति केवल एक ही ख़ुदा के लिये रह जाये। किसी अन्य की कोई उपासना या भक्ति शेष न रहे। इब्ने उमर का कथन है कि रसूलिल्लाह ने फ़रमाया कि मुझको क़त्ल करने का आदेश दिया गया कि जब तक लोग इस बात की साक्षी दें कि अल्लाह के सिवाय अन्य कोई उपासनीय नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, और नमाज़ पढ़ें तथा ज़कात दें। जब इन आदेशों का पालन करने लगेंगे तो वे लोग अपनी जान और माल को मुझसे सुरक्षित रख सकेंगे और जो उनके जान व

माल में इस्लाम का अधिकार होगा वह उनसे प्राप्त कर लिया जायेगा। उनका हिसाब अल्लाह पर है। इस हदीस को बुखारी व मुस्लिम ने रवायत किया है। अल्लामा बग़वी ने फरमाया है कि इस आयत से यह ज्ञात होता है कि मूर्तिपूजक को इस्लाम (मुसलमानी) स्वीकार करना ही आवश्य होगा। यदि मुसलमान होने से इन्कार करेगा तो क़त्ल कर दिया जायेगा।

तफ़सीर मज़हरी पारा २, पृष्ठ ३६५

हमने ऊपर की पंक्तियों में इस बात को प्रदर्शित किया है कि इस्लाम के प्रारम्भ में युद्ध वर्जित महीनों में लड़ना मना था। यह आदेश बाद की आयत से निरस्त कर दिया गया और फिर यह आदेश था कि जो तुमसे लड़े, उसके लड़ो। फिर जब इस्लाम शक्तिशाली हुवा तो इस आदेश को भी निरस्त कर दिया गया और दूसरी आयत के द्वारा यह आदेश दिया गया कि तुमसे चाहे कोई लड़े या न लड़े फिर भी तुम उनसे तब तक लड़ो, जब तक कि वे मुसलमान न बन जायें। इस सम्बन्ध में अनेक हदीसें ओर आयते प्रस्तुत की जा सकती है।

इसके आगे अल्लामा सियूति ने कुर्आन की वह आयत लिखी है, जिसे हम पूर्व में उद्धृत कर चुके हैं। अर्थात्—जिस स्त्री का पति मर जाये उसे पुनर्विवाह एक वर्ष तक करने की आज्ञा नहीं होगी, किन्तु बाद में उतारी गई आयत में यह आदेश का कि पुनर्विवाह की अवधि ४ माह और १० दिन के पश्चात् कर सकती है। पूर्व की आयत का आदेश जो कि १ वर्ष का था, वह प्रतिबन्ध दूसरी आयत के आदेश से निरस्त कर दिया गया।

अल्लामा सियूती ने कुर्आन की निम्नलिखित आयत लिखी है, जो इस प्रकार है :—

वा इन तुब्दू मा फ़ी अन्फुसेकुम औ तुख़फ़ूहो युहा सिब्कुम बेहिल्लाहो । कुर्आन पारा ३, रकू ४०।८

अर्थात्—यदि प्रगट करो तुम जो कि तुम्हारे दिलों में है या गोपनीय रखो उसको, तो ख़ुदा तुमसे हिसाब लेगा ।

तफ़सीर कादरी, पारा ३, पृष्ठ ६१

उपरोक्त आयत भी निम्नलिखित आयत से निरस्त हो गई । आयत इस प्रकार है—

ला युकल्लेफ़ुल्लाहो नफ़्सन इल्ला वुस्आहा लहा मा कसाबत् वा अलैहा मक्तरबत । कुर्आन, पारा ३, रकू ४०/८

अल्लामा सियूति ने लिखा है कि उपरोक्त आयत के आने से पूर्व की आयत निरस्त हो गई ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७ पृ. ५८

इसकी व्याख्या इस प्रकार है-जब यह उपरोक्त आयत उतरी तो हज़रत मुहम्मद के मित्र इस विषय को देख कर बहुत ही दुःखी और संतप्त हुए तथा एकदम शक्तिहीन हो गये । तब हज़रत अबा बक़र सद्दीक और हज़रत उमर फारूक और मुआज़ बिन जबल व इनके अतिरिक्त और कई बड़े-बड़े अन्सार एकत्रित होकर हज़रत मुहम्मद की सेवा में उपस्थित हुए और

उनसे निवेदन किया—कि या रसूलिल्लाह ! 'कल्लफना मिनल अम्ले सा ला नुतिकुहा बिही' हम इस काम को करने की शक्ति नहीं रखते । यहां तक कि हमें ऐसी सूचना सुनने की भी शक्ति नहीं है । तब हज़रत मुहम्मद ने कहा कि ऐसा कौन सा कर्तव्य है ? उन लोगों ने कहा कि या रसूलिल्लाह दिल को वश में करना हमारी शक्ति और अधिकार से परे है । हमारे मन में कई प्रकार के विचार आते हैं । यदि खुदा उन कारणों से भी हमें पकड़ेगा तो हमारे लिये अत्यधिक कठिनता होगी ।

तफ़सीर कादरी पृष्ठ ६१

इसके आगे चल कर खुदा ने हज़रत मुहम्मद से कहा—मेरी आज्ञाओं को पालन करने में मुसलमान क्या कहते हैं । इस पर हज़रत मुहम्मद ने कहा कि वे कहते हैं कि हमने सुना है और हम आज्ञाओं का पालन करेंगे । इस पर खुदा ने कहा कि मैंने तेरे अनुयाईयों के लिये सुविधाएँ प्रदान कर दीं और वह आयत (ला युकल्ले फुल्लाहो) उतार दी । जिसका अर्थ यह है कि खुदा किसी को कष्ट मे नहीं डालता किन्तु उसकी शक्ति के अनुसार जो कुछ वह भलाई और बुराई करेगा उसका फल उसे प्राप्त होगा (अर्थात् मन में उत्पन्न बातों का फल नहीं मिलेगा)

तफ़सीर कादरी पारा ३, पृष्ठ ६२

इसी तरह से तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि शैखैन (मुस्लिम व बुखारी) ने हज़रत अबू हुरेरा की ओर से लिखा है कि जब यह आयत इनतुब्दु (उपरावत आयत) उतरी तो हज़रत के मित्रों को बहुत कठिन प्रतीत हुई, तो इस पर अल्लाह

ने 'ला युकल्लेफ़ुल्लाहो' आयत उतार कर पहले वाली आयत निरस्त कर दी। तफ़सीर मज़हरी पारा ३, पृ. १६०

वही बात हदीस मुस्लिम न 'बाब तजावबुल्लाहो अन हदीसिन नफ्से वल खवात रे' पृष्ठ २२१ में है। इसी बाब में अबु हुरेरा की हदीस है, हज़रत मुहम्मद ने कहा :—

इन्नल्लाहा तज़ावज़ा लि उम्मति मा हद्दसत बिही अनुफ़ुसहा मालम यतकल्लमू औ यामेलु बिही। मुस्लिम पृ. २२३

खुदा ने क्षमा कर दिया। उनको जो मेरे अनुयायी है, उनके मन में आने वाले विचारों। जब तक कि वे वाणी से व्यक्त न करें और कार्य रूप में परिणित न करें। जलालैन पृष्ठ ४५ पर भी ऐसा ही लिखा है।

इस आयत से पाठकों को भली प्रकार ज्ञात हो जायेगा कि हज़रत मुहम्मद के मित्रों के विचार कैसे थे। पाप की भावना तो मन से उत्पन्न होती है, उसके लिये उन्होंने स्पष्ट स्वीकारा कि हम अपने मन को वश में नहीं कर सकते हैं। जब हज़रत मुहम्मद ने अपने प्रधान और विश्वस्नीय मित्रों के मुंह से यह बात सुनी तो तत्काल ही पहले वाली कठिन कही गई आयत को निरस्त कर एक नवीन आयत बना कर अपने मित्रों को सन्तुष्ट कर दिया। मन को वश में करने हेतु प्रसिद्ध शायर ज़ौक ने कहा है :—

बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा।
निहंगो अजदहाओ-शेरे-नर मारा तो क्या मारा।

इसका स्पष्ट अर्थ है कि मुसलमानों के प्रमुख अगुवा अध्यात्म-वाद से घबराते थे और अपने मन को वश में रखने में असमर्थता प्रकट करते थे।

अल्लामा सियूती ने आगे यह आयत लिखी है:-

'इत्ताकुल्लाहा हक्का तुकातेही,' 'फत्ताकुल्लाह' आयत से निरस्त हो गई, परन्तु अल्लामा ने यह भी लिखा है कि एक वचन इसके निरस्त न होने के सम्बन्ध में भी है।

तफ़सीर इत्तेक़ान प्रकरण ४७, पृ. ५८

पहली आयत इस प्रकार है:—

या अय्यो हल्ला ज़ीना आमनुत्तकुल्लाह हक्का तुकातेही।

कुर्आन, पारा ४, रकू ११/२

अर्थात्—खुदा से डरो, जैसा कि उससे डरना चाहिये। बहुत से मुसलमानों की दृष्टि में यह आयत निरस्त है, क्योंकि खुदा से डरने या उसकी आज्ञाओं के पूर्ण पालन करने की क्षमता किसी भी मनुष्य मे नहीं होती है। इसलिए खुदा ने कृपा कर इस आयत को निरस्त कर दिया और मुसलमानों के ऊपर से उक्त आयत का बोझ उठा लिया।

मज़हरी ने लिखा है—बगवी ने कहा कि व्याख्याकारों का कथन है कि जब यह आयत उतरी तो सहाबा (हज़रत के मित्रों) के लिये अत्यधिक कठिनाई हो गई। उन्होंने हज़रत मुहम्मद से प्रार्थना की, कि खुदा की आज्ञाएं पालन करने में

हम असमर्थ हैं, तो उस पर खुदा ने 'वत्ताकुल्लाहो' आयत उतार कर पहली आयत के आदेश को निरस्त कर दिया।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ५, पृष्ठ ३१७-३१८

जिस आयत से उक्त आयत निरस्त हुई वह निम्नानुसार है:—

फ़त्ताकुल्लाहो मस्ततातुम वस्मऊ वा अतीऊ।

.कुर्आन पारा २८, सूरत तगाबुन, रकू २।१६

अर्थात्—खुदा से डरो और जो कर्म दुख के कारण हैं उनसे बचो, जिस क़दर भी बच सकते हो। यह आयत इत्ताकुल्लाह आयत के आदेश को निरस्त करने वाली है।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, सूरत तगाबन, पृष्ठ ५४८

इस आयत से स्पष्ट है कि मुसलमानों को वह स्वतन्त्रता है कि तुमसे जितना हो सके, उतना करो।

अल्लामा सियूती ने आयत-' वल्लाज़ीना अकदत ' को 'ओलुल अरहामे' आयत से निरस्त कहा है, अर्थात् निरस्त है।

तफ़सीर इत्तक़ान, प्रकरण ४७ पृष्ठ ५६

आयत इस प्रकार है:—

वल्लाज़ीना अकदत ऐमानोकुम फ़आतूहुम नसीबहुम।

.कुर्आन पारा ५. सूरत निसा, रकू ५।२

अर्थात्—जिन लोगों ने परस्पर मित्रता स्थापित करने में वचन-बद्धता की है। उन लोगों को अपने निश्चयानुसार सम्पत्ति का

छठा भाग दे दो। इस आयत के आदेश 'ओलुल अरहामे' के आदेश से निरस्त हो गया।

तफ़सीर कादरी, भाग १, पृष्ठ १६३

इस्लाम के आरम्भ में मृत की सम्पत्ति का छठा भाग जिसके साथ वचनबद्धता की हो, उसे देना पड़ता था; परन्तु यह आज्ञा 'औलुल अरहामे' आयत से निरस्त हो गई।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ५ पृष्ठ ६४

दूसरी आयत (निरस्त करने वाली) इस प्रकार है:—

वा अलुल अरहामे बाजोहुम औला बेबाज़िन फ़ी किताबिल्लाह।

कुर्आन पारा १० सूरत इन्फाल, रकू १०।६

अर्थात्-कुटुम्बी लोग सम्पत्ति प्राप्त करने में अधिक अधिकारी हैं और जो किसी वचनबद्धता के कारण सम्पत्ति में से छठा भाग लेते थे, उस प्रथा को इस आयत ने निरस्त कर दिया।

तफ़सीर कादरी पारा १०, पृष्ठ ७७

आगे अल्लामा सियूतीने निम्न आयत लिखी है:—

वा एजा हज़रल किस्मत ओलुल कुर्बा वल यतामा वल मसाकीनो फ़रज़ोकू हुममिनहो वा कूलू लहुम कौलम्मारूफा।

कुर्आन पारा ४, रकू १।१२

अर्थात्—जिस समय मृत की सम्पत्ति का बटवारा होता था, उस समय ऐसे कुटुम्बी जिनका सम्पत्ति में अधिकार नहीं होता और इनके अतिरिक्त अनाथ और असहाय भिक्षुक आदि को भी

उस सम्पत्ति से आंशिक सम्पत्ति देना चाहिये ताकि उनका मन प्रसन्न हो जाये । यह आदेश मीरासों और वसीयतों की आयत से निरस्त हो गया । तफ़सीर कादरी पारा ४, पृ. १५२

मज़हरी ने लिखा है कि मृत की सम्पत्ति के बटवारे के समय अनधिकारी कुटुम्बी और अनाथ तथा असहाय लोग आजाएँ, जिनका उस सम्पत्ति में कोई अधिकार न हो, उनको भी उस सम्पत्ति में से कुछ सम्पत्ति दान के रूप में दे दी जाये । सईद बिन जुबेर और ज़ोहाक ने कहा कि यह आयत 'युसीकुमुल्लाहो आयत से निरस्त हो गई ।

मज़हरी पारा ४, पृष्ठ ४९६

अल्लामा सियूति ने 'वल्लाती यातीना' आयत को आयत नूर से निरस्त लिखा है ।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ४७, पृष्ठ ५९

आयत इस प्रकार है :—

वल्लाती यातीनल फ़ाहिश्ता मिन्नसायेकुम फसतश्हेदू अलैहिन्ना अरबआ तम्मिनकुम, फइन शहेदू फ़अमसेकूहुन्ना फ़िल बोयूते हत्ता यतवप्फा हुन्नलमौतो औ यज अलल्लाहो लहुन्ना सबीला ।

कुर्आन, पारा ४ रकू ३।१४

अर्थात्—वह स्त्रियां जो काम वासना के कारण से कुकर्म करके आती हैं तुम्हारी विवाहित स्त्रियों में से । तो मुस्लिम न्यायाधीशों को उनके कुकर्म प्रमाणित करने हेतु ४ साक्षी बुलाना

चाहिये । यदि यह चारों साक्षी उन स्त्रियों के व्यभिचार करने की साक्ष्य दें तो उन स्त्रियों पर दृष्टि रखो और अपने मकानों में बन्द कर दो और तब तक बन्द रखो जब तक कि उन्हें मृत्यु न प्राप्त हो या ख़ुदा उनके लिये अन्य कोई मार्ग प्रस्तुत करें। फ़रिश्ते ने हज़रत मुहम्मद से कहा कि ख़ुदा ने उन व्यभिचारी स्त्रियों के लिये मार्ग निकाल दिया, जो इस प्रकार है:—

'असय्येबो बिसय्ये बिर्रज्में बल बिकरो बिल बिकरे मेअता जल्दा तिन वा तग़रबो आमीन' । अर्थात् पति वाली स्त्री व्यभिचार करे तो उसे पत्थरों से मार डालना और यदि अविवाहित स्त्री या पुरूष व्यभिचार करें तो सौ कोड़े मारना और नगर से बाहर निकाल देना ।

तफ़सीर क़ादरी, पारा ४, पृष्ठ १५१

अर्थात्–पहला आदेश इस आदेश से निरस्त हो गया । ऐसा ही तफ़सीर मज़हरी पारा ४ पृष्ठ ५३३–५३४ में लिखा है ।

तफ़सीर क़ादरी ने उपरोक्त आयत को हदीस से निरस्त होना लिखा है, परन्तु अल्लामा सियूती और तफ़सीर जलालैन ने सूरत नूर की आयत से निरस्त होना लिखा है । जलालैन ने कहा है–**फलआयतो अलाहाज़ा मनसुखुतन बेआयतिल जलदे ।**

जलालैन पृष्ठ ७२

अर्थात्–यह उपरोक्त आयत सूरत नूर की जलद की आयत से निरस्त हुई । जलद की आयत इस प्रकार है :—

अज्ज़ानियतो वज्ज़ानी फजलेदु कुल्ला वाहे दिमम्मिनहुमा मेअत्त । जलदत ।

कुर्आन पारा १८, सूरत नूर, रकू १।७

अर्थात्–व्यभिचारी स्त्रियाँ और पुरूष जब अविवाहित हों' तो मारो प्रत्येक को सौ-सौ कोड़े ! इमाम शाफेई, इमाम मालिक और इमाम अहमद ने व्यभिचारियों को कोड़े मारने के साथ नगर से बहिष्कृत कर देना चाहिये, भी कहा है, इमाम आज़म के समीप उपरोक्त आयत इसी आयत से निरस्त है।

तफ़सीर क़ादरी, पारा १८, सूरत नूर पृष्ठ १०७-१०८

जलालैन पृष्ठ २९३ में है कि विवाहिता व्यभिचारी पर पथराव करना चाहिए और अविवाहितों को सौ कोड़े मारना चाहिए।

इसके आगे अल्लामा सियूती ने निम्न आयत लिखी है:-
इनफेरू खेफ़ाफंव वा सिकालम वा जाहेदू बे अमवालेकुम वा अनफुसेकुम् फी सबीलिल्लाहे जालेकुम खैरल्लाकुम इनकुन्तुम तालमून। कुर्आन पारा १०, रकू ६।१२

अर्थात्—निकलो युद्ध के लिये सवार और पैदल, स्वस्थ और रोगी, युवा और वृद्ध धनी और निर्धन, शस्त्रविहीन और शस्त्र-धारी, विवाहिता और अविवाहिता इत्यादि।

इस आयत के उतरने का कारण यह लिखा गया है कि-एक दल जो कि स्त्रियों और सन्तानों की चिन्ता तथा सांसारिक कार्यों की गड़-बड़ी के बहाने से तबूक के युद्ध में नहीं जाना चाहता था। खुदा ने उनका बहाना स्वीकार न किया और आदेश दिया कि युद्ध के लिए सभी प्रकार के लोग निकलो और युद्ध करो। अपने धन से शस्त्र खरीदो। यह बात तुम सभी के लिए युद्ध में न जाने से अच्छी है।

— तफ़सीर क़ादरी, पारा १०, पृष्ठ ३९२-३९३

अल्लामा सियूति ने लिखा है कि इस आयत को आयत उज्र ने निरस्त कर दिया है।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ४७ पृष्ठ ५९

तफ़सीर कादरी ने लिखा है :—

'फसबिर अला मा यकूलूना' पारा १६, सूरत तवाहा, पृष्ठ ४८

अर्थात्— ऐ मोहम्मद ! सन्तोषकरो, जो मुशरिक लोग तुम्हें झूठा कहते हैं और कुर्आन पर व्यंग करते हैं। यह संन्तोष की आयत तलवार की आयत से निरस्त हो गई।

आगे अल्लामा सियूति ने निम्न आयत लिखी है :—

अज्ज़ानी ला यनकेहो इल्ला ज़ानीयतन।

कुर्आन पारा १८, सूरत नूर, रकू १।७

अर्थात्—व्यभिचारी पुरुष, व्यभिचारिणी स्त्री से विवाह करे। इस आयत के उतरने का कारण यह है कि एक धनाढ्य स्त्री किराये के घरों में वेश्यावृति के लिये बैठती थी और दरवाजे पर चिन्हयुक्त झन्डी लगाती थी। वह इस बात की सूचक थी कि जो कोई उससे विवाह करेगा वह उस पुरुष को जीवनयापन हेतु पर्याप्त धन देगी। एक मुसलमान ने लोभ में आकर उससे विवाह कर लिया। उसे लोक निन्दा से बचाने के लिये खुदा ने उपरोक्त आयत उतारी।

तफ़सीर कादरी भाग २, सूरत नूर, पृ. ८८

यह आयत 'वा अनकेहुल अयामा मिनकुम' आयत :—कुर्आन पारा सूरत नूर, रकू ४।१०, तफ़सीर इत्तिकान पृष्ठ ५९ में भी उपरोक्त आयत की इसी आयत से निरस्त लिखा है।

अल्लामा सियूति ने इसके आगे निम्न आयत लिखी है:- **'लेयस ताज़िनोकुम'** इस आयत के निरस्त होने में मतभेद लिखा है। कुछ लोग इस आयत को निरस्त मानते हैं और कुछ लोग इसे निरस्त नहीं मानते हैं। इस कारण हमने भी उसे छोड़ दिया है। **तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४७, पृ. ५९**

आगे अल्लामा सियूति ने कुर्आन की आयत :—

'ला तहिल्लो लकन्ननिसाये कोइन्ना अहलल्ना' लका से निरस्त बताया है। **तफसीर इत्तिकान प्रकरण ४७, पृ. ५९**

आयत इस प्रकार है :—

ला यहिल्लो लकन्नसिओ मिम्बादो वा ला अन तबद्दला बेहिन्ना मिन अज़वाजिव्व लो आजबका हुस्नोहुन्ना इल्ला मा मलकत यमीनोका वा कानल्लाहो अला कुल्लेशंय इर्रकीबा।

कुर्आन, पारा २२, रकू ६।३

हज़रत मोहम्मद को सम्बोधित कर कहा गया है अर्थात् तेरे लिये इन ९ स्त्रियों के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से विवाह करना उचित नहीं है, भले उनका सौंदर्य कितना ही आकर्षक हो। और तेरे लिये इन ९ स्त्रियों की वही स्थिति है जो अन्य मुसलमानों के लिये ४ स्त्रियों की है परन्तु जो स्त्री तेरे अधिकार में आये और युद्ध में तेरी वस्तु हो जाये उसे अपने अधिकार में रख सकता है। **तफ़सीर कादरी पारा २२ पृ. २९९**

(हज़रत मुहम्मद की विवाहित ९ पत्नियों के नाम इस प्रकार हैं :— (१) हज़रत सूदह (२) हफ़सा (३) उम्मे सलमा (४) ज़ैनब (५) उम्मे हबीबह (६) जुवेरिया (७) सफ़ीया (८) मेमूना और (९) आयशा ।)

उपरोक्त आयत निम्नलिखित आयत से निरस्त हो गई ।

या अय्यो हन्नबिय्यो इन्ना अहललना लका अज़्वाजाकल्लति आतैता अजूराहुन्ना वा मा मलकत यमीनोका मिम्माअफ़ा अल्लहो अलैका वा बनाते अम्मेका वा बनाते अम्मातेका वा बनाते खालेका वा बनाते ख़ालातेकल्लाती हाजनाँ मअकाबमर आहतम्मो मोमिनतन इन्वहबत् नफ़सहा लिन्नबिय्ये इन अरादन्नबिय्यो अय्यसतनकहेहा खालिसतल्लका मिन दूनिल मोमेनीन ।

कुर्आन पारा २२, रकू ६।३

अर्थात्-ऐ नबी (हज़रत मुहम्मद) ! तेरे लिये तेरी पत्नियां जिनको तूने उनका मेहर दे दिया है, उनको वैधानिक कर दिया है और इसी प्रकार तेरी लौंडियों को भी जो तेरे अधिकार में आई है, वैधानिक कर दिया है । अर्थात्-जो लौंडियां तुझे लूट में प्राप्त हुई हैं जैसे सफ़ीया और रेहाना, और वैधानिक कर दी है तेरे लिये, तेरे चचा की बेटियां, तेरे फूफियों की बेटियां और तेरे मामा की बेटियां, तेरी मासी की बेटियां और वे स्त्रियां जिन्होंने तेरे साथ हिजरत (वतन छोड़ कर तेरे साथ गई) की है, हलाल हैं ।

उपरोक्त आयत का आदेश हज़रत मुहम्मद के लिये विशेष है । (इससे सम्बन्धित एक उदाहरण है) उम्मेहानी ने

कहा-कि हज़रत मुहम्मद ने मुझे विवाह का सन्देश दिया और मैं उनकी पत्नी न बन सकी, क्योंकि मैं हिजरत में उनके साथ न थी) और इसके अतिरिक्त ऐसी मुसलमान स्त्री भी जो अपने आपको पैग़म्बर (हज़रते मुहम्मद) को समर्पण कर दे। यदि पैग़म्बर उससे विवाह करना चाहे तो कर ले। यह आदेश सब मुसलमानों के लिये न होकर केवल तेरे लिये ही विशेष है।

अर्थात्—हज़रत मुहम्मद की विशेषता में यह बात है कि केवल समर्पण मात्र से ही आप बिना मेहर और बिना निकाह के भी उस स्त्री पर अधिकार कर पत्नी बना सकते हैं। इमाम आज़म का कथन है कि हिबा (समर्पण) के शब्द से ही निकाह बन्ध जाता है किन्तु मेहर आवश्यक है। इस बात में मुसलमानों का मतभेद है कि यह समर्पण की प्रक्रिया किसी पत्नी के साथ हुई। प्रसिद्ध यह है कि यह प्रक्रिया हज़रत ज़ैनब बिन्ते हजीमा के साथ हुई अथवा हज़रत खौला बिन्ते हकीम अथवा हज़रत मेमूना बिन्ते हारस या हज़रत उम्मे शरीक बिन्ते जावर आदि के साथ हुई।

तिबयान कबीर, में कहा है कि हज़रत उम्मे सहल से, जो बनीअसद के परिवार में से थी और यदि हिबा (समर्पण) करने वाली ज़ैनब थी तो उनका आत्म समर्पण रमज़ान में तीसरी हिजरी में हुआ और ८ महीने हज़रत मुहम्मद की पत्नी के रूप में रहकर मृत्यु को प्राप्त हो गई।

किन्तु इतिहासकार कहते हैं कि यह आत्मसमर्पण उम्मे शरीक ने भी किया। वास्तव में हमने जो अनिवार्य किया है उसे जाना है। मुसलमानों को ४ पत्नीयां रखना और उनके अतिरिक्त लौंडियों को रखना भी है।

ऐ हमारे मित्र (हज़रत मोहम्मद) ! हमने तुम पर आत्मसमर्पण करने वाली स्त्रियों को इसलिए वैधानिक ठहराया ताकि तुम्हें कठिनाई न हो।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ २६७-२६८

इस आयत से उपरोक्त आयत निरस्त हो गई। उस आयत में यह कहा गया था कि वर्तमान् ९ पत्नियों के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री को पत्नी नहीं बना सकते; किन्तु इस आयत में यह अधिकार दिया गया है कि यदि कोई स्त्री तुझे आत्मसमर्पण कर दे तो उसे तू अपनी पत्नी बना सकता है। अतः इस आयत ने उक्त आयत को निरस्त कर दिया।

हज़रत मुहम्मद के अधिकार सम्बन्धी आवश्यक आयतः—

तुर्जी मनतशाओ मिनहुन्ना वा तोवी एलैका मनतशाओ वा मनिब्तगैता मिम्मन अज़लता फला जुनाहा अलैका ज़ालेका अदना अन तकर्रा आ युनुहुन्ना वा ला यहज़न्ना वा यर्ज़ौना बेमा आतेताहुन्ना कुल्लोहुन्ना।

कुर्आन पारा २२, रकू ६।३

अर्थात्—हज़रत मुहम्मद को कहा गया है कि अपनी पत्नियों में से जिसे तू चाहे उसे पीछे रख और जिसे तू चाहे अपने साथ रख। वसीत में है कि इस आयत के कारण पत्नियों के सहवास की पद्धति समाप्त हो गई। ज़ादल मसीर में लिखा है कि हज़रत सूदह के अतिरिक्त हज़रत मुहम्मद ने सभी पत्नियों के साथ सहवास हेतु क्रमबद्धता की परिपाटी को बनाये रखा। हज़रत सूदह को इस परिपाटी में इसलिए सम्मिलित नहीं किया गया

कि उसने अपना सहवास क्रम के समय को आयशा को दे दिया था। साहबे कशाफ ने कहा है कि हज़रत मुहम्मद ने अपनी ५ पत्नियों को अलग रखा, हज़रत सूदह, सफीय्यह जुवैरिया, मेमूना और उम्मे हबीबा और न इनके सहवास क्रम को बनाये रखा। सब चाहते, जिस प्रकार चाहते अपनी ४ पत्नियों को अपने साथ रखते जिनमें हज़रत आयशा, हज़रत हफ़सह, उम्मे सलमा और ज़ैनब।

ख़ुदा ने कहा कि ऐ मुहम्मद ! जिसको तुम चाहो बुलाओ और मन प्रसन्न करो और उनमें से जिनसे एक और रहते हो, जिन्हें पृथक रखते हो तो तुम पर इस कारण कोई आरोप नहीं है। इत्यादि.... ....

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ २६८

इसी आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर हक्कानी ने लिखा है कि इस आयत के अर्थों के सम्बन्ध में मुस्लिम विद्वानों में मतभेद है। अधिक विद्वानों का कथन है कि यह आयत रात्रि सहवास के सम्बन्ध में है। इसमें आपको (हज़रत मुहम्मद) स्वतन्त्रता है कि जिस पत्नी को चाहो उसके साथ शयन करो वा न करो। यह एक विशेष आदेश हज़रत मुहम्मद के लिये था। रात्रि सहवास में हज़रत मुहम्मद के लिये यह आवश्यक न था कि वे समस्त पत्नियों के साथ रात्रि सहवास हेतु समान व्यवहार करें।

हज़रत आयशा का कथन है कि मैं उन स्त्रियों से घृणा रखती थी जो कि स्वयं आत्मसमर्पण कर देती थी किन्तु जब यह 'तुरजी मन्तशओ' आयत उतरी तो मैंने कह दिया कि या हज़रत (मुहम्मद) अल्ला तेरी प्रतिष्ठा रखने में बहुत शीघ्रता करता है।

इब्ने जरीर कहते हैं कि जब हजरत मुहम्मद की पत्नीयों ने हजरत साहब को भोजन-वस्त्र के सम्बन्ध में तंग करना आरम्भ किया तो वे अप्रसन्न होकर १ माह तक सब पत्नीयों से पृथक् हो गये। तब यह उपरोक्त आयत हजरत मुहम्मद को पूर्ण स्वतन्त्रता हेतु उतारी। तब आपने सबसे कह दिया कि यदि परलोक चाहती हो तो में जिस स्थिति में रखूँ उसे स्वीकार करो और तुम्हारा अभिप्राय सन्सार से हो तो आओ मैं तुमको तलाक (सम्बन्ध विच्छेद) दे दूँ। सब पत्नियों ने परलोक को स्वीकार किया।

अल्लामा शाबी आदि कहते हैं कि यह आयत तलाक सम्बन्धी है, और हसन का कथन है कि उक्त आयत विवाह सम्बन्धी है। जिससे आप चाहे विवाह करें। आपको विवाह की पूर्ण स्वतन्त्रता है। इस आधार पर मुस्लिम विद्वान् कहते हैं कि यह आयत इसके पूर्व लिखी आयत को निरस्त करने वाली है। पूर्व में लिखी गई आयत 'ला योहिल्लो लका' वाली है।.... ... इसी आधार पर कुछ मुस्लिम विद्वान् इस आयत को हदीस (सुन्नत) से निरस्त कहते हैं।

तफ़सीर हक़्क़ानी. पारा २२, पृष्ठ २१ से २३

हजरत मोहम्मद की जो पत्नीयां रूष्ट हो गई थीं। जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि हजरत मुहम्मद को इस बात की स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है कि वे चाहे जिस पत्नी को साथ रखें या चाहे जिसे पृथक रखें। यह सब खुदा का आदेश है।

तफसीर कादरी पृष्ठ २६६

इस आयत के निरस्त होने के सम्बन्ध में एक विशेष रहस्य यह है कि जो निरस्त करने वाली आयत है वह पहले है और जो

आयत निरस्त की गई है वह बाद में है। सिराजे मुनीर में लिखा है कि— 'आह ललना लका' आयत के सम्बन्ध में यह कहा जाये कि जैसे फाइनकीला हाजेहिल आयता मुतकद्दमतुन वा शरतुननासिखो अय्यकूना मुतअख्खेरून, इत्यादि।

तफ़सीर सिराजे मुनीर, भाग ३, पारा २२, पृष्ठ २६४

अर्थात्—यदि कहा जाये कि निरस्त करने वाली आयत पहले और निरस्त होने वाली आयत बाद में है तो इसका उत्तर यह है कि वह उतरने में पीछे है और पढ़ने में पहिले है। (सिराजे मुनीर के व्याख्याकार ने बिना किसी आधार के अपनी ओर से मनगढ़न्त व्याख्या कर दी)

तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ३५६ में हैं—'हाजेहिल आयतो मनसूखतुन बिल आयतिस्साबिकते'—अर्थात् यह आयत पहली आयत से निरस्त हो गई। अल्लामा सियूति ने भी ऐसा ही कहा है, जिसे हम आगे उद्धृत करेंगे।

अल्लामा सियूति ने आगे निम्न आयत लिखी है :—
'लैसा अलल लामा हरजुन' कुर्आन पारा १८, सूरत नूर, रकू ९।१५ को 'लैसा अलस्सोफाए' आयत ने निरस्त कर दिया है।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४७, पृ. ५९

इसके आगे आयत 'इनफिरू फ़ी सबीलिल्लाहे' कुर्आन पारा १० सूरत तोबा, की आयत 'मा कानल मोमिनुना लयनफरू काफ़तन' ने निरस्त कर दिया।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण, ४७ पृष्ठ ५९

अल्लामा सियूति ने लिखा है-'वा ऐजा नाजेतोमुर्रसुलो फकद्दमू' आयत को उससे पीछे वाली आयत ने निरस्त कर दिया। तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४७ पृ.५९

आयत इस प्रकार है :—

या अय्योहल्ला जीना आमनू इज़ा नाजेतोमुर्रसूले फ़कद्दमू बैना यदै नजवाकुम सदकत ।

कुर्आन पारा २८, सूरत मुजादला रकू २।२

इस आयत के सम्बन्ध में कहा गया है कि लोग हज़रत मुहम्मद को अत्यधिक अस्मजस में डालते थे और कई प्रकार के प्रश्नोत्तर करते, जिनसे आप तंग आ गये तो यह उपरोक्त आयत उतरी। इस आयत का अर्थ यह है-ऐ मुसलमानों ! जब कोई विचार विमर्श हज़रत मुहम्मद से करना चाहो तो उससे पहले कुछ भेंट करो, यह भेंट देना बहुत पवित्र है। यदि भेंट के लिये कोई वस्तु न हो तो खुदा क्षमा करने वाला है, उसको जो पाप या अपराध करें : हदीस में है कि यह भेंट देने का नियम १० दिन तक रहा। हज़रत अली के पास सोने का एक दीनार था, आपने उसे भुना कर १० दिर्म प्राप्त किये और एक दिर्म प्रतिदिन हज़रत मोहम्मद को भेंट कर उनसे विचार विमर्श करते रहे (यह क्रम १० दिन तक चला) और हज़रत अली के अतिरिक्त और किसी अन्य ने इस आदेश का पालन न किया।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ५१९

तब उपरोक्त आयत को निरस्त करने हेतु निम्न आयत उतरी:-
आ अशफक्तुम अन तुकद्दमू बैना यदै नजवाकुम सदकात।

कुर्आन पारा २८ सूरत मुजादिला, रकू २।२

अर्थात्—क्या तुम भयभीत हुए और भेंट देने में कठिनाई आई और जब तुमने भेंट न दी तो फिर अल्लाह तुम पर तौबा के साथ अर्थात् तुम्हें क्षमा किया इत्यादि ।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ ५१९

(दुःख की बात है कि खुदा का यह आदेश १० दिन से अधिक न चल सका और खुदा को अपना आदेश स्वयं ही वापिस लेना पड़ा)

इसके आगे अल्लामा सियूति ने निम्न आयत लिखी है:—

'फातुल्ला ज़ीन ज़हबत् अज़्वाजो हुम्मिल्ला मा अनफ़क़ू'

कुर्आन पारा २८, सूरत मुम्तहिन्नाह रकू २।८

अर्थात्—पस दो उन लोगों को जिनकी औरतें काफ़िरों के पास चली गई हैं और उन लोगों को उन काफ़िर पतियों से औरतों का मेंहर न मिला हो। इब्ने अब्बास ने लिखा है कि ६ मुसलमान औरतें काफ़िरों के पास चली गई (काफिरों द्वारा मेहर न देने पर) तो हज़रत मुहम्मद ने उनके मेहर उनके मुसलमान पतियों को लूट के माल में से दिये यह आदेश उस समय तक था जब मुसलमानों की काफ़िरों के साथ सन्धि रही थी और उसके पश्चात् यह आदेश निरस्त हो गया।

तफ़सीर कादरी पारा २८ पृष्ठ ५६४

इस सम्बन्ध में तब तक स्पष्ट ज्ञान नहीं प्राप्त होगा जब तक कि निम्न कथा को आप न पढ़ लें । कथा इस प्रकार है:—

हदीबा में जब मुसलमानों और कुरैश (काफ़िरों) में सन्धि हुई तो सन्धि के अनुबन्ध मे एक यह बात भी थी कि जो

मुसलमान मक्का से मदीना में आये, हज़रत मुहम्मद उन्हें काफिरों में भेज दें और यदि कोई मुसलमान मदीना से मक्का में जाये तो कुरैश उसे नहीं लौटायेंगे। अभी हज़रत मुहम्मद हदीबा में ही थे कि मुसलमानों का एक दल मक्का से भाग कर उनके पास आ गया। उस दल में एक स्त्री सबीआह असल-मिया भी थी। उसके पीछे पीछे उसका पति मुसाफिर मख़ज़ूमी भी पहुंचा और उसने यह बात कही कि संधि में एक यह शर्त भी थी कि हममें से जो कोई तुममें आ जाये तुम उसे वापिस कर दोगे। इस पर हज़रत जिब्रील उतरे और यह बात कही कि या रसूलिल्लाह ! संधि की वह शर्त तो केवल पुरुषों के लिये है, वह स्त्रियों पर लागू करना उचित नहीं। क्योंकि मुसलमान औरतों को मुशरिक के हवाले करना उचित नहीं।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पारा २८, पृष्ठ ५३३

तफ़सीर इत्तिक़ान में लिखा है कि उपरोक्त आयत, तलवार की आयत से निरस्त है और दूसरा कथन यह है कि यह लूट की आयत से निरस्त है। तीसरा कथन यह भी है कि यह निरस्त नहीं है।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७, पृष्ठ ५९–६०

आगे अल्लामा सियूती ने रात्रि की नमाज़ के सम्बन्ध में लिखते हुए निम्न आयत उद्धृत की है।

या अय्योहल मुज्ज़म्मिलो कोमिल्लैला इल्ला कलिलान्नस्फ़ह अविनकुस मिन्हो कलीला।

.कुर्आन पारा २९, सूरत मुज्ज़म्मिल

अर्थात्—ऐ वस्त्र ओढ़ने वाले (सम्बोधन हज़रत मोहम्मद को) नमाज़ पढ़ आधी रात भर किन्तु कुछ देर तक, आधी रात या उससे कुछ कम देर तक या आधे से ज्यादा जितना चाहो कर लो। यह एक चौथाई रात से कुछ अधिक समय हुआ। इस आयत के आदेश से हज़रत मुहम्मद और उनके अनुयाईयों के लिये पहले रात को नमाज़ अनिवार्य थीं, किन्तु बाद में उक्त आदेश निरस्त कर दिया गया। बग़वी का कथन है कि रसूलिल्लाह के साथ उनके मित्र रात की नमाज़ पढ़ते थे किन्तु किसी को यह ज्ञात न होता था कि तिहाई रात और आधी रात तथा दो तिहाई रात कब हुई। इस प्रकार सारी रात्रि नमाज़में व्यतीत होती थी, इस शंका में कि कहीं अनिवार्य अवधि में भूल न हो जाये। यह रात्रि की नमाज़ हज़रत के मित्रों को अत्यधिक कष्ट प्रद होती थी। यहाँ तक कि उनके पाँवों में सूजन आ गई थी। अतः ख़ुदा ने कृपा कर अपने आदेश में कमी कर दी और आयत 'फकरू मा तयस्सरा मिन्हो' से इस उक्त आदेश को निरस्त कर दिया। पढ़ जो आसान हो उससे।

तफ़सीर मज़हरी, सूरत मुज्जम्मिल, पारा २९, पृष्ठ १५३

इतनी आयतों को लिख कर अल्लामा सियूती ने अपनी सम्मति के अनुसार लिखा कि यही २० या २१ आयतें क़ुर्आन में निरस्त हुई हैं, और इसके आगे एक आयत और लिखी जो इस प्रकार है:—

'फऐनमा तवल्लु फसम्मा वज्हुल्ला'

अर्थात्—जिस ओर तुम अपना मुँह करो उसी ओर ख़ुदा का मुँह है यह उपरोक्त आयत क़ुर्आन की निम्न आयत 'फ़वल्ले

वज्हका शतरल मस्जदिल हराम' अर्थात्–जहाँ भी तुम हो, अपने मुंह को मक्का की ओर फेर लो (याने नमाज़ मक्का की ओर मुंह करके पढ़ा करो) इस आयत से उपरोक्त आयत निरस्त हो गई। यह प्रसिद्ध आयतें हैं, हम पहले लिख चुके हैं।

उपरोक्त जितनी भी निरस्त आयतें उद्धृत की गई हैं, उनमें से भी अल्लामा ने दो आयतें निकाल कर कुल २० आयतें निरस्त लिखी है, जिन्हें एक कविता में लिख दिया गया हैं।

यहां पर अल्लामा सियूति ने २० या २१ आयतें निरस्त लिखी है, परन्तु कुरान के सम्बन्ध में अल्लामा सियूति ने २ पुस्तकें और भी लिखी हैं जिनमें से एक का नाम 'तफ्सीरूल कुर्आनुल अज़ीम' है और इसी पुस्तक के अन्तर्गत एक दूसरी पुस्तक जिसका नाम लबाबन नकूल फी असबाबिन् नजूल' है। इसमें एक भाग 'मन्सूख' (निरस्त) का भी लिखा है। जिनमें केवल सूरत बकर में ही २६ आयतों का निरस्त होना लिखा है और सूरत निसा में २४ आयतों को निरस्त लिखा है। इस प्रकार इन दोनों सूरतों में ही ५० आयतों का निरस्त होना उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त शेष सम्पूर्ण कुर्आन में भी बहुत सी आयतों का निरस्त होना लिखा है। हम उन समस्त प्रमाणों को इस निरस्त प्रकरण के अन्त में उपसंहार के रूप में लिखेंगे ताकि यह बात स्पष्ट हो जाये कि सम्पूर्ण कुर्आन में कितनी आयतें निरस्त हैं, परन्तु तफ़सीर इत्तिकान में ही आगे चल कर इसी प्रकरण में निरस्त आयतों के संबंध में अन्य विद्वानों की सम्मति लिखी है, जिसका अल्लामा सियूति ने विरोध नहीं किया है। उन निरस्त आयतों के लिखने के पूर्व इस विषय को इस प्रकार आरंभ किया है। आप (अल्लामा) लिखते हैं कि

यदि तुम यह प्रश्न करो कि जिन आयतों के आदेशों को निरस्त कर दिया है तो उनके पढ़ने की आज्ञा क्यों प्रचलित है ? तो इसका उत्तर दो प्रकार से दिया जा सकता है । प्रथम तो यह कि कुर्आन खुदा की वाणी है जिसके पढ़ने मात्र से ही पुण्य की प्राप्ति होती है और दूसरा यह कि आयत पढ़ने वालों को यह ज्ञात हो जाये कि खुदा ने कृपा कर हमें कठिन आदेशों से मुक्त कर दिया है ।

इस्लाम के आरंभ में पहले मज़हबों की आज्ञाएँ भी प्रचलित थीं, जैसे यरूशलम की ओर मुँह कर के नमाज़ पढ़ना और माहर्रम के १० रोज़े रखना । यह दोनों आज्ञाएँ निरस्त हो गई ।

आगे अल्लामा ने कहा है कि कुर्आन में कोई निरस्त करने वाली ऐसी आयत नहीं कि जिसको उसने निरस्त किया हो वह पहले हो किन्तु दो आयतें इसके अपवाद स्वरूप हैं । एक सूरत बकर में 'इद्दत' (अवधि) की आयत और दूसरी आयत 'लातहिल्लो लकुम निसाओ' है, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है ।

कुछ विद्वानों ने एक तीसरा उदाहरण भी प्रस्तुत किया है जो कि 'सूरत हशर' का है । सूरत हशर की आयत को 'सूरत अनफ़ाल' की आयत 'वालम इन्नामा गनिमतुममिन शैईन' के द्वारा निरस्त माना है । कुछ अन्य लोगों ने 'खुजिल अफ़वे' अर्थात् उन लोगों की सम्पत्ति की बढ़ौत्तरी ले लो । यहा चौथा उदाहरण निरस्त करने वाली आयत के पहले आने के संबंध मे है । तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ४७, पृष्ठ ६१

उपरोक्त प्रकरण के सम्बन्ध में हमारा यह कथन है कि यदि पुण्य प्राप्ति के लिये निरस्त आयतों को .कुर्आन में रखा गया है तो 'अश्शैखो वश्शैखतो' आदि कई आयतों को .कुर्आन से क्यों निकाला गया । क्या उनके पठन-पाठन से पुण्य की प्राप्ति नहीं होती थी । इत्यादि

इसके आगे अल्लामा सियूती ने इब्नुल अज़ाली के कथन को उद्धृत किया है, कि – .कुर्आन में जितने स्थानों पर काफ़िरों से सहन करने और उनकी ओर से मुँह फेरने की और उनसे मौन रहने की शिक्षा दी है, वह सब आयतों के आदेश 'तलवार' की आयत से निरस्त हो गये हैं । इस तलवार की आयत ने १२४ आयतों को कुर्आन में निरस्त किया है और फिर उसके अन्तिम भाग ने प्रथम भाग को भी निरस्त कर दिया है । सैफ़ की आयत इस प्रकार है:—

फएज़न सलख़ल अशहोरूल हुरोमो फक्तोलुल मुशरेकीना हेसो वजत्तुमूहुम वा खुज़ूहुम वक्ओदू लहुम कुल्ला मर्सदिन फ़इन ताबू वा अक़ामुस्सलाता वा आ तुज्जकाता फख़ल्लु सबीलहुम ।

.कुर्आन, पारा १०, रकू १।७ सूरत तोबा

अर्थात्—जब युद्धबन्दी के मास समाप्त हो जायें । पस मारो मुशरकों को, जहां पाओ उनको, पकड़ो उनको और घेरो उनकी और बैठो उनके लिये हर गुप्त स्थान पस, पर यदि वे पश्चाताप करें और नमाज़ को स्वीकार करें और ज़कात दिया करें तो उनका मार्ग छोड़ दो (अर्थात् वे इस्लाम स्वीकार कर लें' तो उन्हें छोड़ दो अन्यथा घेरे रहो)

अनुवाद शाह रफ़ीऊद्दीन, प्रकाशित मलिक दीनमोहम्मद द्वारा

अल्लामा सियूती के इस उद्धरण से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि इस उपरोक्त आयत में क़ुर्आन की १२४ आयतों को निरस्त किया है।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७ पृष्ठ ६२

आगे चल कर अल्लामा सियूती ने लिखा है कि इब्ने अरबी ने निरस्त संबन्धी एक विचित्र आयत प्रस्तुत की है। आयत 'खुजिल अफ़्वे' (इसे हम पूर्व में लिख चुके हैं) है। इसका प्रथम भाग और अंतिम भाग दोनों निरस्त हैं, परन्तु मध्यवर्गीय भाग 'वामूर बिल मारूफे' यह निरस्त नहीं है। इसके आगे एक और आयत लिखी है, जिसका प्रथम भाग निरस्त है और अंतिम भाग निरस्त करने वाला है। क़ुर्आन में ऐसा उदाहरण अन्यत्र कहीं नहीं हैं यह आयत इस प्रकार है:—

अलैकुम अनफ़ुसकुम ला यज़र्रोकुम्मन ज़ल्ला ऐज़ह तवतुन इलल्लाहे। क़ुर्आन, पारा ७, रकू १४४

अर्थात्–जब कि तुमने भले कामों की आज्ञा देने और बुरी बातों से मना करने के साथ सन्मार्ग पाया तो फिर किसी और व्यक्ति का पथभ्रष्ट होना तुम्हारे लिये हानिदायक नहीं हो सकता। आयत के अन्तिम भाग ने इस प्रथम भाग 'अलैकुम अनफ़ुसकुम' को निरस्त कर दिया।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ४७, पृष्ठ ६२

उपरोक्त आयत भी एक विचित्रता लिये हुए है कि इसी एक आयत में ही आयत का प्रारम्भ, आयत के अन्त से निरष्त हो जाता है।

इसके आगे अल्लामा सियूती ने सईदी का कथन इस प्रकार लिखा है:—

कुलमा कन्तो बिदअम्मिनरूसुले वा मा अदरी मा युफ़्अ लो बी वा ला बिकुम इन अत्तबेओ इल्ला मा यूहा इलय्या वा मा अना इल्ला नज़ीरूम्मुबीन।

.कुर्आन, पारा २६, सूरत अहक़ाक़, रकू १।१

अर्थात्—ऐ मुहम्मद ! कह दो कि मैं पैग़म्बरों में से नया नहीं आया मुझसे पूर्व भी पैग़म्बर आ चुके हैं। तुम मेरी पैग़म्बरी से क्यों इन्कार करते हो ? और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जायेगा.... .....और मैं यह भी नहीं जानता कि तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा। धरती में समा दिये जाओगे या आंधी और भूँचाल से समाप्त किये जाओगे या क़त्ल और क़ैद किये जाओगे ? मुआलिम में है कि इस आयत के उतरने के पश्चात् मुशरिक प्रसन्न हुए और बोले कि हमारा और मुहम्मद का काम खुदा के समीप एक जैसा है जैसे हम अपना अन्तिम परिणाम नहीं जानते वैसे वह भी नहीं जानता। यदि वह खुदा की ओर से पैग़म्बर होता तो .खुदा अवश्य ही उसे उसके अंतिम परिणाम की जानकारी देता। इस आयत को निरस्त करने हेतु निम्न आयत उतरी:—

'लियग़फिरो लकल्लाहो' तफसीर क़ादरी, पारा २६, पृष्ठ ४२६, ४२७ उक्त पूरी आयत इस प्रकार है:—

लियग़फिरा लकल्लाहो मा तकद्दमा मिन ज़म्बेका वा मा तअख़्ख़रा वा युतिम्मा मेमतहु अलैका वा यहदे यका सिरा तम् मुस्तकीमा

.कुर्आन पारा २६, रकू १/९ सूरत फतह

अर्थात्—(ख़ुदा) तेरे लिये क्षमा करे जो कुछ तेरे अपराधों से पूर्व हुआ था और जो कुछ पश्चात् हुआ। क्योंकि पूरी करे तुझ पर अपनी नैमत (उत्तम पदार्थ) और तुझे सन्मार्ग दिखाए।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन

उपरोक्त प्रथम आयत के सम्बन्ध में सईदी ने लिखा है कि १३ वर्षों तक यह आयत प्रभावशील रही और उसके पश्चात् सूरत फ़तह की यह उपरोक्त दूसरी आयत उतरी। परिणाम-स्वरूप प्रथम आयत निरस्त हो गई।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७ पृष्ठ ६२

जलालैन ने भी पृष्ठ ४१६ पर इसी उपरोक्त आयत से उक्त आयत का निरस्त होना लिखा है।

इसके आगे अल्लामा सियूती ने शैदला की 'किताबुल बुरहान' के आधार पर लिखा है कि निरस्त करने वाली आयत को भी निरस्त करना उचित है। इसका उदाहरण है—लकुम दीनोकुम वलेयादीन। इस आयत को क़ुर्आन की आयत 'उकतोलुल मुशरेकीना' ने निरस्त कर दिया और फिर इस आयत को भी क़ुर्आन की इस आयत 'हत्ता योतुल जिज़यता' ने निरस्त कर दिया।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७ पृष्ठ ६२

इसी प्रकार का एक और अन्य दूसरा उदाहरण लिखा है—'इनफ़ेरू ख़ेफ़ाफ़न वासेकालन' ने आयत 'कफ्फा' को निरस्त

कर दिया और यही आयत स्वयम् आयत उज़्र के साथ निरस्त हो गई ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७, पृष्ठ ६३

(उपरोक्त आयत को हम पूर्व में लिख चुके हैं)

इसके आगे अल्लामा ने अबू उबैद के आधार पर लिखा है और अबू उबैद ने हसन और अबी मेसरा से वर्णन किया है कि सूरत मायदा में कोई आयत निरस्त नहीं हैं, किन्तु इसका विरोध, मुस्तदरिक के वर्णन से जो उसने इब्ने अब्बास के कथन को उद्धृत किया है आता है ।
आयत इस प्रकार है:—

'फ़हकुम बैनहम औ आरिज़ मिनहम' इस आयत को अनेहकुम मिनहम बिमा अन्ज़ल्लल्लाहो' ने निरस्त कर दिया है । (इन आयतों को भी हम पूर्व में लिख चुके हैं)

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७, पृष्ठ ६३

इसके आगे सूरत ग़ाफिर की एक आयत लिखी है, जो इस प्रकार हैं–'वल मलायेकतो योसब्बेहूना बेहम्दे रब्बेहिम' इत्यादि । यह आयत 'लयसतग़फिरोना लेमन फिलअरज़ो' आयत को निरस्त कर देती है ।

इफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ४७, पृष्ठ ६३

अल्लामा सियूती ने क़ुर्आन की आयतों के निरस्त होने के सम्बन्ध में यहीं तक लिख कर प्रकरण समाप्त कर दिया परन्तु हम इस विषय निरस्त प्रकरण को क़ुर्आन के अन्य व्या-

व्याकारों के माध्यम से आगे लिख रहे हैं और यह भी प्रयास करेंगे कि जिन १२४ आयतों को आयतें सैफ़ ने निरस्त कर दिया है, उनकी खोज कर जहां तक सम्भव हो, उन्हें भी यहाँ प्रतिपादित किया जाये, और अल्लामा सियूती ने अपनी पुस्तक 'लबाबुन नक़ूल' में जिन निरस्त आयतों की सूची लिखी है, उसे हम अंत में लिखेंगे (जैसा कि हम पूर्व में लिख चुके हैं)

अन्य व्याख्याकारों के आधार पर निरस्त आयतें

जहाद के सम्बन्ध में जब मुसलमानों से कहा जाता है कि क़ुर्आन में अन्य मज़हबों के लिये मारने-काटनें का विस्तृत वर्णन है तो यह उत्तर देते हैं कि क़ुर्आन में ऐसा नहीं है अपितु कुर्आन तो उनसे लड़ने की आज्ञा देता हैं, जो मुसलमानों से लड़ते हैं। इस सम्बन्ध में निम्न आयत बताते हैं। आयत इस प्रकार है:—

वा कातेलु फी सबीलिल्ला हिल्लाज़ीना योकातेलूनाकुम वा ला तातदू इनल्लाह ला योहिब्बुल मौतदीन। इत्यादि।

क़ुर्आन, पारा २, रकू २४/८

अर्थात्—युद्ध करो ख़ुदा के रास्ते में उन लोगों से जो तुमसे लड़ते हैं और सीमा का उल्लघन न करो, अर्थात् जब तक वे युद्ध आरम्भ न करें तब तक तुम भी युद्ध मत करो।

क़ादरी पृष्ठ—४९ पारा २

इस आयत के सम्बन्ध में हम पहिले भी लिख चुके हैं कि यह आयत निरस्त हो चुकी है। लबाबन नक़ूल में भी इस आयत को निरस्त ही लिखा है। तफ़सीर मज़हरी ने इस आयत के सम्बन्ध

में लिखा है कि इस्लाम के आरम्भ में खदा ने अपने रसूल को मुशरिकों को कत्ल करने से रोक दिया था किन्तु जब रसूल मदीना चले गये थे तो उपरोक्त आयत में यह आदेश दे दिया कि जो तुमसे युद्ध करे तुम उनसे युद्ध करो। इसके पश्चात् यह आज्ञा हुई कि 'उकतुलुल मुशरेकीना काफतन' अर्थात् समस्त मुशरिकों (काफ़िरों) को कत्ल करो, चाहे उनमें से कोई तुमसे युद्ध करे या न करे। इस आयत से उपरोक्त आयत निरस्त है। इस सम्बन्ध में एक और आयत 'वकतोलुहुम हैसो सकिफ्तोमुहुम' अर्थात्–मार डालो उनको तुम जहां कहीं पाओ। मकातलबिन हवान का कथन है कि यह आयत 'ला तुकातेलूहुम' से निरस्त है। तफ़सीर मजहरी, पारा २ पृष्ठ ३६३

मफ़सीर मजहरी का यह भी कथन है कि कुछ व्याख्याकारों की सम्मत्ति है कि मक्का में कत्ल (युद्ध) करना आरम्भ में उचित नहीं था। फिर यह आयत 'कातेलुहुम हत्ता लातकूनो फितनातुन' अर्थात्–(लड़ो उन लोगों से यहां तक कि यह फ़साद शेष न रहे) से उक्त आदेश निरस्त हो गया। मकातल ने कहा कि उस आदेश को सूरत बराअत की आयते सैफ़ ने निरस्त कर दिया।

तफसीर मजहरी, पारा २ पृष्ठ ३६४

इसी आयत की व्याख्या करते हुए फसाद शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है—और युद्ध करो उनसे यहां तक कि फसाद बाकी न रहे (अर्थात्—एक खुदा का तरीका रह जाये) फितना से अभिप्राय शिरक-और फ़साद है और युक्नुद्दीनों से एक खुदा की आज्ञाओं का पालन करना तथा उसी की उपासना रह जाय इब्ने उमर ने कहा है कि रसूलिल्लाह (हजरत मुहम्मद) ने

कहा कि मुझको युद्ध करने का आदेश दिया गया है जब तक के लिये कि लोग इस बात की साक्षी दें कि अल्लाह के अलावा और कोई उपास्यनीय नहीं और मुहम्मद खुदा के सच्चे रसूल है तथा नमाज पढ़ें और ज़कात दें। जब लोगों उक्त आज्ञाओं के पालन कर लेंगे तो वे अपनी जान व माल को मुझसे बचा लेंगे किन्तु उनके जान व माल में यदि कोई इस्लाम का अधिकार होगा तो उसे प्राप्त किया जायेगा और उनका हिसाब अल्लाह पर है। इस हदीस को बुखारी व मुस्लिम ने बयान किया है। अल्लामा बग़वी का कथन है कि मूर्तिपूजकों से इस्लाम ही स्वीकार कराया जाये। यदि इस्लाम ग्रहण करने इन्कार करें तो उन्हें कत्ल कर दिया जाए।

तफ़सीर मजहरी पारा २, पृष्ठ ३६५

हमारे कथनानुसार तात्पर्य यह है कि जहाद संबन्धी आदेश 'जो तुमसे लड़े तुम उनसे लड़ो' इस्लाम के आरंभ में था; किन्तु बाद में यह आयत निरस्त हो गई और यह आदेश कोई तुमसे लड़े या न लड़े किन्तु तुम उनसे तब तक लड़ो जब तक कि वे इस्लाम के सिद्धांतों को स्वीकार न कर लें'। इसी प्रकार की एक और आयत है, जिसको विनोवा भावे जैसे इस्लाम की परिभाषा से अपरिचित लोग यह कहने लगते हैं कि इस्लाम मज़हब शक्ति प्रयोग के पक्ष में नहीं है। आयत इस प्रकार है—

ला इकराहा फिद्दीन कत्तबय्य नरूशदा मिनल्गय्य।

कुर्आन, पारा ३, रकू ३४।१

इस आयत के संबन्ध में मुस्हिफ़ में (कुरान के) व्याख्या

कारों ने कहा है कि इस आयत का आदेश आयते कताल से निरस्त हो गया है। तफ़सीर कादरी पारा ३, पृष्ठ ७७

तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ४० में है 'वा यह तमेलो इन्नह मनसुख़ तुन बेआ यतिल कताले।

अर्थात्—उक्त आयत, आयते क़ताल से निरस्त है।

ऐसे ही लबाबन नक़ूल पृष्ठ १३६ पर लिखा है 'कौलहू तआला ला इकराहा फिद्दीन मन मूखतुन वा नासिखेहा कौलहु तआला फक्तोलुल मुशरेकीना हैसो वजत्तोमूहुम।

अर्थात्—खुदा के कथन अनुसार यह आयत निरस्त है और इसको निरस्त करने वाली आयत 'कत्ल करो मुशरिकों को जहां तुम उन्हें पाओ' है।

तफसीर मज़हरी ने बैज़ावी के इस कथन पर कि प्रत्येक बुद्धिमान् स्वयं ही मुसलमान हो जायेगा (शक्ति प्रयोग आवश्यक नहीं) के उत्तर में मजहरी के लेखक ने लिखा है कि 'प्रत्येक बुद्धिमान् मज़हब की यथार्थता देख चुका है, किन्तु वास्तव में अधिकांश बुद्धिजीवी काफ़िर लोग हैं परन्तु उनकी बुद्धि निर्णायक और विवेकपूर्ण नहीं है, इसलिये उन्हें इस्लाम में भलाई नहीं दिख पाती। इस हेतु को दृष्टिगत रखते हुए शक्ति प्रयोग उनके लिये अत्यावश्यक है (यह कैसे कहा जा सकता है कि मज़हब में शक्ति प्रयोग की आवश्यकता नहीं रही)

तफ़सीर मज़हरी पारा ३, पृष्ठ ३४

इस्लाम के प्रसार में कितना शक्तिप्रयोग हुआ है इसके लिये इस्लाम का इतिहास स्वयं साक्षी है और शक्तिप्रयोग करना चाहिये, इसके लिये कुर्आन की अनेक आयतों और हदीसों की भरमार स्वयं प्रमाण है। हम यहाँ उन प्रमाणों को उद्धृत करना आवश्यक नहीं समझते; क्योंकि हमारा विषय यहां निरस्त आयतों का प्रतिपादन करना है।

इसके आगे और निरस्त यह आयत है:—

मंय्युते इर्रसूला फकद अता अल्लाह, वमन तवल्ला फमा अर-सलनाका अलैहिम हफ़ीजा। कुर्आन, पारा ५, रकू ११।५

अर्थात्–जो कोई रसूल की आज्ञा का पालन करेगा, निस्सन्देह उसने खुदाकी की आज्ञा का पालन किया और जो कोई तेरी (हज़रत मुहम्मद की) आज्ञा का उल्लंघन करे, पस जान ले कि हमने (खुदा) तुझे उनका रक्षक बना कर नहीं भेजा कि तू पाप या अपराध से उनकी रक्षा करे।

तफ़सीर कादरी पृष्ठ १८१।१ में लिखा है कि कतिपय मुस्लिम विद्वान् इस उपरोक्त आयत के आदेश को आयते सैफ़ से निरस्त मानते हैं और इसी प्रकार तफ़सीर कुर्आने अज़ीम पृष्ठ ५२, भाग १ में लिखा है कि 'हाज़ा कबलुल अमरो बिल कताले अर्थात्–उक्त आयत, आयते क़ताल के आदेश के पूर्व की है। निम्नलिखित आयत भी निरस्त है—

अंय्यो कातेलू कुम ओ युकातेलू कौमाहुम, इत्यादि।

कुर्आन, पारा ५, रकू १२ ६

उक्त निरस्त आयत की कथा इस प्रकार है कि—बनी मुदलज के लोगों ने यह सन्धि कर रखी थी कि हम हज़रत मुहम्मद और क़ुरैश से युद्ध नहीं करेंगे। इस द्वय प्रकार की सन्धि को उक्त आयत में स्वीकार कर लिया गया था, परन्तु बाद में यह आयत, आयते सैफ़ से निरस्त हो गई।

तफसीर कादरी, भाग १. पृष्ठ १८४

तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ८३ में लिखा है-मा बादेही मनसूखुन बे-आयातिल्सैफ़े' अर्थात् यह आयत, आयते सैफ़ से निरस्त है। निम्नलिखित आयत निरस्त है :—

इन्नल्लज़ीना फ़र्रक़ू दीनहुम वा कानू। शयअल्लस्ता मिनहुम फी शैइन इन्नमा अमरो हुम इलल्लाहे सुम्मा योनब्बेओ हुम बिमा कानू यफ़अलून। कुर्आन पारा ८, रकू २०।७

अर्थात्—जिन लोगों ने अपने मज़हब को अस्त-व्यस्त कर दिया और कुछ पैगम्बरों और कुछ किताबों को माना और कुछ को माना तथा विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त हो गये जैसे ७१ सम्प्रदाय यहूदियों के व ७२ ईसाईयों के सम्प्रदाय ही गये। उनके साथ युद्ध करना नहीं हैं; परन्तु उक्त आयत का आदेश आयते सैफ़ से निरस्त हो गया।

तफसीर कादरी भाग १, पृ॰ २९५

इस उक्त आयत के संबन्ध में तफ़सीर कुर्आनुलअज़ीम पृष्ठ ८१ भाग १ में लिखा है कि—तू (हज़रत मुहम्मद) उन लोगों से कुछ चर्चा मत कर, निस्सन्देह उनका निर्णय अल्लाह की ओर

है, जो कुछ भी वे करते हैं। 'वा हाज़ा मनसुखुन बे आयातस्सैफे' अर्थात् यह उक्त आयते, आयते सैफ से निरस्त हो गई। इसी प्रकार तफ़सीर जलालैन पृष्ट १२८ में भी लिखा है और एसा ही उल्लेख तफ़सीर बेज़ावी पृष्ठ १४९ में भी है कि उक्त आयत निरस्त है।

आगे निम्न आयत भी निरस्त हैं :—

वा लौ शाआ रब्बोका लआमना मनफिलअरजे कुल्लोहुम जमीआ अ फ़ा अन्ता तुकरेहुन्नासा हस्ता यकूनो मोमेनीन्।

कुर्आन पारा ११, रकू १०।१५

अर्थात्–यदि खुदा चाहता तो जितने लोग पृथ्वी पर हैं, वे सभी मुसलमान हो जाते। पस, क्या तू लोगों को मुसलमान करने के लिये शक्ति प्रयोग करता है ? यह आयत, आयते क़ताल से निरस्त है। तफ़सीर कादरी, पृष्ठ ४५१, भाग १

निम्न आयत भी निरस्त है :—

फइन्नामा यहतदी लेनपसेही वायन ज़ल्ला फ़इन्नमा यजिल्लो अलैहा वा मा अना अलैकुम बिवकील।

कुर्आन पारा ११, रकू ११।१६

अर्थात्—जिसने सन्मार्ग प्राप्त किया वही असली मार्ग प्राप्त करता है और उसका लाभ भी उसे ही मिलता है, तथा जो पथभ्रष्ट होता है उसका कष्ट भी उसे ही मिलता है, और मैं (हज़रत मोहम्मद) तुम्हारा रक्षक नहीं हूँ। दम्याती का कथन है कि उक्त आयत भी आयते सैफ से निरस्त है।

तफ़सीर कादरी, भाग १, पृ. ४५३

इस उक्त आयत के साथ ही दूसरी आयत निम्न प्रकार है और इसका ज्ञान करना आवश्यक है। आयत है :—

वत्तबे मा यूहा एलैका वस्बिर हत्ता यहको मल्लाहो ।

कुर्आन, पारा ११, ११।१६

अर्थात्—ऐ मुहम्मद ! अनुकरण कर, जो तेरी ओर भेजा जाता है । और जो दुःख तुझे प्राप्त होता है उसे सहन कर, यहां तक कि अल्लाह तेरी सफलता को या मूर्ति पुजकों का वध करने को आज्ञा दें और अहले किताब (ईसाई और यहूंदी) से जज़िया लेने की आज्ञा दें । **तफ़सीर कादरी, भाग १, पृ. ४५३**

तफ़सीर जलालैन में हैं '**हत्ता हकमा अलल मुशरेकीना बिलकिताले अयलजहादे वा ईशारा बेहाजा इला कौले इब्ने अब्बास नसखत हाजेहिल आयतो बे आयतिल कताले**' अर्थात्—यहां तक कि खुदा ! मुशरिकों को कत्ल करने की आज्ञा दें । इसका सकेत इब्ने अब्बास के कथन से है कि यह आयत, आयते सैफ़ से निरस्त हैं । **जलालैन पृष्ठ १७६**

निम्न आयत निरस्त है :—

कुल इन्नी ओमिर्तो अन आबो दल्लाह मुखलेसल्लहुद्दीना ।

कुर्आन पारा २३, रकू २।१६

अर्थात्—ऐ मुहम्मद ! कह दे कि मैं अल्लाह का उपासक हूं और उससे अपने मज़हब को दूसरे खुदा की उपासना से मुक्त करके

वाला हूं। तुम चाहे जिस खुदा के अलावा भी पूजो। यह आयत भी आयते सैफ़ से निरस्त है

तफ़सीर कादरी भाग २ पृ. ३४४

निम्न आयत भी निरस्त है :—

अल्लाहो रब्बोना वा रब्बोकुम लना आमालेना वलकुम एमालेकुम। कुर्आन, पारा २५, रकू २।३

अर्थात्–अल्लाह हमारा और तुम्हारा पालक है। हमारे और तुम्हारे कर्म अपने-अपने लिये हैं। हमारे और तुम्हारे मध्य सत्य प्रकट हो चुका है और यदि अब कोई विरोध उत्पन्न करे तो उसका कारण शत्रुता और विद्रोह होगा और हम सबको खुदा की ओर ही जाना है। कतिपय विद्वानों के मत में यह आयत भी आयते सैफ़ से निरस्त है।

तफ़सीर कादरी, भाग २, पृष्ठ ३८९

तफ़सीर बेज़ावी में पृष्ठ ४६४ में भी इस आयत को आयते क़ताल से निरस्त लिखा है।

तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ३, पृष्ठ ५३३ में लिखा है **वका कालबनिल खाज़ना हाज़ोहिल आयतो मनसुखातुन बेआयतिल कताले।**

अर्थात्–खाज़न का कथन है कि यह उक्त आयत, आयते क़ताल से निरस्त है। तफ़सीर कुरानुल अज़ीम पृष्ठ ९६ भाग २ में लिखा है कि उक्त आयत का आदेश जहाद की आयत उतरने के पूर्व का है।

निम्न आयत भी निरस्त है :—

वा कीलेही या रब्बे इन्ना हा ओलाये कोमुल्ला योमिनून।

कुर्आन, पारा २५, रकू ७।१३

अर्थात्–ख़ुदा के समीप है रसूल के कथन को जानना। ऐ मेरे ख़ुदा ! निस्सन्देह यह काफ़िरों का समूह हठी है और अपने प्रभुत्व के लिये शत्रुतावश मुसलमान नहीं बनते, (ख़ुदा ने कहा) ऐ मुहम्मद ! इन लोगों को मुसलमान बनाने और बदला लेने से उपेक्षा कर लो और कह दो कि तुम्हें त्यागना मुझे स्वीकार है। यह आदेश भी आयते क़ताल से निरस्त है।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ ४१२

तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ३, पृष्ठ ५७७ में लिखा है कि इब्ने अब्बास के कथनानुसार यह उक्त आयत, आयते सैफ़ से निरस्त है। तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ४१० में भी इस आयत को निरस्त होना लिखा है।

निम्न आयत भी निरस्त है—

कुल्लिल्लाज़ीना आमनु यग़फ़ेरू लिल्लाज़ीना ला यरजूना अय्या मल्लाहे लैयजज़िया कौमम बिमा काना यक्सेबून।

क़ुर्आने सूरते जासिया, पारा २५, रकू २।१८

अर्थात्–ऐ मुहम्मद ! उन लोगों से कह दो जो कि मुसलमान हुए हैं, कि वे क्षमा करें उन लोगों को जो ख़ुदा के वज्रपात और विनाश के दिनों से नहीं डरते। (इसके आगे इस सम्बन्ध में कुछ लोगों के कथनों का उल्लेख करते हैं) अन्त में यह है कि यह आयत, आयते क़ताल से निरस्त है।

तफ़सीर क़ादरी, पारा २५, भाग २, पृष्ठ ४२१

तफ़सीर जलालैन पृष्ठ ४१३, पारा २५, तफ़सीर सिराजे मुनीर पृष्ठ ५९६ भाग ४, तफ़सीर बेज़ावी पृष्ठ ४७७ आदि में भी इस उक्त आयत को निरस्त ही लिखा है।

निम्न आयत भी निरस्त है—

फा आरिज़ अम्मन तवल्ला अनज़िफरेना वलम्युरिद इल्लल हया तद्दुनिया।

कुर्आन, पारा ३७ रकू २।६

अर्थात्—ऐ मुहम्मद ! जो कुर्आन की अपेक्षा करता है, तू भी उसकी उपेक्षा कर। वह लोग दुनियावी ज़िन्दगी चाहते हैं और संसार से ही मोह-ममता रखना उनका उद्देश्य है। कतिपय विद्वान् इस आयत के मुँह फेरने के आदेश को आयते क़ताल से निरस्त मानते हैं।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ ४८१

निम्न आयत भी निरस्त है—

अल्ला तज़ोरो वज़ेरातुम्म विज़रा उखरा।

कुर्आन, पारा २७, सूरत नजम, रकू ३।७

अर्थात्—कोई दूसरा व्यक्ति किसी अन्य के पापों का भार नहीं उठायेगा, किन्तु जो व्यक्ति प्रयत्न करे उसे वही प्राप्त होता है, जैसे कि किसी व्यक्ति को दूसरे अन्य व्यक्ति के अपराध में नहीं पकड़ते इसी प्रकार दूसरों की नेकी भी प्राप्त नहीं होतीं। तिब्यान में है कि यह आयत निरस्त है, इसलिए कि सूरत तूर में लिखा है कि सन्तान को बाप-दादा की नेकी के कारण उच्च पद प्राप्त होगा।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ ४८२

सूरत तूर की आयत निम्न प्रकार हैं:—

वल्लाज़ीना आमनु वत्तब अतहुम ज़ुरिय्यतोहुम बे ईमानिम् अल-हकना बेहिम, इत्यादि'

कुर्आन पारा २७, सूरत तूर, रकू १।३

अर्थात्—जिन्होंने खुदा और रसूल पर विश्वास किया और उनकी सन्तान ने उनका अनुसरण किया। हम उनकी सन्तान को कयामत के दिन उनसे मिला देंगे। स्वर्ग में प्रवेश होने में उन्हें पच्च पदों पर पहुँचा देंगे। उदाहरणार्थ—जैसे कि उनके बाप-दादों के ऊन्चे पद होंगे, उसी प्रकार उनकी सन्तान के भी पद ऊँचे कर देंगे ताकि बाप-दादों की आंखे अपनी सन्तान को देखने से चमकती रहे और हम बाप-दादो की नेकी में से कुछ नहीं घटाएंगे बल्कि अपनी कृपा से उनकी सन्तानों को उच्च पद दे देंगे। **तफ़सीर कादरी, पारा २७, भाग २, पृ. ४७४**

(देखिये ! हज़रत मुहम्मद ने अपने अनुयाइयों एवं अन्य लोगों को किस प्रकार मिथ्या एवं अर्थहीन प्रलोभन दिये और इस्लाम की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया।)

सूरत तूर की इस आयत के सम्बन्ध में जो तात्पर्य हमने ऊपर लिखा वैसे ही तफ़सीर बेज़ावी पृष्ठ ५०१, तफसीर सिराजे मुनीर पृष्ठ ११३ भाग ४, तफसीर जलालैन पृष्ठ ४३५ और तज़रीदे बुखारी किताबुल ईमान पृष्ठ ४३ में हदीस ८८ में प्रतिपादित किया है।

तजरीदे बुखारी किताबुल ईमान में हदीस क्रमांक ८८ इस प्रकार है:—

हजरत मोहम्मद ने एक दिन स्त्रियों की एक गोष्ठि में उपदेश देते हुए कहा कि जिस स्त्री के ३ बच्चे मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं वे बच्चे कयामत के दिन कर्क के मार्ग में बाधक होंगे अर्थात् उसको नर्क में नहीं जाने देंगे। एक स्त्री ने प्रश्न किया कि— जिसके दो बच्चे मरे हों उसका क्या होगा ? तो हजरत ने कहा कि उसका भी ऐसा ही होगा; किन्तु मरने वाले बच्चे अवयस्क (नाबालिग़) होना चाहिये।

आगे निम्न आयत भी निरस्त है :—

फज़रहुम यखूज़ू वा यलअबु हत्ता युलाकु योमा होमुल्लाज़ी युअदून।

कुर्आन पारा २९, सूरत मुआरीज, रकू २।८

अर्थात्–ऐ मुहम्मद ! पस हाथ उठा उनसे ताकि वह बुरे कार्य आरम्भ करें और सांसारिक क्रीड़ा में सन्लग्न हो जाये उस समय तक जिस दिन के लिये उन्हें वादा दिया गया है और वह दिन या तो बदर का युद्ध है या फिर कयामत का दिन है। इस आयत का आदेश भी आयते कताल से निरस्त है।

तफ़सीर कादरी, पारा २९, सूरत नुह पृष्ठ ५७५, भाग २ सिराजे मुनीर भाग ४, पृष्ठ ३८८ में भी इस आयत का निरस्त होना लिखा गया है।

आगे निरस्त आयत है :—

बस्बिर अला मा यकूलूना वहजुरहुम हजरन जमीला।

कुर्आन पारा २९, रकू १।१३

अर्थात्—ऐ मुहम्मद ! प्रतिकार लेने हेतु उनसे पृथक हो जा किन्तु उन्हे उपदेश करता रहा। यह आयत भी आयते, कताल से निरस्त है। तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ५८५

तफ़सीर मजहरी, पारा २९ पृष्ठ १६८ में लिखा है कि काफ़िर जो अपशब्द कहते हैं, तुमको काहन और शायद मजनूं आदि कहते हैं उनको तुम सहन करो, उनसे एक किनारे रहो और बदला न लो तथा उनके प्रकरण को खुदा के ऊपर छोड़ दो। इस आयत का आदेश आयते कताल से निरस्त है।

निम्न आयत भी निरस्त है :—

फमाहिलिल काफेरीना अमहिलहुम खेदा।

कुर्आन पारा ३०, सूरत तारक

अर्थात्–पस अवधि दे काफ़िरों को अर्थात् उनके सँहार की मांग हेतु शीघ्रता न कर। उनको किंचित् समय के लिये छोड़ दे। उनका संहार शीघ्र हो जायगा। यह अवधि का आदेश भी आयते कताल से निरस्त है।

तफसीर कादरी भाग २, पृष्ठ ६२४

तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ४, पृष्ठ ५१९ में यही लिखा है और तफ़सीर जलालैन, पृष्ठ ४५७ में भी उक्त आयत को निरस्त लिखा है। तफ़सीर कुर्आनुल अज़ीम भाग २, पृष्ठ १५४ एवं अन्य स्थानों पर भी निरस्त लिखा गया है।

निम्न आयत भी निरस्त है।

लस्ता अलैहिम बेमुसैतेरिन :—

कुर्आन पारा ३० रकू ११३ सूरत गाशिया

अर्थात्–ऐ मुहम्मद ! तू उन पर निरीक्षक नहीं कि उन्हें मुसल-

मान होने पर विवश करे । इस आयत को भी आयते क़ताल ने निरस्त कर दिया है। तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ६२७
निम्न आयत भी निरस्त है :—

कुल या अय्योहल काफेरूना से लकुम दीनोकुम वलेया दीन तक।

कुर्आन पारा ३० सूरत काफिरून

अर्थात्-ऐ मुहम्मद ! काफ़िरों को कहदे कि मैं उस वस्तु को नहीं पूजूंगा, जिसे तुम पूजते हो और न तुम उस वस्तु को पूजने वाले हो जिसकी मैं उपासना करता हूं (यही अर्थ दोहराया है।) तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म है और मेरे लिये मेरा धर्म है। यह आयत भी आयते सैफ़ से निरस्त हो गई। इब्ने अब्बास ने कहा कि कुर्आन में शैतान के लिये इस सूरत से अधिक कठोर कोई सूरत नहीं। इसलिये कि यह सूरत तौहीद (अद्वैतवाद) का प्रतिपादन करती है। इस सूरत के पढ़ने का पुण्य चौथाई कुर्आन के पढ़ने के समान है।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ६५३

तफ़सीर लबाबन नक़ूल पृष्ट १६२ में लिखा है कि क़ुर्आन की यह सूरत काफ़िरून निरस्त है। 'वा लकुम दीनोकुम वलेया दीन' यह आयत भी आयते सैफ़ से निरस्त है

पाठक वृन्द ! हमने कुर्आन की अनेक निरस्त आयतों को सप्रमाण विस्तारपूर्वक आपके सम्मुख प्रस्तुत किया। आयते सैफ़ (तलवार) ने जैसा कि हम पूर्व में लिख चुके हैं, १२४ आयतों को निरस्त किया है। उनके सम्बन्ध में एक ही सिद्धांत समझना चाहिये कि कुर्आन में जितनी भी आयतें अत्याचार सहने, भ्रातृभाव रखने एवं अच्छे व्यवहार के सम्बन्ध में हैं, वे समस्त आयतें, आयते कताल से निरस्त हो गई हैं। यद्यपि हम १२३ आयतें प्रस्तुत न कर सकें फिर भी अधिकांश निरस्त आयतें

आपके समक्ष प्रस्तुत है तथा आगे और भी निरस्त आयतें प्रस्तुत हैं। जिन्हें अल्लामा जलालुद्दीन ने अपनी किताब 'लबाबन नक़ूल फ़ी असबाबन नजूल' के अन्त में प्रस्तुत किया है इस किताब के लेखक अल्लामा जलालुद्दीन महम्मद बिन अहमद हिजरी ७६४ में स्वर्गीय हो गये हैं। तात्पर्य यह है कि उक्त किताब आज से लगभग ७०० से अधिक वर्षो पूर्व लिखी हुई है। जो आयतें अल्लामा ने अपनी किताब मे निरस्त लिखी हैं, उनमें से अधिकांश निरस्त आयतें हम विगत पृष्ठों में लिख चुके हैं। उनके अतिरिक्त जो और नवीन आयतें निरस्त भी हैं इस पर कहा जा सकता है कि जितनी निरस्त आयतें पूर्व में लिखी जा चुकी है, उनसे जो अधिक नवीन आयतें हैं, उन्हें लिखना चाहिए था किन्तु हमारे लिखने का उद्देश्य यह है कि पाठक वर्ग कुर्आन की समस्त निरस्त आयतों को शृंखलाबद्ध अवलोकन कर लें।

अल्लामा जलालुद्दीन सियूति ने निम्नलिखित शीर्षक से अपने विषय को प्रस्तुत किया है। शीर्षक हे :—

बाबुन् नासिख़ो वल मनसूखो अला नज़मिल कुर्आन

:— अर्थात् :—

निरस्त होने वाली और करने वाली आयतों का विवरण कुर्आन के क्रमानुसार

अल्लामा लिखते हैं कि निरस्त होने वाली आयतों का उतरना मक्का में अधिक है और निरस्त करने वाली आयतें मदीना में अधिक उतरी हैं।

मदीना में उतरी सूरत बकर में २६ आयतें निरस्त हैं, जैसे:-

निरस्त होने वाली आयतें

१—इन्नलाज़ीना आमनु वल्लाज़ीना हादू ।

२—वा कूलू लिन्नासे ।

३—वा फू वस्फहु हत्ता यातेयल्लाहो वेअमरेही।

४—वलिल्लाहिल मशरिको वल मगरिबो मोह-कम इत्यादि ।

५—इन्नल्लाज़ीना यक्तमुना मा अनज़लना मिनल बय्येनात वलहुदा ।

६—इन्नमा हर्रमा अलैक मुलमेतता वद्दमा । इत्यादि ।

७—कुतेबा अलैकमुलकसासो फिलकुतला अल-हुर्रो बिलहुर्रे
वलअब्दो बिलअब्दे वलउनसा बिलउनसा ।

निरस्त करने वाली आयतें

१—वा मय्यंबतगे गैरल इस्लामे दीनन फलैयंयु-क्बलो मिनहो ।

२—आयतुस्स सैफ़ से निरस्त ।

३—कातेलुल्लज़ीना लायोमिनुना बिल्लाहे वला बिलयोमिल आखरे इत्यादि ।

४—वा हेसोमा कुन्तुम फ़ज़ालु वजुहाकुम शतरहू ।

५—इलल्लाज़ीना तावु वा असलहु वा बय्येनु ।

६—यह आयत हदीस से निरस्त है 'ओ हिल्लत लना मैताताने वा दमानेसमके वलज़रादे वनकब्दे वलोहाले :
सुम्मा वा हस्सल मुज़ रे इज़ाकाना गैरोबा-गीम वला आदीन. . . .फलां इस्मा अलैहे ।

७—वा कतबना अलैहिम फ़ीहा अनन्नफसा बिन नफसे इत्यादि ।

८—कुतेबा अलैकुम एज़ा हज़रा आहदोकुमुल्मौत इन्तरका खैरल वसीयते लिल्वालेदैने वल अकराबीना ।

८—यूसो कुमुल्लाहो फी औलादेकुम लज्जकरो मिसला हज्ज़ल उन्सयैने ।

९—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनु कुतेबा अलैक मुस्सयामे कमा कुतेबा अलल्लाज़ीना मिन कबलेकुम (एवं) वा ज़ालेका अन्नाहुम कानु एज़ाअफ़्तरू अकलू वशरबू वा जामेउन्निसाआ मालम युसल्लुल ईशाआ इत्यादि ।

९—ओहिल्लो लकुम लैलातस्सयामुरफ्सा इला निसाऐकुम । वब्तगू मा कतबल्लाहो लकुम, तक

१०—वा अलल्लाज़ीना यतीकूनहू फिदयातुन तुआमे मिस्कीन हाज़ेहिल आयतो निस्फुहा मनसूखुन ।

१०—फमन शहेहा मिनकोमुश्शहरा फलयसुमहो इत्यादि ।

११—कातेलु फी सबीलिल्लाह हिल्लाज़ीना युकाते लुनाकुम वा ला ताद्दू इन्नल्लाह ला युहिब्बुल मोतदीन ।

११—वा कातेलुल मुशरेकीना काफतन कमा युकाते-लुनाकुम काफतुन ।

१२—वा ला तुकातेलुहुम ईन्दल मस्जेदिल हरामे हत्ता युकातेलूकुम फीहे ।

१२—फईन कातेलूकुम फक्तोलूहुम ।

१३—फ़ अ निन्तहू फ़इन्नलल्लाहा ग़फ़ूरूर्रहीम वहाज़ा मिनल अखबारल्लाती माना हलअमरो तावीलेही फ़फ़हूलहुम वालमु अनहुम सुम्मा अखबारूल अफवे ।

१३—बेआयतेस्सैफ़े फक्तोलुल मुशरेकीना हैसो वज्जत्तमुहुम इत्यादि ।

१४—वा ला तहलुक रऊसकुम हत्ता यब्लगुलहदिया महल्लाहु ।

१४—फमनकाना मिनकुम मरीज़न ओ बिही अज़न मिनरासही फफिदयातुम मिन सियामे ओ सदकातिन औ नसक ।

१५—यस अलुनका मा जा युन्फिकुना कुल मा अनफक्तुम मिनखैरिन फ़लिल वालेदैने वल अकरबीना ।

१५—इन्नमस्सदका तिन लिलफुकराये वल मसाकीन ।

१६—यस अलुनका अनिश्शहरिल हरामे कितालुनफीहे ।

१६—फक्तोलुल मुशरेकीना हैसो वजत्तमूहूम इत्यादि

१७—यस अलुनका अनिल खुमरे वल मैसरे ।

१७—वा इस्मुहमा अकबरो मिन नफएहुमा । मय्यो हल्लोज़ीना आमनु ला तकखुस्सलाता वा अंतुम सुकरा हत्ता तालमु मातकूलूना वकानु यशरेबुना बादलईशाए । इत्यादि

१८—वा यस अलूनका मा जा युनफ़ेकुना कुलिल अफवे ।

१८—खुज़मिन अमवालेहिम सद्कतुन तत्हिहुंम वा तज़कीहुम ।

१९—वा ला तनकेहुल मुशरेकाते हत्ता योमिन्नू वा लैसा फी हाज़ेही शैऊन । इत्यादि

१९—वा ज़ा हुकमुल मुशरेकाते वा ज़मीलोहा मुहकमुन वा ज़ालेका इन्नल मुशरेकाते यअम्मुल कनायाते वल बस्नेयाते सुम्मा इस्तस्ना मिन ज़मीइल मुशरेकाते.....इत्यादि ।

२०—वल मुतल्लेकाते यतरैबिसहुन्ना बेअन फ़ुसेहिन्ना सलासता कोरूआ । अल आयतो जमीअहा मुहकमुन इल्ला कलामन फ़ी वस्तेहा । (यह सम्पूर्ण आयत मध्य भाग को छोड़कर प्रभावशील है)

२०—अत्तलाको मर्राताने फमसाका बेमारूफिन औ तसरीहिन बेएहसान ।

२१—फ़ी आयतिल्खल्ए वा ला युहिल्लो लकुम इन ताखेज़ू मिम्मा अतैतमूहुन्ना शैअन ।

२१—इल्ला अंय्युख़ाफ़ा इल्ला युकीमा हदूदल्लाहे ।

२२—वलवालेदाते यर्ज़ेना ओलादहुन्ना हौलैने कामेलैने ।

२२—फ़इन अरादा अनसालन अन तराज़े मिन्हुमा वा तशावरा फलाजुनाहा अलैहिमा फ़सारत हाज़ेहिल अरादते बिलइनकाफे नासिख़तुन लहौलैने कामिलैने ।

२३—वल्लाज़ीना यतवफ्फूना मिनकुम वा यज़ेरूना अज़वाजन वसीय्यतुन ले अज़वाजेहिम इत्यादि ।

२३—वल्लाजीना यतवफ्फूना मिनकुम वा यजेरुना अज़वाजन यतरब्बसना बेअन फ़ुसेहिन्ना अर-

(उक्त आयत पहिले नासिख और पश्चात् मनसूख है)

बतो अशहरून वा अशरा । (यह एक ऐसी आयत है, जिसको निरस्त करने वाली आयत पहिले है और निरस्त होने वाली आयत पश्चात है, तथा अग्रिम आयत भी इसी भांतिहै) लायुहिल्लो लकन्निसाओ मिम्बादे । (यह आयत भी पहिले नासिख और पश्चात मनसूख है)

२४—ला इकराहा फ़िद्दीन ।

२५—वशहदू एज़ा तबायातुम ।

२६—मा फ़िस्समावाते वा मा फ़िलअरज़े हाजा मोहकमुन सुम्मा काला वा इनतुब्दु मा फी अनफ़ुसेकुम ओ तुख़्फ़ूहो युहासेबोकुम बेहिल्लाहा

(यह उपरोक्त २६ आयतें, जो कि निरस्त है, क़ुर्आन के सूरत बकर की हैं)

२४—फक्नुलुल मुशरेकीना हेसो वजत्तमूहुम ।

२५—व इन आमना बाज़ोकुम बाज़हा इत्यादि ।

२६—ला युशल्ले फ़ुल्लाहो नफसन इल्ला वसुआहा वाला खफफ्फा मिनल वसऐ बेकौले हि तआला युरीदल्लाहो बेकमुल युसरा वा ला युरीदो-बिको मुलउसरा ।

सूरत आले इमरान में ५ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयते
१—फ़इन तवल्लु फ़ इन्नमा अलेकल्बलाग़ ।	१ – आयतुस्सैफ से निरस्त है (फ़क्नुलुल मुशरेकीना)
२—कैफ़ यहदिल्लाहो कोमन कफरू बादेईमानेहिम, बा ला हुम युन्ज़ेरून ।	२ – इल्लज़ीना ताबू मिम्बादेज़ालेका वा असलहू ..... ।
३।४।यह तीन और चार आयतें इस्लाम में फिर जानें वालों की थी ।	३।४।इस्लाम से फिरने के बाद फिर मुसलमान हो गये थे इनके विषय में उपरोक्त आयत में निरस्त कहा गया है – चार तक
५—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनुत्तकुलाहा हक्का तुकातेही ।	५—फत्ताकुलाहा मस्ततातुम....इत्यादि ।

सूरत निसा में २४ निरस्त आयतें

१—वा एज़ा हजरल किस्मतो उलुल कुर्बा वलयतामा वलमसाकीन ।	१—यूसीकुमुल्लाहो फी औआदेकुम लिज़्ज़करे मिस्लो हज्जिल उनसयैने ।
२—वलेयखशिल्लाज़ीना लौ तरकूमिन खल्फ़ेहिम जुर्रियतुम ज़आफन खाफू अलैहिम ।	२—फमन खाफा मिम्मौसिन जनफ़न औ इसमन फ़असलह वैनाहुमफला इस्मा अलैहे ।

३—इन्नल्लाज़ीना याकोलूना अमवा लिलयतामा जुलमन.....इत्यादि ।

४—वल्लाती यातीनल फाहिशते मिन्ननसाएकुम .....इत्यादि ।

५—वल्लाज़ाने यातेयानेहा मिन्कुम फ़ादूहुमा कानलबकरी इन ईज़ा जनिया एराबशतमा ।

६—इन्नमत्तौबंतो अलल्ला हिल्लाजीना यामलू नस्सूए विजहालतन..... इत्यादि ।

७—या अय्यो हल्लाजीना आमनु ला युहिल्लो लकुम .....अनतर्सुन्निसाआकर्हन इला बिवाजे .....इत्यादि ।

८—लातनकेहु मानकहा अबाओकुम ।

९—वा इन तजमऊ बैनल उखतैने ।

३—अलऊला वलमारूफल फर्जे हाहोना फइज़ा एसरो रद्दहू फइन मात कब्ला जालेका फ़ला शैइन अलैहे....इत्यादि ।

४—आयज अलल्लाहो लिमन सबीलावा बा जुहा बिस्मुन्नते मनमुख....इत्यादि ।

५—अज्ज़ानियतौ वज्ज़ानी फजलदू कुल्लो वाहेदिन मिनहुमा मेअते जल्दतन ।

६—वा लैसतित्तौ बतो लिल्लाज़ीना यामलू नस्सय्येआते..... इत्यादि ।

७—इल्ला अंय्योंतीना बेफाहिशातिन मुबय्यनतन ।

८—इल्ला मा कद सलफ मिन अफ आलेहिम फकद अफौता अनहो ।

९—बिल इसतिसनाये इल्ला मा कद सलफ यानी अफौतो अन हो ।

१०—फमस्तातुम बिही मिनहुन्ना फातुहुन्ना अजुराहुन्ना फरीज़तन ।	१०—इन्नी कुन्तो अहललता हाज़ोहिल्मुतअता इल्ला इल्ला वा ईन्नल्लाहा व रसूलोहू कद हरमाहा इल्ला अला (अन्त तक)
११—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनु ला ताकेलू अमवालाकुम बैनाकुम बिलबातेले ।	११—लैसा अललआमा हर्जुन वा ला अलल आरजे हर्जुन वा ला अलल मरीजे हर्जुन कानू यजतने बूनहुम फिल अकले..... इत्यादि,
१२ वल्लाज़ीना अकदत एमानोकुम फातुहुम नसीबोहुम ।	१२—वा उलुल अरहामे बाज़ोहुम औला विवाजिन ।
१३—फ़ आरिज़ अनहुम वाजोहुम ।	१३—आयते सैफ से निरस्त ।
१४—वा लो अन्नाहुम इज़ा ज़लमू अनफुसेहिम जाओका फस्तग़फेरू.....इत्यादि,	१४—इस्तग़ फिरलहुम औला तस्तग़ फिरलहुम ।
१५—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनु खज़ू हज़रकुम इत्यादि ।	१५वा मा कानल मोमिनूना लेयनफरू काफ़तन ।

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१६—वा मन तवल्ला फ़मा अरसलना का अलैहिम हफीज़ा ।	१६—आयतें सैफ से निरस्त
१७—फ़ारिज अनहुम वा तवक्कल अल्लाहे ।	१७— ,, ,, ,,
१८—इलल्लाजीना युसल्लूना इला कौमिन बैनाकुम वा बैनाहुम मीसाकुन ।	१८— ,, ,, ,,
१९—सतजेदूना आखेरीना युरीदूना अय्यां मनुकुम वा यामनु कौमहुम ।	१९— ,, ,, ,,
२०—फईनकाना मिनकौमिन अदुव्वुल्लाकुम ।	२०—बराअत मिन्नल्लाहा वा रसूलेही ।
२१—वा मंय्युक्तलो मोमेनन मुतअम्मदन फजज़ा ओहू जहन्नमा खालेदन फ़ीहा ।	२१—इन्नल्लाहा लायग़फिरो अंय्युशरेका बेही वा बिलआयतिल्लतीफिल फुरकाने .....इल्लामन ताबा. तक ।
२२—इन्नल मुनाफेकीना फिद्दर्किल असफले मिन-नार ।	२२—नसखल्लाहो बाजोहा बिल इस्तिसनाये इल-ल्लजीना ताबु वाअसलेहु वातसमू बिल्लाहेवा उखलेसू ।

२३-२४-फमालकुम फ़िल मुनाफकीनाव फ़ियातैने वा कौलुतूहू ताआला फ़कातेलो फ़ीसवी लिल्लाहे लातुकल्ले फ़ो इल्ला नफ़सका ।	२३-आयते सैफ से निरस्त २४- ,, ,, ,,

सूरत मायदाह ९ निरस्त आयतें—

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनु ला तोहिल्लू शआयरल्लाहेइला कौलही यबतग़ूना फज़लन मिर्रब्बेहिम आदि ।	१—आयते सैफ से निरस्त
२—फ़ाफ़ें अनहुम नज़लत फिलयहूदे ।	२—कातेलुल्लज़ीना ला योमेनूना बिल्लाहे वा ला बिल यौमिल आखेरे ।
३—इन्नमा जज़ा अल्लाज़ीना युहारेबुनल्लाहे वा रसुलहु ।	३—नसखत बिल इस्तिसनाये मिन्हा फ़ी मा बादोहा इलल्लाज़ीना ताबू मिन कब्ले अतक-दरू अलैहिम ।
४—फइन जाऊका फहकुम बैनहुम औ आरिज़ अनहुम ।	४—वा अनहकुम बैनहुम बेमा अनजलल्लाहो वला वत्तेबेओ अहवाअ हुम ।

५—मा अलरंसूले इल्ललबलाग़ ।

६—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनु अलैकुम अनफ़ुसाकुम ।

७—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनु शहदातुन बैनकुम .....इत्यादि ।

८—फइन्ना अयरा अला इन्नाहुमस इस्तहफ़ाकन ।

९—जालेका अदना अंय्यातू बिशहादतें अला वज्हेहा ।

५—आयते सैफ से निरस्त

६—नसखा आखिरेहा अव्वलोहुं । इजा अहतदैतुम वलहुदा हाहुनलअमरो बिल मारूफे. वन्नही अनिल मुनकेरे ।

७—वशहदू जबीअद लिम्मिनकुम वा बतलत..... शहादतन अहलिज्जजिम्मते इत्यादि ।

८—नसखहा अल्लती फित्तलाके वशहदू ज़बी अदलिन मिनकुम ।

९—नसख जालेका मिनल आयते शहादते अहलल इस्लामे ।

सूरत अनआम में १३ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें

१—कुल इन्नी अखाफो इन असैता रब्बी अजाबे यौमिन अजीम ।

निरस्त करने वाली आयतें

१—लयग़फेरा लकल्लाहो मा तकद्दमा मिन ज़म्बेका या मा तअख्खरा ।

२—वा इजा रऐतल्लजीना यखूजूना फी आयातेना फ़ आरिज अनहुम.....इत्यादि,	२—नसखत फ़लातछअ्यू मआहुम हत्ता यखूजू फ़ि हदीसे ग़ैरेही।
३—(लबाबुन नकुल में यह आयत उपलब्ध नहीं है)	३— — — —
४—वज़रललजी नत्तखेजू दीनहुम लाबंव्वलहवन।	४—कातेलुल्लाज़ीना लायोमिनुना बिल्लहे वा ला बिल यौमिल आखेरे।
५—कुलिल्लाहे सुम्मा ज़रहम फी खौजेहिम यल-अबुन।	५—आयतें सैफ से निरस्त
६- फमन अबसरो फलेनफ्सेही बा मन उमिया फ़ अलैहा वा मा अना अलैकुम बेहफीज़।	६— ,, ,, ,, ,,
७—वारिज अनिल मुशरेकीन।	७— ,, ,, ,, ,,
८—वा मा जअलनाका अलैहिम हफीज़ा वा मा अन्ता अलैहिम बिबकील।	८— ,, ,, ,, ,,
९—वा ला तसब्बुल्लाजीना यदऊना मिन दुनिल्लाहे फयसब्बुल्लाहा अदवन बिग़ैरे इलम।	९— ,, ,, ,, ,,
१०—फज़रहुंम वा मा युफ़तरून।	१०— ,, ,, ,, ,,

११—वा ला ताकैलू मिम्मा लम बिजिकरे इस्मिल्लाहे।	११—अलयोमा ओहिल्लो लकमुत्तय्ये बाते वा तुआमल्लाज़ीना ऊतुल किताबे।
१२—कुल याकौमेमलू अला मकानतेकुम।	१२—आयते सैफ से निरस्त
१३—इन्नल्लजीना फर्रकु दीनाहुम वा कानू शीया।	१३— ,, ,, ,,

सुरत ऐराफ़ में २ निरस्त आयतें

१—वजरूल्लजीना यलहदूना फी असमाएही।	१—आयते सैफ से निरस्त
२—खुजिल अफ़वे वामूर बिल उर्फे वा आरिज अनिल जाहेलीन।	२—हाजेहिल आयतों मिन अजीमि अव्वलुहा मनसुखुन वा आखेरूहा मनसुखुन वा औसतुहा मोहकमुन (उक्त आयत का प्रारम्भ और अतिम भाग आयते सैफ से निरस्त है।)

सुरत इनफाल मे ६ निरस्त आयतें

१—यस अलुनका अनिल अनफाले।	१—वालमू इन्नामाग़निमतुम मिनशैइन फइन्न लिल्लाहे खमसहू।

२—वा मा कानल्लाहो लेयी अज़्ज़िबोहम वा अता-फीहिम ।	२—वा मा लहुम इल्ला यो अज़्ज़िबो होमुल्लाहो ।
३—कुल लिल्लाजीना कफरू अंय्यन्तहू यग़फिरो लहुम मा कद सलफ ।	३—वा कातिलूहुम हत्ता ला तकूलो फ़ितनतुग ।
४—वा इन जनहू लिस्सलमे फजनबालहा ।	४—कातेलुल्लज़ीना ला योमिनुना बिल्लाहे वा ला बिल योमिल आखेरे ।
५—अय्यकुम मिन कुम इशरूना साबेरूना यग्लबु मिअतैने ।	५—अलआना खफ्फफल्लाहो अनकुम वा अलेमा अन्ना की कुम जोएफा ।
६—वल्लाजीना आमनु वालम युहाजिरू मालकुम मिन वा ला यनहुम मिनशैइन ।	६—वा ऊलुल अरहामे वाज़ोहुम औला बिबाज़िन फी किताबिल्लाहे इन्नल्लाहो बिकुल्ले शैइन अलीम ।

सूरत तौबा में ७ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—बराअतं मिनल्लाहे वा रसूलहू इला कोलही फ़सीहू फिल अर्जे तक ।	१—फक्तुलुल मुशरेकीना हैसो वजत्तसुहुम वकीला नसखा अव्वलोहाबे आखेरेहा व हिया कौलोहू तआला फइन ताबू ।

२—वल्लाजीना यकनजु नज़्जहबा वलफिज़्जते ।
३—अला तव फिरूयोअज़्जेबुकम अजाबन अलीमा ।
४—अफालाहो अनका लम उजनत लहुम ।
५—इस्तग़फिरलहुंम ।
६/७-अलएराबो अशद्दो कुफरन वा नेफाकन, वल आयतुल्लती तलीहा सारतन ।

२—नसखत बिज्जकातिल विजाबते ।
३—वा मा कानल मोमिनुना लेयनफेरू काफतन ।
४—फइन इसताजनूका लिबाजे शानेहिम फउज़ना लेमन ।
५—स्वाउन अलैहिम इस्तगफ़रतालहुम ।
६/७ वा मिनल ऐराबे मन्य्योमिनो बिल्लाहे वल-योमिल आखेरे ।

सूरत युनिस में ४ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें

१—इन्नी अखाफ़ो अनउसीता रब्बी अजाबा यौमिन अजीम ।
२—कुल इंतजेरू इन्नी मआकुम मिनल मुन्तजेरीन
३—वा इन कज़्ज़बूका फकुल ली अमली वलकुम अमलोकुम ।
४—फमनेहतदा फइन्नमा यहतदी लेनफसेही, वा मा अना अलकुम बेवकील ।

निरस्त करने वालो आयतें

१—लेयगफिरा लकल्लाहो मा मातकद्दमा मिन-जम्बेका वा मा ताअख्खरा ।
२—आयते सैफ से निरस्त है,
३— ,, ,, ,, ,,
४— ,, ,, ,, ,,

सूरत हूद में ३ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—मनकाना युरीदुल हयात द्धुनिया वा जीने तह	१—यरीदुल आजलते अजलना लहू फीहा इत्यादि
२—वा कुलिल्लजीना ला योमिनुना एमलू अला मकानतेकुम ।	२—आयते सैफ से निरस्त है ।
३—बनतजेरू इन्ना नुनतजेरून ।	३— " " " "

सूरत राद में २ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयते
१—फ़इन्नामा अलैकल बलागुल मुबीन वा अलैनल हिसाब ।	१—आयते सैफ से निरस्त है।
२—वा इन्ना रब्बोका लजू मग़फिरतन लिन्नासे अला जुल्मेहिम ।	२—इनल्लाहो लायग़फिरो अय्यूशरेकी बेही ।

सूरत इब्राहीम को समस्त व्याख्याकार प्रमाणिक मानते हैं किन्तु अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन अस्लम केवल १ आयत ही निरस्त मानता है जो निम्मानुसार है ।

१—वा इन्नत अद्दू नेमतल्लाहेला तहसूहा इन्नल इन्साना लजलुमुन कुफ़्फ़ार ।	१—इनतादू नेमतल्लाहे लातहसूहां इन्नल्लाहा लग-फूरुर्रहीम ।

सूरतुल हजर में ५ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—जरहुम याकुलू वा यत मत्तऊ ।	१—आयते सैफ से निरस्त है ।
२—वस्फहस्सफहुलजमील ।	२— ,, ,, ,, ,,
३—ला तमद्दना ऐनैका इल्ली मा मत्ताना बेही अज़वाजन मिनहुम ।	३— ,, ,, ,, ,,
४—वाकुल इन्नी अना नजीरुममुबीन ।	४— ,, ,, ,, ,,
५—फसदा बिमा तोमेरू वा आरिज अनिल मुशरे-कीन ।	५—आयत का आधा भाग प्रभावशील है और शेष आधा भाग आयते सैफ से निरस्त है ।

सुरत नहल मे ५ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—व मिनस्समरा तिन्नखीले वल ऐनावे तत्तखे-जूना मिनहो सकरन व रिज़कन हसना ।	१—कुल इन्नामा हर्रमा रब्बिल फ़वाहिशा मा जहरा मिन्हा वा मा बतना वलइसमा यानी खुमरा ।
२—फइन्नतवल्लू फ़ इन्नमा अलैकल बलाग़ ।	२—आयते सैफ से निरस्त ।
३—मनकफरा बिल्लाहे मिम्वादे ईमानेही ।	३—(१) इल्ला मनअकरह वा कलबेही मुतमइन्ना बिलईमाने (२) वकीला बेआयतिस्सैफ ।
४/५-वा जादलहुम, वा कौलोहू वस्बिर मसखना काना हुमा ।	४/५-नसख्ना कानाहुमा आयतिस्सैफे ।

सूरत बनी इसराईल में ३ निरस्त आयतें

१—वा कज़ा रब्बोका इल्ला ताबुदू इल्ला ईय्याहो .....इत्यादि ।	१—मा कांना लिन्निबिय्यये वल्लाज़ीना आमनु अंय्यसतग़फिरूलिल मुशरेकीना ।

२—रब्बोकुम आलमो बेकुम; इलाकौलेही वा मा अरसलनाका अलैहिम वकीला ।	२—आयते सैफ से निरस्त ।
३—कुल अदउल्लाहा औ अदऊर्रहमाना, इला कौलेही फलालहुल अस्मा अल हुसना ।	३—वज़कुर रब्बीका फ़ी नफ़्सेना तुज़र्रोअन वखी-फतन ।

सूरत कहफ में १ निरस्त आयतें

१—इल्ला अंय्यशा अल्लाहो ।	१—फ़मनशाआ फ़लयोमिनो वमनशाआ फ़लेयक-फुर

(सूरत कहफ का समर्थन समस्त व्याख्याकार करते हैं, कि निरस्त नही है किन्तु व्याख्याकार सद्दी वा कतादा की दृष्टि में उक्त एक आयत निरस्त है)

सुरत मरियम में ५ निरस्त आयतें

१—वा अनजिरहुम योमल हसरतें ।	१—आयते सैफ से निरस्त ।
२—फसोफ़ा यलकूना गय्यंव्वल ग़य्यो वादे फी जहन्नमा ।	२—नसखत बिल इस्तिसनाये इल्ला मनताबा ।

३—कुल मनकाना फिज्जलालते फ़ यमदुद लहुर्रमानो मद्दा ।

४—फ़लाताजिल अलैहिम ।

५—फखलफ़ मिम्बादेहिम खलफ़ा ।

३—आयते सैफ से निरस्त ।

४—नसख अव्वलोह बे आयातिस्सैफे ।

५—इल्ला मन ताबा वा आमना वा फीहा तकदीमुनफिन्नजमे ।

सुरत त्वाह में ३ निरस्त आयतें

१—वा ला ता जिल बिलकुरआने मिनकबले अंय्यंकज़ी इलका वहयह ।

२—फ़स्बिर अला मा यकूलूना ।

३—कुल कुल्लो मुतरब्बेसो ।

१—सनुकरेओका फ़लातन सा ।

२—नसखत सर्बो मिन्हा बेआयतिस्सैफे ।

३—आयते सैफ से निरस्त ।

सुरत अम्बेया में २ निरस्त आयतें

१—इन्नाकुम वा मा ता बोदुना मिनदूनिल्लाहे हस्बो जहन्नमा ।

२—अल्लाती बादोह बा कुल्लो फीहा खालेदुन ।

१—इन्नल्लाज़ी सबकत लहुम मनल्हुस्ना नसखना काना हुमा ।

२—उपरोक्त आयत से ही दोनों आयते निरस्त हैं ।

सूरत हज्ज में २ निरस्त आयतें

१—वा मा अरसलना मिन कबलेका मिर्रसूलिव्वला नबिय्यिन इल्ला ऐज़ा तमना अलकश्श शैतानों फी उमनीय्यतेही ।

१—सनुकरे ओका फ़लातन सा ।

२—यहकुमो बेनहुम ।

२—आयते सैफ से निरस्त ।

सूरत मोमिनून में २ निरस्त आयतें

१ फजरहुम फ़ी ग़मरतेहिम हत्ताहीन ।

१—आयते सैफ से निरस्त ।

२—इदफ़ा बिल्लाती हेया अहसनुस्मय्येअतो ।

२— ,, ,, ,,

सूरत नूर में ७ निरस्त आयतें

१—बलातकबलू लहुम शहादतन अबदा ।

१—इल्लाज़ीना ताबू ।

२—अल्ज़ानी लायनकहो इल्ला ज़ानीयतन ।

२—वनकहुल अय्यामा मिनकुम.

इत्यादि

पाँच हेतु दिये हैं ।

३—वल्लाज़ीना यरमूना अज़्वाजहुम वलम यकुल्लहुम शोहदाओ इल्ला अन फ़ुसुहुम ।	३—वल्ख़ामिस तो अन्ना लानतुल्लाहे अलैहे इन काना मिनल्काज़ेबीन ..... इत्यादि. वल्ख़मिसता अन्ना गज़बल्लाहे अलैहा, इन काना मिनस्सादेकीन व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहे अलैकुम व रहमतुहू ....इत्यादि ।
४—या अय्यो इल्लाज़ीना आमनू ला तदख़ोलु बयुतन ग़ैरा बयूतेकम ।	४—लैसा अलैकुम जुनाहुम अनतदख़ुलू बयूतुन ग़ैरा सस्कूनतिन ।
५—वा कुल लिलमोमिनाते यफज़्ज़ना मिन अबसारेहिन्ना ।	५—नसख़बाज़ोहा वलफवायदे मिन्नसाए ।
६—फइन्नमा अलैहे मा हमला वा अलैकुम मा हमलतुम ।	६—आयते सैफ से निरस्त ।
७—या अय्यों हल्लाजीना आमनू लयस्ताजनोकुमुल्लाज़ीना मलकत एमानोकुम ।	७—अल्लाती ताबेहा वा हेया कौलोहुतआला वा एज़ा बलग़त अत्फालो मिनकोमुलहिलम ।

सुरत फुरकान में २ निरस्त आयतें

१—वल्लाज़ीना ला यदऊना म अल्लाहे एलाहन आख़रा.....इत्यादि ।	१—इल्ला मनताबा वा आमना वा अमेला अमलन सालेहन ।

२—वज़ा खातब हुमुलजाहेलुना कालू सलामन । २—आयते सैफ से निरस्त है (फी हक्किल कुफ्फरे)

सुरत शौरा में ४ निरस्त आयतें

१—वश्शोराओ यतबेओ हुमुलग़ादूना अलाक़ोलेही वा इन्नहुम यक़ूलूना मालायफ़अलून । १—नसख फी शौरा इल मुस्लिमीना इस्तिस्नाहुम इललज़ीना आमनु वा अमेलु अस्वाले हाते वज़करूल्लाहा कसीरा ।

नोट—उपरोक्त चारों आयतें संक्षिप्त मे निरस्त हैं ।

सुरत नमल में १ निरस्त आयत

१—वइन उतुलुलकुरआना । १—आयते सैफ से निरस्त ।

सुरत क़सस में १ निरस्त आयत

१—वा कालू लना आमालोना वलकुम ऐमालोकुम । १—आयते सैफ से निरस्त ।

सूरत अनकबूत में १ निरस्त आयत

१—वा ला तुजादेलू अहललकिताबे इल्ला बिल्लाति हेया अहसनो ।

१—कातिलुल्लज़ीना लायोमिनुना बिल्लाहे वला बिलयौमिल आखरे ।

सूरत रोम में १ निरस्त आयत

१—वा मन कफ़रा फला यहज़ुनका कुफ़रेरी ।

१—आयते सैफ से निरस्त ।

सूरत सजदा में १ निरस्त आयत

१—फ़ आरिज अनहुम वन्तिज़िर इन्नहुम मुन्तजेरून ।

१—आयते सैफ से निरस्त । (लेकिन. ले. सियूती लिखना भूल गये ।)

सूरत अहज़ाब में २ निरस्त आयत

१—वा ला तोतेइल काफ़िरीना वलमुनाफेकीना वा दा इज़ाहुम वा तवक्कल अलल्लाहे ।

१—आयते सैफ से निरस्त है ।

२—ला योहिल्लो लकन्निसा मिम्बादे वा ला अन तवद्दला ।

२—या अय्यो हन्ननबीयो इन्ना अहललना लका अजवाजेका ।

सूरत सबा में १ निरस्त आयत

१—कुल ला तसअलूना अम्या अजरमना वा ला नसअल अम्मा तामलून।	१—आयते सैफ से निरस्त है।

सूरत मलाए कते में १ निरस्त आयत

१—फ़नअन्ता इल्ला नजीर।	१—नसख मानल आयते वा लफ़ज़हा दे आयते सैफ़े।

सूरत साफ़ात में ४ निरस्त आयतें

१-२-फतवल्ला अनहुम हत्ताहीना, वा अबसुरहुम फसौफा युबसेरूनल आयतान।	१-२-दोनों, आयतें सैफ से निरस्त है।
३-४-वतवल्ला अनहुम हत्ताहीना वा अबसुर फ़सौफ़ा युबसेरून।	३-४- ,, ,, ,, ,,

सूरत स्वाद में २ निरस्त आयतें

१—व इनयुहा इलैय्या इल्ला इन्नमा अन्ना नज़ीरूम्मुबीन।	१—आयते सैफ से निरस्त है।
२—वलेतालमुन्नो नबआहा बादा हीन।	२— ,, ,, ,, ,, ,,

सूरत जुमर में ७ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—इनल्लाहा यहकुमो बैनहुम फी मा हुम फ़ीहे यख्तलेफून ।	१—आयतें सैंफ से निरस्त है ।
२—कुल इन्नी अख़ाफ़ो अन उसीतो रब्बी अज़ाबा योमिन अज़ीम ।	२—लयग़फिरा लकल्लाहो मा तक़द्दमा मिन ज़म्बेका वा मा तंअक्खरा ।
३—फाबोदू मा शेतुम मिनदूनेही ।	३—आयतें सैफ से निरस्त है ।
४—फ़ मैंय्युज़ले लिल्लाहो फ़मालहू मिनहाद ।	४— ,, ,, ,,
५—कुल या कौमेमलु अला मकानतेकुम ।	५— ,, ,, ,,
६—अन्ता नहकुमो मिन इबादेका फी मा कानू फ़ीहे यखतलेफ़ून ।	६—नसख़ मानाहो बेआयत्तिस्सैफे ।
७—फ़मनेहतदा फ़लेनफ़सेही वा मन ज़ल्ला फ़ईन्नामा युज़िल्लो अलैहा ।	७—आयते सैफ से निरस्त है ।

सूरत मोमिन में २ निरस्त आयतें

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—फ़स्बिर इन्ना वादल्लाहे हक्कुन।	१—नसखल अमरो बिसब्रे बेआयतिस्सैफे।
२—फ़स्बिर इन्ना वादल्लाहे हक्कुन फा अम्मा नूरेयन्नाका बाज़ुल्लाजी तअदोहुम।	२—आयते सैफ से निरस्त है।

सूरत फ़ुस्सेलत में १ निरस्त आयत

१—वा मा तस्तविल हसनते वलस्सय्येअते।	१—आयते सैफ से निरस्त है।

सूरत शूरा में ८ निरस्त आयतें

—युसब्बेहूना बेहमदेरब्बेहिम वा यसतग़फ़ेरूना लिमन फ़िलअर्जे।	१—युसब्बेहूना बेहम्द रब्बेहिम वा योमिनुना बेही वा यसतग़फ़िरुना लिल्लाज़ीना आमिनु।
२—अल्लाहो हफ़ीज़ुन अलैहिम बा मा अन्ता अलैहिम बिवकील।	२—आयते सैफ से निरस्त है।

निरस्त आयतें

३—फ़ले जालेका फदओ वस्तकिम कया उमिर्तो वा ला तस्वओ अहताआ हुम ।

४—मनकाना यूरीदो हरसल आखेरते इत्यादि ।

५—कुल ला अस अलोकुम ।
अलैहे अजरन इल्लल मवद्दतो फिलकुर्बा ।

६—वल्लाजीना इजा असाबा हुमुल बगयेहुम यनतसेरून दोनों आयतें साथ है ।

७—वलेमन इन्तमरा तसरा बादा जुल्मेही फओलायेका मा अलैहिम्मिन सवील ।

८—फइनआरजू फ़मा अरसलनाका अलैहिम हफ़ीजा ।

निरस्त करने वाली आयतें

३—कातिलुल्लाजीना ला योमिनुना बिल्लाहे वा ला बिलयोमिल आखिरे ।

४—मनकाना युरिदुल अजिलते अज्जलना लहू ।

५- कुल मा सालतोकुम मिन अजरिन फ़हुवालकुम ।

६—(निम्नलिखित आयत से ६-७ दोनों आयते निरस्त हैं)

७- वा ले मन सबरा व ग़फ़रा इन्ना जालेका लेमन अज्मिस उमूर ।

८—आयते सैफ से निरस्त है ।

सुरत जखरफ में २ निरस्त आयतें

१—फ़जरहुम यखूजूना वा यलअबू ।

२- फ़स्फ़ह अनहुम वा कुल सलाम ।

१—आयते सैफ से निरस्त है ।

२— " " "

सुरत दुखान में १ निरस्त आयत

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—फरतकिब इन्नाहुम मुरतकेबून ।	१—आयते सैफ से निरस्त है ।

सुरत जासिया में १ निरस्त आयत

१—कुल लिल्लाजीना आमनु यग़फेरू लिल्लाज़ीना ल। यरजूना अय्यामिल्लाहे ।	१—आयते सैफ से निरस्त है (नज़लत फी उमर बिन खिताब)

सुरत अहकाफ में २ निरस्त आयत

१—कुल मा कुन्तोबि दम्मिनर्रुसले वा मा अदरी मा यफअलो बी वा ला बेकुम इन अतबेआ इल्ला मा यूहा अलैय्या व मा अना इल्लानजी रुम्मुबीन ।	१—इन्ना फ़तहना लका फतहम्मुबीना लेयगफिरा लकल्लाहो मा तक़द्दमा मिन ज़म्बेका वा मा तअख्खरा ।
२—फस्बिर कमा सबरा ऊलुलअज़्मे मिनर्रुसले ।	२—आयते सैफ से निरस्त है ।

सुरत मुहम्मद में १ निरस्त आयत

१—फ़ इम्मा मन्ना बादो वइम्म फिदा मा ।	१—आयते सैफ से निरस्त है ।

(नोट—कतिपय विद्वानों का कथन है कि इस सूरत में २ आयतें निरस्त हैं)

२—वा ला यसअलोकुम अमवालेकुम ।	२—अंय्यस अलकोमूहा फ़योहफिकुम तबहू लू औ युखरे जो अज़्ग़ानकुम ।

सुरत काफ़ में २ निरस्त आयतें

१—कस्बिर अला मा अक़ूलूना ।	१—आयते सैफ से निरस्त है ।
२—नहनो आलमो मा यक़ूलूना तक मोहकिम है वा मा अन्ता अलैहुम बे जब्बार ।	२—आयत का अन्तिम भाग आयते सैफ से निरस्त है ।

सुरत ज़ारेयात में २ निरस्त आयतें

१—वा फी हमवालेहिम हक्कुल लिस्सायले वल महरूमे ।	१—आयते ज़कात से निरस्त है ।
२—फ़तवल्ला अनहुम फमा अन्ता बिमलूम ।	२—वज़कुर फईन्नज़िकरा तनफउलमोमिनीन ।

सुरत तूर में १ निरस्त आयत

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—वस्बिर लेहुक्मे रब्बेका फईन्नका बेआयुनिना ।	१—नसखत्त बरो मिन्हा बेआयतेस्सैफे ।

सुरत नजम में २ निरस्त आयतें

१—फआरिज अम्मन तवल्ला अनजिक्रेना ।	१—आयते सैफ से निरस्त है ।
२—वा इन्ना लैसा लिलइन्साने इल्ला मा सआ ।	२—वल्लाज़ीना आमनु वत्तबातहुम जुरिय्यतोहुम बईमानु इत्यादि ।

सुरत वाकिया में १ निरस्त आयत

[मकातल बिन सुलेमान की दृष्टि में]

१—सुल्लातुमं मिनल अव्वलीन वा कलीलुल मिनल आखेरीन ।	१—सुल्लातुम मिनल अव्वालीन वा सुल्लातुम मिनल आखेरीन ।

सुरत मुजादला में १ निरतस्त आयत

१—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनु ईज़ा नाजंतो मुर्ररसूलो फ़कद्दमू बेनायदे नज़्वाकुम सदकतन ।

१—आ अशफक्तुम अनतकद्दमू बेनायदै नज़्वाकुम सदकात इत्यादि ।

सुरत हशर में १ निरस्त आयत

१—मा अफ़ा अल्लाहो अलारसूलेही मिन अहलिल कुरा ।

१- यस अलूनका अनिल अनफ़ाले ।

सुरत मुमतहिन्ना में ३ निरस्त आयतें

१—ला यनहा कुमुल्लाहो अनिल्लाज़ीना कातेलुकुम फ़िद्दीने । इत्यादि ।

२—या अय्यो हल्लाज़ीना आमनू एज़ा जाआको-मुलमोमिनाते मुहाजेरातिन फमनहेनुहुन्ना ।

३—व इन फातेकुम से बेही मोमेनून तक

१—इन्नमा यनहा कुमुल्लाहो अनिल्लाज़ीना कातेलुकुम फ़िद्दीने वा अखरजुकुम मिनदेयारेकुम ।

२—फला तर्जेऊहुन्ना अलल कुफ्फारे इत्यादि ।

३ आयते सैफ से निरस्त है ।

सूरत नून में २ निरस्त आयतें

१—फ़ज़ुनीं वा मैंय्यक ज़े बो बेहादिलहदीसे ।	१—आयते सैफ से निरस्त है ।
२—फ़स्बिर लुहुकमें रब्बेका ।	२— ,, ,, ,, ,,

सूरत मुआरिज में १ निरस्त आयत

१—फज़रहुम यखूज़ू वा यलअबु ।	१—आयते सैफ से निरस्त है ।

सूरत मुज्ज़म्मिल में ६ निरस्त आयतें

१—या अय्योहल मुज्ज़म्मिलो कुमिल्लेल ।	१—इल्ला कलीला इत्यादि ।
२—वल कलीलो बिन्निस्फ़े वन्निस्फ़े इत्यादि ।	२—अविन्कुसमिन्हो कलीला ।
३—वा कौलोहू सकीला-	३ युरीदुल्लाहो अय्यो कफ़फिका अनकुम ।
४—वह जुरहुम हजरन जमीला ।	४—आयते सैफ से निरस्त है ।
५—व ज़र्नी वल मुकज्ज़ बीन ।	५— ,, ,, ,,
६—फमन शाआइत्तजा इला रब्बेही सबीला ।	६—वा मा तशाऊना इल्ला अंय्यशा अल्लाहो वकीला बेआयतिस्सैफे ।

सूरत मुद्दस्सिर में १ निरस्त आयत

१—ज़रनी वा मन खलकतो वहीदा।

१—आयते सैफ़ से निरस्त।

सूरत कयामत में १ निरस्त आयत

१ ला तोहरिक बेही लेसानेका लितीजलबेही।

१—नसखा मानाह ला लफ़ज़ेहा बकोलेही सुनक-रेवोका फ़लातनसा।

सूरत इन्सान में २ निरस्त आयतें

१—फ़स्बिर लहुक्मे रब्बेका वा ला तुतेआ मिनहुम आसेमन औ कफ़ूरन।

१- आयते सैफ से निरस्त है।

२—इन हाज़ेही तज़किरातुन फ़मन शा अत्तक्ज़ा इला रब्बेही सबीला।

२— ,, ,, ,,

सूरत अबस में १ निरस्त आयत

१—कल्ला इन्नाहा तज़किरातुन; फमन शा आ ज़िकरह।

१—वा मा तशाऊना इल्ला अंय्म शा अल्लाहो रब्बिल आलेमीन।

सूरत तारिक में १ निरस्त आयत

निरस्त आयतें	निरस्त करने वाली आयतें
१—फयहिलिल काफिरीना अमहिल हुम रूवैदा।	१—आयते सैफ से निरस्त है।

सूरत आला में निरस्त नहीं है किन्तु

१—सूरत आला में नासिख है मुनकरे ओका फ़लातन्स।	१—मनसुख नहीं।

सूरत ग़ाशिया में १ निरस्त आयत

१—लसता अलैहिम बेमोसैतरिन	१—आयते सैफ से निरस्त है।

सूरत तीन में १ निरस्त आयत

१—अलेसल्लाहो बे अहकमुलहाकेमीन।	१—आयते सैफ से निरस्त है।

सूरत असर में १ निरस्त आयत

१—इन्नल इन्साना लफ़ी खुसरिन ।

१—इलल्लजीना आमनु वा अमेलुस्सालेहाते ।

सूरत काफिरून में १ निरस्त आयत

१—लकुम दीनोक़ुम वा लेया दीन ।

१—आयते सैफ से निरस्त है ।

यद्यपि हम निरस्त आयतों के सम्बन्ध में पूर्व लिख चुके थे किन्तु निरस्त आयतों को एक स्थान पर संकलित करने हेतु हमने ७०० वर्ष पूर्व श्री अल्लामा जलालुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद सियूति द्वारा लिखित पुस्तक "लबाबन नक़ूल फ़ी अस्बाबिन्जूल के निरस्त प्रकरण से उक्त उद्धरण किया है । उक्त पुस्तक में १६२ आयतों को निरस्त बताया गया है । श्री सियूति जैसे विख्यात विद्वान् के कथन के सन्मुख आधुनिक मुस्लिम व्याख्याताओं के लेखों को किसी भी स्थिति में प्रामाणिक नहीं माना जा सकता ।

श्री सियूती ने जिन १६२ आयतों को निरस्त कहा है, वे सप्रमाण हैं, और इनको संकलित करने वाले श्री अबी अब्दुल्ला मुहम्मद बिन हजम हैं ।

कुर्आन में परस्पर विरोधी आयतें

—:—

गत प्रकरण में हम कुर्आन की निरस्त आयतों की विस्तृत व्याख्या एवं उद्धरण प्रस्तुत कर चुके हैं, जो कि वास्तव में वह प्रकरण भी कुर्आन के विरोध को समाप्त करने हेतु ही किया गया है; किन्तु वह असफल रहा और आज भी कुर्आन में विरोध स्पष्ट दिखाई देता है। उदाहरण के रूप में हम कुर्आन की कुछ परस्पर विरोधी आयतें यहां पर प्रस्तुत करते हैं।

कुर्आन में एक आयत विभिन्न स्थानों पर दोहराई गई है, जो निम्नानुसार है :—

इन्ना रब्बाको मुल्ला हुल्लाजी खलकस्स मावाते वल अरज्ञा फी सित्तते अय्यामिन सुम्मस्तवा अलल अर्शे।

कुर्आन, पारा ८, रकू ७/१४ कुर्आन, पारा ११, रकू १/६
कुर्आन, पारा १९, रकू ५/३ कुर्आन, पारा २१, रकू १/१४
कुर्आन, पारा २६, रकू ३।१७
कुर्आन, पारा २७, रकू १।१७ इत्यादि।

अर्थात्—वह (अल्ला) जिसने पैदा किये आसमान और धरती ६ दिन रात की अवधि में। दिन का तात्पर्य सूर्योदय से सूर्यास्त होने का है। प्रथम वचन सत्य और विख्यात है कि कुन (हो जा) मात्र के प्रयोग से उत्पन्न करने की शक्ति रखने वाले खुदा ने धीरे-धीरे उत्पत्ति की और फिर खुदा ने अर्श (खुदा का

सिंहासन) का निर्माण किया। उसकी आज्ञा अर्श पर प्रभावशील हुई अथवा वह (अल्ला) स्वयं सिंहासन पर आरूढ़ हुआ..... और वास्तविकता यह है कि अर्श पर खुदा का बैठना ही एक उसका गुण है और यह 'मुतशाबेहात' कुर्आन में से है ('मुतशा-बेहात' उसे कहते हैं जिसका अर्थ केवल खुदा के सिवा और कोई नहीं जानता है) हम उसका विश्वास करते हैं और उसका स्पष्टीकरण खुदा पर ही छोड़ते हैं।

तफ़सीर कादरी भाग १, पृष्ठ ३११

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी में भी वही बात लिखी है जो कि तफसीर कादरी में है किन्तु कुछ विशेष भी लिखा है जो कि निम्नानुसार है:—

अहले सुन्नत का कथन है कि खुदा का सिंहासन पर बैठना उसका एक गुण है, (अर्थात् उसका विवरण, अवस्था और स्थिति को नहीं समझा जा सकता है) उस पर विश्वास करना अनिवार्य है। उसका ज्ञान अल्लाह पर छोड़ना चाहिये।

एक मनुष्य ने इमाम मालिक बिन अंस से खुदा के सिंहासन पर बैठने का विवरण पूछा। इमाम ने क्षणिक मस्तक नवां कर कहा—इसके अर्थ ज्ञात है किन्तु उनका समझना असम्भव है। इस बात पर विश्वास अनिवार्य है और इसको पूछना बिदअत्त (इस्लाम के विरूद्ध मानसिक कल्पना) है। मेरे विचार में तू पथभ्रष्ट है। यह कहकर इमाम ने उसे अपनी सभा से बाहर निकलवा दिया।

तफ़सीर मज़हरी भाग ४, पृष्ठ ३१४–३१५

विश्व ६ दिन में किस प्रकार बनाया ?

आयत :—

होवल्लाज़ी खलक लकुम्मा फिलअर्ज़े जमीआ सुम्मस्तवा इलस्स-मासेफ़सव्वाहुन्ना सब्आ समावात। कुर्आन, पारा १, रकू ३/३

अर्थात्—खुदा वह है जिसने अपनी शक्ति से बिना कारण (अभाव से) पैदा की तुम्हारे लाभ के लिये जो वस्तुएँ पृथ्वी में हैं, पहाड़-नदियें-वनस्पत्तियां-पशु। फिर पृथ्वी उत्पन्न करने के पश्चात् आसमान उत्पन्न करने का प्रयास किया और ठीक सात आसमान बनाये।

तफ़सीर कादरी भाग १, पृष्ठ ९

अर्थात्—ख़ुदा ने पहिले धरती का निर्माण किया, उस पर नदी पहाड़ जंगल और पशु बनाये और इसके पश्चात् आसमान का निर्माण किया।

उक्त आयत का यही अर्थ तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ ७४/१ और तफसीर जलालैन पृष्ठ ७ व तफसीर कुरानुल अज़ीम पृष्ठ ४ पर है।

उक्त आयत के विरोध में कुर्आन की निम्न लिखित आयत देखिये :—

खलकल अरज़ा फी योमैंने वा तजअलूना लहू अन्दादन ज़ालेका-रब्बुल आलमीन। वा जअ अला फ़ीहा खसिया मिनफ़ौकेहा बाबारका फ़ीहा वा कद्दरा फीहा अकवातहा फी अरबअते अय्या-

मिन सवाअन लिस्सायेलीन । सुम्मस्तवा एलस्समाये फहेया दुखानुन फ़कजा हुन्ना सब्आ समावातिन फीयौमैने ।

कुर्आन पारा २४, रकू २।१६

अर्थात्– ऐ मुहम्मद ! कह दो कि तुम नहीं विश्वास करते उस पर जिसने उत्पन्न की भूमि दो दिन में ..... "इमाम अबुल-लैस ने लिखा है कि रविवार को पृथ्वी उत्पन्न की और सोमवार को फैला दी ।" और बनाते हो उसके लिये अपनी जिव्हा से दूसरा खुदा । खुदा वह है जिसने उत्पन्न की है पृथ्वी और सारी सृष्टि का पालनकर्ता है और उत्पन्न किये उसने पृथ्वी में पहाड़ ऊँचे व दृढ़ और वृद्धि प्रदान की पहाड़ो में, चश्मों से, खानों से अथवा भूमि को बृद्धि दी, वृक्षों से, खेतों से, पशुओं और नहरों से, उपलब्ध कर दी भूमि पर रहने वालों को खाद्य वस्तुएँ । अर्थात् हर नगर, हर ग्राम और हर स्थान के लोगों के हेतु जीवनयापन का साधन जैसे गेहूं-जौ-चावल-खजूर और मांस व इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं चार दिन में । फिर प्रयास किया आसमान को उत्पन्न करने के लिये, वो धुंआ था अर्थात् पानी की भाप.....ज़ादल मसीर में है कि खुदा ने जब जल को उत्पन्न किया तो उस पर अग्नि को प्रभावित कर दिया वह पानी को उबाल में लाई और जो भाप उत्पन्न हुई उससे खुदा ने आसमान उत्पन्न किया ।" इसी सम्बन्ध में ऐनल मुआनी में है "खुदा ने एक हरित रत्न उत्पन्न कर उसकी ओर आतंकपूर्ण दृष्टि से देखा तो वह पिघल कर लावा की तरह बह निकला और फिर उस पर आग प्रभावित कर दी, जिससे उबाल आया और भाप व झाग उठे, झाग से भूमि और भाप से आसमान उत्पन्न किये ।

तफ़सीर कादरी, भाग २. पृष्ठ ३७५–३७६

इस पर विवरण देखिये--

उपरोक्त आयत के सम्बन्ध में तफसीर हक्कानी में लिखा है कि "खुदा ने भूमि उत्पन्न करने के पश्चात् उस पर पहाड़ स्थापित किये और उसकी वृद्धि और लाभ को अंककर उत्पन्न वस्तुओं का निर्धारण किया। सब काम मिल कर चार दिन में पूर्ण हुआ। इसके पश्चात् आसमान निर्माण की ओर आकृष्ट हुआ।"

तफ़सीर हक्कानी, पारा २४, पृष्ठ ३९

इस आयत में स्पष्ट है कि प्रथम दो दिनों में भूमि बनाई और चार दिनों में पहाड़-नदियें-खानें वनस्पति-पशु और प्रत्येक ग्राम-नगर व स्थानों पर रहने वाले लोगों के लिये जीवनोपयोगी खाद्य वस्तुएं निर्माण की और इसके पश्चात् दो दिनों में आसमान उत्पन्न किया। कुछ मुस्लिम व्याख्याकारों ने भूमि उत्पत्ति के दो दिनों में चार दिनों में सम्मिलित करके इन छः दिनों की गणना को चार दिनों में ही सीमित कर दिया है, जो कि किसी भी प्रकार ठीक नहीं हैं क्योंकि उक्त छः दिनों का समस्त कार्य पृथक-पृथक है, जैसे प्रारम्भ के दिनों में तो भूमि उत्पन्न की (इमाम अबुललैस ने कहा कि रविवार को पृथ्वी बनाई व सोमवार को फैला दी) पत्पश्चात् चार दिनों में पहाड़-नदियें खानें-वनस्पति-पशु एवँ जीवनपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया। अर्थात्--इन चार दिनों का सारा कार्य ही पृथक है। इसके पश्चात् दो दिनों में आसमान उत्पन्न किया जो कि निर्विवाद सत्य है। इस प्रकार कुल मिला कर गणित के अनुसार ८ दिन होते हैं, जब कि अनेक आयतों में ६ दिन ही कहा गया है।

इसी सम्बन्ध में तफसीर बयानुल कुर्आन के लेखक ने लिखा है कि 'व्याख्याकारों ने आम रूप से यह त्रुटि की है कि चार दिन में प्रारम्भिक दो दिनों को सम्मिलित समझा है और फिर आयत बारा के दो दिन लेकर कुल ६ दिन बनाये हैं,अर्थात चार दिन में भूमि उत्पन्न हुई और दो दिनों में आसमान। यदि पहले चार दिन प्रारम्भिक दो दिनों सहित होते तो आयत बारा में यौमैने (दो दिन) के स्थान पर सित्तते अय्यामिन (६ दिन) लिखा होना चाहिये था। इस बंटवारे के चार दिन में भूमि और दो दिन में आसमान उत्पन्न हुए। इसका कोई प्रमाण नहीं है। अपितु यहां पर यह कथन है कि आज से १३०० वर्षो पूर्व किसी के भी मस्तिष्क में यह विचार उत्पन्न नहीं था।

तफ़सीर बयानुल क़ुर्आन पारा २४ सूरत
हामीम सजदा, पृष्ठ १६४७

उपरोक्त उद्धरण से यह स्पष्ट है कि प्रारम्भिक दो दिनों को चार दिनों में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए और जो ऐसा कर रहे हैं, वे भूल पर हैं। उपरोक्त आयतों का विरोधाभास स्पष्ट है। इसी प्रकार इन आयतों का विरोध करनेवाली एक और आयत प्रस्तुत करते हैं। विरोध इस प्रकार है कि ईन आयतों में भूमि पहले और आसमान पश्चात् बनाये लिखा गया है, किन्तु अब जो आयत लिख रहे हैं उसमें आसमान पहिले और भूमि एवं अन्य वस्तुओं की उत्पत्ति बाद में बताई गई है।
आयत इस प्रकार है:-

आ अन्तुम अशद्दो खल्कन अमिस्समाओ बनाहा रफ़ाआ समकहा फ़सव्वाहा वा अग़तशा लैलहा वा अखरजा जुहाहा, वलअर्ज़

वादा ज़ालिका दहाहा । अख़रजा मिन्हा माआहा वा मरआहा वलजेबाला अरसाहा मता अल्लाकुम वले अनआमेकुम ।

क़ुर्आन पारा ३०, सूरत नाजेआत रकू २ ४

अर्थात्—क्या तुम क़यामत से अस्वीकृत करने वालो ! अत्यधिक कठोर और क्रूर हो उत्पत्ति के कारण से अथवा आसमान तुम्हारे पर बनाया बड़े महत्व से, उसे उठाया और उसकी छत को अर्थात् उसे भूमि के ऊपर बड़े अनुमान से ऊँचाई तक बनाया, फिर उसे सीधा और समान कर दिया बिना किसी विघ्न और अवरोध के, और उसकी रात्रि को अंधकारमय किया और उसके दिन को प्रकाशित किया, और भूमि को आसमान उत्पन्न करने के पश्चात् बिछाया और फैलाया। बिछाई हुई भूमि से निकाला उसका पानी, चश्में, नदियां फाड़ कर, और निकाला गोचर भूमि और पहाड़ों को दृढ़ और स्थिर कर दिया। तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लिये।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पारा ३० पृष्ठ ६०८

इस आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि "आसमान को उत्पन्न करने के पश्चात् भूमि को अल्ला ने बिछाया और उसके पश्चात् पहाड़, चश्में, नहरें, जंगल और गोचर स्थानों को बनाया।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३०, पृष्ठ २९३–२९४

ऐसा ही उल्लेख कि 'भूमि की उत्पत्ति आसमान के बाद हुई बयानुल कुरआन पृष्ठ १९२८ में लिखो है।

इस आयत के पूर्व उल्लेखित आयत में यह वर्णन कि खुदा ने छः दिनों के प्रथम दो दिनों में भूमि उत्पन्न की और उसके पश्चात् के चार दिनों में भूमि पर पहाड़, जंगल, नदियें, गोचर स्थान, पशु और प्रत्येक ग्राम-नगर व स्थानों के लोगों के लिये जीवनोपयोगी खाद्य वस्तुएं जिनमें गेहूँ-जौ-चांवल खजूर व माँस बनाये और उसके भी बाद दो दिनों में आसमान उत्पन्न किया, जब कि ऊपर वर्णित आयत में यह कहा गया है कि पहिले खुदा ने आसमान बनाये उसकी छत को अनुमान से धरती से ऊँचाई पर पहुंचाया उसे सीधा और समान बनाया रात्रि अन्धकारमय की और दिन को प्रकाशित किया और इसके पश्चात् भूमि को बिछाया और फैलाया और फिर इसके पश्चात् धरती को फाड़ कर जल निकाला, नहरें और चश्मे बनायें, गौचर भूमि और पहाड़ बनाये और उन्हें दृढ़ व स्थिर कर दिया ।

सोचने का विषय है कि मुस्लिम व्याख्याकारों ने जो पृथ्वी को फैलाने की कल्पना की वो नितान्त ही असत्य होकर भ्रमपूर्ण है, क्योंकि पहली आयत की व्याख्या में स्पष्ट कहा गया है कि एक दिन में भूमि बनाई व एक दिन में बिछाई और जब भूमि पर पहाड़, चश्में, नहरें, जंगल और पशु भी बना दिये गये थे तो फिर भूमि फैलाने का प्रश्न ही नहीं रहता है। आयत में भी कहा गया है कि आसमान उत्पन्न होने के पूर्व ही उपरोक्त समस्त वस्तुएं बनाई जा चुकी थी और जब यह उपरोक्त समस्त वस्तुएं उत्पन्न हो गई तब कहीं जाकर खुदा ने बाद में आसमान उत्पन्न किया ।

इससे स्पष्ट होता है कि गत वर्णित तीनों आयतों में

परस्पर स्वयं इतना उलझाव, विरोध व गोरखधंधा है कि जिसे न तो आज तक कोई मुस्लिम व्याख्याकार सुलझा सका है और न सुलझा ही सकेंगे। अतः विरोध स्पष्ट है–ज़मीन पहले बिछा दी गई थी जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं।

मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है :-

इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि मनुष्य कर्मों के प्रति कुर्आन की आयतों में कितना मतभेद है, क्योंकि कुर्आन की कुछ आयतें कर्म सम्बन्धी स्वतन्त्रता देती हैं और कुछ आयतें परतन्त्र रखती है। आयत इस प्रकार है:-

वा मा असाब कुम्मिसीबतिन। फवेमाकसबतऐदीकुम वा याफू अनकसीर। कुर्आन पारा २५, रकू ४/५

अर्थात्–ऐ मुसलमानों! जो तुम्हें कष्ट पहुंचता है, अर्थात् माल में, शरीर में या परिवार में आपत्ति आती है, वह तुम्हारे कर्मों अथवा पापों के फलस्वरूप है। किन्तु ख़ुदा बहुत से पाप क्षमा कर देता है। **तफसीर कादरी भाग २, पृ. ३९४**

फिर निम्न आयत में कर्म स्वातन्त्र्य की पुष्टि है। आयत इस प्रकार है :—

मा असाबका मिन हस्नातिन फमेनल्लाहे मा असाबका मिनसय्येअतिन फ़मिन नफ़सेका। कुर्आन पारा ५, रकू ११।८

अर्थात्–जो कुछ तुझे लूट और विजय प्राप्त होती है, वह खुदा की कृपा से है और जो पराजय व हत्या पहुंचती है वो तेरे अपने कारण से है। कतिपय व्याख्याकार लिखते हैं कि 'ऐ इन्सान जो भलाई तुझे पहुंचती है वह खुदा की कृपा से है और जो यातना पहुंचती है वो तेरे कारण से है।

तफ़सीर कादरी, भाग १, पृ. १८०

तफसीर मज़हरी ने भी उक्त आयत का यही अर्थ लिखा है कि "जो तुझे भलाई पहुँचती है वह खुदा की कृपा है और जो तुझे दण्ड प्राप्त होता है वह तेरे कर्मों का फल है।"

तफ़सीर मज़हरी भाग ३ पारा ५, पृ. १७४-१७५

उपरोक्त आयतों में यह कहा गया है कि मनुष्य को जो सुफल और भलाई प्राप्त होती है वह खुदा की कृपा है तथा जो कष्ट-यातना और दण्ड प्राप्ति है वह उसके अपने कर्मों के परिणामस्वरूप है, किन्तु निम्न आयत में ठीक इसके विपरित कहा गया है। आयत इस प्रकार है:—

व इन तुसिब्हुम हसनतं य्यकूलो हाजेही मिन इन्दिल्लाहे व इन तुसिब्हुम सय्येआतुं य्यकूलो हाजेही मिनइन्देका कुल कुल्लुमिन इन्दिल्लाहे। कुर्आन, पारा ५, रकू ११/७

अर्थात्-उक्त आयत के सम्बन्ध में तफसीर मज़हरी में कहा गया है कि "जब हज़रत मुहम्मद सा० मदीने चले गये तो यहूदियों और मुनाफ़ेकों ने कहा कि जब से यह व्यक्ति और इसके साथी यहां आये हैं हमारे फलों और खेतों में लगातार हानि

होती चली आ रही है, यह इन लोगों के दुर्भाग्य की छाया है। इस प्रसंग में उक्त आयत उतरी कही जाती है। यदि उनको कोई भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह खुदा की ओर से है और यदि कोई बुराई पहुँचती है तो कहते हैं यह तेरी (मुहम्मद की) छाया के कारण है। ऐ मुहम्मद ! आप कह दें भलाई और बुराई सब अल्ला की ओर से हैं।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ३, पृष्ठ १७३-१७४

उक्त आयत के सम्बंध में ऐसा ही तफ़सीर कादरी, भाग १, पृष्ठ १८० में भी लिखा है।

उपरोक्त आयतों में कहा गया है कि भलाई ख़ुदा की ओर से तथा बुराई मनुष्यों के कर्मों का फल हैं, किन्तु उक्त बाद वाली आयत में तो स्पष्ट कहा गया है कि भलाई और बुराई सब अल्ला की ओर से हैं। इसी प्रकार की अन्य आयतें भी है जो कि पूर्व आयतों का समर्थन करती हैं।

आयत इस प्रकार हैं :—

कुललंय्यो सीबना इल्ला मा कतबल्लाहोलना।

कुरआन पारा १०, रकू ७।१३

अर्थात्- ऐ मुहम्मद ! उनसे कह दो कि नहीं पहुँचेगी हमें मुसीबत, किन्तु जो कुछ ख़ुदा ने हमारे लिये सुरक्षित तख़्ती में लिखा है।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १ पृष्ठ ३६५

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी में कहा गया है कि "ऐ मुहम्मद ! आप कह दीजिये हम पर कोई प्रभाव (अच्छा या बुरा) नहीं पड़ सकता, किन्तु वही जो भाग्य में हमारे लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टी) में लिख दिया है। ख़ुदा ने।"

तफ़सीर मज़हरी भाग ५ पृष्ठ ३०१

इसी प्रकार एक अन्य आयत:—

मा असाबा मिम्मुसीबतिन फिल अर्जे वा ला फी अनफुसेकुम इल्ला फी किताबिम्मिन कबले अन्नबर्रा अहा ।

कुर्आन पारा २७, रकू ३/१९

अर्थात्—नहीं पहुंचती है और न पहुंचेगी पृथ्वी में कोई मुसीबत और न तुम्हारे अपनत्व पर कोई मुसीबत किन्तु लिखा गया है लौह महफ़ूज़ में उस मुसीबत को तुम्हारी पृथ्वी और तुमको उत्पन्न करने के पूर्व ।

तफ़सीर क़ादरी भाग २ पृष्ठ ५११

उक्त आयत के सम्बन्ध में इसी प्रकार तफ़सीर हक़्क़ानी में लिखा है कि जो कोई मुसीबत पृथ्वी में आती है जैसे दुष्काल-वायुरोग अशांति आदि या मुसीबत तुम्हारे अपनत्व पर पड़ती है जैसे कि बीमारी, अर्थ--संकट, सन्तान और सहयोगी की मृत्यु, अप्रतिष्ठा और अपमान तथा असफलता का प्राप्त होना तुम्हारे पृथ्वी पर आने के पूर्व ही भाग्य की पुस्तक में लिखा होता है ।

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा २७ पृष्ठ ७२

अगली आयत में इसको ओर भी स्पष्ट किया गया है।

आयत इस प्रकार है:---

मा असाबा मिम्मुसीबतिन इल्ला बइज़्निल्लाह।

.कुर्आन पारा २८ / रकू २।१६

अर्थात्—नहीं पहुंचती है किसी को कोई मुसीबत किन्तु ख़ुदा के आदेश से।

तफ़सीर क़ादरी भाग २, पृष्ठ ५२७

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा २८, पृष्ठ १०६ में भी यही लिखा हुआ है।

एक और अन्य आयत:—

वा नबलूकुम बिश्शर्रे वलख़ैरे फ़ितनातन।

.कुर्आन, पारा १७, रकू ३।३

अर्थात्--हम तुम्हारी परीक्षा लेते हैं बुराई के माध्यम से अर्थात् आपदाओं और यातनाओं में बन्दी बना कर और परखते हैं तुम्हें धन-सम्पत्ति और पुरुस्कार देकर।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ ५५

इसी प्रकार की एक और अन्य आयत:--

वा मा काना लेनफ़िसन अन्तोमिना इल्ला बेइज़्नल्लाहे यज्अलु-रिजसा अलल्लज़ीना लायाकिलुन।

.कुर्आन, पारा ११, रकू १० १५

अर्थात्—और नहीं है किसी मनुष्य को कि विश्वास करे किन्तु खुदा के आदेश से, और अपवित्र कर देता है उनके मनों को जो ज्ञान हीन हैं। तफ़सीर कादरी, भाग १, पृ. ४५१

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी, भाग ५, पृ. ५४६ में भी इसी प्रकार लिखा है।

उपरोक्त वर्णित एवं उद्धृत आयतों के समान कुर्आन में अनेक आयतें हैं जिनमें कहा गया है कि खुदा मनुष्यों के कानों आंखों और मन-मस्तिष्कों पर मोहरें लगा देता है ताकि वो न समझ सकें और खुदा बीमारी बढ़ा देता है और कुर्आन का पाठ करते समय कानों पर आवरण डाल देता है, ताकि वे समझ न सकें।

उपरोक्त आयतों को उद्धृत करने का हमारा यह मन-तव्य है कि संसार में जो भी भला-बुरा होता है; वह सब खुदा के आदेश से ही होता है। पहली दो आयतों में मुसीबत कर्म फल का परिणाम बताई गई है, और अन्त वाली आयतों में सब खुदा के आदेश से हैं।

कर्मफल प्रदाय में विरोध

प्रथम आयत निम्नानुसार है:—

वा युज़ोअलकिताबो वा ज़ीया बिन्नविय्यीना वश्शोहदाए वा कुज़ीयाबैनहुम बिलहक्के वा हुम ला युज़लमून। वा युफ्फेयत कुल्लो नफसिम्मा अमेलत। कुर्आन, पारा २४, रकू ७।४

अर्थात्—और रखे जायेंगे कर्मपत्र और लायेंगे पैग़म्बरों को और साक्षियों को, पैग़म्बरों के दावों को सत्य प्रमाणित करने के लिये और न्याय व सत्य के साथ मनुष्यों के कर्मों का निर्णय किया जायेगा और उन पर अन्याय नहीं होगा और प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मानुसार ही फल दिया जायेगा।

तफसीर कादरी भाग २, पृष्ठ ३५५

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफसीर हक़्क़ानी, पारा २४, पृ. ८३ में भी इसी प्रकार लिखा है।

कर्मफल पूरा दिया जायेगा इस सम्बन्ध में एक और निम्न आयत :—

फ़मैंय्यामल मिस्काला ज़र्रातिन खेरय्यंरह, फ़मैंय्यामलो मिस्काला ज़र्रातिन शरय्यंरह। कुर्आन पारा ३०, सूरत जिलज़ाल

अर्थात्—जो कोई कर्म करे, छोटी चींटी के समान सुकर्म और जो कोई कुकर्म करे छोटी चींटी के समान, दोनों का फल पूरा पूरा मिलेगा। इब्ने अब्बास ने कहा कि संसार में कोई मोमिन या काफ़िर ऐसा नहीं हैं कि जिसने भलाई-बुराई न की हो। खुदा कयामत के दिन उसके कृत्यों को दिखायेगा परन्तु मोमिन के कुकर्म क्षमा कर देगा और नेक कर्मों का फल उसे देगा। और काफ़िर के सुकर्म निरस्त कर देगा और बुरे कृत्यों के लिये उसे कष्टदायक दण्ड देगा।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ ६४४

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी में इस प्रकार है कि पस काफ़िरों के कर्मों का कोई फल नहीं मिलेगा। जब वह खुदा के पास पहुंचेंगे तो अल्ला उनके कुकर्मों का पूरा-पूरा दंड देगा अर्थात् यदि अपराधों की क्षमा न हुई तो जिसने कण मात्र भी अपराध किया होगा तो उसे उसका दण्ड भोगना पड़ेगा।

उपरोक्त वाक्य में हमने अपराधों के क्षमा न होने का अनुबन्ध लगाया है, क्योंकि आयतों और हदीसों से बिना क्षमा-याचना वा पश्चाताप के अपराधों से मुक्त होना प्रमाणित है, जैसे शिर्क (दूसरा ईश्वर मानना) के अतिरिक्त खुदा समस्त अपराध क्षमा कर देता है।

मिर्जीया सम्प्रदाय का कथन है कि मोमिन चाहे फ़ासिक (मिथ्याभाषी) ही क्यों न हो, अल्ला उसे कष्टदायक दण्ड न देगा और मोमिन को विश्वास होते हुए कोई अपराध उसे हानिकारक नहीं होगा।

तफ़सीर मज़हरी, पारा ३० पृ. ५०४-५०५

गत आयतों में यह कहा गया था कि मनुष्यों को उनके भले और बुरे कर्मों का फल समान रूप से दिया जायेगा तथा सत्य व न्याय के साथ सबका निर्णय होगा और किसी के साथ अन्याय नहीं होगा; किन्तु आगत आयतों को देखिये। वह इस प्रकार है:—

इन्नल्लाहा लायग़फिरो अय्युशरका बेही वा यग़फिरो मा दुना ज़ालेकालेमय्यशाओ। कुर्आन पारा ५, रकू १८।१५

अर्थात्—अल्लाह शिर्क (दूसरा ईश्वर मानना व भक्ति करना) को क्षमा नहीं करता है और इसके अतिरिक्त जो अपराध है उनको जिसे चाहे क्षमा कर देता है।

तफ़सीर कादरी भाग १, पृष्ठ १६६

उक्त आयत की व्याख्या में तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि तौबा करने से शिर्क (दूसरा ईश्वर मानना व उसकी भक्ति करने वाला) भी क्षमा हो जाता है।

तफ़सीर मज़हरी भाग ३, पृ. १२७

इसके आगे तफ़सीर मजहरी के लेखक ने लिखा है कि "बग़वी ने कलबी के प्रमाण से लिखा है कि—वहशी बिन हराम और उसके मित्रों ने कहा हमें हज़रत हमज़ा को मारने के सम्बन्ध में अत्यधिक लज्जा अनुभव हुई और मुसलमान होने में निम्न लिखित बातों की रुकावट है, जैसे हमने खुदा के स्थान पर दूसरों की उपासना की और निरपराधियों का वध भी किया तथा व्यभिचार किया। कुर्आन की पूर्वोक्त आयतें हमें मुसलमान होने से रोकती हैं। इस पर यह आयत उतरी कही जाती है। 'इल्लाम तोबा वा अमेला अमलन स्वालेहन' अर्थात्—जो कोई तौबा करे और नेक काम करे तो बाद में उनके पूर्व अपराधों का प्रभाव दूर हो जायगा। हज़रत मुहम्मद ने यह दोनों आयतें वहशी और उसके मित्रों को लिख भेजीं। उन लोगों ने पुनः हज़रत मुहम्मद को लिखा कि हमने तो एक भी कोई भला काम नहीं किया। इस पर उक्त आयत उतरी (जिसकी हम व्याख्या कर रहे हैं) और हज़रत मुहम्मद ने यह आयत भी उनको

लिख भेजी। उन्होंने उत्तर दिया कि इस आयत में अपराधों की क्षमा खुदा की इच्छा पर निर्भर है, हमें शंका है कि, खुदा की इच्छा हमारे अपराधों को क्षमा करने की हो या न हो। उस पर यह आयत लाई गई "या एबादेयल्लाजीना असरफू अनफूसेही" उतारी गई हज़रत मुहम्मद ने यह आयत भी उनको भेज दी। यह सुन कर वे लोग मुसलमान हो गये।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ३, पृष्ठ १२८-१२९

तफ़सीर मज़हरी में वर्णित उक्त पूरी आयत इस प्रकार है:—
कुल याऐवादे यल्लज़ीना असरफू अला अनफुसेहिम ला तकनतु मिर्रहमतिल्ला, इन्नल्लाह यगफिरुज्जनुबा जमीला इन्नाहू हुवल्गफूरूर्रहिम।

कुर्आन पारा २४ सूरत जुमर, रकू ६/३

अर्थात्—ऐ मुहम्मद ! कह दे, हमारे वो भक्तो जिन्होंने अत्यधिक अपराध किये हैं, वो ख़ुदा की कृपा प्राप्ति में निराश न हों, निस्सन्देह ख़ुदा समस्त अपराधों को क्षमा कर देगा, वह अपराध क्षमा करने वाला दयालु है।

तफ़सीर क़ादरी. भाग २ पृष्ठ ३५२

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर हक़्क़ानी ने लिखा है-ऐ मुहम्मद ! मेरे उन भक्तों से कह दो जिन्होंने घोर पाप किये हैं, वे लोग ख़ुदा की दयालुता से निराश न हों क्योंकि वह ख़ुदा समस्त अपराध क्षमा कर देता है, वह बड़ा कृपालु और क्षमा करने वाला है।

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा २४, पृष्ठ ४

उपरोक्त आयतों में और इसके पूर्व वर्णित आयतों में कितना घोर विरोधाभास है। पूर्व की आयतों में कहा गया कि किसी के भी साथ अन्याय नहीं होगा सबको कर्मानुसार फल मिलेगा। इसके पश्चात् की आयतों में कहा गया कि ख़ुदा केवल शिर्क (दूसरे ईश्वर को मानना व भक्ति करने वाले) को क्षमा नहीं करता और शेष सभी अपराधों को वह जिसे चाहे क्षमा कर देता है; किन्तु इसके बाद अर्थात् उपरोक्त आयत में स्पष्ट कहा है कि ख़ुदा घोर पाप और अत्याधिक अपराध करने वालों को भी क्षमा कर देता है; किन्तु वह ख़ुदा का अपना भक्त होना चाहिये फिर उसके सभी अपराध क्षम्य है।

उक्त आयत के सम्बन्ध में एक हदीस अबू ज़र बुख़ारी की इस प्रकार है:—

फकाला मामिनअब्दिन काला ला इलाहा इलल्लाहो सुम्मा माता अलाज़ालेका इल्ला दख़लल जन्नत, कुलतो वा इन ज़ना वा इन सरकातकाला वा इन ज़ना वा इन सरका।

अर्थात्—अबुज़र से कथन है कि मैं हज़रत मुहम्मद के पास गया तो हज़रत ने कहा कि कोई मनुष्य नहीं जो कहे 'ला इलाहा इलल्लाह' और फिर इसी कलमे पर प्राण दे देवे तो वह अवश्य ही स्वर्ग में प्रविष्ट होगा। अबुज़र कहता है कि मैंने हज़रत मुहम्मद से निवेदन किया कि यद्यपि उसने चोरी या व्यभिचार किया हो तो ? इस पर हज़रत ने उत्तर दिया कि चाहे उसने चोरी या व्यभिचार किया है तो भी वह स्वर्ग में जायगा।

हदीस में लिखा है कि—अबुजर ने हज़रत मुहम्मद से तीन बार उक्त बात पूछी और तीनों बार हज़रत ने यही उत्तर दिया। कितना विरोध उक्त आयतों में है यह आपने देख लिया।

तजरीदे बुखारी किताब्बुल लिबास
हदीस क्रमांक ८०३, पृष्ठ ३६४

अब इस कहानी को सूक्ष्म दृष्टि से देखे कि, कुर्आन की आयतें कैसे बनती रहीं बहशी और उसके साथियों ने कहा कि यह आयतें कुर्आन की हमें मुसलमान बनने से रोकती हैं इनमें लिखा हैं कि जो कर्म कोई करेगा उसको पूरा फल मिलेगा इस पर हज़रत मुहम्मद ने एक आयत, यह उतारी कि शिर्क के सिवा सब गुनाह (पाप) खुदा क्षमा कर देता है यह भी वहशी और उसके मित्रों को भेज दी इसके पीछे एक और आयत भेजी कि सब पापों को चाहे तो क्षमा कर देता है–इन पर वहशी और उसके साथियों ने हज़रत मुहम्मद को फिर कहा–कि इसमें तो ख़ुदा की इच्छा का प्रतिबन्ध है--चाहे तो क्षमा करे चाहे न करे फिर अन्त में ला तक्नतू मिर्रहमतिल्लाल वाली आयत उतारी जिसमें बिना शर्त के सब पाप क्षमा होने का उल्लेख है चाहे छोटे हो चाहे बड़े हो चाहे शिर्क हो चाहे कुछ और ही हो यह है आयतों के उतारने का क्रम वहशी अड़ता ही गया और आयतें उतरती ही गई आखिर इस अन्त वाली आयत उतरने पर सब मुसलमान हो गये।

क़यामत के दिन ख़ुदा उनसे बात नहीं करेगा

आयतः—

वा ला युकल्लेमो हुमुल्लाहो योमल कयामते वा ला योज़कीहिम।

कुर्आन, पारा २ रकू १/६

अर्थात्—खुदा क़यामत के दिन उनसे बात नहीं करेगा और न उनको पवित्र ही करेगा ।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन पृष्ठ ३५ कुर्आन

उक्त आयत का विरोध निम्नलिखित आयत करती है, आयत इस प्रकार है :—

फ़वा रब्बेका लनस्अलन्नहुम अजमईन, अम्मा कानु यामलून ।

कुर्आन पारा १४, रकू ६/६

अर्थात्—पस कसम है तेरे ईश्वर की, हम उन सब से अवश्य प्रश्न करेंगे जो वे कर्म करते थे ।

अनुवादशाह रफ़ीउद्दीन पृष्ठ ३६४ कुर्आन

ऊपर दी गई कुर्आन की दोनों आयतों में स्पष्ट ही परस्पर एक-दूसरे का विरोध है । एक आयत में कहा गया है कि खुदा उनसे क़यामत के दिन बात तक नहीं करेगा, जबकि दूसरी आयत में कहा गया है कि अवश्य ही प्रश्न करेंगे जो वे कर्म करते थे । कुर्आन में अनेक आयतें हैं जो इसी प्रकार परस्पर एक दूसरे के विराध में हैं । उक्त आयतों के सम्बन्ध में तफ़सीर जलालैन में भी ऐसा ही कहा गया है ।

खुदा कर्म पत्रों को पढ़ने का कहेगा

आयत:—

वा कुल्ला इन्सानिन अलजमनाहो ताइरहू फी उनोकेहा वा तुख़

रेजो लहू योमल कयामते किताबय्यं यलकाहो मनशूरा । इकरा किताबका । कुर्आन. पारा १५, रकू २।२

अर्थात्—प्रत्येक मनुष्य चाहे वह मोमिन हो, चाहे काफ़िर हो, उसके कर्म प्रारम्भ से ही उसके साथ-साथ निश्चित कर उसकी गर्दन में लटका दिये हैं। वह भाग्य में लिखा हुआ उसे अवश्य ही करना पड़ता है। जादल मसीर में लिखा है कि जो पुत्र उत्पन्न होता है, उसके लिखे हुए भाग्य को उसके गले में लटका दिया जाता है। प्रत्येक मनुष्य के गले में लटके कर्म पत्र को कयामत के दिन हम (खुदा) निकालेंगे और वह उसे अपने हाथों में प्रत्यक्ष देखेगा और खुदा कहेगा कि अपना कर्म पत्र स्वयं पढ़ और उस दिन समस्त मनुष्य पठित होंगे।

तकसीर कादरी भाग १, पृष्ठ ५९२-५९३

यह अच्छी बात है कि यहाँ पर तो मुसलमान लोग बहुत कम पढ़े-लिखे होते हैं किन्तु खुदा ने अपने वहां सबको पढ़ा हुआ होने की अनिवार्य व्यवस्था कर रखी है ताकि क़यामत के दिन वे खुदा के सामने अपने-अपने कर्मपत्रों को पढ़ सकें। निम्न-लिखित आयत उक्त आयत का विरोध करती है और बतलाती है कि वहां भी कर्मपत्रों को पढ़ने में असमर्थ होंगे। आयत इस प्रकार है :—

वा नाहशुरोहुम योमल कयामते अला वजूहे हिम उमयंव्वा बुकमंव्वा सुम्मन मा वहुम जहन्नम।

कुर्आन, पारा १५, रकू ११।११

अर्थात्—हम कयामत के दिन उन्हें एकत्रित करेंगे उनके सिर के बल पर। अन्स बिन मालिक का कथन है कि—मैंने हज़रत मुहम्मद से पूछा कि वे पथ भ्रष्ट लोग अपने मुंह के बल कैसे चलेंगे ? हज़रत ने उत्तर दिया कि जो खुदा उन्हें पैरों के बल चलाता है वो इसमें भी समर्थ है कि उन्हें मुंह के बल चलाये। और हम एकत्रित करेंगे उनको अन्धे-गूंगे और बहरे और उनका स्थान नर्क है। तफ़सीर कादरी भाग १, पृ. ६१५

इस आयत में कहा गया है कि अन्धों-गूंगों और बहरों को एकत्रित करेंगे और उनका स्थान नर्क हैं। अर्थात् जब लोग अन्धे-गूंगे और बहरे होंगे तो किस प्रकार वे अपने कर्म पत्रों को पढ़ेंगे ? यह सोचने का विषय है। विरोध स्पष्ट है।

कर्मों का तोल होगा

आयत :—

वा नज़ाउल मवाजी नल्किस्ता लेयौमिल कयामते।

कुर्आन पारा १७, रकू ४।४

अर्थात्—हम कयामत के दिन रखेंगे न्याय तुलाओं पर..... प्रत्येक व्यक्ति के कर्म, उस तुला में तोले जायेंगे अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के कर्म तोलने के लिये एक तुला होगी।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ५७

इसी प्रकार की एक और अन्य आयत :—

वल्वज्नो यौमए जिन निल्हक्क, फ़मन सकोलत् मवाजीनोहू

फ़ऊलाएका हुमल्मुफ़लेहून, इत्यादि ।

कुर्आन. पारा ८, रकू १।८

अर्थात्–और क़यामत के दिन प्रत्येक के कर्मों का तोल सत्य है। कुछ व्याख्याकारों का कथन है कि कर्मपत्र उस तुला में तोलेंगे जिसमें एक डंडी और दो पलड़े होंगे, और तिबियान में इब्ने अब्बास ने कहा है कि तुला कि डंडी की लम्बाई ५० हजार वर्षों का मार्ग है और उसका एक पलड़ा प्रकाश व एक अंधकार का है। सुकर्मों को प्रकाश के पलड़े में व कुकर्मों को अन्धकार के पलड़े में रखेंगे। तफ़सीर कादरी भाग १, पृ. २९८

उपरोक्त दोनों आयतों में स्पष्ट कहा गया है कि कयामत के दिन सब मनुष्यों के कर्मों को तोला जायगा।

उक्त आयत की व्याख्या में तफ़सीर मज़हरी में लिखा है–कि ठीक-ठीक तोल उस दिन होगा..... हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है कि तुला की एक जिव्हां और दो पलड़े होंगे।

तोल किस बस्तु का और किस प्रकार होगा। इस सम्बंध में मुस्लिम विद्वानों में मतभेद है। कुछ का कहना है कि कर्म पत्र तोले जायेंगे। तिरमज़ी, इब्ने माजह, इब्ने हवान, हाकिम और बैहकी ने हज़रत इब्ने उमर के कथनानुसार लिखा है और हाकिम ने इसकी पुष्टि की है, कि हज़रत मुहम्मद ने कहा कि क़यामत के दिन मेरे सम्प्रदाय के एक व्यक्ति को सबके समक्ष लाया जायेगा और उसके ९९ कर्मपत्र खोले जाएंगे। प्रत्येक कर्मपत्र की लम्बाई दृष्टि की सीमा तक होगी और अल्लाह उसे पूछेगा कि क्या तुझे इसमें से कोई बात

अस्वीकार है। क्या मेरे लेखकों ने (लिखने में) तेरे साथ अन्याय किया है ? इस पर वह व्यक्ति उत्तर देगा कि नहीं किया है। अल्लाह कहेगा क्यों नही ? तेरी एक भलाई हमारे पास उपस्थित है और आज तुझ पर अन्याय नहीं किया जायेगा। यह होने के पश्चात् एक छोटा सा पत्र निकाला जायेगा। जिसमें लिखा होगा 'अशहदो अल्ला इलाहा इल्लाह वशहदो अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू वा रसूलुहू' वह व्यक्ति निवेदन करेगा मेरे मालिक इन बड़े-बड़े खातों की तुलना में इस छोटे से पत्र का क्या अस्तित्व है। अल्लाह कहेगा तुझ पर अन्याय नहीं होगा। फिर कर्मो के समस्त बही-खातों को तुला के एक पलड़े में रखा जायेगा और वह छोटा सा पत्र तुला के दुसरे पलड़े में रख दिया जायेगा। कर्मो के बही खाते वाला पलड़ा ऊपर उठ जायेगा तथा वह छोटे से पत्र वाला पलड़ा भारी निकलेगा (क्योंकि) अल्लाह के नाम से कोई वस्तु भारी नहीं है।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ४, पारा ८ पृ. २६८

पाठक वृन्द ! देखें और सोचें कि खुदा का न्याय तथा न्याय पद्धति कैसी और किस प्रकार है ? कर्मो का निर्णय किस प्रकार होता है ? एक ओर ९९ कर्मपत्र है जिनकी लम्बाई असिमित है और उसकी तुलना में एक छोटा सा पत्र, जिस पर केवल कलमा शहादत लिखा है, भारी प्रमाणित होता है और यह कहा जाता है कि अल्लाह के नाम से कोई वस्तु भारी नहीं अर्थात जीवन में अनेक पाप और अपराध करो और अल्लाह का नाम लो, बस अल्लाह का नाम सभी अपराधों को समाप्त कर देता है।

इसके आगे तफ़सीर मज़हरी ने इसी सम्बन्ध में और भी लिखा है: इमाम अहमद ने प्रामाणिक रूप में लिखा कि हज़रत मुहम्मद ने कहा कि क़यामत के दिन तुलाएं स्थापित की जायेंगी और फिर एक मनुष्य को एक पलड़े में रख दिया जायेगा और उसके साथ ही उसका कर्मपत्र भी रख दिया जायेगा। तुला उसको लेकर झुक जायेगी फलस्वरूप उसे नर्क की ओर भेज दिया जायेगा। ज्योंही उसका मुंह फिरेगा ख़ुदा की ओर से एक उच्च स्वर से घोषणा करने वाला कहेगा शीघ्रता मत करो, अभी इसका कुछ शेष रह गया है। पश्चात् एक छोटा सा पर्चा लाया जायेगा। जिसमें 'ला इलाहा इल-ल्लाहा' लिखा होगा। वह पर्चा तुला के दूसरे पलड़े में रखा जायेगा तो तत्काल ही तुला उस ओर झुक जायेगी। (अर्थात् वह स्वर्ग को चला जायेगा)

फिर आगे इब्ने अबी दुनिया ने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर का कथन लिखा है—क़यामत के दिन हज़रत आदम के ठहरने का एक ऐसा स्थान होगा, जहां पर वह खड़े-खड़ें नर्क जानेवालों को देखते रहेंगे। इसी स्थिति में हज़रत मुहम्मद के सम्प्रदाय के एक व्यक्ति को नर्क की ओर ले जाते हुए देख कर आदम पुकारेंगे-अहमद!(हज़रत मुहम्मद का एक नाम) मैं उत्तर दूंगा ! ऐ समस्त मनुष्यों के पिता (आदम) मैं यहां हूँ। हज़रत आदम कहेंगे तुम्हारे सम्प्रदाय के एक व्यक्ति को नर्क की ओर ले जाया जा रहा है। मैं (हज़रत मुहम्मद) यह सुनते ही तत्काल फ़रिश्तों के पीछे जाऊंगा और कहूँगा कि ऐ अल्लाह के दूतों ठहर जाओ, फ़रिश्ते उत्तर देंगे—हम दृढ़ और शक्तिशाली हैं, जो आदेश अल्लाह का होता है उसकी अवज्ञा नहीं कर सकते

हैं। उनके इस उत्तर पर (रावी ने कहा) हजरत मुहम्मद निराश हो जायेंगे तो अपने बांये हाथ की मुठ्ठी में अपनी दाढ़ी को पकड़ कर खुदा के सिंहासन की ओर मुंह कर प्रार्थना करेंगे कि मेरे मालिक ! तूने मुझे वचन दिया था कि मुझे मेरे सम्प्रदाय में आप लज्जित नहीं करेंगे। तत्काल सिंहासन से आवाज आयेगी-मुहम्मद का कहना मानो और उस व्यक्ति को पुनः कर्मों के तौलने के स्थान पर लौटा लाओ। (पुनः हजरत मुहम्मद कहते हैं) फिर मैं (अगुली के) पोरे के बराबर एक सफेद पर्चा अपनी गोदी से निकाल कर बिस्मिल्लाह कह कर तुला के दांये पलड़े में डाल दूंगा, फलस्वरूप भलाईयों का पलड़ा झुक जायेगा तो तत्काल घोषणा होगी कि यह सफल हो गया और उसे स्वर्ग ले जाने की आज्ञा हो जायेगी।

तफ़सीर मजहरी, भाग ४, पारा ८, पृष्ठ २६९

उक्त सम्बन्ध में कहा तक लिखा जाये वैसे लिखने को तो इस प्रसंग में अनेकों गाथाएं कई मुस्लिम शास्त्रों में विद्यमान् हैं, अस्तु हम केवल एक प्रमाण देकर इस विषय को समाप्त करते है। जिन व्यक्तियों को अधिक देखना हो वे तफ़सीर मजहरी के पृष्ठ २७०-७१ और ७२ देख। एक और प्रमाण निम्नानुसार है:—

अल्लाह ने (हजरत मूसा से) कहा कि मूसा ! यदि समस्त आसमान और मेरे अतिरिक्त उन आसमानों की सारी सृष्टि और सातों पृथ्वीएँ एक पलड़े में हों और दूसरे पलडे में 'ला इलाहा इल्लल्लाहो' हो तो यह उन (आसमानों और ज़मीनों) को ले झुकेगा।

तफ़सीर मजहरी भाग ४, पारा ८, पृष्ठ २६९-७०

उपरोक्त दिये गये समस्त उद्धरणों से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि कयामत के दिन न्याय कैसा और किस प्रकार होगा, किस प्रकार मोमिनों के साथ पक्षपात और काफ़िरों के साथ अन्याय होगा ? जो लोग हज़रत मुहम्मद के सम्प्रदाय के हैं उन्हें खुदा उनके कहने पर नर्क न भेजते हुए स्वर्ग भेज देंगे चाहे वह फिर कितना ही पापी और अपराधी क्यों न हो। इन प्रसंगों से खुदा का न्याय और हज़रत मुहम्मद के इस्लाम प्रचार के हथकडो व प्रलोभनों का स्पष्ट दिग्दर्शन होता है। इस्लाम के प्रारभ मे किस प्रकार हज़रत मुहम्मद ने खुदा का नाम लेकर उसकी कल्पित आज्ञाएं (आयतें) लोगों को दिखाई-सुनाई और उनकी मति भ्रमित कर इस्लाम में लाने का प्रयत्न किया !

उपरोक्त वर्णित दोनों आयतों में यह सिद्ध किया गया है कि कयामत के दिन समस्त मनुष्यों के कर्मपत्रों को तोलकर उनका निर्णय किया जायेगा किन्तु ठीक इसके विपरित उक्त दोनों आयतों के विरूद्ध कुर्आन की ही एक आयत प्रस्तुत है। आयत इस प्रकार है :—

ओलाय कल्लज़िना कफ़रू बेआयते रब्बेहिम वा लेकायेही फ़हबेतन आमालोहुम फला नुकीमो लहुम योमल कयामते वज़ना।

कुर्आन, पारा १६, रकू १२।३

अर्थात्—वे लोग है जो काफ़िर हुए हैं अपने ईश्वर की आयतों (कुर्आन) के साथ और इसके दर्शन के साथ तो व्यर्थ और विनाश हो गये उनके सुकर्म, वह इन सुकृत्यों का सुफल नहीं पायेंगे और कयामत के दिन हम उनके कर्मो को तौलने हेतु

तुला खड़ी नहीं करेंगे । इस लिए कि उनके सुकर्म तो व्यर्थ और नष्ट हो गये। उनके लिये हम कोई तोल नहीं रखेंगे।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ८

उक्त आयत के सम्बन्ध में इसी प्रकार तफ़सीर हक्कानी में भी लिखा है कि काफ़िरों के कर्मों का तौल नहीं होगा ।

तफ़सीर हक्कानी पारा १६, पृ. २४

इस आयत के पूर्व वर्णित आयतों में कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य के कर्मों का तौल होगा और उनके कर्मों के अनुसार निर्णय किया जायेगा और किसी के भी साथ पक्षपात व अन्याय नहीं होगा; किन्तु उक्त आयत और इसके पूर्व वाली आयत में स्पष्ट कहा गया है कि मुहम्मद के सम्प्रदाय के लोग नर्क में नहीं जायेंगे तथा काफ़िरों के कर्मों का तौल नहीं किया जायेगा । उनके सुकर्मों को तौलने हेतु कयामत के दिन तुला खड़ी नहीं की जायेगी, क्योंकि वे काफ़िर है और काफ़िर होने के कारण ही उनके समस्त सुकर्म व्यर्थ और नष्ट हो गये है, इसलिये उनके सुकर्म का सुफल भी उन्हें प्राप्त नहीं होगा ।

मुसलमान नर्क से दूर रहेंगे

आयत :—

इन्नल्लाज़ीना सबकत लहुममिन्नल हुस्ना ओलायका अन्हा मुब्अदुन

कुर्आन, पारा १७, रकू ७।७

अर्थात्—निस्सन्देह वह लोग जिनके लिये हमारी ओर से भलाई आगे बढ़ चुकी है और जिनके लिये हमारी विशेष कृपादृष्टि

है वे नर्क से दूर किये गये हैं .....न सुनेगे वे लोग जो नर्क से दूर रखे गये हैं उनकी आवाज।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ ६८

उपरोक्त आयत में कहा गया है कि जिन पर हमारी विशेष कृपादृष्टि है और जिनके लिये हमने भलाई आगे बढ़ा दी है वे लोग अर्थात् मुसलमान नर्क से दूर रखे गये हैं और वे नर्क की आवाज नहीं सुनेंगे, किन्तु निम्नलिखित आयत ठीक इसके विपरीत और विरोध में है। आयत इस प्रकार है:—

लुम्मा लनहनो आलमो बिल्लाज़ीनाहुम औलाबेहा सलिय्या। वा इम्मिनकुम इल्ला वारिदोहा, काना अला रब्बेक़ा हतमम्मक्ज़िय्या सुम्मा नोनज्जिल्लाज़ीनत्तकव्वा नज़ेरूज़ज़ालेमीना फीहा ज़ेसिय्या।

.कुर्आन पारा १६, रकू ५/८

अर्थात्—निश्चय हम उन लोगों के बड़े जानकर है, जो कि नर्क में जलने के योग्य हैं और नहीं कोई तुम मनुष्यों में से; किन्तु नर्क में पहुचनेवाला और गुजरनेवाला है। परन्तु जब मुसलमान नर्क से गुज़रेंगे तो नर्क की अग्नि बुझ कर ठण्डी हो जायेगी। स्वर्ग के निवासी एक-दूसरे से पूछेंगे कि क्या ख़ुदा ने हमको वचन न दिया था! कि तुम सब नर्क पर गुजरोगे तो यह क्या बात है कि हमने तो नर्क की अग्नि देखी ही नहीं। फ़रिश्ते कहेंगे कि तुम्हारे विश्वास के प्रकाश से अग्नि बुझ गई थी। नर्क पर गुजरना तेरे ईश्वर की ओर से आवश्यक व अनिवार्य है। यह ऐसा वचन है कि अवश्यमेव पूर्ण होगा।

हज़रत जाबर बिन अब्दुल्ला अन्सारी ने हज़रत मुहम्मद से रवायत की है कि वरूद्ध का अर्थ प्रविष्ट होना है अर्थात् सबको नर्क में उपस्थित करेंगे, कोई भी भला या बुरा ऐसा न होगा जो कि नर्क में प्रवेश न हो किन्तु विश्वासवालों के लिये अग्नि इस प्रकार शीतल हो जायेगी जैसी हज़रत इब्राहीम के लिये हो गई थी। उपरोक्त बात का समर्थन खुदा स्वयं कुर्आन में कर रहा है। फिर मुक्ति देंगे उन्हें (नर्क से) जिन्होंने शिर्क (दूसरा खुदा मानने वाले) से स्वयं को बचाया है. अर्थात् निकाल लेंगे हम उन्हें नर्क से और छोड़ देंगे अत्याचारियों को नर्क में घुटने के बल गिरे हुए।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ, २२-२३

उपरोक्त आयत से सिद्ध होता है कि प्रत्येक मनुष्यों को एक बार अनिवार्य रूप से नर्क में प्रवेश लेना पड़ेगा। ऐसा ही तफसीर जलालैन में भी लिखा हैं कि—तुम में से कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो कि एक बार नर्क में न जाये और नर्क से बचे।

तफ़सीर जलालैन पृ. २५८

प्रत्येक जीवधारी को जल से उत्पन्न किया

आयत :—

वा जअलना मिनलमाये कुल्ला शैइन हय्यिन अफ़ला योमेनून।

कुर्आन, पारा १७, रकू ३।३

अर्थात्—प्रत्येक जीवधारी को हमने जल से उत्पन्न किया। क्या फिर भी विश्वास नहीं करते ?

तफ़सीर कादरी, भाग २, पृ, ५४

इसी प्रकार की एक और अन्य आयत ---

होवल्लाजी खलक मिनलमाये बशरन ।

कुर्आन, पारा १६, रकू ५।३

अर्थात् —खुदा वह है, जिसने मनुष्य को जल से उत्पन्न किया। आयत का अर्थ तो केवल इतना ही है; परन्तु तफसीर कादरी के व्याख्याकार ने लिखा है कि खुदा ने आदम को जल से उत्पन्न किया। कैसे ? कि मिट्टी में जल डालकर उसको खमीर बनाया । तफ़सीर कादरी पारा १६: पृ. १४५

कुर्आन की दोनों आयतों में कहा गया है कि प्रत्येक जीवधारी और मनुष्य को खुदा ने जल से उत्पन्न किया; किंतु तफ़सीर कादरी के लेखक के मस्तिष्क में आश्चर्यजनक क्रिया हुई और उसने यह लिख डाला कि खुदा ने मिट्टी में जल डाल कर खमीर बनाया और मनुष्य (आदम) को उत्पन्न कर दिया। इसलिए मनुष्य को जल से उत्पन्न होना कहा गया है, किन्तु तफ़सीर कादरी के लेखक ने मनुष्य-उत्पत्ति ने अनेक स्थानों पर विभिन्न प्रकार से लिखा है. उदाहरण के तौर पर:-

'हमने आदम को सूखी मिट्टी से उत्पन्न किया ताकि हम जब उस पर हाथ मारे, वह पक्के बर्तन की भांति बोले ।'

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ५२७

खुदा ने आदम को काली मिट्टी से बनाया ।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. ५४८

उक्त आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक जीवधारी व मनुष्य को जल से उत्पन्न किया गया और तफ़सीर कादरी के लेखक ने बताया कि मिट्टी में जल डाल कर खमीर बनाया और आदम को पैदा कर दिया; कहीं कहा कि सूखी मिट्टी से और कहीं कहा कि काली मिट्टी से बनाया; किन्तु हम आगे आयतों में यह बतायेंगे कि खुदा ने प्रत्येक जीवधारी को केवल जल से ही नहीं उत्पन्न किया है। आयत इस प्रकार है:—

वलकद खलकनल इन्साना मिनसलसालिम्मिन हमइम् मसनून। वलजाना खलकनाहो मिनकब्लो मिन्नारिस्समूम।

कुर्आन, पारा १४, रकू ३।३

अर्थात्—उत्पन्न किया हमने मनुष्य को बजनेवाली मिट्टी से जो कि सड़े हुए कीचड़ से निर्मित थी, बताई गई तथा जिन्नों को उत्पन्न किया बिना धुंए की अग्नि से।

अनुवाद-शाह रफ़ीउद्दीन पृ, ३५९ कुर्आन

इस आयत में मनुष्य की उत्पत्ति, बजनेवाली मिट्टी जो कि सड़े कीचड़ से निर्मित थी बताई गई तथा जिन्नों की उत्पत्ति धुंआ-रहित अग्नि से बताई गई है। जब कि इसके पूर्व आयतों में प्रत्येक जीवधारी और मनुष्यों की उत्पत्ति जल से बताई गई है।

इस्लाम के मतानुसार जिन्न भी एक जीवित जाति है जो कि अपने आचार-विचार और व्यवहार मनुष्यों के समान रखतीं है। इसी प्रकार फ़रिश्ते भी हैं, जिन्हें प्रकाश से उत्पन्न किया

गया है. वे भी जीवित है। जब फ़रिश्ते प्रकाश से और जिन्न धुंआरहित अग्नि से उत्पन्न किये गये तो कुर्आन की पूर्व में वर्णित प्रथम आयत जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक जीवधारी को जल से उत्पन्न किया गया, प्रभावहीन हो जाती है। उक्त आयतों में कितना विरोधाभास है यह हमने स्पष्ट कर दिया है। एक आयत दूसरी आयत के विपरित और विरोध में है।

बुरे कार्यों व बुरी बातों के लिये खुदा आदेश नहीं देता

आयत :—

कुल इन्नल्लाहा ला यामुरो बिल फ़ाहशाये।

कुर्आन, पारा ८, रकू ३।१०

अर्थात्—ऐ मुहम्मद ! कह दो कि अल्ला आदेश नहीं देता है बुरी बात व बुरे काम के लिये। खुदा का स्वभाव सद्गुणों व सत्कार्यों की आज्ञा देना है।

तफ़सीर कादरी भाग १. पृ. ३०३

उक्त आयत में स्पष्ट है कि खुदा सद्गणों व सत्कार्यों की आज्ञा देता है और बुरे काम व बुरी बात की आज्ञा नहीं देता; किन्तु निम्नलिखित आयत इस आयत के एकदम विपरित व विरोध में है।

आयत इस प्रकार है :—

वा इज़ा अरद्ना अन्नोहलेक़ा कर्यतन अमर्ना मुतरफीहा फ़फसक़ू

फ़ीहा फहक्का अलैहलकौलो फ़दम्मंनाहा तदमीरा ।

कुर्आन, पारा १५, रकू २ २

अर्थात्—जब हम किसी ग्राम या नगर के लोगों का विनाश करना चाहते हैं तो हम उसके धनपतियों को आज्ञा कर देते हैं कि वे उनके लिये भेजे गये रसूल का विरोध करें। फिर वे रसूल की आज्ञा से परे हो जाते हैं। अनिवार्य हो जाता है उस बस्तीवालों के लिये अज़ाब (संकट उत्पन्न करने की आज्ञा) का कलमा अर्थात् अज़ाब के अधिकारी हो जाते हैं और फिर जड़ से उखाड़ देते हैं हम उन्हें और उनके घर बुरी प्रकार नष्ट कर देते हैं। तफ़सीर काबरी, भाग १, पृष्ठ ५९३–९४

शाह रफ़ीउद्दीन उक्त आयत का अनुवाद इस प्रकार करते हैं कि "जब हम किसी बस्ती को विनाश करने का विचार करते हैं तो उसके धनाढ्यों की अवज्ञा करने की आज्ञा करते हैं! बस वे अवज्ञा करते हैं। इसलिए प्रमाणित हो जाती है उन पर बात अज़ाब की। पस, विनाश करते हैं हम उनको, भली प्रकार से विनाश करना।" कुर्आन पारा १५, पृ. ३८७

उक्त आयत में स्पष्ट है कि खुदा स्वयं धनाढ्यों को अपनी आज्ञा की अवज्ञा करने की प्रेरणा देता है और उन्हें प्रेरित करता है कि वे अवज्ञा करें। इसी प्रकार की एक और अन्य आयत :—

फ अगरैना बैनाहुमुल अदावता वल बग़जाआ इला योमिलक़यामते

कुर्आन, परा ६, रकू ३।७

अर्थात्—लगा दिया हमने उसके मध्य द्वेष और शत्रुता कयामत के दिन तक ।

अनुवाद, शाह रफ़ीउद्दीन, पृष्ठ १४६, कुर्आन

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर क़ादरी में लिखा है कि 'पस खड़ी कर दी हमने वचन भंग करने पर ईसाईयों के मध्य खुली शत्रुता और मन में छुपा हुआ द्वेष क़यामत के दिन तक । वह इस प्रकार कि ईसाईयों के तीन सम्प्रदाय हो गये और प्रत्येक सम्प्रदाय एक दूसरे के परस्पर शत्रु हो गये । कतिपय व्याख्याकारों का कथन है कि 'शत्रुता पैदा कर दी हम ने (खुदा ने) यहूदियों और ईसाईयों के मध्य ।

तफ़सीर क़ादरी भाग १, पृ. २१७

इसी प्रकार की एक और अन्य आयत :—

व अलकैना बेनाहुमुल अदावता वल बग़ज़ाआ इला योमिल कयामते । कुर्आन, पारा ६, रकू ९।१३

अर्थात्—हमने उन यहूदियों और ईसाईयों के मध्य क़यामत के दिन तक के लिये द्वेष और शत्रुता डाल दी । कतिपय विद्वानों के मत में केवल यहूदियों के विभिन्न सम्प्रदायों के मध्य मतभेद डाल दिया, ताकि क़यामत के दिन तक न तो उनकी जाति में एकता और न उनके हृदयों में प्रेम ही उत्पन्न होगा ।

तफ़सीर मज़हरी भाग ६, रकू ९।१३

इस आयत के पूर्व वर्णित आयत की व्याख्या तफ़सीर मज़हरी में इस प्रकार है-'हमने क़यामत के दिन तक के लिये उनमें शत्रुता डाल दी है और परस्पर शत्रुता भड़का दी है. अर्थात् यहूदियों और ईसाईयों के मध्य हमेंशा के लिये हमने (खुदा ने) शत्रुता डाल दी।

तफ़सीर मज़हरी भाग ३, पृ. ४२३

उपरोक्त वर्णित आयतों में प्रथम तो यह कहा गया कि खुदा बुरी बात व बुरे कर्मो की आज्ञा नहीं देता, केवल सद्गुणों व सत्कार्यों की ही आज्ञा देता है, किन्तु बाद की आयतों में स्पष्ट स्वयं सिद्ध है कि खुदा ही अवज्ञा की प्रेरणा देता है और अज़ाब का अधिकारी बनाता है। इसके पश्चात् वर्णित आयतों में कहा कहा गया है कि खुदा ने ही यहूदियो की जाति में द्वेष व शत्रुता डाल कर तीन सम्प्रयाय बनाये तथा क़यामत तक के लिये उनमें शत्रुता डाल दी. और यहूदियों व ईसाईयों के मध्य भी खुदा ने ही द्वेष व शत्रुता डाल दी और उनमें मतभेद उत्पन्न कर दिये।

समझ में नहीं आता कि यह खुदा कैसा है ? जो एक ओर तो बुरी बात व बुरे काम की आज्ञा नही देता और दूसरी ओर स्वयं ही अवज्ञा की प्रेरणा देकर अज़ाब का अधिकारी बनाता है तथा यहूदियों की कौम में फूट डलवाता है और यहुदियों तथा ईसाईयों के मध्य द्वेष वा शत्रुता डालता है और वह भी क़यामत के दिन तक के लिये, ताकि क़यामत के पूर्व उक्त दोनों जातियों का मतभेद दूर ही न हो सके। ऐसा खुदा कैसे खुदा हो सकता है ? यह सोचने-समझने और विचार करने का विषय है ?

कयामत के दिन कोई किसी का बोझ न उठायेगा और न सिफारिश ही मानी जायेगी ?

आयत :—

वत्तकू योमल्ला तजज़ी नफ़सुन अन्नफसिन शैअंव्व ला युकबिलोमिनहा शफ़ाअंतुव्वव ला योखजो मिन्हा अदलुंव्वव ला हुमयुनसरून । कुर्आन, पारा १. रकू ६।६

अर्थात्– डरो उस दिन से, न सहायता करेगा किसी व्यक्ति की कोई व्यक्ति और न किसी की सिफारिश स्वीकार की जायेगी और न किसी से कोई अन्य वस्तु वदले में ली जायेगी और न किसी प्रकार की सहायता दी जायेगी ।

–अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन पृ. १० कुर्आन

एक और आयत :—

वा ला तज़ोरी वाज़ेरातुव्व विज़रा उखरा ।

अर्थात्–और न कोई किसी दूसरे का अपराध उठायेगा । वलीद मगीरा काफ़िरों से कहता था कि तुम मेरा अनुकरण करो, मैं तुम्हारे पापों का बोझ उठा लूंगा । तो खुदा कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना ही बोझ उठायेगा न कि किसी दूसरे का ।

तफ़सीर कादरी, भाग १, पृ. ५९३

उपरोक्त आयतों में स्पष्ट कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति न तो किसी के पापों का बोझ उठा सकता है और न किसी के अपराध का ही। किसी व्यक्ति की सिफारिश भी नहीं मानी जायेगी और न किसी व्यक्ति से उसके अपराधों या पापों के बदले कोई (मुआवज़ा) वस्तु ही ली जायेगी। खुदा स्वयं कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना ही बोझ उठायेगा न कि किसी दूसरे का; किन्तु निम्नलिखित आयत ठीक इसके विपरीत और विरोध में है। आयत इस प्रकार है :—

वा ला यह मेलुन्ना अस्कालहुम व अस्कालम्मआ अस्कालेहिम।

कुर्आन, पारा २०, रकू १।१३

अर्थात्—क़यामत के दिन अवश्यमेव उठायेंगे अपने अपराधों का भारी बोझ. दूसरे के अपराधों के बोझ के साथ अर्थात् अपने अपराधों के भारी बोझ के साथ, जिन लोगों को उन काफ़िरों ने पथ-भ्रष्ट किया है उनके बोझ को उन काफिरों के अपराधों के बोझ पर अधिक कर देंगे बिना इस बात के कि पथभ्रष्ट लोगों के अपराधों के बोझ में कोई कमी हो।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ. २१३

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर हक्कानी में लिखा है कि—वे अपने अपराधों का बोझ उठायेंगे और उसके साथ उनके द्वारा बहकाये गये लोगों का भी बोझ उठायेंगे।

तफ़सीर हक्कानी पारा २०, पृ. ४०

इसी प्रकार की एक और अन्य आयत :—

ले यहमिलू औज़ाराहुम कामिला तय्योमिल कयामते वा मिन औज़ारिल्लज़ीना युज़्ज़िलूना हुम बग़ैरे इल्म ।

अर्थात्—पूर्ण रूप से अपने अपराधों का बोझ क़यामत के दिन उठायें और उनके अपराधों का भी बोझ उठायें जिनको उन्होंने पथ-भ्रष्ट किया है । तफ़सीर कादरी, भाग १, पृ. ५८१

उक्त दोनों आयतों में स्पष्ट कहा गया है कि क़यामत के दिन अपने अपराधों का बोझ पूर्णरूप से उठायेंगे किन्तु साथ ही उनके पापों और अपराधों का भी बोझ उठाना पड़ेगा जिनको उन्होंने पथभ्रष्ट किया है । जब कि उक्त दोनों आयतों के पूर्व वर्णित आयतों में कुर्आन ने स्वयं कहा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना ही बोझ उठायेगा न किसी दूसरे का । पहली आयत में तो यहाँ तक कहा गया है कि न तो कोई किसी का बोझ उठायेगा, न कोई किसी की सहायता करेगा और न किसी की सिफ़ारिश ही स्वीकार की जायेगी; किन्तु उक्त आयतों में इसके विपरित कहा गया है और पूर्व कही आयतों का स्पष्ट ही विरोधाभास है । उक्त आयतों में अपराधों के सम्बन्ध में बताया गया है और अब निम्नलिखित आयतों से यह स्पष्ट होता है कि केवल अपराधों का बोझ ही नहीं अपितु व्यक्ति की भलाईयाँ भी ले ली जायेगी ।

आयत इस प्रकार है :—

वल्लाज़ीना आमनू वत्तबअतहुम ज़ुर्रिय्यतोहुम बेईमनिन अल-

हकना बेहिम ज़ुर्रिय्यतहुम वा मा अलतना हुम्मिन अमलेहिम्मिन शंइन कुल्लुमरेइन बे मा कसबा रहीम ।

कुर्आन पारा २७ ,रकू १।३

अर्थात्—जो लोग खुदा और रसूल पर विश्वास लाये और उनकी आज्ञा का पालन किया विश्वास के साथ, क़यामत के दिन उसके साथ उनकी सन्तान को स्वर्ग में अथवा उनके उच्च पदों पर पहुंचने में अर्थात् यदि बाप-दादा के ऊँचे पद होंगे तो उनकी सन्तान के पद भी हम ऊन्चे कर देंगे। ताकि पिताओं की दृष्टि अपनी सन्तानों को देख कर उज्जवल हो और इस भेंट के फल-स्वरूप पुरखाओं की भलाइयों में कोई कमी नहीं करेंगे। पुरखाओं की भलाइयों के कारण हम उनकी सन्तानों को भी ऊन्चे पद देंगे। तफ़सीर कादरी भाग २, पृ ४०४

एक और अन्य आयत :—

फ़ उलायेका योबद्दे लुल्लाहो सय्येआतेहिम हसनात् ।

कुर्आन, पारा १६, रकू ६।४

अर्थात्—पस, ये लोग वह है, खुदा उनकी बुराईयों को भलाइयों में बदल देता है ।

—अनुवाद शाह रफीउद्दीन पृ. ५०४ कुर्आन

इसी सम्बन्ध में हदीस में आता है "फिदाउल मुस्लमी नाबिल काफ़ेरीन, काला ला यमूतो रजलुन मुस्लेमुन इल्ला

अदखल्लाहोमकानहुन्नारो यहूदिय्यन जो नसरानिय्यन"

हदीस मुस्लिम उर्दू अनुवाद पृष्ठ २६४६

अर्थात्—मुसलमानों का काफ़िरों के साथ कर्मों का परिवर्तन किया जायेगा, कोई मुसलमान व्यक्ति नहीं मरेगा और उसके स्थान पर नर्क में यहूदी और ईसाई को प्रविष्ट किया जायेगा। एक और हदीसः—

काला यजीओ योमल कयामते नासुम मिनल मुस्लेमीना बिजनूबिन बेअमसालिल जबाले फय्यग़फिरो हल्लाओ लहुम वा यज़ओहा अलयहुदे वन्नसारा।

हदीस मुस्लिम उर्दू अनुवाद पृष्ठ २६४७

अर्थात्—कयामत के दिन मुसलमान आयेंगे साथ अपराधों के जो पहाड़ के सदृश होंगे अल्लाह उन सबको क्षमा कर देगा और उनके अपराधों को यहूदियों व इसाईयों पर डाल देगा।

उपरोक्त वर्णित आयत और हदीसों में कहा गया है कि जिन लोगों ने ख़ुदा और रसूल में विश्वास किया और उनकी आज्ञाओं का पालन किया उनको और उनके साथ उनकी सन्तानों को भी स्वर्ग में भेजा जायेगा तथा पुरखाओं की भलाईयों के कारण उनकी सन्तानों को भी ऊँचे पद दिये जायेंगे ताकि अपनी सन्तानों को देखकर उन पिताओं की दृष्टि उज्जवल हो। जब कि पूर्व वर्णित आयतों में कहा गया है कि कोई किसी की सहायता नहीं करेगा और न किसी की कोई सिफ़ारिश ही मानी जायेगी तो पिताओं की भलाईयों अथवा सुकर्मों के फलस्वरूप सन्तानों को स्वर्ग में पहुँचाना और फिर वहाँ ऊँचे पद देना सिफारिश और सहायता नहीं है तो फिर

क्या हैं ? इसी प्रकार उक्त हदीसों में भी मुसलमानों के साथ भारी पक्षपात और ईसाइयों व यहूदियों के साथ भारी अन्याय किया गया है। हदीसों में कहा गया है कि मुसलमानों के कुकर्मों (बुराईयों) को ईसाईयों व यहूदियों के कर्मों के साथ बदल कर मुसलमानों के बदले नर्क में ईसाई व यहूदियों को भेजा जायेगा और क़यामत के दिन पहाड़ सदृश्य अपराधों सहित जो मुसलमान आयेंगे, अल्लाह उन्हें क्षमा कर उनके पाप व अपराध यहूदियों व ईसाईयों पर डाल देगा। ज़रा विचार करने का विषय है, कि पाप करे कौन और भरे कौन ?

क़यामत के दिन अकेले आओगे

आयत:—

वलकद जेतोमूना फुरादा कमा खलकनाकुम अव्वला मर्रातिम्मव्वा तरकतुम्मा खव्वलनाकुम वा रा आ ज़ुहूरेकुम।

क़ुर्आन, पारा ७, रकू ११/१७

अर्थात्—तुम हमारे पास न्याय और फल के लिये अकेले आये। न तुम्हारे साथ सन्तान, न सम्पत्ति, न मित्र व सहायक हैं, और उस प्रकार आये जिस प्रकार हमने पहली बार मां के उदर से नंगे सिर नंगे पांव उत्पन्न किया था।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १, पृष्ठ ६७७

इस आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि मृत्यु के पश्चात् क़यामत के दिन न्याय व फल प्राप्ति हेतु तुम अकेले हमारे (ख़ुदा के) पास आ गये। न तुम्हारे साथ

सन्तान-सम्पत्ति, मित्र और सहायक ही आये। तुम इस प्रकार आये जिस प्रकार पहली बार हमने तुम्हें उत्पन्न किया था अर्थात् जिस प्रकार नगे और बिना खतना किये पैदा किया था वैसे ही हमारे पास आ गये।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ४, पृष्ठ १८८-१८९

उपरोक्त लिखित आयत के विपरीत एवं विरोध में निम्न आयत प्रस्तुत है। आयत इस प्रकार है:—

व मा काना ले नबिय्यिन अंय्यग़ल्ला व मंय्यहगलुल याते बेमा ग़ल्ला यौमल्कयामते।

कुर्आन, पारा ४, रकू १७/८

अर्थात् किसी नबी को यह उचित नहीं कि वह लूट की सम्पत्ति में खयानत करे। कुछ मुस्लिम विद्वानों का मत है कि बदर के युद्ध की लूट में से एक लाल रंग की कमली (शाल) खो गई थी और कुछ काले दिल वालों ने द्वेष के कारण हज़रत मुहम्मद को इसके लिये दोषी बताया। तब ख़ुदा ने अपने स्नेही हजरत मुहम्मद और सभी नबियों को उक्त दोष से मुक्त कर दिया। और जो कोई लूट की सम्पत्ति में से खनायत करेगा वह उस खनायत के साथ क़यामत के दिन आयेगा और सबके सम्मुख अपमानित होगा।

लिखा है कि-एक व्यक्ति ने लूट की सम्पत्ति वितरण होने के पूर्व एक पुरानी रस्सी उठाई। उस रस्सी को सम्पत्ति विवरण के पश्चात् वह हज़रत मुहम्मद के पास लाया, हज़रत ने उसे स्वीकार नहीं किया और कहा कि इस रस्सी को क़यामत के दिन अपने साथ लाने को अपने पास रख छोड़।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १ पृष्ठ १३७-१३८

इसी उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि—लूट की सम्पत्ति में ख़ियानत करना नबी से दूर है। कतिपय विद्वानों ने लिखा है कि कुछ शक्तिशाली व्यक्तियों ने आग्रह सहित लूट की सम्पत्ति मांगी। इस पर अल्लाह ने यह (उक्त) आयत उतारी। अबू दाऊद व तिरमजी ने हज़रत इब्ने अब्बास के कथनानुसार कहां है और तिरमज़ी ने इसे हसन (प्रमाणित) भी कहा है, कि इस आयत में उस लालधारी वाली कमली का वर्णन है, जो कि बदर के युद्ध वाले दिन खो गई थी और बाद में कई लोगों ने विचार किया था कि सम्भवतः वह कमली हज़रत मुहम्मद ने ले ली हो। इस पर अल्लाह नें यह (उक्त) आयत उतारी कि नबी को लूट की सम्पत्ति में ख़यानत ठीक नहीं है और जो ख़यानत करेगा वह कयामत के दिन चुराये हुए माल के साथ आयेगा।

तफ़सीर मज़हरी, भाग २ पृष्ठ ३९९-४००

तुममें से कोई भी वस्तु जो अन्याय व अनधिकार से लेगा और जब वह ख़ुदा के सम्मुख जायेगा तो वह उस वस्तु को अपने ऊपर लादे हुए रहेगा। मैं (हज़रत मुहम्मद) किसी को ऐसा न पाऊँ कि ख़ुदा की पेशी के समय बिलबिलाते ऊँट या दहाड़ती गाय को या भिनभनाती बकरी को अपने ऊपर लादे हुए लाये। हज़रत अद्धी बिन अमीरा ने कहा है कि जो कोई किसी वस्तु को छुपा ले तो वह चोरी हो गई और उस वस्तु के साथ उसे क़यामत के दिन आना होगा।

तफ़सीर मज़हरी, भाग २, पृष्ठ ४०२-४०३

उक्त आयत में कहा गया है कि लूट की सम्पत्ति में से खयानत व चोरी करना ठीक नहीं और यदि कोई करेगा तो वह कयामत के दिन उस वस्तु को अपने ऊपर लाद कर लायेगा, जब कि इस आयत के पूर्व वर्णित आयतों में कहा गया है कि तुम हमारे पास अकेले आये न्याय और फल के लिये। तुम्हारे साथ सन्तान सम्पत्ति-मित्र और सहायक कोई नहीं है। जिस प्रकार हमने मां के उदर से नगे सिर व नगे पांव उत्पन्न किया उसी प्रकार नगे और बिना खतना के हमारे पास आगये।

एक ओर कहा जाता है कि व्यक्ति खुदा के पास अकेला जायेगा साथ में कुछ नहीं ले जायागा। जैसा पैदा हुआ है वैसा ही खुदा के पास पहुँचेगा किन्तु दूसरी ओर कहा जाता है कि लूट के माल मे खयानत मत करो अन्यथा वह चोरी का माल लाद कर कयामत के दिन खुदा के पास जाना पड़ेगा। उपरोक्त वर्णित आयतों में कितना विरोधाभास है, यह स्पष्ट ज्ञात होता है !

गत पृष्ठों में हमने संक्षिप्त रूप में यह बताने का प्रयास किया है कि कुर्आन में स्वयं कितना विरोधाभास है और कुर-आन की ही आयतें परस्पर एक दूसरे के विपरित हैं। कुर्आन में परस्पर विरोध विशेष कर उन प्रसंगों में अत्यधिक रूप से हैं, जहां पैग़म्बरों के इतिहास का वर्णन आता है तथा उनके इतिहास की घटनाओं को किंचित् परिवर्तनों के साथ बारम्बार दोहराया जाता है। पैग़म्बरों के उस इतिहास को हम अलग से पुस्तक रूप में संकलित कर उस विरोधाभास को प्रकट करेंगे यहां लिखने में पृष्ठ संख्या बढ़ जायेगी अस्तु कुर्आन का पार-स्परिक विरोध का यहां संक्षिप्त ही वर्णन किया है।

मुबहमाते कुर्आन अर्थात् कुर्आन की अस्पष्ट आयतें

अल्लामा जलालुद्दीन सियूति ने तफ़सीर इत्तिकान में कुर्आन की अस्पष्ट आयतों के सम्बन्ध में एक प्रकरण लिखा है, आप (सियुति) का कथन है कि इस विषय पर कई विद्वानों ने लिखा है और मैंने भी एक संक्षिप्त पुस्तक लिखी है। कुर्आन में वर्णित अस्पष्ट आयतों की अनुभूति व उपयोगिता का वर्णन करते हुए अल्लामा ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिससे प्रमाणित होता है कि अस्पष्ट आयतों को समझ लेना कोई सरल व साधारण कार्य नहीं है। उदाहरण निम्न प्रकार है:— अकरमा लिखते हैं कि मैंने निम्न आयत :—

अल्लाज़ी खरजा मिन बैतेही मुहाजेरन इलल्लाहे वा रसूलेही सुम्मा अदरकलहुलमौत ।

अकरमा कहते है, कि इस आयत की स्पष्टता जानने के लिये मैंने १४ वर्षों तक परिश्रम किया।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण, ७० पृ. ३५९

उपरोक्त आयत दी गई आयत, कुर्आन में निम्नानुसार :—

वा मंय्यखरोजो मिन बैतेही मुहाजेरन इलल्लाहे वा रसूलेही सुम्मा युदरिकहुल मौत । कुर्आन. पारा ५, रकू १४।११

अर्थात्-जो कोई निकला अपने घर से अल्लाह और रसूल के लिये हिजरत (देश छोड़ कर) करने वाला होकर और यदि मार्ग

में मृत्यु हो जाये तथा अपने गन्तव्य स्थान तक न पहुँच सके तो उसके लिये उसका फल प्रमाणित हो गया (यह कथा जिन्दा के लिये वर्णित है) तफ़सीर कादरी भाग १, पृ. १८८

बेज़ावी ने उक्त व्यक्ति का नाम जिन्दब बिन ज़मरा लिखा है और तफ़सीर मज़हरी ने कबीला बनी लैस का जिन्दा बिन ज़मरा ही लिखा है जिसके विषय में उक्त कथा वर्णित है ।

कुर्आन में अनगिनत आयतें ऐसी है, जिनका स्पष्टीकरण नहीं होता है । अल्लामा सियुति ने भी तफ़सीर इत्तिकान में इस प्रकार की समस्त आयतें नहीं लिखी हैं, परन्तु हम उनमें से कुछ आयतें उदाहरणार्थ संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं । आगे अल्लामा ने अलहम्द की एक आयत लिखी है । आयत इस प्रकार है :—

सिरातल्लाज़ीना अन्अम्ता अलैहिम ।

अर्थात्-हमें उन लोगों का मार्ग दिखा जिनको तूने पुरस्कृत किया है । अल्लामा लिखते हैं कि यहा यह आयत गोल-मोल रखी गई (इसका जानना आवश्यक है) जिनको खुदा ने पुरस्कृत किया वे लोग कौन है ? उसका उत्तर दूसरी आयत से दिया है कि वे लोग नबी हैं, सत्यावादी हैं शहीद और सदाचारी हैं । तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७०, पृ. ३५९

अलहम्द की अगली आयत भी अस्पष्ट है, आयत इस प्रकार है :—

ग़ैरिलमग़ज़ूबे अलैहिम वा लज़्ज़ालीन ।

अर्थात्—हमें उन लोगों का मार्ग न दिखा जिन पर तूने क्रोध किया और न उसका मार्ग दिखा जो पथभ्रष्ट थे।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन पृ. १ कुर्आन

उक्त आयत में वर्णित दोनों विषयों अर्थात् खुदा ने किन पर क्रोध किया और कौन पथभ्रष्ट है, के सम्बन्ध में अद्दी बिन हातिम ने कहा है कि हज़रत मुहम्मद ने कहा कि जिन पर खुदा ने क्रोध किया वे यहूदी हैं और पथभ्रष्ट ईसाई हैं।

तफ़सीर मज़हरी भाग १, पृ १२

इसके आगे अल्लामा सियुति ने कुर्आन में अस्पष्ट आयतें रखने के संदर्भ में कुछ कारण दिये हैं। जो निम्नानुसार है :—
आयत :—

या आदमुसकुन अन्त वा ज़ौजोकल जन्नत।

अर्थात्—ऐ आदम ! तू और तेरी पत्नी स्वर्ग में रहो, इसमें आदम की पत्नी हव्वा का नाम नहीं दिया गया। इस कारण कि आदम के एक ही पत्नी थी।

आगे और आयत :—

अलमतरा इलल्लाजी हाजा इब्राहीमा फी रब्बेही।

कुर्आन, पारा ३, रकू ३५।५

अर्थात्-क्या नहीं देखा तूने, उस व्यक्ति की ओर जिसने खुदा के सम्बन्ध में इब्राहीम से झगड़ा किया ? यहाँ पर झगड़ा करनें

वाले का नाम नमरूद नहीं लिखा गया क्योंकि इब्राहीम का नमरूद की ओर रसूल बना कर भेजा जाना विख्यात है।

तफ़सीर इत्तिक़ान, पृष्ठ ३५९

आगे और आयत:—

'वमिनन्नासे मंय्यो जिबोका कौलुहू फिल्हयातिदुनिया' इत्यादि

कुर्आन, पारा २, रकू २५।९

अर्थात्—लोगों में से वह हैं, जो ऐ मुहम्मद ! तुझको उसकी बात अच्छी लगती है और प्रसन्न करती है। इतने से पता नहीं चल पाता कि किसकी कौनसी बात अच्छी लगती और प्रसन्न करती है। इसलिये घटना इस प्रकार है कि अख़नस सक़फ़ी हज़रत मुहम्मद की सेवा मे उपस्थित हुआ। वह मधुरभाषी और सुन्दर व्यक्ति था। हज़रत मुहम्मद को उसके मुँह की प्रफुल्लता और मधुर वार्ता अच्छी लगी। उसने कहा कि मैं इसलिए उपस्थित हुआ हूँ कि मैं इस्लाम को ग्रहण करूं और आपकी सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझूं। उसने यह बातें सौगंधपूर्वक और खुदा को साक्षी बना कर कहीं। जब वह मदीने की बस्ती से निकल गया तो एक जाति की खेती को अग्नि से जला दिया और मुसलमानों के पशुओं को तलवार से मार डाला। खुदा ने उक्त आयत उतारी कि लोगों में से कोई ऐसा है, जिसकी बात तुम्हें प्रसन्न कर देती है। वह सांसारिक जीवन की नीति के अनुसार खुदा को साक्ष्य बनाता है और कहता है कि मेरा मन व वचन एक हैं, किन्तु वास्तव में वह बड़ा झगड़ालू और भयंकर शत्रु है और जब वह तुम्हारी सेवा से जाता है तो पृथ्वी पर झगड़ा और विनाश करने की शीघ्रता

करता है । खेतों को जला कर भस्म कर देता है और चौपायों को मार डालता है । ख़ुदा उस विनाशकारी को पसन्द नहीं करता ।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १, पृष्ठ ५४

आगे अल्लामा ने अस्पष्ट आयत लिखी है, आयत इस प्रकार है-
औ कल्लाजी मर्रा अला करिय्यातिव्वा हैया खाबियतुन अला उरूशेहा काला अन्ना योहयी हाज़ेहिल्लाहो बादा मौतेह फ़ अमाताहुल्लाहो मेअता आमिन सुम्मा बाअसहू काला कम्लबिस्ताकाला लबिस्तो योमन औ ताज़ा यौमिन ।

कुर्आन, पारा ३, रकू ३५/५

अर्थात्—उस व्यक्ति के सदृश जो एक गांव से गुज़रा और वह गांव अपनी छतों से गिरा हुआ था । उस व्यक्ति ने कहा कि ख़ुदा कैसे जीवित करेगा इस मरे हुए गाँव को ? पस ख़ुदा ने उस व्यक्ति को मार डाला और सौ वर्षों के पश्चात् उसे पुनः जीवित किया और कहा कि तू यहां कितनी देर रहा तो उसने उत्तर दिया कि एक दिन या कुछ दिन का भाग ।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन पृष्ठ ५८, पारा ३ कुर्आन

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर इत्तिक़ान में आयत में वर्णित व्यक्ति का नाम अज़ीज़ या अर्मिया तथा हिज़कील लिखा गया है । तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ७० पृ. ३६१

उक्त आयत की व्याख्या करते हुए तफ़सीर इत्तिक़ान में केवल उस व्यक्ति का नाम बताया गया है जो छतों पर गिरे

हुए गांव से गुजरा था इससे यह ज्ञात नहीं हो पाता कि आयत क्या कहती है ?

इसी आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर क़ादरी में लिखा है कि 'अज़ीज़ नामक एक व्यक्ति एक गिरे हुए गांव के समीप से गुजरा। जिसकी छतें पहले गिरी थीं और उन पर दीवारें गिरी हुई थी। उसने कहा कि ख़ुदा किस प्रकार जीवित और आबाद करेगा इस गांव को। पस ख़ुदा ने उस व्यक्ति को मार डाला और सौ वर्षों के पश्चात् जीवित किया। उसका गधा भी मर गया, उसे भी फिर जीवित किया, अपनी पूर्व आकृति में। जीवित करने के बाद ख़ुदा ने उस व्यक्ति से प्रश्न किया कि तू कितनी देर यहाँ ठहरा ? उसने उत्तर दिया कि एक दिन या दिन का कुछ भाग। फ़रिश्ते ने कहा कि तू सौ वर्षों तक मृत रहा। अज़ीज़ ने देखा कि उस गाँव का दूसरा रूप है। फिर फ़रिश्ते ने कहा कि तू अपने अंगूर के रस को, अपनी अंजीरों को देख कि कहीं इनका स्वाद तो नहीं बिगड़ा है और अपने गधे की ओर देख कि जिसकी केवल हड्डियाँ रह गई थीं। उस समय उसका ध्यान इस ओर दिलाया गया कि मैंने (ख़ुदा ने) तुझे मरने के पश्चात् पुनः जीवित किया है, ताकि मेरी शक्ति का चिन्ह तेरे व्यक्तित्व में प्रकट हो जाये और तू देख ले कि किस प्रकार हम अभाव में भाव प्रकट करते हैं और अपने गधे की हड्डियों की ओर देख कि किस प्रकार उन्हें गति देते हैं और एक को दूसरे पर जमाते हैं और फिर पहनाते हैं उन हड्डियों को मांस व खाल। अज़ीज़ गधे की उन हड्डियों को देखने लगे तो एक आवाज़ सुनी कि कोई पुकार कर कहता है–ऐ हड्डियों और मांस व बिखरे हुए जोड़ों परमात्मा को पूर्ण शक्ति से एकत्रित हो जाओ। तब सब वस्तुएं एकत्रित होकर पूर्ववत बराबर हो

गईं और उस गधे के शरीर में प्राण आ गये तथा वह गधा तत्काल ही कूद कर चिल्लाने लगा। यह देख कर अज़ीज़ को मृतकों को जीवित होने पर विश्वास हो गया और उसने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह सब वस्तुओं को जीवित करने व मार डालने में समर्थ है। तफ़सीर क़ादरी, भाग १, पृष्ठ ७६-८० तफ़सीर मज़हरी में भी पृष्ठ ३८ से ४० तक के लगभग ऐसा ही लिखा है।

उक्त वर्णित आयत में जो घटना आपने पढ़ी है कि एक व्यक्ति उजाड़ गांव को देख कर कहता है कि ख़ुदा इस गांव को कैसे जीवित करेगा। उस बात को ख़ुदा ने सुना और उस आदमी को मार डाला और फिर सौ वर्षों के पश्चात् पुनः जीवित कर ख़ुदा उसके सामने उसके गधे को जीवित कर विश्वास दिलाता है कि उसमें मारने और जिलाने की शक्ति है। सौ वर्षों में उस गाँव का रूप बदल जाता है तो क्या वह मरा हुआ आदमी सौ वर्षों तक उसी गाँव में पड़ा रहा? इस आयत में वर्णित घटना पर कोई भी बुद्धिजीवी विश्वास करने में असमर्थ है और यह सोचने पर विवश होना पड़ता है कि इस्लाम के प्रचार-प्रसार हेतु और भोले-भाले व्यक्तियों को विभ्रमित कर मुसलमान बनाने हेतु ख़ुदा के नाम पर किस प्रकार की थोथी और लचर कथाएँ मनगढ़न्त रूप से गढ़ कर क़ुर्आन में भरती की गई और ख़ुदा के नाम पर व्यक्तियों को बहकाया गया

आगे और अस्पष्ट आयतः --

इन्ना मिनकुम लमल्लयुब्बत्तोअन्ना फ़इन असाबतकुम्मुसीबतुन काला फद लनअमलाहो अलैया इज़लम अकुम्मआहुम शहीदा।

क़ुर्आन, पारा ५, रकू १०।७

अर्थात्—निस्सन्देह तुममें से ऐसे व्यक्ति हैं जो देर करते है, पस, यदि तुम्हें कष्ट प्राप्त हो तो ये कहता है कि खुदा ने मुझ पर कृपा की कि मैं इनमें सम्मिलित न था ।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन पृ. ११९ कुर्आन

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर इत्तिकान में लिखा है कि यह व्यक्ति अब्दुल्ला बिन औबय्य है, (किन्तु यह कह देने मात्र से आयत का पूरा मन्तव्य स्पष्ट नहीं होता है)

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ७०, पृ. ३६१

तफ़सीर मज़हरी में उक्त आयत की व्याख्या में लिखा है—तुममें से वह व्यक्ति है जो जहाद (धर्मयुद्ध) से दूर रहता है और आलसी हो जाता है और कुछ लोग जहाद से दूसरों को भी रोकते है, जैसे--ओहद के युद्ध के दिन इब्ने औबय्य ने कुछ लोगों को रोका था । पस, ऐ मुसलमानों ! यदि तुम पर (वध या पराजय) कोई संकट आता है तो वह व्यक्ति (इब्ने औबय्य) कहता है कि मुझ पर अल्लाह की बड़ी कृपा हुई कि मैं मुसलमानों के साथ नहीं था (मैं संकट से बच गया) ।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ३, पृ. १६७

उक्त आयत का स्पष्ट अर्थ है कि इब्ने औबय्य ओहद के युद्ध में न तो स्वयं गया और न उसने कुछ लोगों को जाने ही दिया और जब मुसलमानों पर वध व पराजय के कारण संकट आता है तो वह कहता है कि अल्लाह की बड़ी कृपा हुई कि मैं मुसलमानों के साथ ओहद के युद्ध में सम्मिलित न था और संकट से बच गया ।

और अस्पष्ट आयत:—

वत्लो अलैहिम नबाअब्ने आदमा बिलहक्के इज़ करवा कुरबा-नन फ़तो कुब्बेला मिन आहदेहिमा वलम युनकब्बल मिनल आखरे कालो ल अक्तुलन्नका । कुर्आन, पारा ६, रकू ५।६

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर इत्तिकान में केवल इतना ही लिखा है कि यह दोनों काबील और हाबील थे ।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७०, पृ. ३६२

तफ़सीर मज़हरी में उक्त आयत की व्याख्या इस प्रकार है—उनको आदम के दोनों पुत्रों की सच्ची खबर सुनाओ । जब दोनों ने बलिदान प्रस्तुत किया । मुस्लिम विद्वानों ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है ।

कि हज़रत हव्वा के गर्भ से प्रत्येक बार एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न होते थे । कुल २० दफ़ा में ४० बच्चे उत्पन्न हुए सर्व प्रथम काबील और उसके साथ अकालीमिया नामक पुत्री उत्पन्न हुई और दूसरी बार में हाबील और उसके साथ लिउज़ा नामक पुत्री की उत्पत्ति हुई । हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है कि हज़रत आदम के जीवनकाल में ही आपकी सन्तान और सन्तानों की सन्तान ४० हज़ार तक पहुंच गई थी । हज़रत आदम की यह प्रथा थी जब उनकी सन्तान युवा हो जाती तो एक गर्भ के पुत्र और दूसरे गर्भ की पुत्री का आपस में विवाह कर देते । जब काबील और हाबील नामक पुत्रों के विवाह करने का समय आया तो काबील, हाबील के साथ उत्पन्न हुई

लड़की से विवाह करने को तत्पर न हुआ और कहने लगा कि हम दोनों की उत्पत्ति स्वर्ग में हुई थी अस्तु जो लड़की मेरे साथ उत्पन्न हुई है, उसके साथ विवाह करने का अधिकारी मैं अधिक हूं। क्योंकि उसके साथ जो लड़की उत्पन्न हुई थी वह अत्यधिक सुन्दरी थी। इस पर आदम ने कहा कि खुदा की ऐसी आज्ञा नहीं है। इस पर काबील ने उत्तर दिया कि ऐसी कोई आज्ञा अल्लाह की नहीं है, यह तो तुम्हारी अपनी सम्मति और प्रथा है। इस पर आदम ने कहा कि तुम खुदा के समक्ष भेंट स्वरूप बलिदान प्रस्तुत करो। जिसकी भेंट खुदा स्वीकारेगा उसका विवाह अकलीमिया से किया जायेगा। भेंट स्वीकार होने का यह प्रमाण था कि आसमान से एक सफेद अग्नि आकर उस भेंट को खा जाती थी। ऐसी भेंट स्वीकार प्रमाणित होती थी। काबील कृषक था, उसने भेंट में अन्न का ढेर रखा और हाबील बकरियों वाला था उसने भेंट में मेंढा रखा। पस, खुदा ने हाबील की भेंट अर्थात् बलिदान स्वीकार किया और उस मेढे को आसमानी सफेद अग्नि खा गई तथा काबील की भेंट अस्वीकृत हो गई। फलस्वरूप काबील अत्यधिक क्रोधित हुआ और उसने हाबील को मार डाला।

तफ़सीर मजहरी भाग ३, पृ. ४३९-४४०

उक्त आयत की व्याख्या से स्पष्ट ज्ञात होता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में जिस आदम को खुदा ने अपने हाथों से बनाया उस की पहली सन्तान काबील ने ही खुदा की और अपने पिता की आज्ञा का विरोध कर अपनी इच्छा की पूर्ति हेतु अपने भाई हाबील को मार डाला, क्योंकि उसे अपनी ही बहिन अकलीमिया से विवाह करना था और वह स्वयं को उसका अधिकारी

मानता था, क्योंकि वह स्वर्ग में उसके साथ उत्पन्न हुई थी और अत्यधिक सुन्दरी थी। जिसको इस्लाम सृष्टि का प्रारंभ मानता है उसमें बलिदान की प्रथा प्रचलित थी, जो कुर्आन से ही प्रमाणित है कि काबिल और हाबील ने खुदा के समक्ष बलिदान के रूप में अन्न का ढेर और मेंढा रखा, मगर खुदा ने हाबील का बलिदान मेंढा ग्रहण कर लिया और काबील का अन्न का ढेर अस्वीकृत कर दिया अर्थात् खुदा स्वय मांसाहारी है और मांस आदि का भक्षक है। यह है आयत का तात्पर्य और आदम की सन्तान का हाल।

और अस्पष्ट आयत :—

'वा इज़ कतलतुम नफसन'

अर्थात्—जब तुमने एक व्यक्ति की हत्या की। जिसकी हत्या की गई उस व्यक्ति का नाम आमील था।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७०, पृ, ३६१

ऊपर वर्णित आयत कुर्आन में पूर्ण रूप से इस प्रकार है। आयत :—

वा इज कतलतुम नफसन फद्दारातुम फी हा, वल्लाहो मुख-रेजुम्मा कुन्तुम तक्तोमून। कुर्आन, पारा १, रकू ९।९

अर्थात्—जब मार डाला तुमने एक प्राणी को और उसमें तुमने विरोध किया और अल्लाह प्रकट करने वाला है, जिसे तुम छिपाते थे। अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन, पृ. ५४, कुर्आन

उक्त वर्णित आयत के अर्थ से ज्ञात नहीं होता है कि किसने किसको मार डाला और किसने क्या छुपाया था। जिसे खुदा प्रकट करने वाला है।

उक्त आयत के सम्बंध में तफ़सीर मजहरी में लिखा है, कि—बनी इस्राईल में एक आमील नामक धनाढ्य व्यक्ति था उसके चाचा का एक पुत्र फकीर था और वही एक मात्र आमील की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी था। उसने यह सोचा कि मैं ही एक मात्र सम्पत्ति का अधिकारी हूं और उसने आमील की हत्या कर दी और उसके शव को दूसरे गांव में ले जाकर फेंक दिया। हजरत मूसा ने आमील के हत्यारे की बहुत खोज-बीन की पर पता नहीं चला। इस पर उन्होंने खुदा से प्रार्थना की और कहा कि उस हत्यारे का पता आप ही लगायें।

हत्यारे का पता लगाने हेतु खुदाई आदेश

आयत :—

इन्नल्लाहा यामूरोकुम अन तज्बहु बकरातन।

कुर्आन, पारा १, रकू ८।८

अर्थात्—अल्लाह आदेश देता है कि एक गाय का वध करो (जब लोगों ने यह बात सुनी) तो 'कालू अतत्तखीज़ोना होज़ोवा' (पारा १, रकू ८।८) लोगों ने मूसा से कहा हमसे हँसी (मजाक) करते हो? भला गाय के वध में और हत्यारे की खोज में क्या सामंजस है? वह इसे दिल्लगी समझे और यह न समझे कि खुदा कि आज्ञाओं में रहस्य हुआ करते हैं। 'काला अऊज़ो बिल्लाहे अनअकना मिनल जाहेलीन' (पारा १, रकू ८।८) हजरत

मूसा ने कहा कि खुदा की पनाह ! क्या मैं भी मूर्ख बन जाऊं अर्थात् मूर्खों में से हो जाऊं कि जिस प्रकार तुम लोग खुदा की आज्ञा को दिल्लगी और हंसी समझ रहे हो ।

इस पर एक हदीस इब्ने जरीर ने प्रामाणिक रूप से हज़रत इब्ने अब्बास से रवायत की है । उनकी इस छानबीन में एक विशेष गाय का वध करना पड़ा । उसमें खुदा का एक विचित्र रहस्य था । वह यह कि बनी इस्राईल में एक सदाचारी और भला व्यक्ति था तथा उसका एक नाबालिग पुत्र था और उस व्यक्ति के पास एक गाय की बछड़ी थी । जिसे वह अपनी मृत्यु के पूर्व जंगल में लाया और खुदा से प्रार्थना की, कि ऐ खुदावन्द ! मैं इस बछड़े को अपने पुत्र के युवा होने तक आपके पास धरोहर रखता हूँ और उसे छोड़ कर चला आया और आते ही मर गया । बछड़ा जंगल में चरा करता था और जब किसी को देखता तो दूर भाग जाता । जब वह लड़का युवा हुवा तो नेक और सदाचारी बना माता की अत्यधिक सेवा करता था । एक दिन उसकी माता ने कहा बेटा तेरा बाप तेरे लिये एक गाय अमुक जंगल में खुदा की निगरानी में छोड़ गया है । तू उस जंगल में जा और यह कह आवाज दे कि ऐ इब्राहीम और इस्माईल के उपास्य ! वो गाय मुझे प्रदान कर । उस गाय का चिन्ह यह है कि उसकी खाल सूरज की किरणें निकल रही होगी । उसका रंग जर्द था इस-लिये लोग उसे सुनहरी गाय कहते थे । उसने जंगल में जाकर माता की आज्ञानुसार आवाज दी । वो गाय खुदा की आज्ञा से दौड़ कर उसके सम्मुख आ गई । युवक ने गर्दन पकड़ कर उसे खींचा । गाय बोली—ऐ माता के सेवक मुझ पर सवार हो

जा तुझे आराम मिलेगा। युवक ने उत्तर दिया कि मेरी माता की आज्ञा गर्दन पकड़ कर लाने की है, सवार होने की नहीं। पुनः गाय बोली-ऐ युवक ! तू यदि मेरे कहने से मुझ पर सवार हो जाता तो मैं कदापि तेरे वश में नहीं आती और तेरी मां की सेवा के कारण तेरा वह उच्च पद है यदि तू पहाड़ को भी आज्ञा दे तो वह भी तेरे साथ चलने लगे। अन्ततः वह गाय को अपनी माँ के पास ले आया। मां ने कहां बेटा ! तू फ़क़ीर है इस गाय को तीन दीनार तक बेच दे; परन्तु बेचने के पूर्व मुझसे पुनः पूछ लेना माता की आज्ञा से वह गाय को बाजार में ले गया। उधर खुदा ने अपनी शक्ति दिखाने व उसकी मातृ-भक्ति की परीक्षा हेतु एक फ़रिश्ता भेजा। फ़रिश्ते ने गाय का मूल्य पूछा। उसने कहा कि मूल्य तो तीन दीनार है; किन्तु अपनी माँ से पुनः पूछ कर दूंगा फ़रिश्ते ने कहा मुझसे छः दीनार ले ले, किन्तु अपनी मां से मत पूछ। युवक ने कहा मुझे तुम इसके बराबर सोना भी दो तो भी मैं मां से बग़ैर पूछे नहीं दूंगा। इसी प्रकार देर तक उनका सौदा होता रहा। अन्त में फ़रिश्ते ने कहा कि अपनी मां से कहना कि अभी इस गाय को नहीं बेचे हज़रत मूसा एक की गई हत्या के सम्बन्ध में इसे क्रय करेंगे। तुम इसे खाल भर दीनार से कम मूल्य में विक्रय मत करना। इधर वह अपनी गाय को लेकर घर चला आया और उधर खुदा ने बनी इस्राईल के मन में यह विचार उत्पन्न किया कि वह गाय किस प्रकार और किन गुणों से युक्त हो। इस सम्बन्ध में वह हज़रत मूसा से पूछते रहे:- कालुदओ लना रब्बाका योदय्यिल्लना माहिया।

कुर्आन, पारा १, रकू ८

उन्होंने मूसा से कहा—कि हमारे ईश्वर से पूछ कि वह गाय कैसी हो ?

इस पर मूसा ने कहा :—

काला इन्नाहू यकूलो इन्नाहा बकर तुल्ला फ़ारेजव्व ला बिकर ।

कुर्आन, पारा १. रकू ८

मूसा ने कहा–खुदा ने कहा कि वह गाय युवा हो, प्रजनन योग्य हो और ऐसी अल्पायु की न हो कि वह सन्तानोत्पत्ति के अयोग्य हो ! लोगों ने पूछा :—

कालुदओ लना रब्बाका युबय्यिल्लना मा लौनोहा ।

(कुर्आन पारा १, रकू ८)

कि अपने खुदा से पूछ कि उसका रंग क्या होगा ? तो :—

काला इन्नाहु यकूलो इन्नाहा व क रा तुन सफ़राओ फाकेउ ल्लौनाहा ।

मूसा ने कहा—खुदा कहता है उस गाय का गहरा सुनहरी रंग हो और देखने वालों को सुन्दर लगती हो । फिर लोगों ने कहा कि खुदा से पुछ कर बता कि उसकी क्या नस्ल होगी क्योंकि हमें विभिन्न गायों के कारण सन्देह हो गया है । इस पर निम्नलिखित आयत कही गई । आयत :—

काला इन्नाहू यकूलो इन्नाहा ब क र तुल्ला ज़लूलुन तोसिरुल अर्ज़ा वा ला तस्किल हरस, मुसल्लमतुल्लाशि यता फ़ी हा ।

(कुर्आन, पारा १, रकू ८)

मूसा ने कहा—खुदा कहता है कि एक गाय बिना परिश्रमवाली जो न भूमि जोतती है और न खेतों कों पानी ही पिलाती है । उसके शरीर पर कोई धब्बा नहीं है । लोगों ने कहा कि अब

तुमने उचित कहा है। फलस्वरूप उस गाय का वध किया, जब कि वह करना नहीं चाहते थे।

(इस कथा के प्रारम्भ में दी गई अस्पष्ट आयत जिसका अर्थ हम आयत के साथ दे चुके हैं)

(फिर खुदा ने कहा—'फ़कुल नज़रेबूहो बेबाज़ेहा' (मारो इस मुर्दे को गाय के एक अंग से) अर्थात्—उस मृतक के शव को गाय के किसी अंग से छुओ। जब ऐसा किया गया तो वह मृतक जीवित हो उठा और उसने अपने हत्यारे का नाम बताया और पुनः मृत हो गया।

तफ़सीर मज़हरी भाग १, पृ. १३५ से १४२

उक्त कथा को पढ़ कर उस आयत का अर्थ कुछ भी ज्ञात नहीं होता है, क्योंकि आयत में कुछ कहा गया है और व्याख्या में पूरा विवरण कथा के रूप में है। आयत के संदर्भ में दी गई कथा को पढ़ कर ऐसा लगता है कि जैसे अलिफ़ लैला का कोई किस्सा है, कि किस प्रकार एक व्यक्ति की हत्या हुई। किस प्रकार एक व्यक्ति अपने पुत्र के लिये गाय छोड़ कर मरा और फिर मूसा को हत्यारे का पता लगाने के लिये उस गाय का वध करके उस मृतक को क्षणिक जीवित कर उसके हत्यारे का नाम जाना। क्या मूसा का खुदा! बिना गाय का वध करवाये उस मृतक को जीवित नहीं कर सकता था? और फिर जो खुदा सर्वज्ञाता एवं सर्वव्यापी है क्या वो हज़रत मूसा को हत्यारे का नाम नहीं बता सकता था? जो उसने इतना लम्बा चौड़ा नाटक कर हत्यारे का पता लगवाया। इस कथा पर कोई भी

विद्वज्जन या बुद्धिजीवी विश्वास नहीं कर सकता और वे इसे केवल कपोल-कल्पित गाथा ही मानने पर विवश होंगे।

और अस्पष्ट आयत :—

वतलो अलैहिम नबाअल्लाजी आतेनाहो आयातेना फनसलख मिनहा फा अतबाआ हुश्शैतानों फकाना मिनलगावीन।

कुर्आन, पारा ९, रकू २२।१२

अर्थात्—उनके ऊपर उस व्यक्ति का किस्सा पढ़ जिसको हमने अपनी निशानियाँ दी। पस, उसके पीछे शैतान लगा और वह उन निशानियों से निकल कर पथभ्रष्ट हो गया।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन, पृ, २६३ कुर्आन

उक्त आयत के सम्बन्ध में अल्लामा सियुति ने लिखा है कि वह बाऊर या बऊर कहा गया है और यह भी कहा गया है कि वह उमैय्या बिन अबी सलत तथा सैफी बिन राहिब और फ़िरऔन भी कहा गया है, परन्तु केवल नाम बता देने से आयत में कही गई बात का स्पष्टीकरण नहीं होता है।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७० पृ. ३६२

उक्त आयत का स्पष्टीकरण तफ़सीर कादरी में इस प्रकार है—ऐ मुहम्मद ! पढ़ अपनी जाति (मुसलमान) पर या यहूदियों पर उस व्यक्ति की खबर, जिसे हमने (खुदा ने) अपनी आयतों का ज्ञान दिया था और उस व्यक्ति का नाम उमैय्या बिन सलत था। जो आसमानी किताबों का पठन-पाठन किया करता था और वह जानता था कि इस समय कोई रसूल

आने वाला है, किन्तु वह समझता था कि वह रसूल मैं स्वयं हूँ। जब हज़रत मुहम्मद रसूल हुए तो उम्मैया ईर्ष्यावश काफ़िर हो गया और जो आयतें उसने पढ़ी थी उन्हें एक ओर रख दिया। फिर उन आयतों से बेईमानी और विद्रोह पर उतर आया। फिर उसके पीछे शैतान पड़ा और वह आयतों का जानकार पथभ्रष्ट हो गया।

कतिपय लोगों का कथन है कि उस व्यक्ति का नाम अबू आमर राहिब था और वह मस्जिद जरार के निर्माण में प्रयत्नशील रहा और वह हज़रत मुहम्मद को पहिचान कर मुसलमान बन गया तथा पुनः हज़रत मुहम्मद की पैग़म्बरी अस्वीकृत कर काफिर हो गया।

विख्यात यह भी है कि वह व्यक्ति बलअम बाऊर था। उसने मूसा और उसकी जाति के लिये अशुभ प्रार्थना की थी। ख़ुदा ने उसे इस्में आज़म भूला दिया और वह बेईमान हो गया।

तफ़सीर क़ादरी, भाग १ पृष्ठ ३४६-३४७

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी में इब्ने अब्बास के कथनानुसार उस व्यक्ति का नाम बलअम बिन बऊर था। वह हज़रत मूसा का समकालीन था।

तफ़सीर मजहरी, भाग ४, पृष्ठ ४२०

अब देखिये कि क़ुर्आन के व्याख्याकारों ने किस प्रकार विभिन्न अटकलें लगाई हैं। कहां उम्मैया बिन सलत जो कि हज़रत मुहम्मद का समकालीन था और मुसलमान होने के पश्चात् पुनः काफ़िर हो गया और कहां बलअम बिन बऊर जो

कि हज़रत मूसा के समय था। हज़रत मुहम्मद और हज़रत मूसा के मध्य हज़ारों वर्षों का अन्तर है, किन्तु व्याख्याकारों ने उक्त आयत का स्पष्टिकरण करने के प्रयास में और भी अस्पष्टता उत्पन्न कर हज़ारों वर्षों के अन्तराल का एकीकरण कर और भी भ्रम उत्पन्न कर दिया।

और अस्पष्ट आयत:—

इन्ना कफ़ैना कल मुस्तहाज़ेईन।

.कुर्आन, पारा १४, रकू ६/६

अर्थात्—निस्सन्देह हमने तुझको हँसी करने वालों से मुक्त कर दिया।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन, पृष्ठ ३६४. कुर्आन

उक्त आयत में कही गई बात अस्पष्ट है क्योंकि यह ज्ञात नहीं होता है कि कौन हँसी करने वाले हैं और किसे मुक्त किया गया है ?

उक्त आयत के सम्बन्ध में अल्लामा सियूती लिखते हैं कि वे पांच व्यक्ति थे, जो हंसी उड़ाते थे। सईद बिन जबेर के कथनानुसार वलीद बिन मोग़ीरा, आसी बिन वाईल अबुज़मआ-हारिस बिन क़ैस और असवद बिन अब्दे यग़ूस।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ७०, पृष्ठ ३६३

इस आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मजहरी में लिखा में लिखा है कि—जो लोग तेरी हंसी उड़ाते हैं, ऐ मुहम्मद ! हम उनकी जड़े उखाड़ देंगे और उनका सर्वनाश कर देंगे।

बग़वी के अनुसार यह हंसी उड़ाने वाले कुरैश के १५ सरदार थे । वलीद बिन मौगीरा उनका नेता था ।

तफ़सीर मज़हरी भाग ६, पृ. ३६८

तफ़सीर कादरी भाग १, पृ, ५५५ में और तफ़सीर जलालैन पृष्ठ २१५ में भी उक्त आयत का इसी प्रकार विवरण है ।

और अस्पष्ट आयत :—

वा ला तकूनू कल्लाती नकज़त गज़लाहा मिम्बादे कुव्वतिन अनकासा । कुर्आन पारा १४, रकू १३।१९

अर्थात्—उस स्त्री के समान मत हो, जिसने अपने काते हुए सूत को बलपूर्वक क्षार-क्षार कर दिया ।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन, पृ. ३७९ कुर्आन

उक्त आयत के सम्बन्ध में अल्लामा सियुति लिखते हैं- कि वह स्त्री रब्ता बिन्ते सईद बिन ज़ैद बिन मनात बिन तमीम थी ।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ७० पृष्ठ ३६३

इस आयत के सम्बंध में तफ़सीर मज़हरी में लिखा है- कि उस मूर्ख स्त्री की भांति न हो जाओ जिसने अपना काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े कर नोच डाला ।

इब्ने अबी हातम ने अबु बकर बिन अबी हफ़्स का कथन उद्धृत किया है कि (मक्का की एक स्त्री) सईदा असदिया पागल थी । वह बाल और खजूर की छाल के रेशे एकत्रित करती थी । उसी के लिये यह आयत उतरी ।

बग़वी ने लिखा है कि कलबी और मुकातिल ने कहा कि रब्ता बिन्ते उमर बिन शाद बिन काब बिन जैद बिन मनात बिन तमीम एक मूर्ख स्त्री थी । उसका उपनाम जार था । उसने एक चर्खा हाथ भर का और उसमें एक खूँटी (मेख) अंगुल भर की और दमरकाह (चकरी) बहुत बड़ी बना रखी थी । प्रतिदिन वह ऊन-रूई और बालों की कताई करती थी तथा अपनी सेविकाओं से भी कतवाती थी । सब मिल कर दोपहर तक कातती थी । दोपहर पश्चात् वह सबका काता हुआ धागा खोल कर टुकड़े-टुकड़े कर डालती थी । यह उसका दैनिक कार्यक्रम था । अर्थात्—आयत का तात्पर्य यह है कि तुम उस स्त्री के समान मत हो जाना ।

इस्लाम के पूर्व लोग आपस में शपथ ग्रहण करते थे । इस आयत का उतरना इस कारण हुआ कि शपथ तो लो परंतु शपथ भंग मत करना उस स्त्री की भाँति जो अपने काते हुए सूत को क्षार क्षार कर देती है ।

तफ़सीर मज़हरी, भाग ६ पृष्ठ ४२७-२८

तफ़सीर क़ादरी में लिखा है कि—तुम अनुबंध तोड़ने और वचन भंग करने में उस स्त्री के समान मत हो जाओ,

जिसने अपना काता हुआ सूत खोला और तोड डाला। यह स्त्री अरब की थी और उसका नाम रब्ता या राब्ता और दमयाति के अनुसार खतीया, हमका या जारा था। उसका उपनाम अरूका था, उसकी बहुत सी दासियां थी। वह प्रातः से दोपहर तक ऊन और सूत स्वयं कातती व दासियों से भी कतवाती थी तथा दोपहर ढलने के पश्चात् सबको आज्ञा देती कि चर्खा उल्टा घुमा कर धागे का बल खोल डालो ताको कता हुआ धागा व्यर्थ और नष्ट हो जाए। उसकी प्रतिदिन यही आदत थी। खुदा ने अनुबंध तौड़नेवालों को उस स्त्री के साथ उपमा दी है, कि अपने अनुबंध को न तोड़े।

तफ़सीर कादरी भाग १, पृ. ५७९

और अस्पष्ट आयत :—

वलकद् नालमो इन्नाहुम यकूलूना इन्नामा योअल्लेमोहू बशर।

कुर्आन, पारा १४, रकू १४।२०

अर्थात्—हमको ज्ञात है कि यह लोग यह कहते हैं कि इनको (मुहम्मद को) यह कलाम (कुर्आन) मनुष्य सिखा जाता है। यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से नहीं है।

बग़वी ने लिखा है कि इस विषय में मुस्लिम विद्वानों में मतभेद है। इब्ने जुरेर ने हज़रत इब्ने अब्बास का कथन उल्लिखित किया है कि मक्का में एक ईसाई अजमी गुलाम लुहार था, उसका नाम बलआम था। हज़रत मुहम्मद उसके पास आते जाते थे। मुशरिकों ने आपको बलआम के पास आते-जाते देख कर कहा कि इसको कुर्आन बलआम सिखाता है।

अकरमा ने कहा कि बनी मोग़ेरा का एक गुलाम जिसका नाम योयीश था। वह पुस्तकें पढ़ता था। हज़रत मुहम्मद उसे कुर्आन सिखाते थे। कुरैश कहने लगे कि इनको योयीश कुर्आन सिखा देता है।

फ़रा ने कहा कि हवैतब बिन अब्दुलअज्ज़ा का एक गुलाम था, जिसकी भाषा अजमी थी और उसका नाम आईश था। मुहम्मद आईश से कुर्आन सीख लेते हैं।

इब्ने इर्शाद ने कहा कि हज़रत मुहम्मद मरवा पहाड़ी के समीप एक रूमी ईसाई गुलाम के पास बैठा करते थे, उसका नाम ज़बर था और वह पुस्तकें पढ़ा करता था। अब्दुल्लाह बिन हजरमी का कथन है कि हमारे दो गुलाम यमन निवासी थे। एक का नाम यसर और दूसरे का नाम ज़बर था। वह दोनों मक्का में तलवारें बनाया करते थे और तौरेत व अंजील पढ़ा करते थे। कभी-कभी हज़रत मुहम्मद उनकी ओर गुज़रते और वह अंजील व तौरेत पढ़ते होते तो वे ठहर कर सुनने लगते।

ज़ीहाक का कथन है कि हज़रत मुहम्मद को जब काफ़िर लोग कष्ट देते तो आप इन दोनों गुलामों के पास जाकर बैठ जाते और उनकी वाणी से कुछ सुख अनुभव करते। मुशरिक कहने लगे कि मुहम्मद इन दोनों से सीख लेते है।

तफ़सीर मज़हरी भाग ६, पृ. ४३८

उक्त सम्बन्ध में तफ़सीर जलालैन पृष्ठ २३६ में भी ऐसा ही लिखा है।

इस आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर इत्तिकान में लिखा है कि काफ़िरों ने इस बात को कहने से अब्दबिनल हज़रमी को मुराद माना था और उसका नाम मुकीश था। कहा गया है कि यसार और जबर नामक दो ग़ुलाम हज़रत मुहम्मद को सिखाने वाले मान लिये थे, और यह भी कहा गया है कि उनका तात्पर्य मक्का निवासी एक लुहार बलआम से भी था। यह भी कहा गया है कि मक्का के मुशरिकों का तात्पर्य सिलमान फारसी से भी था।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७०, भाग २, पृ. ३६३

हजरत मुहम्मद के समय में लोग उनके मुंह पर स्पष्ट कहते थे कि मुहम्मद को कोई व्यक्ति कुर्आन सिखाता है और यह कुर्आन अल्लाह की ओर से नहीं है। कई मुस्लिम विद्वानों ने तो स्पष्ट कहा है कि कुर्आन जैसी पुस्तक लिखना मुहम्मद सा. के वश की बात नहीं और इन्हें अमुक ईसाई, फ़ारसी, लोहार और ग़ुलाम लोग कुर्आन सिखाते हैं क्योंकि वह पुस्तकें अंजील और तौरेत का पाठ करते रहते और हज़रत मुहम्मद उनके पास ठहर कर सुनते रहते तथा उन लोगों के पास उनका आना-जाना रहता था। जब काफिर लोग उन्हें कष्ट देते थे तो वे उनके पास जाकर बैठते और उनके कलाम (वाणी) से सुख अनुभव करते थे।

पाठक! स्वयं निर्णय करें कि कुर्आन अल्लाह की ओर से है या हज़रत मुहम्मद ने लिखा है? या फिर उपरोक्त लोगों ने हज़रत मुहम्मद को सिखाया है? क्योंकि कुर्आन में भिन्न-भिन्न स्थानों पर विभिन्न चर्चायें हैं।

और अस्पष्ट आयत :—

'अल्लाजी जाऊ बिल इफ्के' अर्थात्—जो लोग आरोप लगाने हेतु आये, वह हैं। हस्सान बिन साबित, मुसत्ता बिन असासा, खमसा बिन्ते जहश और अब्दुल्ला बिन औबेद थे।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७०, भाग २, पृ. ३६४

उपरोक्त वर्णन से आयत का कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं हो पाता है। अतः पाठकों की जानकारी हेतु हम उपरोक्त आयत जो कुर्आन में है, उसे देकर उसकी व्याख्या करते हैं।

आयत इस प्रकार है :—

इन्नल्लाज़ीना जाऊ बिल इफ़के उसब तुम्मिमनकुम ला तह्-सबूहो शर्रल्लाकुम बल्होवा खैरूल्लाकुम लिकुल्लिमरे इम्मिन-हुम्मकतसाबा मिनल इस्में वल्लाज़ी तवल्ला किबरहू मिन्हुम लहू अज़ाबुन अज़ीम। कुर्आन, पारा १८, रकू २।८

उपरोक्त आयत की कथा इस प्रकार है कि हज़रत आयशा पर उक्त लोगों ने वर्णित आरोप लगाया था। यह आयतें हज़रत आयशा को आरोप से मुक्त करने हेतु उतरीं। यह कथा बहुत लम्बी है, जिसे हम संक्षिप्त में लिखते है।

"हिजरत के ५ वें वर्ष जब मरीशिया युद्ध की घटना घटी तब जनाब सिद्दीका (हज़रत आयशा) उस यात्रा में हज़रत

मुहम्मद के साथ थीं । एक पड़ाव समाप्ति के पश्चात् ऊँट के कजावे से उतरी । उनका हार खो गया था उसे तलाश करने हेतु पड़ाव से दूर चली गई । सेवकों ने कजावा उठा कर ऊँट पर रख दिया । यह न देखा कि कजावा खाली है या बीबी आयशा बैठी हैं । वह ऊँट पर कजावा रख कर चल दिये । हज़रत आयशा जब लौट कर वहां आई तो वहां कोई भी नहीं था । फलस्वरूप उसी स्थान पर ठहर गई । यहां तक कि सफ्वान बिन हुअत्तल, जो हज़रत की आज्ञानुसार सेना के पीछे-पीछे आया करता था, वह वहां पहुँचा और हज़रत आयशा उनके ऊँट पर सवार हो लश्कर में जा मिली । इब्ने और औवेद ने खफ़्वान के ऊन्ट पर हज़रत आयशा को सवार देख कर वह बात कही जो हज़रत मुहम्मद की पत्नियों के सम्बन्ध में कहने योग्य नहीं थी । जब मदीने में सब पहूंचे तो यह सूचना हज़रत मुहम्मद को दी गई और हज़रत आयशा अस्वस्थ हो गई थी; किन्तु हज़रत मुहम्मद की ओर से उनके साथ उपेक्षा की जाने लगी । फलस्वरूप वह आज्ञा लेकर अपने पिता के घर आ गई । वहां यह समाचार सुना तो इस दुःख से रोग और बढ़ गया और हज़रत मुहम्मद बीबी आयशा के समाचार प्राप्ति हेतु आकर्षित हुए । अपनी बीबीयों और बडे-बड़े मित्रों से आप पूछते तो सब आयशा के निष्कलंक होने की साक्षी देते ।

एक दिन हज़रत मुहम्मद आयशा के पिता हज़रत सिद्दीक के घर आये और हज़रत आयशा को रोते देख कर कहा—ऐ आयशा ! यदि तुमने पाप किया है तो खुदा से तौबा (पश्चाताप) करो और क्षमा मांगों । हज़रत आयशा ने अपने माता पिता से कहा कि तुम हज़रत मुहम्मद की इस बात का उत्तर

दो। किसी ने भी उत्तर देने का साहस नहीं किया तो स्वयं हज़रत आयशा ने भयपूर्ण होकर हज़रत मुहम्मद से निवेदन किया कि या रसूलिल्लाह ! द्वेषियों ने यह खबर उड़ा दी है। मैं जो कहती हूं, कोई उस पर विश्वास नहीं करता है। तो मैं वही बात कहती हूं, जो यूसुफ़ के पिता ने कही थी। बस, संतोष बहुत अच्छा है, और खुदा सहायक है।

उक्त चर्चा के मध्य हज़रत मुहम्मद पर वही (आयतें लाने वाला फ़रिश्ता) का प्रभाव हुआ और हज़रत आयशा के निष्पाप होने की आयतें उतरी (उपरोक्त वर्णित आयत) ! अर्थात्—निस्सन्देह जो लोग आयशा की शान (चरित्र) में बड़ा झूठ लाये हैं, वो तुममें से ही एक दल है और वह पाँच व्यक्ति थे। अब्दुल्ला बिन औबेद मुनाफ़कों का नेता और ज़ैद बिन रफ़ाया और उस्मान बिन साबित शायर और मुसत्ता बिन अनासा हज़रत अबु बकर की मासी के पुत्र और हमना जहश की पुत्री मुहम्मद की पत्नी ज़ैनब की बहिन, न समझो उस झूठे को बुरा अपने हेतु, इसमें हज़रत मुहम्मद हज़रत आयशा और सफ़वान जिसके साथ कलंक लगाया गया था को सम्बोधित किया गया है। अपितु वह अच्छा है तुम्हारे हेतु, इसलिये कि तुमने बड़ा पुण्य पाया और तुम्हारी मुक्ति और पवित्रता में आयतें उतरी और इनसे आरोप दूर हुआ और तुम्हारी महत्ता व उत्तमता सब पर प्रकट हो गई और सब मिथ्याभाषी व आरोप लगाने वाले के लिये वईद (कष्टदायक) हो गई। प्रत्येक व्यक्ति के लिये जो उनमें बड़ा झूठ बोलने वाले हैं, उनके लिये दंड प्राप्त होगा जो उन्होंने पाप प्रकट किया। जिस व्यक्ति ने वह बात कही, वह उस दल में बहुत बुरा है। वह इब्ने

औवेद अल्लाह से दुत्कारा हुआ है और उसके लिये क़यामत में बड़ी यातनाएं हैं।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २ पृष्ठ ११०-१११

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर हक़्क़ानी में कुछ बातें लिखी है।

(१) ऐसे लोगों पर सुविचार रखना आवश्यक है।
(२) इस बात के असत्य होने की स्थिति में बड़ों को कष्ट होने पर ख़ुदा की किस प्रकार नाराज़गी होगी।
(३) यदि यह सत्य भी हो तो बदनाम करने के बदले बात पर आवरण डालना हर स्थिति में श्रेष्ठ है।
(४) ऐसी बातों को फैलाने से सिवाय इसके कि ईमानदारों में कुचर्चा फैले और कोई परिणाम नहीं निकलता।

इसलिये खुदा तुमको उपदेश देता है कि भविष्य में कभी ऐसा न करना और अल्लाह तुम्हारे लिये स्पष्ट कहता है और सभ्यता व सद्व्यवहार सिखाता है और वह सर्वज्ञाता है। ऐसी बातों से जो बुराईयां उत्पन्न होती हैं, परस्पर द्वेष व ईर्ष्या आदि वह ख़ुदा भलिभांति जानता है। इन्हीं शिक्षाओं को लक्ष्य में रख कर तुम्हें बुरी बातों से रोकता है।

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा १८, पृष्ठ २८

और अस्पष्ट आयत:—

'कुल ले अज़वाजेका' अकरमा ने कहा कि इस आयत के उतरने के समय हज़रत मुहम्मद के ९ पत्नियां थीं (१) आयशा (२)

हफ़सा (३) उम्मे हबीबा (४) सूदह (५) उम्मे सलमा (६) सफ़िय्याह (७) मेमूना (८) ज़ैनब बिन्ते जहश और ९) जुवैरिया। और हज़रत मुहम्मद की बेटियां (१) फ़ातिमा (२) ज़ैनब (३) रूक़ैया और (४) उम्मे कुलसूम थीं, और परिवार में अली, फ़ातिमा, हसन, हुसैन चार यह और पांचवे स्वय हज़रत मुहम्मद थे।

तफ़सीर इत्तिक़ान, भाग २, प्रकरण ७०, पृष्ठ ३६५

उपरोक्त दिये गये आयत के अंश से कुछ ज्ञात नहीं होता। फलस्वरूप पूर्ण आयत निम्नानुसार है। आयतः—

कुल लेअज़वाजेका इन कुन्तुन्ना तरिदनल हयात दुनिया वा ज़ीनतहा फतआलेना उमत्तेकुन्ना वा उसर्रेहकुन्ना सराजन जमीला। वा इनकुन्तुन्ना तुरिदनल्लाहा वा रसूलाहू वद्दारल अखिरता फ़इन्नल्लाह आ अद्दा लिल मोहसिनाते मिनकुन्ना अजरन अज़ीमा।

.कुर्आन, पारा २१, रकू ३।१९ पारा २२ रकू ४/१

अर्थात्—ऐ नबी! अपनी पत्नियों के लिये कह। यदि तुम सांसारिक जीवन की कामना करती हो और बनाव-शृंगार करना चाहती हो। पस, आओ, कुछ (मेहर) कुछ लाभ दूँ। मैं तुमको, और विदा करूँ मैं तुमको, भली प्रकार विदा करना (तात्पर्य यह है कि मेहर देकर तलाक दूँ और विदा कर दूँ) और यदि तुम .खुदा रसूल और कयामत का विचार रखती हो

तो निस्सन्देह अल्लाह ने तैय्यार किया है भला करने वालों के लिये बहुत बड़ा फल ।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन पारा २१ पृ. ५८४ कुर्आन

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर कादरी में कथा इस प्रकार है—हिजरत के ९ वें वर्ष हज़रत मुहम्मद ने अपनी पत्नियों से पृथक होकर शपथ ली कि एक माह तक उनसे नहीं मिलूंगा । कारण यह था कि पत्नियां भोजन-वस्त्र अधिक मांगती थी, जैसे यमानी चादर और मिश्र का वस्त्र तथा इस प्रकार की अन्य वस्तुओं की मांग करती थी, जो कि आपके वश के बाहर थी । फलस्वरूप आपने शोकग्रस्त और निराश होकर उनसे एकान्त ले लिया और मस्जिद के एक कोने में रहने लगे । २९ दिन के पश्चात् वह महीना २९ दिन का था । हज़रत जिब्रील यह उक्त) आयत स्वतन्त्रता की लेकर आये–ऐ पैग़म्बर ! अपनी पत्नियों से कह दो कि—यदि तुम सांसारिक सुख भोग, बढ़िया वस्त्र और आभूषण चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें तलाक दूं और विदा कर दूं मैं तुमको अपनी प्रसन्नता से, और यदि तुम आशीष चाहती हो और उसके रसूल की प्रसन्नता व कयामत में पुरस्कार चाहती हो तो निस्सन्देह अल्लाह ने तैय्यार किया है भलाई करने वाली स्त्रियों के लिये तुममें से बहुत बड़ा फल । संसार की वस्तुएँ उसकी तुलना में हीन है ।

हज़रत मुहम्मद की पत्नीयों मे से सर्व प्रथम जिसने खुदा और रसूल को स्वीकार किया, वह हज़रत आयशा थीं ।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ २६१

तफ़सीर जलालैन में संक्षिप्त रूप से यही लिखा है, जिसे हमने ऊपर तफ़सीर कादरी से उद्धृत किया है।

तफ़सीर जलालैन, पारा २१, पृ. ३५३

तफसीर बैज़ावी में उक्त आयत के सम्बन्ध में लिखा है कि—सांसारिक सुख चाहती हो तो जाओ मैं तुमसे सम्बध विच्छेद कर लेता हूं और यदि तुम परलोक चाहती हो तो खुदा और रसूल की आज्ञा का पालन करो। खुदा ने तुम्हारे लिये तैयार कर रखा है बहुत बड़ा पुरस्कार।

तफ़सीर बैज़ावी पृ. ३५३

इसी प्रकार तफ़सीर कुरानुल अज़ीम पृष्ठ ६६ भाग २ में भी लिखा है।

यह बात यहां तक विख्यात हो गई थी कि लोगों ने विश्वास कर लिया था कि हज़रत मुहम्मद ने अपनी पत्नियों को तलाक दे दिया है, जब इस चर्चा को हज़रत उमर ने सुना तो वे हज़रत मुहम्मद के पास गये और कहा "फद्दखलतो अला रसूल लिल्लाहे फकुलतो या रसूलिललह अतंलकहुन्ना काला ला फकुलतो या रसूलिल्लाह इन्नी दखलतुल मस्जिदा वल मुस्लिसूना यकूलूना तल्लका रसूलिल्लाहे निसाअहु"

अर्थात्—उमर ने कहा—मैं हज़रत मुहम्मद के पास गया और मैंने कहा ऐ रसूलिल्लाह क्या तूने अपनी स्त्रियों को तलाक दे दिया ? हज़रत ने कहा कि नहीं दिया। पस, मैंने (उमर) कहा

कि मैं अभी मस्जिद में प्रविष्ट हुआ था, वहां मुसलमान लोग यह कह रहे थे कि हज़रत मुहम्मद ने अपनी स्त्रियों को तलाक़ दे दिया।

तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ३, पृ. २४०

तफ़सीर हक़्क़ानी में उक्त आयत के संबन्ध में स्पष्ट सम्मति लिखी है कि हजरत मुहम्मद को मुनाफ़िकों के द्वेषभाव से कष्ट था ही; किन्तु अपनी पत्नियों की ओर से भी सांसारिक ऐश्वर्य सामग्री की निरन्तर मांग के कारण अत्यन्त कष्ट पहुँचता था। यद्यपि वे पत्नियां हज़रत मुहम्मद से हार्दिक प्रेम व विश्वास रखती थी तथा उन्हे खुदा का रसूल भी मानती थीं; परन्तु साथ ही पति भी समझती थी और जैसा कि नारी स्वभाव है आपसे सांसारिक व्यवहारों में वही व्यवहार करती थीं जो कि साधारण स्त्रियां अपने पतियों से करती हैं। जैसे कि यह लाओ, वह लाओ, हमारे पास अमुक वस्तु नहीं है और वह अमुक के पास है। इस पर बहुत पत्नियों के कारण उनमें परस्पर ईर्ष्या और द्वेष भी क्रोधोत्पत्ति का कारण होता था। इसलिए एक बार हज़रत मुहम्मद उनसे अप्रसन्न होकर एक महीने तक अलग मकान में बैठ गये और मित्रों के पास भी नहीं गये। तब यह उपरोक्त आयत उतरी जिनमें उनको और पत्नियों को शिक्षा-धमकी और प्रेरणा दी गई थी। इस आयत में पत्नियों को दो बातों का अधिकार दिया गया कि यदि तुमको संसार का जीवन और उसके सुखभोग व आराम स्वीकार है, तो आओ मैं तुमको कुछ देकर छोड़ दूं। सुन्नत के नियमानुसार मैं तुम्हें तलाक दे दूं। फिर तुम जहाँ चाहो वहां जाकर संसार भोगो और यदि तुम्हें अल्लाह और उसका रसूल व परलोक

प्रिय है तो अल्लाह ने तुम सदाचारिणी स्त्रियों के लिये बहुत बड़ा फल तैयार कर रखा है।

इस आयत के पश्चात् हज़रत मुहम्मद की स्त्रियों ने संबन्ध विच्छेद (तलाक़) नहीं किया और अल्लाह रसूल व परलोक को स्वीकार किया तथा भविष्य के लिये प्रतिज्ञा की कि वे अब ऐसी मांगे नहीं करेगी। (आयशा ने कहा) सबसे प्रथम मुझे कहा कि शीघ्रता मत करना अपनें माता-पिता से परामर्श करके फिर करना। मैंने कहा वह क्या है ? तो हज़रत ने कहा कि मुझे और परलोक को चुनती हो या संसार को ? मैंने कहा उनसे क्या पूछूंगी ? मैंने अल्लाह-रसूस और परलोक को स्वीकार किया। इसी बात को शेष पत्नियों ने भी स्वीकार किया।

इसी वर्णन को मुस्लिम, इब्ने जरीर, अहमद और निसाई ने भी लिखा है।

तफ़सीर हक़्क़ानी पारा २१, पृ. ७१-७२

और अस्पष्ट आयत :—

'अल्लाजी अनअमल्लाहो अलैहे वा अनअम्ता अलैहे' वो ज़ैद बिन हारसा थे। (आगे इसी के लिये लिखा) 'अमसिक अलैका ज़ोजका' वो बीबी ज़ैनब बिन्ते जहश थी।

तफ़सीर इत्तिकान, भाग २, प्रकरण ७०, पृ. ३६५

उपर लिखित वर्णन से पाठकों को यह ज्ञात नहीं होगा कि उपरोक्त आयत के अंशों में क्या कहा गया है और किस हेतु से है। अस्तु। पूर्ण विवरण प्रस्तुत है जो निम्नानुसार है—

इस सम्बन्ध में हज़रत इब्ने अब्बास, कतादा और मुजाहिद आदि ने वर्णन किया है कि ज़ैनब बिन्ते जहश रसूल हज़रत मुहम्मद की फूफी (भुआ) इस्मियां की पुत्री और उसके भाई अब्दुल्ला के संबन्ध में उक्त आयत उतरी । कथा इस प्रकार है–

ज़ैद बिन हारस छोटे ही थे कि वे बन्दी हो गये और हज़रत खुदीजा के हाथ गुलाम के रूप में बिके । जब हज़रत मुहम्मद का विवाह हज़रत खुदीजा से हुआ तो उन्होंने यह गुलाम हज़रत मुहम्मद को दे दिया । इसी मध्य में ज़ैद श्याम देश में गया और उसके चाचा ने वहां उसे पहिचान लिया । वो चाचा हज़रत मुहम्मद के पास आया और बदले में धन देकर ज़ैद को लेना चाहा । हज़रत मुहम्मद ने कहा कि मैं इसे अधिकार देता हूँ कि यह चाहे तो मेरे पास रहे या आपके साथ जाये तो ज़ैद ने कहा कि मैं चाचा के साथ नहीं जाऊंगा आपके ही पास रहुंगा । इसके पश्चात् हज़रत ने उसे दासता से मुक्त कर दिया । तफ़सीर बयानुल कुर्आन, पृ. १५१२

इसके पश्चात् हज़रत मुहम्मद ने ज़ैद को अपना दत्तक (मुतबन्ना) पुत्र बना लिया । जैसा की तजरीदे बुखारी ने लिखा है:–'तबन्नननबिय्यो सल्लिल्लोहो अलैहे वसल्ला' अर्थात् जिस प्रकार ज़ैद को हज़रत मुहम्मद ने अपना पुत्र बना लिया था ।

तजरीदे बुखारी, भाग २ किताबुन्निकाह हदीस क्र० ६५० पृ,३१४

ज़ैद के संबन्ध में स्पष्ट ज्ञात हो गया कि वह हज़रत मुहम्मद की प्रथम पत्नि खुदीजा का क्रय किया हुआ गुलाम था

और विवाह के अवसर पर खुदीजा ने उसे हज़रत मुहम्मद को भेंट स्वरूप दे दिया था जब ज़ैद का चाचा हजरत मुहम्मद के पास आया और उनका मूल्य देकर उसे ले जाना चाहा तो ज़ैद ने जाने से स्पष्ट मना कर दिया। फिर हज़रत मुहम्मद ने उसे दासता से मुक्त कर अपना पुत्र बना लिया। उसके पश्चात् क्या हुआ इसका वर्णन तफ़सीर बयानुल कुर्आन में निम्नानुसार है—

हज़रत मुहम्मद ने ज़ैद के लिये ज़ैनब के साथ विवाह करने का परामर्श दिया तो ज़ैनब ने अपनी वश प्रतिष्ठा को लक्ष्य में रखते हुए मुक्ति प्राप्त गुलाम से विवाह करने से मना कर दिया और उसके भाई अब्दुल्लाह ने भी अपनी बहिन की बात का समर्थन किया।

तफ़सीर बयानुल कुर्आन, पारा २२ पृ, १५१२

इस संबन्ध में तफ़सीर कादरी का कथन ध्यान पूर्वक पढ़ने योग्य है, जो निम्नानुसार है:—

जब ज़ैनब और अब्दुल्लाह ने ज़ैद के साथ विवाह करने से मना कर दिया तो निम्नलिखित आयत उतारी गई। **'वा मा काना लेमोमिनिन'** और नहीं है किसी ईमानदार व्यक्ति के लिये (उचित) अर्थात् अब्दुल्ला बिन जहश को **'वा ला मोमिनतिन'** और न किसी ईमानदार स्त्री के लिये (उचित) अर्थात् बीबी ज़ैनब को **'इज़ा कज़ल्लाहो वा रसूलोहु'** जब आज्ञा दे चुका खुदा और उसक रसूल **'अमरन'** किसी कार्य को अर्थात् हजरत ज़ैद के साथ बीबी जैनब के विवाह की **'अंय्यकूना लहोमुल खियरतो'** यह कि हो उनके हेतु कुछ अधिकार कि

पसन्द करे 'मिनअमरेहिम' अपने कार्य में से कुछ अपितु उनको अनिवार्य है कि वे अपने अधिकार को ख़ुदा और रसूल के अधीन कर दें वा मय्यांसिल्लाहा वा रसुलाहु' और जो कोई अपराधी हो जाये और विरोध करे ख़ुदा और रसूल से या क़ुर्आन और हदीस के आदेश से अलग रहे तो 'फक़द्ज़ल्ला ज़लालम मुबीना' तो निस्सन्देह वह पथभ्रष्ट हुआ. प्रत्यक्ष पथभ्रष्ट होना।

इसलिए कि विश्वास की दृष्टि से विरूद्ध करे तो कुफ्र है। उपरोक्त (यह) आयत उतरने के पश्चात् बीबी ज़ैनब और उसका भाई भी ज़ैद से विवाह करने हेतु तैयार हो गये और ज़ैद के साथ ज़ैनब का विवाह हो गया।

तफ़सीर क़ादरी, भाग २, पृष्ठ २६३-२६४

उक्त वर्णन में स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद ने ख़ुदा के नाम पर किस प्रकार व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर कुठाराघात किया और न चाहते हुए भी ज़ैद के साथ ज़ैनब का विवाह आयत के आतंक से बलपूर्वक किया गया ज़ैनब और उसका भाई वंश प्रतिष्ठा के कारण विवाह को तैयार न थे किन्तु हज़रत मुहम्मद ने आयत उतार कर धमकी दी कि किसी भी ईमानवाले अर्थात् मुस्लिम स्त्री-पुरुष को ख़ुदा और रसूल के आदेश की अवहेलना करने का अधिकार नहीं है और उन्हें अपनी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को ख़ुदा और रसूल के अधीन कर देना चाहिए। यदि वह ऐसा न करेंगे तो प्रत्यक्ष वह पथभ्रष्ट हो जायेंगे अर्थात् मुसलमान न रहेंगे। तात्पर्य यह कि हज़रत मुहम्मद ने अपनी बात पूरी करने के लिये ख़ुदा को माध्यम बनाकर आयत उतारी और ज़ैद के साथ ज़ैनब का विवाह कर दिया।

विचारणीय प्रश्न है कि क्या खुदा के पास इस काम के लिये समय है कि वह विवाह-शादी आदि कार्यों के लिए अपना आदेश प्रसारित करता रहे और मनुष्यों के व्यक्तिगत साधारण कार्यों में भी हस्तक्षेप करे ? ऐसा खुदा, खुदा नहीं हो सकता यह तो हजरत मुहम्मद ने खुदा के नाम से लोगों को भयभीत कर अपना स्वार्थसिद्ध किया है।

जैद और ज़ैनब के विवाह को अधिक समय नहीं हुआ कि ख़ुदा के नाम से एक नया पैंतरा बदला गया, जो तफ़सीर क़ादरी में निम्न प्रकार है:—

ख़ुदा ने हजरत मुहम्मद को ज्ञान दिया कि मेरे (खुदा) अनादि ज्ञान में यह बात ठहरी हुई है कि ज़ैनब तुम्हारी पत्नियों में सम्मिलित होगी। फिर हजरत ज़ैद और बीबी ज़ैनब में मनोमालिन्य उत्पन्न हुआ और यहां तक कई बार उन्होंने परस्पर तलाक़ देने का विचार किया और हज़रत मुहम्मद इस बात के लिये उन्हें रोकते थे। जैसा कि कुर्आन ने कहा है 'वा इज़ तकूलो' और याद कर ऐ मुहम्मद ! कि कहा तुमने 'लिल्लाज़ी अनअमल्लाहो अलैहे' उस व्यक्ति के लिये जिसको इस्लाम की दौलत प्रदान कर पुरस्कृत किया और तुम्हारी सेवा व आज्ञापालन का निर्देश कर 'वा अनअम्ता अलैहे' और तुमने उपकृत किया उसका पालन कर, उसे स्वतन्त्र कर और उसे दत्तक (मुतबन्ना) बना कर अर्थात् ज़ैद जो खुदा और रसूल के उपकारों के सागर में डूबे हुए हैं, उनसे तुमने कहा

'अमसिक़ अलैका ज़ौजका' रोक रख अपने लिए अपनी स्त्री अर्थात् बीबी ज़ैनब को 'वत्ताकिल्लाहा' और डर खुदा से उसके कार्य में और दुःख मार्ग से उसको तलाक़ न दे।

'तुख़्फ़ी फीनफ़्सेका' और छुपाते हो तुम ऐ हमारे स्नेही (हज़रत मुहम्मद) अपने मन में 'मल्लाओ मुबदीहे' वो वस्तु जिसे खुदा प्रकट करने वाला है, अर्थात् इस बात को कि ज़ैनब तुम्हारी पत्नियों में सम्मिलित होगी 'वा तख़्शन्नासा' और तुम लोगों की निन्दा से डरते हो कि कहेंगे कि अपने दत्तक पुत्र की पत्नी की इच्छा की वल्लाहो आहक्को अन तख़्शाहो और खुदा इस बात के लिये बहुत योग्य है कि तू उससे (खुदा से) डरे, उस बात में जिसमें डरना चाहिये और निस्सन्देह हज़रत मुहम्मद पूर्ण सृष्टि में खुदा से बहुत डरने वाले थे।

लिखा है कि हज़रत ज़ैद ने बीबी ज़ैनब को तलाक़ दे दी तो अवधि समाप्ति के पश्चात् हज़रत मुहम्मद ने किसी को भेजा कि आपके वास्ते उनकी इच्छा करे। जब यह बात हज़रत ज़ैनब के समक्ष पहुँची तो उन्होंने अत्यन्त हर्षित होकर धन्यवाद वा नमन किया और कुछ लोगों ने कहा कि दो रकअत नमाज़ पढ़ी और यों प्रार्थना की कि या अल्लाह तेरे रसूल ने मेरी इच्छा की है, यदि मैं उनके योग्य हूँ तो मुझे उनसे विवाहित कर दे। तो तत्काल यह आयत उतरी, 'फलम्मा क़ज़ा, ज़ैदुममिनहा वतरन' फिर जब पहुंचा ज़ैद, ज़ैनब से उस हाजत

को जो रखी थी और मौजाह में है कि हज़रत ज़ैद की आन्तरिक इच्छा बीबी ज़ैनब को तलाक देना था । जब उन्हें तलाक दी और अवधि (इद्दत) पूरी हुई तो 'ज़व्वजनाक़ाहा' जोड़ा कर दिया तुम्हें हमने (ज़ुदा ने) उसका ऐ मुहम्मद ! अर्थात् तुम्हारा विवाह ज़ैनब के साथ कर दिया 'लिकै लायकुना अलल मोमिनीना हरजुन फी अजवाजे अद्दएयाएहिम' ताकि मुसलमानों को तुम्हारे पश्चात् अपने दत्तक पुत्रों की पत्नियों के साथ विवाह करने में बाधा-पाप या कठिनाई न हो 'इज़ा कज़ो मिनहुन्ना वतरन' जब पहुचे उनसे अपनी मुराद को अर्थात् तलाक दे और अवधि गुजर जाये 'वा काना अमरुल्लाहे मफ़ऊला' और निस्सन्देह जो खुदा चाहता है उस कार्य को निश्चित पूर्ण सम्पन्न समझो । जैसे हज़रत ज़ैनब का कार्य । पस, हज़रत मुहम्मद सा. यह आयत उतरने के पश्चात् मुसलमानों की माता हज़रत ज़ैनब के घर में उनकी बिना आज्ञा के चले गये । वह (ज़ैनब) बोली–या रसूलिल्लाह बेखुतबा (निकाह का कलमा) और बेग़वाह (बिना साक्ष्य) अर्थात् आप बिना विवाह और बिना साक्षियों के कैसे आ गये । हज़रत मुहम्मद ने कहा–अल्लाह ने विवाह कर दिया और जिब्राईल साक्षी है । (आश्चर्य की बात है कि जिस ज़ैनब का विवाह हुआ उसे यह ज्ञात ही नहीं कि उसका हज़रत मुहम्मद से विवाह हो चुका है और वह भी अल्लाह के द्वारा) फिर हज़रत ज़ैनब और सब पत्नियों पर गर्व जताति थी कि मेरा विवाह स्वयं अल्लाह ने अपने रसूल (हज़रत मुहम्मद)के

साथ कर दिया और तुम्हारे विवाह करने वाले तुम्हारे संरक्षक लोग थे ।

तफ़सीर कादरी भाग २, पृ, २६३-२६४

इसी प्रकार तफ़सीरे सिराजे मुनीर में यह लिखा है कि यह (उक्त) आयत वा मा काना लेमोमिनीन' हजरत ज़ैनब और उसके भाई अब्दुल्ला द्वारा विवाह के मना करने पर उतरी तत्पश्चात् ज़ैनब और उसका भाई ज़ैद से विवाह करने को तैयार हो गये। (शेष सब तफ़सीर कादरी के समान है जो लिख चुके हैं, परन्तु यह विशेष रूप से लिखित है) कि जब ज़ैनब और ज़ैद का विवाह हो चुका तब—"अन्ना रसूलिल्लाहे सल्लिल्लाहे अलैहे वा सल्लमा अता ज़ैदन जातायोमिन लिहाजतन फ़बसूर ज़ैनबा कायमातुन फी दरइन वा खमरिन वा कानत बैज़ाउन जमीलतुन जात खुलकिन मिनअतममिन निसाये कुरैशिन फ वकअत फी नफसेही वा आजबहो हुस्नाहो फकाला सुबहानल्लाहे मकल्लें बलकलूब फलम्मा जा आ ज़ैद्रन जकरत जालिका लहू फ फतना जेदुन फ अलका फी नफसे ज़ैदिन करा हतेहा फ़िलवक्ते फ अता रसूलिल्लाहे फकाला इन्नी अरीदो अन अफारक साहेबती .....इत्यादि"

तफ़सीर सिराजे मुनीर, भाग ३, पृ, २४९

अर्थात्—एक दिन हज़रत मुहम्मद अपने किसी कार्यवश ज़ैद के घर गये। पस, उन्होंने ज़ैनब को देखा कि वह दिरा (अन्तरवस्त्र या कंचुकी) पहने खड़ी थी और ज़ैनब अत्यधिक श्वेत

वर्ण और सुन्दर और समस्त कुरैश की स्त्रियों से सभ्य थी। पस, वह हज़रत मुहम्मद के हृदय में समा गई और उसका सौंदर्य उन्हें बहुत आकर्षक ल. पस, हज़रत मुहम्मद ने कहा—पवित्र है वह खुदा जो ऐसी सुन्दर आकृतियों का निर्माण करता है, और फिर मुहम्मद सा० लौट आये। पस, जब ज़ैद घर आया तो ज़ैनब ने उससे इस बात की चर्चा की तो ज़ैद के मन में उसी समय घृणा उत्पन्न हो गई और वह हज़रत मुहम्मद के पास आया और उसने कहा कि मैं अपनी पत्नि को त्यागने का विचार करता हूं, तो हज़रत मुहम्मद ने कहा कि 'अमसिक अलैका ज़ोजका' तू अपनी पत्नि को मत त्याग।

तफ़सीर सिराजे मुनीर ने भी इस बात को लिखा हैं 'काला अनसुन कानत ज़ैनब तफखरो अला अज्वाजिन्नबिय्ये तकूलो जव्वजोकुन्ना आहाले कुन्नाबा जव्वजनिल्लाहो मिन फौका सबआ समावात'

तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ३, पृ. २५१

अर्थात्—अन्स ने कहा कि ज़ैनब, हज़रत मुहम्मद की अन्य पत्नियों पर इस बात का गर्व करती थी कि तुम्हारे विवाह संरक्षकों ने किये है और मेरा विवाह सातवें आसमान पर स्वयं खुदा ने किया है।

तफ़सीर जलालैन ने भी 'वा मा काना लेमोमेनिन

आयत के लिये लिखा है 'नज़लन फ़ी अब्दुल्ला बिन जहश वा उसकी बहिन जैनब' के हेतु उतरी।

तफ़सीर जलालैन, पारा २२, पृष्ठ ३४५

तफ़सीर जलालैन ने यह भी लिखा है 'सुम्मा वकआ बसरेही अलैहा बादाहीना फवकआ फी नफसेही हुब्बेहा वा फी नफसे ज़ैदिन कराहतेहा सुम्मा काला लिन्नबीय्ये उरीदो फराकहा फकाला अमसिक अलैका जोजका।

तफ़सीर जलालैन पारा २२ पृष्ठ ३५४-३५५

अर्थात्--कुछ समय पश्चात् हज़रत मुहम्मद की दृष्टि उस (ज़ैनब) पर पड़ी। पस, वह उनके हृदय में समा गई और उससे प्रेम उत्पन्न हो गया और ज़ैद के मन में उससे (ज़ैनब से) घृणा उत्पन्न हो गई। ज़ैद ने हज़रत मुहम्मद के पास आकर कहा—मैं उसे पृथक करना चाहता हूं। हज़रत मुहम्मद ने कहा—अपनी पत्नि को मत त्याग (तफ़सीर जलालैन ने भी वही बातें लिखी हैं जो हम पूर्व में क़ादरी में उद्धृत कर चुके हैं ओर सिराजे मुनीर ने जो लिखा है वही तफ़सीर जलालैन ने भी लिखा है) जैसे—'फ़दखला अलैहा बगेरे इज्निन याने अज़नज़ूले आयत बखाना जैनब आमद बेदस्तुरी वा जैनब गुप्त या रसूल बेसूतबा वा बेगवाह हजरत फरमूद के अल्लाहुल मुजव्वेजो वा जिब्रीलश्शाहेदो' अर्थात्--पस, हज़रत मुहम्मद ज़ैनब के घर में उसकी बिना आज्ञा के भीतर गये। ज़ैनब ने कहा—या रसूल बिना विवाह

और बिना साक्षियों के आप कैसे ? हज़रत मुहम्मद ने कहा—अल्लाह ने विवाह किया और जिब्रील साक्षी है।

तफ़सीर जलालैन व्याख्या क्र. ९ पृष्ठ ३५५

यहां पर ही तफ़सीर जलालैन ने लिखा है—ज़ैनब हज़रत मुहम्मद की अन्य पत्नियों पर गर्व जताती थी कि तुम्हारे विवाह तुम्हारे संरक्षकों ने किये हैं और मेरा विवाह स्वयं ख़ुदा ने सातवें आसमान पर किया है।

'तफ़सीर लबाबन्नकूल फ़ी असबाबिन्नजूल' ने भी इस आयत 'वा मा काना लेमोमिनिन' को ज़ैनब और उसके भाई अब्दुल्ला के लिये ही उतरी बताया है।

उक्त तफ़सीर, पृष्ठ ५१

और 'तफ़सीर क़ुर्आनुल अज़ीम' पृष्ठ ६७ में भी वहीं वर्णन है, जो कि हमने तफ़सीर जलालैन से ऊपर उद्धृत किया है।

तफ़सीर बैज़ावी पृष्ठ ३५४, पारा २२ में भी वैसा ही वर्णन है जैसा हमने ऊपर दिया है।

तफ़सीर मुआलेमुत्तनज़ील पारा २२ पृष्ठ १५४, १५५ तबसीरुर्रहमान भाग २ पृष्ठ १५९, तफ़सीर कबीर भाग ६ पृष्ठ ७८६, तफ़सीर कसाफ़ भाग २ पृष्ठ २३७ तफसीर इब्ने कसीर पारा २२ पृष्ठ १०, तफसीर तर्जुमानुल कुर्आन पारा २२ पृष्ठ २३७, सहीह बुख़ारी पारा ३० पृष्ठ ११८ (तर्जुमा मौलवी फ़कीरुल्ला)

मदारजुन्नबव्वत भाग २ पृष्ठ ८६६, ८६७ जामेआ मुनाकिब पृष्ठ १५२, शमीमुररियाज़ पृष्ठ २२७ और हयातुल कुलूब भाग २ पृष्ठ ५७३ में भी ज़ैद और ज़ैनब के प्रकरण को उपरोक्त मुस्लिम पुस्तकों में देखिये ।

ज़ैद और ज़ैनब के इस प्रकरण के सम्बन्ध में मुस्लिम तफ़सीरों और हदीसों से बहुत कुछ लिखा जा चुका है और हमें इस प्रकरण के सम्बन्ध में कुछ और लिखना व्यर्थ और निरर्थक समझते हैं । पाठक ऊपर दिये उद्धरणों से स्वयं विचार कर निर्णयात्मक स्थिति को पहुंच कर वस्तुस्थिति को जान लें ।

और अस्पष्ट आयत :—

या अय्यो हन्नबिय्या लेमा तोहर्रेमोमा अहललल्लाहो लका तब्तग़ी मरज़ाता अज़वाजेका वल्लाहो ग़फ़ूरूर्रहीम ।

कुर्आन, पारा २८, रकू १।१६

अर्थात्—ऐ नबी क्यों हराम करता है उस वस्तु को, जिसे अल्लाह ने तेरे लिये हलाल किया है । तू अपनी पत्नियों की प्रसन्नता चाहता है और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है ।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन पृष्ठ ७६० कुर्आन

उक्त आयत के सम्बन्ध में इत्तिकान प्रकरण ७० भाग २ पृष्ठ ३६६ में लिखा है कि यह आयत आपकी (हज़रत मुहम्मद की) दासी मारिया के सम्बन्ध में थी ।

तफ़सीर कादरी में उक्त आयत की व्याख्या इस प्रकार है:—ऐ नबी (मुहम्मद) क्यों हराम करता है उस वस्तु को, जो खुदा ने तेरे लिये हलाल (ग्राह्य) कर दी है, अर्थात् शहद ।

(आगे लिखा) अधिक विख्यात यह कथन है कि हज़रत मुहम्मद बीबी हफ़सा की बारी (अर्थात् हज़रत मुहम्मद ने अपनी पत्नियों से सम्भोग हेतु निश्चित समय कर रखा था कि किस रात्रि को किसके पास जायेंगे) के दिन आर उनके घर गये । हफ़सा आपकी आज्ञा से अपने पिता को देखने गई थी । हजरत मुहम्मद ने हज़रत मारिया कब्तिया (हज़रत मुहम्मद की दासी) को बुलाकर अपनी सेवा से उपकृत किया (अर्थात् सम्भोग किया) हज़रत हफ़सा इस बात से परिचित हो गई और इस बात पर बहुत दुःख प्रकट किया । हज़रत ने कहा–ऐ हफ़सा ! तू प्रसन्न नहीं कि मैं उसे अपने ऊपर हराम कर लूँ । हफ़सा ने कहा– या रसूलिल्लाह मैं प्रसन्न हूं । हज़रत ने कहा यह बात तुम्हारे पास धरोहर है और तुम किसी अन्य को न कहना । हफ़सा ने इस बात को स्वीकार कर लिया । जैसे ही हज़रत मुहम्मद उनके घर से बाहर निकले तो तत्काल ही हफ़सा ने यह बात आयशा को कह दी और बधाई दी कि हमने कब्तिया से छुटकारा पाया । हज़रत सा० बीबी आयशा के घर गये तो आयशा ने व्यंगात्मक संकेत में उक्त घटना कही उस पर यह (उक्त) आयत उतरी कि ऐ अल्लाह के रसूल ! तुम अपने ऊपर उस वस्तु को क्यों हराम करते हो जिसे अल्लाह ने तेरे लिये हलाल किया है, अर्थात् मारिया कब्तिया को, और तुम शपथ लेते हो और ढूंढते हो उस हराम कर लेने से अपनी पत्नियों की प्रसन्नता और अल्लाह क्षमा करने वाला है तुम्हारी

शपथ ग्रहणता का कुफ़ारा (बदले में कोई वस्तु देना) निश्चित कर ।

इसके आगे वो आयत है जिसमें कुफ़ारा निश्चित किया गया है । तफ़सीर कादरी भाग २, पृष्ठ ५५४

इसी आयत के सन्दर्भ में जो अन्य आयत उतरी वह निम्न प्रकार है ।

आयत :—

वा इज़ असर्रन्नबियों इला बाज़े अज़वाजेही हदीसन फलम्मा नब्बाअत बेही वा अज़हरा हुल्लाहो अलैहे अर्फा बाज़हू वा आरज़ा अनवाजिन फलम्मा नब्बा आहा बेही कालत मनअम्बआका हाजा काला नब्बानी यल अलीमुल्खबीर ।

कुर्आन, पारा २८, रकू १।१६

अर्थात्—और याद करो ऐ मुसलमानों ! जब पैग़म्बर ने अपना एक रहस्य बीबी हफ़सा को कहा और अन्य पत्नियों से गुप्त रखने को कहा । वह रहस्य था मारिया कब्तिया (दासी) को अपने ऊपर हराम कर लेना या शहद को । हफ़सा ने यह रहस्य आयशा पर प्रकट कर दिया और जब हफ़सा ने आयशा को वह रहस्य बता दिया तो खुदा ने अपने रसूल को उससे सूचित कर दिया कि तेरा रहस्य प्रकट हो गया । फिर जब बीबी अफ़सा को हज़रत ने वह बात बताई तो हफ़सा ने कहा

कि आपको यह बात किसने बताई। रसूल ने कहा-- मुझे यह बात खुदा ने बताई जो सबके मन की छुपी बातों को, जानने वाला है (हज़रत ने कहा) ऐ हफ़सा और आयशा ! तुम दोनों तौबा (पश्चाताप) करो और खुदा की ओर फिरो व हज़रत का मन दुखाने में परस्पर सहायक न बनो इसी में तुम्हारी भलाई है। निस्सन्देह तुम्हारे मन नेकी के विपरित हो गये हैं और रसूलिल्लाह के भेद (रहस्य) की रक्षा नहीं करती और यदि तुम दोनों रसूल का मन दुखाने में सहायक बनोगी तो निश्चित समझो कि अल्लाह अपने पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद) का मित्र और सहायक है और जिब्रील भी मित्र है, जो कि सहायता करेंगे और भले मुसलमान उनके अधीनस्थ और सहायक है और आसमान व पृथ्वी के समस्त फ़रिश्ते, खुदा-जिब्रील और मुसलमानों के अलावा भी मेरे मित्र और साथ देने वाले हैं। सम्भवतया उसका खुदा यदि वह तुम्हें तलाक़ देतो तुमसे भी सुन्दर पत्नियां उसे उपलब्ध करा दे (व्याख्याकार की दृष्टि में पत्नियों को भयभीत करना था खुदा जानता था कि हज़रत मुहम्मद तलाक़ न देंगे) जिस प्रकार की स्त्रियां उपलब्ध हो सकेंगी वे एक खुदा और उसकी आज्ञापालन होंगी। नमाज़ पढ़ने वाली और आज्ञापालक होगी। अपराध से पश्चाताप करने वाली, खुदा की ओर आकृष्ट होने वाली, उपासना करने वाली हिजरत (इस्लाम हेतु देश त्याग) करनेवाली, रोज़ा रखनेवाली और विधवा तथा अविवाहित होंगी।

इस पर इब्ने अब्बास ने कहा है कि पूर्व में पति देखी हुई, वह तो फ़िरऔन की पत्नि आसिया है और अविवाहित हज़रत मरियम ईसा की माँ है (आश्चर्य की बात है कि मरियम ने ईसा के बाद ५ सन्तानों को जन्म दिया किन्तु मुसलमानों

की दृष्टि में वह अविवाहिता है और खुदा ने हज़रत मुहम्मद को वचन दिया है कि क़यामत के दिन उक्त दोनों बीबीयों (आसिया व मरियम) को हज़रत मुहम्मद की पत्नियां बनायेगा (मौत के बाद भी पत्नियों का विचार)

तफ़सीर क़ादरी भाग २, पृष्ठ ५५४-५५५

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर क़ुर्आनुल अज़ीम में लिखा है कि 'मिन अमतेका मारियातुल कब्तिया लम्मा वाके ओहा फ़ी बेते हफसा वा क़ानत ग़ायबातुन फजाअत मा शक्का अलैहा कौनो ज़ालिका फ़ी बैतेहा वा अला फ़राशेहा' हैसा कुल्तो हया हरामुन अलय्या।

तफ़सीर क़ुर्आनुल अज़ीम, भाग २, पृष्ठ १३५

अर्थात्—यह आयत मारिया कब्तिया दासी के सम्बन्ध में और उसकी घटना हफ़सा के मकान में घटी और वह (हफसा) घर में उपस्थित नहीं थी। जब वह आई तो उसने सोचा कि मेरे घर में और मेरे बिस्तर पर कौन है? हज़रत ने कहा कि मैं इसको (मारिया) अपने ऊपर हराम करता हूं।

तफ़सीर बैज़ावी में उक्त आयत के सम्बन्ध में है कि—या अय्यो हन्नबिय्यो लिमा तुहर्रेमो मा अहलल्लाहो लका। रूवेया अन्नहू अलैहिस्सलाते वस्सलाम खला बेमारयते फ़ी नौबते आयेशह औ हफसह फ़त्तलअत अला ज़ालेका हफसह फ़मार्ते-

माहो फ़ीहे लेहरमे मारयह फ़नजलत वा कील शरबे ही असलन इन्दे हफ़सह' इत्यादि।

तफ़सीर बैज़ावी, सूरत तहरीम, पृष्ठ ४७६

अर्थात्—वर्णन किया गया है कि हज़रत मुहम्मद ने मारिया के साथ एकांतवास किया, हफ़सा या आयशा की बारी (क्रम) में तो हफ़सा को इस बात का पता लग गया। तो इस पर हजरत मुहम्मद ने मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया और शहद के लिये भी कहा गया है।

(तफ़सीर बैज़ावी ने भी प्रमुख महत्व मारिया को दिया है और शहद शब्द को 'कीला' शब्द से प्रतिपादित किया है। जिसका (कीला का) तात्पर्य यह है कि कुछ लोग कहते हैं)

उक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर जलालैन ने लिखा है कि- या अय्योहन नबीयों लेमातोहर्रमा मा अहललल्लाहो लका। मिनअमतेका मारियातुल कब्तिया लम्मा वाकेओहा फी बेते हफसा वा कानत गायबातुन फजाअत वा शक्का अलैहा कोनो ज़ालेका फी बेतेहा वा अला फराशेहा हैसो कुलता हैय्या हरामुन अलैया।'

तफ़सीर जलालैन सूरत तहरीम, पृष्ठ ४६५

तफ़सीर जलालैन ने भी इसी सम्बन्ध में सविस्तारपूर्वक लिखा है और प्रमुख महत्व दासी मारिया को ही दिया है। उक्त उद्ध-

रण का अर्थ वही है जो हम ऊपर तफ़सीर बैज़ावी से लिख चुके हैं।

तफ़सीर सिराजे मुनीर में इस सम्बन्ध में और भी स्पष्ट लिखा गया है जो इस प्रकार है: -

'काला अक्सरूल मुफरसेरीना फी सबबे नजूले जालेका अन्नन नबीयो सललिल्लाहे अलैहे वा सल्लमा काना यक्समो बैनानिसा येही फलम्मा काना यौमे हफ़सा इस्ताजनत रसूल लिल्लाहे फ़ी जैयारते अबीहा फईज़ना लहा फलम्मा फर्ज़ते अरसला रसूलि-ल्लाहे इला जारियते मारियातल कब्तिया फा अदखलहा बैते हफसा फवकआ अलैहा फवम्मा रजअत हफसा वज्जत्तल बाबा मुगलेकन फ़जलस्ते इन्दलबावे फ़ाखरजा रसूलुल्लाहे सल्लाअम बा वजहाहु युकतरो अरकन बा हफसा तबकी, फकाला रसूलु-ल्लाहे मा युबक्कीके फ़कालत इन्नामा अज़ता ली मिनअज़ले जालेका अदखलत्ता अमेतका सुम्मावकअत अलैहा फी यौमी अलाफराशी..... फ़काला रसूलुल्लाहे अलेसाहैम्या जारैयती कद आहल्ला हल्लाहो ली फहेया हरामुन अलैया।

तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ४ पृष्ठ ३२४

अर्थात्— क़ुर्आन के अधिकांश व्याख्याकारों ने इस (उक्त) आयत के सम्बन्ध में लिखा है कि हज़रत मुहम्मद सा. ने अपनी पत्नियों से सम्भोग हेतु बारी (क्रम) बांट रखी थी। जिस दिन हफसा की बारी (क्रम) थी उस दिन वह हज़रत मुहम्मद से

आज्ञा लेकर अपने पिता को देखने गई। जब वह चली गई तो हजरत मुहम्मद ने अपनी दासी मारिया कब्तिया को बुलाया। पस, वह दासी हफ़सा के घर में आई। पस, हज़रत मुहम्मद उस दासी पर वाकिया हुए (अर्थात् सम्भोग किया) जब हफ़सा लौट कर आई तो उसने द्वार बंद देखा। पस, वह द्वार के पास बैठ गई। रसूलिल्लाह अन्दर से निकले तो उनके चेहरे से पसीना टपक रहा था। यह देख कर हफ़सा रोने लग गई। रसूलिल्लाह ने कहा—क्यों रोती है ? तो हफ़सा ने कहा—मैं आपसे आज्ञा लेकर कार्यवश गई तो तुमने दासी को मेरे घर में बुलाया और मेरे घर में व मेरे ही बिस्तर पर उससे सम्भोग किया.... ..फिर हजरत मुहम्मद ने कहा—खुदा ने इस दासी को मेरे लिये हलाल कर रखा है किन्तु मैं अपने ऊपर हराम करता हूँ।

ऊपर दिये गये विभिन्न तफसीरों के उद्धरणों से स्पष्ट प्रमाणित हो गया है कि यह आयत दासी मारिया और हज़रत मुहम्मद के सन्दर्भ में है। उक्त उद्धरणों में सारी घटना स्पष्ट है और हम इस सम्बंध में और कुछ लिखना निरर्थक मानते हैं। कुछ लोग इस घटना के सम्बध में मतभेद रखते हैं जो कि साधारण बात है क्योंकि इस्लाम के सिद्धांतो में पारस्परिक भयंकर विरोधाभास और मतभेद हैं, जिन्हें हमने इसी पुस्तक में विभिन्न स्थानों पर लिखा है। हमारा आशय तो मात्र वास्तविकता और तथ्य प्रकट करना है अन्यथा कुछ नहीं।

अल्लामा जलालुद्दीन सियुती ने यहां तक उन अस्पष्ट आयतों का वर्णन किया है जिनके सम्बन्ध में घटित घटनाओं

और उनके सन्दर्भ में जिन व्यक्तियों के नामों के विषय में उन्हें पता लग गया है । सियूति द्वारा वर्णित अस्पष्ट आयतों में से उदाहरण के रूप में कुछ आयतें हमने इस पुस्तक में ऊपर उद्धृत की हैं।

दूसरी प्रकार की अस्पष्ट आयतों के सम्बन्ध में अल्लामा सियूति ने लिखा है :—

दूसरी किस्म उन श्रेणियों के अस्पष्ट वर्णन में है कि उनमे से केवल कुछ लोगों के नाम ही ज्ञात हो सके हैं । उनके उदाहरण निम्न प्रकार है :—

'वा कालल्लज़ीना ला यालमूना लो ला युक्ललिमूनल्लाहे' यह आयत क़ुर्आन पारा १ रकू १४।१४ की है । इसके सम्बन्ध में अल्लामा सियूति लिखते हैं कि आप उन लोगों में से केवल एक व्यक्ति का नाम राफ़ीया बिन हरमलह लिया गया है और शेष लोगों का पता नहीं चलता ।

दूसरी आयत :—

'यस अलूनका मा ज़ा युनफिकून' यह आयत कुर्आन पारा २ रकू ३६।१० में है । उन लोगों में से एक व्यक्ति अमरू बिनल जमूअ का ही नाम लिया गया है और किसी का पता नहीं चलता ।

तीसरी आयत:—

'वा यस अलूनका अनिलयतामा' यह आयत कुर्आन पारा २ रकू २७।११ मे है । उनमें से केवल अब्दुल्ला बिन रवाहा का

नाम ज्ञात हो सका और अन्य का पता नहीं लगता ।

चौथी आयत :—

'वकीला लहूम तआलो कातिलू' यह आयत कुर्आन पारा ४ रकू १७।८ में है । इस बात को कहने वाला अब्दुल्ला जाबर अंसारी का पिता था और जिन लोगों से यह बात कही गई थी वह अब्दुल्ला बिन औबेय और उसके साथी लोग थे, किन्तु साथियों का पता नहीं चलता ।

और पांचवी आयत :—

'अल्लाज़ीना इरतजाबू लिल्लाहे' यह आयत कुर्आन पारा ५ रकू १७।८ में है यह लोग कुल ७० व्यक्ति थे, उनमें से केवल निम्न व्यक्तियों का पता लगता है, अबू बकर, उमर, उस्मान, अली, जुबेर, साद-तलहा, इब्ने औफ, इब्ने मसऊद, कज़ोफाह-बिनल जमान और अबू उबेदा बिन जराह ।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७० पृ. ३६७

अल्लामा जलालुद्दीन सियुति ने उक्त प्रकार की अनेक आयतों का वर्णन किया है, जिनमें से हमने उपरोक्त ५ आयतें उदाहरण के रूप में आपके समक्ष रखी हैं तथा कुछ आयतें इसी प्रकरण के अन्त से उद्धृत कर रहे हैं जो निम्नानुसार हैं ।

आयत :—

'वा जुर्रेयतेही' यह आयत कुर्आन पारा १५ रकू ७।१९ में है ।

शैतान की सन्तानों में से शोवर, आबर, जलम्बूर, मिसीद और वासम के नाम कहे गये हैं ।

आयत :—

'यामिलो अर्शा रब्बेका' यह आयत कुर्आन पारा २९, सूरत हाका में है । खुदा के सिंहासन उठाने वालों में से इस्राफील, लंबान और रुफील के नाम लिये गये हैं ।

तफ़सीर इत्तिकान प्रकरण ७०, पृष्ठ ३७०

ऊपर वर्णित आयतों में दूसरी आयत कुर्आन में संपूर्ण रूप से निम्न प्रकार है :—

वल मलेको अला अरजायेहा वा यहमिलो अर्शा रब्बेका फोकहम योमायेजिन समानेयह । कुर्आन पारा २९ रकू १।५

अर्थात्— और फ़रिश्ते होंगे उसके किनारों के ऊपर और उठायेंगे सिंहासन तेरे खुदा का अपने ऊपर उस दिन आठ व्यक्ति ।

अनुवाद शाह रफ़ीउद्दीन, पृ, ८०१ कुर्आन

उक्त आयत का भी स्पष्ट अर्थ ऊपर दिये गये अनुवाद से ज्ञात नहीं होता है कि किस दिन, कौन ८ व्यक्ति कहां पर खुदा का सिंहासन अपने ऊपर उठायेंगे ।

उक्त आयत के संबन्ध में तफ़सीर कादरी ने लिखा है कि जिस दिन क़यामत (प्रलय) स्थापित हो जायेगी और आस-

मान फट जायेगा व सुस्त और निर्बल हो जायेगा और फ़रिश्ते आसमानों के किनारों पर होंगे कि खुदा की आज्ञा हो और नीचे उतर आयें और उठायेंगे सिंहासन तेरे खुदा का उन फ़रिश्तों पर जो आसमानों के किनारों पर होंगे, उस दिन ८ फरिश्ते और आज ४ फ़रिश्ते सिंहासन उठायें हुए हैं ।

तफ़सीर मुआलिम में है कि उस दिन सिंहासन उठाने वाले ८ फ़रिश्ते होगे पहाड़ी बकरों के रूप के । उनके सुमों से घुटनों तक एक आसमान से दूसरे आसमान तक का मार्ग होगा कुछ अन्यों का कथन है कि फ़रिश्तों की ८ पंक्तियां होंगी जो सिंहासन को उठायेगी उनको खुदा के सिवाय और कोई नही जानता । तफ़सीर मुआलेमुत्तन्जील सूरत हाका पृ, १७५

तफ़सीर कादरी, भाग २ पृ ५६९-५७०

इसी आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर मज़हरी ने लिखा है कि—और आसमान फट जायेगा और कमजोर होकर उसकी बन्दिश ढीली हो जायेगी व जो शक्ति अभी उसमें है वह नहीं रहेगी ।

फरा का कथन है—आसमान की कमजोरी उसके फट जाने के कारण होगी ।

आसमान के किनारे और कोने जो आसमान के फट जाने के कारण शेष रहेंगे, उन पर फ़रिश्ते होगे । फ़रिश्ते

अनेक होंगे, और तुम्हारे खुदा के सिंहासन को उठाये होंगे। सिंहासन जो खुदा से संबन्धित कहा गया है उस सिंहासन की महत्ता प्रकट करने के लिये है और यह कारण भी है कि सिंहासन विशेष रूप से ज्योति से प्रकाशित है—अर्थात् क़यामत के दिन ८ फ़रिश्ते अपने ऊपर या आसमान के किनारों पर जो फ़रिश्ते ठहरे हुए हैं वह अपने ऊपर अल्लाह का सिंहासन उठाये होंगे। तफसीर मज़हरी सू, हाका पृ. ७१

अबू दाऊद और तिरमज़ी ने हजरत अब्बास बिन अब्दुल मुतलब का कथन उद्धृत किया है। अब्बास ने कहा-मैं बतहा में एक समूह के साथ बैठा हुआ था। रसूलिल्लाह भी वहां बैठे थे, उन्होंने बादल के संबन्ध में पूछा और फिर कहा कि क्या तुमको मालूम है कि पृथ्वी और आसमान के मध्य कितनी दूरी है। लोगों ने कहा नहीं। तो कहा कि दोनों के मध्य ७१-७२ या ७३ वर्षों के मार्ग की दूरी है और निचले आसमान से ऊपर वाला आसमान भी इतना ही दूर है। इसी तरह आपने ७ आसमान गिने और कहा—फिर सातवें आसमान पर एक समुन्द्र है, जिसके नीचे से लेकर ऊपरी सतह की दूरी इतनी ही है जितनी एक आसमान से दूसरे आसमान की है। फिर समुद्र के ऊपर ८ पहाड़ी बकरे हैं और जिसके सुमों और घुटनों की दूरी एक आसमान से दूसरे आसमान के समान है। उसके ऊपर अर्श (सिंहासन) है। जिसके ऊपर और नीचे की दूरी भी दो आसमानों के मध्य के समान है। उसके ऊपर अल्ला है। (वाह उस्ताद वाह खूब कहा) बग़वी ने भी इसी प्रकार यह हदीस उद्धृत की है।

बग़वी ने कहा है कि हदीस में आया है अर्श (सिंहासन) को उठाने वाले फ़रिश्ते ४ हैं। क़यामत के दिन उनकी सहायतार्थ अल्लाह ४ और निश्चित करेगा। उनकी आकृति बकरों जैसी होगी। हदीस में यह भी आया है कि एक कि आकृति मनुष्य की, दूसरे की शेर की, तीसरे की बैल की और चौथे की गद्ध की।

हज़रत इब्ने अब्बास ने इस (उक्त) आयत की व्याख्या में कहा क़यामत के दिन खुदा के सिंहासन को ८ फ़रिश्ते अर्थात् ८ फ़रिश्तों की पंक्तियाँ उठाये होंगी। जिनकी संख्या खुदा के सिवाय कोई नहीं जानता।

तफ़सीर मज़हरी पारा २९, पृ. ७२–७३
तफ़सीर मुआले मुन्तजील पृ. १७६–१७७

तफ़सीर जलालैन में इसी आयत के संबन्ध में लिखा है—**अय्यल मलायकातल मज़कुरीना योमयेजिऊ समानिया। मिनल मलायकते औमिन सफ़ूफ़ेहिम**' अर्थात्—खुदा का सिंहासन ८ फ़रिश्ते या ८ पंक्तियां उठा कर लायेंगे।

तफ़सीर जलालैन पृ. ४७२

तफसीर हक़्क़ानी में लिखा है कि—समस्त वस्तुएँ पुनः उत्पन्न होंगी, मृतक जीवित होंगे। न्याय हेतु खुदा का सिंहासन लाकर रखा जायेगा। जिसको ८ फ़रिश्ते उठाये होंगे।

तफ़सीर हक़्क़ानी, पारा २९ पृ. ५२

इस आयत के संबन्ध में यही वर्णन तफ़सीरूल कुर्आनिल अजीम भाग २ पृष्ठ १३६ में भी लिखी है और ऐसा ही तफ़सीर सिराजे मुनीर भाग ४ पृष्ठ ३७३ में भी लिखा है तथा अन्य कई तफ़सीरों और हदीसों में भी इसी प्रकार का वर्णन किया गया है।

कुर्आन के खुदा के संबन्ध में हमने अल्लामा सियूति द्वारा लिखित एक आयत की व्याख्या को कुर्आन की विभिन्न तफ़सीरों से उद्धृत कर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि कुर्आन का खुदा कैसा है और कहां है? ऊपर भी दिये गये उद्धरणों से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि कुर्आन का खुदा एक ही स्थान पर रहने वाला और सीमित है और तख्त पर बैठा है।

उक्त उद्धृत विवरणों को पढ़ कर ऐसा लगता है कि कुर्आन की यह आयत खुदा (संसार के मालिक) के संबन्ध में न होकर किसी व्यक्ति के सबन्ध में है, क्योंकि व्याख्याओं से ऐसा ज्ञात होता है कि जैसे कोई अलिफ़-लैला का किस्सा हो, जैसे खुदा भी बड़े लोगों की भांति सिंहासन पर बैठता है और वह भी ७ आसमानों के ऊपर समुद्र और समुद्र के ऊपर खुदा का सिंहासन मानो किसी राजपुरुष ने जल महल का निर्माण करवाया हो। सम्भवतया आयत के लेखक ने जल-महल से ही प्रेरित होकर खुदा के सिंहासन की कल्पना कर ली? साथ ही खुदा के सिंहासन उठाने वाले फ़रिश्तों की आकृतियों की भी अजीब कल्पना है? कोई बकरा-शेर और कोई बैल व गिद्ध

है। क्या खुदा के फ़रिश्ते अन्य सुन्दर और आकर्षक आकृतियों के नहीं हो सकते थे, जब कि इस संसार का निर्माता खुदा है ?

प्रकरण ६७-कसमें खाने के सम्बन्ध में

अल्लामा सियूति ने खुदा के क़समें खाने के सम्बन्ध में भी एक प्रकरण लिखा है उसमें प्रथम तो इस बात का उल्लेख किया है कि खुदा के क़समें खाने का क्या कारण और दूसरे में कौन-कौन सी कसमें खुदा ने खाई हैं, उनका वर्णन है।

क़समें खाने का कारण

आप लिखते हैं कि क़सम से खबर की सत्यता और उसका समर्थन अभिप्रेत होता है, कुर्आन में खुदा ने भी कहा है—**वल्लाहो यश्हदो इन्नल्मुना फ़ेकीना लकाज़ेबून,**

कुर्आन पारा २८, सूरत मुनाफ़ेक़ून

अर्थात्—अल्लाह साक्षी देता है, कि मुनाफ़िक निस्सन्देह झूठे हैं ऐसी कलामों को भी कसम स्वीकार किया है। यद्यपि इसमें साक्षी की सूचना दी गई है। आगे अल्लामा एक आक्षेप उठा कर स्वयं ही उसका उत्तर देते हैं कि खुदा के कसमें खाने का क्या अर्थ है। यदि क़सम मोमिन को विश्वास दिलाने के लिए खाई जाती है, तो मोमिन तो केवल सूचना मात्र से ही बिना कसम के ही विश्वास कर लेगा, और यदि यह कसम काफ़िर के विश्वास दिलाने के लिए खाई जाती है, तो भी उसका कुछ

लाभ नहीं । (क्योंकि वह तो विश्वास नहीं करेगा) (दोनों अवस्थाओं में कसम खाना निरर्थक है)

इसका उत्तर यह दिया गया है कि कुर्आन अरब की भाषा में उतारा गया है और अरब के निवासियों में यह प्रथा है, कि जब वे किसी बात का समर्थन करते हैं, तो उस समय कसम खाया करते हैं ।

इत्तिकान प्रकरण ६७, पृ. ३३०

'हम कहेंगे' कि यह हेतु सर्वथा सारहीन है, अरब के लोग तो झूठी सच्ची क़समें सत्य तथा असत्य दोनों को ही प्रमाणित करने के लिए खाया करते थे जैसा कि आगे इत्तिकान के इसी पृष्ठ पर लिखा गया है, तो फिर कसम का महत्त्व क्या रहा काफ़रों ने भी अपने कुर्आन में कसमें खाई हैं तो कसमें खाने से मुसलमानों ने उसे सत्य नहीं माना, इसी प्रकार कुर्आन के लिये भी कहा जा सकता है, मनुष्यों को तो अपनी बात पर विश्वास कराने की आवश्यकता थी तो वह कसमें खा-खा कर अपनी बातों पर लोगों का विश्वास जमाते रहे । खुदा को अपनी बातें मनवाने के लिये कसमें खाने की कोई आवश्यकता न थी खुदा की बातें तो स्वयं सिद्ध है उसको इस बात की आवश्यकता नहीं कि अपनी बात का विश्वास कराने के लिए अपने विषय को कसमों से समर्थन करें यह तो उस व्यक्ति का काम है, जो अरब के रिवाज के अनुसार कसमें खाने का आदी

हो चुका है, और कसम खाए बिना वह रह नहीं सकता उसी ने ही कुर्आन में कसमों की भरमार करदी ।

हम कहेंगे—कि अरब के लोग उस समय या तो मुसलमान थे या काफिर थे । मुसलमानों के लिये खुदा को कसम खाने की आवश्यकता न थी, और (काफ़िरों के लिए कसम खाना निष्प्रयोजना था) तो दोनो अवस्थाओं में खुदा को कसम खाना व्यर्थ था और कसमें भी कैसी, कि आप पढ़ कर विस्मित हो जायेंगे ।

कोई विश्वस्त व्यक्ति भी कसमें खा कर अपनी बात को प्रमाणित नहीं करना चाहता; क्योंकि उसकी सत्यता पर यह एक कलंक है, ऐसा करने पर उसकी वाणी विश्वास कोटि से गिर जाती है । सत्यवक्ता कभी भी कसमें खा कर अपनी वाणी को प्रमाणित करने को उद्यत नहीं हो सकता, अतः कुर्आन में कसमों का प्रति-पादन देखकर यह निश्चय हो जाता है—कि कुर्आन सत्य स्वरूप भगवान् का ज्ञान कदापि नहीं हो सकता, यह किसी ऐसे मनुष्य की कृति है, जिसको अपनी बोलचाल में कसमें खाने का अभ्यास है उनको अपने बोलने लिखने आदि में कसमों का प्रयोग स्वभावतः ही करना पड़ता है । कसम खाने वाले केवल सत्य का ही प्रति-पादन नहीं करते, अपितु मिथ्या कथन का भी कसम के साथ प्रयोग करते हैं, कुर्आन स्वयं भी इस बात को स्वीकार करता है । यथा—

वलयहले फुन्ना इन अरदना इल्ललहुस्ना वल्लाहो यश्हदो इन्न-हुम लुकाज़ोबून ।

कुर्आन पारा ११-रकू १३।२

अर्थात्—कसमें खायेंगे वे कि हमने भलाई का विचार किया था और अल्लाह साक्षी देता है कि वह अवश्य झूठे हैं अतः झूठे भी कसमें खाते है ।

आगे लिखा है—कि कुर्आन में सात स्थानों पर खुदा ने स्वयं अपनी कसम खाई है ।

(१) 'कुल ई व रब्बी इन्नहू लहक्कुन' कुर्आन पारा ११ रकू ५।१० (यूनस) यह खुदा ने अपनी कसम खाई है अल्लामा सियूति ने लिखा अर्थात्-हां कसम मेरे रब्ब की निस्सन्देह मेरा दावा कुर्आन, कयामत और अज़ाब (यातना) का सत्य है-कादरी-पृ. ४३८।१

(२) 'फ़वा रब्बिस्समाए वल्अर्ज़े इन्नहू लहक्कुन' कुर्आन पारा २६ रकू १।१८ (जारेयात) पस कसम आसमान और ज़मीन के रब्ब की, जो वर्णन किया गया वह सत्य है कादरी पृ. ४६७।२

(३) कुल बला व रब्बी लतुबअसुन्ना -पारा-२८-रकू १।१५ (तगाबुन) अर्थात् कह कसम है मेरे रब्ब की तुम अव-श्यमेव उठाये जाओगे:—कादरी पृ. ५४६।२

(४) फ़वा रब्बेका ल नहशरन्नहुम वश्शेयातीना । कुर्आन पारा १६ रकू ५।८ (मर्यम) तो कसम है तेरे रब्ब की कयामत के दिन हम अवश्य हशर करेंगे (एकत्रित करेंगे) क़ादरी पृ. २२।२

(५) फ़वा रब्बेका ल नस्अलन्नहुम अजमईन। कुर्आन पारा १४ रकू ६।६ (हजर) तो कसम है तेरे रब्ब की हम अवश्य प्रश्न करेंगे हम सब से क़ादरी पृ. ५५५।१

(६) फ़ला उक्सेमो ये रब्बिल्मशारे के वल्मगारेबे। कुर्आन पारा २९ रकू २।८ (मआरि) कसम खाता हूँ मैं पश्चिमों को और पूर्वों के उत्पन्न करने वाले की क़ादरी पृ, ५७५।२

(७) फ़ला व रब्बेका ला योमेनून अर्थात् कसम है तेरे रब्ब की नहीं ईमान लावेंगे ।

उक्त सात स्थानों पर खुदा ने अपनी कसम खाई है यह अल्लामा सियूति ने तफ़सीर इत्तिकान पृ. ३३१ प्रकरण ६७ में लिखा (खुदा ने अपनी कसमें किन शब्दों में खाई यह आपने ऊपर देख लिया इस पर कुछ नहीं कहना :—

आगे अल्लामा सियूति ने लिखा कि शेष सब कसमें खुदा ने अपनी सृष्टि के साथ खाई है। अर्थात् उत्पन्न हुई वस्तुओं की आगे अल्लामा सियूति लिखते हैं कि खुदा ने सृष्टि की वस्तुओं की कसमें क्योंकर खाई, इस अवस्था में अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की कसम खाना वर्जित है, इस आक्षेप का उत्तर

देते हैं, कि इन स्थानों पर मुज़ाफ़ लोप कर दियागया है जैसे क़ुरआन में आया है वत्तीने-क़सम है इन्जीर की तो वाक्य इस प्रकार बनेगा :—

'व रब्बित्तीने' अर्थात्-में इन्जीर के रब्ब की कसम खाता हूं, परन्तु हर क़सम के साथ मुज़ाफ़ का लोप माना जाये तो एक तमाशा बन जायगा जैसे:-'फ़ल्मूरेयाते क़दहन' अर्थ है-फिर आग झाड़ने वालों की पत्थर से अपने सुम्मों की ठोकर से फिर अर्थ होगा, क़सम है, आग झाड़ने वाले घोड़ों की ठोकर के रब्ब की जहाँ पर है, क़सम है रात की, तो होगा क़सम है रात के रब्ब की।

दूसरा कारण बताया, कि अरब के लोग इन चीजों का सम्मान करते थे और उनकी कसम खाया करते थे, (इस कारण ख़ुदा ने भी क़समें खाई) हम कहेंगे कि अरबी लोग बुतों को बहुत प्रतिष्ठित समझते थे, यदि प्रतिष्ठित चीजों की क़सम खानी अभिप्रेत है तो बुतों की क़सम भी खानी चाहिये।

तीसरा कारण बताया, कि क़सम उन्हीं की खाई जाती है, जो क़सम खाने वाले के लिए प्रतिष्ठा के योग्य है, क्या जुफ़्त और ताक ख़ुदा की दृष्टि में बड़े प्रतिष्ठित हैं। इसी प्रकार की और क़समें भी हैं।

इब्ने अबी हातम ने हसन से रवायत की है कि अल्लाह तो अपनी सृष्टि में किसी की भी क़सम खा सकता है, मगर

मनुष्य अल्लाह के अतिरिक्त और किसी की क़सम नहीं खा सकता ।

तफ़सीरे इत्तेक़ान पृष्ठ ३३१ प्र ६७

हज़रत मुहम्मद की कसम—लअमरु का इन्नहुम लफ़ी सक्रतेहिम यामहून । क़ुर० पारा १४ सू० हजर रुकू ५/५ तफ़सीर इत्तक़ान पृ. ३३१।२ प्रकरण ६७ ऐ मुहम्मद ! तेरे जीवन की शपथ बेशक लूत की क़ौम के लोग पथभ्रष्ट थे । फिर कुर्आन की क़सम है । वल्कुरआनिल्हकीम (यासीन)

क़सम हैं क़ुर्आन हकीम की, वस्साफ़ाते सफ्फा । क़सम है उन फ़रिश्तों की जो सफ़ बांध कर खड़े हैं ।

अल्लामा ने बहुत थोड़ी कसमें लिखी हैं हम क़ुर्आन से शेष लिख रहे हैं । फ़ज्जाजेराते, ज़ज्रन, फिर उन फरिश्तों की कसम जो हन्काने वाले हैं शैतान को । फ़त्तालयाते ज़िकरन, फिर कसम खाता हूं पढ़ने वालों की, । (सूरत साफात) 'वल्कुरआनज़िकर' कसम है कुर्आन अज़मत वाले की, (सूरत स्वाद) वल्किताबिल्मुबीन । क़सम है किताब मुबीन (क़ुर्आन) की । (जुख़रफ़) क़सम है किताब बयान करने वाली की (सूरत दुख़ान) वल्किताबिल्मुबीन । कसम है किताब मुबीन की फिर- वल्कुरआनिल्मजीद । क़सम है क़ुर्आन मजीद की । (काफ़) वज्ज़ारेयाते ज़रवन । क़सम उन चीज़ों की जो विनाश होने वाली हैं बिखरने वाली हैं । फ़ल्हामिलाते किकरन फिर क़सम खाता हूं भारी बोझ उठाने वालियों की । फ़ल्जारे-

याते युसरन । फिर सरलता से चलने वालियों की कसम खाता हूं । फ़ल्मुकरसेमाते अमरन । फिर कसम खाता हूं वस्तु का भाग करने वालियों की । उपरोक्त चारों कसमें सुरत ज़ारेयाते पारा २६ में है । (तूर) वत्तूरे । कसम है तूर पहाड़ की वा किताबुम्मस्तूर । कसम है लिखी हुई किताब की । फी रिक्क म्मन्शूर । और कसम जो पढ़ते समय खोला जाए वल्बैतिल्यामूर कसम है आबाद घर की (मक्कानी) वस्सकफिल्मरफ़ूआ कसम है, उम्नी छत अर्थात् आस्मान की । वल्बह रिल्मस्जूर । कसम है दरिया की जो चढ़ते हों । (यह पांचों कसमें सूरत तूर के आरम्भ है) वन्नजम इज़ा हवा । कसम है सितारे की जब चढ़े या डूबे । (सूरत नजम पारा २७) वक्कल्मे । कसम है कलम की व मा यस्तारून । और जो फ़रिश्ते लिखते हैं उनकी कसम । (सूरतुन्तीन) ला उकसेमा यौमल्कयामते अवश्य कसम खाता हूं मैं क़यामत के दिन की व ला उकसमो बिन्नीफिल्लव्वामह । मैं कसम खाता हूँ मुलामत करने वाले व्यक्ति की । (क़यामत पारा २९) वल्मुर्सेलाते उर्फ़न । नेकी के साथ भेजे हुए फ़रिश्तों की कसम वल्आते फाते अस्फन फिर कसम उन फ़रिश्तों की जो तेज चलते है । वन्नाशेराते नश्रन । और कसम उन फ़रिश्तों की जो प्रगट करते हैं प्रगट करना । वल्फ़ारेकाते फ़र्कन । कसम उन फ़रिश्तों की जो सत्य को अन्तरित से जुदा करने वाले हैं । फ़ल्मुल्केयाते ज़िकरन । कसम उन फ़रिश्तों की जो पैग़म्बरों पर खुदा का कलाम अंकित करते हैं ।

(सूरत मुर्सेलात पारा २९) वश्शाजेआते गर्कन । कसम उन फ़रिश्तों की जो काफ़िरों की जान सख्ती से निकालते हैं । वन्नाशेताते नश्तन, कसम उन फरिश्तों की जो मोमिनों की रूहें निकालते हैं वस्साबेहाते सब्हन । कसम उन फरिश्तों की जो जान ले कर तैरने वाले हैं । फस्साबकाते सब्कन । कसम उन फ़रिश्तों की जो आगे बढ़ते है । फ़ल्मुदब्बेराते अम्रन । कसम उन फरिश्तों की जो तदबीर करने वाले है ।

सूरत नाजेआत पारा ३०

फला अक्सेमो बिल्खुन सिल्जवारिल्कुन्नस । फिर कसम खाता हूँ उन सितारों की जो दिन में छिप जाते हैं वल्लैले अस्असा कसम रात की जब आगे आए । वस्सूबहो इज़ा तनफ्फसा । कसम है, प्रातः काल की जो उदय करे ।

फ़ला उक्सेमो बिश्शफके । मैं कसम खाता हू प्रातः समय की लाली की, वल्लैले व मा वसक । कसम है रात की और जिस वस्तु को रात जमा करे । वल्कमरे इजत्तसका कसम है पूरे चांद की (सूरत इन्शका) वस्समाए जातिल्बरूजे कसम है आस्मान बुर्जों वाले की । वल्यौमिलमोऊद । कसम है क़यामत (प्रलय) के दिन की, वा शाहिदिव्व मशहूद । कसम है गवाह की और जिस पर साक्षी दी गई । [सूरत बरूज पारा ३०] वल्फ़जरे । कसम है प्रातः काल की । व लेयालिन अशिरन । और कसम है दस रातों की वश्शपए वल्वतरे कसम है जुफ़्त और ताक की [जुफ़्त और ताक परस्पर विरोधी वस्तुयें होती हैं जैसे प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा, विद्या और अविद्या, तीन और चार] वल्लैले इजा यसर । कसम है रात की जिस समय गुजरे । हल फ़ी जालेका समुकल्लजी हिज्रिन । क्या है इस कसम में जो मैंने याद की

बुद्धिमानों के लिये (अर्थात् अच्छी कसम और क्या होगी) सूरत फ़जर, पारा ३०)

ला उक़्सिमो बेहाजल्बलदे । कसम खाता हूं मैं इस नगर की (मक्का की) व वालेदिव्व वलद । कसम है बाप की और बेटे की (सूरत बलद) वश्शम्सो व जुहाहा । कसम है सूरज की और उसकी दोपहर की धूप की । वलक़मरो इजा तलाहा । कसम है चांद की जब सूरज के पीछे आता है ।

वन्नेहारे इजा तजल्ला । कसम है दिन की जब वह प्रकाशित होता है । वल्अर्जो व मा तहाहा । क़सम है जमीन की और जिस ने बिछाया व नफ़्सिव्व मा सव्वाहा । कसम है मनुष्य की जान की और उसकी जिसने उस के गात्र ठीक किये, फ़ अल्हमाहा फजूरहा व तकवाहा । और उसके दिल में डाली उसकी बद कारी, व परहेज़गारी (सदाचार) सूरत शम्स पारा ३०

वल्लैले इज़ा यग़शा । क़सम है रात की जब वह अंधेरे में छुपाए संसार को । वन्नेहारे इज़ा तजल्ला । क़सम है दिन की जब वह प्रकाशित हो । व मा खलकज़्ज़करा वल्उन्सा । क़सम है उसकी जिसने नर-मादा उत्पन्न किया । सुरतुल्लैल. पारा ३० वज्ज़ोहा । क़सम है, चाश्त के समय की । वल्लैले इज़ा सजा । क़सम अंधेरी रात की । (सूरत ज़ुहा पारा ३०)

वत्तीने वज्जैतूने । क़सम है इन्जीर की और जैतून के वृक्ष की । व तूरे सीनीना । कसम है तूर पहाड़ सीना की । व हाज़ल्ब-लदल्अमीन । क़सम है अमान देने वाले नगर (मक्का) की ।

[सूरत सीन पारा ३०] वल्आदेयाते जब्हन । क़सम है दौड़ने वाले घोड़ों की जब वह सांस लेते हैं फल्मूरेयाते कद्हन । फिर क़सम है उन घोड़ों की जो अपने सुम्मों की ठोकरों से पत्थर में से आग निकालते हैं । फल्मुगीरात सुब्हन । फिर क़सम है उन घोड़ों की जो प्रातः लूट करते हैं । सूरत आदेयात पारा ३० वल्अस्रे । क़सम है ज़माने की । (सूरत अस्सर पारा ३० इस्तेकान प्रकरण ६७ पृ, ३३० से)

कुर्आन की क़समों का नमूना आपने देख लिया कि किस-किस प्रकार की क़समें खाई है । खुदा को क़समें खाने की क्या आवश्यकता ? इसके लिए कहा गया है कि अरब के लोग क़समें खाने के आदी थे इस लिए खुदा ने भी क़समें खाई यह तर्क किसी प्रकार भी उचित नहीं अरब के लोग शराब पीते थे, व्यभिचार करते थे, मूर्ति पूजा करते थे ? क्या खुदा को अरबों का अनुसरण करना आवश्यक था ? प्रत्येक देश में भाषा बोलने के कई प्रकार होते है-किन्तु भाषा विशारद लोग तो ठीक भाषा लिखते हैं न कि किसी क्षेत्र के पीछे भाषा को खराब करते हैं, बुद्धिमानों के विचार में क़समें खाकर विश्वास दिलाने वाला खुदा नहीं हो सकता ।

कुर्आन की आयतों के साथ आसमान से ज़मीन तक फ़रिश्तों का आगमन

अल्लामा जलालूद्दीन सियूति ने कुर्आन की सूरतों और आयतों के साथ जिब्राईल फ़रिश्ते के अतिरिक्त और फ़रिश्तों का आना भी लिखा है, आप लिखतें हैं, कि इब्ने हबीब के

अनुसार इब्नेनक़ीब ने लिखा, कि कुर्आन में कतिपय सूरतों और आयतें इस प्रकार की हैं कि जिनके साथ फ़रिश्तों की संख्या सम्मिलित होती रही इस प्रकार की सूरतों में एक सूरत 'अनआम' है उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे और 'फ़ातेहुल्किताब' (अल्हम्मद) के साथ अस्सी हज़ार फ़रिश्ते उतरे। सूरत यूनस' के साथ तीस हज़ार फ़रिश्ते और 'व आरअल मन अर्सलना मिन कब्लिका मिन रुसलना' के साथ बीस हज़ार फ़रिश्ते आसमान से उतरे। और 'आयतुल्कुर्सी' के साथ तीस हज़ार फ़रिश्ते उतरे थे। सूरत 'अनआम' के सम्बन्ध में आप पुनः लिखते हैं, कि सूरत 'अनआम' की हदीस अपने सब तरीक़ों से पहले बयान की जा चुकी है, और उसके शेष तरीके यह हैं कि बैहक़ी ने किताब शाबुल्ईमान और तिबरानी ने निर्बल सनद के साथ अनस से प्रमाणित रवायत की है, कि सूरत अनआम का उतरना फ़रिश्तों के एक जुलूस के साथ हुआ। यह जुलूस इस क़दर बड़ा और अधिक था, कि उसने पूर्व से पश्चिम तक सारे आकाश को भर दिया, और उनके पवित्र घोष और ख़ुदा के पवित्र जप के शोर से भूमि कांप रही थी। और हाकिम और बैहक़ी ने जाबर की हदीस से रवायत की है, कि उन्होंने कहा कि जिस समय सूरत अनआम उतरी उस समय हज़रत मुहम्मद ने पवित्र है ख़ुदा बड़ा पढ़ कर फ़रमाया कि इस सूरत के साथ इतने फ़रिश्ते आये हैं कि उन्होंने आकाश को भर दिया है। फिर अल्लामा ने लिखा—कि आयतुल्कुर्सी और बक़र के विषय में अहमद ने अपने मस्नद में मुअक़ल बिन यसार से कथन किया, कि सूरत बक़र क़ुर्आन का बहुत उत्कृष्ट भाग है उसकी प्रत्येक आयत के साथ अस्सी हज़ार फ़रिश्ते उतरे (जब कि सूरत बक़र की २८६ आयतें हैं—लेखक)

और आयत अल्लाहो ला इलहुवल्हय्युल्क़य्यूम। ख़ुदा के सिंहासन के नीचे से निकाल कर उसमें मिलाई गई है फिर 'सूरत कहफ़' के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आये आगे चलकर लिखा, कि वैसे हामले वही (कुर्आन लाने वाला फ़रिश्ता) के साथ कई और फ़रिश्ते भेजे जाते थे जो कुर्आन लाने वाले के आगे पीछे दायें, बाएं हर तरफ से इस लिए रक्षा करते हैं कि कहीं शैतान फ़रिश्ते का रूप बना कर हज़रत मुहम्मद के पास न जा पहुंचे।

तफ़सीर इत्तेक़ान प्रकरण १४, पृष्ठ ९७ से ९९ तक

ख़ुदा को मानसिंह डाकू से भी बहुत अधिक भय शैतान का है, कि बेचारे को इतने फ़रिश्ते रक्षा के लिए रखने पड़ते हैं।

कुर्आन की विषय सूची

अल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने कुर्आन के विषय में साधिकार रूप से बहुत कुछ लिखा है। हमने उसमें से कुछ आवश्यक विषयों का इस पुस्तक में उल्लेख किया है। अल्लामा सियूती द्वारा लिखित तफ़सीर इत्तिकान में एक प्रकरण, कुर्आन के अन्तर्गत जो विद्याएं (उनके विचारानुसार) निहित है, का वर्णन उन्होंने निम्नानुसार किया है। हम उनके द्वारा लिखित कुछ प्रकरणों के उदाहरण अन्त में लिखेंगे। यहां कुर्आन में निहित विद्याओं का वर्णन करते हैं। कुर्आन में निहित विद्याओं का वर्णन अल्लामा सियूती द्वारा रचित तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ६५, पृष्ठ ३१२ से प्रारम्भ होता है। हम यहां इस प्रकरण ६५ से आवश्यक बातों को लिख रहे हैं।

कुर्आन की महत्ता का वर्णन करते हुए लिखा है कि-बैहकी ने हसन से रवायत की है, कि खुदा ने १०४ पुस्तकें उतारीं। उनमें से ४ पुस्तकों में सबकी विद्याओं के सार को बयान कर दिया। वह ४ पुस्तकें तौरेत, जबूर, इन्जील और फुर्कान हैं। फिर तौरेत, इन्जील और जबूर का सार कुर्आन में रख दिया।

तफ़सीर इत्तिक़ान, प्रकरण ६५, पृष्ठ ३१९

आगे कुर्आन की विद्याओं का वर्णन निम्नानुसार किया—

काज़ी अबू बकर इब्नल्अरबी ने किताब कानूनुत्तावील में कहा है, कि कुर्आन की विद्याएं -५० इल्म, ४०० इल्म, ७००० इल्म तथा ७० हजार इल्म (ज्ञान) हैं. और यह अंतिम संख्या कुर्आन के वाक्यों को ४ से गुणा करने पर आती है, क्योंकि प्रत्येक वाक्य में प्रथम प्रत्यक्ष, द्वितीय गुप्त तृतीय सीमा और चतुर्थ सूचना आदि सम्मिलित हैं। (भेद पाये जाने से ७० हजार संख्या हो जाती है।)

तफ़सीर इत्तिक़ान प्रकरण ६५, पृष्ठ ३१९

अब विद्याओं का उल्लेख पढ़िये:—

१ विचित्र सृष्टि
२ धरती और आकाशों की गुप्त शक्तियां
३ सबसे ऊपर का वर्णन
४ सबसे नीचे का वर्णन
५ सृष्टि की उत्पत्ति
६ प्रसिद्धिप्राप्त फरिश्तों तथा रसूलों के नाम
७ भूतकालीन जातियों का इतिहास, जैसे आदम और शैतान की कथा। जब वह स्वर्ग से निकाले गए, और जब आदम

के पुत्र के नामकरण का अवसर आया तो आदम ने उसका नाम अब्दुलहारस रखा (जब हव्वा प्रसव पीड़ा से व्याकुल हुई तो इस पीड़ा से मुक्ति पाने हेतु शैतान ने बहकाया कि इसका नाम अब्दुल्हारस रखना। इसका अर्थ शैतान का दास होता है।)

८ इदरीस के आसमान पर उठाये जाने के समाचार

९ नूह की जाति का समुन्द्र में डूबने का वर्णन

१० प्रथम आद की जाति-कथा

११ द्वितीय आद की जाति का उल्लेख

१२ समूद की जाति

१३ सालेह की ऊँटनी

१४ युनूस की जाति

१५ शुऐब की जाति

१६ आदि और अन्त

१७ लूत जाति का वर्णन

१८ अस्हाबे रस्स

१९ हज़रत इब्राहीम का स्वजाति से विवाद तथा नमरूद से शास्त्रार्थ व अन्य बातों का उल्लेख, जो इब्राहीम के पुत्र इस्माईल और उसकी माता को वादी बतहा (मक्का) में ठहराने और मक्का निर्माण का वर्णन एवं ज़बीह (इस्माईल के बलिदान की कथा)

२० यूसुफ का वृतान्त

२१ मूसा की उत्पत्ति उनको दरिया में डालना, कब्ती की हत्या, मदयन नगर जाना, शुऐब की पुत्री से विवाह, खुदा के साथ तूर पर वार्तालाप, फ़िरऔन की ओर जाने, उसके समुद्र में डूबने तथा बछड़ा-पूजन, उन लोगों का वर्णन जिनके साथ खुदा से वार्तालाप हेतु गये और उनकी बिजली से मृत्यु, मारे गये मनुष्य और गाय के वध का वर्णन, हज़रत मूसा और हज़रत खिज़र की भेंट तथा मूसा द्वारा जब्बार लोगों से युद्ध का वर्णन।

२२ तालूत और दाऊद की कथा जालूत सहित और जालूत के उपद्रवों का वर्णन।

२३ सुलेमान की कथा और उनकी मुल्के सबा की शासिका से भेंट। उन लोगों की कथा जो प्लेग से भयभीत हो देश-त्याग कर भागे थे और फिर खुदा ने उनको मार दिया तथा पुनः जीवित कर दिया।

२४ ज़िल कर्नेन की कथा, उसके पूर्व-पश्चिम सूर्य तक जाने का वर्णन और सद्द (बाधक दीवार) निर्माण की चर्चा।

२५ अय्यूब का वर्णन।

२६ ज़िल कफल

२७ इल्यास की कथा

२८ मरियम और ईसा-जन्म की कथा तथा ईसा के पैग़म्बर होने व आसमान पर उठाए जाने का वर्णन।

२९ जकरिया और उनके पुत्र
३० याह्या का वर्णन
३१ गुफ़ा वासियों की कथा
३२ अस्हाबुर्रकीम का माजरा
३३ वस्ले नसर और दोनों मनुष्यों के समाचार, जिनमें एक व्यक्ति उद्यान का स्वामी ।
३४ स्वर्ग-निवासियों का वर्णन
३५ मोमिन आले यासीन का वर्णन
३६ हाथियों की कथा, इसमें हज़रत मुहम्मद की प्रतिष्ठा, इब्राहीम की प्रार्थना, ईसा की शुभ सूचना, हज़रत मुहम्मद के युद्ध, उनके पैग़म्बर होने और हिज़रत (देश त्याग) की चर्चा ।

हज़रत मुहम्मद के युद्ध

३६ सूरत बकर में सुरय्या इब्नल्हज़रमी (वह युद्ध जिनमे हज़रत मुहम्मद उपस्थित न हो सके ।
३७ सूरत अन्फ़ाल में गज़वा बदर (जिसमें हज़रत मुहम्मद स्वयं उपस्थित हुए)
३८ सूरत आले इमरान में 'गज़वा' उहद और बदरे सुग़रा के गज़वात ।
३९ सूरत अहजाब में गज़वा खन्दक
४० सूरतुल्फ़तह में ग़ज़वा (युद्ध) हुदीब्यह
४० सूरतुल्हश्र में गज़वा (युद्ध) बनी नज़ीर
४१ सूरत तौबा में ग़ज़वाते तबूक और हुनैन

४३ सूरत माएदा में अन्तिम हज्ज और हज़रत मुहम्मद, बीबी जैनब बिन्ते जहश से विवाह, दासी सुरय्या का हराम होना और हज़रत मुहम्मद की पत्नियों का क्रोधित होना ।

४४ इफ़्क की कथा, लोगों द्वारा बीबी आयशा पर व्यभिचार का दोषारोपण ।

४५ मैराज पर जाने का वर्णन

४६ चन्द्रमा के दो खंड होना

४७ हज़रत मुहम्मद पर यहूदियों द्वारा जादू

४८ मनुष्योत्पत्ति से मृत्यु पर्यन्त चर्चा

४९ मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा से व्यवहार

५० जीवात्मा को आसमान पर चढ़ाने का उल्लेख

५१ मोमिन प्राणी हेतु रहमत (दया) के द्वार खुल जाते हैं

५२ काफ़िर प्राणी को आसमान से नीचे डालना

५३ कब्र का कष्ट

५४ मृत्यु-पश्चात् कब्र में जीवात्मा का ठहरना और उससे प्रश्न

५५ प्रलय के बड़े-बड़े लक्षण, ईसा का उतरना, दुज्जाल का उद्भव

५६ याजूज तथा माजूज का प्रकट होना

५७ दाबतुल्अर्ज, विचित्र प्राणी का भूमि से प्रकट होना

५८ धुँए का प्रत्यक्ष होना

५९ कुर्आन का उठ जाना

६० भूमि का धंसना

६१ सूर्य का पश्चिम से उदय होना

६२ तौबा का द्वार बंद होना

६३ तीन बार सूर (नरसिंहा) का फूंकना

६४ समस्त सृष्टि का दोबारा जीवित होना

६५ हशरो-नशर, खड़े होने के समय कष्ट

६६ सूर्य की गर्मी से कष्ट

६७ अर्श (खुदा का सिंहासन) का वर्णन

६८ मीज़ान (कर्म तौलने की तराजू)

६९ हौज़ (ताल)

७० सिरात (नर्क पर पुल)

७१ एक समूह का हिसाब होना

७२ दूसरे समूह की हिसाब से मुक्ति

७३ गात्रों की साक्षी

७४ कर्म पत्रों को दांये-बांये हाथ में देना और पुनः रखना

७५ शफ़ाअत (सिफारिश) हज़रत मुहम्मद द्वारा मुसलमानो की सिफ़ारिश ।

७६ मुकामे महमूद (उत्कृष्ट स्थान) का वर्णन

७७ स्वर्ग और वहां के द्वारों, नहरों, वृक्षों, फलों, आभूषणों बर्तनों और पदों का सविस्तार वर्णन ।

७८ खुदा के दर्शन की शुभ सूचना

७९ नर्क, उसके द्वारों, अग्नि समुन्द्रों, विभिन्न यातनाओं दंड देने के ढंगों, थूहरो, गर्म जल इत्यादि से हृदय को आतंकित व कलुषित करने एवं कंपाने वाले उदाहरण ।

८० खुदा के सुन्दर नाम, जिसे हदीस ने १ हजार कहा है ।

८१ हजरत मुहम्मद के नाम ।

८२ ईमान के ७० से अधिक लक्षण, और इस्लाम के ३१५ कानून, शरीअतें ।

८३ बडे और छोटे अपराधों का वर्णन । और

८४ हजरत मुहम्मद की हदीसों की तस्दीक

इतना लिखने के पश्चात् अल्लामा सियूति ने लिखा है, कि और भी बहुत सी बातें हैं । इस विषय पर मुस्लिम विद्वानों ने बड़े बड़े ग्रन्थ लिखे हैं ।

तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण ६५, पृ. ३२० से ३२३

अल्लामा सियूति द्वारा लिखित उक्त कुर्आन की विषय-सूचि पढ़ने से आपको कुर्आन की वास्तविकता का ज्ञान भली भांति हो जायेगा ।

धर्मवीर पंडित श्री लेखरामजी ने भी कुर्आन की शिक्षाओं के सम्बध में अपनी कुल्यात में एक चित्र अंकित किया है, परन्तु उसका यहां पर उल्लेख न करते हुए अल्लामा सियूति ने जो लिखा है, उसके सम्बन्ध में ही इस पुस्तक में पूर्ण रूपेण लिखना और सम्भव नहीं है । अपनी आगामी पुस्तक में, जहां हम कुर्आन की प्रत्येक आयत पर समालोचना कर कुर्आन और उसकी शिक्षाओं को प्रस्तुत करेंगे, वहां इन उपरोक्त समस्त विषयों को भी सविस्तार स्पष्ट करेंगे, कि कुर्आन के इन प्रकरणों में क्या लिखा है, और कहाँ तक उनमें सार्वभौम सिद्धांत हैं, तथा मुसलमानों के अतिरिक्त दूसरे धर्मावलम्बियों के साथ किस प्रकार व्यवहार करने के हेतु कहा गया है ।

कुर्आन में अरबी भाषा के अतिरिक्त

अन्य भाषाओं के शब्द

अल्लामा सियूति ने इस विषय पर बहुत वाद-विवाद लिखा है। मैं उसके लिखने की कोई आवश्यकता नहीं समझता केवल यह लिखना चाहता हूं कि यह बात निर्विवाद है कि किसी भाषा में अन्य भाषा के शब्द उस समय प्रयुक्त होते हैं जब उस देश के साथ दूसरे देश का सम्बन्ध हो या उस देश पर दूसरे देश का शासन हो जाए या आपस में आने-जाने का आवागमन हो वर्तमान कुर्आन की भाषा उस समय की है, जिस समय अन्य देशों के संसर्ग और सम्पर्क से अरब की भाषा में अनेक बाहर के देशों के शब्द प्रविष्ठ हो चुके थे, इस हेतु से स्पष्ट हैं कि कुर्आन उस समय निर्मित हुआ जब कि और देशों की भाषाओं के शब्द अरबी भाषा में खलत-मलत (सम्मिलित) हो चुके थे, अतः यह कथन सर्वथा अयुक्त और भ्रांति जनक है, कि सृष्टि निर्माण से भी पूर्व कुर्आन लौह महफ़ूज़ पर लिखा हुआ था।

अन्य भाषाओं की शब्द सूचि

अबारीक— सुआलबी अपनी पुस्तक फिकहुल्लुग़त में इसे फ़ारसी भाषा का शब्द कहता है।

अज़ीक— ज्वालीकी कहता है, यह फ़ारसी शब्द है इसके अर्थ पानी का मार्ग या ठहर-ठहर कर पानी गिराना है।

अब्ब—कतिपय विद्वानों का कथन हैं कि पश्चिम वालों की बोल चाल में अब्ब घास को कहते हैं। इसे शैदलह ने बयान किया है।

अब्लई-इब्ने अबी हातम वहब बिन मुनब्बा के द्वारा रवायत करता है—कि 'अब्लई मअका' (कुर्आन) की हब्श की भाषा में इसके अर्थ घूंट जा, निगल जा और अबुश्शैख ने जाफ़र बिन मुहम्मद से रवायत की है, कि हिन्दुस्तान की भाषा में इसके अर्थ पी जा है

अल्लदा-वास्ती किताबुल इर्शाद में बयान करता है, अल्लदा इलल्अर्जे इब्रानी भाषा में टेक लगाने के अर्थ में आता है।

अल्अराएके-इब्ने जौजी ने किताबे फ़नूनुल्अफ़नान में हब्श की भाषा में इस के अर्थ तख़्तियों के लिखे हैं।

अजरा··जो लोग इब्राहीम के पिता या बुत का नाम नहीं मानते उनके कथनानुसार इसे मोरब (रूढ़ी) माना है, और इब्ने अबी हातम कहता है। मोतमिर बिन सुलेमान के सम्बन्ध में उल्लिखित है, उसने कहा "मैंने अपने पिता सुलेमान को (कुर्आन की इस आयत) ———

"वाइजकाला इब्राहीमों ले अबीहे अजरो" अर्थात् अजरा को मजरा पढ़ा, उसने कहा मुझे यह बात पहुंची है कि अजरों का अर्थ टेढ़ा है। यह कलमा (शब्द) अत्यन्त कठोर है, जो इब्राहीम ने अपने पिता से कहा और कुछ विद्वानों के अनुसार अजरा के अर्थ इब्रानी भाषा में—'ऐ भूल करने वाले के हैं।

असबात— अब्बुल्लैस ने अपनी तफ़सीर (व्याख्या) में वर्णन किया है कि शब्द बनी इसराईल के कोष में अरबी शब्द कबाइल (परिवार) का स्थानापन्न है ।

इस्तबरक—इब्ने अबी हातम ने जुहाक से रवायत (वर्णन) किया है कि यह मुल्के अजम में रेशमी कपड़े को कहते है ।

अस्फार—वास्ती अलइरशाद में कहता है कि सुरयानी भाषा में अस्फार पुस्तकों को कहते हैं। और इब्ने अबी हातम ने जुहाक से रवायत की है कि नब्ती ज़ुबान में भी अस्फार पुस्तकों को कहते हैं ।

इसरी—अबुल क़ासिम किताब लुग़ातुल में रवायत (वर्णन) करता है, नब्ती में इसरी के अर्थ मेरा प्रण' (कौल) कथन, करार, दाद (निश्चित वचन) है ।

अकवाब—इब्ने जौजी ने कहा कि नब्ती भाषा में 'कूजो' (कुल्हड़ों) को कहते हैं। इब्ने जरैर जुहाक़ से रवायत करता है कि यह नब्ती भाषा का शब्द है । इसके अर्थ हैं, मिट्टी के पके हुए, बिना डंडी के कूजे (लोटे)

आल—इब्ने जन्नी कहता है नब्ती भाषा में यह अल्लाह का नाम है ।

अलीमुन—इब्ने जौजी कहता है-कि जंगबार की भाषा में इसके अर्थ दुःख देनेवाली वस्तु है । और शैदलह कहता है कि इसका अर्थ इब्रानी भाषा में यही है ।

इनाहो—पश्चिम की बोलचाल में इसके अर्थ-पक जाना है, और अबुल-कासिम इसी अर्थ में इसे बरबरी भाषा का शब्द बताता है, (कुर्आन) 'हर्मामिन अनिन' अत्यत गर्म पानी और [कुर्आन] ऐनिन अनियह गर्मी से उबलता हुआ चश्मा है ।

अव्वाहो—अबुल शैख इब्ने हबान ने अकरमह के तरीके पर इब्ने अब्बास से रवायत की है, हब्श की भाषा में इसके अर्थ विश्वास करने वाले के हैं । इब्ने अबी हातम ने मुजाहिद और अकरमह से भी ऐसा ही वर्णन किया है और अमरू बिन शरहबील से वर्णित है, कि हब्श की भाषा में इसके अर्थ दयालू के हैं और अल वास्ती का कथन है, कि इब्री भाषा में अव्वाहो का प्रयोग प्रार्थना करने के अर्थ में आता है ।

अव्वाब—इब्ने अबी हातिम अमरू बिन शरहबील से वर्णन करता है कि हब्श की भाषा में इसके अर्थ तस्बीह खान (भगवान का जप करने वाले) और इब्ने जरैर ने भी अमर से रवायत की है, कि (कुर्आन) अव्वाबी मआहो हब्श की भाषा में उपरोक्त अर्थ ही है ।

अल ऊला वल आखेरह-शैदला का कथन है, (कुर्आन) अल जाहेलिय्यातिल ऊला' से तात्पर्य पिछली अविद्या है, और कुर-आन) 'फ़िल मिल्लतिल आखिरह' से पहला दीन

(मज़हब) मुराद है और यह अर्थ कब्ती भाषा के हैं। क्योंकि कब्ती लोग आखेरत को ऊला और ऊला को आखेरत कहते हैं और इस कथन को ज़रकशी ने अपनी किताबुल बुर्हान में कथन किया है।

बताइनुहा—शैदलह कहता है (कुर्आन) 'बताइनुहा' मिनिस्त-बिके' अर्थात् उसके ऊपरी कब्ती जबान में यह बात भी ज़रकशी ने कही है।

बईसन—फ़रियाबी मुजाहिद से (कुर्आन) 'कैला बईसन' के अर्थों में कहता है कि यह गधे के बोझ के तोल का पात्र है, और मुकातल ने कहा है कि इब्रानी भाषा में बईर ऐसे हर पशु को कहते हैं जो भारवाही हो।

बैउन—ज्वालीकी किताबुल मोरब में कहता है, कि बीअत और कनेयत इन दोनों शब्दों को फ़ारसी के मोरब (रूढ़) शब्द कहा है।

तन्नूर—ज्वाली की और सुआलबी दोनों ने इसे फ़ारसी भाषा का शब्द और मोरब बताया है।

तत्बीरन—इब्ने अबी हातिम ने [कुर्आन] "वलेयोतब्बेरूम अलौ तत्बीरह" के अर्थों में सईद बिन जुबैर से कथन किया है कि नब्ती अवान में इसके अर्थ-'उसको हलाक [बध] किया' के है।

तहतो—अबुलकासिम लुगातुल कुर्आन में कहता है (कुर-आन) "फनादाह मिन तहतेहा" से बतहा तात्पर्य

है । अर्थात् ' उसके पेट में से ' । यह नब्ती भाषा का शब्द है । करमानी अपनी किताबुल अजाइब में भी मुअर्रब से यही अर्थ करता है ।

अलजिबता-इब्ने अबी हातिम इब्ने अब्बास से वर्णन करता है कि जिब्ता हबश की बोली में शैतान को कहते हैं, और शब्द बिन हमीद ने भी अकरमा से यही अर्थ किये है' और इब्ने जुरैर ने सईद बिन जुबैर से हबश की भाषा में इसके अर्थ जादूगर किया हैं ।

जहन्नुम-कुछ के अनुसार आज्मी भाषा का, व कुछ के मत में फ़ारसी भाषा का और कुछ के मत में इब्रानी भाषा का शब्द है ।

हुर्रेमा-इब्ने अबी हातिम ने अकरमह से कथन किया है, कि हब्शी भाषा में हुर्रेमा 'वुज्जेबा' के अर्थ में आया है अर्थात् वाजिब किया गया' ।

हस्बो-इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से वर्णन किया है कि (कुर्आन) 'हस्बो जहन्नम' हस्ब के अर्थ जंगी भाषा में ईंधन है ।

हित्तुन-इसके अर्थ 'ठीक बात कहो' यह अर्थ बनी इस्राईल की भाषा में है ।

हवारिय्यूना-इब्ने अबी हातिम ने जुहाक से कथन किया है कि नब्ती भाषा में इसके अर्थ शत्रु को बहलाने वाले लोग हैं ।

हूब—नाफ़ेआ बिन अर्ज़क के प्रश्नों में इब्ने अब्बास ने इसके अर्थ 'अपराध' बताए हैं, और इसे हब्शी भाषा का शब्द बताया है।

दारस्तो-इसके अर्थ यहूदियों की भाषा में 'परस्पर मिल कर पढ़ने के हैं'

दुर्रो—शंदला और अबुलकासिम ने हब्श की भाषा में इसके अर्थ 'चमकदार' लिखे हैं।

दीनार-ज्वलीकी आदि ने इसे फ़ारसी शब्द बताया है।

राएना-अबू नईम ने इसे दलाएलुन्नबव्वत में इब्ने अब्बास से वर्णन किया है, कि राएना यहूदियों की भाषा में गाली है।

रब्बानिय्यूना-ज्वालिकी का कथन है, कि अबू उबैदह ने कहा है कि मेरे विचार में यह शब्द इब्रानी या सुर्यानी भाषा का हैं।

रब्बिय्यूना-अबू हातिम अहमद बिन हमदानुल्लग़वी किताबुज़्ज़ीनत में कहते हैं. कि यह सुर्यानी भाषा का शब्द है।

अर्रहमान-मुबर्रद और सालिब के विचार में यह इब्रानी भाषा का शब्द है।

अर्रस्सो-करमानी की किताबुल अजायब में इसको अजमी भाषा का शब्द और इसका अर्थ 'कुआं' बताया है।

अरकोम–शंदलह ने इसे रूमी भाषा में तख़्ती के अर्थ में प्रयुक्त किया है, और अबुल कासिम भी इसे रूमी भाषा का शब्द कहता है। और इसका अर्थ 'किताब' करता है, तथा अल्वास्ती 'दवात' के अर्थ में आना कथन करता है।

रमजन–इब्न जौज़ी ने किताब फ़नूनल अफनान में इस शब्द को मोरब (रूढ़) गिना है, और अलवास्ती का कथन है कि यह इब्रानी भाषा में दोनों अधरों को हिलाने के अर्थ में आया है।

रहुवन–अबूलकासिम (कुर्आन) 'रतरो किल बहरा रहुवन' के अर्थो में कहता है कि इसके अर्थ नब्ती भाषा में साकिन और बिना जोशोखरोज में बहने वाला (मन्द-प्रवाही) दरिया है। अलवास्ती कहता है कि सुर्यानी भाषा में इसके अर्थ मन्द प्रवाही नदी के हैं।

अर्रूमः–ज्वालिकी कहता है कि यह अज़्मी शब्द है और मनुष्यों की एक जाति (रूमी) का नाम है।

जंजबील–ज्वालीकी की और सआबली दोनों ने इसे फ़ारसी भाषा का शब्द कहा है।

अस्सजेले–इब्ने मरदूयह आबिस जौज़ा के तरीक पर इब्ने अब्बास से वर्णन करता है कि अस्स जैला हब्शी भाषा में मर्द के अर्थ रखता है, और इब्ने अत्री किताब मोतसिब में कहता है कि हब्श की भाषा में इसके अर्थ किताब के हैं। और बहुत से लोग इसे फ़ारसी शब्द और मोरेब बताते हैं।

सिज्जील-फरयाबी ने मुजाहिद से कथन किया है कि सिज्जील फारसी में उसे ढेले को कहते हैं जिसका अगला हिस्सा पत्थर और पिछला हिस्सा मिट्टी हो (कंकर)।

सज्जीन-अबू हातिम ने किताबुज्जीनत में कहा है कि यह शब्द अरबी का नहीं किसी और भाषा का है।

सरादिका-ज्वालिकी कहता है कि यह फ़ारसी का मोरब शब्द है और इसकी असल सरादर अर्थात् दहलीज है और किसी दूसरे विद्वान् का कथन है कि सरादिक फ़ारसी भाषा में घर के आगे लटके पर्दे को कहते हैं।

सरिय्यो-इब्ने अबी हातिम मुजाहिद से वर्णन करते हैं, कि (कुर्आन) 'सरिय्यन' सुर्यानी भाषा में नहर को कहते हैं सईद बिन जुबेर इसको नब्ती भाषा का शब्द कहते हैं। शैदला यूनानी में इसका अर्थ नहर कहते हैं।

सफ़रतिन-इब्ने अबी हातिम ने इब्ने जरीर के तरीक़ पर इब्ने अब्बास से कहा है, कि (कुर्आन) 'बे एदी सफरतिन' में इसके अर्थ नब्ती भाषा 'पढ़ने वाले के हैं'।

सकर-ज्वालीकी इसको अजमी शब्द कहते हैं।

सुज्जेदन-अजवास्ती (कुर्आन) 'व लौ खलुल बाबा सुज्जेदन' के अर्थों में कहते हैं, कि सुर्यानी भाषा में इसके अर्थ 'सिर झुकाए हुए' या सिर छुपाए हुए के हैं।

सकरन-इब्ने मरदूयह औफ़ी के तरीक पर इब्ने अब्बास से वर्णन करते हैं, कि हब्श की भाषा में यह सिक्के के अर्थ में आता है।

सन्सबील-ज़बालीकी इसे अजमी शब्द कहते हैं।

सना — इसको केवल हाफ़िज़ इब्ने हजर अजमी कहते हैं।

सुन्दोसिन-ज़बालीकी इसे फ़ारसी में बारीक रेशमी कपड़े को कहते हैं। और शैदलह इसे हिन्दी भाषा का शब्द कहते हैं।

सैय्यदेहाव--(कुर्आन) व अजफ़ेयाह सैय्यदेहा सदल बार्बो की तफ़सीर में जल बास्ती कहते हैं, कि कब्ती भाषा में यह शौहर (पति) के अर्थों में आया है, और अबु उमर का कथन है, कि मैं अरबी भाषा में इस मुहावरे को नहीं पाता।

सीनीन इब्ने अबी हातम और इब्ने जरीर अकरमह से वर्णन करते हैं, कि सीनीन हब्श की भाषा में सुन्दरता के अर्थ में आता है।

सीनाआ--इब्ने अबी हातिम ने जहाक़ से कथन किया है कि नब्ती भाषा में यह सुन्दरता के अर्थों में आया है।

शतरस - इब्ने अबी हातिम ने (कुर्आन) "शतदल मसजिदे" के अर्थ में रफ़ीअ से वर्णन किया है। हब्श भाषा में इसके अर्थ 'उसकी तरफ' है।

शहर—बाज़ (कुछ) कोष लेखकों ने इसको सुर्यानी भाषा का शब्द बताया है।

अस्सेरात-इब्नुल जौज़ी ने कहा है कि यह रूसी भाषा का शब्द 'मार्ग' के अर्थों में आया है। अबी हातिम ने अपनी पुस्तक किताबुज़्ज़ीनत में भी यही अर्थ लिखे हैं।

सुरहुन्ना-(कुर्आन) "फसुरहुन्ना" इब्ने जुरैर ने इब्ने अब्बास से वर्णन किया है कि यह नब्ती भाषा का शब्द है। इसके अर्थ 'उनको काट डाल' (अलग अलग करदे) जुहाक ने भी ऐसा ही कहा है। इब्नल सुन्जर इसको रूमी भाषा का शब्द बताते हैं।

सलवातुन-अल ज्वालीकी कहता है कि यह इब्री भाषा में यहूदियों के कनीसों को (धर्म मन्दिरों को) कहते हैं, उसकी असल (मूल) सलूता है। इसी प्रकार इब्ने अबी हातिम ने भी जुहाक से ऐसा ही कहा हैं।

त्वाहा—हाकिम ने मुस्तदरिक मे अकरमा के तरीक पर इब्ने अब्बास से (कुर्आन) 'त्वाहा, के अर्थों में रवायत की है कि यह शब्द हब्श की भाषा में ऐसा है जैसे अरबी में तुम-या मुहम्मद कहते हो। इब्ने अबी हातम ने सईद बिन जुबैर के तरीक पर वर्णन किया हैं कि 'त्वाहा' नब्ती भाषा का शब्द हैं। इसके अर्थ हैं 'ऐ मानव !' सईद बिन जुबैर ने भी ऐसा ही कहा है।

अत्तागूत-हबशी भाषा में काहन (धार्मिक अगुवा-मूर्ति पूजकों के गुरू)

तफेका-कतिपय विद्वानों ने कहा कि रूमी भाषा में इसके अर्थ 'उन दोनों ने अनिश्चिय किया' है। यह बात शैदलह ने कही है।

तूबा-इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से वर्णन किया है कि तूबा हब्श की भाषा में स्वर्ग का नाम है। और अबुल शेख ने सईद बिन जुबैर से रवायत की है कि वह इसको हिन्दी भाषा का शब्द इन्हीं अर्थों में बताते हैं।

तूर-फरयाबी ने मुजाहिद से रवायत की है कि तूर सुरयानी भाषा में पहाड़ को कहते हैं। और इब्ने अबी हातम जुहाक़ से इस शब्द के यही अर्थ नब्ती भाषा में कहते हैं।

तुवा-करमानी ने अपनी किताबुल अजायब में इस शब्द को मोरब (रूढ़) कहा है। इसके अर्थ 'रात के समय' के हैं। और कहा गया है कि इब्रानी भाषा में इसके अर्थ 'मर्द' के है।

अव्वदता-(कुर्आन) 'अव्दत्ताबनी इस्राईला' के अर्थों के अबुल कासिम ने वर्णन किया है कि इसके अर्थ कतलता के है। अर्थात् 'तूने कतल किया' यह नब्ती भाषा का शब्द है।

अदन-इब्ने जरीर ने इब्ने अब्बास से वर्णन किया है, काब से (कुर्आन के) जन्नातो अदनिन' के अर्थ पूछे तो काब ने कहा 'इसके अर्थ अंगूर की टट्टीयां अगूर के गुच्छों के उद्यान, सुर्यानी भाषा में कहते हैं। और अबेदर के मत में यह रूमी भाषा का शब्द उपरोक्त शब्दों में ही प्रयुक्त है।

अलइरम-इब्ने अबी हातिम ने मुजाहिद से वर्णन किया है कि हब्श देश मे 'इरम' उन बाँधों को कहते हैं जो वर्षा का जल, पहाड़ी घाटियों में, रोकने के लिये बनाये जाते हैं।

गस्साक-ज्वालिकी और वास्ती का कथन है या ठण्डे दुर्गन्धित जल को कहते है । यह तुर्की भाषा का शब्द है। अब्दुल्ला बिन वरीदा ने भी ऐसा ही कहा है ।

गीजा- अबुल क़ासिम का कथन है कि हब्श की भाषा में कम कर दिया गया-के अर्थ मे आता हैं ।

फिरदौस-इब्ने अबी हातम ने मुजाहिद से वर्णन किया है कि फ़िरदोस रूमी भाषा में उद्यान को कहते हैं । और सुद्दी ने कहा कि नब्ती भाषा में अगूरों के गुच्छों को कहते हैं ।

फूम - वास्ती कहता है यह इब्रानी भाषा में 'गेहूँ' को कहते हैं।

करातीस-ज्वालीकी कहता है कि किरतास का मूल अरबी भाषा में नहीं बाहर का है ।

किस्त-इब्ने अबी हातिम ने मुजाहिद से कहा है कि किस्त रूमी भाषा में न्याय के अर्थ में आता है ।

किस्तास-फरयाबी ने मुजाहिद से कहा है, कि किस्तास रूमी भाषा में न्याय को कहते हैं । और इब्ने अबी हातिम ने सईद बिन जुबैर से कहा है कि कुस्तास रूमी भाषा में तराजू को कहते हैं ।

कस्वरतिन-इब्ने जरीर ने इब्ने अब्बास के कथनानुसार कहा है कि हब्श की भाषा में शेर को कहते हैं।

कितना-अबुल कासिम कहते हैं, नब्ती भाषा में इसका अर्थ है—'हमारा कर्म-पत्र"।

कुफल-ज्वालीकी कहता है "कतिपय विद्वान् इसको फारसी से मोरब (रूढ़) बताते हैं

कुम्मल-वास्ती कहता है 'इब्रो और सुर्यानी भाषा में जूं को कहते हैं।"

किन्तार-सआलबी ने किताब फ़िका हुल्लागुत में कहा है कि रूमी भाषा में किन्तार १२०० औकिया के बराबर तौल को कहते हैं। और खलील कहता है कि सुर्यानी भाषा में एक बैल की खाल भर कर सोना या चांदी को किन्तार को कहते हैं। और इब्ने कतीबा कहता है कि ८००० मिस्काल के वजन के बराबर तौल को किन्तार कहते हैं।

क़य्यूम-वास्ती कहते हैं, सुर्यानी भाषा में 'न सोने' वाले को कय्यूम कहते हैं।

काफ़ूर-ज्वालीकी और अन्य लोगों ने इसे फ़ारसी का मोरेब (रूढ़) कहा है।

कफ़्फ़र-इनल जौज़ी कहते हैं नब्ती भाषा में इसके अर्थ 'हमारे अपराधों को मिटा दें' और इब्ने अबी हातिम ने अबी इमरान लजौफी से कहा है, कि [कुर्आन] में 'कफ़्फ़र अनहुम सैय्ये आतेहिम' इब्रानी भाषा में इसका मतलब है कि उनके अपराधों को मिटा दें।

किफ़लैन–इब्ने अबी हातिम ने अबी मूसा अशअरी से रवायत की है, कि हब्श की भाषा में किफ़लैन का अर्थ–'दुगना' है ।

कन्जुन–ज्वालीकी इसको फारसी का मोरब शब्द कहते हैं ।

कुब्बेरत–इब्ने जरैर सईद बिन जुबेर से वर्णन करते हैं, कि कुब्बेरत का अर्थ फारसी में–'लूप्त' करने के अर्थ में आता है ।

लीनतिन–अलवास्ती की किताबुलइर्शाद में इसके अर्थ खजूर के पेड के हैं कल्बी कहते हैं कि मैंने इस शब्द को यसरब के यहूदियों में ही केवल सुना है ।

मुत्तेकाअन–इब्ने अबी हातिम सल्लमह बिन तमामश्करी से रवायत करते हैं मुत्तेका हब्श की भाषा में तरंज को कहते हैं ।

मजूस– ज्वालीकी इसे अजमी शब्द कहते हैं ।

मर्जान–ज्वालीकी इसे कतिपय कोष लेखकों के आधार पर अजमी शब्द कहते हैं ।

मिस्क–सुआलबी ने इसे फ़ारसी भाषा का शब्द कहा है ।

मिशकात–इब्ने अबी हातिम ने मुजाहिद के कथनानुसार हब्श की भाषा में इसके अर्थ छोटे से ताक या छोटे से छिद्र को कहते हैं जो दीवार में दिया (चराग़) रखने के लिए बनाया जाता है ।

मकालीद-फरियाबी ने मुजाहिद के कथनानुसार कहा है कि मकालीद फ़ारसी में कुन्जियों को कहते हैं, और इब्ने दुरैद और ज्वालीकी ने दोनों इक़लीद और मकालीद फ़ारसी में कुन्जी के अर्थ में कहे हैं।

मक़ूम-अलवास्ती ने कहा कि इब्री भाषा में मक़ूम का अर्थ लिखी हुई चीज है।

मुज्जात-अलवास्ती कहते हैं, थोड़ी चीज फ़ारसी भाषा या अन्य लोगों के अनुसार नब्ती भाषा का शब्द है।

मलकूत-इब्ने अबी हातिम ने अकरमह से (क़ुर्आन) 'मलकूत' फरिश्तों को कहते हैं। अबुल शैख ने इब्ने अब्बास और वास्ती से भी यही अर्थ किये हैं।

मनास-अबुल कासिम का कहना है कि नब्ती भाषा में 'भागने' को कहते हैं।

मिनसअत-इब्ने जुरैर नें सद्दी से कहा है, कि हब्श की भाषा में 'लाठी' को कहते हैं।

मुनफतेरून-इब्ने जरीर ने (क़ुर्आन) 'अस्समाओ मुन्फ़तेरत बेही के अर्थ में इब्ने अब्बास से रवायत की है, कि हब्श की भाषा में इसके अर्थ-भरे हुये के हैं।

मह्ल-पश्चिमी भाषा में इसके अर्थ तेल की नाह (तिलघर) के हैं। अबुल कासिम ने यह अर्थ बरबरी भाषा में बताये है।

नाशेअतन--हाकिम ने मुस्तदरिक में इब्ने मसऊद के आधार पर नाशेअतल्लेले-हब्श की भाषा में रात्रि कालीन उपासना को कहा है ।

नून -- फ़रयाबी ने अपनी किताबुल अजाइब में जुहाक से लिखा है कि यह फारसी भाषा का शब्द है, इस का मूल अनून था अर्थ--जो तुम चाहो सो करो ।

हूदना--इब्रानी भाषा में इसके अर्थ है--हमने तौबा की शैदला आदि ने यही कहा है ।

हूद -- ज्वालीकी कहते हैं, यह अजमी शब्द है, तात्पर्य यहूद से है ।

हून -- इब्ने अबी हातिम ने मैमून बिन मैंहरान से (कुर्आन) 'यमुस्सूना अलल्अजेंहोनन' के अर्थ सुर्यानी भाषा में 'हकीम' के हैं तथा जुहाक ने भी ऐसा ही कहा है, अपै अबी इमरानल्जौफी ने कहा कि यह अर्थ इब्रानी भाषा में है ।

हैतीलका-इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से हैतीलका के अर्थ कब्ती भाषा में (तेरे लिए है आ जा) आता है के हैं और अल्हसन के अनुसार यही अर्थ सुर्यानी भाषा में हैं अकरमह का कथन है कि औरानी भाषा में १. आता हैं । इत्यादि--

बराआ—इसके अर्थ नब्ती भाषा में–'समान' (अमाम) के है। शैदला ने यह कहा है।

बारदतन-ज्वालीकी ने इसको अरबी से भिन्न भाषा का शब्द बताया है।

बजर —अबुल्कासिम के अनुसार नब्ती भाषा में इसके 'अर्थ पहाड़ तथा स्वरक्षित स्थान को कहा है।

याकूत—ज्जालीकी, सुआलबी आदि ने इसे फ़ारसी शब्द बताया है।

यहूरो—इब्ने अबी हातिम ने दाऊद बिन हिन्द से (कुर्आन) 'जन्ना अल्लन यहूरो' के अर्थो मे कहा है कि हब्श की भाषा में इसके अर्थ हैं, (लौट आयेगा) अकरमा ने इब्ने अब्बास से भी ऐसा ही कहा है।

यासीम—इब्ने मर्दूयह ने (कुर्आन) 'यासीन' के अर्थ में इब्ने अब्बास से कहा है कि—हब्श की भाषा में इसके अर्थ हैं- या इन्सान' और इब्ने अबी हातिम ने सईद बिन जुबैर से भी यही अर्थ किये हैं।

यसुद्दना—इब्नल्जौजी ने हब्श की भाषा में इसके अर्थ 'शोर मचाते हैं किये हैं।

युस्हरो -शैदलह-पश्चिमी भाषा में इसके अर्थ पुख्ता (दृढ़) होता है।

अल्यम्मो--इब्ने कतीबी सुर्यानी भाषा में इसके अर्थ दरिया (नदी) के हैं।

अल्यहूद--ज्वालीकी का कथन है अरबी से अतिरिक्त अन्य भाषा का शब्द है, यहूद बिन याकूत की ओर मनसूब है—अर्थात् याकूत की सन्तान।

इस्लाम में बहु सम्प्रदाय

पाठक वृन्द जैसा कि हमने इस ग्रन्थ में कुर्आन की शिक्षा के विषय में लिखा वह आपने पढ़ लिया। कुर्आन की शिक्षा का ही यह परिणाम है कि इस्लाम सैंकड़ों सम्प्रदायों में विभक्त हो गया और अब भी इन सम्प्रदायों का अन्त नहीं हुआ। दिन प्रतिदिन नये नये और भी सम्प्रदाय बढ़ ही रहे हैं।

सम्प्रदायों के नाम

१ महकमिय्या २ अजराकिया ३ आजुयी ४ नजरात ५ अस-फरिया ६ अबाजिया ७ अहसामय्या ८ बहशीस्यह ९ नगालियह १० अजाजदह ११ अखवस्या १२ शैबानियह १३ मकरा मय्या १४ वासलिय्या १५ हजैलिय्या १६ नजामिया १७ असवारया १८ अस्काफिया १९ मजवारिया २० बशरिया २१ असमरिया २२ हसामिया २३ सालजियह २४ हाबतिया २५ मुअक्मारिया २६ समामिया २६ जाखतिया २८ हरीबा २९ जाफरिया ३० बहश-मिया ३१ जबानिया ३२ काबेया ३३ ख्यातेया ३४ ग्रसानिया ३५ सोबानिया ३६ सोबेया ३७ अहदया ३८ बरगोसिया ३९ जाफेरा-निया ४० कामलिया ४१ बयानिया, ४२ मुगीरिया ४३ मनसू-रिया ४४ खताबिया ४५ अजाबिया ४६ जमीया ४७ मुस्तदरकीया ४८ मुजसमिया ४९ करामिया ५० जहीमिया ५१ हनफिया ५२ मालकिय्या ५३ शाफय्या ५४ हम्बिलिया ५५ सूफिया ५६ दाव दिया ५७ सबाइया ५८ मफजलियां ५९ जारिया ६० इसहाकिया ६१ शेतानिया ६२ मफुजिया ६३ कसानिया ६४ रजामिया ६५ इस्माइलिया ६६ नसीरिया ६७ जैदिया ६८ नारूसिया ६९ अफ

तहया ७० वाकफिय्यो ७१ गलात ७२ हशविया ७३ उलवेया ७४ अबदिया, ७५ शमसिया ७६ अब्बासिया ७७ हमामिया ७८ नावसया ७९ तनासुखिया ८० मुर्तजिश्रा ८१ राजइय्या ८२ खलीफिया ८३ कन्जिया ८४ हजतरिया ८५ मोतजलिया ८६ मौमुनिया ८७ अफआलिया ८८ माबिया ८९ तारक्या ९० नजतिया ९१ हजतिया ९२ कदरिया ९३ अहरिया ९४ वहमिय्या ९५ मोतलिया ९६ मुतरा बसिया ९७ मुतरफिया ९८ मखलुखिया ९९ मुतराफिया १०० वबरिया १०१ मजिया १०२ शाबाइया १०३ अमालिया १०४ मुस्तसिया १०५ मुशबहया १०६ सालमिया १०७ कासमिया १०८ कनामिया १०९ खाराजया ११० तरकिया १११ हजिमिया ११२ दहरिया ११३ सआलबिया ११४ वहांबिया ११५ नसारिया ११६ मजहुलिया ११७ सलया ११८ अखबसिया ११९ बहसिया १२० समराखेया १२१ अतविया १२२ गालिया १२३ कतएया १२४ कुबिया १२५ मुहम्मदिया १२६ हसनिया १२७ कराबतिया १२८ मुबारकिया १२९ शमतिया १३० अमारिया १३१ मखतूरिया १३२ मौसुमिया १३३ नानेया १३४ तयाश्रिया १३५ यतरीयह १३६ सैरफिया १३७ सरीइयह १३८ जारूदिअया १३९ सुलिमानिया १४० तबारिया १४१ नईमिया १४२ याकुबिया १४३ शमरिया १४४ युनानिया १४५ बखारिया १४६ गेलनिया १४७ शाएबिया १४८ सम्हबिया १४९ मरसिय्या १५० हासमिय्या १५१ खरारिया १५२ कलाबिया १५३ हालिया १५४ बातनिया १५५ अबाजिया १५६ ब्राहमिया १५७ अशआरिया १५८ सौफस्ताइया १५९ फिलासफिया १६० समीनिया १६१ मशाईन १६२ अशराकिन १६३ मजुसियह १६४ उमविया १६५ बजीदिया १६६ अली अलाहिया १६७ सादकिया १६८ फुर्कानिया १६९ फरूकिया १७० शैखिय्या १७१ शमासय्या १७२ सममि-

स्या १७३ फरकिया १७४ नकशबंदिया १७५ कादरिया १७६ नेचरिया १७७ मिर्जाइया १७८ आगा खानिया १७९ शहरबदिया १८० चिशतिया १८१ करानिया १८२ नजदिया १८३ बाबिया १८४ मवाहदिया बहाबिया १८५ राफ जिय्या १८६ नबिया १८७ जसतिया १८८ इबरिया १८९ जबरिया १९० तबरिया १९१ सलफिया १९२ सफातिया १९३ अकलिया १९४ तकलिया १९५ मुतसफिया १९६ हमाओस्त १९७ शमाफिया १९८ हफ्त इमामिया १९९ हश्तइमामिया २०० अशना अशारिया २०१ अखबारिय्यीन २०२ मुतकल्लमीन २०३ मुतसर्रईन २०४ रोशनिया २०५ कोकबिया २०६ तबकुमिया २०७ अर्शे आसेयानी २०८ तातीलिया २०९ अनसारिया २१० रखबिया २११ रहमानिया २१२ अनाजिया २१३ रूहानिया २१४ हबीबिया २१५ हबीरिया २१६ अजिया २१७ सकतिया २१८ जनीदिया २१९ जबीया २२० औरहिमीया २२१ कलदरिया २२२ फिरदोमिया २२३ मदारिया २२४ रजाजिया २२५ सफाइया २२६ खाकिया २२७ बादिया २२८ तशनिया २२९ दवाया २३० आबिया२३१तैकुरिया २३२ शैतारिया २३३ तबकानिय २३४ सय्यद जमालुद्दीन २३५ मतबरिया २३६ आरगुनिया २३७ आलयाया २३८ जाहबिया २३९ गजिरूनिया २४० तौबिया २४१ काजिया २४२ तशोरिया २४३ हलालिया २४४ नुरिया २४५ ऐदूसिया २४६ यसविया २४७ रफाइया २४८ मौईनिया २४९ शकर गजिया २५० महबुने हलाहिया २५१ महमुदिया २५२ फखरुद्दीनिया २५३ नूरे मुहम्मदिया २५४ वुन सुया २५५ अल्लाबख्शिया २५६ हाफजिया २५७ खिजरुया २५८ कर्मानिया २५९ करीमिया २६० जलीलिया २६१ जमालिया २६२ कुद्दूसिया २६३ साबरिया २६४ मखदुमिया २६५ हकमिया २६६ निजाम सहिया २६७ अबुल अलाइया

२६८ हसामिया चितासया २६९ निजामिया २७० बखारिया २७१ हमजाशाही २७२ फखरिया २७३ नयाजिया २७४ जयाइया २७५ फकरीया फरीदिया २७६ शमशिया सुलमानिया २७७ फखरिया सुलमानिया २७८सर्वरिया २७९रजाकिया २८०वहाविया २८१ नौशाही २८२ शय्यदशाही २८३ हुसैनशाही २८४ कबीसिया २८५ मुहम्मदशाही २८६ बहलोलशाही २८७ हासशाही २८८ सदुशाही २८९ मुकीयशाही २९० महुवदशाही २९१ कासिम शाही २९२ नमतुल्लाहशाही २९३ मोरशाही २९४ कमसिय्या २९५ सुफियाहमीदिया २९६ दौलाशाही २९७ रसुलशाही २९८ सुहागशाही २९९ सफबिय्या ३०० लालशाही ३०१ बाबिया ३०२ बुखारिया ३०३ कर्म जहली ३०४ हबीबशाही ३०५ मुर्तजाशाही ३०६ अब्दुल करीमी ३०७ इस्माईलशाही ३०८ हलीमशाही ३०९ रूजाकशाही ३१० मिजाकशाही ३११ सगरिया ३१२ अय्याजिया ३१३ नसीरिया ।

(पं. सत्यदेवजी की पुस्तक से उद्धृत)

—इस्लाम के तीन सौ आठ फ़िर्के, ८ से १०

यह सूची बहुत पुरानी प्रकाशित है । इसके पश्चात् मुसलमानों के सम्प्रदायों में और भी वृद्धि हुई है । □

—: उपसंहार :—

.कुर्आन के सम्बन्ध में प्रस्तुत यह पुस्तक शोध और अनुसन्धान की दृष्टि से रची गई है। इसमें जो कुछ भी सामग्री है वह समस्त इस्लाम की प्रामाणिक पुस्तकों से उद्धृत की गई है और उन पुस्तकों का विवरण भी प्रत्येक स्थान पर उल्लिखित है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में कोई भी बुद्धिजीवी और सत्यान्वेषी यह सहन नहीं कर सकता कि विश्व के करोड़ों मनुष्य धर्मान्धता के शिकार होकर बिना सोचे-समझे और जाने किसी एक व्यक्ति के अनुयायी होकर अन्धानुकरण कर वास्तविक मार्ग से पथ-भ्रष्ट हो जायें और अन्यों को भी वैध और अवैध उपायों--षड़यंत्रों अथवा लोभादि से अपने कुचक्र में फांसते रहें।

इस स्थिति और वास्तविकता से ही प्रेरित होकर मैंने इस पुस्तक की रचना की है। क्योंकि .कुर्आन के सम्बन्ध में जन-साधारण में विभिन्न प्रकार की भ्रांतियां व्याप्त हैं और .कुर्आन की वास्तविकता तक पहुंचना जन साधारण के लिये सुगम नहीं है।

इस्लाम धर्म के अधिकांश अनुयायी .कुर्आन को केवल श्रद्धा--विश्वास और पुण्य प्राप्ति के उद्देश्य से ही पाठ करते चले आ रहे हैं। .कुर्आन का दैनिक पाठ करने वालों में ऐसे लोगों की संख्या अधिक है जो कि .कुर्आन की आयतों के अर्थों

व व्याख्याओं से सर्वथा अनभिज्ञ हैं, परन्तु परम्परागत उन पर यह संस्कार है कि कुर्आन के पाठ करने वाले मुसलमान स्वर्ग में जाएंगे और शेष लोग नर्क के अधिकारी हैं।

कुर्आन में दी गई शिक्षाओं व उपदेशों को पढ़-सुन कर अन्य धर्मों के प्रति हठधर्मी-अंध विश्वास, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा व बैर-भाव और संकुचित भावनाएं उनके अंतः करण में व्याप्त हो जाती हैं और परिणामस्वरूप केवल मुसलमानों को ही मनुष्य और इस्लाम को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म समझते हैं और इस धर्मान्धता के मद में वह अन्य धर्मों और उनके अनुयाईयों व अन्य प्राणीयों पर इस्लाम के नाम पर हर प्रकार के अत्याचार करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझने लगते हैं। यह विचार विश्व और मनुष्यता के हेतु कितने घातक और हानिकारक हैं, यह प्रत्येक विद्वज्जन भलिभांति समझ सकते हैं। हमने ऐसे ही विचारों का भ्रमजाल भंग करने हेतु इस पुस्तक की रचना की और यह प्रयास किया है कि लोग मिथ्या विश्वासों का परित्याग कर सत्यता को अंगीकार करें।

प्रस्तुत पुस्तक में कुर्आन के माध्यम से इस्लाम धर्म के सिद्धांतों की व्याख्याएं जो कि विभिन्न मुसलमान विद्वानों ने की हैं, उन्हें उद्धृत कर कुर्आन की आयतों की वास्तविकता को प्रकट कर जन साधाण में व्याप्त भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयास किया गया है।

सर्वप्रथम हमने कुर्आन के निर्माण की कथा लिखी, कि खुदा ने सृष्टि-निर्माण के पूर्व ही कलम (लेखनी) को आज्ञा देकर कुर्आन को लौह महफ़ूज (सुरक्षित तख्ती) पर अंकित करवा दिया और वहां से रमज़ान मास में दुनियां के आसमान पर

लाया गया और आवश्यकतानुसार खुदा ने फ़रिश्तों के द्वारा कुर्आन को २४-२५ या २६ वर्षों में हज़रत मुहम्मद के पास भेजा। हमने पुस्तक में वह सभी तरीके लिखे हैं कि किस प्रकार हज़रत मुहम्मद तक कुर्आन पहुंचा।

आम मुसलमानों में यह धारणा व्याप्त है कि सम्पूर्ण कुर्आन खुदा की वाणी है किन्तु हमारी दृष्टि में कुर्आन का एक भी वाक्य खुदा की वाणी नहीं है. परन्तु हम यहां आम मुसलमानों में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने के लिये उन्हीं के सिद्धांतानुसार सारा कुर्आन खुदा की वाणी नहीं हैं, क्योंकि उसमें फ़रिश्तों की, शैतान की, हज़रत मुहम्मद की उमर आदि मित्रों की, पैग़म्बरों की, और समकालीन लोगों की आयतें कुर्आन में उपलब्ध हैं। यहां तक कि हज़रत मुहम्मद और अरब के लोगों की पारस्परिक वार्ताएं ज्यों की त्यों कुर्आन में उल्लिखित हैं, फिर भी जो लोग कुर्आन को खुदा की वाणी मानते हैं वे कितनी भ्रांति में हैं।

इसके अलावा हमने कुर्आन की दो प्रकार की आयतों का उल्लेख किया है जो कि १. मोहकमात और २ मुत्तशाबेहात प्रसिद्ध हैं। १. मोहकमात-वो आयतें है जिनका अर्थ सरल और समझने योग्य है तथा २ मुत्तशाबेहात वह आयतें है जिनका अर्थ खुदा के सिवाय कोई नही जानता और जो कोई व्यक्ति इन आयतों का अर्थ समझने का प्रयास करे तो वह काफिर हो जाता है।

इसके अतिरिक्त कुर्आन में ऐसी आयतें है जिनके कारण भयंकर भ्रांतियां उत्पन्न होती हैं। वो निरस्त आयतें

और निरस्त करने वाली आयतें हैं। इन आयतों के कारण जन साधारण भ्रमित हो जाता है क्योंकि वह निर्णय लेने में असमर्थ रहता है कि कौन सी आयत निरस्त है और कौन सी आयत निरस्त करने वाली है। ऐसी दोनों प्रकार की आयतें हमने इस पुस्तक में सविस्तार लिखी हैं।

आगे हमने हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के पश्चात् क़ुरआन किस स्थिति में था, उसका वर्णन किया है और यह बताया है कि हज़रत अबु बकर ने क़ुरआन को पुस्तकाकार करने का यत्न किया और ज़ैद को इस कार्य को पूर्ण करने हेतु नियुक्त किया। ज़ैद ने क़ुर्आन की आयतों को पत्थरों के टुकड़ों से, हड्डियों से, झिल्लियों व पूर्जों तथा उन मनुष्यों से, जिन्हें कुछ आयतें कंठस्थ थीं, एकत्रित कर पुस्तकाकार रूप में क़ुर्आन हज़रत अबु बक़र को दे दिया। वह क़ुर्आन तो वैसा ही बंधा पड़ा रहा और जब हज़रत उस्मान (तृतीय खलीफा) के हाथों में शासन की बागडोर आई तो उस समय लोगों ने हज़रत उस्मान से कहा कि लोग क़ुर्आन को विभिन्न रूपों में पढ़ते हैं, जिसके कारण क़ुर्आन में भारी अन्तर हो गया है और इस कारण परस्पर वाद-विवाद व संघर्ष भी उत्पन्न होने लगे हैं। तब हज़रत उस्मान ने एक समिति गठित कर कहा कि क़ुर्आन के अन्तर को दूर कर क़ुरैश की भाषा में क़ुर्आन को लिख दो। जब समिति द्वारा उसी क़ुर्आन को तैयार कर अरब में रखा व अन्य देशों को भेजा गया और अन्य जो क़ुर्आन प्रचलित थे उन्हें जला दिया गया। हमने यह भी बताया है कि क़ुर्आन कितना विस्तृत था और अब कितना संक्षिप्त रह गया है तथा यह भी बताया है कि एक ही घटना को विभिन्न स्थानों

पर वर्णन करने के फलस्वरुप कुर्आन में मतभेद और विरोधाभास उत्पन्न हो गये और कुर्आन का तारतम्य भी असंतुलित हो गया है।

स्वर्ग-नर्क और क़यामत का वर्णन भी संक्षिप्त रूप में कर यह दर्शाने का प्रयास किया है कि कुर्आन के इस विषय को कोई भी बुद्धिजीवी स्वीकार नहीं कर सकता, सिवाय उन लोगों के जिन्होंने अपनी बुद्धि और विवेक दूसरे लोगों के हाथ रहन रख दिये हों।

उपरोक्त विषयों के अलावा भी कुर्आन में वर्णित अन्य कई विषयों का प्रतिपादन इस पुस्तक में कर कुर्आन के प्रति जन साधारण में व्याप्त भ्रमित धारणाओं को दूर कर वास्तविकता को प्रकट किया गया है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन-मनन और चिन्तन से कुर्आन की वास्तविकता को समझने में सफलता प्राप्त होगी और करोड़ों लोगों में व्याप्त धर्मान्धता-हठधर्मिता-अंधविश्वास-ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-बैर-भाव और संकुचित भावनायें दूर हो सकेगी। ●

—देवप्रकाश

□ द्वितीयावृति-
❋ १५ अगस्त १९७४
आर्य समाज, रतलाम

सन्दर्भिका

१—कुर्आन—अनुवादक, शाह रफीउद्दीन
२—कुर्आन तफ़सीर मुआले मुत्तन्जील इब्ने मुहम्मदल्हुसेन बिन मसऊदल्बग़वी ।
३—तफ़सीर मज़हरी-अल्लामा काज़ी मुहम्मद सनाउल्ला उसमानी
४—तफ़सीर इब्ने कसीर — फ़ैज़ुल, कुरआन, देवबंद
५—तफ़सीर क़ादरी—मौलाना फ़खरुद्दीन, नवल किशोर प्रेस
६—तफ़सीर जलालैन कलां— कुतुबख़ाना रशीदिया
७—तफ़सीर बैज़ावी—अब्दुर्रहमान मुहम्मद मिश्री
८—तफ़सीर बयानुल कुरआन—मौलाना मुहम्मद अली
९—तफ़सीर सिराजे मुनीर—मुहम्मद शरबैनी खतीब, नवल किशोर प्रेस ।
१०—तफ़सीर कुरआनुल अज़ीम—अल्लामा जलालुद्दीन सियूती
११—किताब लबाबुन नक़ूल फी असबाबिन्नज़ूल—अल्लामा जलालुद्दीन सियूती
१२—तफ़सीर हक्कानी—मौलाना अबू मुहम्मद अब्दुल हक़, नईमिया देवबंद
१३—तज़रीदे बुखारी कामिल—मौलवी मुहम्मद हय्यात सम्बली
१४—सहीह बुख़ारी—अनुवादक मिर्ज़ा हैरत, देहलवी
१५—अजायेबुल क़सस—मुंशी नवल किशोर

१६—सहीह मुस्लिम—सिद्दीकी प्रेस, लाहोर
१७—तारीखुल खुलफा—मौलाना जलालुद्दीन सियूती
१८—आईना ए मज़हब सुन्नी—हाजी डा० नूर हुसैन
१९—क़ससुल कुरआन - मुहम्मद हिफ़ज़ुर्रहमान स्युहार्दि
२०—अलफौज़ुल कबीर फी उसूल तफसीर—शाह वलीअल्ला
२१—अ इम्मा ए तलबीस—अबुल क़ासिम रफ़ीक़
२२—तफसीर इत्तेकान—अल्लामा जलालुद्दीन सियूती, फ़ैज़ बख़्श एजेन्सी फिरोज़पुर।
२३—कुरआन में परिवर्तन—प० सत्यदेवजी
२४—होली बाईबिल (रसूलों के एमाल) एम. जे. ए. एम
२५—इस्लाम के तीन सौ साठ फिर्के।
२६—मुकद्दमाए तफ़सीरुल कुरआन—मिर्ज़ा हैरत देहलवी.
२७—तफ़सीर इब्ने ज़रीर—देवचन्द
२८—तफ़सीर अनवारुल कुर्आन—शीया मत
इनके अतिरिक्त और भी पुस्तकों से सहायता ली गई है।

* * *